ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved CARE Listed Journal

वर्ष/Year-12 अंक/Vol.-46 द्विभाषी/Bilingual

अप्रैल - जून / April – June 2023

सभी देशवासियों को

आज़ादी के अमृत महोत्सव

की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संपादक
-डॉ. आशीष कंधवे

विनायक दामोदर सावरकर स्मरणांजलि

काल स्वयं मुझ से डरा है,
मैं काल से नहीं,
कालेपानी का कालकूट पीकर
काल से कराल स्तभों को झकझोर कर,
मैं बार-बार लौट आया हूँ,
और फिर भी मैं जीवित हूँ।
हारी मत्यु है, मैं नहीं......

आधुनिक साहित्य

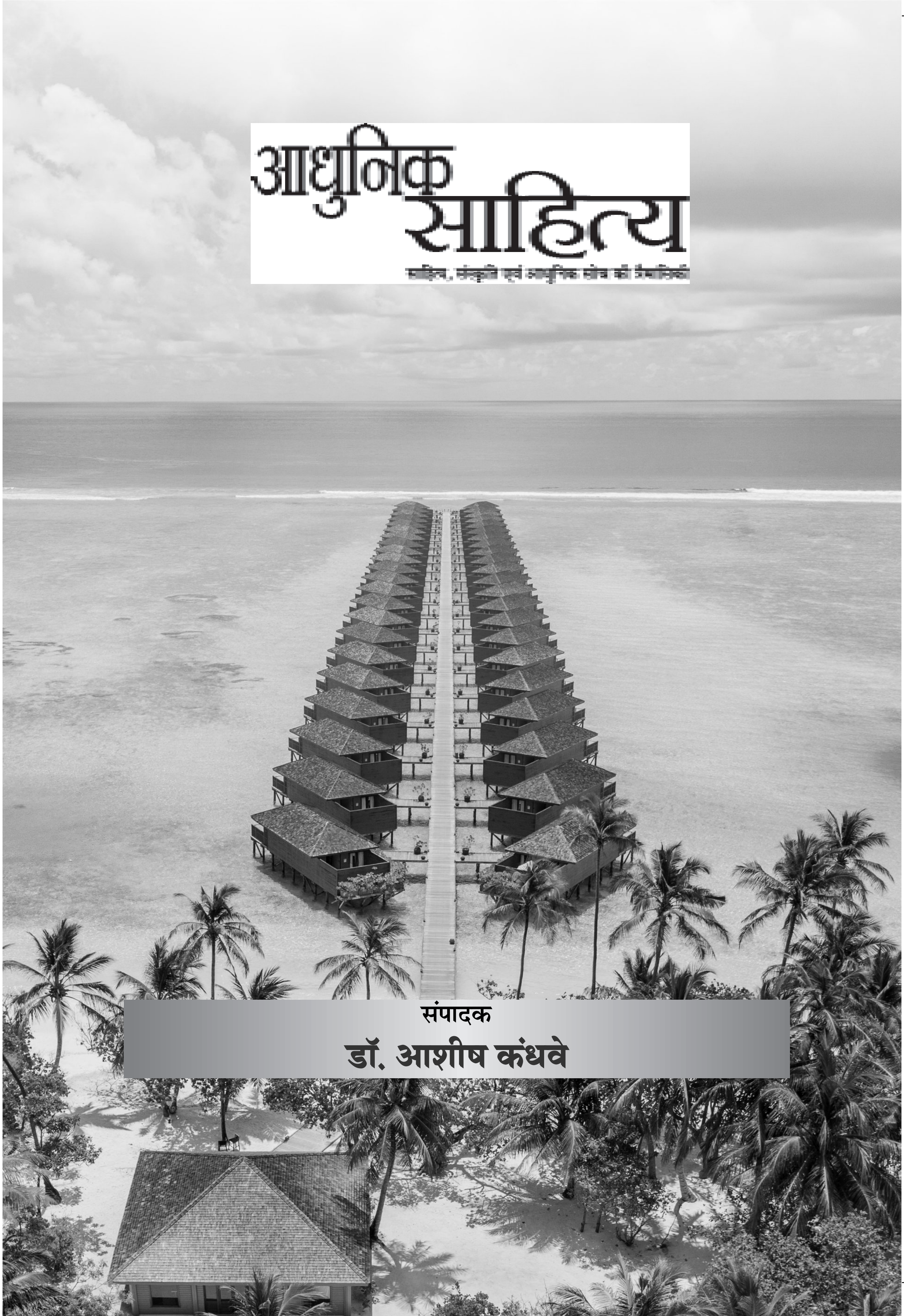

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

प्रकाशन | वितरण | राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

प्रमुख उद्देश्य

★ हिंदी का प्रचार-प्रसार

★ उत्तम साहित्य का प्रकाशन

★ साहित्यकार साहित्य योजना

★ पुरस्कार प्रतियोगिता का संचालन

★ रोजगारोन्मुख हिंदी के लिए प्रयास

★ हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का समग्र विकास

★ साहित्य एवं संस्कृति के चहुँमुखी विकास के लिए प्रयत्न

★ संग्रहालय, पुस्तकालय एवं संगोष्ठी कक्ष की स्थापना में प्रयासरत

मुख्यालय

एडी-94-डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

संपर्क सूत्र : 09811184393, 011-47481521

ई-मेल : vhspindia@gmail.com, aadhuniksahitya@gmail.com

Website : www.vhsp.in

UGC Approved CARE Listed Journal

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

वर्ष/Year-12 अंक/Vol.-46 | अप्रैल - जून 2023/April – June 2023 | द्विभाषी/Bilingual

Aadhunik Sahitya

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे*

Editor

Dr. Ashish Kandhway

उप संपादक	Sub Editor
रजनी सेठ	Rajni Seth
प्रबंध संपादक	Managing Editor
ममता गोयनका	Mamta Goenka
सहायक संपादक	Assistant Editor
डॉ. ऐश्वर्या झा	Dr. Aishwarya Jha
संवाददाता (अंग्रेजी)	Correspondent (English)
निलांजन बैनर्जी	Nilanjan Banerjee
संरक्षकगण	Patron
प्रो. उमापति दीक्षित	Prof. Umapati Dixit
कुमार अविकल मनु	Kumar Avikal Manu

*आशीष कंधवे (मूल नाम आशीष कुमार)

आधुनिक साहित्य में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबन्धित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में सम्पादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं।

आधुनिक साहित्य

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved CARE Listed Journal

केंद्रीय हिंदी संस्थान के सहयोग द्वारा प्रकाशित

RNI No. DELBIL/2012/42547
ISSN 2277 - 7083

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के पुन: उपयोग के लिए लेखक, अनुवादक अथवा आधुनिक साहित्य की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय
एडी-94-डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
फोन : 011-47481521, +91-9811184393
ई-मेल : aadhuniksahitya@gmail.com
adhuniksahitya@gmail.com

आलेख/रचना/कहानी में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं इससे प्रकाशक या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मूल्य : **₹ 500 प्रति अंक**

शुल्क :	तीन वर्ष (12 अंक)	₹ 6000
	पांच वर्ष (20 अंक)	₹ 9000
	(डाक/कोरियर खर्च सहित)	
	आजीवन सदस्यता	₹ 21,000
	विदेश के लिए (3 वर्ष)	200 डॉलर

शुल्क **'AADHUNIK SAHITYA'** के नाम पर भेजें।

Account Name	:	Aadhunik Sahitya
Account No.	:	16800200001233
Bank	:	Federal Bank Ltd.
Branch	:	Shalimar Bagh New Delhi-110088
IFSC Code	:	FDRL0001680

'आधुनिक साहित्य' द्विभाषी त्रैमासिकी आशीष कुमार के स्वामित्व में और उनके द्वारा एडी-94डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित तथा आभा पब्लिसिटी, 163, देशबंधु गुप्ता मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : डॉ. आशीष कुमार।

'AADHUNIK SAHITYA' A quarterly bilingual (Hindi & English) Journal of Literature, Culture & Modern Thinking owned/published/printed/edited by Ashish Kumar from AD-94-D, Shalimar Bagh, Delhi-110088 and printed at Abha Publicity, 163, Deshbandhu Gupta Market, Karolbagh, New Delhi.

अनुक्रम

संपादकीय
- डॉ॰ आशीष कंधवे / **राष्ट्रबोध का नवजागरण और नवभारत** / 11

हिंदी प्रभाग
- डॉ. सुप्रिया संजू / **निज भाषा का अभिमान राष्ट्र उन्नति का सोपान** / 17
- अचला वर्मा / **इक्कीसवीं सदी के भाषाई निर्माण में हिंदी की सहभाषाओं की भूमिका** / 22
- विनीत कुमार सिन्हा / **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नई हिंदी पत्रकारिता की भाषा : संभावनाएं एवं चुनौतियां** / 28
- डॉ. रीना / **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का प्रश्न** / 33
- डॉ. शशि रानी / **निज भाषा का प्रश्न और सिनेमा** / 39
- डॉ. नीतू गुप्ता / **भाषा का प्रश्न और सिनेमा** / 44
- राजश्री भारद्वाज / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना** / 47
- डॉ. ममता / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना** / 54
- डॉ. ममता थपलियाल / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** / 59
- सुशान्त कुमार पाण्डेय / **भाषा का प्रश्न, आत्मनिर्भरता एवं नई शिक्षा नीति** / 64
- ऋचा राघव / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना** / 69
- डॉ. योजना कालिया / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना** / 74
- अमित जायसवाल / **नेपाल में हिंदी का वर्तमान परिदृश्य** / 77
- डॉ. अनिता देवी / **हिंदी सिनेमा की भाषा : कल, आज और कल** / 81
- वागीश शुक्ल / **अज्ञेय के निबंधों में भाषायी चिंतन** / 87
- डॉ. नीलम देवी / **हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य** / 97
- डॉ. विजय लक्ष्मी / **हिंदी भाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति** / 102
- ओम्मी ठाकुर / **भारतीय बहुभाषिक लोक और रंगमंच** / 107
- तृष्णा रॉय / **बांग्ला लोकगीतों में भाषाई परिप्रेक्ष्य** / 112
- डॉ. मंजू कुमारी / **वैश्विक पटल पर भाषा का प्रश्न** / 119
- डॉ. अनुरुद्ध सिंह / **वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा का प्रश्न** / 124
- अरविंद कुमार यादव / **अरुणाचल प्रदेश के हिंदी उपन्यासों में स्त्री स्वर** / 128
- सुअम्बदा कुमारी / **सुब्रमनी कृत उपन्यास 'डउका पुरान' में साहित्यिक संवेदना** / 133
- अरुण कुमार अग्रहरि / **भाषा का प्रश्न और इक्कीसवीं सदी का भारत** / 138
- दीपा कुमारी राय / **21वीं सदी में हिंदी भाषा और बाजारवाद** / 145

- आचार्य (डॉ.) एस. हुसैन / **भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति** / 150
- डॉ. माया शर्मा / **वैचारिक क्रांति में भाषा का योगदान** / 156
- डॉ. अशोक कुमार / **भाषा का प्रश्न और पूर्वोत्तर की हिंदी** / 162
- डॉ. विभाषा मिश्र / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय शिक्षा नीति** / 167
- सीमा देवी / **वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता एवं प्रासंगिकता** / 169
- नायराह कुरैशी / **भाषा का प्रश्न और दक्षिण का हिंदी साहित्य** / 174
- डॉ. शीलम भारती / **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में** भाषा नीति का समीक्षात्मक अध्ययन / 177
- डॉ. पूजा जग्गी / **बुराड़ी कांड में भाषा की भूमिका** / 183
- प्रीति पाण्डेय / **भाषा के प्रश्न और काशीनाथ सिंह** / 189
- जगबीर सिंह / **भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य** / 197
- डॉ. मलखान सिंह / **तुलसी का कबित्त विवेक** / 204
- कित्तीपोंग बुनकर्ड / **समकालीन कविताओं में रामायण का प्रभाव :रावण के पात्र के विशेष संदर्भ में** / 212
- प्रो. सुचिता त्रिपाठी / **काशी का साहित्यिक योगदान** / 217
- नीलम राठी / **रेडियो प्रसारण में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अन्य प्रायोजित कार्यक्रमों की जनहितकारी भूमिका** / 224
- डॉ. अमित कुमार गुप्ता एवं डॉ. अपर्णा / **सॉफ्ट पावर : भारतीय विदेश नीति की अहम् रणनीति** / 233
- डॉ. सत्यप्रकाश सिंह / **स्वाधीनता आंदोलन और क्रांतिकारियों का जीवन तथा साहित्य** / 247
- सरिता कुमारी / **ज्योतिबा फुले का शिक्षा में योगदान : एक सामाजिक विश्लेषण** / 254

ENGLISH SECTION

- Swati Dwivedi / **National Education Policy (NEP) 2020: Promotion of Indian Languages, Multilingual Education, and the Three Language Formula** / 1
- Dr. Harjinder Kaur **/ Role of Information and Communication Technology (ICT) in the Development of Hindi in the 21st Century** / 8
- Lhundup Dorjee / **Analysis on the Different Features of Modern Tibetan Literature** / 15

- Prof. M.R. Verma, Pankaj Kumar /**Bhikhari Thakur: Gender inclusive representation in the modern Bhojpuri theatre** / 21
- Beena Negi Chaudhary / **Teaching Aptitude and Academic Achievement of B.Ed Students in Relation to Medium of Instruction** / 27
- Garima Mani Tripathi / **Language at the universal level: philosophical problems and prospects for Hindi** / 33
- Dr. Bipin Kumar Thakur / **Criteria for Inclusion in the Eighth Schedule: A Work in Progress** / 42
- Deepak Kumar , Dr Anita Kumari / **Tagore Uses of Language and Literatureas Nationalism** / 48
- Dr. Shaizy Ahmed, Mr. Praveen Singh / **English vs. Hindi: Does Language Matters in Career Development** / 53
- Dr. Kavita Singh, Prof. Harpreet Kaur / **Nature Protection Through Indian Vedic Culture** / 60
- Sadhna Jain / **Linguistic Challenges and Quality of Research in Cross-Cultural Research** / 67
- Dr. Zubair Ahmad Bhat / **From Theory to Practice: An Approach to the Importance of English Language in Contemporary India** / 73
- Dr. Santanu Saha / **"From Margin to Mainstream": An Inquiry into the Select Poems Written by Indian Women Poets in English** / 80
- Md Rashid Iqubal Siddique, Dr Anita Kumari / **Question of Language & New Age Journalism** / 85
- Dr. Reena Kapoor / **Marginalization of a Language and Ensuing Cultural Shift** / 92
- Pinku Jha / **The Complex Web of Language, Welfare and the Politics: A Critical Analysis** / 97
- Dr. Sojia John / **Status of Infusion of EE concepts in VIII th Standard Language Text Books of Kerala** / 103
- Priteesh Kumar / **National Education Policy2020 in the upgradation of Indian languages** / 115
- Anju Khandelwal, Avanish Kumar / **Scientific and Technical Knowledge: In View of Indian Languages** / 122
- Dr. Chetna Sharma / **Role of Hindi In The Resurrection of National Consciousness** / 132
- Shirsak Ghosh / **The power of language in Rudyard Kipling's selected poems** / 138

- Vandana Gaur Vashisht / **The status of the English language in the wake of NEP2020** / 143
- Ekta Verma **/ World Literature Today magazine and representation of Hindi** / 149
- Dr. Smitha Eapen / **Weblish –The Shortened Language: Rose or Thorn** / 155
- A.P. Charumathi, Dr. M. Premavathy / **Gleanings of Feminist Ideas in Sudha Murty's Dollar Bahu** / 160
- Dr. Chandrima Sen / **Reading Queer in Manju Kapur's Novel, *A Married Woman*** / 166
- Dr. V. Vinod Kumar, S. Bharath / **Investigating the Functions of Metacognitive Strategies in Second Language Acquisition** / 173
- Dr. M. Premavathy / **Picture of Rural Life in Thomas Hardy's Far*From The Madding Crowd*** / 180
- G. Vijayarenganayaki, Dr.T.S. Ramesh / **The Metamorphosis from Deflation to Inflation: An Inquiry of the Economic Transmutation in Thrity Umrigar's *The Secrets Between Us*.** / 185
- Dr. V. Sri Ramachandran / **A Study of human psychology in *High Noon, (Utchi Veyil*) by Indira Parthasarathy translated by Mr. M. R. Sivaramakrishnan** / 192
- Sudhir Sudam Kaware, UshaTiwari, Akhilesh Kumar Gupta / **A Study the Use of Social Networking Sites For Educational Purposes of Undergraduate Students** / 197
- Dr. R. Suresh Kumar / **Portrayal of Women and Transgenders In select Plays of Maheshdattani /** 209
- Dr. Garima Jain / **A Reading of Amiatv Ghosh's *The Hungry Tide* through the Prism of Cosmopolitanism** / 216
- A. Jesu Steephan Samy, Dr. S. Kirubhakaran / **Surrogate Colonialism in Ngugi WaThiango's *Matigari*** / 223
- R. Ramya Priyadharshini / **Numbness and Mortification of Igbo Enigmas in Achebe's *Things Fall Apart*** / 229
- C. Ramesh, Dr. N. Ramesh / **Eco-feminism and Social Perspectives in Barbara Kingsolver's *Flight Behavior*** / 235
- Dr. K.M. Kamalakkannan / **Arthur Miller's Theme of Masculine and Feminine Sensibilitis** / 241

- K.Mekala, Dr.N.Gunasekaran / **Comparative Picture of Cultural Conflict in the Novels of Vikram Seth** / 245
- Mr. T. Pasupathi / **Magical Realism in *Combat of Shadows*** / 251
- A. Nanthakumar, Dr. C. Govindaraj / **Mahesh Dattani: A Playwright with a Unique Voice and Vision** / 256
- Dr. N. Gunasekaran, Mrs. K.S. Shyalaja / **Positive Approach: Idealism Vs Materialism in Vikas Swarup's The Accidental Apprentice** / 263
- Dr. N. Gunasekaran, R. Santhi / **Women's Quest for freedom in Nayantara Sahgal's The Day in Shadow** / 268
- Dr Junti Boruah / **Reading Folktales from Gender Perspective: An analysis of Assamese folktales *Chilanir Jiyekar Sadhu* (The Tale of the Kite's Daughter) and *Champawati*** / 274
- Lakshmi V, Dr. S. Rasheeda Sulthana / **A Study of History, Politics and Gender Issues in 20th Century Egypt Through the Film *The Yacoubian Building*** / 281
- M. Prakash, Dr. K. Lavanya / **Discord and the Dynamics of Power in Octavia E. Butler's *Wild Seed*** / 285
- Pooja Jaggi, Veena Gupta / **Psycho-social Aspects of Communication in Destructive Cults and Groups** / 289
- R. Sivasankari / **Blacks Encounter Racial discrimination in Chester Himes' *If He Hollers Let Him Go*** / 295
- R.Deepadharshini, Dr. M.Premavathy / **Social Reality and its Caveat in V.S. Naipaul's *A House for Mr.Biswas*** / 300
- Rose Mary Kazhiia / **Re-reading the Mao folktale of *Akajii Ye Ariijii Ko*** /305
- Ms. Mini Srivastava, Prof. (Dr.) Arvind P. Bhanu and Ms. Divita Khanna/ **An Empirical Study on Social Media Users'Perception, Experience and Behavior in India** / 310
- Pardeep, Prof Manjeet Rathee / **Many Million Unconscious Minds Throb Along when a Gajban Goes Fetching Water: Analysis of a Folk Song** /320
- A. Yogaraj, Dr. M. Kavitha/**Insightful of Unified Heterogeneity in Rohinton Mistry's *Such a Long Jounney*** / 327
- A. Vasanthi, Dr. M. Noushath / **Dual Religions and Cultural Confrontation – Kamala Markandaya's Perception** / 335

- **Jisha John / Reimagining Memory: Contemporary Literary Trends in Memory Studies and Indian Writing** / 342
- G.Meshak Devakaram, Dr. K.S. Anish Kumar / **The Paradox of Patriarchal Code: A Feminist Readingof Prostitution in Nawal El Saadawi's Woman at Point Zero** / 351
- Bigrai Basumatary, Dr. Rustam Brahma / **Critiquing America's War on Terror: A Study of Nadeem Aslam's *The Blind Man's Garden*** / 358
- Dr. Shinam Batra, Dr. Sunil Kumar / **Education 5.0: Opportunities and Challenges** / 362
- Ankita Singh / **Critical and theoretical perspectives on digitized material, including participation, and crowdsourcing, for content development in Indian Education-based apps.** / 373

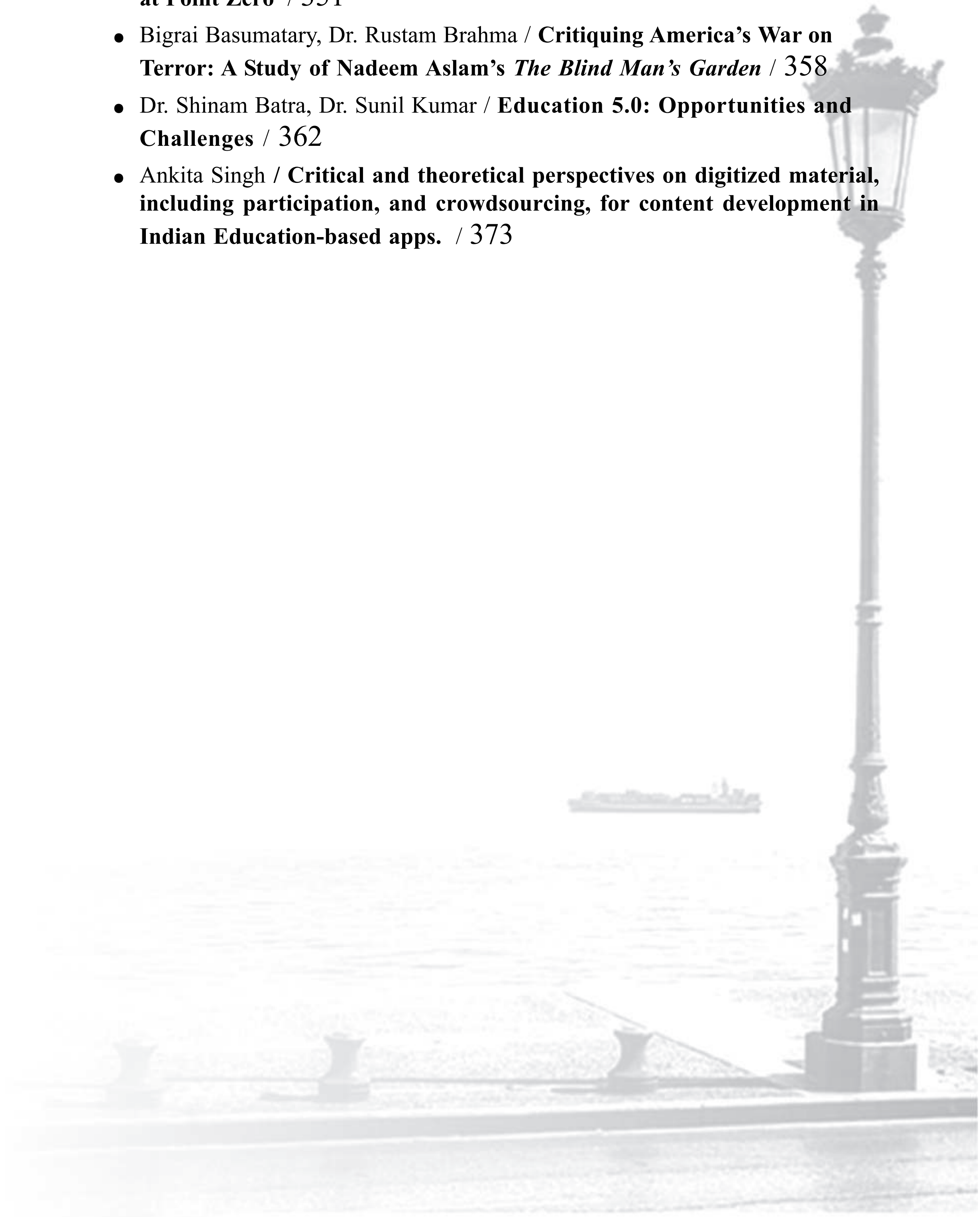

संपादकीय

राष्ट्रबोध का नवजागरण और नवभारत

भारत एक उत्सवधर्मी देश है और यही उत्सवधर्मिता हमें विश्व की अन्य संस्कृतियों से समृद्ध बनाती है और अलग दिखाती है। परंतु आज मैं भारत के किसी सांस्कृतिक त्योहार या अध्यात्मिक अनुष्ठान की बात नहीं कर रहा हूं बल्कि मैं उस विषय विशेष पर बात करना चाहता हूं जिसे हम नया भारत कह रहे हैं, जिसे हम बदलता हुआ भारत कह रहे हैं, जिसे हम विकास की ओर अग्रसर भारत कह रहे हैं, भविष्य में विश्व का मार्गदर्शन करने वाला भारत कह रहे हैं।

यथार्थ में अगर हम बात करें तो 21वीं सदी का दूसरा दशक भारत के नवभारत बनने के बीज का वर्ष है। सन 2014 में हुए राजनीतिक परिवर्तन से अनेक वर्जनाएं टूटी है, अनेक विचारधाराएं धूल धूसरित हो गई हैं। एक ओर राष्ट्रवाद का उदय देश के हर वर्ग में देखने को मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत से भारत के लोगों का नवजुड़ाव ही नवभारत की नीव का पत्थर बनने वाला है। विकसित भारत की परिकल्पना और 2047 में स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष के लिए जो सपने देखे गए हैं और दिखाए गए हैं आज उनके बीच घटने वाली घटनाओं का आकलन करने का समय है। अमृत महोत्सव के इस काल में सत्यनिष्ठा के साथ अगर राष्ट्र का आकलन किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि विगत 75 वर्षों में देश विश्व के अन्य विकसित देशों के समकक्ष खड़ा हो जाता, परंतु ऐसा नहीं हुआ या फिर स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो ऐसा होने नहीं दिया गया।

मैं यह नहीं कह सकता कि स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र में विकास नहीं हुआ है परंतु विकास जिस गति से, जिस निष्पक्षता से और जिस इमानदारी के साथ होना चाहिए था वह बिलकुल नहीं हुआ है। राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार विकास करना तर्क हो सकता है परंतु किसी भी राष्ट्र के भविष्य के आकलन के अनुसार उस राष्ट्र का विकास करना ही सत्यनिष्ठा से राष्ट्र की सेवा है ।

भारत ही नहीं किसी भी राष्ट्र की मूल संचेतना को अगर समाज में जागृत नहीं किया जाएगा तो उसका स्वाभिमान स्वतः ही समाप्त हो जाता है। भारत में तो भारतीयों के स्वाभिमान को बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से समाप्त करने की प्रक्रिया अपनाई गई।

स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा पद्धति इस हिसाब से विकसित की गई ताकि एक वर्ग विशेष को विशेष लाभ हो और भाषा के संदर्भ में भी ऐसी व्यवस्था की गई किस शासक और जनता की भाषा अलग अलग रहे।

स्वतंत्रता के पश्चात अत्यंत नियोजित माध्यम से भारत की मूल संस्कृति धर्म और अध्यात्म को पाठ्यक्रमों से लेकर समाज तक से गायब करने की प्रवृत्ति बनाई गई। इस प्रवृत्ति के कारण वामपंथ जैसी विचारधारा ने अपनी पकड़ बना ली, विशेषकर शैक्षणिक संस्थाओं और शैक्षणिक व्यवस्थाओं पर। इसका परिणाम यह हुआ कि हम साधारण भारतवासी अपने स्वाभिमान से दूर हो गए, अपने इतिहास से दूर हो गए, अपनी गौरवशाली ज्ञान परंपरा से दूर हो गए और अपने सांस्कृतिक चेतना से दूर हो गए। इस नियोजन को और शक्ति तब प्राप्त हो गई जब इस देश में सेकुलरिज्म अर्थात धर्मनिरपेक्षता नाम के शब्द का प्रयोग संवैधानिक माध्यम से किया जाने लगा। मुझे आज तक यह बात समझ नहीं आई है कि जब व्यक्ति धार्मिक होता है तो कोई भूमि या कोई भूभाग धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकता है।

यह धर्म ही तो था जिसकी वेदना हमें 1947 में सहनी पड़ी और एक बड़ा भूभाग भारत के हिस्से से, भारत के स्वाभिमान से कटकर अलग हो गया। अर्थात सेकुलरिज्म अपने आप में एक बड़ा संशय है, कंफ्यूजन है क्योंकि जो व्यक्ति अपने घर में धार्मिक है अपने समाज में अध्यात्मिक है, वह राष्ट्र के स्तर पर धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकता है? इस धर्मनिरपेक्षता की परिकल्पना ने भारत के बुद्धिजीवियों से लेकर भारत की साधारण जनता तक को दो हिस्सों में बांट कर रख दिया। यही सेकुलरिज्म शब्द को संवैधानिक आवरण देने वालों का लक्ष्य था। इसी सेकुलरिज्म की ओट में अनेक ऐसी चेतनाओं का जन्म हुआ जो हमारे भारतीय संस्कार, भारतीय परंपरा, भारतीय आस्था और भारतीय उत्सव धर्मिता के लिए ठीक नहीं था। पर वोट की राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया जहां एक विशेष वर्ग अपने धार्मिक उन्माद और कट्टरता के कारण स्वयं को अल्पसंख्यक श्रेणी में रखकर सभी प्रकार की राष्ट्रीय सुविधाओं का उपयोग उपभोग करता रहा, वहीं, दूसरी ओर बहुसंख्यक हिंदू समाज राजनीति का ऐसा शिकार हुआ कि दलित महादलित हो गया, आदिवासी महाआदिवासी हो गया और उपेक्षित हो गया। हिंदू होते हुए भी हिंदुओं ने कभी इनकी सुध नहीं ली जिसका परिणाम यह हुआ कि इस वर्ग में बहुत तेजी से धर्म परिवर्तन जैसी कुरीतियां स्वीकार्य हो गई। दरअसल, सेकुलरिज्म के परदे के पीछे छुपा हुआ एजेंडा भी यही था जो धीरे–धीरे संवैधानिक डंडे के माध्यम से देश पर लागू किया जा रहा था। जेएनयू से लेकर एएमयू तक और कई अनेक महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों ने स्वयं को इस देश का सबसे बुद्धिजीवी वर्ग घोषित कर दिया था। यही वर्ग नीति नियंता बन गया था और इसी वर्ग से निकले हुए लोग भारत के लोकतंत्र को अपने हिसाब से विश्व में लज्जित कर रहे थे। हमारी आंखों में अंग्रेजी के सपने पल रहे थे और हमारे अपने ही अपने धर्म संस्कार और परंपराओं के विरुद्ध आग उगल रहे थे। जितने सुनियोजित और सुव्यवस्थित रूप से इस कार्य को अंजाम दिया गया यह हम सबके लिए एक शोध का विषय है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारी छवि एक गरीब देश की बन गई। ऐसे देश की जहां न्यायालय में न्याय नहीं मिलता, शिक्षा व्यवस्था चरमराई हुई है, लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिलता। ऐसा करने से एक विशेष वर्ग लंबे समय तक शासक के रूप में भारत पर राज करता रहा, अपने हिसाब से शिक्षा नीति बनाता रहा और अपने हिसाब से भारतीय संस्कृति को तोड़ता मोड़ता रहा, भारत के गौरवशाली इतिहास को मिटाता रहा।

परंतु संपूर्ण हुए 75 वर्षों में हिंदू, हिंदुत्व, ज्ञान गायत्री, गंगा, गीता की बात भी कहीं न कहीं जीवित रही। बहुसंख्यक समाज में ऐसे लोग थे जिन्होंने अपनी सनातन संस्कृति और सनातन ज्ञान परंपरा को बचाए रखने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इस श्रेणी में अनेक व्यक्तियों के भी नाम लिए जा सकते हैं परंतु मुख्य भूमिका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की रही जो अपने अथक प्रयास से भारतीय जनमानस में अपने धर्म–अध्यात्म के प्रति, राष्ट्र के प्रति और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के प्रति जागृति करती रही। अनेक विघ्न बाधाओं से संतुलन स्थापित करते हुए संघ ने राष्ट्रीय चेतना की निर्मिती में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

नव भारत की परिकल्पना,राष्ट्रवाद का उदय और राजनीतिक व्यवस्था, राष्ट्रवाद के साथ सांस्कृतिक चेतना की अनुभूति, आदिवासी हिंदुओं से लेकर दलित हिंदुओं तक की स्थिति को समझे बिना तथा सेकुलरिज्म से दो कदम आगे की राजनीति और भविष्य के भारत में कमजोर पड़ते सेक्युलरिज्म के भविष्य को समझे बिना देश के आत्मगौरव को बढ़ाना कठिन होगा।

भाषा, संस्कृति और साहित्य के नवाचार के साथ–साथ इतिहास का नवलेखन करने के लिए हमें अतीत में लौटना होगा। क्योंकि अतीत के अनुभवों में ही भविष्य की कल्पना छुपी होती है। हमारा अतीत जितना गौरवशाली है हमारा भविष्य उतना ही समृद्ध हो सकता है। शर्त बस इतनी है कि आपको आपके गौरवशाली अतीत के बारे में जानकारी हो।

आज के समय में सबसे महत्त्वपूर्ण है नवभारत की परिकल्पना। एक ऐसे भारत की परिकल्पना जो शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर आत्मनिर्भर हो जाए। कल्पना को संपूर्ण करने के लिए अनेक विचारधाराएं आपस में टकरा रही हैं परंतु सबसे महत्त्वपूर्ण है भारत की नई पीढ़ी के बीच में राष्ट्रबोध को जागृत करना।

नवभारत के निर्माण में लोकतंत्र के नवाचार को हमें समझना पड़ेगा। नए भारत की दिशा क्या होगी, नए भारत की दशा क्या होगी, इसका आकलन भी करना पड़ेगा और आने वाले 100 वर्षों के लिए एक योजना बनानी पड़ेगी। मैं यह समझता हूं कि नव भारत के निर्माण में लोकतंत्र का नवाचार कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर टिका होगा।

एक और विकट समस्या जो हम सबके बीच में खड़ी है वह है आदिवासियों और दलित हिंदुओं की। दलित शब्द का प्रयोग कब से भारतीय संस्कृति में प्रचलित है इस विषय पर बात करने का कोई गंभीर औचित्य नहीं है परंतु दलित शब्द का राजनीतिक

प्रयोग जिस स्तर पर किया गया है और जिस प्रकार से उन्हें भारत की मूल धारा यानी हिंदुत्व के एजेंडे से अलग किया गया है यह शोध का विषय है। ऐसी कौन सी परिस्थितियां थी जिसमें हिंदू समाज अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपने ही धर्म को मानने वाले लोगों को अलग करने का कार्य करती है।

वर्ग व्यवस्था के विस्तार से जाति व्यवस्था का जन्म हुआ। जाति व्यवस्थाओं का आधार सामान्यतः पूरे देश में व्यवसाय आधारित व्यवहार ही रहा। किसी व्यवसाय विशेष या शिल्प विशेष से जुड़े परिवार धीरे–धीरे कुटुंब में और अपने कुटुंब तक संबंधित व्यवसायिक जातियों में विकसित होते चले गए। तेल का व्यवसाय करने वाले तेली कहलाए, सोने के गहने बनाने वाले सुनार, पुष्पहार बनाने वाले माली, तो चर्म सामग्री के निर्माणकर्ताओं को चर्मकार कहा गया। इसी प्रकार मिट्टी के कलश बनाने वाले कुम्हार, लकड़ी के सामान की निर्मिति करने वाले बढ़ई और समाज में मनुष्यों के द्वारा फैलाई गई गंदगी को निस्तारित करने का काम करने वालों को मेहतर कहकर पुकारा गया। अर्थात समाज में वे सभी लोग किसी न किसी विशेष शिल्प या कौशल के धनी थे जिसके कारण ही उनका नामकरण किया गया था। इसे हम विशुद्ध रूप से व्यवसायिक व्यवस्था के रूप में देख सकते हैं जबकि बीसवीं और 21वीं सदी में जब हम संचार क्रांति के युग में जी रहे हैं और वैज्ञानिक रूप से इतने समृद्ध हो चुके हैं कि पूरी दुनिया एक गांव के रूप में विकसित हो रही है। ऐसी स्थिति में भारत की समृद्ध परंपराओं का दलित अथवा वंचित के रूप में पहचान करना शर्मनाक स्थिति है। विश्व के अनेक विकसित देशों में इस प्रकार के कार्य करने वाले लोगों का सम्मान उतना ही होता है जितना विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले एक शिक्षक अथवा एक बड़े व्यवसायी का। अर्थात विश्व की अन्य व्यवस्थाओं ने हमारी इन व्यवस्थाओं से स्वयं को समृद्ध करने का कार्य किया है और इस व्यवस्था के जनक भारतवंशियों ने दलित और महादलित जैसे विशेषण लगाकर समाज की मूल धारा से काटने का कार्य किया है। निश्चित रूप से इस वर्ग को स्पष्ट रूप से कहें तो इस हिंदू वर्ग को अपनी राष्ट्रीय अस्मिता, चेतना। और व्यवस्था से सफलतापूर्वक जोड़ना ही लोकतंत्र का नवाचार होगा। यही स्थिति आदिवासियों के लिए भी है परंतु वह अपने कौशल या किसी विशेष ज्ञान के लिए नहीं जाने जाते थे बल्कि आदिवासियों के लिए सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि प्रकृति और पर्यावरण के प्राकृतिक संरक्षक के रूप में विश्व के समस्त भूभाग पर आदिवासियों की उपस्थिति रही है और है। अर्थात आदिवासी मनुष्यों के द्वारा निर्मित कोई वर्ग नहीं है बल्कि इस प्रकृति की नैसर्गिक चेतना को बचाए रखने के लिए जिस वर्ग की उत्पत्ति हुई है उसे हम आदिवासियों के रूप में जानते हैं। उनकी अपनी न्यायिक व्यवस्था है उनकी अपनी सांस्कृतिक अवधारणाएं हैं और निश्चित रूप से भारत जैसे विशाल देश में आदिवासियों की भी एक समृद्ध परंपरा रही है। हमारे लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें समस्त लोकतांत्रिक अधिकारों से संपर्क करके उनके सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को संरक्षित रखा जाए तथा उनके मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं को भी पूर्ण किया जाए। मैं यह समझता हूं कि जब तक लोकतंत्र में

बहुसंख्यक समाज की चिंता समरस भाव से नहीं की जाएगी तब तक लोकतांत्रिक नवाचार सुनने में तो अच्छा लगेगा परंतु यथार्थ के धरातल पर बहुत दूर।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसे शब्दों का प्रयोग इतने व्यापक स्तर पर किया गया कि भारत की समस्त जनता अपने मूल आधार से विचलित हो गई। यह शब्द कुछ और नहीं बल्कि सेकुलरिज्म, धर्मनिरपेक्षता है। इस शब्द के अर्थ को भारत के संदर्भ में कैसे परिभाषित किया जाए, यह एक विकट समस्या है। परंतु इस शब्द को संवैधानिक अधिकार प्राप्त है जिसके कारण एक बड़े राजनीतिक दल नहीं, हिंदुओं और हिंदुत्व से संबंधित अनेक जनजातियों, बिरादरियों और परंपराओं को मानने वाले लोगों को मतिभ्रम कर दिया। भ्रम की स्थिति ऐसी उत्पन्न हुई कि हिंदुओं में खुद को तोड़ लेने की, बांट लेने की होड़ मच गई। अभी तक यह नहीं कहा जा सकता कि हिंदुओं ने स्वयं को बांटने की प्रक्रिया को बंद कर दिया है। अर्थात अभी और जारी है परंतु गति जरूर धीमी हुई है। इसलिए मैं अब कह सकता हूं कि सेकुलरिज्म का पर्दा धीरे–धीरे गिर रहा है। सेकुलरिज्म भारत के लोकतंत्र में एक ऐसे नाटक की तरह उभरा और इस प्रकार से उस का मंचन किया गया कि सेकुलरिज्म के आवरण के भीतर लोग अपनी भारतीयता को ढूंढने लगे और अपने मूल सांस्कृतिक विरासत पारिवारिक संरचना धार्मिक आस्था, अध्यात्मिक अनुष्ठानों से एक झटके में अलग हो गए। इस नाटक में देश का कितना नुकसान हुआ है इसका आकलन सरल नहीं है परंतु अगर किसी भूल को भूल समझ कर इसे ठीक करने की दिशा में आगे बढ़ने का समय दिखाई पड़ता है तो वह वर्तमान है। अतीत में हुई भूल को वर्तमान में ही ठीक किया जा सकता है ताकि भविष्य सुरक्षित हो। वर्तमान सरकार इस बिंदु पर किस प्रकार चिंतन कर रही है इस बात से मैं अवगत नहीं हूं परंतु भारत की अस्मिता और भारत की मूल पहचान को आने वाली सदियों के लिए अगर संरक्षित करना है तो निश्चित रूप से हमें इस शब्द से भी छुटकारा पाना होगा जैसे कश्मीर में धारा 370 से हमने छुटकारा पाया है।

आइए ऐसे ही कुछ और बिंदुओं पर चर्चा कर लेते हैं।

सर्वप्रथम भारत के जनमानस विशेषकर नई पीढ़ी में राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च चेतना की

सर्वव्यापकता को जन्म देना होगा या फिर उसे स्थाई रूप से उनके हृदय में स्थापित करना होगा। दूसरे बिंदु के रूप में हमें यह तय करना होगा कि भारत राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को आत्मिक और भौतिक विकास के भरपूर अवसर प्राप्त हों और उनकी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आस्था बनी रहे। तीसरे बिंदु के रूप में भारत की नई पीढ़ी को ज्ञान और आध्यात्मिक अनुशासन तथा धैर्य और उपासना के विविध और विराट स्वरूप से परिचित कराना होगा तभी समाज में समरसता का निर्माण हो सकता है तभी समाज में सार्वभौम आस्था की निर्मिति हो सकती है। चौथे बिंदु के रूप में हम इसे इस प्रकार देख सकते हैं कि भारत की आंतरिक संगति में लोकतांत्रिक आस्था किस रूप से प्रकट हो रही है। यह एक प्रश्न भी है और इस प्रश्न में लोकतंत्र की निर्मिति और भविष्य के लोकतंत्र की स्वीकृति का उत्तर भी। पांचवें महत्त्वपूर्ण बिंदु के रूप में हम भारत की पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, अनुशासन को परंपरागत मर्यादा के अंतर्गत

कैसे विकसित कर सकते हैं, इस ओर ध्यान देना होगा ताकि सनातन संस्कृति और सनातन ज्ञान परंपरा की सर्वव्यापी चेतना का बोध नई पीढ़ी से खंडित न हो।

इन पांचों बिंदुओं को समग्र रूप से अगर देखा, समझा और कहा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के प्रति सद्भावना की उत्पत्ति एक भारतवासी होने के नाते उसके आत्मगौरव का आधार बने और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं की अभिव्यक्ति का माध्यम।

इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी शैक्षणिक व्यवस्था की है। शिक्षा ही वह संस्कार है जो व्यक्ति को अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दायित्व के प्रति सचेत कर देता है। शिक्षा अगर राष्ट्रहित में दी जा रही हो तो राष्ट्ररक्षक तैयार होते हैं और अगर शिक्षा की पद्धति विषय वस्तु अप्रमाणित और विकृत हो तो उसी राष्ट्र के लोग अपने ही राष्ट्र के प्रति संशय की स्थिति में रहते हैं या फिर द्रोह भी करते हैं।

अर्थात राष्ट्र के विकास और विश्वास को जागृत रखने में शिक्षित वर्ग का सबसे बड़ा योगदान होता है । भारत जैसे देश के लिए जहां हमारी अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक अवधारणाएं विद्यमान हैं और वैश्विक स्तर पर स्वीकृत भी हैं, एक निश्चित लोक तथा सांस्कृतिक–शैक्षणिक वातावरण की निर्मिति से ही लोक–व्यवस्था में नवाचार की उत्पत्ति हो सकती है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में किसी भी राष्ट्र के राष्ट्र होने के लिए यह अपरिहार्य है कि उसकी राजनीतिक संस्थाएं, विविध प्रशासनिक संस्थाएं, न्यायिक व्यवस्था ज्ञान परंपरा और अपनी ही संस्कृति और भाषा से निर्मित, संचालित और पोषित होती रहें ।

सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत किए गए प्रावधानों को अगर निष्ठापूर्वक शैक्षणिक संस्थाओं पर लागू किया जाए तो स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन हो सकता है। हजारों वर्षों से भारतीय शिक्षा परंपरा भारत के ज्ञान प्रवाह को प्रवाहित बनाए रखती है। कतिपय कारणों से जो भी अपभ्रंश या दुविधा की स्थिति भारतीय जनमानस में उत्पन्न हुई थी उसे समाप्त करना ही वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण नवाचार होगा। जब तक ऐसी न्यायिक व्यवस्था, सामाजिक, सांस्कृतिक के साथ–साथ शैक्षणिक व्यवस्था को हम नहीं बदलते हैं, तब तक सही अर्थों में प्रभुतासंपन्न राष्ट्र के स्वरूप को बचाए रखना कठिन होगा।

–डॉ. आशीष कंधवे
+91–9811184393

निज भाषा का अभिमान राष्ट्र उन्नति का सोपान

–डॉ. सुप्रिया संजू

महात्मा गाँधी ने मातृभाषा की श्रेष्ठता को समझाते हुए कहा है, ''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही जरूरी है, जितना की बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध। बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है, इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृभूमि के विरुद्ध पाप समझता हूँ।'' हमारे राष्ट्र भक्तों के इस प्रकार के विचारों ने राष्ट्र चेतना के अलख को अब तक जगा रखा है।

भाषा विचारों की वाहिका शक्ति है। वैचारिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। मानव के लिए वरदान है जिसके माध्यम से वह अन्य प्राणियों की अपेक्षा अपना विशिष्ट एवं श्रेष्ठतम स्थान रखता है। सभ्यता व संस्कृति के विकास के परिणाम स्वरूप भाषा राष्ट्रीय व सांस्कृतिक चेतना का मूलभूत आधार सिद्ध हुई है। किसी भी राष्ट्र के एकीकरण में उसकी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा न केवल संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण माध्यम है बल्कि वह हमारी पहचान का भी एक अंग है। यह पहचान बड़े स्तर पर राष्ट्र की अस्मिता का हिस्सा हो जाती है। विद्वानों का कहना है कि भाषा का व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ओर वह व्यक्तित्व के विकास और अभिव्यक्ति का माध्यम है तो दूसरी ओर उसके सामाजीकरण का साधन, एक ओर वह समाज में संप्रेषण व्यवस्था का उपकरण बनती है तो दूसरी ओर व्यक्तियों को सामाजिक वर्गों में बांधने और उनसे विलगाव करने का हेतु, एक ओर वह राष्ट्रीय भावना का संवाहक बनती है तो दूसरी ओर एक ही राष्ट्र के विभिन्न भाषाई समुदायों में विषम भाव उत्पन्न करने वाली चेतना। अतः भाषा का राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

इस शोध पत्र में निज भाषा अर्थात राष्ट्र भाषा के महत्त्व को विशेष रूप से समझाते हुए यह बताने का प्रयास किया गया है कि जब तक हम अपनी भाषा का सम्मान नहीं करेंगे तब तक हम अपने देश की उन्नति सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं। अतः हमें अपनी भाषा पर स्नेह और गर्व होना चाहिए। मैथिलीशरण गुप्त ने भी कहा है

जिसको न निज भाषा तथा निज देश पर अभिमान है।
वो नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है।

–मैथिलीशरण गुप्त

बीज शब्द – राष्ट्र, मातृभाषा, देश, शिक्षा, अभिमान, सांस्कृतिक चेतना, उन्नति

परिचय

भाषा विचारों को व्यक्त करने का एक प्रमुख साधन है। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की अभिव्यक्ति को व्यक्त किया जाता है। भाषा की सहायता से ही किसी समाज विशेष या देश के लोग अपने मनोगत भाव अथवा विचार एक–दूसरे पर प्रकट करते हैं। दुनिया में हजारों प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। हर व्यक्ति बचपन से ही अपनी मातृभाषा या देश की भाषा से जुड़ा होता है। भाषा का संबंध न केवल भाषा के सीखने–सिखाने तक ही सीमित है बल्कि उसका राष्ट्र, समाज और शिक्षा से भी गहरा संबंध है। किसी भी देश में एक, दो या उससे अधिक भाषा बोली व समझी जा सकती है। ये सभी भाषाएं राष्ट्रीय, सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी भी राष्ट्र के एकीकरण में उसकी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा न केवल संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण माध्यम है बल्कि वह हमारी पहचान का भी एक अंग है।

हमारे देश में भी भाषा के कई रंग विद्यमान है। विभिन्न जाति, समुदाय और वर्ग के अनुसार भाषा भी भिन्न–भिन्न ही हैं। क्योंकि यह आवश्यक नहीं की इन सभी वर्गों के लोगों की भाषा एक जैसी हो। विद्वानों के अनुसार भाषा का व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ओर वह व्यक्तित्व के विकास और अभिव्यक्ति का माध्यम है तो दूसरी ओर उसके व्यक्ति के सामाजीकरण का साधन, एक ओर वह समाज में संप्रेषण व्यवस्था का उपकरण बनती है तो दूसरी ओर व्यक्तियों को सामाजिक वर्गों में बांधने और उनसे विलगाव करने का हेतु। एक ओर वह राष्ट्रीय भावना का संवाहक बनती है तो दूसरी ओर एक ही राष्ट्र के विभिन्न भाषाई समुदायों में विषम भाव उत्पन्न करने वाली चेतना। अतः भाषा समाज और व्यक्ति की उन्नति का महत्त्वपूर्ण साधन है।

भाषा शब्द संस्कृत के भाष धातु से बना है। जिसका अर्थ है– बोलना। कक्षा में अध्यापक अपनी बात बोलकर समझाते हैं और छात्र सुनकर उनकी बात समझते हैं। बच्चा माता–पिता से बोलकर अपने मन के भाव प्रकट करता है और वे उसकी बात सुनकर समझते हैं। इसी प्रकार, छात्र भी अध्यापक द्वारा समझाई गई बात को लिखकर प्रकट करते हैं और अध्यापक उसे पढ़कर मूल्यांकन करते हैं। सभी प्राणियों द्वारा मन के भावों का आदान–प्रदान करने के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है।

काव्यादर्श के अनुसार, ''यह समस्त तीनों लोक अन्धकारमय हो जाते, यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता हैं।''

''इदमंघतमः कृत्सनं जातेत् भुवन् त्रयम्,
यदि शब्दह्वयं ज्योतिरात्संसार न दीप्यते।''

अध्ययन की पृष्ठभूमि

निज यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक वैभव की स्थापना का प्रथम पायदान निज भाषा अर्थात् मातृभाषा में शिक्षा में ही निहित है। बिना मातृभाषा के ज्ञान और अध्ययन के सब व्यवहार व्यर्थ ही माने गए हैं। अपनी भाषा के विकास में ही हमारा विकास है। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना हमारे कष्टों का निवारण असम्भव है। अतः हमे अपनी भाषा के विकास के लिये अग्रसित होना चाहिए।

अनुसन्धान उद्देश्य

इस शोध का एक मात्र उद्देश्य निज भाषा के महत्त्व को बताना है। हम भारतीय भाषाओं के प्रति गौरव और स्नेह के द्वारा ही भारत को पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित कर सकते हैं। अंग्रेजी या अन्य पाश्चात्य भाषा को हम मात्र ज्ञान के रूप में अपनायें न की अपनी मुख्य भाषा के रूप में।

मुख्य बिन्दु

निज भाषा से तात्पर्य सर्वप्रथम मातृभाषा से है तत्पश्चात अपने राष्ट्र की भाषा से है। मातृभाषा को सर्वप्रथम समझने का प्रयास करें तो यह कहा जा सकता है कि मातृभाषा अर्थात माँ की भाषा। जिसे बालक माँ के सानिध्य में रह कर सहज रूप से सुनता और सीखता है। मातृभाषा को बालक माता–पिता, भाई–बहन अन्य परिवारजनों तथा समाज के बीच रह कर सहज और स्वाभाविक रूप से सीखता है। मातृभाषा मनुष्य के विकास की आधारशिला होती है। मातृभाषा में ही बालक इस संसार में अपनी प्रथम भाषिक अभिव्यक्ति देता हैं।

महात्मा गाँधी ने मातृभाषा की श्रेष्ठता को समझाते हुए कहा है, ''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही जरूरी है, जितना की बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध। बालक पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है, इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृभूमि के विरुद्ध पाप समझता हूँ।'' हमारे राष्ट्र भक्तों के इस प्रकार के विचारों ने राष्ट्र चेतना के अलख को अब तक जगा रखा है।

शोध यह दर्शाता है कि माता–पिता के लिए अपने बच्चे की पहली भाषा का विकास जारी रखना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे दूसरी भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से सीख पाएंगे यदि वह अपनी मातृभाषा विकसित करना जारी रखते हैं।

द्विभाषी बच्चों या व्यक्तियों का मस्तिष्क अधिक लचीला होता है क्योंकि वह अपने मस्तिष्क के दोनों भागों का एक साथ उपयोग करके दो भाषाओं में सूचनाओं को इक्कठा कर पाते हैं। मातृभाषा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है क्योकि मातृभाषा को बनाए रखने से बच्चे को उसकी संस्कृति और विरासत को महत्त्व देने में मदद मिलती है। जब मूल भाषा अच्छे से नहीं सीखी जाती हैं, तो परिवार और अन्य समुदाय के सदस्यों से हमारे महत्त्वपूर्ण रिश्ते खो सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनी मातृभाषा सीखने वाले बच्चे के लिए कई लाभ परिलक्षित होते हैं यथा मातृभाषा बच्चों के लिए अन्य भाषाओं को सीखना आसान बनाती है।

मातृभाषा बच्चे की व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का विकास करती है। मातृभाषा का उपयोग करने से बच्चे को उनकी सोच और कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। मातृभाषा में सीखने वाले बच्चों के लिए आत्म–सम्मान अधिक होता है। परिजनों से सम्बन्ध अधिक मजबूत होता है।

मातृभाषा जितनी महत्त्वपूर्ण है मानव समाज के विकास के लिए, उतनी ही महत्त्वपूर्ण है किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए उसकी राष्ट्र भाषा। मानव के साथ ही भाषा का भी विकास होता आया है। इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम के साथ–साथ समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्त्वपूर्ण साधन है। मैथिलिशरण गुप्त की कविता "जिसको न निज भाषा तथा निज देश पर अभिमान है, वो नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है।" हमें

हमारी राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न करने को प्रेरित करती है। किसी भी राष्ट्र की भाषा उस राष्ट्र को शीर्ष तक ले जाने का कार्य करती है। विदेशी भाषाओं को जानना समझना बस उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना की हमारी सफलता में भाषा रूकावट न बने। किन्तु सर्वप्रथम हमें अपने देश की भाषा पर अभिमान होना आवश्यक है। शुद्धता के साथ हम अपनी राष्ट्र भाषा का प्रयोग कर सके। माना कि शब्दों के आदान–प्रदान से भाषाएं समृद्ध होती हैं, पर क्या हमारी भाषा इतनी दरिद्र है कि हम उसके लिए दूसरी भाषाओं के निरर्थक शब्दों का आयात करें? हमारे देश या यूँ कहे कि किसी भी देश की भाषा स्वयं में एक अत्यंत समृद्ध भाषा होती है। किसी अन्य भाषा के शब्दों को उधार लिए बिना हम अपनी अभिव्यक्तियों को बहुत सरलता से अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में व्यक्त कर सकते हैं।

राष्ट्र की चेतना, उसका स्वरूप, उसका प्रभाव और उसकी गरिमा को प्रतिपादित करने वाली राष्ट्रीय तत्त्व होते हैं। राष्ट्रीय तत्त्वों के अंतर्गत, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रचिन्ह, राष्ट्रभाषा और साहित्य, संस्कृति सभ्यता, रीति–रस, पर्व –त्यौहार आदि आते हैं। इन सभी राष्ट्रीय तत्त्वों की पहचान करने वाला तत्त्व भाषा ही है। इस प्रकार हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र की भावधारा को व्यक्त करने वाली भाषा हमारी निज भाषा है।

भारत वर्ष एक विशाल गणराज्य है। विस्तृत देश होने के कारण इसमें विभिन्नता का होना भी परम स्वाभाविक है। यह विभिन्नता हमें सर्वप्रथम इसमें प्रचलित विविध भाषाओं में दृष्टिगोचर होती है। भारत देश में विद्यमान भाषाओं की बात करें तो भारत में लगभग 22 भाषाएं बोली जाती है, जो अपने आप में अत्यंत ही समृद्ध हैं। इसके अतिरिक्त दुनिया की लगभग सभी भाषाओं की जननी "संस्कृत" हमारी वैदिक, ऐतिहासिक धरोहर भी हमारे पास सुरक्षित है। संस्कृत सिर्फ एक भाषा नहीं है, वह हमारा गौरव व हमारे पूर्वजों की धरोहर है। अतः विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपनी समृद्ध भाषाओं के साथ जोड़कर बोलना हमारी भाषा को कमज़ोर सिद्ध करता है।

स्मरण रहे, "जो व्यक्ति अथवा समाज उधार पर जीवनयापन करता है, वह ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहता। इसी प्रकार जो भाषा उधार के शब्दों पर अवलंबित हो जाती है, उसका अस्तित्व शीघ्र समाप्त हो जाता है। अतः हमें विदेशी भाषाओं के उन शब्दों का प्रयोग–उपयोग करने से भरसक बचना चाहिए।

निष्कर्ष

भाषा को मानवीय विकास का पर्याय माना जाता है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति एवं ज्ञानार्जन के लिए भाषा पर ही निर्भर रहता है। कहा जा सकता है कि समस्त मानवीय गुणों का विकास भाषा के द्वारा ही होता है। मानव समाज के साथ ही भाषा का भी विकास होता आया है। इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं, यह हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्त्वपूर्ण साधन है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास और परंपरा से विछिन्न है।

स्वभाषा के बिना देश की जनता का विकास संभव नहीं। अतः भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए राष्ट्र की भाषा का उत्तरोत्तर प्रगति आवश्यक है क्योंकि राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्र की एकता से संबंध रखता है। संविधान के अंतर्गत भारत को विशाल एकता के सूत्र में पिरोए रखने का संकल्प लिया गया है अतः स्पष्ट है कि राष्ट्रीय एकता की संकल्पना को फलीभूत करने हेतु राष्ट्रभाषा का संवर्धन आवश्यक है। राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा, आस्था व आदर की भावना

ही राष्ट्र व समाज की अस्मिता की कसौटी है। किंतु यह चिंता का विषय है कि वर्तमान समाज में हमारी नई पीढ़ी में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम व श्रद्धा की भावना वैसी दिखाई नहीं देती जैसे कि एक समृद्ध परंपरा वाले राष्ट्र के नागरिकों में अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति होनी चाहिए। जहाँ तक विदेशी भाषाओं के बहुप्रचलन का प्रश्न है तो यह स्पष्ट है कि भाषाएँ सदा ज्ञान प्राप्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। बहु–भाषा ज्ञान से विश्व संस्कृति के व्यापक स्वरूप को समझकर विश्व बंधुत्व की भावना में वृद्धि की जा सकती है। किंतु निज संस्कृति को समझे बिना अन्य संस्कृति का ज्ञान जड़ विहीन वृक्ष की भाँति ही होगा। और निज संस्कृति का गौरव प्राप्त होता है–निज भाषा के ज्ञान से। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा है

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल'

स्पष्ट है कि स्वयं को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने के लिए राष्ट्रभाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है। राष्ट्रभाषा को उसका उचित स्थान न देना मानसिकता दासता का परिचायक होगा। अतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता को पूर्ण अर्थवान बनाने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वर्तमान पीढ़ी और समाज राष्ट्र भाषा के प्रति अपने कर्तव्य बोध का परिचय देते हुए भाषा के विकास और उत्थान हेतु कृत संकल्पित हो जाएं।

संस्कृति भाषा से संरक्षित होती है, साहित्य से प्रसारित होती है। लोक बोलियां भारत माता की आवाज है। लोक बोलियों को जो प्रोत्साहन देते हैं वो सच्चे अर्थों में भाषा के लिए कार्य कर रहे हैं। बोलियां और उपबोलियां एक जगह होंगी तो ही नई शिक्षा नीति सफल होगी। आवश्यक है मातृभाषा में शिक्षण सामग्री के लिए कार्य करना। लोक भाषाओं में अपार ज्ञान संपदा है जो उपेक्षा के कारण नष्ट हो रही है। पश्चिम की शिक्षा नीति से हमारी भाषा के खो गए आत्मगौरव को जगाना होगा। लोक भाषा को प्रोत्साहन देना। लोकसाहित्य और कलाकारों को समाज का संरक्षण जरूरी है। मातृभाषा का सम्मान राष्ट्र गौरव के हेतु परम आवश्यक है। क्योकि मातृभाषा को अपनाना भी स्वदेशी का संकल्प है। भाषा मजबूत होगी तो संस्कृति का संरक्षण होगा और देश मज़बूती से एकता के सूत्र में बंधेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

राष्ट्र भाषा पर विचार, आचार्य चंद्रबली पांडेय
राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास, सं. गंगाशरण सिंह
राष्ट्रभाषा आंदोलन, गो. प. नेने
हिंदी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी।
भाषा–विवेचन, डॉ. भागीरथ मिश्र
राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधी जी, रामधारी सिंह दिनकर
हिंदी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा की ओर, डॉ. सुरेश माहेश्वरी।

❒❒❒

Assistant Professor. SANSKRIT
Amity Centre for Sanskrit and Indic Studies, Amity School of Liberal Arts, Amity University Haryana, Mob: 9818244235 Email - ssanju@ggn.amity.edu, supriyasanju@gmail.com

इक्कीसवीं सदी के भाषाई निर्माण में हिंदी की सहभाषाओं की भूमिका

–अचला वर्मा

भारत में भाषाओं की सहवर्तिता इतनी प्रगाढ़ है कि न केवल इनका साहित्य एक दूसरे से प्रभावित है बल्कि इन भाषाओं की शब्दावलियाँ, मुहावरे, भाव, मनोदशा, सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष एवं सम्पूर्ण जीवन बोध भी एक–दूसरे पर आश्रित हैं। इसमें कौन दाता है और कौन गृहीता इसका भेद कर पाना मुश्किल है। वैसे भी भारतीय परंपरा में सदैव से देने की प्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से व्यापक दृष्टि को दर्शाती रही है। आश्चर्य की बात नहीं है कि यही अनुकरण भाषाओं की आपसी साझेदारी में भी झलकता है।

हम ऐसे देश में निवास करते हैं जहां के बारे में सदियों से प्रचलित रहा है कि 'कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी'। जाहिर है ऐसी भारतीय जीवन पद्धति में निर्वाह करने वाले यहाँ के जनमानस के भीतर भाषाओं के प्रति स्वीकृति एवं सहिष्णुता का भाव ही इतने लम्बे अरसे से इसे मज़बूत बनाए हुए है। भारत की समस्त भाषाएं आपस में इतनी गहराई से संपृक्त हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी के वर्तमान युग में भाषिक विकास की पारस्परिक श्रृंखला से उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। यद्यपि ऐसा किया भी जाए तो उनके अस्तित्व को बचाना एक चुनौतिपूर्ण प्रश्न बन सकता है।

भारत में भाषाओं की सहवर्तिता इतनी प्रगाढ़ है कि न केवल इनका साहित्य एक दूसरे से प्रभावित है बल्कि इन भाषाओं की शब्दावलियाँ, मुहावरे, भाव, मनोदशा, सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष एवं सम्पूर्ण जीवन बोध भी एक–दूसरे पर आश्रित हैं। इसमें कौन दाता है और कौन गृहीता इसका भेद कर पाना मुश्किल है। वैसे भी भारतीय परंपरा में सदैव से देने की प्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से व्यापक दृष्टि को दर्शाती रही है। आश्चर्य की बात नहीं है कि यही अनुकरण भाषाओं की आपसी साझेदारी में भी झलकता है।

इसी तर्ज पर यदि हिंदी की बात की जाये तो हम जानते हैं कि हिंदी भाषा को तमाम भाषाओं व क्षेत्रीय बोलियों ने मिलकर पूरित एवं पोषित किया है। यही कारण है कि हिंदी अपनी भाषिक एवं साहित्यिक विकास की लम्बी यात्रा को पूरा करते हुए वर्तमान युग की एक समृद्ध भाषा बनकर उभरी है। हिंदी भाषा की विशिष्टता इस अर्थ में सर्वाधिक रही है कि इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के बरक्स अधिक समन्वयात्मक क्षमता का परिचय मिलता है।

आज हिंदी का जो स्वरूप हम देखते हैं वह खड़ी बोली हिंदी का है। बल्कि तथाकथित सभ्य समाज की मानक खड़ी

बोली का। जहाँ भारतीय संविधान के द्वारा इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है और वहीं वृहद् रूप से यह संपर्क भाषा के रूप में भी स्वीकृत हो चुकी है। सरकारी कार्यालयों से लेकर शासकीय कार्यविधियों में भी खड़ी बोली हिंदी भाषा का ही प्रयोग होता है। लेकिन हिंदी का इतिहास केवल खड़ी बोली का इतिहास नहीं है। बल्कि खड़ी बोली तो विधिवत रूप से लगभग डेढ़ सौ या पौने दो सौ वर्षों पूर्व से ही प्रचलित हुई है। इसके बावजूद सामान्य अर्थों में आध ुनिक साहित्य केवल खड़ी बोली का साहित्य ही मान लिया जाता है।

ध्यातव्य है कि खड़ी बोली के भाषाई निर्माण के पीछे दरअसल हिंदी की कई सहभाषाओं का योगदान रहा है जिनको यदि इस ऐतिहासिक परंपरा में शामिल न किया जाये तो हिंदी की झोली में मात्र यही कुछ वर्षों का इतिहास बचेगा जो खड़ी बोली में लिखा गया। बगैर इन सहवर्ती भाषाओं के हिंदी साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन सहभाषाओं की संख्या दो दर्जन से भी अधिक हैं और इनका इतिहास भी काफी पुराना है। वहीं हिंदी भाषा की भाषिक प्रक्रिया तकरीबन 1000 ई. से भी पहले लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट की परंपरा से ही चली आ रही है। जिसको आगे बढ़ाने का काम मुख्यतः अवधी, ब्रजभाषा, भोजपुरी, बुन्देली, बघेली, राजस्थानी, पहाड़ी भाषाओं का रहा है यही नहीं हिन्दुस्तानी और उर्दू भी इसमें कहीं भी पीछे नहीं है। हिंदी की व्यापकता का यही प्रमाण है। क्योंकि यहाँ के लोग अपने भाषिक संप्रेषण में इन भाषाओं की शब्दावलियों, मुहावरों, कहावतों आदि का आदतन प्रयोग करते हैं। यह उनके अवचेतन में इतना घुल–मिल गया है जिसकी वजह से ही भाषाई व्यापार सुगमतापूर्वक होता रहा और विकास की धारा गतिशील होती गयी। वस्तुतः भाषा एवं साहित्य दोनों के स्तरों पर हिंदी की विभिन्न सहभाषाओं तथा उनके ऐतिहासिक भाषा रूपों के माध्यम से हिंदी की अनेकार्थी संकल्पना आज हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है।

स्पष्ट करना चाहती हूँ कि यहाँ इन भाषाओं को हिंदी की 'सहभाषा' कहा जा रहा है। अन्य प्रयोग में इसे हिंदी की 'विभाषा' भी कहा जा सकता है। क्योंकि इसकी साहित्यिक–सांस्कृतिक भूमिका को देखते हुए इन भाषाओं को बोली मात्र कहकर इनके महत्त्व को समेटा नहीं जा सकता। 'सहभाषा' कहें अथवा 'विभाषा' यह दोनों ही शब्द उससे कदम से कदम मिलाकर पथसाथी की तरह बराबरी का भाव अभिव्यक्त करते हैं। जबकि बोली निर्धारित भौगौलिक सीमाओं में प्रचलन की ओर संकेत करती है। ऐसे में इनके वृहद् योगदान को देखते हुए इनके महत्त्व को नाकारा नहीं जा सकता।

हालाँकि कुछ भाषाओं में भले ही शिष्ट साहित्यिक एवं प्रकाशित लेखन अधिक न हुआ हो लेकिन लोक साहित्य में इनका लेखन भरपूर संख्या में प्राप्त है। यही नहीं आज भी इन सहभाषाओं के अंतर्गत अनेक विधाओं, काव्यप्रवृत्तियों एवं नवीन विचारों से युक्त साहित्य की भिन्न–भिन्न धाराओं में सृजन हो रहा है। विकास के पथ पर हिंदी की सहभाषाओं का योगदान इतना रहा जिसने समय–समय पर हिन्दी के अंचल को भरे रखा। कवि–लेखकों एवं उनकी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से हिन्दी भाषा सदा ही प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। यही वजह है कि आज यह तय कर पाना काफी मुश्किल हो गया है कि साहित्य की मुख्यधारा कौन

सी है। वस्तुत आधुनिक चेतना की समस्त चिंतनधारा एक स्तर पर मिलकर हिंदी की काव्यधारा का ही रूप धारण कर लेती है। पुष्य, सरहपा, गोरखनाथ, चंदरबरदाई, विद्यापति, खुसरो, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, कबीर, रसखान आदि कवियों ने अपने साहित्यिक अवदान से हिंदी को पुष्ट किया है।

इन सहभाषाओं की उत्पत्ति एवं उनका ऐतिहासिक विकास वहां की मिट्टी में ही हुआ है इसलिए इसमें लोकजीवन का रचाव बसाव, रंग ढंग, एवं प्रभाव ज्यादा है जिसे कई रूप में देखा जा सकता है– लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, प्रकीर्ण साहित्य आदि। लेकिन लोक साहित्य में इनका प्रयोग भरपूर मात्रा में हुआ है। साथ ही इन विभाषाओं के अंतर्गत अनेक विधाओं, काव्यप्रवृत्तियों, एवं विचारों से युक्त साहित्य की भिन्न–भिन्न धाराओं में साहित्य सृजन हो रहा है।

इक्कीसवीं शताब्दी के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भाषाओं की स्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस विषय पर वृहद् स्तर पर विचार किया जा रहा है। इसकी झलक कई तरह से देखने को मिल ही जाती है। देश में भारतीय शिक्षा की दिशा में हाल ही में हुआ नवीन परिवर्तन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की पुरानी पद्धति को खत्म करते हुए कुछ नवीन प्रयोजनों से युक्त नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को दिनांक 29 जुलाई 2020 को लागू किया गया है। इसके प्रावधानों पर ध्यान दिया जाए तो हमें कई ऐसे नियम मिल जायेंगे जहाँ भारतीय भाषाओं के विकास एवं उसको सर्व दिशाओं में प्रचारित एवं प्रसारित करने के प्रयास नजर आते हैं। इस सन्दर्भ में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कुछ महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद हैं जिनमें भारत की क्षेत्रीय भाषा– प्रांतीय भाषा–मातृभाषा–घर की भाषा कहकर संबोधित किया है। उल्लेखनीय है कि इन भाषाओं को छात्र जीवन की प्रथम शिक्षा की भाषा बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

यहाँ यह विचारणीय है कि इन भाषाओं का विकास क्यों नहीं हो पाया अध्ययन के आधार पर इसके कई कारण बताये जा सकते हैं–

किसी ध्रुवक व्यक्तित्व का न मिल पाना।

इसमें गद्य साहित्य का विकास न हो पाना।

भाषा का मानकीकरण न हो पाने के कारण।

भाषा के अपने वैविध्यपूर्ण स्वरूप के कारण।

प्रेस, अखबार, पत्र–पत्रिकाओं आदि में प्रयोग की भाषा न बन पाने के कारण।

कार्यालयों या दफ्तर की भाषा न बन पाने के कारण।

उत्तर भारत, विशेष रूप से मध्य हिंदी क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण विभाषाएं प्रचलित हैं लेकिन यहाँ अवधी, ब्रज और बुन्देली तीन मुख्य भाषाओं पर विचार किया जा रहा है। इन तीनों ही भाषाओं का चरित्र सार्वभौमिक है। कहना न होगा कि इन्हीं विभाषाओं के कारण ही हमारे ग्रामीण व प्राकृतिक वैभव तथा लोकसंस्कृति के साक्ष्य और प्रमाण सुरक्षित हैं। उक्त भाषाओं का क्रमवार वर्णन यहां प्रस्तुत किया जा रहा है–

इस सन्दर्भ में अवधी भाषा का स्थान इनमें बहुत ही ज्यादा प्रासंगिक है। इसके इतिहास

पर विचार करें तो कहा जा सकता है कि अवधी भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक पुरानी भाषा है। इसका अविर्भाव अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार अवधी की भाषाई सीमा का विस्तार इस प्रकार है "अवध क्षेत्र के उत्तर में हिमालय(नेपाल), पूर्व में भोजपुरी भाषी क्षेत्र, दक्षिण में बघेली व पश्चिम में बुन्देली और कन्नौजी के क्षेत्र हैं।"

अवधांचल की यह जुबान समस्त प्रदेश की सामाजिक–सांस्कृतिक, साहित्यिक, व्यवहारिक एवं भावात्मक दृष्टि की परिचायक है। यह प्रदेश राम की जन्मभूमि रही है स्वाभाविक रूप से रामकाव्यों में इसका स्वर अत्यंत शक्तिशाली रूप में व्यक्त हुआ है। यही नहीं सूफियों द्वारा स्वीकृत लोककथाओं पर आधारित प्रेमकाव्यों में भी अवधी के ठेठ स्वरूप को अपनाया गया है। तभी हिंदी भाषा के दो सबसे बड़े महाकाव्य तुलसी कृत रामचरितमानस और जायसी की पदमावत अवधी भाषा में ही मिलते हैं। मध्यकाल में अवधी भाषा के भाषिक एवं साहित्यिक विकास में विभिन्न रचनाकारों का योगदान रहा जिसमें–तुलसीदास, मलिक मुहम्मद जायसी, मंझन, मुल्ला दाउद, रामानंद, अग्रदास आदि का नाम आता है। स्वभाव से जनकाव्य होने के कारण रीतिकाल में अवधी भाषा दरबारी संस्कृति एवं लक्षण ग्रंथों से अलग ही रही। आगे चलकर इसका व्यापक विकास आधुनिक काल में दिखाई देता है। आधुनिक काल में अवधी के प्रमुख कवियों में बलभद्रप्रसाद दीक्षित पढ़ीस, पं. वंशीधर शुक्ल, चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका, त्रिलोचन शास्त्री, आचार्य विश्वनाथ पाठक, आद्याप्रसाद उन्मत्त, सुमित्राकुमारी सिन्हा, जुमई खान आजाद, सुशील सिद्धार्थ आदि आते हैं।

कवियों ने अपनी पैनी दृष्टि एवं अवधी के भाषिक व्यवहार का सामंजस्य करते हुए बहुत ही अच्छा संयोजन प्रस्तुत किया। जैसा की पहले कहा जा चुका है कि यह जनकाव्य, कृषक काव्य, लोककाव्य की हिमायती भाषा है इसी तर्ज पर अवधी में कवियों ने किसानी संस्कृति, कहावतों, मुहावरों की शैली, प्रकृति के प्रति निकटता, नारी सम्मान, ग्रामीण परिवेश, राष्ट्रीय जागरण, सामाजिक व्यवस्था की पड़ताल, संयुक्त परिवार, मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत विषयों पर लेखनी चलायी। शैली के स्तर पर हास्य, व्यंग्य एवं विनोद आदि का भी प्रयोग किया है। यहाँ रमई काका की 'अन्न देउता' कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं–

कहि रही घरैतिनी मुनुवाँ ते,
ऐ पूत! अन्न बिथराव न तुम
दाना–दाना की मूठि मा
ना जानें केतनी रासि छिपी
रासिन माँ प्रान संजोये है
प्रानन कै आस हुलास छिपी

इसी तरह जब ब्रजभाषा की बात आती है तब कहा जा सकता है– "जाति की आर्थिक–राजनीतिक एकता के आधार के साथ जब खड़ी बोली का हिंदी के रूप में विकास हुआ और वह सांस्कृतिक आदान–प्रदान का माध्यम भी बन गयी तब ब्रजभाषा ने शताब्दियों तक विकसित साहित्य–परंपरा और भाषातत्व उत्तराधिकार के रूप में सौंप कर हिंदी का अभिषेक

कर दिया।" ब्रजभाषा ने भी हिंदी भाषा साहित्य का गौरव बढ़ाया है। हिंदी साहित्य सम्पदा की इस भाषा ने सांस्कृतिक समरसता के लिए अपने को समर्पित किया है।

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में तद्भव रूप 'ब्रज' अथवा 'बृज' शब्द का प्रयोग मथुरा के आस–पास के प्रदेश के अर्थ के रूप में मिलता है जहाँ की भाषा के लिए मध्यकालीन हिंदी लेखकों के द्वारा भाषा अथवा भाखा शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। यह शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है। वस्तुतः ब्रजभाषा के कई नाम मिलते हैं जिनमें भाखा, पिंगल, मध्यदेशी, अंतर्वेदी आदि प्रमुख हैं। अर्धकथानक में बनारसीदास जैन ने इसे मध्यदेस की बोली कहा है तो केशवदास ने इसे सुभाषा कहकर संबोधित किया है।

हिंदी साहित्य में ब्रजभाषा अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण ही उपयोगी नहीं है बल्कि वह काव्य के समस्त उपादानों से युक्त है। यह खड़ीबोली के सर्वाधिक समतुल्य संचालित हो रही है। यह शौरसेनी प्राकृत तथा अपभ्रंश की भाषिक परंपरा के रिक्तता से प्राप्त हुई भाषा है। इसका क्षेत्र ब्रज है किन्तु इसकी भौगौलिक सीमा इससे कहीं अधिक विस्तृत है। सोलहवीं शताब्दी के करीब ब्रजभाषा पूर्णतः साहित्यिक रूप से विकसित एवं स्थापित हो चुकी थी। ब्रजभाषा को अपने काव्य के रूप में अपनाने बनाने वालों में ज्यादातर लोग ब्रज क्षेत्र के नहीं थे। इनमें राजस्थान की मीराबाई, महाराष्ट्र के नामदेव, गुजरात के नरसी और भोजपुरी भाषी भारतेंदु हरिश्चंद्र आदि आते हैं जिन्होंने इस तथ्य के बावजूद ब्रजभाषा को उत्कृष्ट स्थान पर पहुँचाया है। साथ ही इसके विकास में भक्तिकाल के कृष्ण भक्तों का नाम कैसे भुलाया जा सकता है। सूरदास ने तो ब्रज भाषा को कृष्णकाव्य का पर्याय ही बना दिया था। उनकी बाललीला की एक अत्यंत भावात्मक पंक्ति देखिये–

'काग के भाग बड़े सजनी, हरिहाँथ सों ले गयो माखन रोटी'

ब्रजभाषा माधुर्य एवं भक्ति की भाषा है वही दूसरी ओर राजदरबारों की बादशाही बोली भी। साथ ही ब्रजभाषा मुख्यतः मुक्तकों के रूप में ही अधिक संगृहीत है। आधुनिक काल में भी ब्रजभाषा ने अपना अलग नाम बनाया जिसमें भारतेंदु हरिश्चन्द्र, कविरत्न शर्मा, वियोगी हरि, जगन्नाथ दास रत्नाकर, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, जगदीश गुप्त का नाम उल्लेखनीय है। साहित्यिक ब्रजभाषा आज भी अपनी धारा में लिखी जा रही है। इस प्रकार ब्रजभाषा ने भी हिंदी के भाषाई निर्माण में अहम भूमिका निभाई है।

इसी कड़ी में अगली भाषा बुन्देली भाषा है। नाम से ही पता चलता है बुन्देली भाषा बुंदेलखंड की भाषा है। इसके साहित्य एवं संस्कृति का इतिहास काफी पुराना रहा है। भारत के गजेटियर के अनुसार 'बुंदेलखंड वह प्रदेश है जो उत्तर में यमुना, उत्तर और पश्चिम में चम्बल, दक्षिण में मध्यप्रांत के जबलपुर तथा सागरखंड, तथा दक्षिण और पूर्व में रीवा अथवा बघेलखंड और मिर्जापुर की पहाड़ियों के मध्य स्थित है।'

भौगौलिक दृष्टि से इन जिलों में हमीरपुर, जालौन, झाँसी, ग्वालियर, होशंगाबाद आदि स्थान आते हैं जहाँ बुंदेली भाषा बोली जाती है। बुंदेली भाषा ने भी हिंदी के भाषिक निर्माण की धारा को आगे बढाने में योगदान किया है। इसका प्रारम्भिक रूप आल्हा ऊदल से सम्बंधित वीर चरित

काव्य हैं जो अभी भी पूरे भारत में गाये जाते हैं। यह भाटों के द्वारा बुन्देली की बनाफरी बोली में गाये जाते हैं। इसकी साहित्यिक महिमा इस बात से झलकती है कि इस प्रदेश के लेखक एवं कवियों ने हिंदी साहित्य को एक ऊंचा मुकाम दिलाया है। रामचरिमानस की रचना भी बुंदेलखंड की धरती पर हुई है। चित्रकूट में इस धार्मिक ग्रन्थ की रचना की गई। साथ ही राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, वृन्दावन लाल वर्मा, पद्माकर, लाल बिहारी, श्रीपति, श्री गंगाधर व्यास जैसे कवि साहित्यकारों का नाम आता है।

आंकड़ों के अनुसार आज भारत में विगत 50 वर्षों में समुचित देखभाल न मिल पाने के कारण 220 भाषाओं ने अपना अस्तित्व खो दिया है। यूनेसको द्वारा जारी लुप्तप्राय भारतीय भाषाओं की सूची में 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय घोषित कर दिया गया है। 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं में से कई भाषाएँ अपने अस्तित्व के संरक्षण लिए कठिनाई का सामना कर रही हैं।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि भारत की इक्कीसवीं शताब्दी के भाषाई निर्माण में हिंदी की सहभाषाओं की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि वर्तमान युग में किसी भी भारतीय भाषा का अस्तित्व तभी कायम रह सकता है जब उसकी सहभाषाएं जिन्दा हों। इसलिए आवश्यक है कि हिंदी की स्रोतस्विनी को मजबूत बनाए रखने के लिए हम इन सहवर्ती भाषाओं की धाराओं को भी मजबूत बनाये रखें। साथ ही लौकिक एवं शिष्ट दोनों ही स्तरों पर इन भाषाओं के प्रति संवेदनशील होकर इनका प्रयोग व संप्रेक्षण ज्यादा से ज्यादा करते रहें।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ. सक्सेना बाबूराम, अवधी का विकास, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, संस्करण : 1972।
2. (संपा.) डॉ. त्रिपाठी रमेशचंद्र तथा डॉ. पाण्डेय अलका, आधुनिक ब्रज–अवधी काव्य दर्पण, प्रकाशन केंद्र लखनऊ, संस्करण : 2012।
3. (संपा.) डॉ. मिश्र दयानिधि, भारत की प्रमुख भाषाएँ समकालीन प्रवृत्तियां, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण : 2022।
4. भारत का भाषा सर्वेक्षण (भाग–9 पश्चिमी हिंदी), संकलनकर्ता एवं संपादक– सर जॉर्ज ग्रियर्सन, अनुवादक डॉ. निर्मला सक्सेना एवं सुरेन्द्र वर्मा, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ प्रथम संकरण : 1967।

❑❑❑

शोधार्थी, पी.एच–डी. हिंदी साहित्य जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पिनः– 110067
सहायक आचार्य–हिंदी विभाग, श्रीमती शारदा जौहरी नगर पालिका कन्या महाविद्यालय, कासगंज, उत्तर प्रदेश, पिन– 207123 मोबाइल न.– 9910317945 ईमेल–Achlavermahindi@gmail-com

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नई हिंदी पत्रकारिता की भाषा : संभावनाएं एवं चुनौतियां

–विनीत कुमार सिन्हा

कृत्रिम बौद्धिक क्षमता ने लगभग सारे उद्योगों को प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार के क्षेत्र में तो व्यापक बदलाव देखने को मिले हैं। नित नए ऐसे कंप्यूटर प्रोग्राम विकसित हो रहे हैं जो स्वयं लेखन करने तथा एक भाषा की विषय–वस्तु का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम हैं। 'ChatGPT' तथा 'Google Pinpoint' सूचना एवं संचार जगत में प्रयोग की जाने वाली एआई आधारित सेवाएं हैं। सूचना तकनीक विकास की प्रक्रिया अनवरत जारी है।

तकनीकी विकास ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। नई तकनीक अपने साथ कई नई संभावनाएं पैदा करती हैं तथा समाज के समक्ष नई चुनौतियाँ लाती हैं। मीडिया उद्योग तकनीकी विकास से सदैव प्रभावित होता रहा है। समय–समय पर नई तकनीक के आगमन से मीडिया की भाषा, विषय वस्तु और उसकी प्रस्तुति बदलती गयी। मीडिया की भाषा और विषय वस्तु को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली तकनीक इंटरनेट है। वेब 2.0 के आते ही मीडिया पहले से ज्यादा सहज और इंटरैक्टिव हो गया है। आज नई मीडिया के लेखकों के सामने 'गागर में सागर' प्रस्तुत करना तथा उसे पाठकों तक पहुँचाना कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। संचार वैज्ञानिकों के अनुसार आने वाला समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वेब 3.0 और वर्चुअल रियलिटी का है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास के साथ आज रोबोटिक पत्रकारिता की कल्पना की जा रही है। यह केवल कपोल कल्पना ही नहीं बल्कि आने वाले कल की हक़ीकत है। भविष्य में मशीन खबर लिखेगी और उसे पाठकों तक पहुंचाएगी। इससे आने वाले समय की हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप बदल जाएगा। इसकी भाषा में आमूल–चूल बदलाव देखने को मिलेंगे। विषयवस्तु में स्थानीय बोली का प्रभाव बढ़ेगा। यह तकनीक अनेक नई चुनौतियाँ जैसे घटना की प्रस्तुति हेतु शब्द–चयन और उसका भावनात्मक पक्ष, मीडिया की निष्पक्षता, विषय वस्तु में समाज के विभिन्न पक्षों प्रस्तुति इत्यादि, हमारे समक्ष लाने वाला है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु यह आवश्यक होगा की पत्रकार पहले से ज्यादा सजग और सूक्ष्मदर्शी बनें।

बीज शब्द – आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक पत्रकारिता, वेब 3.0, भाषा का भावनात्मक पक्ष, स्थानीय बोली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नई हिंदी पत्रकारिता की भाषा : संभावनाएं एवं चुनौतियाँ

परिचय

मनुष्य की खोजी प्रवृत्ति और बौद्धिक क्षमता उसे अन्य जीवों से भिन्न बनाती है। अपने जीवन को सहज एवं सुलभ बनाने के लिए मनुष्य ने विभिन्न उपकरणों का निर्माण किया तथा नई तकनीक विकसित की। आग की खोज, पत्थर के

औजार और पहिये के निर्माण से शुरू हुई तकनीकी विकास की यात्रा सतत गतिशील है। नई चुनौतियों का सामना करने हेतु मनुष्य नित नए प्रयोग कर रहा है और नई तकनीक विकसित कर रहा है। आज बौद्धिक क्षमता रखने वाली मशीनों की भी चर्चा होने लगी है। ये मशीन सोच सकती हैं। इनमें इनस्टॉल किया गया अल्गोरिथम इन्हें स्वतः कार्य करने तथा सोचने की शक्ति देता है। अल्गोरिथम एक विशेष प्रोग्राम है जो मशीन को स्वयं सोचने के लायक बनाता है। टेस्ला द्वारा विकसित स्वचालित कार, अमेजन द्वारा विकसित अलेक्सा इत्यादि बौद्धिक क्षमता आधारित मशीन के उदाहरण हैं।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक जॉन मैकार्थी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' शब्द का प्रयोग किया। साल 1955 में उन्होंने इसे परिभाषित करते हुए लिखा कि कृत्रिम बौद्दिक क्षमता, बुद्धिमान मशीन बनाने का विज्ञान एवं अभियांत्रिकी प्रक्रिया है। "The Science and engineering of making intelligent machines"। बौद्धिक क्षमता का आशय किसी समस्या का समाधान करने हेतु उचित प्रणाली का प्रयोग करने से है। कृत्रिम बौद्धिक क्षमता आधारित मशीन न केवल किसी समस्या का समाधान हेतु उचित कार्यप्रणाली का प्रयोग करने में सक्षम होती हैं अपितु इनमें नई कार्यप्रणाली सीखने की क्षमता भी होती है।

कृत्रिम बौद्धिक क्षमता ने लगभग सारे उद्योगों को प्रभावित किया है। सूचना एवं संचार के क्षेत्र में तो व्यापक बदलाव देखने को मिले हैं। नित नए ऐसे कंप्यूटर प्रोग्राम विकसित हो रहे हैं जो स्वयं लेखन करने तथा एक भाषा की विषय–वस्तु का अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम हैं। 'ChatGPT 'तथा ' Google Pinpoint' सूचना एवं संचार जगत में प्रयोग की जाने वाली एआई आधारित सेवाएं हैं। सूचना तकनीक विकास की प्रक्रिया अनवरत जारी है।

तकनीक का विकास नई चुनौतियों के समाधान हेतु किया जाता है। किन्तु हर तकनीक अपने साथ नई चुनौती ले कर आती है। इसका समाज और संस्कृति पर प्रभाव, लोगों द्वारा तकनीक का प्रयोग इत्यादि कुछ ऐसे विषय हैं जिनके अध्ययन की जरूरत को नकारा नहीं जा सकता है। औपिश के अनुसार "तकनीकी विज्ञान का कला में प्रयोग है" (गुप्ता)। इसका निर्माण विज्ञान के माध्यम से होता है किन्तु इसका प्रयोग समाज में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है। समाज और तकनीक के अंतर्संबंध को 'प्रौद्योगिक नियतत्ववाद' (Technological Determinism) के सिद्धांत के माध्यम से और बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। थोरस्टीन वेब्लेन, इस शब्द का प्रयोग करने वाले पहले विद्वान थे। इस सिद्धांत के अनुसार, तकनीक समाज की संस्कृति को प्रभावित करने वाले प्रमुख पहलुओं में से एक है। तकनीक के माध्यम से किसी समाज की प्रवृत्ति को समझा जा सकता है। मशहूर जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स के विचार इस सिद्धांत को बल प्रदान करते हैं। उनके अनुसार तकनीक के विकास से समाज में उत्पादन की नई विधियाँ विकसित होती हैं। इससे समाज में सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक बदलाव आते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक समाज को बदलने में सक्षम होती है। मशहूर वैज्ञानिक विमर के अनुसार कई बार तकनीक के कारण अप्रत्याशित बदलाव भी आ जाते हैं। इस प्रक्रिया को परिभाषित करने हेतु उन्होंने "Technological Drift" शब्द का प्रयोग किया है। उनके अनुसार कई बार ऐसा होता है कि किसी तकनीक का विकास किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया गया किन्तु समाज के लोग उसका प्रयोग अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए करने लगें। इससे समाज में कुछ ऐसे बदलाव आने लगते हैं जिससे यह प्रतीत होने लगता है कि मनुष्य तकनीक का मालिक नहीं अपितु तकनीक मनुष्य और समाज का मुकद्दर तय कर रही है।

मीडिया का लोकतंत्र में एक प्रमुख स्थान होता है। मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गयी विषय–वस्तु तथा इसकी भाषा जनमानस के मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव डालती है। भारत विविध

ाताओं से भरा देश है। हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। देश की राजधानी दिल्ली तथा राज्य के नौ राज्यों की यह अधिकारिक भाषा है। देश में हिंदी भाषा का समाचारपत्र पढ़ने वाले तथा हिंदी न्यूज चैनल एवं हिंदी न्यूज पोर्टल के माध्यम से सूचना प्राप्त करने वालों की संख्या अच्छी खासी है। मीडिया जगत भी तकनीकी विकास के प्रभाव से अछूता नहीं है। नई तकनीक आने से विषय वस्तु निर्माण तथा प्रस्तुति तथा वितरण प्रणाली में पहले की तुलना में व्यापक बदलाव देखने को मिले हैं। कई मीडिया संस्थानों में स्मार्टफोन ने वीडियो कैमरे की जगह ले ली है। बदलाव की यह प्रक्रिया रुकने वाली नहीं है। आने वाला समय रोबोटिक पत्रकारिता अथवा आटोमेटिक पत्रकारिता का होगा ऐसी भी चर्चा हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित कंप्यूटर प्रोग्राम आंकड़ों के प्रबंधन के साथ विषय वस्तु लेखन तथा वितरण करने में भी सक्षम होंगे। विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार की खबर बनाने हेतु इसका प्रयोग शुरू भी हो चुका है। उदाहरणस्वरूप पुतर्गाल के कई मीडिया संस्थान खेल सम्बन्धित खबरों के निर्माण हेतु इसका प्रयोग कर रहे हैं (कैनाविल्हास, 2022)। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भारत में हिंदी पत्रकारिता की भाषा पर क्या प्रभाव डालेगा। इसकी संभावनाएं एवं प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

साहित्य पुनरावलोकन

(कैनाविल्हास, 2022) : मीडिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग का मूल उद्देश्य नए मौके तलाशना है। पुतर्गाल में 34.4 प्रतिशत खेल मीडिया खबर निर्माण प्रक्रिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग कर रहा है। पत्रकारों ने यह माना की यह उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक है।

(थुरमन, नील, कॉन्स्टेंटिन, डोर, – कुनर्ट, 2017) : दस पत्रकारों पर आधारित इस अध्ययन में जिसमें तीन खेल पत्रकार शामिल थे, यह पाया गया कि पेशेवर पत्रकार कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा लिखित विषय वस्तु से संतुष्ट नहीं थे। उनके अनुसार सॉफ्टवेयर द्वारा लिखी गयी रिपोर्ट में मूल्यांकन, घटना का परिपेक्ष्य तथा व्यक्ति विशेष के कथन नदारत थे।

(लोपेज, जोस, टूरल – ब्रान, सैंटियागो, – कैचीरो–रेकेइजो, 2018) : स्पेन में 366 पत्रकारों पर किये गए इस अध्ययन में पत्रकारों ने यह स्वीकार किया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उनके कार्यों को व्यवस्थित रूप से निष्पादित करने में सहायक है। इसकी मदद से कम लागत में ज्यादा विषय–वस्तु का निर्माण किया जा सकेगा साथ ही इससे समाचार वितरण प्रणाली भी प्रभावी बनेगी। हालाँकि इस अध्ययन में शामिल केवल 21.3 प्रतिशत पत्रकारों ने ही खबर निर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को उपयोगी उपकरण के रूप में स्वीकार किया। 30 प्रतिशत लोगों का मत था कि एआई के माध्यम से आंकड़ों का प्रबंधन प्रभावी रूप से किया जा सकता है। (चार्ली, 2019) : लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पोलिटिकल साइंस द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पत्रकारों की विषय–वस्तु निर्माण क्षमता को बढ़ाने में तथा उसकी गुणवत्ता सुधारने में मदद करने वाली एक कारगर तकनीक है। इससे मीडिया घरानों की आर्थिक स्थिति सुधर सकती है तथा यह पत्रकारों की विश्वसनीयता को सुनिश्चित करने में भी सहायक है। इसके अलावा अध्ययन में शामिल अन्य पत्रकारों ने यह माना इसे अपनाने के लिए बड़ी पूँजी की आवश्यकता पड़ेगी। यह एक प्रमुख चुनौती है।

(सैंटोस–सेरोन, 2022) : न्यूज बिजनेस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग कई तरीकों से किया जा सकता है। मीडिया उद्योग इसका प्रयोग पाठकों में विषय–वस्तु के लिए रूचि पैदा करने तथा बिजनेस नीतियां इत्यादि बनाने के लिए कर रहा है। यह पाठकों को उनकी रूचि के अनुसार सब्सक्रिप्शन पैकेज बताने में मददगार है। इसकी मदद से न्यूज पोर्टल पर नकरात्मक

एवं अभद्र प्रतिक्रियाओं को रोका जा सकता है। मीडिया घरानों के लिए एआई एक प्रमुख उपकरण है।

शोध का उद्देश्य

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का नई हिंदी पत्रकारिता की भाषा पर होने वाले प्रभाव को समझना।
- हिंदी अखबार, हिंदी न्यूज चैनल और हिंदी डिजिटल न्यूज पोर्टल के सामने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आगमन के बाद उत्पन्न होने वाली संभावनाएं एवं चुनौतियों का अध्ययन।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने रांची तथा पटना के हिंदी मीडिया संस्थान में कार्यरत पत्रकारों में से निर्दशन हेतु उद्देशीय निर्दशन पद्धति (Purposive Sampling) का प्रयोग किया है। चयनित संस्थानों से तीन–तीन पत्रकारों को अध्ययन में शामिल किया गया। तकनीकी पहलुओं की जानकारी हेतु चार तकनीकी विशेषज्ञों का साक्षात्कार भी किया गया। आंकड़े एकत्र करने के लिए शोधार्थी ने अनुसूची का प्रयोग किया।

परिणाम और निष्कर्ष

अध्ययन में यह पाया गया कि हिंदी प्रान्त के पत्रकार अभी एआई उपकरणों के प्रयोग से पूरी तरह से अवगत नहीं हैं। डिजिटल न्यूज मीडिया के 40 फीसदी पत्रकार इससे अवगत हैं जब की हिंदी टीवी न्यूज चैनल में यह 25 प्रतिशत है। अखबार में कार्यरत मात्र 22 फीसदी पत्रकार ही मीडिया जगत में प्रयोग होने वाले एआई उपकरणों की जानकारी रखते हैं। पत्रकार यह मानते हैं कि यह नई तकनीक उनके कार्य को व्यवस्थित करने में सहायक सिद्ध होगी किन्तु इससे सम्बंधित कई पहलुओं को वे प्रमुख चुनौतियों के रूप में देखते हैं।

इसके द्वारा लिखित विषय–वस्तु में मानवीय संवेदना कितनी होगी यह एक प्रमुख प्रश्न है। हिंदी भाषा का शब्दकोष व्यापक है। इस भाषा में क्षेत्रीय बोली के भी शब्द मौजूद हैं। एआई इन्हें समझने में कितना कारगर होगा यह देखने वाली बात होगी। बिना मानवीय संवेदना के विषय–वस्तु प्राणहीन प्रतीत होगी तथा इसके समाज पर बुरे प्रभाव पड़ने के भी आसार रहेंगे। एक आम पाठक या विषय–वस्तु का उपभोक्ता यह गौर नहीं करता कि अमुक कहानी किसने लिखी है। अतः ऑटोमेटेड पत्रकारिता के दौर में यह आवश्यक होगा कि पत्रकार अपनी जिम्मेदारियों में परिवर्तन लायें। आने वाले समय में विषय–वस्तु लेखन से ज्यादा उन्हें विषय–वस्तु की निगरानी करनी पड़ेगी। मशीन द्वारा लिखित विषय वस्तु में किसी तरह की कमी नहीं रहे यह सुनिश्चित करना पत्रकारों का प्रमुख कार्य होगा। न्यूज जगत के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अपने साथ एक और बड़ी चुनौती ले कर आएगा, वह है खबर की निष्पक्षता और संतुलन। मशीन द्वारा लिखित खबर में घटना से सम्बंधित सारे पहलुओं का जिक्र हो यह आवश्यक है। आने वाले समय में कंप्यूटर प्रोग्रामर्स तथा पत्रकारों की यह जिम्मेदारी होगी की मशीन की लिखी खबर निष्पक्ष तथा संतुलित हो।

मीडिया में समाज के विभिन्न वर्गों की प्रस्तुति और प्रतिनिधित्व एक बड़ा प्रश्न है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समाज के विभिन्न वर्गो को किस तरह से प्रस्तुत कर रहा है, पत्रकारों को इस पर नजर रखनी होगी। मीडिया की प्रस्तुति का लोगों के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता

है। अगर किसी वर्ग विशेष की प्रस्तुति गलत की जायेगी तो लोगों के मन में उसके प्रति गलत अवधारणा बनेगी। अतः मीडिया की भाषा तथा विषय–वस्तु पूर्वाग्रह मुक्त हो यह आवश्यक है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसा उपकरण है जिससे अत्यंत सावधानी से प्रयोग करने की ज़रूरत है अन्यथा इससे सामाजिक शांति प्रभावित हो सकती है। गागर में सागर प्रस्तुत करने के इस दौर में मशीन द्वारा लिखित विषयवस्तु समाज को दुष्प्रभावित नहीं करे यह सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। अब पत्रकारों को पहले से ज्यादा सजग तथा पेशेवर होने की ज़रूरत है।

सन्दर्भ

जोआओ कैनाविल्हास. (2022). Artificial Intelligence and Journalism: Current Situation and Expectations in the Portuguese Sports Media. *Journalism and Media 3* , 510-520

तुनेज – लोपेज, मिगुएल जोस, कार्लोस टूरल – ब्रान, ब्रान और सैंटियागो, – कैचीरो–रेकेइजो. (2018). Automated -content generation using news writing bots and algorithms: Perception and attitude among Spain's journalists. *El Profesional de la Información* , 750-58.

थुरमन, नील, कॉन्स्टेंटिन, डोर, – जेसिका कुनर्ट. (2017). When reporters get hands-on with robo training: Professional consider automated journalism's capabilities and consequences. *Digital Journalism* , 1240-1259.

नोएन सांचेज, – अमाया. (2022). Addessing the impact of Artifical Intelligence on Journalism: The perception of experts, journalists and academics. *Communication and Society* , 105-21.

बेकलेट चार्ली. (2019). New Responsibilites: A Global Survey of Journalism and Artifical Intelligence. *London: The London School of Economics and Political Science*

मथियास फेलिप डी–लीमा सैंटोस, – विल्सन सेरोन. (2022). Artificial Intelligence in News Media: Current Perceptions and Future Outlook. *Journalism and Media,* 13-26

सौरभ गुप्ता. (दि.न.). शैक्षिक तकनीकी का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं . hindiguider.com: https://hindiguider.com/shaikshik-takaneekee-ka-arth-paribhaasha-evam-visheshataen-in-hindi/ से, 22 जनवरी 2023 को पुनर्प्राप्त

❑❑❑

पीएचडी शोधार्थी,जनसंचार विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, रांची, मोबाइल नंबर – 7003069971 ईमेल–vineetsinha15@gmialAcom

पीएचडी शोधार्थी,मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, मोबाइल नंबर – 8877565443 ईमेल – shobhitAsuman1@gmail.com

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं का प्रश्न

–डॉ. रीना

भाषा किसी भी व्यक्ति, समाज के भावों–विचारों को प्रकट करने का माध्यम है साथ ही भाषा परस्पर विचारों का साधान ही नहीं है, यह किसी भी समाज, समूह से लेकर व्यक्ति की पहचान होती है। हमारी संस्कृति की विरासत को बचाने का काम भाषा ही करती है। इसलिए भाषा का अध्ययन व्यक्ति, समाज, संस्कृति के लिए महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इस संदर्भ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विशेष चिंतन करती है।

किसी भी देश की भाषा विचार–विनिमय का या भावों को प्रकट करने का साधन तो है ही, साथ ही साथ भाषा समाज का प्रमुख अंग होने के नाते हमारी सभ्यता और संस्कृति की वाहक भी होती है। हम कह सकते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों की पहचान भाषा के आधार पर होती है। इसी संदर्भ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) की बात करें तो यह नीति भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाओं की पुनर्प्रतिष्ठा की सिफारिश करती है, क्योंकि भारतीय भाषाएं विकसित होंगी तो संस्कृति भी विकसित होगी। इस नीति में कक्षा– 5 तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा/घरेलू भाषा में शिक्षा के माध्यम का प्रावधान है। हालांकि भारतीय भाषाओं में पढ़ने–लिखने की संस्कृति के विकास की संभावना पहले की नीतियों में भी थी लेकिन वह अंग्रेजी की स्वीकार्यता का सूत्र बन गई। इस नीति में देश के विभिन्न भाषाओं के साहित्य में व्याप्त ज्ञान को सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर सुलभ कराने की बात है। साथ ही साथ ज्ञान–विज्ञान, मेडिकल, इंजीनियरिंग के विभिन्न विषयों को स्वभाषा में अध्ययन–अध्यापन की बात की गई है। इस नीति में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक उपयोगी बनाने की जरूरत पर ध्यान दिया गया है, जिससे निश्चित ही अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को चुनौती मिलेगी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) लॉर्ड मैकाले की नीति को खारिज करती है तथा भारत की जड़ों की तरफ लौटने की बात करती है, क्योंकि भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्विक ज्ञान संपदा का आदान–प्रदान तब तक अधूरा रहेगा, जब तक वह भारत की भाषाओं से नहीं जुड़ पाएगा, यही व्यावहारिक मांग भी है। इसके अतिरिक्त यह नीति संस्कृत, पालि, प्राकृत, फारसी भाषाओं को केंद्र में लाने का प्रयास करती है। इस नीति में संविधान की अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं की अकादमी स्थापित करने तथा पांडुलिपियों के संरक्षण, संवर्धन का प्रावधान भी किया गया है जो संकेत करता है कि यह नीति भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान जगाने हेतु है।

विभिन्न शास्त्रीय भाषाओं और उनमें लिखित साहित्य को संस्थानों और विश्वविद्यालयों से जोड़ने की प्रतिबद्धता भी इस नीति में है। हालाँकि इस नीति के क्रियान्वयन की चुनौतियां भी है लेकिन समुचित ढंग से इसके क्रियान्वयन पर अमल किया जाए तो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारतीय भाषाओं के उत्थान में मील का पत्थर साबित होगी।

बीज शब्द– भारतीय संस्कृति, मातृभाषा, उपनिवेशवाद, त्रिभाषा फार्मूला, अनुवाद, ज्ञान–विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, पांडुलिपि, संरक्षण, शोध, शास्त्रीय एवं संकटग्रस्त भाषा, राजभाषा, मैकाले नीति, चुनौती, क्रियान्वयन, विश्वशक्ति

मुख्य आलेख–

भाषा किसी भी व्यक्ति, समाज के भावों–विचारों को प्रकट करने का माध्यम है साथ ही भाषा परस्पर विचारों का साधन ही नहीं है, यह किसी भी समाज, समूह से लेकर व्यक्ति की पहचान होती है। हमारी संस्कृति की विरासत को बचाने का काम भाषा ही करती है। इसलिए भाषा का अध्ययन व्यक्ति, समाज, संस्कृति के लिए महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इस संदर्भ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विशेष चिंतन करती है। कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित यह नीति भारतीय भाषाओं के समुचित संरक्षण, संवर्धन के प्रति प्रतिबद्ध है। इस नीति में कहा गया है–" दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित संरक्षण, संवर्धन न मिलने के कारण पिछले 50 वर्षों में 220 भाषाओं को खो दिया है। यूनेस्को ने 97 भारतीय भाषाओं को लुप्त प्राय घोषित किया"।[1] ऐसी स्थिति में भाषा का महत्त्व बढ़ जाता है। शिक्षा का भारतीयकरण अभियान अपनी भाषा से ही होगा, यह बात इस नीति में भलीभांति स्वीकार की गई है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) से पूर्व भी स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 भी आई। पुरानी नीतियों का समुचित ढंग से क्रियान्वयन न होने के कारण तथा कुछ कमियों की वजह से नई शिक्षा नीति (2020) में बदलाव की आवश्यकता हुई। यह नीति प्राचीन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है। पिछली नीतियों का जोर मुख्य रूप से सभी तक शिक्षा पहुँचने के मुद्दों पर था, वहीं इस नीति का विज़न भारतीय मूल्य शिक्षा प्रणाली है, यही कारण है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारतीय की विभिन्न भाषाओं में रचे साहित्य के उत्थान की बात करती है। इस नीति में भारतीय भाषाओं के विकास और संरक्षण पर अधिक बल दिया गया है, ताकि इन भाषाओं के माध्यम से देश के विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, साहित्य से हम परिचित हो सकें।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अध्याय–4 और अध्याय–22 में शिक्षा के माध्यम से भाषा के संरक्षण की बात सुनिश्चित की गई है। मैकाले की शिक्षा नीति के महत्त्व को कम किया गया है। अध्याय–4 में कहा गया है कि कक्षा–5 तक के छात्र–छात्राओं के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय भाषा, घरेलू भाषा, क्षेत्रीय भाषा होगी और कोशिश की जाये कि आठवीं कक्षा या उसके बाद भी स्वभाषा में पढ़ा लिखा जाये, क्योंकि अपनी भाषा में विद्यार्थी भिन्न–भिन्न विषयों की अवधारणाओं को आसानी से समझ सकेगा। मातृभाषा की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी कहा है–"मातृभाषा ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम मात्र नहीं है, वह अपने अंदर राष्ट्रीय इतिहास सँजोये रखती है। विशेष रूप से प्राथमिक

शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। अंग्रेजी के आयातित ज्ञान से छूट मिले, यह शोषकों की भाषा है।"[2]

20 अक्टूबर को एक शिक्षा सम्मेलन में महात्मा गांधी भी कहते हैं कि "विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझ पड़ता है। वह असहनीय है। इससे हमारे बालक अधिकतर निक्कमे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और पूरे नकलची बन जाते हैं।"[3] गांधीजी के अनुसार अन्य भाषा में शिक्षण देने से बालकों के विचारों में स्पष्टता नहीं आएगी। वे अपनी संस्कृति, सभ्यता से अपरिचित रह जाएंगे। इसी क्रम में डॉक्टर जाकिर हुसैन समिति का गठन भी महत्त्वपूर्ण है–"मातृभाषा का उचित शिक्षण समस्त शिक्षा का आधार है। प्रभावी ढंग से बोलने, परिशुद्ध एवं स्पष्ट ढंग से बोलने एवं पढ़ने की क्षमता के बिना कोई भी व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकता। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि मातृभाषा बच्चों को उनकी संपन्न वंशानुगत संस्कृति तथा पूर्वजों के विचारों, भावनाओं एवं आकांक्षाओं से परिचित कराती है। इस प्रकार यह सामाजिक रिश्तों का महत्त्वपूर्ण साधन है।"[4]

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो, इसकी अनिवार्यता के साथ–साथ नई शिक्षा नीति स्कूली स्तर पर त्रिभाषा फार्मूला लागू करने की बात करती है, जिसमें 2 भारतीय भाषाओं को चुनना अनिवार्य है। एक विदेशी भाषा के साथ छात्रों के लिए संस्कृत और अन्य भारतीय भाषा चुनने का विकल्प होगा। त्रिभाषा सूत्र में कहा गया है कि इस सूत्र के क्रियान्वयन में लचीलापन प्रदान किया जाए। राज्य सरकारों को हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा आधुनिक भारतीय भाषा अधिमानतः दक्षिण भाषाओं में से एक के अध्ययन को और गैर हिंदी राज्यों में क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी के साथ हिंदी भाषा के अध्ययन को अपनाना और लागू करना चाहिए। इस नीति में कहा गया है कि "त्रिभाषा फार्मूला को अपनाने के लिए देशभर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए, बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए आपस में द्विभाषी समझौते कर सकते हैं।[4] बहुभाषावाद एवं राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा फार्मूला को लागू किया जाना जारी रहेगा।"[5]

यह नीति बहुभाषावाद को बढ़ावा देते हुए भारत की विभिन्न संस्कृतियों की भाषाओं को संरक्षण एवं प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है, इसमें कहा गया है कि "भाषा निस्संदेह कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। लहजा अनुभवों की समझ और एक ही भाषा में व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन, यह सभी संस्कृति के प्रतिबिंब और दस्तावेज है। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। संस्कृति के संवर्धन के लिए उस संस्कृति की भाषाओं का संवर्धन करना होगा।"[6] अतः नई शिक्षा नीति ने त्रिभाषा फार्मूला के माध्यम से बच्चों के भाषा सीखने और पढ़ाई के माध्यम पर एकदम स्पष्ट एवं सुविचारित रुख अपनाया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आठवीं अनुसूची की उन भाषाओं की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए चिंतनशील है, जो कठिनाइयों का सामना कर रही हैं। इसमें कहा गया है कि भाषाएं प्रासंगिक और जीवित बनी रहें। इसमें आठवीं अनुसूची की भाषाओं के लिए अकादमी स्थापित करने की बात की गई है, जिससे इन भाषाओं में नवीन अवधारणाओं के लिए सरल शब्द भंडार, नवीनतम शब्दकोश जारी किए जा सकें। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में विशेष रूप से संस्कृत भाषा के विस्तार पर बल दिया गया है। यह भाषा भारतीय संस्कृति और परंपरा की जीवंत

अभिव्यक्ति का मुख्य स्वर है। इसकी वैज्ञानिक प्रकृति के कारण इसे उच्च शिक्षा में त्रिभाषा फार्मूला के तहत विकल्प के रूप में तथा उच्च शिक्षा में भी विभिन्न विषयों से जोड़कर पढ़ाने के बात की गई है। यह नीति इस बात को लेकर प्रतिबद्ध है कि विदेशी यदि भारत आए तो यहां आने से पहले उन्हें अनिवार्य रूप से संस्कृत, हिंदी सीखनी पड़ेगी। इस नीति में नई शास्त्रीय भाषाओं तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया से जुड़ी संस्थाओं के अकादमिक महत्त्व को देखते हुए उनको विभिन्न विश्वविद्यालयों से जोड़ने का सुझाव है। पाली, प्राकृत भाषा के लिए नए संस्थान बनाने पर जोर दिया गया है, ताकि देश की कला, संस्कृति, परंपराओं से परिचित हो सकें, उस भाषा के ज्ञान को प्राप्त कर सके। इस नीति में कहा गया है कि अभिलेखों के संरक्षण, अनुवाद एवं अध्ययन के केंद्र स्थापित करने के प्रयास किए जाएंगे।

अनुवाद की दृष्टि से भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति महत्त्वपूर्ण है। भारत जैसे बहुभाषी देश के अलग–अलग भाषाओं के साहित्य में वहां की संस्कृति, परंपरा का उत्कृष्ट ज्ञान उपलब्ध है। इस ज्ञान को सर्वजन तक भिन्न–भिन्न भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से ही पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में भारतीय भाषाओं के अनुवाद के बात की गई है, साथ ही अंग्रेजी का उच्च गुणवत्ता वाला ज्ञान भारतीय भाषाओं में अनुवादित करने का प्रावधान भी है। इसके लिए 'इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन' की स्थापना का प्रावधान है। संदर्भ में अरविंद का शैक्षिक दर्शन सार्थक प्रतीत होता है। वे कहते हैं–" हम जिस शिक्षा की खोज में है, वह भारतीय आत्मा और आवश्यकता तथा स्वभाव और संस्कृति की उपयुक्त शिक्षा है"।[7] इस संदर्भ में देखें तो नई शिक्षा नीति भी भारत की विकासमान आत्मा के प्रति, उसकी भावी आवश्यकताओं के प्रति, उसकी आत्मोतप्ति की महानता के प्रति और शाश्वत आत्मा के प्रति आस्था रखती है। गांधी भी कहते हैं कि–"विदेशी शिक्षा के माध्यम से सच्ची शिक्षा देना असंभव है।"[8] इस प्रकार कहा जा सकता है कि मेडिकल, इंजीनियरिंग, ज्ञान– विज्ञान के विषयों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में होगा तो अंग्रेजी पर हमारी निर्भरता कम होगी, बल्कि इससे अंग्रेजी का तथाकथित वर्चस्व भी टूटेगा।

तेजी से विकसित हो रहे आज के प्रौद्योगिकी युग में डिजिटलाइजेशन मनुष्य के जीवन में विशेष छाप छोड़ रहा है। ऐसे में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भाषा के डिजिटलीकरण पर जोर देती है। ऐसे में इस कार्य की मानसिकता एवं परिवेश निर्मित करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी को अनिवार्य प्रयोग अपेक्षित है और यह स्थिति सूचना प्रौद्योगिकी को भाषा के साथ जोड़े बिना संभव नहीं है। इस नीति में भारतीय भाषाओं और उनसे संबंधित स्थानीय कला एवं संस्कृति का वेब आधारित प्लेटफार्म, पोर्टल, विकिपीडिया के माध्यम से दस्तावेजीकरण करने का प्रावधान है। ऐसे में यह नीति महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी ने जनजीवन पर अमिट छाप छोड़ी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर, इंटरनेट का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, लेकिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का भली प्रकार से लाभ उठाने के लिए इसे भाषिक विकास के साथ जोड़ना जरूरी है, जो भाषिक प्रवृत्ति को विकसित किए बिना संभव नहीं। इस दृष्टि से देखें तो डिजिटलाइजेशन के क्षेत्र में अंग्रेजी के वर्चस्व को चुनौती मिलेगी। साहित्य रूपी काव्य कला के साथ–साथ स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला को भाषा के जरिए अभिव्यक्ति से नई दिशा मिलेगी। इस नीति से भारतीय भाषाओं के विकास को बढ़ावा देने के

लिए विकसित किए गए सॉफ्टवेयर टूल्स, इंटरनेट पर ज्ञान और सूचना सामग्री को सभी भाषाओं में उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। हम कह सकते हैं कि भारतीय भाषाओं के डिजिटलाइजेशन के लिए जिस तरह से केंद्रीय स्तर पर भिन्न भाषाओं में सॉफ्टवेयर तैयार करने के कार्य किये जा रहे हैं, इससे भारतीय भाषाओं के बहुमुखी विकास को तीव्रगति मिलेगी। तथा भारतीय भाषा में हर प्रकार का मुद्रण, पाठ्य सामग्री ,पुस्तकों की उपलब्धता आसानी से हो सकेगी। जब अपनी भाषाओं में सामग्री विकसित होगी तो निश्चित ही भारतीय भाषाओं को संजीवनी मिलेगी।

इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के शब्दकोशों का अध्ययन, अद्यतनीकरण, योजनमूलक भाषा कार्यक्रमों को प्रोत्साहन, मानकीकृत पारिभाषिक शब्दावली का अधिकाधिक प्रयोग, कार्यालय प्रयोग में हिंदी को बढ़ावा देना जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। इस नीति में शोध को मातृभाषा में संभव करने के लिए 'राष्ट्रीय शोध संस्थान' स्थापित करने का प्रावधान भी है, जिसमें भारतीय भाषाओं में शोध हेतु आवश्यक निधि का प्रावधान किया गया है। यह नीति इस बात पर बल देती है कि सांस्कृतिक बोध मातृभाषा में ही संभव है। शोध, अनुसंधान की भाषा जब अपनी भाषा होगी तो भाषा के साथ–साथ संस्कृति भी विकसित होगी, इसलिए भारतीय भाषाओं में शोध अनुसंधान के विकल्प बढ़ने के साथ सांस्कृतिक बोध बढ़ेगा, जिससे अपनी भाषा में प्राप्त अवधारणात्मक समझ वर्तमान की समस्याओं का मूल्यांकन करते हुए भविष्य की चुनौतियों का दिग्दर्शन कराने में भी सक्षम होगी।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर अधिक बल देते हुए यह नीति हिंदी के महत्त्व को भी प्रतिपादित करती है। प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी का घटते प्रयोग के प्रति यह नीति संवेदनशील दिखती है। निश्चित तौर पर ये चिंतन का विषय है कि हमारे देश की प्रशासन व्यवस्था चलाने वाली भाषा अंग्रेजी है, जबकि व्यवस्था की भाषा जनभाषा होनी चाहिए। हमारे संसाधनों का ढलान अंग्रेजी की तरफ है, हमे उस ढलान को बदलना होगा। अंग्रेजी के आतंक से डरा हुआ देश कैसे महाशक्ति बनेगा? यह विचारणीय है। हम योजनाबद्ध ढंग से मैकाले की नीति के शिकार रहे है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस सन्दर्भ में ठोस कदम उठाती है जो निश्चित ही राष्ट्रभाषा बनने की और अग्रसर हिंदी के लिए जीवनदायिनी है।

चुनौतियाँ— निःसन्देह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारतीय भाषाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन इसके क्रियान्वयन की कुछ चुनौतियां भी हैं जो इस नीति को कार्यरूप देने में समस्या के रूप में हमारे सम्मुख आ सकती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाषा/स्थानीय भाषा/घरेलू भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने की बात करती है, लेकिन इन भाषाओं में शिक्षण की भिन्न–भिन्न चुनौती है। भारतीय समाज में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, कहीं क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाएं अलग हैं, कहीं मातृभाषा और घरेलू भाषा अलग–अलग हैं, ऐसे में द्विभाषी शिक्षक, प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा का चुनना चुनौती होगा। एक चुनौती शिक्षकों के तबादले की भी है। शिक्षक और विद्यार्थी के भाव अलग–अलग होते हैं। भाषा अलग होती है, शिक्षक दूसरी भाषा के साथ भावनात्मक संबंध नहीं बना पाता, जिस कारण छात्राओं के साथ भी वह नहीं जुड़ पाता। तो एक यह चुनौती होगी कि ऐसे शिक्षक नियुक्त किए जाएं जो घरेलू भाषा बोलें। बहुभाषी शिक्षकों की उपलब्धता और व्यय की दृष्टि से भी यह नीति महंगी होगी। इसके अतिरिक्त सभी मातृभाषा में अध्ययन सामग्री

उपलब्ध कराना, हिंदी माध्यम के व्यवसायिक कोर्स में रोजगार उपलब्ध कराना भी एक चुनौती होगी। फिर भी संकल्पबद्धता के साथ से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन किये जायें तो तमाम चुनौतियों के बावजूद यह नीति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होगी।

समग्रता में कह सकते है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं के लिए वरदान साबित होगी। यह नीति स्व अक्षर का बोध कराती हुई उपनिवेशवाद से छुटकारा दिलाने का प्रयास करती है। अंग्रेजी का प्रभुत्व समाप्त कर भारत की भाषाओं को मुख्यधारा में लाने और शिक्षा का भारतीयकरण करने का प्रयास भी इस नीति में किया गया है। यह नीति इस बात को सुनिश्चित करती है कि विद्यालय और उच्च शिक्षा का माध्यम स्वभाषा हो, अंग्रेजी जैसी विजातीय भाषा को शिक्षण में महान बना देने से भारतीय भाषाओं में उपस्थित ज्ञान से हम वंचित रह जाते हैं। हम अपनी भाषाओं में समझ विकसित नहीं कर पाते हैं। अंग्रेजी की स्वीकार्यता और अनिवार्यता ने दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को हाशिए पर डाल दिया है, ऐसे में नई शिक्षा नीति निज भाषाओं की उन्नति, उनके उत्थान और शिक्षण संवर्धन की बात करती हुई उनके लिए संजीवनी प्रदान करती है। अंत मे कहें तो हिंदी नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियां नई शिक्षा नीति की भाषायी प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करने में सार्थक प्रतीत होती हैं–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।"[9]

अर्थात निज भाषा की उन्नति में ही सभी उन्नतियों का मूल है। स्वभाषा की उन्नति से ही देश और समाज की प्रगति होगी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यही संदेश है। अतः यह कहना न्यायसंगत होगा कि अगर हम अपनी भाषा को साधन बनाकर चलेंगे, अंग्रेजी के बहाव के विपरीत हम बढ़ेंगे, तो निश्चित ही भारत को विश्वशक्ति बनने से कोई नही रोक सकता।

सन्दर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृष्ठ 87
2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय,राष्ट्रीय चिंतन 'शिक्षा', पृष्ठ,102
3. सानू सक्रांत, अंग्रेजी माध्यम का भ्रम जाल, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
4. एजुकेशनल रिकंस्ट्रक्शन, पृष्ठ,127
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृष्ठ 20
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृष्ठ 20
7. रामनाथ शर्मा, राष्ट्रीय धर्म दृष्टा श्री अरविंद शिक्षा और समाज, लोकहित प्रकाशन, पृष्ठ 183
8. सम्पूर्ण गांधी वांग्मय, खण्ड–13, पृष्ठ 432
9. भारतेंदु हरिश्चंद्र, कविता 'निज भाषा'

❑❑❑

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
भगिनी निवेदिता कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)
मोबाइल न.–9716188974 ईमेल–reenakasana3192@gmail.com
पता–बी–17, रिड्स लाइन, स्टाफ फ्लैट, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007

निजभाषा का प्रश्न और सिनेमा

–डॉ. शशि रानी

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जो एक साथ अनेक भाषा रूपों को समाए हुए अपना विकास कर रहा है। अधिकांश भाषाई समाज तक अपनी पहुंच बनाने और व्यावसायिक दृष्टि से अपना दायरा व्यापक करने के लिए हिंदी में फिल्में बनाई जाती है। नरेंद्र शर्मा के अनुसार, "सिनेमा लोक संस्कृति का धरोहर व्यवसाय है। चिर–नवीनता उसकी फितरत है, और नवइयत की सतत तलाश उसे नानाविध सामाजिक–सांस्कृतिक–भाषायी स्रोतों से सामग्री उठाने पर मजबूर करती है।"

भाषा हमारी संवेदना और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं है, यह हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है। सिनेमा में भाषा और हिंदी सिनेमा दोनों की विकास यात्रा 1931 में बनी पहली सवाक फिल्म आलमआरा से प्रारंभ हुई। दृश्य और भाषा के योग ने सिनेमा को व्यापक और लोकप्रिय जनोन्मुखी माध्यम बनाया। चूंकि सिनेमा एक कलात्मक अभिव्यक्ति है इसलिए इसकी भाषा का स्वरूप सदैव एक जैसा नहीं होता। समाज, परिस्थिति, परिवेश, पात्र, घटना और उद्देश्य के बदलने के साथ ही इसकी भाषा भी बदल जाती है। यही कारण है कि सिनेमा की भाषा का किसी एक भाषा के प्रति आग्रह नहीं होता। 1931 से लेकर आज तक की फिल्मों में भाषा के इस स्वरूप को आसानी से देखा जा सकता है। आर्थिक उदारीकरण, बदलती जीवन शैली ने फिल्मों में भाषा के ट्रेंड को बदला है। अब फिल्मों में क्षेत्रीय भाषाओं और क्षेत्रों में हिंदी बोलने के अंदाज को भी अपनाया जाने लगा है। जो सिनेमा की संवेदना को जन–जन तक सहज संप्रेषणीय बनाती है। हम पाते हैं कि केवल समाज ही नहीं अपितु बाजार भी इसकी भाषा के स्वरूप को निर्धारित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी सिनेमा में भाषा के प्रश्न को इसी दृष्टि से अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : भाषा, सिनेमा, ट्रेंड, बाजार, साझा संस्कृति, संवेदना

परिचय : सिनेमा की भाव भूमि को सहजता और जीवंतता से सराबोर करने में भाषा एक अनिवार्य घटक है। यह है हमारे वर्तमान को हमारी संस्कृति, ज्ञान परंपरा और मूल्यों से तो जोड़ती ही है समाज में होने वाले हर परिवर्तन की धड़कन भी इसमें बोलती है। कहानी कहने या दिखाने के लिए सिनेमा में पुराने भाषा रूपों का प्रयोग किया जा सकता है लेकिन नई बात, नये युग को प्रस्तुत करने के लिए पुराने भाषा रूपों का प्रयोग समुचित नहीं होता क्योंकि भाषा रूप भी तत्कालीन परिवेश का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाता है। समय,

समाज और बाजार सभी भाषा रूप को प्रभावित करते हैं। सिनेमा के प्रारंभ से अब तककी फिल्मों के भाषिक ट्रेंडमें भी इस त्रिवेणी को आसानी से देखा जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

भाषा सहज रूप से ही विकसित होती है। इसका विकास कोई अपनी तरह से अपनी धारणाओं के आधार पर नहीं कर सकता। लेकिन यह भी उतनी ही बड़ी सच्चाई है कि भाषा को बांधकर नहीं रखा जा सकता। बांधकर रखने की कोई भी कोशिश भाषा का हित नहीं कर सकती। इससे भाषा जड़ हो जाएगी और उसका विकास रुक जाएगा। भाषा को सतत गतिशील रहना चाहिए, तभी वह जीवित रह सकती है। (सुरेश उनियाल)

सिनेमा की पृष्ठभूमि

बीसवीं सदी के प्रथम दशक में पारसी रंगकर्मी जुड़ गए और उन्होंने एक मिली–जुली संस्कृति की मिली जुली भाषा को जन्म दिया और यह भाषा इतनी लोकप्रिय रही थी कि गुजराती, मराठी और मारवाड़ी रंगकर्मी अपनी अपनी भाषा छोड़कर इस में काम करने के लिए हिंदी भाषा सीखने को तत्पर हुए। (डॉ लक्ष्मी नारायण लाल) उभरते औद्योगिक महानगर के रूप में गैर मराठी और गैर गुजराती लोगों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही थी। सैनिको, नाविकों, मजदूरों के रूप में आने वाले लोगों के बीच संपर्क भाषा के रूप में जिस जबानका उपयोग होता था। यह वही जबान थी जो पहले पारसी थिएटर के लोकप्रिय रंगमंच की भाषा बनी और बाद में सिनेमा की भाषा बनी। नाटकों के लिए जिस जबान का प्रयोग फिल्मों ने किया उसकी जड़ें उस पारसी नाटकों में थी जो फिल्मों के अस्तित्व में आने से पहले लगभग उन्हीं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिखें और खेले जाते थे जो बाद में फिल्मों के दर्शक बने। भाषा का चयन आकस्मिक नहीं था। नाटकों का आधुनिक इतिहास बताता है कि कि पहले अंग्रेजी के बाद में मराठी और गुजराती के नाटक खेले गए लेकिन जब उन्होंने हिंदुस्तानी में नाटक खेलना शुरू किया तो उनकी पहुंच ना सिर्फ पूरे उत्तर भारत में हो गई बल्कि वे कलकाता जैसे महानगरों तक पहुंच गए। सिनेमा की भाषा को रूप देने में हिंदुस्तानी परंपरा से जुड़े नाटककारों का बहुत बड़ा योगदान था। लेकिन यह जबान लोकप्रिय इसलिए भी हो सकी कि कोलकाता से मुंबई और सुदूर पश्चिम में पेशावर तक फैले इलाके के लोगों के लिए यह बहुत अपरिचित नहीं थी। यहां लोगों में हर धर्म, हर जाति और हर वर्ग का दर्शक मौजूद था केवल शिक्षित ही नहीं अशिक्षित भी। (जवरीमल्ल पारख, पृ. 65) विभिन्न प्रांतों से आए बहुभाषी समाज तक पहुंच बनाने के लिए भाषा का यह प्रयोग समीचीन रहा।

सिनेमा की भाषा का स्वरूप

फिल्म के प्रत्येक क्षेत्र में गैर हिंदीभाषी कलाकारों का बाहुल्य है। यदि किसी एक क्षेत्र में हिंदी उर्दू भाषियों का बाहुल्य है तो वह है संवाद और गीत लेखन में। हिंदी फिल्मों में संवाद और गीत के लिए ही फिल्मकार मुख्य रूप से हिंदी उर्दू भाषी लेखकों और गीतकारों पर निर्भर हैं। गैर हिंदी भाषी फिल्मकारों के बाहुल्य का ही नतीजा है कि हिंदी सिनेमा में पटकथा लेखक और संवाद लेखक अलग–अलग होते हैं। हिंदी फिल्म की पटकथा तो अंग्रेजी में लिखे जाने का चलन आम है लेकिन संवाद और गीत तो जाहिर है कि हिंदी में ही हो सकते हैं। (वही पृ. 62) सिनेमाई हिंदी बॉलीवुड सिनेमा की सबसे बड़ी शक्ति है। यह बॉलीवुड फिल्मों की लाइफ लाइन है। बॉलीवुड फिल्में प्रतिवर्ष लगभग 1.75 अरब अमेरिकी डॉलर का कारोबार कर रही है।

बॉलीवुड सिनेमा का फैलाव अरब जगत, अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, इसराइल, लातिन अमेरिकी देशों के साथ उत्तरी अमेरिका, कनाडा जैसे देशों में है। अधिकांश प्रवासी भारतीय बॉलीवुड की फिल्मों के दर्शक हैं। इसी के साथ ही ब्रिटेन और अमेरिका में बनी भारतीय विषयक सिनेमा (मानसून वेडिंग आदि) में भी हिंग्लिश या ग्लोबली हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। सरल हिंदी में डब की जा रही हॉलीवुड फिल्मों (स्पाइडर–मैन 2, हैरी पॉटर आदि) का अपना हिंदी मार्केट है। इसी संदर्भ में ब्रांड दर्शकों का यह युवा वर्ग जो बड़े नगरों के मल्टीप्लैक्सों में लगने वाला हिंदी सिनेमा देखता है, एक तरह की हिंग्लिश उच्चारण की शैली वाली हिंदी से जुड़ रहा है। इस पड़ाव पर हमें सोचना होगा कि हॉलीवुड या ग्लोबल सिनेमाई हिंदी हमें किस प्रकार की भाषा संस्कार की ओर ले जा रही है।(किशोर वासवानी, पृ.37)

शोध अंतराल

शोध अपने आप में किसी चीज को नए ढंग से प्रस्तुत करने या एक नई अवधारणा की खोज करता है । प्रत्येक शोध उनस्वतंत्र विचारों के विस्तार में एक सेतु का कार्य करता है जिन पर पहले चर्चा नहीं हुई है। इस शोध पत्र में शोधकर्ता ने भाषा का प्रश्न और सिनेमा से संबंधित तथ्यों को व्यवस्थित तरीके से लिया है जो इसे अन्य शोध पत्रों से अलग बनाते हैं। इसके अतिरिक्त शोध पत्र में शोधकर्ता ने हिंदी सिनेमा में भाषा के बदलते ट्रेंड को समझाया है जो अन्य शोध पत्रों में वर्णित नहीं है।

शोध प्रश्न

1. सिनेमा में भाषा का स्वरूप कैसे निर्मित हुआ है?
2. हिंदी सिनेमा की भाषा क्या केवल हिंदी है?
3. सिनेमा की भाषा की प्रकृति कैसी है।

शोध केउद्देश्य

1. सिनेमा में भाषा के महत्व को जानना।
2. सिनेमा की भाषा की प्रकृति को जानना।
3. सिनेमाकी भाषा को रूप देने वाले कारणों की पड़ताल करना।

दायरा और सीमाएं

शोधार्थी ने इस विषय से संबंधित आंकड़ा ढूंढने में काफी समय लगाया है और आंकड़ा एकत्रित करते समय स्रोत की प्रामाणिकता और उपयुक्तता का पूरा ध्यान रखा है। सीमा यह है कि केवल प्रमुख फिल्मों के संदर्भ में भाषा पर विचार किया गया है और निष्कर्ष का सांख्यिकी रूप से उल्लेख नहीं किया गया है क्योंकि यह प्रकृति में वर्णनात्मक है।

शोध विधि

शोधकर्ता ने सिनेमा मेंभाषा के प्रश्न का विश्लेषण करने के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया है। शोध पत्र में शोधार्थी ने शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने और व्यापक विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक पद्धति को अपनाया है। शोधकर्ता ने लगभग हर दशक की फिल्में ली हैं।

अध्ययन का विश्लेषण

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जो एक साथ अनेक भाषा रूपों को समाए हुए अपना विकास कर रहा है। अधिकांश भाषाई समाज तक अपनी पहुंच बनाने और व्यावसायिक दृष्टि से अपना दायरा व्यापक करने के लिए हिंदी में फिल्में बनाई जाती है। नरेंद्र शर्मा के अनुसार, "सिनेमा लोक संस्कृति का धरोहर व्यवसाय है। चिर–नवीनता उसकी फितरत है, और नवइयत की सतत तलाश उसे नानाविध सामाजिक–सांस्कृतिक–भाषायी स्रोतों से सामग्री उठाने पर मजबूर करती है।" सिनेमा की यह प्रकृति और सिनेमा शुरू होने की प्रारंभिक स्थितियां यानी पारसी रंगमंच की भाषिक परंपरा मिलकर सिनेमा की भाषा का स्वरूप निर्मित करती हैं। जो अपनी प्रकृति में सामासिक है।

सिनेमा की भाषा की प्रकृति साहित्य और अन्य कलात्मक विधाओं से अलग है। "यह अंतर अन्य भाषाओं अंग्रेजी, बांग्ला, तमिल, मलयालम में उतना नहीं है। अतः इन भाषाओं को अपने सिनेमा में कुछ सीमा तक ही सही अपने साहित्य द्वारा एक संस्कार मिला है। हिंदी सिनेमा में यह नहीं हो पाया।" (किशोर वासवानी) सिनेमा संप्रेषण का एक सशक्त जनमाध्यम है। इसकी भाषा, व्याकरण का अपना अलग मुहावरा है जो इस माध्यम के दृश्य श्रव्य स्वरूप, व्यावसायिक स्वरूप / बाजार, फिल्म निर्देशक और फिल्म दर्शक की बदलती रुचि, फिल्म निर्माण की बदलती तकनीक और समय एवं समाज के अनुरूप बदलती सामाजिक संवेदना से निर्मित होता है। इस प्रवृत्ति को पहली सवाक फिल्म से लेकर आज तक देखा जा सकता है। विमल राय, महबूब खान, वी शांताराम और श्याम बेनेगलकी हिंदी फिल्में उनकी अपनी भाषासे या समूचे भारतीय सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हैं। देवदास (1936), बंदिनी (1955) और परिणीता (1953) में बंगाली समाज, गुजराती पृष्ठभूमि मदर इंडिया (1957) और लगान (2001) जैसी फिल्में अपने समय के सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करती हैं। फिल्म की कहानी का देशकाल वातावरण पात्रों की वेशभूषा और भाषा को निर्धारित करता है। इसीलिए एक सही समय में बनी फिल्मों की भाषा एक से नहीं होती जैसे प्यासा, मदर इंडिया (1957), बंदिनी, हमराही (1963), निकाह ,सत्ते पे सत्ता (1982), बैंडिट क्वीन, हम आपके हैं कौन (1994) बंटी और बबली, मंगल पांडे द राइजिंग (2005), गंगूबाई काठियावाड़ी , दि कश्मीर फाईल्स और रामसेतु (2022) आदि। इन फिल्मों में समय स्थान और पात्र की पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा का प्रयोग किया गया है।

सिचुएशन के हिसाब से भाषा संस्कारों की खोज करती रही है। फिल्म सत्या और बैंडिट क्वीन इसके उदाहरण हैं। सत्या की भाषा हिंदी सिनेमा संस्कार से एकदम अलग है। कल्टी, झकास, बिंदास, मस्त, लफड़ा,गल्ली, घोड़ा (पिस्टल), भेजा, तेरे को आदि शब्दों का चयन और इसके गीत (सपनों में मिलती है) भाषा के स्वरूप का एक अलग संसार अभिव्यक्त करते हैं, जिनका अपना स्पेस तो है पर उसे प्रमाणिक नहीं माना जाता।" बैंडिट क्वीन ने हिंदी सिनेमा के जवायची भाषा संस्कार में सेंध लगाई तो सत्या ने उसे आवाजाही का जनपथ बना दिया। यह भाषा का अवमूल्यन नहीं समकालीन अलंकार था जिसका आधार यह सोच थी कि समाज का जो वर्ग जो पर्दे पर आएगा वह अपने परिवेश और वेशभूषा के साथ उस भाषा में संवाद करेगा जिसको वो' ओढ़ता–बिछाता है।" (संवेद, पृ. 33)

सिचुएशन में बाजार भी शामिल है। लोकप्रिय फिल्मों में भाषाका स्वरूप बाजार के प्रभाव और कथा के सामाजिक यथार्थ के प्रति फिल्म निर्देशक के आग्रह से निर्मित होता है। हम आपके हैं कौन, कभी खुशी कभी गम, कल हो ना हो, देवदास (संजय लीला भंसाली, 2006), लगान, मुन्ना भाई एमबीबीएस, लगे रहो मुन्ना भाई, जब वी मेट, तारे जमीन पर, थ्री इडियट्स, आदि। मैं इसे आसानी से देखा जा सकता है। मुन्ना भाई एमबीबीएस फिल्म हास्य मूलक है। इसकी व्यंग्यात्मकता इस फिल्म को काफी लोकप्रिय बना देती है। इस फिल्म की बनावट बुनावट में

रोचकता, मनोरंजकता और उपयोगिता है जो गंभीर उद्देश्य को प्रत्येक स्तर और वर्ग के दर्शक तक सहजता से संप्रेषित कर देती है। मुन्ना की भाषा मुंबई की चालों या झुग्गी बस्तियों में रहने परित्यक्त समाज की भाषा है। राजकुमार हिरानी ने टपोरियों की भाषा में भी बड़ी मजबूती से गांधी के संदेशों को पुनर्जीवित कर दिया है। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति के परंपरागत जीवन मूल्यों को पारिवारिक पृष्ठभूमि चित्रित करती हम आपके हैं कौन और देवदास में भाषा और संवाद अभिजात्य परिनिष्ठता से युक्त हैं। तनु वेड्स मनु की मुख्य किरदार कंगना हरियाणवी, बाजीराव मस्तानी में रणबीर कपूर बाजीराव पेशवा के जरिए मराठी, गैंग्स ऑफ वासेपुर में भोजपुरी, उड़ता पंजाब में पंजाबी, पान सिंह तोमर में बुंदेलखंडी, दंगल में हरियाणवी मिश्रित हिंदी, चेन्नई एक्सप्रेस में तमिल और हिंदी, इंग्लिश विंग्लिश मैं एक गाने के प्रसंग में पारंपरिक मराठी गीत का मुखड़े का प्रयोग है। समय के अनुसार भाषा में परिवर्तन हुआ है संवाद लेखन और पटकथा पर क्षेत्रीय प्रभाव देखने को मिलता है पर उसकी मूल प्रकृति पहले की तरह वर्तमान है। क्षेत्रीय भाषा और लहजा उसे स्वाभाविकता प्रदान करते हैं।

आर्थिक उदारीकरण और मल्टीप्लेक्स की बढ़ती संस्कृति ने हिंग्लिश की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। 1992 में नागेश कुकुनूर की हैदराबाद ब्लूज अंग्रेजी संवादों से भरी पड़ी है। इसके बाद इंग्लिश अगस्त 1994, मिस्टर एंड मिसेज अय्यर 2002, बोंग कनेक्शन 2006, लास्ट ईयर 2008, माय जैपनीज वाइफ 2012 में अंग्रेजी संवादों की भरमार है। हॉलीवुड की फिल्मों के प्रभाव के कारण न केवल भाषा बल्कि कहानी भी विदेशी है माय नेम इज खान, लंदन ड्रीम्स, पटियाला हाउस, अनजाना अनजानी, ऐसी ही फिल्में हैं।

निष्कर्ष

सिनेमा की विकास यात्रा दर्शाती है कि सिनेमा में समय, समाज और बाजार के अनुरूप भाषा के अनेक रूप प्रयुक्त हुए हैं। फिल्मकारों और फिल्म के दर्शकों की बदलती चेतना एवं अभिरुचि के कारण हिंदी सिनेमा के कथानक में विषय, भाषा, वर्ग, आयु, और क्षेत्र के वैविध्य को समा रहा है। इसलिए समाज की धारा में बहते सिनेमा की हिंदी भाषा में भाषा के ग्लोकल और ग्लोबल दोनों ही रूप दिखाई पड़ते हैं जो कि इसकी सामासिक संस्कृति का ही विकास है।

संदर्भ

1. गगनांचल, जुलाई–सितंबर ,1999
2. सिनेमाई भाषा और हिंदी संवादों का विश्लेषण,किशोर वासवानी, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली
3. हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, जवरीमल्लपारख, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली
4. वाक त्रैमासिक, अंक 3, 2007, वाणी प्रकाशन
5. हिंदी नेशनलिज्जम, आलोक राय, ओरियंट लॉन्गमैन,नई दिल्ली
6. संवेद, जनवरी 2015
7. हिंदी सिनेमा एक सफरनामा, सी भास्कर राव, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सिने पत्रकारिता, श्याम माथुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर
9. मीडिया की भाषा लीला, रविकांत,, वाणी प्रकाशन

❒❒❒

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज, ईमेल : ssranidu@gmail.com मो.: 9810709922

भाषा का प्रश्न और सिनेमा

–डॉ. नीतू गुप्ता

भाषा और सिनेमा के इस मेल से एक नए सिनेमाई युग का आरम्भ हुआ। बोलती फिल्मों के आरंभिक दौर में निर्देशक ने भाषा की रचनात्मकता का बेहद सफल और प्रभावी प्रयोग किया जिसमें बाद में धीरे–धीरे नाटकीयता का भी समावेश होने लगा। सिनेमा ने भाषा और भाषाई संस्कृति दोनों के स्वरूप को विकसित किया। किसी भी फिल्म में पात्रों की परिस्थितियों और परिवेश के आधार पर ही भाषा का प्रयोग किया जाता है।

भाषा ने मानव–मन के उद्‌गारों को व्यक्त करने में जो स्तुत्य योगदान दिया है उसी का परिणाम है कि मनुष्य के मन में उठने वाले विचार, भाव यहाँ तक की जो स्वप्न वह सोती–जागती आँखों से देखता है सभी भाषा में ही साकार हो पाते हैं। यह भाषा ही है जिसने साहित्य को संभव बनाया है। देश जब गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा छटपटा रहा था तब एक भाषा ने अपनी वास्तविक शक्ति दिखाई और समूचे देशवासियों को एक धागे में पिरोकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ ऐसी मुहिम छेड़ी जिसमें सभी अंग्रेजों को देश छोड़कर भागना पड़ा। यह भाषा ही है जिसने मूक सिनेमा को गति एवं अभिव्यक्ति दोनों प्रदान की। मूक सिनेमा में अभिनय तो लाजवाब था किन्तु अभिव्यक्ति का अभाव दर्शकों को खलता था। सन् 1934 के बाद की फिल्मों में भाषा के आगमन ने सिनेमा को दृश्य के साथ–साथ श्रव्य माध्यम भी बना दिया।

भाषा और सिनेमा के इस मेल से एक नए सिनेमाई युग का आरम्भ हुआ। बोलती फिल्मों के आरंभिक दौर में निर्देशक ने भाषा की रचनात्मकता का बेहद सफल और प्रभावी प्रयोग किया जिसमें बाद में धीरे–धीरे नाटकीयता का भी समावेश होने लगा। सिनेमा ने भाषा और भाषाई संस्कृति दोनों के स्वरूप को विकसित किया। किसी भी फिल्म में पात्रों की परिस्थितियों और परिवेश के आधार पर ही भाषा का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक भाषा–भाषी समाज में भाषा का स्वरुप कभी एक जैसा नहीं रहता। समय बदलने के साथ–साथ उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। यही परिवर्तन सिनेमा में भी दृष्टिगत होता है। फिल्मों में देशकाल–वातावरण के अनुसार भाषा का चयन किया जाता है। आमतौर पर हिन्दू देवी–देवताओं एवं पौराणिक विषयों पर आधारित फिल्मों में संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग होता था, किन्तु ऐतिहासिक विशेषकर मुगलकाल को प्रस्तुत करने वाली फिल्मों की भाषा उर्दू मिश्रित हिंदी होती थी। इसमें भी विशेष ध्यान इस बिंदु पर दिया जाता था कि संवाद बोलने वाला पात्र किस पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखता है। उदाहरण के तौर पर मुगल–ए–आज़म फिल्म से हम इस बिंदु को भली–भाँति समझ सकते हैं। शहजादे सलीम का यह संवाद कि ''मुझ पर जुल्म ढाते हुए आपको यह सोचना चाहिए

कि मैं आपके जिगर का टुकड़ा हूँ कोई गैर या कोई गुलाम नहीं। इसी संवाद के उत्तर हिन्दू महारानी जोधाबाई का यह संवाद भी देखने योग्य है — नहीं, सलीम नहीं... तुम हमारी बरसों की प्रार्थनाओं का फल हो।''

यहाँ सोचने वाली बात यह है कि बालक जन्म के पश्चात् जो भाषा सबसे पहले सीखता है वह उसकी मातृभाषा कहलाती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि बालक सर्वप्रथम एवं सबसे अधिक अपनी माँ के संपर्क में रहता है अतः उस पर माँ की भाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। सिनेमा भी इस तथ्य से भली–भाँति परिचित है। लेकिन निर्देशक ने जिस मुगलकाल को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया उसमें सत्ता की भाषा अरबी–फारसी थी और सलीम उस सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाला भावी शहंशाह। इस आधार पर उर्दूनिष्ठ भाषा का प्रयोग उसके लिए अवश्यम्भावी था। दूसरी ओर जोधाबाई भले ही महारानी हो किन्तु सत्ता में उसकी दखल न के बराबर है। अतः वह अपनी हिन्दू संस्कृति का ही परिचय देती है। (तत्कालीन दौर की राजनीति में स्त्रियों का हस्तक्षेप सर्वविदित है।) यहाँ भाषा का सम्बन्ध सीधे सत्ता से जुड़ता दिखाई देता है। सिनेमा की भाषा की यह सफलता ही कही जाएगी कि वह माँ और बेटे की भाषा में प्रयुक्त शब्दों की भिन्नता को भली–भाँति प्रस्तुत करता है और दर्शकों को यह भिन्नता कहीं भी अटपटी नहीं लगती। इसी तरह ग्रामीण पृष्ठभूमि को आधार बनाकर निर्मित होने वाली फिल्मों में देशज भाषा एवं देशज शब्दों की भरमार देखने को मिलती है। इनमें 'मदर इंडिया' और 'दो बीघा जमीन' जैसी फिल्में बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। मदर इंडिया में हिंदी के साथ–साथ भोजपुरी भाषा के प्रयोग ने फिल्म को प्रभावशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

फिल्मों का संवाद लेखन साहित्य के लेखन से इस मायने में भिन्न है कि फिल्मकार के पास श्रव्य के अतिरिक्त दृश्य माध्यम भी मौजूद रहता है। निर्देशक कैमरे के विभिन्न कोण, ध्वनि, प्रकाश व्यवस्था, नायक–नायिकाओं के चेहरे के हाव–भाव, प्रकृति की अलग–अलग लोकेशन आदि कई माध्यमों से अपना सन्देश दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर सकता है। ''निर्देशक जिस भी बात पर बल देना चाहता है तुरंत उसका क्लोज–अप दिखा देता है। चेहरे का क्लोज–अप दिखाकर उसके एक–एक भाव को स्पष्ट कर देता है।''[1] यहाँ महत्त्वपूर्ण बिंदु यह भी है की दर्शक भी पात्रों के बिना कुछ कहे ही सब कुछ समझ जाता है। 70 और 80 के दशक की सभी फिल्मों में प्रेमालाप को समझाने के लिए अक्सर दो फूलों को मिलते हुए एवं बालक के आगमन की सूचना के लिए एक कली को खिलते हुए दिखाया जाता है। अतः ''साहित्य में जहाँ हम शब्दों के अर्थात् भाषा के सहारे देखते हैं वहाँ फिल्म में हमें कल्पना की मदद के बिना सीधे ही सब कुछ दिखाई देता है और साथ ही सुनाई भी पड़ता है।''[2]

फिल्मी संवादों ने स्त्री–छवि को गढ़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रारम्भ से आज तक स्त्री न केवल भारतीय सिनेमा के वरन विश्व सिनेमा के केंद्र में रही है। ''स्त्री के सौंदर्य का, उसके हृदय का, हर्ष और विषाद का, उदात्त प्रेम और छलनामय प्रेम का, सरलता और कुटिलता का।. ..... स्त्री की सहिष्णुता और करुणा का कभी यथार्थ और कभी अतिरंजक चित्रण सिनेमा में हुआ है।''[3] सिनेमा ने समाज में समय–समय पर स्त्री की बदलती स्थिति का सही मूल्यांकन किया है। आरम्भिक दौर में अछूत कन्या, दुनिया न माने, मिर्च मसाला, जोगन, सुजाता, धूल का फूल, मृत्युदंड, लज्जा आदि फिल्मों में स्त्री की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने में इन फिल्मों की भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उदाहरण के लिए पिंक फिल्म का यह संवाद ''नो मीन्स नो'' भले ही छोटा सा हो किन्तु एक स्त्री के पूरे व्यक्तित्व को उजागर करने वाला है। स्त्री पुरुषों की तरह अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करती लेकिन अगर उसने एक बार ना कह दिया तो वह अपने निर्णय से पीछे भी नहीं हटती। इसी तरह बाहुबली फिल्म का संवाद ''औरत पे हाथ डालने वालों की

उंगलियां नहीं काटते, काटते हैं उसका गला।''

अस्सी के दशक में एक फिल्म आयी थी 'एक दूजे के लिए' इसमें भाषा की दृष्टि से फिल्मकार ने सर्वथा नवीन प्रयोग किये। जिसमें नायक तमिल भाषा–भाषी है एवं नायिका उत्तर भारतीय है। दोनों पूरी तरह से अलग पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हैं और एक दूसरे की भाषा को बोलने–समझने में असमर्थ हैं। ऐसे में उनके बीच आपसी सम्पर्क स्थापित करने के लिए किसी तीसरी भाषा की आवश्यकता है। इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है 'अंग्रेजी'। उस दौर में अंग्रेजी पूरी तरह से जनमानस के दिलो–दिमाग पर हावी नहीं हो पायी थी इसलिए फिल्मकार ने संवादों में टूटी–फूटी अंग्रेजी का प्रयोग किया। इसकी तुलना यदि वर्तमान फिल्मों के संवादों से की जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि आज मध्यवर्ग भी अंग्रेजी भाषा में दक्ष है जिसके चलते फिल्म में धड़ल्ले से अंग्रेजी संवादों का प्रयोग एक आम बात हो गयी है। संभवतः निर्देशक ने समाज की दशा का गहन अध्ययन किया और यह अनुमान लगाया कि यदि भारत के अलग–अलग राज्यों को आपस में संपर्क स्थापित करना है तो या तो एक दूसरे की भाषा को सीखना होगा जो नितांत असंभव है, क्योंकि भारत एक बहुभाषा–भाषी देश है। ऐसे में किसी तीसरी भाषा की आवश्यकता होगी जो सारे देश में प्रचलित हो। इसे ही देश की संपर्क भाषा मानना उचित होगा। इस फिल्म के गीतों में भी यही भाषायी प्रयोग बड़े रोचक ढंग से किया गया। जिसमें एक पंक्ति हिंदी की थी तथा दूसरी अंग्रेजी की। नायिका हिंदी में तो नायक का उपहास करती है परन्तु इसके साथ ही अंग्रेजी में उसकी प्रशंसा भी करती है जिससे गीत में हास्य का पुट विद्यमान रहे।

सिनेमा में गीतों ने दर्शकों के हृदय पर अपनी छाप छोड़ने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी। गीत चाहे राष्ट्र–प्रेम की भावना से ओत–प्रोत 'वंदे मातरम' हो, 'ए मेरे प्यारे वतन' या 'मेरे देश की धरती सोना उगले' आदि हो अथवा कहीं जीवन दर्शन को व्याख्यायित करने वाला जिंदगी प्यार का गीत है, जिंदगी की यही रीत है, जिंदगी कैसी है पहेली हाय, जिन्दगी का सफर आदि हो या दर्शकों के भीतर भक्ति भाव को जागृत करने वाला चलो बुलावा आया है, तू प्यार का सागर है, बड़ी देर भई नंदलाला, सुख के सब साथी, ए मालिक तेरे बंदे हम, हम को मन की शक्ति देना आदि हो सभी में भाषा ने अपना चमत्कार दिखाया और सिनेमा को घर–घर में प्रचलित कर दिया। फिल्मकारों ने गीतों में भी अपनी रचनात्मक क्षमता का बखूबी प्रयोग किया है जिसमें खुद्दार फिल्म का एक गीत 'अंग्रेजी में कहते है कि आई लव यू' उल्लेखनीय है, इस एक ही गीत में गीतकार ने अनेक भाषाओं के वाक्यों को सम्मिलित करके सभी भाषाओं को एक ही धुन में पिरो दिया। इन फिल्मी गीतों ने जीवन के हर रंग को उभारा है। यहाँ ''एक ओर प्रेम की स्वीकृति तो दूसरी ओर निडरता की अभिव्यक्ति है। मुगल–ए–आज़म की अनारकली गीत के जरिये अकबर बादशाह के सम्मुख सच को बेहिचक प्रस्तुत करती है, उसमें प्यार के कुबूलने की दृढ़ता है किन्तु उद्धतता के साथ नहीं , बल्कि नम्रता के साथ।''[4] जैसे–

''प्यार किया तो डरना क्या?
प्यार किया कोई चोरी नहीं की
चुपचुप आहें भरना क्या.....?''

हिंदी सिनेमा में अनेक फिल्में ऐसी बनी जो दूसरी भाषा की पृष्ठभूमि पर आधारित थी। बात चाहे 'यहूदी' में दर्शाये गए रोम और मिस्र के इतिहास की हो, चाहे देवदास और परिणीता के बंगाली समाज की, कहीं मदर इंडिया का गुजराती समाज है तो कहीं गंगा जमुना और लगान जैसी फिल्मों का भोजपुरी और अवधी भाषा का सशक्त प्रयोग करता हुआ ग्रामीण परिवेश, यहाँ मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस. की उस मुम्बइया टपोरी भाषा को कैसे भुलाया जा सकता है जो लम्बे

अरसे तक दर्शकों की जुबान पर चढ़ी रही, इन सभी में फिल्मकारों ने स्थानीयता का पुट बनाये रखने के लिए उसके पहनावे के साथ–साथ अनेक संवाद भी उसी भाषा से लिए जो दर्शकों के बीच काफी लोकप्रिय भी हुए। इस सम्बन्ध में जवरीमल्ल पारेख का यह कथन उल्लेखनीय है कि "बिमल रॉय हिंदी में सिनेमा बनाते हैं, लेकिन बार–बार वे हिंदी में बांगला समाज को प्रस्तुत करते हैं, चाहे वह देवदास में हो या परिणीता में"[5] यहाँ फिल्मकार ने भाषा के बैरियर को तोड़ा जिससे फिल्में किसी एक भाषा तक सीमित न रहकर अनेक भाषाओं को अपने में समेटती दिखाई देती हैं। परिणामस्वरूप सिनेमा ने समाज में भाषाई शुद्धता के आग्रह को तोड़ा और भाषा की व्याकरण के बंधनों को कम करके उसके दायरे को समृद्ध किया। इससे बड़ा लाभ यह हुआ कि दर्शकों के भीतर अन्य भाषा के प्रति उदारता का भाव जाग्रत हुआ।

सिनेमा ने अनेक भाषाओं को एक ही मंच पर विराजमान करके सभी भाषा–भाषी समुदाय के बीच परस्पर सौहार्द की भावना का निरंतर विकास किया है। इससे अनेक क्षेत्रीय बोलियों को फिर से विकसित होने में सहायता मिली है जो अन्य भाषाओं के प्रयोग से या तो लुप्तप्राय हो गयी थी या उपहास का विषय बनकर रह गयी थी। तनु वेड्स मनु भाग दो की नायिका हरियाणवी परिधान के साथ–साथ भाषा भी ठेठ हरियाणवी बोलती है जिससे यह फिल्म हिंदी से अधिक हरियाणवी भाषा पर आधारित प्रतीत होती है किन्तु इस फिल्म ने दर्शकों के बीच खूब वाहवाही बटोरी और हिंदी तथा हरियाणवी के मध्य एक सेतु का काम किया।

यह हिंदी भाषा की विशेषता ही कही जाएगी कि एक ओर वह अपनी ज्ञान परंपरा में संस्कृत के निकट है जिससे 'सम्पूर्ण रामायण' एवं 'जय संतोषी माँ' जैसी फिल्में अस्तित्व में आई दूसरी तरफ वह अपनी नफासत में उर्दू के नजदीक है जहाँ 'मुगले आजम', 'मेरे महबूब' आदि को दर्शकों ने खूब सराहा इतना ही नहीं भोजपुरी, अवधी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, हरियाणवी और मराठी आदि भाषाएँ समय–समय पर हिंदी की बोलियों के साथ जुड़कर हिंदी फिल्मों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती रही हैं। अब अन्य भाषा–भाषी भी सहज रूप से 'आत्ता मांझी सटकली', 'केम छो? मजा मा', 'घणी बावरी' का संवाद बोल सकते है। सिनेमा ने इन सभी भाषाओं को एक ऐसा मंच प्रदान किया है जिससे ये भारत की एकता एवं अखंडता को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऊपरी तौर पर भले ही भारत बहुभाषा–भाषी देश प्रतीत होता हो किन्तु सिनेमा ने भाषायी विविधता को कम करके एक ही मंच पर सबको ला खड़ा किया है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. विवेक दूबे – हिंदी साहित्य और सिनेमा, संजय प्रकाशन, संस्करण 2009, पृ. 29
2. वही, पृ. 27
3. प्रो. रतनकुमार पांडेय– 'सिनेमा और साहित्य अन्तःसम्बन्ध', अनंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015, पृ. 235
4. वही, पृ. 168
5. पारेख जवरीमल्ल–'साझा संस्कृति, सांप्रदायिक आतंकवाद और हिंदी सिनेमा' (2012), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली पृ. 245–246

❒❒❒

सहायक प्रोफेसर, दौलतराम कॉलेज, मोबाइल नं.–9811317164 ईमेल – neetugupta210881@gmail.com

भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना

–राज श्री भारद्वाज

भाषा राष्ट्र की एकता का प्रतीक होती है। भारत को एक राष्ट्र के रूप में एक सूत्र में जोड़ने में संस्कृति का विशेष योगदान है। भारत की विभिन्न संस्कृतियों और भौगोलिक रूप से अलग–अलग राज्यों और प्रांतों से संबंध रखने वाले भारतीय पारस्परिक विचारों के आदान–प्रदान के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। भारत के विभिन्न भाषा–भाषी अनेक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। संस्कृत प्रारंभ में साहित्य की भाषा थी। कम्पनी शासन के समय राजकाज की भाषा फारसी प्रयोग की जाती थी।

संस्कृत पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के रूप में भाषा वर्तमान में खड़ी बोली हिन्दी के रूप में प्रयुक्त हो रही है। साहित्य, पत्र–पत्रिकाएं, पत्रकारिता, मीडिया और तकनीकी की भाषा है। प्रथम इतिहास लेखन गार्सा द तासी ने फ्रेंच भाषा में लिखा। मिश्र बंधुओं ने हिंदी साहित्य रचनाओं और रचनाकारों पर लिखा। भाषा और साहित्य का विस्तृत रूप हिंदी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा जिसके आधार पर साहित्य का काल विभाजन परवर्ती साहित्यकारों ने आधार के रूप में अपनाया। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक भाषा, साहित्य और काल के आधार पर प्रवृत्तियां पायी जाती है। आदिकाल में साहित्य की भाषा अपभ्रंश और मैथिली थी। रासो ग्रंथ अपभ्रंश में रचित है। भक्तिकाल में अवधी और ब्रज भाषाओं में रचनाएं लिखी गई। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी कहलायी। रीतिकालीन साहित्य की भाषा अधिकतर ब्रज ही थी। भारतेंदु कालीन भाषा ब्रज और साथ में खड़ी बोली हिंदी भाषा प्रवर्तन में आई इससे पहले देश की सरकारी कामकाज की भाषा अरबी–फारसी, उर्दू, और हिंदी थी। अधिकतर जनसमुदाय द्वारा प्रयुक्त होने वाली भाषा को दृष्टिगत रखते हुए राजभाषा हिंदी प्रयोग में आई। खड़ी बोली हिंदी का व्यवहारिक रूप प्रयुक्त होने लगा। हिंदी को देशभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए राजा राम मोहन राय, राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भारतेन्दु, शुक्ल, प्रेमचंद, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि भारत के इतिहास पुरुष एवं संस्थाओं ने योग दिया। जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा, एक राष्ट्र की एक बोली के रूप में अपनाने और देश को एक सूत्र में बांधने के लिए संघर्ष किया जिसका प्रतिफल है कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में राष्ट्र के गौरव को सोभित करती है। भारत में राष्ट्रीयता की भावना कुरुक्षेत्र, आर्यावर्त, मध्यदेश से प्रारंभ हुई। संस्कृतियों के परस्पर संबंधों से एक राष्ट्र की भावना का उदय हुआ। भारतीय साहित्य नैतिकता पर आधारित है जो मानव प्रेम से जोड़ती है। भारत में आर्य, म्लेच्छ और अन्य संस्कृतियों द्वारा मिली–जुली संस्कृतियों का निर्माण

हुआ। देश विभिन्न प्रांतों में फैले हुए हैं सबकी अलग–अलग भाषाएं, रीति–रिवाज, धर्म, संस्कार एवं परंपराएं हैं जिनसे मिलकर राष्ट्रीय एकता को परिभाषित करते हैं। विचारों के परस्पर आदान–प्रदान के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है चूंकि हर प्रांत की भाषाएं अनेक है। एक राष्ट्र को परिभाषित करने के लिए एक राष्ट्र एक भाषा का होना अनिवार्य है। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और अन्य रचनाकारों ने अपने साहित्य में युग प्रचलित भाषा में लिखा सामान्य जन को संबोधित किया। ज्ञान, उपदेश और नैतिकता की शिक्षा दी। संस्कृत के रामायण का लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद किया गया। स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने वाले और साहित्य रचना करने वाले भारतेंदु, प्रताप नारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद आदि रचनाकारों ने खड़ी बोली हिन्दी में रचनाएं लिखी और उन्होंने कहा कि हिंदी सबसे अधिक जनसामान्य द्वारा बोली जाती है इसलिए एक राष्ट्र के रूप में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए जो राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है। प्राचीन वेद ग्रंथ, उपनिषद, रामायण संस्कृत में लिखी गई। संस्कृत को देवभाषा की संज्ञा दी जाती है। संस्कृत को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के विचार भी दिए गए परंतु स्वाधीनता आंदोलन और साहित्य में हिंदी के प्रयोग और अभिरुचि ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में गौरान्वित किया है।

भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना –

भाषा राष्ट्र की एकता का प्रतीक होती है। भारत को एक राष्ट्र के रूप में एक सूत्र में जोड़ने में संस्कृति का विशेष योगदान है। भारत की विभिन्न संस्कृतियों और भौगोलिक रूप से अलग–अलग राज्यों और प्रांतों से संबंध रखने वाले भारतीय पारस्परिक विचारों के आदान–प्रदान के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। भारत के विभिन्न भाषा–भाषी अनेक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। संस्कृत प्रारंभ में साहित्य की भाषा थी। कम्पनी शासन के समय राजकाज की भाषा फारसी प्रयोग की जाती थी। फारसी के साथ–साथ उर्दू शब्द राजकाज की भाषा के रूप में प्रयोग किए जाते थे। भारत के अधिकतर जनसामान्य द्वारा प्रयुक्त और स्वाधीनता आंदोलन में अधिक व्यवहार होने के कारण हिंदी अस्तित्व में आई। हिंदी भाषा को एक भाषा एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित किया जाता है। वर्तमान तकनीकी युग में ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के साथ–साथ हिंदी भाषा की चुनौतियों में वृद्धि हुई है। राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग के साथ परिष्कृत रूप में प्रयुक्त होती है। ''सारांश यह है कि यदि इसे संसार के इतिहास में कुछ अपना व्यक्तित्व बनाए रखना है, तो भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के एक पाश में अवश्य बंधना पड़ेगा। बिना एक राष्ट्रभाषा के राष्ट्रीयता का विकास नहीं हो सकता। यह बात राजा राम मोहन राय, दयानंद आदि ने समझी थी और इस युग की सब महान् आत्माएं इसका समर्थन करती हैं। राष्ट्रभाषा की स्वीकृति की मांग अपने इतिहास के प्रति भारतीय जनता की सजग दृष्टि से उत्पन्न हुई थी, यह उस साहित्य की देन थी जो पराधीनता की परिस्थितियों में जनता को एकताबद्ध होकर विदेशी शासकों से संघर्ष करने की प्रेरणा देता था, समाज को पुनर्गठित करके स्वाधीन राष्ट्रों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने की सहज आकांक्षा का वह प्रतिफलन थी, अंग्रेजों का विरोध करना है, केवल इसीलिए राष्ट्रभाषा चाहिए, इस तरह के नकारात्मक दृष्टिकोण का परिणाम वह न थी।''(1) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने का संघर्ष अंग्रेजी के विरुद्ध समस्त भारतीय भाषाओं के रूप में देखा जाता है। वे समस्त मातृभाषाएं भी उस संघर्ष में थी जहां हिंदी भाषा अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थी। राष्ट्रीयता और भाषा के प्रश्न पर विचार करने पर वे समस्त भारतीय भाषाएं सम्मिलित हैं जो अलग–अलग प्रांतों

में हमारे विचार–विनमय का माध्यम है। भारत विविधताओं का देश है। विभिन्न संस्कृतियों, रीति–रिवाजों और परंपराओं का संगम है। एक सूत्र में जोड़ती है वह है भारत की मिली –जुली संस्कृति।

"राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने का संघर्ष वास्तव में अंग्रेजी के विरुद्ध समस्त भारतीय भाषाओं की अधिकार–प्राप्ति का संघर्ष था। निराला से पहले महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' की अनेक टिप्पणियों में प्रांतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का समर्थन किया, अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाये रहने का विरोध किया। फरवरी 1916 की 'सरस्वती' में द्विवेदीजी ने 'विविध विषय' स्तंभ में लिखा था, मद्रास प्रांत में कई करोड़ आदमी तमिल और तैलंगी भाषाएं बोलते हैं। वही उनकी मातृभाषाएं हैं। उन सबको कुछ थोड़ी सी प्रारंभिक शिक्षा छोड़कर अन्य सारी शिक्षा अंग्रेजी भाषा ही के द्वारा मिलती है। यह बात आश्चर्य में डालने वाली है... अंग्रेजी भाषा सीखने की आवश्यकता है जरूर तथापि इससे मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने की महत्ता कम नहीं हो सकती। राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर हिंदी के तमाम जिम्मेदार साहित्यकारों की वही राय रही है जो द्विवेदी जी की थी। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाकर हिंदी वाले अन्य भाषाओं को दबाना चाहते हैं, यह प्रचार पराधीन भारत में गांधी जी के जीवन–काल में और गांधी जी के भेजे हुए हिंदी–प्रचारकों के विरुद्ध शुरू हो गया था, इसीलिए अहिंदी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए हिंदी भाषियों ने जो आंदोलन किया, उसे याद रखना आवश्यक है। निराला ने द्विवेदी जी का अनुसरण करते हुए शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए प्रादेशिक भाषाओं का समर्थन किया। निराला ने यहां बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि "हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का यह अर्थ कदापि नहीं है, कि वह अहिंदी भाषाओं का स्थान ले ले। उसका स्थान तो वास्तव में अंग्रेजी लिए हुए थी। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का उद्देश्य यह था कि एक प्रांत के निवासी दूसरे प्रांत के निवासियों से विचार–विनमय कर सकें। विचार–विनिमय का यह कार्य जो लोग अंग्रेजी के माध यम से करते थे, वे एक फीसदी से भी कम थे। एकता को व्यापक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक था कि विभिन्न प्रांतों के साधारण लोग बड़े पैमाने पर संपर्क कायम करें। राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता इन्हीं लोगों को थी।"(2)

"हिंदी उपन्यासों में भारत की सांस्कृतिक मूल्यों, सिद्धांतों और विचारों को विभिन्न चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। प्रेमचंद, प्रसाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर आदि साहित्यकारों की रचनाओं में भारतीय परंपरा, रीति–रिवाज और संस्कारों का वर्णन हुआ है जो राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। विभिन्न भाषा–भाषी होते हुए भी प्राचीन काल से लेकर आज तक राष्ट्रीयता की भावना एक जैसी है। राष्ट्रीयता की भावना मुखर रूप से द्विवेदी काल में प्राप्त होती है। "इस युग का संपूर्ण काव्य राष्ट्रीयता के जयनाद से घोषित और मुखर है। राष्ट्रीय आंदोलन का व्यापक प्रभाव द्विवेदी युग की कविता के स्वरों में तीव्र होने लगा। तद्युगीन कवियों ने देश के बौद्धिक और वैचारिक क्षितिज को झंकृत करने के लिए अपने काव्य का आधार भारत के महान अतीतकालीन गौरव का वर्णन तथा तत्कालीन वर्तमान सोचनीय स्थिति पर असंतोष की भावनाओं, को ही मुख्य रूप से स्वीकृति प्रदान की है। उद्‌बोधन के स्वर भी पर्याप्त रूप में काव्य क्षितिज से प्रगतिध्वनित होते सुने जाने लगे। साहित्यकारों की राष्ट्रीय सेवाओं का उल्लेख करते हुए डॉ. जयकिशन प्रसाद ने लिखा है – द्विवेदी युग की हिन्दी कविता तो राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है।"(3)

भौगोलिक दृष्टि से हिमाचल, जम्मू, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान और

दिल्ली हिंदी भाषी प्रदेश हैं। पंजाब, बंगाल, असम, गुजरात, महाराष्ट्र हिंदी भाषी प्रदेश न होते हुए भी हिंदी शब्दावली से परिचित हैं। उनकी लिपियां भी भिन्न नहीं है। आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक की भाषाओं में संस्कृत के प्रयुक्त शब्द हिंदी के निकट हैं। हिंदी के रचनाकार संपूर्ण भारत की संस्कृतियों का वर्णन करते हुए परस्पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी भारतीय सामाजिक रूप से संस्कृतियों का आदान–प्रदान करते हुए हिंदी भाषा का व्यवहार करते हैं। धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से एक प्रदेश के लोग जब दूसरे प्रदेश के लोगों के संपर्क में आते हैं तो हिंदी भाषा में व्यवहार करते हैं। बंकिमचंद्र, रवीन्द्र, शरतचंद्र और अमृता प्रीतम आदि रचनाकारों की रचनाएं हिंदी में अनुवादित की गई है। रामायण का अनुवाद लगभग सभी भाषाओं में हुआ है। कहा जाता है देवकीनंदन खत्री की चंद्रकांता को पढ़ने के लिए कई लोगों ने हिंदी सीखी थी। अलग–अलग प्रांतों के रचनाकार और उनकी विभिन्न भाषाओं की रचनाएं हिंदी में अनुवादित की गई और अपनी भाषाओं के साथ हिंदी में लोकप्रिय हुई। ''फिल्म, टीवी, विज्ञापन और पत्रकारिता के साथ हिंदी साहित्य भी हिंदी प्रचार में पूरी तरह जुटा हुआ है। हिंदी वह पुल है जिसके माध्यम से संस्कृति, दर्शन, कला और समसामयिक चिंतन का आदान–प्रदान होता है। अनुवाद के साथ–साथ मूल रूप से भी हिंदी में लेखन संपन्न हो रहा है। अब अमृता प्रीतम, महीप सिंह केवल हिंदी के लेखक हैं। राही मासूम रजा और आलम शाह खान जैसे लेखक उर्दू के नहीं हिंदी के लेखक हैं। इस तरह भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं हैं, हिंदी के लेखक हैं और चर्चित भी रहे हैं– उनमें प्रभाकर माचवे, अनंत गोपाल शेवड़े, आलोक भट्टाचार्य, आरिगपुड़ी, जयश्री अय्यंगार, सुमिति अय्यर, आरसु, पांडुरंग राव, डॉ. जगन्नाथ, वेगुगोपाल, आबिद सुरती ऐसे कुछ नाम हैं– जो अभिव्यक्ति के लिए हिंदी को अधिक करीब पाते हैं। कुल मिलाकर जो एक अनौपचारिक संसार है– वह हिंदी से सराबोर है। मद्रास का कोई ट्रक ड्राइवर यदि हैदराबाद के चेक नाके पर किसी कर्मचारी से हिन्दी में बात करता है तो चौंकने जैसी कोई बात नहीं है। रेल के सफर में उतर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम चारों ओर हम अपरिचितों से हिन्दी के माध्यम से परिचय प्राप्त करें तो बहुत ही सहज है और अब तो, पेजर भी हिन्दी में आ गए, इंटरनेट में भी हिन्दी है।''(4) भारतीय साहित्य में जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति है जिनमें बुद्धि पक्ष और हृदय पक्ष की प्रधानता है। भारतीय भाषाओं के साहित्य में साहित्यिक प्रवृत्तियों में समानता पायी जाती है। जो काल के अनुसार बदलती भी रही है। प्राचीन काल में आनंदपरक भावना भक्तिकाल की दार्शनिकता रीतिकालीन प्रेम और श्रृंगार का वर्णन आधुनिक काल में देश प्रेम, नवजागरण, मानवतावाद राष्ट्रीय जागृति और चेतना के स्वर हैं। हिंदी भाषा के रचनाकारों की रचनाओं में बदलते समाज की परिवर्तित तस्वीरें शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। ''बहुत ही वैज्ञानिक और अनुशासित भाषा है हिन्दी। प्रसाद के महाकाव्य की गरिमा निराला के काव्य का महान पौरुष पंत की प्राकृतिक छटा और महादेवी की करुणा से ओत–प्रोत है हिन्दी। एक ओर बच्चन की मस्ती है तो दूसरी ओर मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, चंद्रशेखर मिश्र एवं 'हितैषी' के पांचजन्य का नाद है। मुक्तिबोध, अज्ञेय, सुमन, धूमिल, दुष्यंत, भवानी भाई जैसे सरस्वती पुत्रों को आम आदमी से बांधने का रज्जु है हिन्दी। बाबा नागार्जुन का फक्कड़पन देखना है तो हिन्दी संसार में घुसिये। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्री लाल शुक्ल, बरसाने लाल चतुर्वेदी, के.पी. सक्सेना, रामावतार त्यागी का व्यंग्य विधान है हिन्दी में।'' (5)

हिंदी भाषा की बोलियों को पांच वर्गों में विभाजित किया गया है। पश्चिमी हिंदी, राजस्थानी, पूर्वी हिंदी, बिहारी और पहाड़ी हिंदी जिनमें खड़ी बोली, हरियाणवी, बुंदेली, मारवाड़ी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मैथिली और गढ़वाली आदि भाषाएं आती है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। यह संचार भाषा, माध्यम भाषा, संपर्क भाषा एवं कुछ राज्यों में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। संपर्क भाषा के रूप में अहिंदी भाषा–भाषी परस्पर एक–दूसरे से जुड़ते हैं। आधुनिक तकनीकी और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी भाषा की उपयोगिता और संभावनाओं में वृद्धि हुई है। ''राष्ट्रभाषा हिन्दी–राष्ट्रभाषा का अर्थ है राष्ट्र की भाषा। इस तरह राष्ट्र की जितनी भी भाषाएं है, सभी राष्ट्रभाषा है। फलस्वरूप भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं के अतिरिक्त देश की दर्जनों अन्य भाषाएं भी जो अपने–अपने क्षेत्रों में लोक संप्रेषण का माध्यम है हमारी राष्ट्र भाषाएं है। यही कारण है कि भारत के संविधान में इनमें से किसी भी एक भाषा को राष्ट्रभाषा के नाम से अभिहित नहीं किया गया है। यही राजभाषा, संघभाषा अथवा संपर्क भाषा जैसे शब्दों का ही व्यवहार हुआ है। परंतु इतना होते हुए भी एक विशिष्ट अर्थ में राष्ट्रभाषा की संकल्पना और उसकी सार्थकता से हम इंकार नहीं कर सकते और इस सार्थकता एवं यथार्थता की अधिकारी भी अपनी स्थिति के चलते हिन्दी ही है।''(6) हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा न बनाएं जाने का तर्क–वितर्क प्रारंभ से चलता आ रहा है। जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है और प्रांतीय भाषाओं के साहित्य जो साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध है उनके लिए हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने में कठिनाई महसूस होती है। ''जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं हैं वे अकसर हिन्दी में बात करने व लिखने में कतराते हैं तथा हिन्दी के प्रयोग में झिझक होती हैं। उनमें यह भय भी व्याप्त है कि उनपर हिन्दी थोपी जा रही है और हिन्दी के कारण प्रोन्नति के अवसर अवरुद्ध हो जायेंगे। इस काल्पनिक भय के कारण अंग्रेजी के प्रबल पक्षधर बने हुए हैं।''(7)

भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा प्रयोग में वृद्धि हुई है। विज्ञापन, सूचना, कृषि, प्रौद्योगिकी, मीडिया, वित्त–वाणिज्य, और पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ा है। संघ की राजभाषा और जनसंपर्क स्थलों की भाषा हिंदी प्रयुक्त होती है। देवनागरी लिपि से जुड़कर हिंदी भाषा व्युत्पन्न शब्दों के अनुकूल अंतरराष्ट्रीय शब्दावली में प्रयुक्त हो रही है। हिंदी अपने सरल, सुबोध और प्रचलित शब्दों द्वारा क्लिष्ट शब्दों को रोचक और अनुकूल बनाती है। हिंदी भाषा के प्रति प्रवासी भारतीयों ने भी अपना योगदान दिया है जो विदेशों में रहकर भी भारतीय संस्कृति, साहित्य और भाषा को अपनाए हुए हैं और व्यवहार के रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। ''अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोजगार के अवसरों में तो दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ोतरी हो रही हैं – आई. टी. कंपनियां, विदेशी पर्यटन स्थल, होटल कारोबार, विदेशों में बसे मूल भारतीयों व विदेशियों को हिंदी भाषा शिक्षण, अनुवादित सामग्री, हिन्दी में डाटा आपरेटर, मीडिया/बी.बी.सी/अखबार/भारतीय चैनल/थियेटर फिल्में– ये सारे कार्यक्षेत्र अब यू.एस.ए. कैनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी व यू. के. में भी उपलब्ध होते जा रहे हैं– सारे देशों के बीच संयोजन क्षमताएं पूर्णतः विकसित होने से 'पारस्परिकता' का भाव बढ़ गया है। अतः 'विश्वग्राम' में हिंदीमय वातावरण निर्मित होता नजर आ रहा है। एक ऐसा चक्र पनप रहा है जहां यह पहचान पाना कठिन हो रहा है कि विश्व बाजार की जरूरत से हिन्दी पसर गई है या विदेशों में बसे भारतीयों के भारतीय मानस की वजह से।''(8)

भारत में विभिन्न भाषा–भाषी अपने प्रांतों में अलग–अलग भाषाओं का निर्वाह करते हैं। हिंदी

भाषा में अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, बुंदेली आदि भाषाओं को सम्मिलित किया जाता है जो अलग–अलग प्रांतों की भाषाएं हैं। तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों से सम्मिश्रित हिंदी प्रयोग की जाती है। स्वाधीनता आंदोलन के समय और द्विवेदी युग में हिंदी अधिक प्रयोग में आई। भारत के जनसाधारण के बीच अधिक करीब थी वह हिंदी भाषा है जिनमें राष्ट्रीयता की भावना अभिव्यक्त हुई। आज हिन्दी सभी प्रांतों और विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच विचार संप्रेषण का माध्यम है। हिंदी भाषा में सरलता, सहजता और आत्मीयता के गुण हैं जो सभी को निकट लाती है और राष्ट्रीयता के भाव जगाती है। हिन्दी के समक्ष अंग्रेजी भाषा सबसे बड़ी चुनौती है, हिन्दी और अहिन्दी भाषा–भाषी हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं। वर्तमान तकनीकी युग में अंग्रेजी की अनिवार्यता बढ़ा दी है। देश के साथ विदेशों में संपर्क माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती है। अंग्रेजी भाषा की आवश्यकता है परंतु हिन्दी भाषा की उपयोगिता और महत्त्व कम न हो हमें मिलकर प्रयास करना होगा। वर्तमान राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 2020 प्रांतीय भाषाओं और हिंदी भाषा में अध्ययन–अध्यापन को प्रमुखता देती है। भारतीयता पर आधारित है जो भारत की समृद्ध प्राचीन सांस्कृतिक विविधता, भाषा, साहित्य, पुरातत्व, संग्रहालय, बहुभाषा ज्ञान और अनुवाद आदि को विकसित करते हुए भारत की गरिमामय संस्कृति का परिचय कराती है और अभिव्यक्त करती है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. निराला की साहित्य साधना 2 – रामविलास शर्मा, पृष्ठ–62
2. वही, पृष्ठ– 63–64
3. हिन्दी साहित्य के विविध आयाम – डॉ. गिरीश सोलंकी, पृष्ठ – 44–45
4. राजभाषा हिन्दी दशा और दिशा – विनय श्रीवास्तव, पृष्ठ – iv-v
5. भारतीय साहित्य – अवधारणा, समन्वय एवं सादृश्यता– जगदीश यादव, पृष्ठ– 79–80
6. हिन्दी भाषा – डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'शम्बर', पृष्ठ–227
7. राजभाषा हिन्दी दशा और दिशा– विनय श्रीवास्तव, पृष्ठ–257
8. वही, पृष्ठ–170–171

❑❑❑

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

सत्यनारायण अग्रवाल शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय कोहका नेवरा रायपुर छत्तीसगढ़

मो.नं. 7773064221, 9977645074

मेल– rajshree01081985@gmail.com

भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना

–डॉ. ममता

किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व के लिए उसकी भाषा अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक ओर जहाँ भाषा सभ्यता के विकास की सारथी होती है वहीं दूसरी तरफ यह विचारों के सृजन एवं सामाजिक–सांस्कृतिक 'पहचान' का महत्त्वपूर्ण साधन भी होती है। भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक–सांस्कृतिक 'पहचान' की परिचायक होती है, इसकी पुष्टि डॉ. रामविलास शर्मा भी करते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'हिंदी जाति' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसे नस्ल या जाति विशेष (Race or Caste) के अर्थ में न लेकर 'राष्ट्रीयता' के अर्थ में लिया है।

भारतीयता के मूल स्वर को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य ही राष्ट्रीय साहित्य हो सकता है 'हिंदी साहित्य में भारतीयता के वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं' 'महज भाषा और बोली के आधार पर भारतीयता का आकलन नहीं किया जा सकता है' किसी भी राष्ट्र की अस्मिता की निर्मिति उस राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना से होती है। इस अर्थ में भारतीयता भी भारतीय सांस्कृतिक चेतना का पर्याय है। राष्ट्रीय चेतना के लिए यह आवश्यक है कि भाषा–विशेष राष्ट्र की आशाओं–आकांक्षाओं और सांस्कृतिक–गौरव को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो। अथर्ववेद के भूमिसूक्त की ऋचा 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः'

अर्थात् यह भूमि हमारी माता है और हम इसकी संतान है। वैदिक साहित्य में राष्ट्रीयता के भाव से सम्पृक्त अनगिनत सूत्र मिलते है। हिंदी को वैदिक साहित्य से विरासत में मिला यह प्रखर राष्ट्रवाद हिंदी साहित्य में आदिकाल से अद्यतन देखने को मिलता है। यूँ तो आदिकालीन रासो साहित्य, मध्ययुगीन भक्ति साहित्य तथा रीतिकाल के कवि भूषण के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रखर स्वर लक्षित होता है किंतु आधुनिक युग के हिंदी साहित्यकारों में सांस्कृतिक चेतना से युक्त परवर्ती उदात्त राष्ट्रीयता के भाव की तुलना में अधिक मुखर है। वस्तुतः हिंदी देश की स्वयंसिद्धा राष्ट्रभाषा है। तमाम विरोधों– प्रतिरोध ों और षड्यंत्रों के बावजूद विगत 1100–1200 वर्षों से हिंदी सम्पर्क भाषा और राजभाषा के रूप में अपना दायित्व निभाती आ रही है। लार्ड मैकाले ने संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं की शक्ति को समझा और पाश्चात्य सभ्यता थोपने के इरादे से अंग्रेजी भाषा को सुनियोजित ढंग से हम पर थोप दिया। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, सी. राजगोपालाचारी, राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, लाला लाजपत राय तथा लोकमान्य तिलक सरीखे स्वतंत्रता सेनानियों एवं समाज–सुधारकों ने अंग्रेजों के इस षड्यंत्र को भांप लिया और क्षेत्रीयता की भावना से ऊपर उठकर अपना संदेश देशभर में पहुँचाने के लिए हिंदी–भाषा को अपना माध्यम बनाया।

बीज शब्द— राष्ट्र की अस्मिता, सांस्कृतिक—गौरव, राष्ट्रीयता का भाव, वैदिक साहित्य में राष्ट्रीयता

प्रस्तावना

If you talk to a man in a language he understands, that goes his head. If you talk to him in his language, that goes his heart.

नेल्सन मंडेला के ये शब्द अक्षरक्षः सत्य है। यदि आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करते हैं, जिसे वह जानता है, तो वह बात उसके दिमाग को समझ आती है, और यदि आप उससे उसकी भाषा में बात करते हैं तो वह बात उसके मन को समझ आती है। नेल्सन मंडेला के कथन में स्वभाषा का महत्त्व स्पष्टता देखा जा सकता है। हिंदी के पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने इसी बात को काव्यात्मक शब्दों में कहा है— "निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल।" निज भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज का उत्कर्ष संभव नहीं है और इसके साथ ही वे कहते हैं कि अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।

यूं तो वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के पावर लैंग्वेज इंडेक्स के अनुसार 2050 तक हिंदी विश्व की सबसे ताकतवर भाषा बन जाएगी लेकिन यह भी विडम्बना ही है कि आज भी हिंदी भाषा का प्रयोग करने वाले हिंदी भाषा—भाषी हीनता बोध से ग्रसित हैं। आज भी हमें मोबाइल पर बात करने के लिए भाषा—विकल्प में हिंदी भाषा के लिए 'दो' के बटन को दबाना पड़ता है। बातचीत/संवाद के लिए 'एक' के बटन पर आज भी अंग्रेजी भाषा का ही आधिपत्य है। राष्ट्रीयता भौतिक और यांत्रिक नहीं अपितु सांस्कृतिक होती है। राष्ट्रीयता की एक अन्य विशेषता यह भी है कि यहाँ वैयक्तिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। राष्ट्रीयता में सामूहिकता की भावना का समावेश होता है। सामूहिकता की भावना से आप्लावित सांस्कृतिक चेतना को भाषा ही स्वर देती है। बहुभाषी भारत देश में हिंदी भाषा ने इस दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है।

किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व के लिए उसकी भाषा अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक ओर जहाँ भाषा सभ्यता के विकास की सारथी होती है वहीं दूसरी तरफ यह विचारों के सृजन एवं सामाजिक—सांस्कृतिक 'पहचान' का महत्त्वपूर्ण साधन भी होती है। भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक—सांस्कृतिक 'पहचान' की परिचायक होती है, इसकी पुष्टि डॉ. रामविलास शर्मा भी करते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'हिंदी जाति' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसे नस्ल या जाति विशेष (Race or Caste) के अर्थ में न लेकर 'राष्ट्रीयता' के अर्थ में लिया है। अपनी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' में इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए वे कहते है कि "किसी भाषा को बोलने वाली, उस भाषा क्षेत्र में बसने वाली इकाई का नाम 'जाति' है'। 'संस्कृति और जातीयता' निबंध में भी हिंदी भाषा की व्यापकता पर विचार करते हुए वे लिखते हैं कि "भारतेंदु हरिश्चंद्र और रामचंद्र शुक्ल ने खड़ी बोली के प्रसार का संबंध पश्चिम से पूर्व की ओर आने वाली जातियों से जोड़ा था। यह स्थापना सही है।... ग्रियर्सन के 'लिंग्विस्टिक सर्वे' से पता चलता है कि यूरोप के व्यापारी अपनी सुविधा के लिए खड़ी बोली सीखते थे। व्यापार के प्रसार के साथ भारत में खड़ी बोली का महत्त्व बढ़ा। सरदेसाई के अनुसार इटालियन यात्री मनुच्ची और शिवाजी की बात खडी बोली में हुई थी।" इससे पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र अपने निबंध 'जातीय संगीत' में हिंदी को भारतीयता के पर्याय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया था। भारतेंदु की भांति

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने भी जबलपुर से 1922 ई. में प्रकाशित श्रीशारदा पत्रिका के अपने लेख में हिंदी भाषा के राष्ट्रीय स्वरूप को चिन्हित किया था। कुछ ऐसा ही भाव डॉ. इकबाल के प्रसिद्ध गीत 'हिंदी है हम वतन है, हिंदोस्तां हमारा' में भी अभिव्यक्त हुआ है। इस गीत में 'हिंदी' शब्द का प्रयोग भारतीयता के अर्थ में किया गया है। वस्तुतः भाषा को अधिकांश समाजशास्त्री राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक बोध एवं 'आईडेंटिटी के लिए आवश्यक घटक के रूप में देखते हैं। अतीत में सैन्य शक्ति के बल पर साम्राज्यवादी ताकतों ने अपने उपनिवेश स्थापित किए थे लेकिन अब सैन्य शक्ति या कहें कि 'हार्ड पावर' की बजाय 'साफ्ट पावर' के बल पर बिना किसी खून–खराबे के अपने साम्राज्य स्थापित किए जा सकते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र के प्रोफेसर जोसेफ नेइ ने इस 'साफ्ट पावर' के बढ़ते महत्त्व को अपनी पुस्तक 'Bound to Lead : The Changing Nature of American Power' में रेखांकित करते हुए कहते है कि भाषा 'साफ्ट पावर' का सबसे प्रभावशाली हथियार है। यह बात काफी हद तक सही है। आज पूरे विश्व में अमेरिका और इंग्लैंड ने अंग्रेजी भाषा के बल पर 'नव औपनिवेशिक शोषण' को बखूबी अंजाम दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के बल पर अंग्रेजी भाषा अपने साथ पाश्चात्य खान–पान, पाश्चात्य वेशभूषा तथा पाश्चात्य जीवन–मूल्यों को भी हमारे ऊपर थोप रही है। 'ठंडे' का मतलब कब कोका कोला और 'मीठे' का मतलब कब कैडबरी चॉकलेट हो गया? हमें यह पता ही नहीं चला। होली, दीपावली और तीज जैसे पारम्परिक त्यौहारों की उत्सवधर्मिता कब फादर्स डे, वेलेन्टाइन डे और फ्रेन्डशिप डे की उपभोक्तावाद के अवसर में बदल गई? इसको समझना कठिन है। कहने का अभिप्राय यह है कि भाषा के साथ जुड़ी राष्ट्रीय अस्मिता का क्षरण इतना मंद और और अमूर्त होता है कि उसका संज्ञान हमें तब होता है, जब क्षरण हो जाता है। एक ओर जहाँ भाषा प्रयोग के बल पर किसी देश की राष्ट्रीय अस्मिता का क्षरण किया जा सकता है वहीं दूसरी तरफ भाषा प्रयोग के बल पर राष्ट्र को संगठित करने का कार्य भी संभव है। जर्मनी, जापान और चीन ने अपने देश के आत्मगौरव और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण–संवर्धन में अपनी–अपनी भाषाओं का बखूबी इस्तेमाल किया। दरअसल भाषा और माँ सदैव अपनी संतानों से सम्मानित होती है। माँ की ताकत उसकी संतानें होती हैं और राष्ट्र की ताकत उस राष्ट्र की भाषा होती है। यही वजह है आक्रान्ता सबसे पहले भाषा पर ही आक्रमण करता है। भाषा ही धर्म और संस्कृति को सहेजती और स्वर प्रदान करती है। यही वजह है कि पहले मुगलों और बाद में ब्रिटिश शासकों ने भारतीय भाषाओं को कुचलने का हरसंभव प्रयास किया। वस्तुतः समाज को गुलाम बनाने में सबसे बड़ी अड़चन भाषा ही होती है। किसी भी भाषा के मरने से, उस भाषा में निहित संस्कृति अपने आप मर जाती है और किसी भी समाज/राष्ट्र के लिए संस्कृति की स्थिति वही होती है जो किसी वृक्ष के लिए उसकी जड़ों की होती है। वास्तव में राष्ट्र की सांस्कृतिक जड़ों को जीवित रखने वाली मृदा का नाम भाषा है। जैसे ही सांस्कृतिक जड़ों से भाषा रूपी मृदा को विलग करते हैं, बाहरी हवा लगते ही सांस्कृतिक जड़ों की जीवन्तता जाती रहती है। भारत पर शासन करने के लिए आक्रान्ताओं ने सबसे पहले भारतीय भाषाओं को हाशिए पर डालने का कुप्रयास किया। मुगलों ने उर्दू–फारसी को राजकाज और शासन की भाषा बनाकर संस्कृत और हिंदी को दरकिनार किया। रही सही कसर लार्ड मैकाले की शिक्षा–नीति ने अंग्रेजी को प्रमुखता देकर पूरी कर दी गई। लार्ड मैकाले यह अच्छी तरह से जानते थे कि यदि भारत पर लम्बे समय तक शासन करना है, तो उसके लिए भारतीय भाषाओं और भारतीय शिक्षा–पद्धति (गुरुकुल परम्परा) को हटाकर, उसकी जगह अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत के भाव बोध को लाना जरूरी

होगा। लार्ड मैकाले इस कार्य में काफी हद तक सफल भी रहे। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के प्रति 'श्रेष्ठता' का भाव पैदा करके, भारतीयों में 'स्वभाषा' के प्रयोग के प्रति हीनता का बोध उत्पन्न कर दिया। मैकाले की इस नीति का अनुसरण करते हुए ईसाई मिशनरियों ने भी भारतीय समाज में भाषागत फूट के बीज को बोने का काम किया। बिशप राबर्ट कॉल्डवेल ने द्रविड़ और भारोपीय भाषाओं में वैभिन्नय दर्शाते हुए दक्षिण में बोली जाने वाली भाषाओं को द्रविड़ नाम देकर, द्रविड़ और उत्तर भारत की भाषाओं में विलगाव पैदा कर दिया। काल्डवेल और उन जैसे दुराग्रही भाषाविदों के इस तरह के दुष्प्रचार या कहें कि तथाकथित 'प्रोपेगैन्डा' के खंडन के लिए मार्कण्डेय का 'प्राकृत सर्वस्वं' नामक ग्रंथ पर्याप्त है। बिशप काल्डवेल से बहुत पहले मार्कण्डेय ने 'प्राकृत सर्वस्वं' में आर्यभाषा और द्रविड़ भाषा की परस्पर सम्बद्धता की तार्किक विवेचना करते हुए दोनों के परस्पर घनिष्ठ सम्बंधों को रेखांकित किया है। इस प्रकार हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को मारने के तमाम कुप्रयासों के बावजूद हिंदी एवं अधिकांश भारतीय भाषाएँ लोक में अपनी गहरी जड़ों के कारण, काफी हद तक अपने अस्तित्व को बचाने में सफल रही है। प्रायः हिंदी भाषा पर उसकी विविध बोलियों के कारण एकरूपता के अभाव का दोष मढ़कर इसके राष्ट्रीय/वैश्विक रूप पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया जाता है। यदि हिंदी पर बोलीगत विविधता के कारण 'एकरूपता' के अभाव का आक्षेप लगाते हैं, तो इसी तरह की विविधता तो अंग्रेजी और चीनी भाषा में भी मिलती है। आस्ट्रेलियाई अंग्रेजी, कैनेडियाई अंग्रेजी में– अंग्रेजी भाषा होते हुए भी उच्चारणगत अंतर है। स्काटिश अंग्रेजी और आयरिश अंग्रेजी को लेकर क्षेत्रीय विवाद को कौन नहीं जानता? 19वीं शताब्दी में आयरिश नेशनल मूवमेंट में आयरिश भाषा एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गई थी। ऐसे ही ईस्ट पाकिस्तान, जिसे आज हम बांग्लादेश के नाम से जानते है, ने उर्दू को देश की भाषा के रूप में अस्वीकार किया। ईस्ट पाकिस्तान के बांग्लादेश बनने के मूल में बांग्ला भाषा के प्रति वहाँ के निवासियों का अनन्य प्रेम भी एक बड़ा कारण रहा था। बांग्लादेश ने अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को बचाने की खातिर पाकिस्तान से अलग होने का निर्णय लिया। कुछ ऐसा ही इंग्लैंड में भी हुआ था। सन् 1540 तक इंग्लैंड की राजभाषा फ्रेंच थी। इंग्लैंड की राष्ट्रवादी ताकतों ने तय किया कि फ्रेंच को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। परिणामस्वरूप इंग्लैंड की संसद को फ्रेंच की बजाय अंग्रेजी भाषा के पक्ष में प्रस्ताव पारित करके उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा देना पड़ा। इस तरह से कह सकते हैं कि भाषा और राष्ट्र का अविच्छिन्न संबंध है। राष्ट्र की अस्मिता और संस्कृति को उसकी भाषा के बल पर ही सहेजा जा सकता है। हिंदी के विस्तार का एक बड़ा कारण राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी भाषा का भरपूर प्रयोग भी रहा। हिंदी ने आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों की सहयोगिनी बनकर साथ निभाया। आश्चर्य की बात यह रही कि हिंदी की वकालत करने वाले अधिकांश समाज–सुधारक और नेता अहिंदी भाषी थे। हिंदी भाषा को राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानने वालों में केशवचंद्र सेन, महर्षि अरविंद घोष, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय और महात्मा गाँधी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। 'हिंदी साहित्य की बंगीय भूमिका' नामक पुस्तक में कृष्णबिहारी मिश्र ने केशवचंद्र सेन के हिंदी प्रेम का उल्लेख करते हुए लिखा है कि केशवचंद्र सेन ने स्वामी दयानंद सरस्वती से 'हिंदुत्व को पुनर्स्थापित' करने तथा राष्ट्रीय आंदोलन को त्वरा प्रदान करने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग करने का आग्रह किया था। स्वामी दयानंद ने राष्ट्रीय अस्मिता और आत्मगौरव जगाने के उद्देश्य से चारों वेदों का भाष्य संस्कृत या गुजराती में न

लिखकर हिंदी भाषा में लिखा। हिंदी प्रेमियों की इस कड़ी में एक महत्त्वपूर्ण नाम महात्मा गाँध ी का है। वे बिना भाषा–प्रेम के देश–प्रेम को निरर्थक मानते थे। इंदौर में 1918 में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में गांधी जी ने कहा था कि ''जैसे ब्रिटिश अंग्रेजी में बोलते हैं और सारे कामों में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं, वैसे ही मैं सभी से प्रार्थना करता हूँ कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान दें। इसे राष्ट्रीय भाषा बनाकर हमें अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए।'' महात्मा गाँधी ब्रिटिश शासन व्यवस्था से देश को आजाद कराने में हिंदी की अहमियत से भली–भांति परिचित थे। यही वजह है कि उन्होंने अहिंदी प्रदेशों में हिंदी प्रचार के लिए पाँच प्रतिनिधियों को भेजा। इन 'हिंदी दूतों' में से एक दूत स्वयं उनका पुत्र देवदास गाँधी भी था। इतना ही नही उन्होंने 'हिंदी नवजीवन' पत्र को निकालकर हिंदी भाषा में लेख भी लिखे। कुछ ऐसा ही लोकमान्य तिलक ने मराठी में प्रकाशित 'केसरी' पत्र का 1903 में हिंदी संस्करण 'हिंदी केसरी' निकाल किया। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले नेताओं एवं समाज सुधारक यह बात अच्छी तरह से समझतें थे कि हिंदी ही वह भाषा है, जो पूरे देश को एकसूत्र में बांध सकती हैं।

निष्कर्ष : कुल मिलाकर कह सकते है कि भाषा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की अभिव्यक्ति का माध्यम है। जैसे जब भी कोई व्यक्ति मुँह खोलता है तो उससे उस व्यक्ति के आचार–विचार, जीवन मूल्य और चरित्र के बारे में काफी कुछ पता चल जाता है। ठीक ऐसे ही किसी राष्ट्र के चरित्र, उसकी आशा–आकांक्षाओं एवं संस्कृति को भी हम उस राष्ट्र की भाषा के माध्यम से काफी हद तक जान पाते हैं। भाषा और 'आइडेन्टिटी' एक–दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की भाषा से उस राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचय मिलता है। इस दृष्टि से भाषा की अहमियत को जानना और इसका संरक्षण बेहद जरूरी है। हिंदी भाषा के संदर्भ मे देखें तो कहा जा सकता है इसने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता को सहेजने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि अंग्रेजी विश्व को जोड़ने का काम करती है तो हिंदी राष्ट्र को जोड़ने का कार्य कर रही है। जर्मनी के हिंदी विद्वान लोठार लुत्से ने सही कहा है कि 'हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता'।

संदर्भ सूची

1. 'अथर्ववेद' / 'भूमि सूक्त' / 12वाँ मंत्र
2. निजभाषा उन्नति' /भारतेंदु हरिश्चंद्र
3. https://www.newsncr.com/national/hindi-diwas.2021-by-2050-hindi-will-be-among-the-most- powerful-languages
4. निराला की साहित्य साधना / डा. रामविलास शर्मा / पृ. सं. 68
5. https://poshampa.org/ 'संस्कृति और जातीयता' / डा. रामविलास शर्मा

❑❑❑

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भीमराव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, ईमेल –dr.mamta101@gmail.com

भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

—डॉ. ममता थपलियाल

स्वभाषा में शिक्षा का उद्देश्य केवल भाषा के प्रति सम्मान या आत्मविश्वास विकसित करना नहीं अपितु उस भाषा के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक परम्परा के प्रति सजग होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषा को संस्कृति का संवाहक बताया गया है – "भाषा, निसन्देह, कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी है...लहजा, अनुभवों की समझ और एक ही भाषा के व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन, यह सभी संस्कृति का प्रतिबिंब और दस्तावेज हैं। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है।

मनुष्य मनुष्य की शक्ति भाषा की शक्ति पर निर्भर है। साहित्यकार अज्ञेय कहते हैं कि "हम भाषा को नहीं बनाते भाषा हमें बनाती है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भाषाई फलक वृहद एवं समावेशी है। यहाँ भारतीय भाषाएँ वैज्ञानिक, सुंदर और अभिव्यंजक रूप में प्रकट हुई हैं। इस शिक्षा नीति के दो भाग – 'बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति' एवं 'भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन' पूर्णतः भाषा एवं संस्कृति पर केंद्रित है। इनमें एक ओर घर की भाषा एवं शिक्षण की भाषा के अंतराल को समाप्त करने के लिए बुनियादी स्तर पर मातृभाषा/स्थानीय भाषा के प्रयोग को आवश्यक माना गया है, तो दूसरी ओर बहुभाषावाद एवं राष्ट्रीय एकता के लिए त्रिभाषा सूत्र को जीवंत किया गया है। इसमें भाषा शिक्षण में नवाचार हेतु उत्कृष्ट भाषा शिक्षकों की नियुक्ति, भाषाओं का डिजिटिलाइजेशन, प्रोजेक्ट एवं संवादात्मक विधि से पढ़ाना, विज्ञान, गणित आदि विषयों के लिए उत्कृष्ट अनुवाद, अनुवाद एवं विवेचना हेतु 'इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एन्ड इंटरप्रिटेशन' की स्थापना इत्यादि अनुशंसाएँ की गई हैं। संस्कृत सहित सभी शास्त्रीय भाषाओं को मुख्यधारा में लाना, लुप्तप्राय भाषाओं का उत्थान एवं 22 राष्ट्रीयकृत भाषाओं के लिए भाषा अकादमी की स्थापना जैसे महत्त्वकाँक्षी प्रावधान भाषाई तौर पर आजाद एवं आत्मनिर्भर भारत का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित करते हैं।

बीज शब्द : भाषिक अवधारणा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भाषा का प्रश्न एवं पक्ष, बहुभाषावाद, भाषिक शक्ति, मातृभाषा, त्रिभाषा, भाषा संवर्धन, आत्मनिर्भर भारत

भाषिक अवधारणा

भाषा व्यक्ति का अस्तित्व है, हम दुनिया के किसी भी कोने में जाएँ, हमारे साथ हमारी भाषा भी विचरण करती है। भाषा मात्र अभिव्यक्ति कौशल का माध्यम नहीं अपितु हमारी संस्कृति राष्ट्रीय गौरव एवं ज्ञान परम्परा की परिचायक है। भाषिक तौर पर भारत की बढ़ती परनिर्भरता भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक दासता का भी सूचक है। प्रसिद्ध विद्वान वाल्टर चेनिंग कहते हैं कि "विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के

राजकाज एवं शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता का सूचक है।" भारतीय शिक्षा व्यवस्था जिस प्रकार भाषागत जटिलताओं एवं स्वभाषा के मान को परे रखकर प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक अंग्रेजी को ज्ञान–विज्ञान का एकमात्र आधार बना रही है, यह संकट सूचक है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा, त्रिभाषा सूत्र का उचित क्रियान्वयन, उच्चत्तर शिक्षा में द्विभाषिक नीति अपनाने की सिफारिशें स्वदेशी भाषाओं के कल्याण एवं भाषाई तौर पर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहायक होंगी।

क्या है शिक्षा नीति ?

किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहाँ की उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर है। स्वाधीन भारत में तीन बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति बन चुकी है। प्रथम शिक्षा नीति 1968 में बनी, जो कोठारी आयोग 1964 की सिफारिशों पर आधारित थी। इसमें शिक्षा को राष्ट्रीय महत्त्व दिया गया, माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र को लागू करने का सुझाव भी सर्वप्रथम इसी नीति में आया था जिसका यथोचित क्रियान्वयन वर्तमान शिक्षा नीति का मुख्य विषय है। दूसरी शिक्षा नीति 1986 में बनी, जो 1992 में संशोधित हुई। इसका मुख्य विषय ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड एवं शिक्षा में समानता का अधिकार था। इसका स्वरूप तब निखर कर आया जब 2009 में 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिनियम बना।

तृतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप है। यह नीति इस्रो के पूर्व अध्यक्ष के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में बनी समिति की सिफारिशों एवं देश के विभिन्न वर्गों से प्राप्त रचनात्मक सुझावों पर आधारित है। वैश्वीकरण के इस युग में सूचना प्रौद्योगिकी का निरंतर विकास हो रहा है। समग्र विश्व एक गाँव में बदल गया है। वर्तमान अर्थव्यवस्था ज्ञान पर आधारित है। इस शिक्षा नीति में शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना, रटन्त विद्या से बाहर निकलना, रोजगारोन्मुख शिक्षा, अनुसन्धान को बढ़ावा, भारतीय ज्ञान परम्परा की जीवंतता एवं अस्मिता सुनिश्चित करना मुख्य विषय हैं। इसमें जीवन पर्यन्त शिक्षा के अवसर प्रदान करने एवं भारत की मुख्य समस्या प्रतिभा पलायन (ब्रेन–ड्रेन) रोकने पर बल दिया गया है। यह नीति नवीन अनुसंधान एवं सत्य की खोज पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर भारत को ज्ञान आधारित देश के रूप में प्रतिष्ठित करना है।

भाषा का प्रश्न और पक्ष

अंग्रेजी विकसित राष्ट्रों में विदेशी भाषा के रूप में तो पढ़ाई जाती है किंतु शिक्षण का माध्यम वहाँ स्वदेशी भाषा ही होती है। इस बहुभाषिक राष्ट्र में शिक्षण माध्यम से लेकर, प्रशासन और अदालतों में अंग्रेजी की वैशाखी छूट नहीं रही है। इसे मुक्ति की आकांक्षा कहें या स्वदेशी भाषाओं के प्रति लगाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं के संवर्धन हेतु विशेष अनुशंसाएँ की गई हैं। इस शिक्षा नीति में अध्याय 4 के अंतर्गत – 'बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति' तथा अध्याय 22 – 'भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन' पूर्णतः भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के संवर्धन पर केंद्रित हैं।

मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मातृभाषा में शिक्षा बोझिल नहीं लगती। इसमें ज्ञान और अधिगम के प्रति आकर्षण स्वतः स्फूर्त होता है क्योंकि सार्थक अवधारणाओं के लिए अतिरिक्त प्रयास नहीं करना पड़ता और स्वभाषा से अभिव्यक्ति कौशल भी मौलिक एवं सृजनात्मक होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मातृभाषा का महत्त्व बताते हुए कहते हैं– "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए

मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितना कि बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध।"[1] महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम अपने अनुभव के आधार पर कहते हैं कि "मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना, क्योंकि मैंने 12वीं तक विज्ञान, गणित सहित सम्पूर्ण शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।"[2] भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सदैव घर और शिक्षण की भाषा में विरोधाभास रहा है। घर की भाषा एवं शिक्षण की भाषा के इसी अंतराल को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी शिक्षा मातृभाषा में प्रदान करने की सिफारिश की गई है। इसमें कहा गया है कि "कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा–मातृभाषा स्थानीय भाषा–क्षेत्रीय भाषा होगी। इसके बाद, घर–स्थानीय भाषा को जहाँ भी सम्भव हो भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे।"[3] इससे पूर्व वर्धा शिक्षा योजना (1936) में भी गाँधी जी मातृभाषा में शिक्षा का सुझाव दे चुके हैं, किंतु वह विचार केवल बौद्धिक बहस बनकर रह गया था। अब देखना ये है कि नई शिक्षा नीति के इस प्रावधान को कब धरातलीय आधार मिलता है।

स्वभाषा में शिक्षा का उद्देश्य केवल भाषा के प्रति सम्मान या आत्मविश्वास विकसित करना नहीं अपितु उस भाषा के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक परम्परा के प्रति सजग होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषा को संस्कृति का संवाहक बताया गया है – "भाषा, निसन्देह, कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी है...लहजा, अनुभवों की समझ और एक ही भाषा के व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन, यह सभी संस्कृति का प्रतिबिंब और दस्तावेज हैं। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला की पूरी तरह सराहना करना बिना भाषा के सम्भव नहीं है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए, हमें उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना होगा।"[4] भारतीय भाषाओं को शिक्षण का माध्यम बनाना व्यापक उद्देश्य की पूर्ती है। उत्कृष्ट पाठ्यसामग्री की चुनौती के निराकरण के लिए मातृभाषाओं–स्थानीय भाषाओं में विज्ञान सहित सभी महत्त्वपूर्ण विषयों की उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्यपुस्तकों को उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है।

हम जानते हैं कि बुनियादी स्तर पर बच्चे भाषा जल्दी सीखते हैं और बहुभाषिकता से विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक लाभ होता है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में फाउंडेशनल स्टेज की शुरूआत और उसके पश्चात विभिन्न भाषाओं को सीखने का एक्सपोजर दिए जाने का सुझाव रखा गया है। जिसके लिए त्रिभाषा सूत्र को पुनः जीवंत किया गया है "संवैधानिक प्रावधानों, लोगों, क्षेत्रों और संघ की आकांक्षाओं और बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत का ध्यान रखते हुए त्रि–भाषा फार्मूले को लागू किया जाना जारी रहेगा। हालांकि तीन भाषा के इस फार्मूले में काफी लचीलापन रखा जाएगा और किसी भी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी। बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से छात्रों के स्वयं के होंगे, जिनमें से कम से कम तीन में दो भारतीय भाषाएँ हों।"[5] अब तक कई राज्यों द्वारा त्रिभाषा सूत्र को अमल में न लाने के कारण इसे पुनः जीवित किया गया। इसके यथोचित क्रियान्वयन की प्रतिबद्धता से एक ओर उत्तर से दक्षिण तक राष्ट्र की एकजुटता को बल मिलेगा, दूसरी ओर संवैधानिक तौर पर हिंदी की राष्ट्रभाषा बनने की राह खुलेगी।

नई शिक्षा नीति में सरकारी तथा निजी सभी स्कूलों में विद्यार्थियों के पास भारत की शास्त्रीय भाषाओं और उससे जुड़े साहित्य को कम से कम दो साल सीखने का विकल्प रखने

का सुझाव दिया गया है। यहाँ भारतीय भाषाएँ ही नहीं अपितु विदेशी भाषाओं – कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली और रूसी में भी माध्यमिक स्तर पर उच्चतर गुणवत्ता वाले कोर्स रखे जाने की सिफारिश की गयी है। इस प्रक्रिया से नई पीढ़ी को वैश्विक ज्ञान, विज्ञान, से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा, साथ ही पर्यटन एवं रोजगार की सम्भावनाओं में भी वृद्धि होगी।

भाषा शिक्षण को सुगम बनाने के लिए कुशल भाषा शिक्षकों की नियुक्ति, भाषा को मनोरंजनात्मक, संवादात्मक, अनुभव आधारित अंतःक्रिया से पढ़ाना इत्यादि पर बल दिया गया है। भाषा अधिगम में सुगमता हेतु 'द लैंग्वेज ऑफ इंडिया' प्रोजेक्ट गतिविधि तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल में भाग लेने का सुझाव दिया गया है। इसका लाभ बताते हुए कहा गया है कि "इस प्रोजेक्ट गतिविधि में, छात्र अधिकाँशरूप से प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जानेंगे, जिसके तहत उनके सामान्य ध्वन्यात्मक और वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित वर्णमाला और लिपियों, उनकी सामान्य व्याकरणिक संरचनाओं, संस्कृत और अन्य शास्त्रीय भाषा से इनकी शब्दावली के स्रोत और उद्‌भव को ढूँढने से लेकर इन भाषा के समृद्ध अंतरप्रभाव और अंतरों को समझना शामिल है।"[6] विभिन्न एप्स के माध्यम से फिल्म, थियेटर, कथावाचन, काव्य और संगीत को जोड़ते हुए प्रासंगिक विषयों की बोधगम्यता बढ़ेगी जिससे भाषा शिक्षण सरल होगा।

उच्चत्तर शिक्षण संस्थानों में द्विभाषिक कार्यक्रमों को चलाए जाने का सुझाव रखा गया है, जिसके संकेत दिखाई देने लगे हैं। भारत में मेडिकल, इंजीनियरिंग की शिक्षा में जहाँ पूर्णतः अंग्रेजी का बोलबाला है, वहीं मध्यप्रदेश इत्यादि कई राज्यों ने इसे द्विभाषिक बनाते हुए हिंदी में भी प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। यद्यपि उत्कृष्ट अनुदित पुस्तकों के लिए हमेशा सवाल उठते रहे हैं, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिश के तहत 'इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एन्ड इंटरप्रिटेशन' की स्थापना करके अनुवाद की दिशा में परिवर्तन सम्भव है। इससे सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चत्तर गुणवत्ता वाली अधिगम सामग्री मौखिक और लिखित रूप में प्राप्त होगी।

संस्कृत जो हमारे ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म की भाषा है, विभिन्न भारतीय भाषाओं की जन्मदात्री है। वह आज विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मंत्र और कर्मकांड तक सिमट गई है। इस विकट परिस्थिति के मद्देनजर नई शिक्षा नीति में संस्कृत को मुख्यधारा में लाने का संकल्प लिया गया है। नीति के अनुसार संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र के तहत वैकल्पिक रूप से रखा जाएगा तथा इसके अध्यापन में नवाचार पर बल दिया जाएगा। इसे समकालीन प्रासंगिक विषयों गणित, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, योग आदि से जोड़ने की अनुशंसा की गई है। संस्कृत सहित सभी शास्त्रीय भाषाओं – तमिल, तेलगू, मलयालम, ओड़िया इत्यादि की हजारों पांडुलिपियों को संरक्षित करने का लक्ष्य भी रखा गया है।

भारत के प्रसिद्ध भाषाविद गणेश एन देवी ने कुछ वर्ष पूर्व अपने भाषा सर्वेक्षण में चिंता प्रकट की थी कि "अगले 50 वर्षों में विश्व की लगभग 4000 भाषाएँ लुप्त हो जाएँगी, जिनमें 400 भाषाएँ भारत की होंगी।" नई शिक्षा नीति में यूनेस्को सहित विभिन्न सर्वेक्षणों से प्राप्त भारत की लुप्तप्राय भाषाओं एवं बोलियों पर गम्भीरता से चिंतन किया गया है। इसमें कहा गया है कि "दुर्भाग्य से, भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाई जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षों में ही 220 भाषाओं को खो दिया है। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं

को 'लुप्तप्राय' घोषित किया है। विभिन्न भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं विशेषतः वे भाषाएँ जिनकी कोई लिपि नहीं है।"[7]

वर्तमान शिक्षा नीति में संविधान में उल्लखित उन 22 भारतीय भाषाओं के संरक्षण का लक्ष्य भी रखा गया है जो आधिकारिक रूप से लुप्तप्राय नहीं हैं किंतु अस्तित्व बनाए रखने के लिए जूझ रही हैं। इन 22 राष्ट्रीयकृत भाषाओं के विकास हेतु पृथक–पृथक अकादमी स्थापित की जाएँगी। साथ ही अंग्रेजी, फ्रेन्च, जर्मन, जापानी इत्यादि की तर्ज पर भारतीय भाषाओं की जीवंतता एवं प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए इनकी अधिगम सामग्री, प्रिंट सामग्री बढ़ाने, अन्य भाषाओं की महत्त्वपूर्ण सामग्री का अनुवाद एवं उसके शब्दकोशों के शब्दभंडार को आधिकारिक तौर पर अद्यतन किए जाने की सिफारिश इस नीति में की गई है। नीति के अनुसार सांकेतिक भाषा का भी राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकरण किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति में सभी भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए वेब आधारित प्लेटफार्म–पोर्टल–विकिपीडिया के माध्यम से दस्तावेजीकरण करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे भाषा और साहित्य को पूर्णतः डिजिटल दुनिया से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा तथा वैश्विक स्तर पर भारतीय भाषाओं में समाहित ज्ञान–विज्ञान का प्रसार होगा। भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, सृजनात्मक लेखन इत्यादि के देशभर में सशक्त विभाग स्थापित करके इन क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाओं में उत्तरोत्तर वृद्धि सम्भव है।

निष्कर्ष–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि स्वाधीन भारत की यह पहली ऐसी शिक्षा नीति है जिसमें भारतीय भाषाओं के संवर्धन हेतु विस्तारपूर्वक चिंतन, मन्थन एवं अनुशंसा की गई है। यदि ये अनुशंसाएँ व्यवहारिक धरातल पर क्रियान्वित होती हैं तो भाषाई तौर पर आजाद एवं आत्मनिर्भर भारत का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. भनोट ज्योति शर्मा, विश्व ज्योति हिंदी शिक्षण, टण्डन पब्लिकेशन लुधियाना, 2015, पृष्ठ–7
2. https://bhashasankalp-weebly-com/23502366234023712349236623592366-html
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ–19 साभार – शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार वेबसाइट – https://www.education.gov.in/hi
4. वही, पृष्ठ – 87
5. वही, पृष्ठ – 20
6. वही, पृष्ठ – 21
7. वही, पृष्ठ – 87

❒❒❒

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

प्र. ब. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अगस्त्यमुनि, जनपद–रुद्रप्रयाग (उत्तराखंड)– 246421

मोबाइल नं.– 9639253200 ईमेल– mamtasemwal19@gmail.com

भाषा का प्रश्न, आत्मनिर्भरता एवं नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

—सुशांत कुमार पाण्डेय

मातृभाषा सीखने के कृष्टिकोण से सर्वोत्तम भाषा होती है। मातृभाषा के कारण बच्चों के दिमाग में शब्द एवं उनसे जुड़ी हुई चीजों के प्रति आत्मीयता विकसित होती है, जो उनके स्मरण एवं कल्पना शक्ति का विस्तार करती है। मातृभाषा में शिक्षा देने से शिक्षा का सैद्धांतिक रूप व्यावहारिकता के धरातल पर उतर पाता है। इससे बाल्यावस्था से ही आत्मनिर्भर बनने का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

किसी राष्ट्र और उसके नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा का प्रश्न अति महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा न सिर्फ संपूर्ण मानव–जाति की विशिष्ट पहचान है, अपितु यह मनुष्य एवं समाज के विकास की आधारशिला भी है। भाषा शिक्षा की गुणवत्ता एवं अर्थवत्ता का एक सशक्त माध्यम है, विशेषतः मातृभाषा, क्योंकि विभिन्न अध्ययनों से यह बात स्पष्ट है कि मातृभाषा न सिर्फ शिक्षा के प्रति अभिरुचि पैदा करती है, बल्कि अधिगम को आसान एवं प्रभावी भी बनाती है। शिक्षा किसी भी देश की अमूल्य निधि होती है, जिसकी धुरी पर मानव–विकास का चक्का घूमता है। भाषायी विविधताओं को धारण करने के परिप्रेक्ष्य में भारत एक महान् देश है, जिसके पास विशाल जनसंख्या है। इससे जनांकिकीय लाभांश प्राप्त किया जाए, इस दृष्टि से भाषा का प्रश्न और महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इसी तथ्य के आलोक में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन में भारतीय भाषाओं पर विशेष बल दिया गया है। किसी राष्ट्र को देदीप्यमान बनाने में शिक्षा एवं उस देश की शिक्षा–नीति की महनीय भूमिका होती है। शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है एवं आत्मनिर्भरता, व्यक्ति एवं राष्ट्र को सशक्त। 'आत्मनिर्भर–भारत' के स्वप्न को मूर्त रूप देने के लिए भाषा के प्रश्न को लेकर चलना आवश्यक है। भाषा की महत्ता की स्वीकृति से शिक्षा अपने व्यावहारिक उद्देश्य को पूर्ण कर सकेगी, जिससे आत्मनिर्भरता का पथ प्रशस्त होते जाएगा। इस शोध–आलेख के माध्यम से भाषा, शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता के बीच के संबंधों को स्पष्ट करते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा।

मुख्य शब्द—अधिगम, मानव–विकास, जनांकिकीय– लाभांश, आत्मनिर्भर भारत, राष्ट्रीय शिक्षा नीति

भाषा समाज का समन्वय–सूत्र है। यह भाषा ही है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज का सजीव सदस्य बनता है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है जिसके माध्यम से संप्रेषण किया जाता है।

संप्रेषण के माध्यम से श्रोता तक सूचना पहुँचती है लेकिन सूचना के साथ–साथ भाषा रचनात्मक संप्रेषण भी करती है, जो काफी महत्त्वपूर्ण है। भाषा का प्रश्न एक साथ कई पक्षों से जुड़ता है। विविधताओं को धारण करने वाले भारत जैसे देश के लिए तो यह पक्ष और भी विशिष्ट हो जाता है। भारतीय संस्कृति के विविध रूप भारतीय भाषाओं में समाहित हैं। इस दृष्टि से संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए भाषा का संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक हो जाता है। भाषाओं की स्थिति पर दृष्टिपात करने पर यह तथ्य सामने आता है कि देश ने विगत 50 वर्षों में ही 220 भाषाओं को खो दिया है... यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्राय घोषित किया है।

भाषा का प्रश्न शिक्षा से जुड़ा एक अहम प्रश्न है। भाषा ही शिक्षा की अर्थवत्ता एवं गुणवत्ता को सुनिश्चित करती है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' ध्यातव्य है कि मनुष्य अपनी अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति बिना अपनी भाषा के नहीं कर सकता है। अभिव्यक्ति तो किसी भी भाषा में हो सकती है लेकिन पूर्णता के लिए अपनी भाषा की तरफ ही लौटना पड़ता है। भारतेंदु इसी बात को स्वीकार करते हुए बार–बार निज भाषा की वकालत करते हैं– "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल / बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न ऊर को सूल।'' इतना ही नहीं उनकी यह स्पष्ट मान्यता थी कि अनेक भाषाओं में निष्णात व्यक्ति भी निज भाषा में ही बेहतर चिंतन कर सकता है। उन्होंने कहा– "पढ़ो लिखो कोई लाख विधि भाषा बहुत प्रकार पै जब कछु सोचिहो निज भाषा अनुसार।''

शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। वेदों की ऋचाओं में भी यह बात आती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में जो गुरुकुल परंपरा दिखायी देती है, उसमें जब शिष्य की शिक्षा पूर्ण हो जाती थी, तब गुरु अपने शिष्यों को अंत में भविष्यत् जीवन मंत्र दिया करते थे– "यानि अनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि" यानी जिस शिक्षा को ग्रहण किया गया है, उसे व्यावहारिक रूप देकर कार्यक्षेत्र में इसका उपयोग किया जाना चाहिए। कार्यक्षेत्र में शिक्षा का यही उपयोग व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाता है। जहाँ तक भाषा एवं आत्मनिर्भरता के संबंध की बात है, यह सत्य है कि प्रथमदृष्टया इनमें कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं दिखायी देता है तथापि आत्मनिर्भरता का अर्थ यदि सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता से जोड़कर देखा जाता है तब भाषा के पक्ष पर स्वतः ध्यान जाने लगता है। मनुष्य अपनी बाल्यावस्था से लेकर जीवन के विविध पड़ावों तक जो कुछ भी सीखता है, देखता है, उत्सवों एवं गीतों के माध्यम से जीवन के अनुभवों एवं रंगों को समझता है, उन सबके पीछे भाषा ही है। समाज में उसकी पहचान इसी भाषा से होती है।

आज के आधुनिक युग में विज्ञान एवं तकनीक का विकास हो रहा है। सामान्यतः तकनीक से जुड़े शब्दों पर गौर करने पर यह देखा जाता है कि अधिकांश शब्द अंग्रेजी भाषा के हैं। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है कि भाषा एवं समाज के बीच अन्योन्याश्रय संबंध होता है। जब समाज विकसित होता है, तब भाषा भी विकसित होती है। इसी प्रकार जब भाषा विकसित होती है, तब समाज भी विकसित होता है। इंग्लैंड, यूरोप महादेश के पश्चिमी तट से सटे एक छोटे से दीप का हिस्सा है। फिर भी यहाँ की स्थानीय भाषा रही अंग्रेजी वैश्विक भाषा बन जाती है। अंग्रेजी भाषा का विश्वस्तरीय प्रसार भाषा एवं समाज के संबंध की महत्ता की पुष्टि करता है। तकनीक एवं विज्ञान से जुड़ी शब्दावली में अधिकांश शब्द अंग्रेजी के इसलिए दिखायी देते हैं कि इस भाषा

को बोलने वाले समाज ने अपनी तरक्की की नई कहानियाँ जब लिखीं तब उन्होंने अपनी भाषा का चयन किया।

इसका एक दूसरा बेहतरीन उदाहरण संस्कृत भाषा है। प्राचीन भारत में देश ने आयुर्वेद, ज्योतिष एवं वैदिक गणित के माध्यम से स्वयं की पहचान बनायी। आज भी जब इन विषयों की मूल अवधारणाओं एवं तथ्यों पर गहरी समझ बनाने की कोशिश यदि कोई व्यक्ति करना चाहेगा, तब उसे संस्कृत की शब्दावली को समझना होगा। संस्कृत भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है क्योंकि इस भाषा में भारत देश के उच्च आदर्श, जीवन–मूल्य एवं सांस्कृतिक विचार समाहित हैं। दक्षिण भारतीय भाषाओं– तमिल, मलयालम, कन्नड़ एवं तेलुगु पर संस्कृत का प्रभाव इतना अधिक है कि भारत का उत्तरी एवं दक्षिणी भाग सांस्कृतिक शब्दभंडार की दृ ष्टि से सामान्य हो गया है। इसलिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा पर जोर दिया गया है– 'संस्कृत भाषा के वृहद एवं महत्त्वपूर्ण योगदान तथा विभिन्न विधाओं एवं विषयों के साहित्य, सांस्कृतिक महत्त्व, वैज्ञानिक प्रकृति के चलते संस्कृत को केवल संस्कृत विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों तक सीमित न रखते हुए इसे मुख्यधारा में लाया जाएगा स्कूलों में त्रिभाषा सूत्र के विकल्प के रूप में, साथ ही साथ उच्चतर शिक्षा में भी।'

संस्कृत के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं पर भी यह नीति अपना ध्यान केंद्रित करती है ताकि शिक्षा का भारतीयकरण हो सके। डाउन टू अर्थ की एक रिपोर्ट के अनुसार लैंग्वेज रिसर्च एवं पब्लिक सेंटर, वडोदरा तथा आदिवासी अकादमी के संस्थापक निदेशक गणेश एन देवी द्वारा भाषा से जुड़ी बातों को प्रमुखता से रखा गया था, जिसमें उन्होंने कहा था– भारत ने 1961 के बाद से 220 भाषाओं को करीब–करीब खो दिया है। इसी खबर में यह भी बताया गया था कि पांच ऐसी आदिवासी भाषाएं हैं, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसमें सिक्किम की माझी भाषा है। पीपल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के शोध के अनुसार सिर्फ चार लोग ही बचे थे, जो माझी भाषा को बोलते थे और वे सभी लोग एक ही परिवार से जुड़े हुए थे। इसी रिपोर्ट में यह बताया गया कि पूर्वी भारत की महाली भाषा, अरुणाचल प्रदेश की कोरो, गुजरात की सीडी एवं असम की दिमासा भाषा की भी स्थिति कुछ इसी प्रकार की है। इस स्थिति को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्पष्टतः कहती है– 'शास्त्रीय आदिवासी एवं लुप्तप्राय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास नए जोश के साथ किए जाएंगे।'
हरिजन पत्रिका में महात्मा गांधी ने भारतीय भाषाओं के संदर्भ में विचार दिया था –

"प्रांतीय भाषाओं के प्रतिस्थापन में एक–एक दिन का विलंब देश के लिए सांस्कृतिक हानि है। यह कहना कि कुछ वर्षों तक न्यायालयों, स्कूलों और दफ्तरों की भाषा नहीं बदली जा सकती, मानसिक आलस्य का प्रमाण देना है।'' जवाहरलाल नेहरु ने भी भाषा के संदर्भ में विशाल भारत में लिखा– "हमारा देश जब गिरा तब हमारी भाषाएं भी गिरी और बहुत दिनों तक गिरी रही।'' भाषा का एक–एक शब्द किसी देश की संस्कृति में निहित गहरे अर्थ को अभिव्यक्त करता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' में लिखा– "15 अगस्त को जब अंग्रेजी भाषा के पत्र इंडिपेंडेंस की घोषणा कर रहे थे, देसी भाषा के पत्र स्वाधीनता दिवस की चर्चा कर रहे थे। इंडिपेंडेंस का का अर्थ है किसी अनधीनता का अभाव, पर स्वाधीनता शब्द का अर्थ है अपने ही अधीन रहना।'' अंग्रेजी भाषा के इंडिपेंडेंस एवं भारतीय

भाषा हिंदी के स्वाधीनता, इन दो शब्दों के अर्थ समझाते हुए जब वे अंतर स्पष्ट करते हैं तो भाषा की उपादेयता सिर्फ इन दो शब्दों के अर्थ में अंतर के माध्यम से ही स्पष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं, इसी निबंध की आगे की पंक्तियों में उन्होंने लिखा – "मैं कभी–कभी सोचता हूँ कि इतने दिनों तक अंग्रेजी की अनुवर्तिता करने के बाद भी भारतवर्ष इंडिपेंडेंस को अनधीनता क्यों नहीं कह सका? उसने अपने आजादी के जितने भी नामकरण किए–– स्वतंत्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता––उन सबमें स्व का बंधन अवश्य रखा। यह क्या संयोग की बात है या हमारी समूची परंपरा ही अनजाने में हमारी भाषा के द्वारा प्रकट होती है।''

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भाषा एक सशक्त हथियार के रूप में सामने आई थी। उदाहरण के तौर पर जब ब्रिटिश शासन द्वारा लादी गई अंग्रेजी भारतीयों पर शोषण करने का एक माध्यम बन गई, तब राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बड़े नेताओं ने राष्ट्रीय चेतना के जागरण हेतु हिंदी भाषा को उपयुक्त माना। स्वाधीनता आंदोलन के तीव्र होने के साथ–साथ हिंदी भाषा भारतीयों के स्वाभिमान की भाषा बनी, जिससे इसका महत्त्व और भी बढ़ा। 1925 में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में इस बात का प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि कांग्रेस अपने सभी कार्यों में प्रादेशिक भाषा और हिंदी का प्रयोग करेगी। महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल इत्यादि क्षेत्रों में, जो मुख्यतः हिंदी भाषी क्षेत्र नहीं थे। में भी हिंदी को व्यापक स्वीकृति मिली।

भारत विविधता वाला देश है। साथ ही जनसंख्या के मामले में भी यह एक विशाल देश है। इस विशाल जनसंख्या से जनसांख्यिकीय लाभ लेने के लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। मनुष्य को 'मानव संसाधन' के रूप में तैयार करने तथा उसके माध्यम से राष्ट्र को सशक्त करने का कार्य शिक्षा पर निर्भर है। शिक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि उसका माध्यम क्या है? यानी वह किस भाषा में दी जा रही है? विदित है कि स्वतंत्रता के बाद भारत द्वारा अशिक्षा को दूर करने पर ध्यान दिया गया। अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित कर उनके सर्वांगीण विकास का प्रयास किया गया। भारत की पूर्व शिक्षा नीतियों ने इस बात का प्रयास किया कि शिक्षा तक सबकी पहुँच हो सके लेकिन भाषाई महत्ता के माध्यम से शिक्षा का भारतीयकरण करने का जैसा प्रयास नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिखाई देता है, वह विशिष्ट है। 'बहुभाषावाद और भाषा' की शक्ति को प्रोत्साहित कर 'प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है।'

भाषा, कला एवं संस्कृति की भाषा भी होती है। इसलिए देश की शिक्षा प्रणाली को भारतीय भाषाओं के कलेवर में लाना आत्मनिर्भरता की दिशा में एक अच्छा प्रतिफल दे सकता है। गणेश शंकर विद्यार्थी का कथन इस संदर्भ में प्रासंगिक जान पड़ता है– "भाषा जातीय जीवन और उसकी संस्कृति की सर्वप्रधान रक्षिका है, वह उसके शील का दर्पण है, उसके विकास का वैभव है, भाषा जीती और सब जीत लिया.... पराई भाषा चरित्र की दृढ़ता का अपहरण कर लेती है और मौलिकता का विनाश कर देती है।'' मौलिकता ही नवाचारों की आधारशिला तैयार करती है। अधिगम को प्रभावी बनाने एवं शिक्षा में जीवन तथा मौलिकता के संचार के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बाल्यावस्था से ही मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दे रही है– 'जहां तक संभव हो कम से कम ग्रेड 5, लेकिन बेहतर यह होगा कि ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी शिक्षा का

माध्यम घर की भाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।'

मातृभाषा सीखने के दृष्टिकोण से सर्वोत्तम भाषा होती है। मातृभाषा के कारण बच्चों के दिमाग में शब्द एवं उनसे जुड़ी हुई चीजों के प्रति आत्मीयता विकसित होती है, जो उनके स्मरण एवं कल्पना शक्ति का विस्तार करती है। मातृभाषा में शिक्षा देने से शिक्षा का सैद्धांतिक रूप व्यावहारिकता के धरातल पर उतर पाता है। इससे बाल्यावस्था से ही आत्मनिर्भर बनने का मार्ग प्रशस्त होने लगता है। बाल्यावस्था के अलावा उच्च शिक्षण संस्थानों में भी इन भाषाओं के प्रोत्साहन की बात इस नई नीति में दिखायी देती है।

भारतीय भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाली सामग्री की उपलब्धता बनी रहे, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, 'आईआईटीआई' की स्थापना की बात करती है। यह संस्थान अनुवाद एवं व्याख्या के विशेषज्ञों की नियुक्ति करने तथा प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग करते हुए भारतीय भाषाओं को प्रचारित एवं प्रसारित करने में अपनी भूमिका अदा करेगा। इन प्रयासों से भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम तैयार करने तथा अनुसंधान की दिशा में काफी लाभ होगा।

किसी भाषा के विकास के लिए शब्दकोश का निर्माण करना एवं समय के साथ उसे अद्यतन करते रहना आवश्यक होता है, जिस पर शिक्षा नीति का ध्यान है। इसके अलावा संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भाषाओं पर भी यह अपना ध्यान केंद्रित करती है। इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि– 'भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लेखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी की स्थापना की जाएगी, जिनमें हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रूप से उस भाषा को बोलने वाले लोग शामिल रहेंगे, ताकि नवीन अवधारणाओं का सरल किंतु सटीक शब्दभंडार तय किया जा सके तथा नियमित रूप से शब्दकोश जारी किया जा सके।' इस नीति में भाषा शिक्षण सुधार तथा बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए त्रिभाषा सूत्र के जल्द क्रियान्वयन की बात हो रही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 2020 की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति सभी भारतीय भाषाओं की महत्ता को समझते हुए शिक्षा के भारतीयकरण का प्रयास कर रही है। इस प्रकार, शिक्षा द्वारा व्यक्ति की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित होगी। व्यक्ति से समाज एवं समाज से संपूर्ण राष्ट्र आत्मनिर्भरता के मार्ग पर प्रशस्त होगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न साकार होगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

❒❒❒

शोध–छात्र, हिंदी विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना

–ऋचा राघव

संपूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारत जैसे विशाल देश में यह और महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारत एक विविध भाषा–भाषी देश है जिनमें से हमें एक ऐसी भाषा का चुनाव करना है जिससे संपूर्ण देश में एक चेतना का संचार किया जा सके। भारत के भाषा विशेषज्ञों ने इन तथ्यों को देखते हुए ही हिंदी भाषा को सर्वोपरि रखा। यही हिंदी भाषा स्वाधीनता संग्राम की सहचरिणी बनी।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस समाज में रहने के लिए उसे भाषा रूपी माध्यम की आवश्यकता पड़ती है जिसकी सहायता से वह अपने विचारों को दूसरे व्यक्तियों तक आराम से पहुँचा सकता है। इसी भाषा के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो कर रखा जा सकता है। स्वाधीनता के समय हमारे कवियों ने देश में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने हिंदी भाषा के माध्यम से संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोकर लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत की जिसके परिणामस्वरूप भारतवर्ष स्वाधीनता के अँचल में साँस ले पाया। भाषा ही वह ताकत है जो लोगों के अंतर मन को जाकर छूती है, इसलिए अपनी भाषा में कही गई हर बात इंसान को अपने इतने नज़दीक ले आती है कि वह हमारी हर बात मानने को विवश हो जाता है। अपनी भाषा में कही गई बात हमारे अंतर्मन को छूती है और हम उस से प्रभावित होकर कार्य करने के लिए अपने पूरे मन के साथ प्रेरित होते हैं। हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने भाषा की ताकत को समझ लिया था। यही कारण है कि महात्मा गाँधी स्वयं गुजराती भाषी थे लेकिन उन्होंने हिंदी पर इतना बल दिया था सिर्फ महात्मा गाँधी ही नहीं अपितु कई अन्य भाषा–भाषी लोगों ने हिंदी पर बहुत बल दिया जिनमें सरदार वल्लभभाई पटेल, गुरु रविंद्रनाथ टैगोर के नाम उल्लेखनीय हैं। लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाकर संपूर्ण देश में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य हमारे कवियों द्वारा प्रमुख रूप से किया गया। वर्तमान समय में भी हिंदी कवियों द्वारा हिंदी भाषा के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय चेतना जगाने में हिंदी भाषा पूर्ण रूप से समर्थ है। हिंदी भाषा के ही माध्यम से राष्ट्र को एकजुट किया जा सकता है।

बीज शब्द–राष्ट्रीय चेतना, हिंदी भाषा, स्वाधीनता, अंचल।

भारत जैसे विशाल देश की आधिकारिक राष्ट्रभाषा हिंदी को वर्तमान समय में आधी से अधिक जनसंख्या द्वारा बोला

जाता और समझा जाता है। आजकल विश्व बाजार में भी हिंदी भाषा रोजगार के नवीन विकल्प प्रदान करने में सहयोग प्रदान कर रही है। वर्तमान परिवेश में यह चर्चा स्वाभाविक है कि पिछले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा ने वैश्विक स्तर पर कितनी उपयोगिता प्राप्त की है। हमारे देश की हिंदी भाषा विश्व के अनेक देशों में जैसे ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन अमेरिका, सिंगापुर, न्यूजीलैंड तथा मॉरीशस जैसे आज अनेक देशों के नागरिकों द्वारा समझी जाती है। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के अनुसार–

मॉरीशस की कुल आबादी 12 लाख है। इसमें से 8 लाख भारतीय मूल के लोग हैं। शेष चार लाख में क्रियोल, फ्रेंच, चीनी और अन्य। यहाँ मुख्यतः हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्मावलंबी ही है।[1]

हिंदी देश की आधिकारिक भाषा होते हुए भी हमारे न्यायालयों, दफ्तरों एवं अधिकांश विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता आ रहा है। विद्यार्थियों में भी उन्हें ही श्रेष्ठ माना जाता है जो अंग्रेजी को सही प्रकार से बोलते हैं। हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो प्रदान कर दिया गया लेकिन हिंदी को हर प्रकार से भारत के राजकाज की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास अभी भी धूमिल ही दृष्टिगत होते हैं। विश्व हिंदी दिवस की उपादेयता को समझते हुए उसे लागू भी कर दिया लेकिन हिंदी के लिए जो वातावरण तैयार करना था उसे करने में आलस्य दिखलाई देता है। जिस अंग्रेजी भाषा को राजकाज की भाषा स्थापित कर रखा है उसे लगभग 200 वर्षों के प्रयासों के उपरांत भी देश की अनुमानित 5% जनसंख्या भी उसमें दक्षता प्राप्त नहीं कर सकी है। सरकार द्वारा नवीन शिक्षा नीति एक उत्तम कदम है क्योंकि पूर्व में लॉर्ड मेकाले द्वारा जो शिक्षा पद्धति तैयार करके लागू की थी, तभी से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी उसमें समय–समय पर लघु सुधार ही किए गए जिससे हिंदी भाषा के प्रति जनता, विद्यार्थी एवं शिक्षकों को का रुझान भी कमोवेश कम ही रहा। लेकिन नई शिक्षा नीति के प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षा में स्थानीय और मातृ भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने की बात कही गई है लेकिन शिक्षा के उच्च पदों पर आसीन नौकरशाहों का भारतीय भाषाओं के प्रति दिखावा ही प्रतीत होता है। ऐसे में जनमानस में एक प्रश्न उठता है कि आखिर क्या प्रयास करना होगा कि हिंदी भाषा को जनमानस के पटल पर सरलता से उतारा जा सके? क्या हिंदी भाषा में वह शक्ति नहीं है जो संपूर्ण राष्ट्र को एक साथ चला सके या उस में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न कर सके। सदैव से इस प्रश्न का जवाब हाँ ही है क्योंकि प्रत्येक देश की भाषा वहाँ के संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है। संपूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारत जैसे विशाल देश में यह और महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि भारत एक विविध भाषा–भाषी देश है जिनमें से हमें एक ऐसी भाषा का चुनाव करना है जिससे संपूर्ण देश में एक चेतना का संचार किया जा सके। भारत के भाषा विशेषज्ञों ने इन तथ्यों को देखते हुए ही हिंदी भाषा को सर्वोपरि रखा। यही हिंदी भाषा स्वाधीनता संग्राम की सहचरिणी बनी। महात्मा गांधी ने अपनी गुजराती भाषा का मोह त्यागकर हिंदी भाषा को अपनाया और इसी हिंदी भाषा के माध्यम से अपनी बात लोगों को समझायी। यह हिंदी भाषा प्राचीन काल से ही लोगों में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का काम करती रही है। आदिकाल, जिसका नाम इसकी वीरता प्रधान रचनाओं के आधार पर वीरगाथा काल पड़ा, की अधिकांश रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत थीं। इनमें से कुछ रचनाएँ तो आज तक भी राष्ट्रीयता जगाने का काम निरंतर कर रही हैं, जिनमें प्रमुख रूप से परमाल रासो का नाम लिया जा सकता है। कहा जाता है कि प्रथम

विश्वयुद्ध में सैनिकों को युद्ध पर जाने से पहले परमाल रासो को गाकर सुनाया जाता था। भक्ति काल में कबीर, सूर और तुलसी आदि कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया।

कालांतर में रीतिकालीन कवियों ने भी राजाओं के श्रृंगार और भोग–लिप्तता का चित्रण करने वाले कवियों के बीच भी राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने वाले कवियों ने अपनी अहम भूमिका निभाई। इनमें प्रमुख रूप से भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल जैसे वीर नायकों को अपने काव्य का वर्ण्य–विषय बनाया और राष्ट्रीयता की मिटती जा रही भावना को एक आशा के साथ प्रस्तुत किया। इस काल में अकेले भूषण ही नहीं अपितु गुरु गोविंद सिंह और सेनापति जैसे कवियों ने भी राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का कार्य किया। इसी हिंदी भाषा के बल पर भारतीय स्वाध ीनता संग्राम में हिंदी भाषा के कवियों द्वारा राष्ट्रीय चेतना जगाने का प्रयास किया गया। भारतेंदु हरिश्चंद्र लोगों में राष्ट्रीय प्रेम को जागृत करते हुए कहते हैं–

डुबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो।
बालस दवेएहि दहन हेतु चहुँ दिशि सों लागों।।
महामूढ़ता वायु बढ़ावत तेहि अनुरागो।
कृपा दृष्टि की वृष्टि बुझावहु आलस त्यागो।। 2

भारतीय लोगों के मन में एकता की भावना का संचार करते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र कहते हैं–

बैर फूट ही सों भयो, सब भारत को नास।
तबहुँ न छाड़त याहि सब, बंधे मोह के पास।। 3

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों को स्वदेश प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने और अपनी भाषा को अपनाने पर विशेष बल दिया। भाषा के लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र कहते हैं–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।। 4

हिंदी भाषा में समय–समय पर लोगों के मध्य जागरूकता फैलाने का कार्य किया। कुछ अहिंदी भाषी लोग और अंग्रेजी के समर्थक हिन्दी का विरोध करते रहते हैं। उनके द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि हिंदी को लादा नहीं जा सकता। जिसके कारण हमारे देश में भाषा का प्रश्न आज भी वैसा ही बना हुआ है जैसा सत्ता प्राप्ति के बाद था। हिंदी भाषा किस कवियों का इस ओर ध्यान गया। उन्होंने लोगों के मन मस्तिष्क में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जनमत को जागृत किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र कहते हैं–

अंग्रेज राज साज सजे सब भारी
पै धन विदेश चलि जात इहै बडख्वारि।[5]

मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य भारत–भारती में समाज में व्याप्त लोगों की दयनीय दशा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए लिखा है–

हम कौन थे, और क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ, विचारें आज मिलकर ये सभी समस्याएँ सभी।
यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पूरा है नहीं,
हम कौन थे, इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है नहीं ।।[6]

गुप्तजी ने सुप्त पड़ी हुई लोगों की चेतना को अपने काव्य के माध्यम से जागृत किया और लोगों में एक नई राष्ट्रीय चेतना को प्रदीप्त कर उन्होंने राष्ट्र को एक नवीन मार्ग दिखाया। उन्हें अपने राष्ट्र के प्राचीन गौरव और संस्कृति को पहचानने के लिए विवश किया लोगों का ध्यान बार–बार उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की ओर आकर्षित किया। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि–

राष्ट्रीयता अपने पूरे विस्तार और वेग में भारत–भारती का उपजीव्य है।[7]

मैथिलीशरण गुप्त ने भी संभावनाओं को माध्यम बनाकर लोगों को चेतन में बनाने के लिए वे सहज यही पुकार उठते हैं–

हे भाइयों! सोए बहुत, अब तो उठो जागो अहो।
देखो जरा अपनी दशा, आलस्य को त्यागो अहो
कुछ पार है, क्या–क्या समय के, उलट–फेर न हो चुके!
अब भी सजग होंगे न क्या? सर्वस्व तो हो खो चुके।।[8]

मैथिलीशरण गुप्त अपने महाकाव्य भारत–भारती में भारत के लिंग वर्तमान समय में देश भक्ति बताते हुए कहते हैं–

समझो ना भारत–भक्ति केवल भूमि के ही प्रेम को,
चाहो सदा निज देशवासी बंधुओं के क्षेम को।
यों तो सभी जड़ जन्तु भी स्वास्थान के अति भक्त हैं,
कृमि, कीट, खग, मृग, मीन भी हम से अधिक अनुरक्त हैं।।[9]

हिंदी भाषा के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता के नवीन भावना का प्रचार किया देश को एक समय अनुकूल राष्ट्रीय चेतना प्रदान की माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी कविता फूल की चाह के अंतर्गत राष्ट्रप्रेम का परिचय कुछ इस प्रकार दिया है।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर जावें वीर अनेक।।[10]

इन चैतन्य कवियों ने लोगों का ध्यान सामाजिक बुराइयों की ओर भी आकर्षित किया जिसके लिए उन्होंने हिंदी भाषा को अपनाकर उसे आगे बढ़ाया इनके अनुसार वही भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में लोगों को जागरूक कर सकती है, जो अधिकांश लोगों द्वारा समझी जाती हो। यह हिंदी भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा इस पद को प्राप्त नहीं कर सकती। भाषा ने सदैव से ही भारतीय लोगों के मन में वास किया। इस भाषा के माध्यम से लोगों ने जो बात कहनी चाहिए उसे सरलता के साथ कहा। अज्ञेय ने न सिर्फ भारत के वैभव का बल्कि उसके प्राकृतिक सौंदर्य जो गाँव में निवास करता है, उसका वर्णन करते हुए कहा है–

इन्हीं तृण–फूस–छप्पर से ढँके ढुलमुल गँवारू
झोंपड़ों में ही हमारा देश बसता है।[11]

हिंदी भाषा के इतना संपन्न होने पर भी हमारे मध्य में एक छोटा सा वर्ग है जो हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने में अनेक तर्कों को प्रस्तुत करते हैं। उनमें अधिकांश प्रांतीयता और अंग्रेजी भाषा के समर्थक हैं। वह तर्क देते हैं कि हिंदी का ज्ञान भंडार कम है इसलिए इसके माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी हिंदी

को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता के संदर्भ में अपने विचार प्रकट किए थे। उनके अनुसार–

मैं हमेशा यह मानता हूँ कि हम किसी भी हालत में प्रांतीय भाषाओं को नुकसान पहुँचाना या मिटाना नहीं चाहते। हमारा मतलब तो सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रांतों के पारस्परिक संबंध के लिए हम हिंदी भाषा सीखें। ऐसा कहने से हिंदी के प्रति हमारा कोई पक्षपात प्रकट नहीं होता। हिंदी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह राष्ट्रीय होने के लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय भाषा बन सकती है जिसे अधिक संख्या में लोग जानते बोलते हो और जो सीखने में सुगम हो।[12]

हिंदी भाषा ने एक लंबी यात्रा से गुजर कर भारतीय जनमानस के हृदय में एक विशेष स्थान बनाया है जिससे वह जन–जन के द्वारा समझी एवं बोली जाती है। हिंदी भाषा ने अपनी इस चेतन यात्रा में कई पड़ावों को पार किया जिससे आज उसके स्वरूप में भी पर्याप्त परिवर्तन आया है। आज की आवश्यकताओं के अनुसार राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप भी बदला है। आज के इस बदलते हुए स्वरूप को भी हिंदी के द्वारा स्पष्ट तथा व्यक्त किया जा रहा है। यह हिंदी भाषा की महान उपलब्धि ही है कि उसके द्वारा प्राचीन काल से अब तक लोगों को सजग एवं सचेत किया जाता रहा है। हम हिंदी भाषा के रूप में अपने राष्ट्र को एकजुट बनाए रख सकते हैं और इसके माध्यम से अपने संपूर्ण राष्ट्र को एकता का संदेश दे सकते हैं और हमें अपनी इस भाषा पर गर्व है।

संदर्भ सूची

1. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी –हिंद महासागर का मोती 'मॉरिशस' पृष्ठ संख्या 127
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र–भारतेंदु ग्रंथावली भाग–2, पृष्ठ संख्या 230
3. वही, पृष्ठ संख्या 352
4. वही, पृष्ठ संख्या 402
5. hindisahitya.com
6. मैथिलीशरण गुप्त भारत भारती प्रश्न संख्या 13
7. रामस्वरूप चतुर्वेदी– हिंदी काव्य का विकास पृष्ठ संख्या 142
8. मैथिलीशरण गुप्त –भारत भारती पृष्ठ संख्या 123
9. वही, पृष्ठ संख्या 129
10. hindikunj.com
11. द्वारिका प्रसाद सक्सेना हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि पृष्ठ संख्या 429
12. मोहनदास करमचंद गाँधी–वैचारिकी, हिंदी समय.काम

❒❒❒

हिंदी विभाग

एम.एल.एंड जे.एन.के. गर्ल्स कॉलेज सहारनपुर

मोबाइल नं. - 7982147475 ईमेल - richaraghav70@gmail.com

भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय चेतना

–डॉ. योजना कालिया

राजभाषा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हिन्दी भाषा ही है। गांधी जी ने यहां तक कहा था कि राष्ट्रीय भाषा वही भाषा हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो, जो धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में माध्यम भाषा बनने की शक्ति रखती हो, जिसको बोलने वाले बहुसंख्यक हों और जो पूरे देश के लिए सहज रूप से उपलब्ध हो।

वर्तमान में एक शिक्षक हर दिन इस आत्मसंघर्ष से दो–चार होता है कि बाजारवाद के इस दौर में वह अपने विद्यार्थी को सफल होने के लिए साम–दाम–दंड–भेद की नीति से प्रशिक्षित करके आत्मसंतुष्ट हो जाए अथवा उसे राष्ट्र के प्रति एक सजग चेतना से जोड़े। दुर्भाग्यवश आज सफल होने के रास्ते और आदर्श मानव–मूल्यों के मार्ग एक–दूसरे की बिल्कुल विपरीत दिशा में बढ़ रहे हैं। भाषा का प्रश्न भी इसी प्रकार का है। इस महत्त्वपूर्ण विषय को विभिन्न अतिवादी दृष्टियों एवं विचारधाराओं के कारण कई खेमों में बांटकर देखने की विवशता बन चुकी है। दरअसल इन विभिन्न खेमों का निर्माण किसी विशिष्ट विचारधारा का परिणाम नहीं है, यह केवल एक नवीन प्रकार की राजनैतिक प्रतिस्पर्धा का परिणाम है जिसमें दौड़ता हुआ प्रत्येक प्रतिभागी अपनी विशिष्टता सिद्ध करना चाहता है, इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों से अंकित देखना चाहता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह अपने अतार्किक विचारों और संकुचित दृष्टिकोण को भी उन प्रबल शब्दों में अभिव्यक्त करता है कि उसके साथ उसके कुछ समर्थक जुड़ जाते हैं। इस प्रकार से प्रारम्भ हो जाते हैं कुछ आंदोलन, जो केवल अपनी–अपनी बात कहते हैं और दूसरे पक्ष को सुनना भी नहीं चाहते। इस जीत और हार के खेल में जिसका सबसे अधिक नुकसान होता है, वह है भाषा।

विविधताओं के देश भारत की खूबसूरती ही उसकी विभिन्नताओं के सामंजस्य में है। भारत का अस्तित्व यहां के प्रत्येक रंग में विद्धमान है न कि किसी एक रंग में जब तक हम अपने राष्ट्र की इस विविध धर्मी विशिष्टता का सम्मान नहीं करेंगे तब तक हम तथाकथित संकीर्णताओं से नहीं उभर सकते।

इतिहास साक्षी है कि जब तक कबीर की तरह की 'घर फूंकने' और 'लुकाठी' हाथ में लेने की क्षमता अर्जित नहीं होती जब तक परिवर्तन की आकांक्षाएं कोरा स्वप्न हैं। कुछ पाने के लिए कुछ ना कुछ खोना पड़ता है और यह खोना वास्तव में त्यागना है। व्यक्तिगत सफलता के अकांक्षी इस समय को त्याग का संदेश हास्यास्पद प्रतीत होता है। ऐसे भाषा को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का उपक्रम भी काफी दुष्कर हो जाता है। तो युवा पीढ़ी को किस प्रकार इस महत् उद्देश्य से जोड़ा जा सकता है।

इतिहास सदैव हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। मध्यकालीन रचनाकारों ने अपनी क्षेत्रीय बोलियों से कभी भी दूरी नहीं बनाई थी, बल्कि अपने संदेशों/रचनाओं के माध्यम से अपने क्षेत्र की बोलियों को अन्य प्रदेश तक भी पहुंचाने का काम तो किया ही साथ ही भ्रमण की स्वाभाविक प्रकृति के चलते विभिन्न प्रदेशों के विशिष्ट शब्दों को भी ग्रहण करते चले। कबीर की सधुक्कड़ी भाषा इस बात का सुंदर उदाहरण है। आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेताओं यथा महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय जैसे महारथी भी भाषा और राष्ट्रीयता के प्रश्न पर विचार करते रहे। उनका मानना था कि राजभाषा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हिन्दी भाषा ही है। गांधी जी ने यहां तक कहा था कि राष्ट्रीय भाषा वही भाषा हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो, जो धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में माध्यम भाषा बनने की शक्ति रखती हो, जिसको बोलने वाले बहुसंख्यक हों और जो पूरे देश के लिए सहज रूप से उपलब्ध हो। अंग्रेजी किसी भी तरह इस कसौटी पर खरी नही उतर पाती। उनके अनुसार हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा थी जो उनके द्वारा निर्धारित आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी, फिर ऐसे क्या कारण थे कि संविधान के अनुच्छेद–343 के अनुसार ''संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी'' स्वीकृत होने के बावजूद उसी अनुच्छेद के खंड (2) के अनुसार 'संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि के लिए उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग की जाती रहेगी जिनके लिए ऐसे प्रारम्भ के पहले वह प्रयोग की जाती थी' को व्यवहार में लाया गया? इस प्रश्न के उत्तर में तर्क दिए गए कि अंग्रेजी के स्थान पर प्रशासनिक व्यवहार क्षेत्र में तत्काल प्रयोग में लाने के लिए हिन्दी भाषा न तो समर्थ है और न विकसित।

तो क्या गांधी जी और उनके साथ के अन्य महारथियों की भाषा संबंधी दृष्टि को अविकसित मान लिया जाए? देश के विभाजन–कर्ता हर दृष्टि से देश को कमजोर करने के लिए तत्पर थे। भाषा का प्रश्न धर्म, जाति और प्रदेश से जोड़कर उन्होंनें अपना खेल खेला और कहा कि एकाएक परिवर्तन से अहिन्दी भाषियों को काफी असुविधा होगी, इसलिए राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 में यह व्यवस्था की गई कि 1965 के बाद भी स्थिति यथावत् बनी रहे। इस प्रकार राजभाषा संशोधित अधिनियम ने द्विभाषिक प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। परंतु यहां ठहरकर प्रश्न किया जा सकता है कि क्या यह द्विभाषिकता की स्थिति केवल अंग्रेजी और हिन्दी के ही संदर्भ में अनिवार्य थी? या हिन्दी और उस अहिन्दी भाषी प्रांत की क्षेत्रीय भाषा के साथ यह द्विभाषिकता की नीति लागू नहीं की जा सकती थी? या केवल एक अंग्रेजी ही ऐसी भाषा थी जो भारत के सभी अहिन्दी भाषी प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रयुक्त की जा सकती थी? उसके उत्तर में सामान्य रूप से यह तर्क दिया जा सकता है कि इन प्रांतों की क्षेत्रीय भाषाएं प्रशासनिक सक्षम शब्दावली से युक्त नहीं थीं, तो क्या ऐसे में अंग्रेजी ही एकमात्र बैशाखी थी जिसका सहारा लेकर प्रशासन चल सकता था? अथवा इस निर्णय में हमारे पूर्वजों से शायद अनजाने में कुछ भूल हुई है? क्योंकि जहां तक हिन्दी भाषा की व्यापकता और व्यवहार शक्ति की क्षमता का प्रश्न है, गांधी जी के अनुसार 1917 के भारत की स्थिति यह थी कि हिन्दी बोलने जहां भी जाता है हिन्दी का प्रयोग करता है और कोई व्यक्ति इस पर आश्चर्य व्यक्त नहीं करता। हिन्दी बोलने वाले हिन्दू धर्मोपदेशक और उर्दू बोलने वाले मौलवी संपूर्ण भारतवर्ष में धर्म और आचरण संबंधी अपने भाषण हिन्दी या उर्दू में देते पाए जाते हैं। औरों की बात तो दूर, यहां तक कि अशिक्षित बहुसमाज भी उन्हें समझ लेता है।

राष्ट्रपिता के उक्त समर्थन के बावजूद भी हिन्दी आज तक राष्ट्रभाषा का स्वतंत्र स्थान नहीं प्राप्त कर सकी, इसका कारण हमें कहीं बहुत पीछे जाकर तलाशना पड़ेगा। अंग्रेजों ने वली, सौदा, नजीर अकबराबादी जैसे कवियों की लोक जीवन से जुड़ी हिन्दी–हिन्दुस्तानी की उपेक्षा करके फारसीमुखी हिन्दुस्तानी को जान–बूझकर तरजीह दी थी। गिलक्राइस्ट ने हिन्दी को 'गवारु' और हिन्दुओं की भाषा कहा था। गार्सा दत्तासी ने भी कहा कि 'हिन्दी में हिन्दू धर्म का

आभास है– वह हिन्दू धर्म, जिनके मूल में बुतपरस्ती और आनुषंगिक विधान है।...इस समय हिन्दी की हैसियत एक बोली की सी रह गई है, जो हर गांव में अलग–अलग ढंग से बोली जाती है। 'दरअसल हिन्दी चेतना के व्यापक धर्मनिरपेक्ष की ओर कई बुद्धिजीवियों ने जानबूझकर ध्यान नहीं दिया।' भारतीय अस्मिता और हिन्दी नामक पुस्तक में शंभुनाथ लिखते हैं कि–'भारत के आजाद होने के बावजूद हिन्दी का आजादी का स्वप्न पूरा नहीं हुआ। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी ने कहा था, यदि देश आजाद हो गया, तब भी भाषा गुलाम रह सकती है, पर भाषा आजाद हो गई तो देश गुलाम नहीं रह सकता।' कहा जा सकता है कि हिन्दी को सामाजिक–क्षेत्रीय भेदभावों से मुक्त राष्ट्रीय अस्मिता की भाषा बनकर उभरना अभी भी बाकी है।

आजादी के 76वें वर्ष में भी आज यदि हम हिन्दी भाषा को हम अपनी अस्मिता से जोड़कर पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं कर पाते तो यह प्रश्न प्रत्येक नागरिक को अपने–आप से पूछना चाहिए कि हम अपने देश, अपनी भाषा और अपने राष्ट्र के प्रति कितने ईमानदार हैं।

एक शिक्षक के रूप में युवा पीढ़ी के साथ हर पल जुड़ने का अवसर मिलता है। जब तक उनसे विचार–विमर्श होता ही रहता है। एक बात जो वर्तमान के युवा में अधिकांशतः मिलती–जुलती है, वह है विदेश–भ्रमण और भारत से बाहर स्थापित होने की प्रबल इच्छा। माता–पिता भी अपनी संतान को इसी रूप में सफल देखना चाहते हैं। यद्यपि यह भी सत्य है कि भारत छोड़कर बाहर बसे भारतीयों में अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को लेकर एक ईमानदार प्रेम जागृत होता है और वे उसके विकास के लिए दूर रहकर भी प्रयासरत रहते हैं। परंतु भारत में रहने वाली युवा पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण करते हुए स्वयं को आधुनिक समझ रहा है। हिन्दी भाषा के प्रति जो उपेक्षा का भाव इस पीढ़ी में दिखाई पड़ता है उसके जिम्मेदार मेरी समझ में यह युवा नहीं हैं बल्कि हम हैं, जिन्होंनें उन्हें वह आदर्श नहीं दिए जो उन्हें देशभक्त बना सके।

दरअसल हमने अपनी अगली पीढ़ी को मनुष्य से अधिक उपभोक्ता बनाया है। जो उसी ओर आकर्षित होता है, जिधर उसे लाभ होता है। त्याग, समर्पण, आस्था, विश्वास और राष्ट्र–प्रेम यह सभी शब्द जैसे केवल खोखले शब्द रह गए हैं, इनके भीतर के अर्थ और संदर्भ कहीं काम पर जाने वाले बच्चों की गेंदों की तरह अंतरिक्ष में खो गए हैं।

वस्तुस्थिति तो यही है, प्रश्न उठता है कि ऐसे में हमारा कर्तव्य अथवा दायित्व क्या है व्यक्तिगत विश्वास के आधार पर मुझे प्रतीत होता है कि सबसे पहला कर्तव्य तो यह है कि देश के भीतर ही जो जातिगत, प्रदेशगत, धर्मगत, भाषागत वैमनस्य बढ़ रहा है, उसके प्रति युवा को सजग किया जाए। सांप्रदायिक द्वेष और कट्टरता तथा आपसी शत्रुता का का परिणाम दंगे ही हो सकते हैं, जो कि समय–समय पर स्थान–स्थान पर हुआ करते हैं। उस आपातकाल में कुछ शक्तियां युवाओं को दिग्भ्रमित करके अपने निजी स्वार्थों के लिए प्रयोग करतीं हैं। हमारा दायित्व है कि हम उन्हें सही दिशा दिखाएं, एकता और सामंजस्य का भाव सिखाएं। उन्हें अपने देश और देशवासियों के उज्ज्वल इतिहास से परिचित कराएं। उन्हें निज भाषा के महत्त्व का ज्ञान दें। संपूर्ण राष्ट्र की अवधारणा का संस्कार उन्हें दें। भारत में रहने वाली प्रत्येक जाति, प्रत्येक धर्म, प्रत्येक भाषा–भाषी का सम्मान उन्हें करने का अभ्यास कराएं। जिस तरह विदेश में मिलने वाला हर भारतवासी चाहे वह सुदुर प्रदेश का ही क्यों न हो भाई ही लगता है, वही संवेदना का अभ्यास देश में रहते हुए ही कराना चाहिए। सभी तरह की विभिन्नताओं से ऊपर भारतीयता का पाठ उनके रक्त में प्रवाहित करना होगा, तभी हम अपनी भाषा को वह स्थान दिला पाएंगें, जिसकी प्रतीक्षा में हम बरसों बिता चुके हैं।

❑❑❑

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, विवेकानंद कॉलेज, विवेक विहार, दिल्ली विश्वविद्यालय

मोबाइल नं.: 9540932431 ईमेलः yojnakalia73@gmail.com

नेपाल में हिंदी का वर्तमान परिदृश्य

–अमित जायसवाल

जब भी हम भारतीयों से हमारे सबसे प्यारे पड़ोसी की बात की जाती है, त्यों ही हमारा मानस पटल नेपाल का चित्र स्वतः ही उकेरने लगता है और निःसन्देह ही नेपाल हमारा सबसे प्यारा और विश्वसनीय पड़ोसी है। जिसके साथ हमारे सम्बन्ध रोटी–बेटी के है।

नेपाल की भौगोलिक स्थिति के कारण ही हिन्दी भाषा वहां के समाज में अभिन्न रूप में रची–बसी हुई है। नेपाल तीन ओर से भारत से घिरा है। पूर्व में बंगाल, पश्चिम में उत्तराखण्ड और दक्षिण का विस्तृत भू–भाग जो कि नेपाल के तराई का हिस्सा है, जो लगभग 50 प्रतिशत आबादी को बसाये हुए है, वह उत्तर प्रदेश और बिहार से लगा हुआ है। जो कि हिन्दी भाषा के गढ़ हैं। जहां तक नेपाल में हिन्दी भाषा के समाज की चर्चा की जाए तो हम देखते हैं कि पूर्व में मेची नदी (बंगाल की सीमा) से पश्चिम में महाकाली नदी (उत्तराखण्ड की सीमा) तक, दक्षिण में उत्तर प्रदेश और बिहार के साथ ही उत्तर चीन सीमा (तातोपानी, कोदारी) तक बिना किसी झिझक और रुकावट के हिन्दी समझी जाती है और बहुत हद तक सभी लोग इसे बोलने में भी समर्थ हैं।

भाषा की दृष्टि से मैं नेपाल को एक अलग राष्ट्र न मानकर भारत का ही एक राज्य मानने का पक्षधर हूं। जहां कि राजभाषा हिन्दी ना होकर नेपाली है। जहां आबादी का बहुत बड़ा भाग मातृभाषा के रूप में अवधी, भोजपुरी, मैथिली इत्यादि का प्रयोग करता है। इसके अलावा हिन्दी यहां सम्पर्क भाषा के रूप में है। जो तराई को घाटी और पहाड़ से तथा पहाड़ियों को तराई से जोड़ती है। नेपाल में हिन्दी का विकास सहज मानवीय भाषा आदान–प्रदान की प्रक्रिया के आधार पर हुआ है। नेपाल में हिन्दी प्रवासी भाषा नहीं कही जा सकती। जब यह बात कही जा रही है, तो इसका मतलब यह है कि नेपाल में हिन्दी की एक समृद्ध परम्परा रही है। जो कुक्करिपा से होते हुए आज के वर्तमान लेखकों तक बराबर बनी हुई है। प्राचीन समय से ही नेपाल भारत का अंग रहा है। तो स्वाभाविक रूप से उसकी भाषा व संस्कृति भारतीय भाषा और संस्कृति के अनुरूप होनी है। परन्तु समय का चक्र चलता गया भारत देश टूटता गया और नई–नई सीमायें बनती चली गई। खैर,

नेपाल में हिन्दी का विकास सहज मानवीय भाषा आदान–प्रदान की प्रक्रिया के आधार पर हुआ है। नेपाल में हिन्दी प्रवासी भाषा नहीं कही जा सकती। जब यह बात कही जा रही है, तो इसका मतलब यह है कि नेपाल में हिन्दी की एक समृद्ध परम्परा रही है। जो कुक्करिपा से होते हुए आज के वर्तमान लेखकों तक बराबर बनी हुई है।

वर्तमान नेपाल का जो भौगोलिक स्वरूप है। उसे तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. पहाड़
2. घाटी
3. तराई

1. जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि पहाड़ का क्षेत्र काफी दुर्गम और ऊंची पहाड़ियों पर बसा है। जहां साधन और संसाधन बड़ी मुश्किल से ही पहुंच पातें है। जहां पर्यटक भी कम ही जाते हैं और सुविधा के नाम पर बुनियादी चीज ही मिल पाती हैं। इसके अलावा प्राथमिक से उच्च शिक्षा के स्तर पर हिन्दी ना होने के बावजूद भी पहाड़ी लोगों को हिन्दी समझने में किसी भी प्रकार की दिक्कत का सामना करते हुए नहीं देखा गया। पुराने समय से ही पहाड़ के लोग रोजगार की तलाश में घाटी और तराई में आने–जाने से भारतीय भाषाओं से परिचित होते रहे हैं। साथ ही साथ पहाड़ी लोग अक्सर भारत में भी आते रहे हैं। जिससे उन्हें हिन्दी का अच्छा–खासा अभ्यास हो जाता है। जिसका प्रयोग उन्हें पर्यटकों के बीच बराबर करना पड़ता है। यहां के लोग आपसी बातचीत या फिर अपने घरों में भी हिन्दी का प्रयोग करते हुए कभी–कभी नजर आ जाते हैं। अब तो भूमण्डलीकरण के दौर में इन्टरनेट की पहुंच ने यहां के लोगों को और भी अधिक हिन्दी का अभ्यस्त बना दिया है। क्योंकि उनके मनोरंजन के जो विषय हैं, वह अधिकतर भारतीय सिनेमा, सीरियल और यूट्यूब वीडियोस् हैं। जो कि हिन्दी भाषा में ही रहते हैं। इसका एक उदाहरण चीन सीमा के बगल के गांव तातोपानी में देखने को मिला। वहां एक दसवीं के छात्र (मीने) की हिन्दी के व्यवहार को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। उसने बताया कि यहां लगभग सभी हिन्दी जानते व समझते हैं। क्योंकि हम सभी हिन्दी पिक्चर और वीडियोस् देखा करते हैं। इसीलिए अब हम अभ्यस्त हो गए हैं।

2. घाटी का क्षेत्र मुख्य रूप से पर्यटन पर आधारित है और जिस हिस्से को नेपाल समझा जाता है, उसके केन्द्र में यही भाग है। घाटी होने के कारण यहां कई खूबसूरत स्थान है। काठमाण्डू, पोखरा, फिदिम इत्यादि पर्यटन स्थल इसी प्रकार की घाटी क्षेत्र है। नेपाल में यात्रियों का सबसे बड़ा हिस्सा भारत से ही आता रहा है और साथ ही आती रही है भाषा। जिस कारण यहां के बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक अच्छी–खासी हिन्दी बोलने और समझने में सक्षम हैं। इस प्रकार नेपाल में नेपाली भाषा के साथ–साथ सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी नेपाल की घाटियों में परम्परागत रूप से चलती चली आ रही है।

3. तराई का क्षेत्र सपाट, उर्वरक और कृषि के अनुकुल होने के कारण नेपाल की आर्थिक स्थिति का आधार रही है। तराई का हिस्सा उत्तर प्रदेश, बिहार से सटे होने के परिणामस्वरूप हिन्दी बोली का व्यवहार करती रही है, जो की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही इत्यादि इस क्षेत्र की मातृभाषाएं हैं। नेपाल के तराई में हिन्दी की बहुपयोगिता इस क्षेत्र में आये नये व्यक्ति के मस्तिष्क को एक क्षण के लिए भ्रमित कर देती है कि शायद हम नेपाल में नहीं भारत के किसी एक हिन्दी भाषी हिस्से में खड़े हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार से लगे होने के कारण नेपाली भी हिन्दी की बोलियों से प्रभावित नजर आते हैं। नेपाली और हिन्दी बोलियों में काफी समानता है। 'क्योंकि खसकुरा नामक बोली जिसे नेपाली कहा जाता है, वह मुख्य रूप से नेपाल के पश्चिम पहाड़ी प्रदेश से आई है'। जिसकी उत्पत्ति भी हिन्दी की कई बोलियों की जननी शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है तथा इसकी लिपि देवनागरी ही है।

सम्पर्क भाषा के रूप में देखा जाए तो नेपाल में दो भाषाओं की प्रधानता अभी तक बनी हुई है– पहला नेपाली और दूसरी हिन्दी। निर्विवादित रूप से समतल तराई क्षेत्र से लेकर ऊंचे–ऊंचे

पहाड़ी गांवों में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग आसानी से देखा जा सकता है। किसी क्षेत्र या भू–भाग पर भाषा का स्वरूप स्थाई होने के लिए उसका जुड़ाव वहां के समाज की संस्कृति के साथ–साथ उसकी जीवन शैली में भी गहरी पैठ होनी चाहिए। जो भाषा जीवन शैली और संस्कृति से जुड़ाव स्थापित नहीं कर पाती वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाती है। इस नज़रिए से देखें तो नेपाल में हिन्दी की बहुत सारी बोलियों (अवधी, मैथिली, भोजपुरी) का स्वरूप मातृभाषा के रूप में उपस्थित है। हालांकि नेपाल में इन्हें हिन्दी से अलग स्वतन्त्र भाषा के रूप में देखा जाता है। फिर भी यह बोलियां यहां काफी समृद्ध रूप में उपस्थित हैं। जो नेपाल को हिन्दी और भारतीयता से जोड़ती है। परन्तु बढ़ते भूमण्डलीकरण के दौर और भारत में हिंग्लिश की बढ़ती लोकप्रियता नेपाल में हिन्दी के अस्तित्व को भी खतरे में डालने का काम कर रही है। बावजूद इसके अभी भारत की तरह नेपाल में हिंग्लिश का बोलबाला पूरी तरह से हावी नहीं हो पाया है। परन्तु आने वाले पच्चीस–पचास वर्षों में ऐसी सम्भावना हो सकती है कि नेपाल में हिन्दी की जगह हिंग्लिश का वर्चस्व तेजी से फैलता चला जाए और धीरे–धीरे हिंग्लिश और नेप्लिंग (नेपालिश) ही सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग आने लगे। यदि समय रहते सचेता नहीं गया तो सौ–दो सौ वर्ष में नेप्लिंग और हिंग्लिश दोनों ही अपना अस्तित्व इंग्लिश में खो देंगे।

नेपाल में नई शिक्षा नीति और राजभाषा नीति के आधार पर हिन्दी को जड़ से उखाड़ने का काम किया गया है। नेपाल में हिन्दी को विदेशी भाषा के रूप में देखा जा रहा है। जिसका उदाहरण गोर्खापत्र में देखा जा सकता है।

वर्तमान हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के सम्बन्ध में बात करें तो 24 जुलाई 2022 को सूचना और प्रसारण मंत्रालय नेपाल से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार नेपाल में 7846 प्रिन्ट मीडिया है। जिनमें से मात्र 24 हिन्दी की पत्रिकाएं हैं। हालांकि आंकड़े उनके पुराने आंकड़ों के आधार पर है। परन्तु फिर भी पता लगाने पर पाया गया कि इन 24 पत्रिकाओं में से ज्यादातर बन्द हो चुके हैं। अतः अब यह मानकर चलना चाहिए कि यहां हिन्दी की पत्रिकाओं की संख्या दिन प्रतिदिन घटती चली जा रही है। वर्तमान नेपाल सरकार का हिन्दी के प्रति द्वेषपूर्ण नज़रिए का पता इसी बात से चल जाता है कि वहां के सरकारी पत्र गोरखा जिसमें करीब बीस भाषाओं (आंकड़े स्पष्ट नहीं) के प्रकाशन के लिए स्थान दिया गया है। लेकिन नेपाली के साथ सबसे ज्यादा सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग किए जाने वाले हिन्दी के लिए स्थान ही नहीं है। हालांकि हिन्दी को गोर्खापत्र में स्थान दिलाये जाने को लेकर यहां के हिन्दी प्रेमी विद्वानों ने काफी प्रयास भी किए, परन्तु कोई सुखद परिणाम नहीं निकल सका। कहने के लिए तो नेपाल के काठमाण्डू में विश्व भाषा कैम्पस है। जहां विदेशी भाषाओं की पढ़ाई होती है, पर विडम्बना देखिए कि यहां हिन्दी की पढ़ाई नहीं होती। पूछने पर बताया जाता है कि हिन्दी तो सभी को आती है, फिर उसे पढ़ाने की क्या जरूरत।

भाषा हमारे मन–मस्तिष्क में किस तरह अपनी पैठ बनाती है, इसका उदाहरण मुझे एक ऑटो–रिक्शा वाले से सीखने को मिला। जब मैं सोनाली (भारतीय सीमा) के लिए भैरहवा से आ रहा था, तो नेपाल सीमा पर एक कस्टम ऑफिस बना हुआ है। जिसे नेपाली में भंसार कहते हैं। मैंने ऑटो वाले से पूछा कि–यह क्या है? उसने बताया यह कस्टम ऑफिस है, जिसे हम भन्सार कहते हैं। फिर उसने मुझसे ही पूछ लिया कि आपके यहां इसे क्या कहते हैं? मैंने कहा कस्टम ऑफिस। फिर उसने कहा नहीं आप की भाषा में क्या कहते हैं। मैंने दिमाग पर जोर डाला कि इसे क्या कहते हैं? क्या कहते हैं? लेकिन काफी जोर डालने पर भी मुझे याद नहीं आया कि कस्टम को हिन्दी में क्या कहते हैं। हालांकि मुझे झेंप भी महसूस हुई। पर अंग्रेजी भाषा के

समाज में बढ़ते प्रयोग के आगे आज मैं इसका उत्तर ना दे सका।

नेपाल में बोलचाल और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी जैसे समृद्ध है उसी प्रकार यहां की साहित्यिक रचनात्मकता की एक समृद्ध परम्परा रही है। जो कुक्करिपा से होते हुए आज भी दिन प्रतिदिन आगे बढ़ती चली जा रही है।

हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल के अनेक सिद्ध नाथ रचनाकार नेपाल के निवासी या उससे सम्बन्धित थे। मध्यकाल में नेपाल में रचित अनेक नाटकों, शिलालेखों तथा सरकारी अभिलेखों की भाषा हिन्दी है। आज भी नेपाल में हिन्दी का बहुत बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। नेपाल में हिन्दी साहित्य को कोई प्रोत्साहन विशेष रूप से नहीं मिल पा रहा है। इसके बावजूद भी यहां के लेखक, विचार निःस्वार्थ भाव से हिन्दी की सेवा में लगे हुए हैं। जिनका विस्तृत विवेचन यहां सम्भव नहीं है। फिर भी यहां डॉ० संजीता वर्मा (विभागाध्यक्षा हिन्दी, त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमाण्डू), डॉ० श्वेता दीप्ति मैम (त्रि० वि० का०), राजेश्वर नेपाली जी, डॉ० सूर्यनाथ गोप, रमन पाण्डे जी आदि विद्वानों व बुद्धिजीवियों का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। राजनैतिक कारणों से नेपाल में हिन्दी लेखन और उसकी परम्परा को आगे बढ़ाने के कारण यहां सामाजिक खतरा बराबर बना रहता है। इसके बावजूद तमाम लेखक–लेखिका इसकी परवाह ना करते हुए साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक स्तर पर हिन्दी के लिए बराबर खड़े नजर आते हैं।

हालांकि नेपाल के शिक्षित और कट्टर नेपाली राजनैतिक मुद्दों के कारण हिन्दी से चिढ़ते हैं। ये इसका प्रयोग किसी भारतीय के सामने नहीं करना चाहते हैं, जबकि उन्हें अच्छे से हिन्दी आती है। जिसकी एक कड़ी यह भी है कि नेपाली और हिन्दी भाषा में बहुधा समानता है। नेपाल में हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित है। ऐसे में अगर हिन्दी को भी नेपाल में फलने–फूलने का मौका दिया गया तो इससे नेपाली भाषा के अस्तित्व पर संकट आने की सम्भावना है। इसकी तुलना में फिर भी थोड़ा कम पढ़े–लिखे पहाड़ी नेपाली जिनमें कट्टरता (भाषा को लेकर) नहीं है। बेझिझक हिन्दी का प्रयोग ना केवल भारतीयों के साथ करते हैं। अपितु आपसी बातचीत में भी इसका प्रयोग अपने आप ही झलकने लगता है।

भाषा प्रयोग की दृष्टि से देखा जाए तो भारत के बाद सर्वाधिक हिन्दी के प्रयोग की बात जब भी आती है, तो हमारे सामने सबसे पहले मॉरीशस और उसके बाद फिजी आदि देशों का नाम लिया जाता है। परन्तु सत्य तो यह है कि सम्पर्क भाषा और भाषा प्रयोग के आधार पर यदि देखा जाए तो नेपाल ही भारत के बाद सबसे अधिक हिन्दी का प्रयोग करता है। हालांकि नेपाली सरकारी आंकड़ों में जानबूझकर हिन्दी को सम्मिलित नहीं किया जाता। परन्तु वास्तविकता को हम नकार नहीं सकते और नेपाल हिन्दी प्रयोग में भारत के बाद दूसरे नम्बर पर आता है, इस बात से भी मुंह नहीं फेरा जा सकता। इतना कुछ होने के बावजूद सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, समानताओं के बाद भी आज तक एक भी विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन नेपाल में नहीं किया जा सका। यह अत्यन्त दुख और चिन्ता का विषय है। वहां के कई हिन्दी उत्साही विद्वान लोग इसके लिए प्रयास कर चुके हैं, फिर भी अभी तक कोई उम्मीद की किरण दिखाई नजर नहीं आ रही है।

❒❒❒

हिंदी सिनेमा की भाषा : कल, आज और कल

–डॉ. अनिता देवी

वर्तमान समय में सिनेमा से अभिप्राय थियेटर में बैठकर देखी जाने वाली फिल्मों से लेकर नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो और डिज्नी हॉट स्टार आदि ओटीटी प्लेटफार्म पर प्रसारित होने वाली फिल्मों, वेबसीरीज, धारावाहिक तथा अन्य फिल्मों से है। आरम्भ से लेकर आज तक सिनेमा की विषय–वस्तु और उसकी भाषा में निरंतर बदलाव देखने को मिलता है। यह बदलाव समाज को प्रभावित करता है। अतः सिनेमा की विषय–वस्तु और भाषा को लेकर लगातार प्रश्न उठते हैं।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि हिंदी फिल्मों पर यह आरोप लगाया जाता है कि अन्य भाषाओं तथा क्षेत्रीय बोलियों के अतिशय प्रयोग से फिल्मों की भाषा खिचड़ी भाषा बनती जा रही है। वेबसिरिज में गालियों के अत्यधिक प्रयोग को लेकर भी कहा जा रहा है कि क्या इस तरह के भाषिक प्रयोग उचित हैं? इसलिए अतीत से लेकर वर्तमान तक हिंदी सिनेमा की भाषा में क्या–क्या परिवर्तन आए और क्यों आए, तथा हिंदी सिनेमा की भाषा कैसी होनी चाहिए आदि प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास इस शोध के माध्यम से किया है।

बीज शब्द – हिंदी सिनेमा, छाया चित्र, मूक फिल्म, भौगोलिक, भाषा।

परिचय : हिंदी सिनेमा न केवल हिंदी क्षेत्र का बल्कि सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करता है। भारत एक विविधताओं से भरा हुआ देश है। यह विविधता न केवल भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से, बल्कि भाषाई दृष्टि से भी है। यहाँ प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा और बोलियां हैं। "कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी।"[1] ये कहावत भारत के सन्दर्भ में मशहूर है। यह विविधता हिंदी भाषा में भी मिलती है, हिंदी भाषा भी अनेक बोलियों का समूह है। आज हिंदी भाषा विश्व में सर्वाधिक बोलने वाली भाषाओं में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। इसका श्रेय कुछ–कुछ हिंदी सिनेमा को भी जाता है क्योंकि भारत में सबसे अधिक हिंदी फिल्में बनती हैं और ये फिल्में न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी देखी तथा पसंद

की जाती हैं। व्यक्ति कहीं भी जाकर रहे, भाषा उसके साथ ही जाती है, उसके सोचने और विचारने का माध्यम उसकी अपनी भाषा ही होती है। "मनुष्य की भाषा सदा ही उसके साथ रहती है, न केवल उसकी वाणी में अपितु उसके विचारों और सपनों में भी।"[2] प्रवासी भारतीय भी विदेशी धरती पर रहकर हिंदी की फिल्में देखते और पसंद करते हैं। आज हिंदी सिनेमा पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बना चुका है।

भारत में सिनेमा का प्रारंभ 1896 में छायाचित्रों के प्रदर्शन के साथ हुआ। ''जिन लोगों ने इन चित्रों को देखा, वे चकित हुए बिना न रह सके।''[3] इन फिल्मों में लोगों ने पहली बार दृ श्यों को गतिशील शैली में देखा था। इन चित्रों की भी अपनी भाषा थी जो लागों को अपनी ओर खींच रही थी। कहते हैं ''एक चित्र एक सहस्र शब्दों से अधिक मूल्यवान है तो निश्चय ही एक फिल्म एक सहस्र चित्रों से अधिक गुणवान है।''[4] सिनेमा दृश्य माध्यम है शायद इसलिए शुरू से ही इसके प्रति लोगों का एक खास आकर्षण रहा है। 1931 में जब 'आलमआरा' फिल्म रिलीज हुई तो उसको देखने के लिए हजारों लोगों का हुजूम एक साथ उमड़ा था और आज भी ऐसा ही होता है। छायाचित्रों के बाद भारतीय स्थलों पर बनी फिल्मों के शो भी मुंबई और कोलकाता में हुए, इन प्रयासों को मौलिक सिनेमा का आरंभिक चरण कहा जा सकता है और इस चरण में सिनेमा की भाषा संवाद नहीं बल्कि दृश्य होते थे, दृश्यों के माध्यम से लोग इन फिल्मों को समझते थे। उसके उपरांत भारत में मूक फिल्मों का आरंभ होता है। यह घटना 1913 की है, जब भारत में 'राजा हरिश्चंद्र' नामक पहली मूक फिल्म बनी, मूक फिल्म का अर्थ है– गूंगी फिल्म, जिसमें पात्र मुंह से कुछ नहीं बोलते लेकिन संकेतों से, मुंह के हाव– भाव से, शारीरिक अंगों की मुद्राओं और भंगिमाओं से, चाल–ढाल आदि से घटनाओं को दर्शाते थे। इसके अतिरिक्त मूक फिल्मों में अंग्रेजी तथा अन्य प्रादेशिक भाषा में टाइटल और सब–टाइटल दिए जाते थे। "सब–टाइटल साधारणतः चार भाषाओं में होते थे– अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी और उर्दू। कभी–कभी गुजराती या हिंदी का स्थान मराठी, बांग्ला या तमिल ले लेती थी। कई सिनेमा घरों में कमेंटेटर होते थे। वे पर्दे के पास खड़े रहते थे तथा पर्दे पर चल रही घटनाओं को माइक पर समझाते थे। मूल चरित्र के संवाद भी बोलते थे।"[4] मूक फिल्मों में तबला, हारमोनियम, सारंगी आदि की ध्वनियों का प्रयोग कर संवादों की कमी को पूरा किया जाता था। मूक फिल्मों को देखकर लगता है कि सिनेमा में संवाद रूपी भाषा तत्व उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना की अभिव्यक्ति के अन्य माध्यमों में। अर्थात हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सिनेमा में दृश्य भी अभिव्यंजना का साधन बनते हैं। वहां पात्र नहीं दृश्य बोलते हैं। "शब्द, वाक्य और संवाद साहित्य की भाषा के अंग होते हैं, सिनेमा की भाषा में इनके अलावा भी बहुत कुछ होता है जिनके माध्यम से किसी फिल्म का निर्देशक दर्शकों तक संदेशों का सम्प्रेषण करता है।''[5]

सिनेमा में साहित्य की भांति कथा कहने और सुनने के लिए एक पाठक नहीं बल्कि एक दर्शक होता है। यहां अभिनेता की वेशभूषा, उनका रहन–सहन, गीत–संगीत, प्रकाश–व्यवस्था, कैमरे का एंगल आदि भी भाषा का ही काम करते हैं। संप्रेषणीयता की दृष्टि से दृश्य माध्यम इसलिए अधिक प्रभावशाली माना गया है क्योंकि इन सभी साधनों से हम फिल्म के सन्देश को समझ लेते हैं। इस संदर्भ में सुरभि रितेश लिखते हैं ''सिनेमा एक दृश्य माध्यम है, चाहे यह भी कथा कहने का एक माध्यम क्यों न हो, भाषा, संवाद आदि उस रूप में इसके प्राथमिक

आवश्यकता नहीं है, जिस रूप में दृश्य।''[6] इस संदर्भ में 1964 में सत्यजीत रे द्वारा बनाई गई फिल्म 'दो' का जिक्र करना प्रासंगिक हो जाता है। यह एक ऐसी मूक फिल्म है जो मूक होते हुए भी दर्शकों पर अमिट प्रभाव छोड़ती है, इस फिल्म में एक बालक आलीशान घर की छत्त पर, हाथ में महंगी घड़ी पहने खड़ा है और कोल्ड ड्रिंक पीता हुआ जाती हुई कार को टाटा करता है, उसके पास महंगे–महंगे खिलौने हैं। दर्शक समझ जाता है कि बालक अमीर बाप का बेटा है। दूसरा बालक फटे–पुराने कपड़ों में, नंगे पैर, छोटे–मोटे, टूटे–फूटे खिलौने जैसे– पतंग, बांसुरी, ढपली आदि के साथ अपनी झोपड़ी के पास खेल रहा है। दर्शक समझ जाता है कि बालक बहुत गरीब है। गरीब बालक जब पतंग उड़ाता है तो अमीर बालक अपनी खिलौना बंदूक से गोली मारकर पतंग के टुकड़े–टुकड़े कर देता है। गरीब बालक बांसुरी की प्यारी–सी धुन बजाकर ही खुश है। लेकिन अमीर बालक अपने कीमती खिलौनों को लात मारकर अपनी निराशा जाहिर करता है। इस प्रकार इस फिल्म में न कोई संवाद है और न ही कोई गीत, लेकिन दृश्यों के माध्यम से दर्शक समझ जाता है कि निर्देशक फिल्म से क्या संदेश देना चाहता है। चार्ली चैपलिन और मिस्टर बीन फिल्मों को भी देखा जा सकता है। ये दोनों फिल्में मूक हैं लेकिन किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं, आज भी दुनिया में लोग इनके दीवाने हैं और इन फिल्मों को बार–बार देखते हैं। ऐसे में फिल्म को लेकर दर्शक की दृष्टि महत्त्वपूर्ण हो जाती है। फ्रांसीसी निर्माता–निर्देशक आस्त्रुक लिखते हैं ''लिखे हुए शब्द की तरह फिल्म भी एक भाषा है, जिसे लिखने और पढ़ने के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।''[7] लेकिन इसका तात्पर्य यह कतई नहीं है कि फिल्मों को भाषा की आवश्यकता नहीं है। जब हम मूक फिल्मों को देखते हैं तो सब कुछ समझते हुए भी इन फिल्मों में एक कमी–सी नजर आती है, फिल्म अधूरी–अधूरी सी लगती है। ऐसा संवाद न होने के कारण लगता है। फिल्मों में संवाद और गीत दर्शक को रोमांचित और आनंदित करते हैं।

सवाक फिल्मों की शुरुआत 1931 में 'आलम आरा' फिल्म से हुई। फिल्म के निर्देशक अर्देशिर ईरानी हैं। इस कहानी को जोसेफ डेविड मुंशी जहीर ने लिखा। बोलती फिल्म कैसी होगी? यह देखने के लिए लोग उत्सुक थे। इस पहली बोलती फिल्म की भाषा को न तो शुद्ध हिंदी कहा जा सकता है और न ही शुद्ध उर्दू। यह मिलीजुली हिंदुस्तानी भाषा थी जिसका प्रयोग हिंदुस्तान में होता था। पारसी शैली के प्रसिद्ध नाटक लेखक नारायण प्रसाद बेताब ने इसकी भाषा को 'दूध में घुली मिश्री'[8] कहा था। आलम आरा का गीत– ''दे दे खुदा के नाम पे प्यारे, ताकत है गर देने की। चाहे अगर तो मांग ले मुझसे, हिम्मत है गर लेने की।''[9] बहुत प्रसिद्ध हुआ, संवादों में भी उर्दूपन है– ''बेटी मेरी नजर का क्या भरोसा तू देख आसमान पर सुर्खी नजर आ रही है।''[10] फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल ने 'आलम आरा' फिल्म पर कहा है, ''यह सिर्फ एक सवाक फिल्म नहीं थी बल्कि यह बोलने और गाने वाली फिल्म थी जिसमें बोलना कम और गाना अधिक था।''[11] गीतों के अत्यधिक प्रयोग का कारण पारसी शैली है। संस्कृतनिष्ट हिंदी का प्रयोग भी इस समय की फिल्मों में हुआ है। इस संदर्भ में 'चंडीदास' फिल्म के गीत को देखा जा सकता है– "प्रेम सखा हो, प्रेम पड़ोसी। प्रेम में सुख का सांस, प्रेम के संग बिताएंगे जीवन, प्रेम ही प्राणाधार। प्रेम सुधा से स्नान करूंगी, प्रेम से होगा श्रृंगार। प्रेम ही कर्म है, प्रेम ही धर्म है, प्रेम ही सत्य विचार।"[12]

संवादों की भाषा भी संस्कृतनिष्ट हिंदी है– अभिनेत्री : मंदिर के आसपास बहुत गरीब लोग रहते हैं, ऐसे छोटे काम के लिए उन्हें आज्ञा दीजिए। यह काम आपके लायक नहीं क्योंकि आप हिंदू जाति के शिरोमणि हैं, ब्राह्मण हैं और आचार्य जी के बाद इस मंदिर के सबसे बड़े आदमी हैं।

अभिनेता : ''रानी बड़ा–छोटा, उच्च–नीच यह सब समाज के बनाए हुए शब्द हैं। मैं ईश्वर को जगपिता और जग के प्राणियों को उसकी संतान समझता हूं। अगर यह समझना मेरी भूल है तो मैं इस भूल के स्वप्न से कभी जागना नहीं चाहता।''[13] पौराणिक कथाओं/देवी–देवताओं पर बनी फिल्मों में भी संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है।

सन 1990 के उपरांत हिंदी फिल्मों पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव बढ़ता हुआ दिखा है। चाहे फिल्म का नाम हो, चाहे फिल्मों में फिल्माए गए गीत हो या संवाद, उनमें अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है। वर्तमान में तो हिंदी फिल्मों की पटकथाएँ अंग्रेजी में लिखी जा रही हैं। माई नेम इज खान, लन्दन ड्रीम, पीके, मुन्ना भाई एमबीएस, हेट स्टोरीएज, वीरे दी वैडिंग, गैंग्स ऑफ वासेपुर, वेलकम, रेस टू, सुपर हीरो, डर्टी पिक्चर, वेलकम टू न्यूयॉर्क आदि अंग्रेजी में फिल्मों के नामों की सूची बहुत लंबी है। 2018 के बाद आई फिल्मों के नामों को देंखे तो ऐसी हिंदी फिल्में ज्यादा है जिनके नाम अंग्रेजी में हैं। निम्न तालिका में वर्षों के अनुसार ऐसी फिल्मों का आंकड़ा दिया गया है जिनका नाम अंग्रेजी/हिंगलिश में रखा गया है। विवरण देखा जा सकता है –

वर्ष	फिल्मों की संख्या	अंग्रेजी/हिंगलिश में
2018	113	54
2019	69	31
2020	29	16
2021	17	14
2022	32	18

फिल्म निर्देशक की कोशिश होती है कि फिल्म वास्तविक लगे। इसके लिए भाषा और लोकेशन महत्त्वपूर्ण उपकरण होते हैं। जब निर्देशक भाषा का चयन करता है तो वह फिल्म के विषय, पात्रों की पृष्ठभूमि और वर्ग को भी ध्यान में रखता है क्योंकि फिल्म में अभिनेता–अभिनेत्री अपने वर्ग और क्षेत्र की भाषा और लहजे में बोलेगा तभी वह दर्शकों के दिल में उतर पाएगा। तीसरी कसम में अभिनेता राजकपूर द्वारा 'इस्स...' शब्द का बार–बार प्रयोग करना इसी क्षेत्रीय भाषा और लहजे को दर्शाता है। इसलिए 'मुगले–ए–आजम' (उर्दू) और 'जिस देश में गंगा बहती हैं' (हिंदी) फिल्मों के एक ही साल में बनने के उपरांत इनकी भाषा में अंतर पाया जाता है। मदर–इण्डिया फिल्म हिंदी सिनेमा का बेजोड़ नगीना है जिसमें 'पी के घर आज प्यारी दुल्हनियां चली' अर्थात गीत और भाषा में उत्तरी भारत में बोली जाने वाली बोलियों का प्रभाव है।

वर्तमान में हिंदी फिल्मों में भारतीय भाषाओं (मराठी, गुजराती और पंजाबी आदि) तथा क्षेत्रीय भाषाओं (हरियाणवी, भोजपुरी, अवधी, बुंदेली आदि) का प्रयोग बहुत हुआ है। इस प्रयोग ने वर्षों से चले आ रहे भाषिक ट्रेंड को बदला है। ऐसे प्रयोगों से हिंदी भाषा का भी फायदा हुआ है। उसका शब्द भंडार पहले से अधिक समृद्ध हुआ है तथा उसके प्रयोग क्षेत्र का भी विस्तार हुआ

है। ऐसी फिल्मों को दर्शकों ने भी खूब पसंद किया है। कंगना रनौत का हरियाणवी संवाद देखते–देखते लोगों की जुबान पर चढ़ गया था– "म्हारी छोरियां कै छोरों से कम हैं।"[14] तथा "मैं घणी बावली होगी"[15] गीत को भी प्रसंशा मिली। 'पान सिंह तोमर' फिल्म में ब्रज भाषा के शब्द और लहजा फिल्म की भाषा को विशेष बनाते हैं– "काहे नहीं चली गोली, कंधे पर लगा बट्टा, चल पड़ी गोली"[16] 'बधाई हो' फिल्म में सुरेखा सीकरी द्वारा बोले गए खड़ी बोली के संवाद और उसका अभिनय फिल्म की प्रसिद्धि का कारण बने। दबंग, पीके, गैंग्स ऑफ वासेपुर, बाजीराव मस्तानी, पृथ्वीराज चौहान, पेडमैन, उड़ता पंजाब आदि फिल्मों में भारत के अलग–अलग परिवेश से संबद्ध भाषाओं का प्रयोग हुआ है। दो बीघा जमीन (भोजपुरी), लगान (अवधी), तन्नु वेड्स मनु (पंजाबी), तन्नु वेड्स मनु रिटर्न्स (हरियाणवी), माजा मा (गुजराती) आदि फिल्में हिंदी को विश्व स्तर पर पहचान दिला रही हैं।

साहित्य पर आधारित हिंदी फिल्में भी बनी। जैसे– उसने कहा था (1960), गोदान (1962), रजनीगंधा (1964), गाइड (1965), गबन (1966), सारा आकाश (1969), आदि। इन फिल्मों की भाषा साहित्यिक हिंदी के करीब है। इसे शुद्ध हिंदी शैली कहा जा सकता है। फिल्मों के माध्यम से हिंदी शैलियों का निर्माण भी हुआ है। 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' फिल्म में बोली गई हिंदी शुद्ध हिंदी नहीं है बल्कि हिंदी की मुंबइयां शैली है जिसका प्रयोग मुंबई में होता है। हाल ही में आई 'पुष्पा' फिल्म की हिंदी भी दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रभावस्वरूप एक नई शैली का निर्माण करती है। इसके अतिरिक्त निर्देशक व्यावसायिक दृष्टि से भी सोचता है क्योंकि उसे फिल्म से मुनाफा भी कमाना होता है।

आज इंटरनेट और तकनीकी विकास ने पूरे विश्व को एक गाँव में तब्दील कर दिया है। भारत भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत को महत्त्व देता है, नई शिक्षा नीति में भी भारतीय भाषाओं को महत्त्व दिया गया है। इस दृष्टि से हिंदी सिनेमा एक कदम आगे है, वह सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चल रहा है और भारतीय भाषाओं के बीच सौहार्द पैदा कर रहा है। हमारा विश्वास है कि भविष्य में यह सौहार्द और बढ़ेगा।

अनुसंधान उद्देश्य : इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हिंदी सिनेमा की मूक फिल्मों से लेकर आज तक की प्रमुख फिल्मों का भाषिक दृष्टि से अध्ययन कर हिंदी सिनेमा की भाषा में आए बदलावों की पड़ताल कर, उसके परिणामों से अवगत कराया है। इसके अतिरिक्त सिनेमा की भाषा कैसी हो ? प्रश्न के उत्तर को जानने और समझने का प्रयास भी किया गया है। भाषा किसी भी समाज या देश की संस्कृति का अनिवार्य तत्त्व होती है, इस दृष्टिकोण से भी हिंदी सिनेमा की भाषा को देखा गया है।

अनुसंधान पद्धति : इस शोध की प्रणाली मुख्य रूप से ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक रही है।

निष्कर्ष / सिफारिशें :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साहित्य की तरह सिनेमा भी अपने समय और समाज का दर्पण होता है। सिनेमा में समाज की समस्याओं और संघर्ष को आवाज मिलती है, अगर समाज बदलेगा तो सिनेमा की भाषा भी बदलेगी। इसलिए सिनेमा के आरम्भ से लेकर आज तक हिंदी सिनेमा की भाषा निरंतर परिवर्तित होती रही है और भविष्य में भी होगी। भाषा का कोई भी रूप अंतिम नहीं होता, जो रूप भाषा का कल था वह आज नहीं है और जैसा आज है वैसा कल नहीं रहेगा। एक तरफ जहाँ समाज की भाषा सिनेमा की भाषा बनती है तो दूसरी तरफ समाज भी सिनेमा से भाषा सीखता है।

हिंदी सिनेमा की पहुँच विदेशों तक है इसलिए सिनेमा ने हिंदी भाषा और हिंदी समूह की बोलियों को पूरे विश्व में पहचान दिलाई है। हिंदी फिल्मों में विभिन्न भाषाओं एवं क्षेत्रीय बोलियों के प्रयोग से हिंदी भाषा बहता नीर बनी है, कूप जल नहीं। इस तरह के भाषिक प्रयोग ने जहाँ एक तरफ हिंदी फिल्मों के दर्शकों में वृद्धि की है तो वहाँ दूसरी तरफ हिंदी भाषा को समृद्ध भी किया है, इससे भाषाएँ जीवंत भी बनी हैं। लेकिन वेब सीरिज की भाषा को देखते हुए हम उम्मीद करते हैं कि सिनेमा को देश की भाषा और संस्कृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए यह तय करना चाहिए कि उसे अपने दर्शकों को कैसी भाषा सिखानी है क्योंकि युवाओं के लिए सिनेमा भाषा सीखने का माध्यम भी है।

सीमाएं : भारतीय सिनेमा और हिंदी फिल्मों को ही शोध का आधार बनाया गया है–

सन्दर्भ :

1. **http://www.knowledgesagar.com/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%87-%E0%A4%8F%E0 %A4%B5%E0%A4%82-%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%81/**
2. मिश्र, विद्या निवास, भारतीय भाषा शास्त्रीय चिंतन, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या–3
3. श्रीवास्तव, संजीव, हिंदी सिनेमा का इतिहास, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पृष्ठ संख्या–2
4. शर्मा, पंकज (सं) , चौधरी, अश्विनी– गूंगा नहीं था वह दौर, हिंदी सिनेमा की यात्रा, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या–13
5. अरुणकुमार, http://www.lokmanch-in/?p=959
6. संरक्षक– कुमार, प्रभात, समसामयिक सृजन, अक्टूबर–मार्च 2012–13, पृष्ठ संख्या– 10
7. सुधांशु, अनिरुद्ध कुमार – तरुण, अनुज कुमार, हिंदी सिनेमाः एक अध्ययन, श्री नटराज प्रकाशन, साउथ गमरी एक्सटेंशन, दिल्ली पृष्ठ संख्या– 9
8. https://www.youtube.com/watch?v=eddY4_8Odas&t=10s
9. https://www.youtube.com/watch?v=1zLJ3cQBT2w
10. https://www.youtube.com/watch?v=1zLJ3cQBT2w
11. 1. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86% E0%A4%B2%E0%A4 % AE% E0%A4%86%E0%A4%B0% E0%A4%BE_(1931_%E0%A4%AB %E0%A4%BC% E0%A4%BF%E0% 4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AE)
12. **https://www.youtube.com/watch?v=05bveXPTMSQ&t=664s**
13. **https://www.youtube.com/watch?v=05bveXPTMSQ&t=664s**
14. तन्नु वेड्स मनु रिटर्न्स, आनंद एल.राय
15. पान सिंह तोमर, निर्देशक– तिग्मांशु धुलिया

(पिछले वर्षों के दौरान देखी गई अनेक फिल्में)

❑❑❑

सहायक प्रोफेसर मैत्रेयी विश्वविद्यालय, मोबाइल नं – 9899840037 ईमेल– anita.bsd@gmail.com
1452, नीलकंठ अपार्टमेंट, सेक्टर–13, रोहिणी, दिल्ली–85

अज्ञेय के निबंधों में भाषायी चिंतन

–वागीश शुक्ल

स्वभावतः विद्रोही और अलीकी अज्ञेय ने अपने लेखन से भारतीय भाषा और साहित्य को समृद्धि प्रदान की। उनका लेखन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपरा और भाषा से सना हुआ है। अज्ञेय ने भाषा, संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, समाज, इतिहास बोध, जीवन–मूल्य, भारतीयता जैसे विषयों पर अपने निबंधों में गंभीर चिंतन किया है। उनका भाषायी चिंतन अपने आप में विविध पहलुओं को समेटे हुए है। भाषा संबंधी अपने निबंधों मसलन 'बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा', 'भाषा और अस्मिता', 'भाषा और समाज', 'रचनात्मक भाषा और संप्रेषण की समस्याएं', 'सांस्कृतिक समग्रता : भाषिक वैविध्य', 'यथार्थ सम्प्रेषण : कथा–भाषा की समस्याएं' में उन्होंने बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा, मातृभाषा, भाषा और समाज, भाषा और राष्ट्र, भाषायी अस्मिता, भाषा और संस्कृति, भाषा और व्यक्ति, भाषा और लेखक, भाषा और परिवेश जैसे पहलुओं पर गहराई से चिंतन किया है।

बीज शब्द : भाषा, बोली, लिपि, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, अस्मिता, परिवेश, परंपरा, संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीयता

भारत में राष्ट्रभाषा को लेकर बहस और विवाद आजादी की लड़ाई के दिनों से लेकर वर्तमान समय तक किसी न किसी रूप में जारी है। हिन्दी और अहिन्दी भाषी प्रदेशों में राष्ट्रभाषा संबंधी प्रश्न उठते रहे हैं। राष्ट्रभाषा के पक्ष–विपक्ष में विभिन्न मत मौजूद हैं। आजादी के नायकों से लेकर आजादी के बाद के विचारकों ने राष्ट्रभाषा को लेकर अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। अज्ञेय राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा को एक न मानते हुए भी उसमें एक संबंध जरूर मानते हैं।

मूल आलेख : बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय ने कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, आलोचना, डायरी, यात्रा–वृत्तान्त, संस्मरण, सम्पादन, अनुवाद, व्यवस्थापन, पत्रकारिता आदि विधाओं में अपनी मजबूत लेखनी चलाई है। स्वभावतः विद्रोही और अलीकी अज्ञेय ने अपने लेखन से भारतीय भाषा और साहित्य को समृद्धि प्रदान की। उनका लेखन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपरा और भाषा से सना हुआ है। अज्ञेय ने भाषा, संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, समाज, इतिहास बोध, जीवन–मूल्य, भारतीयता जैसे विषयों पर अपने निबंधों में गंभीर चिंतन किया है। उनका भाषायी चिंतन अपने आप में विविध पहलुओं को समेटे हुए है। अज्ञेय के लिए भाषा का प्रश्न सृजन की सिद्धि का प्रश्न है। ''मैं उन व्यक्तियों में से हूँ – और ऐसे व्यक्तियों की संख्या शायद दिन–प्रतिदिन घटती

जा रही है जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं।''[1] भाषा संबंधी अपने निबंधों मसलन 'बोली–भाषा–राष्ट्रभाषा', 'भाषा और अस्मिता', 'भाषा और समाज', 'रचनात्मक भाषा और संप्रेषण की समस्याएं', 'सांस्कृतिक समग्रता : भाषिक वैविध्य', 'यथार्थ सम्प्रेषण : कथा–भाषा की समस्याएं' में उन्होंने बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा, मातृभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, भाषा और समाज, भाषा और राष्ट्र, भाषायी अस्मिता, भाषा और संस्कृति, भाषा और व्यक्ति, भाषा और लेखक, भाषा और परिवेश, भाषायी अवमूल्यन, लिपि जैसे पहलुओं पर गहराई से चिंतन किया है।

अज्ञेय दूसरी भाषा की तुलना में मातृभाषा में सृजन को प्राथमिकता देते हैं। अपनी मातृभाषा में ही लेखक कालजयी सृजन कर सकता है, जहां उसका सम्पूर्ण पक्ष उभरकर सामने आता है, ''जब मैं यह कहता हूं कि अपनी भाषा में लिखी गई रचना लेखक के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति होती है तो उससे मेरा यह भी मतलब होता है कि उस व्यक्तित्व की अच्छाइयां और बुराइयां दोनों उसमें प्रतिबिंबित होती हैं।''[2] अपनी भाषा की अवहेलना करके उसे कमतर आंकने की प्रवृत्ति पर गहरी चोट करते हैं। कुछ लोग अंग्रेजी के जानकार होकर खुद को श्रेष्ठ और हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को हेय समझने की भूल करते हैं। अंग्रेजी व अन्य विदेशी भाषा सीखने के लिए कड़ा अभ्यास करते हैं, उसके प्रयोग के माध्यम से पाश्चात्य एवं उच्च वर्ग के खांचे में फिट बैठने का ढोंग करते हैं। ऐसे लोग अपनी मातृभाषा के व्यवहार के प्रति न केवल शिथिल होते हैं अपितु उसके प्रति चलताऊ नज़रिया रखते हैं। अज्ञेय इस पर तंज करते हुए बोलते हैं, ''अपनी भाषा को तो लोग घर की मुर्गी दाल बराबर समझते हैं, कहते हैं वह तो अपने–आप आ ही जाती है।''[3] अज्ञेय का स्पष्ट मानना है कि एक समाज के तौर पर हमें अपनी इस सोच को बदलना होगा। अपनी भाषा में हम तभी बेहतर शब्द व्यवहार कर पाएंगें, जब उसे भी सीखने का प्रयास करेंगें। अज्ञेय की यह चिंता पूरी तरह जायज है, जिसका परिणाम हम आज की अपनी युवा पीढ़ी में देख रहे हैं, जिसे अपनी मातृभाषा में लिखने–पढ़ने में शर्मिंदगी तो महसूस होती ही है, साथ ही सच्चाई यह भी है कि वह शुद्ध हिन्दी नहीं लिख पाती। वह अपने देशज शब्दों का अर्थ तक नहीं जान पाती। चिंता की बात यह है कि बहुत से लोग उसे जानने का प्रयास तक नहीं करते अपितु उसकी खिल्ली उड़ाकर मेट्रोपोलिटन कल्चर में फिट होने की गर्वानुभूति करते हैं।

अज्ञेय एक ऐसे शिक्षित मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए जो पाश्चात्य संस्कृति एवं भाषा से बहुत प्रभावित था, जहां अंग्रेजी बोलना गर्व की बात थी और हिन्दी का व्यवहार हेय समझा जाता था। मातृभाषा हिन्दी होने के बावजूद अज्ञेय बताते हैं कि–''मेरी पढ़ाई की शुरुआत हिन्दी में नहीं, अंग्रेजी से हुई, मेरे संस्कार अंग्रेजी के डाले गए क्योंकि उस जमाने में पढ़े–लिखे लोगों के घर में अंग्रेजी बोलना बड़े गर्व का विषय माना जाता था। इस प्रकार अगर कोई भी भाषा मुझे व्याकरण सम्मत ढंग से पढ़ाई गयी थी, तो वह थी अंग्रेजी।''[4] अंग्रेजी संस्कार में पले–बढ़े होने के बावजूद वह अपनी मातृभाषा हिंदी के प्रति बचपन से ही सजग थे। फिलीपीन पत्रकारों से बात करते हुए वह अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व और प्रेम प्रकट करते हुए कहते हैं कि, ''यह बात और है कि मैं अपनी भाषा सीखने से न चूका।''[5] यह हिन्दी के प्रति अज्ञेय का लगाव ही था कि उन्होंने अंग्रेजी परिवेश में होने के बावजूद हिन्दी पर अपनी पकड़ मजबूत की, जिसका

परिणाम रहा कि अज्ञेय का सबसे पहला उपन्यास अंग्रेजी में न होकर 'शेखर : एक जीवनी' हिन्दी में प्रकाशित हुआ। हिन्दी में अज्ञेय ने विपुल साहित्य का सृजन किया। अंग्रेजी को समृद्ध बताने और हिन्दी को क्षुद्र मानने की प्रवृत्ति पर चोट करते हुए लिखते हैं कि–''स्वयं इस लेखक को अपनी भाषा के प्रति अधीर होते पचास–एक वर्ष हो चलें हैं, और इस अधैर्य को उसने गद्य और पद्य दोनों में अनेक बार प्रकट भी किया है, लेकिन ऐसा उसने कभी नहीं पाया कि वह जो कुछ गहराई तथा तीव्रता के साथ अनुभव करता है या करने के लिए कृत संकल्प है उसके लिए उसकी भाषा अपर्याप्त या असमर्थ हुई है।''[6] कोई भी सृजन अपनी भाषा में ही उच्चता को प्राप्त करता है, दो भाषाओं पर पकड़ रखने वाले लेखक की भी कालजयी रचना अपनी मातृभाषा में ही फूटती है। अज्ञेय इस तथ्य को स्वीकारते हुए चुनौती भरे अंदाज में कहते हैं कि–''अपनी भाषा में ही मैं अपने को सबसे अच्छा अभिव्यक्त कर सकता हूं। और मेरा विश्वास है कि संसार–भर के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि किसी लेखक ने दो भाषाओं में रचना की हो और दोनों में उसका अधिकार और विश्वास बराबर रहा हो।''[7]

स्वाधीन मानस के लिए अपनी भाषा का संस्कार बहुत जरूरी है। अज्ञेय स्वाधीनता का गहरा सम्बन्ध भाषा से मानते हैं। जो समाज अपनी भाषा से अलग हो जाता है, उसे गुलाम बनाने में वक्त नहीं लगता है। अपनी भाषा के संस्कार में ही स्वतंत्र चिंतन संभव है। दूसरी भाषा पर मोहित होकर या उसे अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाकर हम कभी भी स्वाधीन नहीं हो सकतें हैं। भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है अपितु उससे हमारी अस्मिता जुड़ी होती है, उसमें हमारे मूल्य गुंथे होते हैं, हमारी संस्कृति का रेशा–रेशा उससे बुना होता है। भाषा का सवाल अपने आप में पहचान के सवाल से जुड़ा है इसलिए अपनी भाषा की तुलना में दूसरी भाषा को महत्ता प्रदान करना, स्वयं को खोना है। स्वाधीनता की प्रबल चेतना अपनी भाषा में ही मुखरित हो सकती है। 'भाषा और अस्मिता' विषयक निबंध में अज्ञेय भाषा और अस्मिता के जुड़े हुए तन्तुओं पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं– ''बहुत अधिक समय तक बड़े करूण भाव से, इस मिथ्या आशा से चिपटे रहें हैं कि एक परायी भाषा उन्हें सम्पूर्ण आत्माभिव्यक्ति का साधन दे सकती है। और इस मोह का, मोह–भंग का पूरा पुरस्कार या दंड आज मिल रहा है। कुछ थोड़े–से लोगों को परायी भाषा से चाहे जितने शब्द मिल जाएं, कोई समाज किसी परायी भाषा में नहीं जी सकता, जीना आरंभ भी नहीं कर सकता। और जब वह समाज साथ ही स्वतंत्रता के लिए और स्वतंत्रता में सम्पूर्ण जीवन के लिए संघर्ष कर रहा हो, तब तो परायी भाषा में जीने का प्रयत्न सफलता की और भी कम सम्भावना रखता है।''[8] अज्ञेय का स्पष्ट मानना है कि अपनी भाषा छोड़कर दूसरी भाषा को जीने वाला समाज कभी भी सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता है– ''किसी भी समाज को अनिवार्यतः अपनी भाषा में जीना होगा– नहीं तो उस की अस्मिता कुंठित ही होगी और उसमें आत्मबहिष्कार या अजनबियत के विकार प्रकट होंगें ही। हम जानते हैं कि अंग्रेजी–भाषी जगत् और स्वयं देश का अंग्रेजी–भाषी अंग इस बात को भाषागत मतान्धता कह कर उड़ा देना चाहेगा, लेकिन स्पष्ट है कि स्वयं उसकी राय ही बुनियादी तौर पर पूर्वग्रह–दूषित होगी। और उसके विरुद्ध सारे ऐतिहासिक अनुभव की दलीलें हैं– ऐसे प्रत्येक देश का अनुभव, जो कि भारत जैसी परिस्थितियों में गुजर रहा है, उनकी राय के विरुद्ध जाता है। फिलीपीन या इन्डोनेशिया का उदाहरण ताजा है।''[9] भाषा और उससे जुड़ी अस्मिता पर अज्ञेय कहते हैं कि,

''हमारा दृढ़ विश्वास है कि भाषा की, और बोलने वाले की अस्मिता को भाषा की देन, यह परिकल्पना सार्वभौम और सार्वकालिक है।''[10]

भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध होता है। किसी भी संस्कृति का आधार उसकी भाषा होती है, भाषा से व्यक्ति का संस्कार जुड़ा होता है। संस्कृति की निर्मिति भाषा से ही होती है। अज्ञेय 'भाषा और अस्मिता' सम्बन्धी निबंध में मानते हैं कि,''हम जो भाषा बोलते हैं उसके द्वारा हम वह संसार चुन लेते हैं जिसमें हम रहते हैं– या इसी बात को उलट कर यों कहें कि हम जो भाषा बोलते हैं उसके निमित्त से हम उस जीवन– व्यवस्था (ऋण) के द्वारा चुन लिए जाते हैं जिसके हम अंग हैं : चुन लिए जाते हैं, एक निर्दिष्ट स्थान और धर्म पा लेते हैं, उसे निबाहने को स्वतंत्र हो जाते हैं।''[11] संस्कृति और समाज को अज्ञेय अलग–अलग अवधारणाएं नहीं मानते अपितु भाषायी तन्तु से दोनों आपस में बंधे हुए हैं। इस बात को स्पष्ट करते हुए अज्ञेय 'भाषा और समाज' निबंध में लिखते हैं– ''संस्कृति एक व्यापक और दीर्घकालीन ढांचा है जिसके अन्दर हमारी समाज की भावना उदित होती है और रूप लेती है। समाज के साथ भाषा का सम्बन्ध भी मैं इसी संदर्भ में जोड़ता हूं। जैसे समाज कहने पर मैं संस्कृति की समग्र और सतत प्रक्रिया के किसी एक देश काल में बंधे हुए रूप को सामने लाता हूं उसी तरह समाज के साथ जब भाषा को जोड़ता हूं तो उसकी भी उसी काल सीमा के भीतर की अवस्था पर विचार करता हूं।''[12] भाषा किसी भी संस्कृति का सबसे मूलभूत अवयव है। संस्कृति की नींव से लेकर उसके शीर्ष तक की पहचान में भाषा सर्वाधिक समृद्ध और शक्तिशाली उपकरण है। किसी भी संस्कृति का विस्तार भाषा के बल पर ही होता है इसलिए ये एक तरफ जहां किसी संस्कृति के प्रसार में सहायक होती है, वहीं दूसरी संस्कृति के प्रति समभाव की भावना नहीं रख पाती। अज्ञेय इसे इस रूप में बयां करते हैं– ''भाषा संस्कृति का सर्वाधिक शक्तिशाली और समृद्ध उपकरण है, क्योंकि इस संगति और सम्बन्ध के बोध का सबसे महत्त्वपूर्ण वाहक है। निःसन्देह नकारात्मक ढंग से इस बात को यों भी कहा जा सकता है कि भाषा एक बहुत बड़ी विभाजक शक्ति हो सकती है। इस नकारात्मक शक्ति के उदाहरण ढूंढने के लिए हमें दूर भी नहीं जाना होगा। लेकिन यह नकारात्मक शक्ति एक संकटग्रस्त अस्मिता के बोध से ही उत्पन्न होती है। अस्मिता का यह बोध मूलभूत रूप से भाषा के साथ जुड़ा हुआ है और जीवित भाषा की उपज है।''[13] भाषा के बिना संस्कृति अधूरी है। भाषायी अस्मिता संस्कृति के प्रचार– प्रसार के लिए आवश्यक है। मानवता के विकास में भाषा का अमूल्य योगदान है। अज्ञेय भाषा को मानवीय संस्कृति की सबसे अमूल्य उपलब्धि मानते हुए लिखते हैं–''मानवीय संस्कृति की सबसे मूल्यवान उपलब्धि भाषा है और भाषा ही समाज जीवन का–मध्यवर्ती जीवन का सबसे अधिक मूल्यवान उपकरण है। भाषा सम्पन्न मानव जीव ही 'मानवीय मध्यवर्ती' होता है। भाषा के अविष्कार में मानवीय अस्मिता का अविष्कार होता है, उसकी सृष्टि होती है।''[14]

समाज का कोई भी व्यवहार भाषा के माध्यम से होता है। इसलिए भाषा का एक रूप प्रयोजनमूलक भी है, भिन्न–भिन्न प्रयोजनों के लिए भाषा का प्रयोग होता है। अज्ञेय भाषा के अप्रतिम साधक हैं इसलिए भाषा के अवमूल्यन को लेकर भी वह काफी चिंतित दिखाई देते हैं। शब्द व्यवहार की सतर्कता उनके लिए सबसे आवश्यक है। राजनीति, मीडिया और बाजार किस हद तक भाषा को प्रभावित करती है, इसे वह काफी बारीकी से समझ रहे थे। भाषायी अवमूल्यन

पर प्रकाश डालते हुए अज्ञेय लिखते हैं कि– ''भाषा की मुद्रा पर आज कई दिशाओं से दबाव पड़ रहा है और मुद्रा–स्फीति का संकट हर भाषा पर है। एक ओर राजनीति और शासन–तन्त्र की वे तरकीबें हैं जिनसे 'जन–मत' तैयार किया जाता है, दूसरी ओर व्यापार की वह अति–राजनीतिक और अतिनैतिक दुनिया है जो विज्ञापनों के द्वारा सामूहिक प्रतिक्रियाओं के ढांचे तैयार करने में जुटी हैं।''[15]

अज्ञेय सीधे तौर पर हिन्दी को राजभाषा बनाने की वकालत नहीं करते हैं परंतु इस बात पर बल देते हैं कि एक राष्ट्र और समाज के तौर पर अंग्रेजी को हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में बढ़ावा देना मुझे स्वीकार नहीं है। अंग्रेजी को हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं से श्रेष्ठ मानना भी उचित नहीं है। अंग्रेजी की जगह पर हिन्दी को स्वीकार किया जाय या कोई अन्य भारतीय भाषा। अज्ञेय अपरोक्ष रूप से कहते हैं कि निरपेक्ष ढंग से यदि इस बात का मूल्यांकन किया जाए कि कौन सी भाषा ऐसी स्थिति में अंग्रेजी का स्थान लेने में सबसे सटीक होगी, तो निश्चित ही हिन्दी का नाम सबसे ऊपर आएगा, ''मैं हिन्दी को राजभाषा बनाने का तर्क नहीं दे रहा हूं। उसे सिद्ध करने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। हमारा काम अंग्रेजी से नहीं चल सकता इतना हम मान लें तो उससे आगे के तर्क स्वयं सिद्ध हो जाते हैं। कोई भी भारतीय भाषा अंग्रेजी का स्थान ले ले, यह मुझे स्वीकार्य है। कौन–सी भारतीय भाषा के लिए इसकी सम्भावना सबसे अधिक है? किस को यह स्थान देने में देश को, प्रदेशों को, इतर भाषाएं बोलने वालों को सबसे कम परिश्रम करना पड़ेगा? इन प्रश्नों के उत्तर जो संकेत करते हैं मैं उससे सन्तुष्ट हूं।''[16]

भाषा का सम्बन्ध किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़ा है। भारत भाषायी दृष्टि से काफी समृद्धि राष्ट्र है। भाषायी विविधता का होना भारत को जहां सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्धि बनाता है, वहीं राजकाज की दृष्टि से उसके सामने चुनौती भी प्रस्तुत करता है। अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन की जड़ें गहरी करने एवं भारत की सांस्कृतिक जड़ों को खोखला करने के लिए यहां मौजूद भाषायी वैविध्य को विभेद में बदलने की कोशिश की। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में विभेद कर अंग्रेजी को बढ़ावा दिया। उन्होंने अंग्रेजी को श्रेष्ठतर और हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को कमतर घोषित कर भारतीय जनमानस को सांस्कृतिक एवं भाषिक गुलाम बनाने की कोशिश की। देश आजाद होने के बाद भी समाज के कुछ प्रभुत्वशाली वर्गों में अंग्रेजी के प्रति मोह कम नहीं हुआ, वहीं दूसरी तरफ भारत का राजभाषा सम्बन्धी प्रश्न राजनीति का शिकार हो गया। परिणामस्वरूप देश की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर भी राजभाषा को लेकर एक राय नहीं बन पाई जिसका फायदा व्यापक तौर पर अंग्रेजी उठा रही है। देश की एकता एवं अखंडता के लिए अज्ञेय का मानना है कि विदेशी भाषा के स्थान पर कोई भी देशी भाषा स्थापित होनी चाहिए और इस एकता को मजबूत बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि किसी देशी भाषा के बरक्स कोई दूसरी देशी भाषा न लाई जाए। उनका स्पष्ट मानना है कि सरकारी कामकाज की भाषा एक होनी चाहिए ताकि हमारी विविधता का सामूहिक स्वर एक हो। हालांकि लेखक को साहित्य का सृजन अपनी मातृभाषा में करना चाहिए, ''राष्ट्रीय एकता के लिए हमें सक्रिय रूप से यह प्रयास तो करना चाहिए कि किसी विदेशी भाषा के स्थान पर कोई भारतीय भाषा आ जाए, किन्तु किसी देशी भाषा के स्थान पर कोई दूसरी देशी भाषा आवे, ऐसा करना राष्ट्रीय एकता के लिए उचित नहीं होगा। सरकारी कामकाज के लिए भाषा

एक होनी चाहिए मगर साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए हर लेखक को अपनी मातृभाषा का व्यवहार करना चाहिए।''[17]

आजादी के बाद भारत में भाषायी समस्या को सुलझाने के लिए शासन स्तर पर त्रिभाषा फार्मूला अपनाया गया। त्रिभाषा फार्मूला पर अज्ञेय का मानना है कि बिना किसी एक भाषा के विधिवत ज्ञान के अन्य भाषाओं को मात्र जानभर लेना व्यक्ति एवं राष्ट्र के विकास के लिए उचित नहीं है। सृजन मातृभाषा में उत्कृष्टता को प्राप्त कर सकता है। 'रचनात्मक भाषा एवं सम्प्रेषण की समस्याएं' नामक निबंध में वह लिखते हैं कि – ''किसी एक भाषा में मुखर न हो सकने पर दो या तीन भाषाओं में अध–गूंगे हो जाना कोई उपलब्धि नहीं है!''[18] त्रिभाषा फार्मूला का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि इसकी वजह से तथाकथित पढ़ा–लिखा समाज भाषायी रूप से अपंग बन गया है। वह किसी एक भाषा में पूर्ण रूप से समर्थ नहीं हो सका और न ही किसी एक संस्कृति को जी पा रहा है, इसके बजाय वह घड़ी की पेंडुलम की तरह अधर में झूल रहा है। अज्ञेय 'रचनात्मक भाषा और सम्प्रेषण की समस्याएं' निबंध में त्रिभाषा फार्मूला के दुष्परिणाम की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं –''इस से अधिक चिंता तो उस तथाकथित 'पढ़ने– लिखने वाले' समाज को लेकर होती है जो पढ़–लिखकर अधिक असमर्थ बना है क्योंकि उसकी पढ़ाई–लिखाई ने उसे न तो 'टू कल्चर्स' में से कोई एक संस्कृति दी है, न 'टू–लैंग्वेज फार्मूला' या 'थ्री–लैंग्वेज फार्मूला' के आधार पर कोई एक भी भाषा इस वर्ग का अधिकांश न तो किसी एक भाषा में बोल सकता है, न किसी एक भाषा में सोच सकता है।''[19]

भारत में राष्ट्रभाषा को लेकर बहस और विवाद आजादी की लड़ाई के दिनों से लेकर वर्तमान समय तक किसी न किसी रूप में जारी है। हिन्दी और अहिन्दी भाषी प्रदेशों में राष्ट्रभाषा संबंधी प्रश्न उठते रहे हैं। राष्ट्रभाषा के पक्ष–विपक्ष में विभिन्न मत मौजूद हैं। आजादी के नायकों से लेकर आजादी के बाद के विचारकों ने राष्ट्रभाषा को लेकर अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। अज्ञेय राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा को एक न मानते हुए भी उसमें एक संबंध जरूर मानते हैं। इस बात के पक्ष में वह स्वयं एवं अन्य भारतीय लेखकों का अनुभव प्रस्तुत करते हैं, जिन्होंने अंग्रेजी का दामन छोड़कर जनभावनाओं को ध्यान में रखकर भारतीय भाषाओं में लेखन की शुरुआत की। 'बोली, भाषा और राष्ट्रभाषा' संबंधी निबंध में अज्ञेय फिलीपीनी पत्रकार से कहते हैं – ''मैं यह तो नहीं कहूंगा कि राष्ट्रीयता के उत्थान और राष्ट्रभाषा के प्रयोग की शुरुआत या उस की उत्तरोत्तर वृद्धि को बिल्कुल एक कर के देखा जा सकता है। इन दोनों में एक सम्बन्ध है जरूर, वह भले ही दिखाई न पड़े। मेरा अनुभव या मेरे जैसे अन्य भारतीय लेखकों का अनुभव हमारी इस बात को पूरी तरह सिद्ध कर देता है। तीसरी दशाब्दी में भारत में ऐसे बहुत से लोग थे, जो अपने को अंग्रेजी का एक अच्छा लेखक मानते थे, बाद में उन्होंने अपनी धारणाएं बदल ली, मैं समझता हूं कि यह अच्छा भी हुआ। उन्होंने अंग्रेजी से अपना पल्ला झाड़ लिया और भारतीय भाषाओं में लिखने लगे। शुरू–शुरू में उनमें इतना विश्वास नहीं था मगर इतना जरूर लगने लगा था कि अगर उन्हें अपने को सच्चे रूप में अभिव्यक्त करना है तो उन्हें कोई न कोई भारतीय भाषा

चुननी पड़ेगी। और मुझे खुशी है कि उन्होंने चुनाव कर लिया।''[20] एक सर्जक और विचारक के तौर पर अज्ञेय भारत के गुलाम बनने की वस्तुस्थिति से पूरी तरह परिचित हैं। भाषा और भाव के स्तर पर उनमें राष्ट्रीय चेतना की भावना गहरे तक समाई हुई है। भारत के राजनीतिक–आर्थिक गुलामी के कारणों एवं उसके दुष्परिणामों का जिक्र करते हुए अज्ञेय अंग्रेजी के कारण भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले खतरों के प्रति आगाह करते हैं। भारतीय भाषाओं के आपसी झगड़े का फायदा उठा अंग्रेजी हमें सांस्कृतिक रूप से गुलाम बना सकती है। अज्ञेय भाषायी दृष्टि से भी एक राष्ट्रीय सोच विकसित करने को लेकर चिंतित दिखाई देते हैं। 'साहित्य की भारतीय कसौटी' नामक निबंध में उनकी यह चिंता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है –'हमारे भाषा–सम्बन्धी विश्वासों में राष्ट्रीय भावना की समस्या विशेष रूप से लक्षित होती है। भाषा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सबसे अधिक समर्थ माध्यम है इसलिए इससे लगाव होना स्वाभाविक है। लेकिन भारत एक सर्वव्यापी भाषा के न रहते हुए भी इतना भाग्यवान तो है कि एक सजीव राष्ट्रीय संस्कृति पा सका हो। राष्ट्रीय भावना जितनी राजनीतिक एकता को प्रतिबिम्बित करती है उससे कहीं अधिक ही राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावना को वाणी देती है। अंग्रेजी इस देश में उस उत्तरदायित्व का निर्वाह आज नहीं कर सकती और कभी नहीं कर सकेगी। तब प्रश्न यह रह जाता है कि राष्ट्रीय संस्कृति की जो निधि आज हमें उपलभ्य है उसे क्या हम अधिक सुरक्षित और सम्पन्नतर बनायेंगें, या कि बांट–बिखेरकर सांस्कृतिक क्षेत्र में भी इस प्रकार विपन्न हो जायेंगें जिस प्रकार जमीन का बंटवारा करके अन्न–उत्पादन के क्षेत्र में हो गये?''[21]

अज्ञेय के भीतर राष्ट्रीय चेतना कूट–कूटकर भरी हुई थी। उन्होंने आजादी के आंदोलन में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई, जिसके लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा। गांधी जी का भी प्रभाव उन पर काफी पड़ा। यह उनका ही प्रभाव था कि अंग्रेजी परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने अपने लेखन में विदेशी भाषा के बजाय अपनी देशी भाषा हिन्दी का प्रयोग किया। अज्ञेय स्वयं इस बात को 'बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा' निबंध में स्वीकारते हैं –''मगर जब मैं करीब दस साल का था गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीयता आन्दोलन ने जोर पकड़ा। उसमें तमाम बातों के साथ किसी भारतीय भाषा के व्यवहार का पहलू भी जुड़ा हुआ था। तभी मैंने अपने मन में यह निश्चय किया था कि मैं अब अंग्रेजी का व्यवहार बन्द कर दूंगा और अपनी भाषा का गम्भीरता से अध्ययन करूंगा।''[22] आजादी के आंदोलन के दौरान जहां एक तरफ आजादी के नायक अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराने के लिए राजनीतिक लड़ाई लड़ रही थे, वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजों से सांस्कृतिक और भाषायी गुलामी से मुक्ति के लिए भी प्रयत्नशील थे। गांधी जी ने अंग्रेजी भाषा की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए जनता को जागरूक कर रहे थे। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए विभिन्न संस्थाओं एवं समितियों का निर्माण किया गया। आजादी की लड़ाई में हिन्दी भाषी राज्यों समेत गैर–हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए उन प्रदेशों के नायक मसलन सी. राजगोपालाचारी, सुभाषचन्द्र बोस समेत अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने समर्थन किया। परंतु आजादी के बाद राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रश्न राजनीति

का शिकार हो गया। भाषा को लेकर यह राजनीति दिनों–दिन बढ़ती गयी, जो आज भी देखने को मिलती है। जब तमाम नेता सत्तालोलुपता में हिन्दी के खिलाफ दुर्भावना पूर्ण बयानबाजी करते हैं। हिन्दी की इस स्थिति पर अज्ञेय 'लेखक की स्थिति' निबंध में बहुत ही सटीक टिप्पणी करते हैं –''हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा हो या हो सकती है, इस सम्भावना को लेकर जो विवाद और वैमनस्य लगातार बढ़ता गया है, उसका दंड हर हिन्दी लेखक को मिलता है। किसी भाषा के लेखक को केवल अपनी भाषा के कारण विरोध ही नहीं, घृणा और अपमान के वैसे उग्र वातावरण में नहीं जीना और काम करना पड़ता है जैसे हिंदी में लेखक को। और यह आज की स्थिति है : आजादी की वयस्कता के दिन की, आजादी से पहले के भारत में भी हिन्दी की यह स्थिति नहीं थी।''[23]

हिन्दी भले ही राष्ट्रभाषा के रूप में सम्पूर्ण देश में स्वीकार नहीं हो पायी लेकिन वह भारत की सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। जनसंख्या के लिहाज से देखें तो वह देश में अन्य भाषाओं की तुलना में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। अज्ञेय हिन्दी की इस महत्ता पर प्रकाश डालते हैं –''भारत में एक दर्जन से ज्यादा भाषाएं पायी जाती हैं। और इतने बड़े देश में यदि एक दर्जन भाषाएं हैं तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वहां किसी भी भाषा के बोलने वालों की संख्या कम–से–कम एक लाख तो है ही। मेरी अपनी मातृभाषा हिन्दी है, जिसे बोलने वालों की संख्या के अनुसार भारत की सर्वप्रमुख भाषा माना जाता है। मोटे तौर पर अगर कहें, तो देश के आधे से ज़्यादा लोग उसे बोलते हैं।''[24]

भारत की भाषायी विविधता में एकता लाने के लिए अज्ञेय सभी भाषाओं के लिए एक लिपि इस्तेमाल करने का सुझाव देते हैं। उनका मत है कि भाषायी विविधता को कायम रखते हुए भी राष्ट्रीय एकता के लिए एक लिपि को बढ़ावा दिया जा सकता है। उनका मानना है कि सबसे बड़ी समस्या विविध भाषाओं का होना नहीं है, समस्या है उनकी लिपि का एक न होना। 'बोली, भाषा, राष्ट्रभाषा' निबंध में फिलीपीन के पत्रकारों से परिसंवाद करते हुए अज्ञेय कहते हैं– ''मगर लिपि की समस्या बहुत बड़ी समस्या है। विभिन्न भाषाओं की अलग–अलग लिपि होने के कारण बड़ी गड़बड़ियां पैदा हो रही हैं। इसलिए लिपि के मामले में आप बहुत मजे में हैं। पता नहीं हमारे यहां तमाम भाषाओं के लिए एक लिपि कब स्वीकार की जाएगी।''[25]

अंग्रेजी को सक्षम भाषा मानने और अन्य भारतीय भाषाओं को कमतर आंकने की प्रवृत्ति पर अज्ञेय कुठाराघात करते हैं। एक हद तक इस तर्क को स्वीकारते हुए भी अज्ञेय अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि शैली के स्तर पर गढ़ा हुआ गद्य भावनाओं के स्तर पर कमज़ोर हो सकता है। साहित्य भावों का प्रतिबिंब है, शैली का कुशल निरूपण नहीं। अज्ञेय का यह कथन ध्यातव्य है– ''यह सही है कि अंग्रेजी बहुत ही व्यापक और सुविकसित भाषा है और कुछ अर्थों में भारतीय भाषाओं के मुकाबले में ज्यादा सक्षम भी है और इसलिए अंग्रेजी का एक सधा हुआ लेखक कभी–कभी बहुत बढ़िया गद्य लिख लेता है मगर स्तर केवल वही तो नहीं होता जिसे आप सतही तौर पर देखते हैं। साहित्य का स्तर इस बात से भी आंका जाता है कि उसमें लोगों की भावनाएं

कहां तक सही–सही प्रतिबिंबित हो सकी हैं – और शायद यह भी कि उसमें लेखक विशेष की प्रतिभा कहां तक प्रतिबिंबित हो सकी है– और इस अर्थ में मैं कहूंगा कि केवल भारतीय भाषाओं का साहित्य महत्त्वपूर्ण है।''[26] जो साहित्य अपनी भाषा में लिखा जाता है, उसे पढ़ने में पाठकों को आनंद आता है। उसे पढ़कर जो अपनत्व की भावना प्रबल होती है, वह विदेशी भाषा के साहित्य को पढ़कर नहीं। अज्ञेय पाठक की इसी मनोवृत्ति का उल्लेख करते हुए कहते हैं – ''आज का पाठक अपनी किसी भारतीय भाषा को पढ़ना ज्यादा पसंद करता है, उसमें ज्यादा रस लेता है। विदेशी भाषाओं में लिखने वाले भारतीय लेखकों का आज वह सबसे बड़ा आलोचक हैं।''[27] अज्ञेय भारतीय पाठकों के मानस की समृद्धि एवं संतोष के लिए जहां अपनी भाषा में लिखने की बात करते हैं, वहीं भारतीय साहित्य की गुणवत्ता एवं समृद्धि के लिए अन्य भाषाओं में लिखे साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद को भी प्रोत्साहित करते हैं – ''मेरे विचार से हमें किसी भारतीय भाषा में लिखना चाहिए क्योंकि केवल उसी में कोई इसी से पाठक को संतोष मिल सकता है। मगर साथ ही साथ यह भी जरूरी है कि काफी संख्या में अनुवाद किये जाएं, केवल इसलिए नहीं कि हम अनुवादों के माध्यम से दूसरी भाषाओं का साहित्य पढ़ सकें, बल्कि इसलिए भी कि उनके माध्यम से हम यह भी जान सकें कि हमारा भारतीय साहित्य कैसा लिखा जा रहा है।''[28]

इस प्रकार हम देखते हैं कि अज्ञेय राष्ट्रीयता के उद्भव से राष्ट्रभाषा को एक स्तर पर अलग मानते हुए भी कहीं न कहीं उससे जुड़ा हुआ मानते हैं। अंग्रेजी की तुलना में भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति की वकालत करते हैं। उनका मानना है कि भारतीयता की भावना भारतीय भाषा में ही प्रबल रूप से मुखरित हो सकती है। परिवारिक परिवेश अंग्रेजी होने के बावजूद गांधी जी के राष्ट्रीयता के आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी मातृभाषा हिन्दी को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। अंग्रेजी के बरक्स अज्ञेय बिना अन्य भारतीय भाषाओं को हानि पहुंचाए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल देते हैं। उनका मानना है कि हर लेखक को अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति मातृभाषा में करनी चाहिए, अपनी मातृभाषा में ही लेखक के व्यक्तित्व की सच्ची अभिव्यक्ति है। भारतीय भाषाओं में एकता लाने के लिए वह एक लिपि के इस्तेमाल का सुझाव देते हैं, इसके लिए वह फिलिपीन का उदाहरण देते हैं। किसी भी भारतीय भाषा में लिखे गए साहित्य को वह भारतीय साहित्य की संज्ञा से अभिहित करते हैं। अज्ञेय भाषा और उसके बोलने वाले के बीच अन्योन्याश्रित संबंध प्रकट करते हैं। भाषा से ही किसी समाज का अपना अस्तित्व होता है। कोई भी समाज अपनी भाषा में ही जीवंत होता है, पराई भाषा पर आश्रित समाज धीरे–धीरे अपनी परंपरा, पहचान, संस्कृति और स्वाधीनता को खो देता है। अपने आप को बचाए रखने के लिए अज्ञेय का मानना है कि समाज और राष्ट्र को अनिवार्यतः अपनी भाषा में जीना होगा। संस्कृति का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं समृद्ध उपकरण भाषा ही है। भाषा के अवमूल्यन के लिए अज्ञेय राजनीति, शासनतंत्र, व्यापार और विज्ञापन को जिम्मेदार ठहराते हैं। साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा को सर्वोत्कृष्ट मानते हुए किसी भी समाज और राष्ट्र

को जीवित रहने के लिए निज भाषा का व्यवहार अनिवार्य मानते हैं।

सन्दर्भ :

1. अज्ञेयय आत्मनेपद, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी प्रथम संस्करण–1960, पृ. 240
2. अज्ञेय रचनावली खंड –10, सं. कृष्णदत्त पालीवाल, भारतीय ज्ञानपीठय नयी दिल्ली य दूसरा संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या –340
3. वही, पृष्ठ –341
4. वही
5. वही
6. वही, पृष्ठ संख्या –353
7. वही, पृष्ठ संख्या – 341
8. वही, पृष्ठ संख्या –354
9. वही
10. वही, पृष्ठ संख्या – 347
11. वही
12. चितरंजन मिश्ररू अज्ञेय का भाषा चिंतन,हिन्दी समय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
13. अज्ञेय रचनावली खंड –10, सं. कृष्णदत्त पालीवाल, भारतीय ज्ञानपीठय नयी दिल्ली य दूसरा संस्करण–2016, पृष्ठ संख्या –347
14. वही, पृष्ठ संख्या –359
15. वही, पृष्ठ संख्या –348
16. वही, पृष्ठ संख्या –241
17. वहीं, पृष्ठ संख्या –343
18. वही, पृष्ठ संख्या –374
19. वही
20. वही, पृष्ठ संख्या –337
21. वहीं, पृष्ठ संख्या –241
22. वही, पृष्ठ संख्या –341
23. वही, पृष्ठ संख्या –235
24. वही, पृष्ठ संख्या –341
25. वही, पृष्ठ संख्या –343
26. वही, पृष्ठ संख्या –338
27. वही
28. वही, पृष्ठ संख्या –339

❏❏❏

सहायक आचार्य, बी. एन. के. बी. पी. जी. कालेज, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर

हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य

–डॉ. नीलम देवी

हिन्दी भाषा का गौरव माननीय अटल बिहारी बाजपेयी ने 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में बतौर विदेश मंत्री हिन्दी में भाषण देकर भारत के आत्मविश्वास को नई ऊँचाई प्रदान की है। नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने अपने भाषण की शुरुआत हिन्दी भाषा में ही किया और पुरस्कार पुस्तिका में हस्ताक्षर भी हिन्दी में किया।

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

हिन्दी सिर्फ हिन्द की ही भाषा नहीं है अपितु यह साहित्य की अधिनायक और संपूर्ण भारत की राष्ट्रीय एकता, सम्प्रदाय एवं सांस्कृतिक एकता की नियामिका भी है। जिसको राष्ट्रहित से अलग नहीं माना जा सकता है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचार एक–दूसरे को भली–भाँति समझा सकते हैं। यही कारण है कि हिन्दी भाषा जगत के व्यवहार का मूल है और समग्र भारत की अपनी बौद्धिक पहचान है। हिन्दी भाषा की वैश्विक परिदृश्य का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज हिन्दी बोलने, समझने वालों की संख्या बहुतायत में है जो भारत में ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों में भी फैला हुआ है। हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन की प्रदीर्घ श्रृंखला है जो सभी विधाओं में वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध है तथा ज्ञान–विज्ञान के तमाम अनुशासनों में, नवीन विषयों में सामाग्री तैयार करने की क्षमता रखता है। साथ ही साथ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिक उपलब्धियों जैसे– ई–मेल, ई–कामर्स, ई–बुक, इंटरनेट तथा एस.एम.एस. और वेब जगत में भी अपनी सक्रिय एवं प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज करा रही है। आज हिन्दी भाषा वैश्विक पटल पर अपना परचम लहरा रही है, जिसे यहाँ तक पहुँचने में किसी कंधे की जरूरत नहीं, अपितु अपने नैसर्गिक गुणों एवं अदम्य शक्ति का ही आधार रहा है। कथाकार उदय प्रकाश के शब्दों में– ''आने वाले दिनों में हिन्दी एक नए कलेवर में होगी। वह अकादमिक हिन्दी नहीं बल्कि नई पीढ़ी की हिन्दी होगी।''

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी हमारी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा ही नहीं है अपितु हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका भी है। तथा हमारे राष्ट्र के रूप में उत्थान और आविष्कार की भाषा भी है। जो किसी एक वर्ग, समुदाय

की भाषा न होकर कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से असम तक की हमारी बोलचाल, रहन–सहन एवं परंपराओं को एक सूत्र में बाँधकर भारत देश के स्वाभिमान को प्रकट करती है। भारत एक बहुभाषी एवं बहु–सांस्कृतिक देश है जहाँ हर वर्ग, जाति के लोग अलग–अलग बोली और भाषा बोलते हैं। व्यक्ति को उसकी बोली, भाषा के आधार पर पहचाना जा सकता है। संसार में लगभग तीन हजार भाषाएँ बोली जाती हैं। जिनमें बहुत–सी भाषाएँ परिवारिक रूप से आपस में जुड़ी हैं। ध्वनि, व्याकरण, शब्द–समूह का अध्ययन–विश्लेषण करके तथा भौगोलिक विस्तार के आधार पर विद्वानों ने लगभग बारह–तेरह परिवार का पता लगाया है। द्रविण, चीनी, सेमेटिक, हेमेटिक, आग्नेय, यूराल–अल्टाइक, बांटू, अमरीकी (रेड–इण्डियन) काकेशस, सूडानी, बुशमैन, जापानी–कोरियाई तथा भारोपीय। हिन्दी हमारी भारोपीय परिवार की भाषा है जिसका विकास अप्रभ्रंश के शौरसेनी रूप में हुआ है। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। एक–एक भाषाओं की कई–कई बोलियाँ हैं। जो अपनी सरलता, सहजता के कारण वैश्विक स्तर पर अपना वर्चस्व बनाए रखी हैं। ये उपभाषाएँ और बोलियाँ निम्नलिखित हैं।

पश्चिमी हिन्दी– खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, हरियाणवी, बुंदेली, जो मेरठ, मुजफ्फरनगर, मुरादाबाद, कानपुर, वृंदावन, मथुरा आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

पूर्वी हिन्दी– अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी जो कि फतेहपुर, प्रतापगढ़, रीवा, सतना, सरगुजा, बिलासपुर आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

राजस्थानी हिन्दी– मेवाती, मालवी, मारवाड़ी, जयपुरी जो कि जोधपुर, अजमेर, भरतपुर, जयपुर, इंदौर, उज्जैन आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

बिहारी हिन्दी– मगही, मैथिली, भोजपुरी, जो बिहार के दरभंगा, भोजपुर, पटना, मुजफ्फर नगर और उ0प्र0 के गोरखपुर, बनारस आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

पहाड़ी हिन्दी– कुमाऊँनी, गढ़वाली यह उत्तराखंड के अल्मोड़ा नैनीताल, देहरादून, चमोली आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

हिन्दी भाषा विविधता में एकता लिए कभी संस्कृत के साथ मिलकर बेटी बन जाती है तो उर्दू के साथ मिलकर बहन। कभी आम फहम की भाषा तो कभी जनभाषा तो कभी मानक, संपर्क भाषा बनकर देश–विदेश में अपना सिक्का जमाती है। रूस के अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू के विद्वान पी.ए. वारान्निकोव हिन्दी भाषा के संदर्भ में कहते हैं– "हिन्दी साम्राज्यवाद नाम की न तो कोई चीज है और न ही उसे किसी ने देखा है। हिन्दी न तो किसी पर थोपी जा रही है और न ही थोपी जा सकती है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है, इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। हिन्दी एक सरल भाषा है और देवनागरी जैसी सरल लिपि तो शायद कोई हो।"[1]

हिन्दी भाषा और प्रवासी साहित्यकार–

हिन्दी भाषा भारत माता के माथे की बिंदी, उसका कोहिनूर, सरताज, अलंकार एक ऐसा चमकता हीरा है जो कि विश्व गुरु बनने में सक्षम है। यह न केवल भारत देश की अक्षुण्णता,

अखंडता को बनाने में सक्षम है अपितु संपूर्ण विश्व की अखंडता को बनाये रखने में भी सक्षम है। भारतीय संस्कृति पुरातन काल से ही अपने समन्वयवादी गुणों के कारण और परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है। एक ओर जहाँ अन्य देश की संस्कृतियाँ अपने समय के साथ–साथ विलुप्त हो रही हैं वहीं भारतीय संस्कृति अपने उदात्त जीवन मूल्यों के कारण विदेशों में भी डंका बजा रही है। साथ–ही–साथ विदेशियों को भी अपनी धर्म और संस्कृति की ओर प्रभावित भी कर रही है। यही कारण है कि आज मॉरिशस, फिजी, श्रीलंका, नेपाल, सूरीनाम आदि जैसे देश भारत की सभ्यता, भाषा और संस्कृति को अपना रहे हैं। जिसमें हिन्दी भाषा सेतु का कार्य कर रही है। शासक और शासित के मध्य भाषा सेतु को लक्षित करते हुए जॉन गिल क्राइस्ट लिखते हैं– ''व्यापारी हो या पर्यटक, नागरिक, अधिकारी हो या सैनिक अफसर, वकील हो या धर्मोपदेशक अथवा दार्शनिक हो या चिकित्सक, संक्षेप में कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसका भारत के साथ किसी प्रकार का भी सम्बन्ध है, उसके लिए हिन्दुस्तानी अन्य भाषा की अपेक्षा अधिक लाभप्रद भाषा है।''[2]

गिलक्राइस्ट के अतिरिक्त गार्सा–द–तासी ऐसे फ्रांसीसी और हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा के उन्नायक विद्वान हैं जिन्होंने फ्रेंच भाषा में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा। इंग्लैंड के पिंगाट महोदय हिन्दुस्तानी कविता के प्रेमी थे। उन्होंने ब्रजभाषा में भारतेंदु जी की प्रशंसा में छंद लिखे। ग्राउस (इंग्लैंड) हेनरी कैलाग (अमेरिका) ग्रियर्सन (आयरलैण्ड) ग्रीब्ज (लंदन) फादर कालिम बुल्के (बेल्जियम) इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी लघुकोश 1955, अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश 1968 का प्रकाशन किया। अभिमन्यु अनंत जिन्हें 'मॉरीशस' का प्रेमचंद कहा जाता है। इन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से अप्रवासी लोगों के मनस्ताप का वर्णन किया है। मिजोकामि (जापान) कोक ब्रुक, फ्रैंक ई. की, मोनियर, विलियम्स, विलियम केरी (इंग्लैंड) डॉ. लोठार लुत्से (जर्मनी) इन्होंने 'टीच योरसेल्फ हिन्दी' तथा 'हिन्दी के बारह पाठ' आदि महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। विवेकानंद शर्मा (फिजी) पं. दौलतराम शर्मा (मॉरीशस) आदि ऐसे प्रवासी साहित्यकार हैं जिन्होंने पूरे विश्व में हिन्दी भाषा का झंडा फहराया और आज भी हिन्दी भाषा की सजीव कड़ी से जुड़े हैं। और हिन्दी भाषा में साहित्य सृजन कर रहे हैं। डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार, ''हिन्दी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक नया संसार रचा है, जिसका स्वरूप भले ही छोटा रहा हो परन्तु उसने एक अलग साहित्य संसार की रचना की जो पूरे विश्व में निरंतर विकसित होता गया और हिन्दी के प्रवासी साहित्य के एक बिंब का निर्माण हुआ। अब हिन्दी प्रवासी साहित्य मॉरीशस तक सीमित न रहा क्योंकि अब उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया।''[3]

हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य–

इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा लक्ष्य है– वैश्वीकरण। आज वैश्वीकरण चाहे मानवीयता के स्तर का हो या आधुनिकता के स्तर का या वैज्ञानिकता, सामाजिकता अथवा प्रौद्योगिकी के स्तर

का, अगर हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'विश्वबन्धुत्व' का लक्ष्य प्राप्त करना है तो हमें वैश्वीकरण को अपनाना पड़ेगा। वैश्वीकरण ने ही विश्व की कई मुख्य भाषाओं जैसे– अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी, अरबी, जर्मनी आदि के महत्त्व को बढ़ाया है। जिसमें हिन्दी भाषा ने वैश्विक पटल पर अपना मुकाम बनाया है। आज हिन्दी पढ़ने–लिखते वालों की संख्या भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी करोड़ों में है। डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल अपने 'भाषा शोध' (2005) में लिखते हैं कि ''विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन (1,02,25,10,352) है। जब कि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल 90 करोड़ चार लाख छह हजार छह सौ चौदह (90,04,06,614) है।''[4]

हिन्दी भाषा का गौरव माननीय अटल बिहारी बाजपेयी ने 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में बतौर विदेश मंत्री हिन्दी में भाषण देकर भारत के आत्मविश्वास को नई ऊँचाई प्रदान की है। नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने अपने भाषण की शुरुआत हिन्दी भाषा में ही किया और पुरस्कार पुस्तिका में हस्ताक्षर भी हिन्दी में किया।

हिन्दी भाषा को वैश्विक फलक तक लाने में संचार माध्यमों की भी महती भूमिका है। संचार तंत्र के कारण ही हम हिन्दी भाषा के ऑनलाइन शब्दकोश, बेब पत्रिकाएँ, इंटरनेट बैंकिंग, ई–मेल, ब्लॉग, कम्प्यूटर टूल्स, हिन्दी चैनल, रेडियो, फिल्म, गीत, सिनेमा आदि को बड़ी ही सहजता से प्रयोग कर लाभ उठा सकते हैं। ''भूमण्डलीकरण से हिन्दी की व्याप्ति की संभावनाएँ बहुत अधिक हो गई हैं। पश्चिमी देश भारत को एक बड़ी मंडी के रूप में देख रहे हैं। यहाँ आने पर विदेशी व्यापारियों और उद्योगपतियों को हिन्दी सीखनी ही होगी। हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ रूसियों ने 'मेरा जूता है जापानी' और 'जीना यहाँ मरना यहाँ इसके सिवा जाना कहाँ' जैसे हिन्दी फिल्मी गानों को कितनी रुचि से सीखा, सब जानते हैं।''[5]

हिन्दी भाषा को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में हमारे न्यूज चैनल, समाचार पत्र–पत्रिकाएँ भी निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। पत्रकारिता साहित्य की संवाहिका और समाज के विचारों का प्रतिबिम्ब है। जिसके माध्यम से असंभव को भी संभव किया जा सकता है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका, कविवचन सुधा, सरस्वती, हंस, राजभाषा प्रचार समिति 'वर्धा', हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, आदि ऐसी समितियाँ और पत्रिकाएँ हैं जो जनमानस की आशाओं–आकांक्षाओं के अनुरूप हर क्षेत्र में दैदीप्यमान हो रही हैं। भारतीय पत्र–पत्रिकाएँ ही नहीं अपितु अमरीका की 'विज्ञान प्रकाश' मॉरीशस की 'विश्व हिन्दी समाचार' और 'सौरभ बसंत' पत्रिका सूरीनाम में सूरीनामी हिन्दी परिषद, जयप्रकाश हिन्दी संस्थान, कनाडा की हिन्दी परिषद, हिन्दी संघ, मुकुल हिन्दी स्कूल, गुयाना में हिन्दी प्रचार सभा, इंग्लैंड में हिन्दी समिति भी हिन्दी भाषा की सार्वभौमिकता बनाए हुए हैं। महात्मा गाँधी जी पत्र–पत्रिकाओं की महत्ता और आवश्यकता को देखते हुए कहते हैं–

> ''इस अँधियारे विश्व में, दीपक है अखबार।
> सुपथ दिखाए आपको, आँख करत है चार।।''[6]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा हमारी आभ्यांतर और वाह्य अभिव्यक्ति का माध

यम ही नहीं है अपितु वह हमारे आंतरिक निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता और सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। जिसके बिना मानव पंगु और मृतप्राय है किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से ही होती है। यदि राष्ट्र हमारा शरीर है तो धर्म उसकी आत्मा और भाषा उसकी संस्कृति की संवाहिका। यदि हम वैश्विक परिदृश्य की बात करें तो आज हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता इस कदर बढ़ती जा रही है कि यह न केवल व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, ज्ञान, विज्ञान, व्यवसाय, बाजार, तकनीकि आदि की भाषा बनती जा रही है अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की भी मूल आवश्यकता भी बन गई है। यही कारण है कि आज हिन्दी भाषा विश्व क्षितिज पर अपनी विजय पताका फहरा रही है।

पं. दौलतराम शर्मा (मॉरीशस) के शब्दों में–

''कुछ ध्यान दे के सुन लो हिंदी की कहानी।
बढ़ती गई कैसे यहाँ हिंदी महारानी।
लाए गए पूर्वज यहाँ करने को गुलामी।
होते हुए गुलाम भी रख ली स्वनिशानी।
....
थल थल पे हिन्दी के लिए होने लगे प्रचार।
रुकता कहाँ उदय रवि जब हो गया एक बार।
पाठशालाएँ हर गाँव में अब खुलने लगीं।
बच्चों के होंठों पर अब हिन्दी फूलने लगी।''[7]

जय हिन्दी, जय नागरी।

संदर्भ–

1. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन 'स्मारिका'2020, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 101
2. वही, पृ. 87
3 गुप्त अमित कुमार, सुश्री ज्योति कुशवाहा, भारतीय संस्कृति के उन्नयन में प्रवासी साहित्यकार, वान्या पब्लिकेशन, हंसपुरम, नौबस्ता, कानपुर, पृ. 174
4 भाषा– सितम्बर–अक्टूबर 2019, अंक 286 वर्ष 58, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार, पृ. 12
5 भाषा– सितम्बर–अक्टूबर 2018, अंक 280 वर्ष 57, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार, पृ. 16
6 हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 118
7 अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन 'स्मारिका'2020, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 102

❐❐❐

सहायक शिक्षक, हिन्दी
श्री पुरुषोत्तम इण्टर कॉलेज, खजुहा फतेहपुर, ईमेलः pawan_neel/yahoo.co.in मोबाइल – 9580150221

हिंदी भाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

—डॉ. विजय लक्ष्मी

कोई भी राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए उसका जन–जन मजबूत होता है, तब वह राष्ट्र उत्तरोत्तर तरक्की का मार्ग प्रशस्त करता है और इसलिए मातृभाषा ही इस कार्य के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं। आज जन–जन को अपनी भाषा के प्रति जागरूक और मधुरता प्रकट करने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी जी ने भी कहा है–"कि मेरी मातृभाषा में कितनी खामियां क्यों ना हों? मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से।

बीज शब्द– विकासशील, वरीयता, प्रोत्साहन, व्यवस्था, प्रयास।

शोध सार– समाज और राष्ट्र की उन्नति मातृभाषा के बिना नहीं हो सकती। भाषा की उन्नति से ही व्यक्ति, समाज और देश के विकास का द्वार खुलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था, मातृभाषा और बहुभाषा पर केंद्रित है, जिसमें भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि हिंदी भाषा के शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों के ज्ञान, विवेक और चरित्र का विकास करना है। नई शिक्षा नीति के अनुसार पांचवी कक्षा तक के छात्रों को मातृभाषा, स्थानीय भाषा और राष्ट्र भाषा में ही अध्ययन करवाया जाएगा जो कि मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में भारत सरकार ने भारतीय शिक्षा को अलग तरीके से आगे बढ़ाने और उसकी आवश्यकता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की है जिसमें मातृभाषा को फिर से जीवित करने की बात रखी गई है। नई शिक्षा नीति लागू होने से हिंदीभाषा को बढ़ावा और प्रोत्साहन मिलेगा। नई शिक्षा नीति 21वीं सदी में शिक्षा के स्तर में सुधार तथा भारत की मूल व्यवस्था और प्रत्येक नागरिकों में विश्वकल्याण की भावना को भरने का उद्देश्य है। वर्तमान शिक्षा नीति पर ध्यान न देने के कारण ही भारत आज भी विकासशील देश बना हुआ है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा को लेकर इतनी दुरूखद स्थिति है कि सामान्य बोलचाल में बोले जाने वाले शब्दों को भी आज के विद्यार्थी न तो ठीक से बोल पाते हैं और न ही ठीक से लिख पाते हैं, साथ ही आज की पीढ़ी अपने संस्कारों और संस्कृति से भी दूर होती जा रही है। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर गूगल की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के 80 देशों में एआई युक्त उत्पादों में कुल 30 तरह की भाषाओं का चलन अधिक है उसमें हिंदी का प्रयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है,

जिसमें हिंदी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है। अमेरिका की जनगणना विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में वर्ष 2020 तक हिंदी बोलने वालों की संख्या नौ लाख से अधि ाक थी और यह लगातार बढ़ रही है। अमेरिका में रहने वाले 70% भारतीय घर पर हिंदी भाषा को वरीयता देते हैं। वर्तमान में सरकार, सरकारी स्कूलों के लिए हर संभव प्रयास कर रही है, जिससे सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी पढ़ लिख कर अच्छे क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकें।

समाज और राष्ट्र की उन्नति मातृभाषा के बिना नहीं हो सकती। भाषा के महत्त्व को बताते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा था कि "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।" मातृभाषा के बिना किसी भी देश की उन्नति नहीं हो सकती। भाषा की उन्नति से ही व्यक्ति, समाज और देश के विकास का द्वार खुलता है। हिंदी भाषा के शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों के ज्ञान, विवेक और चरित्र का विकास करना है। वर्तमान में भारत सरकार ने भारतीय शिक्षा को तरीके से आगे बढ़ाने और उसकी आवश्यकता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की है जिसमें मातृभाषा को फिर जीवित करने की बात रखी गई है। नई शिक्षा नीति से हिंदी भाषा को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था मातृभाषा और बहु–भाषा पर केंद्रित है जिसमें भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति 21वीं सदी में शिक्षा के स्तर में सुधार तथा भारत की मूल व्यवस्था और प्रत्येक नागरिकों में विश्व कल्याण की भावना को भरने का उद्देश्य है। वर्तमान शिक्षा नीति पर ध्यान ना देने के कारण ही भारत आज भी विकासशील देश बना हुआ है। जिस देश की शिक्षा का स्तर मजबूत होगा वह शीघ्रता से प्रगति की ओर अग्रसर रहेगा नई शिक्षा नीति में प्रारंभिक स्तर की पढ़ाई में सर्वप्रथम मातृभाषा और स्थानीय भाषा के प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया गया है। शिक्षा प्रभावी हो तथा एक सशक्त भारत का निर्माण हो इसके लिए आवश्यक है कि सभी को मातृभाषा में शिक्षा को महत्त्व देना चाहिए।

कोई भी राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए उसका जन–जन मजबूत होता है, तब वह राष्ट्र उत्तरोत्तर तरक्की का मार्ग प्रशस्त करता है और इसलिए मातृभाषा ही इस कार्य के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं। आज जन–जन को अपनी भाषा के प्रति जागरूक और मधुरता प्रकट करने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी जी ने भी कहा है–"कि मेरी मातृभाषा में कितनी खामियां क्यों ना हों? मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से। यही मुझे जीवनदायिनी दूध दे सकती है। अगर अँग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा। वह कुछ लोगों के सीखने की वस्तु हो सकती है, लाखों–करोड़ों की नहीं।" वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति के अनुसार पांचवी कक्षा तक के छात्रों को मातृभाषा, स्थानीय भाषा और राष्ट्रभाषा में ही अध्ययन करवाया जाएगा जो कि मातृभाषा को बढ़ावा देने के दृष्टिगत महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा को लेकर इतनी दुखद स्थिति है कि सामान्य बोलचाल में बोले जाने वाले शब्दों को भी आज के विद्यार्थी

ना तो ठीक से बोल पाते हैं और ना ठीक से लिख पाते हैं। साथ ही आज की पीढ़ी अपने संस्कारों और संस्कृति से भी दूर होती जा रही है क्योंकि वर्तमान में सभी माता–पिता अपने बच्चों को सरकारी स्कूल की अपेक्षा प्राइवेट में शिक्षा देना अत्यधिक पसंद करते हैं। यह केवल कहने की बात है कि प्राइवेट संस्थानों में शिक्षकों द्वारा अधिक अच्छे तरीके से बच्चों को शिक्षा दी जाती है जबकि सरकार सरकारी स्कूलों के लिए हर संभव प्रयास कर रही है जिससे सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी पढ़ लिखकर अच्छे क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकें।

नई शिक्षा नीति दूरदर्शी सोच की परिणिति है। इसके अध्याय 22 में भारतीय भाषाओं, कला एवं संस्कृति से संबंधित प्रावधानों को समायोजित किया गया है। इसमें सभी भाषाओं को समानता दी गई है। नई शिक्षा नीति में प्राथमिक तौर पर मातृभाषा के प्रभाव को समायोजित करते हुए हिंदी भाषा के महत्त्व को भी सम्मिलित किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा नीति भाषा के साथ कला की भी बात करती है क्योंकि इसमें भाषा के द्वारा कला और सांस्कृतिक संवर्धन का लक्ष्य भी रखा गया है। हमारे देश की राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का स्थान अग्रणी रहेगा। वह हिंदी के प्रभुत्व को स्थापित करते हुए भविष्य में हिंदी युग की स्थापना के लिए भरसक प्रयास करेगा। सकारात्मक यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था में बहु भाषा और मातृभाषा पर केंद्रित है। यह जहां एक और भारत केंद्रित है वहीं दूसरी ओर बालक केंद्रित भी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह भी प्रावधान किया गया है कि हम सभी अपनी मातृभाषा विशेषता हिंदी के व्यवहार में सम्मान महसूस करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सराहना करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हिंदी दिवस के अवसर पर एक वीडियो संदेश में कहा कि "हिंदी भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है तथा स्वतंत्रता संग्राम के समय से यह राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि एक देश की पहचान उसकी सीमा व भूगोल से होती है लेकिन उसकी सबसे बड़ी पहचान उसकी भाषा है भारत की विभिन्न भाषाएं और बोलियां उसकी शक्ति भी है और उसकी एकता का प्रतीक थी सदियों से पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम हिंदी कर रही है हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता और सरलता है।"

देशी विदेशी सभी भाषाओं में ज्ञान का भंडार है। उन्हें सीखने में कोई बुराई नहीं है लेकिन पहला सम्मान अपनी मातृभाषा और अपनी मातृभूमि के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में बालक की सहज प्रकृति का निर्माण करने की क्षमता है। आज भारतवर्ष भिन्न–भिन्न रूपों में विकास के मार्ग पर अग्रसर है। नया भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। ऐसे में यह परम आवश्यक है कि मातृभाषा शिक्षा एवं संस्कार का माध्यम बने। डॉ. जाकिर हुसैन ने हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है– "कि हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।" युवा भारत मातृभाषा के चिंतन के साथ–साथ उसके वंदन के लिए भी सदैव दृढ़ संकल्पित रहें। विभिन्न अध्ययन एवं शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि बालक अपनी मातृभाषा में अधिक सीखता है और सरलता से सीखता

है। मातृभाषा में शिक्षा, मातृभाषा में कार्य और मातृभाषा का व्यवहार संपूर्ण साक्षरता की दिशा में भी कारगर सिद्ध हो सकता है। अभी हाल ही में हिंदुस्तान के ताजा अंक में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर गूगल की एक रिपोर्ट के अनुसार हिंदी बदलती दुनिया के साथ कदमताल कर रही है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के क्षेत्र में हिंदी का दखल बढ़ रहा है। दुनिया के 80 देशों में एआई युक्त उत्पादों में कुल 30 तरह की भाषाओं का चलन अधिक है। उसमें हिंदी का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर हो रहा है। जिसमें हिंदी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है। दुनिया की अहम भाषा बन चुकी लोगों की भी पसंद बन रही है दुनिया के दूसरे देशों में रहने वाले लोगों के बीच भी हिंदी प्रेम बढ़ रहा है। एलेक्सा, एंड्राइड और दूसरे तकनीकी माध्यमों के जरिए दूसरी भाषा बोलने वाले लोग हिंदी सीख रहे हैं। भारत दौरे से पहले अपनी यात्रा को सफल बनाने के लिए विदेशी नागरिक हिंदी सीखने पर ज्यादा जोर देते हैं। अमेरिका के जनगणना विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में वर्ष 2020 तक हिंदी बोलने वालों की संख्या नौ लाख से अधिक थी और यह लगातार बढ़ रही है। एथनोलॉग के अनुसार वर्ष 2022 में अंग्रेजी और मॉडल इन चाइनीज के बाद हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। भारत में करीब 35 करोड़ लोगों की मूल भाषा हिंदी है। वहीं 26 करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं जो हिंदी भाषा का प्रयोग अपने जीवन में मौजूदा समय में कर रहे हैं। वही करोड़ों लोग हिंदी सीखने की कोशिश कर रहे हैं। दुनिया की अहम भाषा बन चुकी हिंदी लोगों की भी पसंद बन रही है। दुनिया के दूसरे देशों में रहने वाले लोगों के बीच भी हिंदी प्रेम बढ़ रहा है। भाषा ही मनुष्य को अपने देश संस्कृति और मूल्य के साथ जोड़ती है। हिंदी भारतीयों की राजभाषा है और भारतीय भाषाओं की सहेली है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था—"भारतीय संस्कृति एक विकसित शतदल कमल की तरह है जिसकी प्रत्येक पंखुड़ी हमारी प्रादेशिक भाषाएं हैं। किसी भी पंखुड़ी के नष्ट होने से कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। मैं चाहता हूं कि प्रादेशिक भाषाएं रानी बनकर प्रांतों में विराजमान रहे और उनके बीच हिंदी मध्य मणि बनकर बिराजे।" नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने से हमारी हिंदी भाषा के लिए एक सकारात्मक बात यह भी है कि अनेक प्रतियोगी परीक्षाएं हिंदी भाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं में भी आयोजित कराई जाएंगी। इसके अलावा हिंदी भाषा के साथ–साथ संस्कृत को प्रथमतरू स्थान दिया गया है जो कि हमारी भारतीय संस्कृति के लिए अति महत्त्वपूर्ण बात है क्योंकि भारतीय समाज और संस्कृति को ठीक से समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान अति आवश्यक है क्योंकि हमारे धर्म, संस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम संस्कृत तथा हिंदी भाषा है। किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व, उसकी संस्कृति और सभ्यता यह सब उस राष्ट्र की मातृभाषा से जुड़े होते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी और संस्कृत विषय पढ़ना हर छात्र के लिए अनिवार्य होगा। भारत में हिंदी भाषा के विकास के लिए अनेकों संस्थाएं समितियों जैसे केंद्रीय हिंदी विश हिंदी निदेशालय आगरा, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा आदि के द्वारा भाषा के प्रशिक्षण के लिए संचालित पाठ्यक्रमों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह सभी संस्थान मिलकर प्रतिवर्ष सैकड़ों विदेशी छात्रों को हिंदी

भाषा में पारंगत करके विश्व मंच पर हिंदी के वैश्विक दूत तैयार करते हैं जो कि अपने अपने देशों में हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में हिंदी भाषा की वैश्विक परिधि का निर्माण कर रहे हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारे देश की मिट्टी में सांस्कृतिक विविधता हर तरफ दिखाई पड़ती है साथ ही हमारी संस्कृति और हमारी भाषा का एक दूसरे से अटूट संबंध है। यदि हमें भारत को विश्वगुरु बनाना है तो इसके लिए हमें अपनी मातृभाषा पर विशेष ध्यान अर्जित करना होगा। एन.ई.पी. के अनुसार "यह अपने स्वयं के सांस्कृतिक इतिहास कला भाषा और परंपराओं की एक मजबूत भावना और ज्ञान के विकास के माध्यम से है कि बच्चे एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान का निर्माण कर सकते हैं।" वर्तमान परिस्थिति में हिंदी भाषा का पर्याप्त प्रचार एवं बाजार आधारित शिक्षा प्रणाली का अनिवार्य रूप से पालन होना चाहिए जिससे देश का सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक विकास संभव हो सकेगा। अपनी मातृभाषा को अधिक से अधिक व्यावहारिक जीवन में बोलने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए तथा हम सभी को अपनी भाषा पर अभिमान करना चाहिए। यह सही है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं पर अधिक बल दिया गया है क्योंकि भारतीय भाषाओं की विकास के साथ ही हिंदी भाषा का विकास और विस्तार काफी हद तक हो पाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
2. नई शिक्षा नीति से हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं का समान समानांतर विकास होगाः शाह From india tv-in
3. नई शिक्षा नीति और हिन्दी भाषा की उपयोगितारू रमा ठाकुर ज्रौइंत.पद
4. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुकूल मातृभाषा में चिंतन वंदन का समय–– रंहतंद.बवउ
5. हिन्दुस्तानः देश–दुनिया www.livehindustan.com पृष्ठ–13 अंक–10जनवरी 2023
6. नई शिक्षा नीति और हिन्दी : tv9hindi.com

❑❑❑

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
श्रीराम सिंह धौनी राजकीय महाविद्यालय, जैंती (अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड

भारतीय बहुभाषिक लोक और रंगमंच

—ओम्मी ठाकुर

रानावि से प्रशिक्षित नसीरुद्दीन शाह राज्य सभा टीवी के लिए मोहम्मद इरफान को दिए अपने साक्षात्कार में कहते हैं रानावि की स्थापना के करीब साठ वर्ष बाद भी "किसी एक तरह का इंडीजीनस थिएटर हम लोग इजाद नहीं कर पाए हैं, क्योंकि हमने अपने ट्रेडीशन की कद्र नहीं की है। एक हबीब तनवीर साहब थे जो कोशिश कर रहे थे इस तरह की, पर वो भी जब से गुजरे, उनके बाद उनका ग्रुप तितर–बितर हो गया, उनका ग्रुप जो बहुत ही बेहतरीन काम करता था।

'लोक' संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'संसार'। रोजगार के अवसर तलाशने नगरों–महानगरों की ओर पलायन कोई नई परिघटना नहीं है, बड़े बाजार, बड़े नगर, बड़े अवसर, बड़ी उपलब्धि का लालच कालिदास को भी उसके लोक से निकाल लाता है, मल्लिका संग उसका सहज संसार पीछे छूट जाता है। नगर या महानगर आपके विस्तृत संसार को लपेट कर सीमित कर देता है, यहां लोक का विलोम जन्म लेता है, जो आपसे 'शिष्ट' होने का आग्रह करता है। अब आप पाते हैं कि आपका अपना लोक सिमट कर स्मृतिशेष हो गया है, और आप कदाचित नए ही किसी लोक में प्रवेश कर गए हैं, जो आपका अपना नहीं है। आपके साथ वालों के साथ भी लगभग यही हुआ है, आप सभी इस नगरीय संसार में अकेले–अकेले हैं, सभी अपना–अपना लोक साथ लाए हैं, पर इसमें साथ वालों की साझेदारी नहीं है, इस तरह एक विखंडित लोक का जन्म होता आया है।

दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, मद्रास, चंडीगढ़ जैसे महानगर ऐसे ही विखंडित लोक हैं। भाषायी संस्कृति के आधार पर प्रांतों का विभाजन जरूर हुआ है लेकिन भाषा किसी भौगोलिक सीमा में नहीं बंध सकती। चंडीगढ़ में हरियाणवी बोलने वालों, पंजाबी बोलने वालों और पहाड़ी बोलने वालों का बराबर बोलबाला है, और उनके अलावा बिहारी, बुंदेली, उर्दू, पश्तो व हिंदी भाषियों का भी बराबर अधिकार है। पर सिर्फ अपनी भाषा बोलने से इनका काम नहीं चलेगा, इन सभी के लिए परस्पर संपर्क की भाषा की आवश्यकता को हिंदी पूरा करती है, जिसमें उनके अपने भाषिक संस्कारों की विलक्षणता साथ होती है। इस तरह एक बहुभाषिक समाज उद्घटित होता है।

अर्थात कोई भी महानगर विखंडित और बहुभाषिक लोक होता है, जिसके पूर्वज कहीं और थे, जिसका अपना भौगोलिक परिवेश कुछ और है, जिसकी जातीय स्मृतियों का साझी उसे कभी–कभी मिलेगा, और वह अपनी सांस्कृतिक–ऐतिहासिक ग्लोरी के लिए ताउम्र विटनेस तलाशता रहेगा। रंगमंच उसकी इस भटकन में साथ दे सकता है, नई समस्याओं के घेरे से निकाल कर, नए प्रश्नों से जूझने की सहूलियत दे सकता है। रंगमंच ट्रांसेंड कर पाने की शक्ति देता है, हमारी मनःस्थिति को उस छोर तक पहुंचाकर, हमारे दिल की धड़कन, हमारे धैर्य

और हमारी इंद्रियों को जाग्रत कर, वापस इस छोर पर ला सकता है। विखंडित लोक में रंगमंच की नितांत आवश्यकता रही है। आंतोनी आर्तो मानते हैं – "जिस वेदना और संकट के समय में हम रहते हैं, ऐसे में हम उस रंगमंच की जरूरत को तीव्रता से महसूस करते हैं, जो किसी घटना की छाया से प्रभावित न हो, जो उत्साहित कर सके हमारी गूंज को और उस अव्यवस्थित समय पर हावी हो जाए, उसको गहरे में प्रभावित कर ले।

विरासत में मिले ध्यान को भटका देने वाली आदतों के चलते हमने उस गहन, सूक्ष्म रंगमंच के विचार को भुला दिया है, जिसमें हमारे अपने पूर्व–ज्ञान को गड्डमड्ड कर देने की शक्ति है। दरअसल वह गहन, सूक्ष्म रंगमंच उस उज्जवल करने वाली चुंबकीय कल्पना दृष्टि की प्रेरणा देता है और आखिर में वही चिरस्मृति में आत्म चिकित्सा के रूप में हमारे काम आती है"।[1]

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NMHS) 2016 के अनुसार अर्बन मेट्रो सिटी के लोगों का मानसिक स्वास्थ्य सबसे कमजोर पाया गया, इसकी एक वजह है हमारे विखंडित और बहुभाषिक शहरों में 'आत्म चिकित्सा' के साधन भरपूर नहीं हैं। बहुभाषिक शहरों में रंगमंच, मराठी और बांग्ला रंगमंच की तरह विकसित नहीं हो सका है। वजह है कि यहां संपर्क भाषा के तौर पर हिंदी और अंग्रेजी प्रयोग होते हैं, और ये दोनों ही व्यापक तौर पर मातृभाषा न होकर उपयोग की भाषाएं हैं। आम जनमानस घर में बोली जाने वाली बोलियों को घर में छोड़कर बाहर हिंदी बोलता है, आज भी।

आज भी शिकायत बनी हुई है कि हिंदी भाषा का अपना रंगमंच खड़ा नहीं हो सका, जिसे लेकर हम वैश्विक स्तर पर किसी भी अन्य प्रतिष्ठित रंगमंच के सामने खड़े हो सकें। जबकि नाट्यशास्त्र और संस्कृत नाटकों की समृद्ध परंपरा, व दक्षिण भारतीय रंगमंच (कथककली, थेरुकुथु) का टिकाऊ स्वरूप रूस और यूरोप को भारत की ओर सम्मान से देखने पर मजबूर करता है। संस्कृत नाटकों की सुदीर्घ परंपरा, जिसमें गीत, संगीत, नृत्य और अभिनय पूरी शक्ति के साथ समाहित थे, छठी–सातवीं शती तक लोक में विलीन हो जाती है, फिर लोक नाट्य व लोक रंगमंच की परंपरा में भावात्मक धावन करती हुई, असंरक्षित लोक परंपरा में संचरण करती है। आज भी यह परंपरा हमारे लोक रंगमंच बल्कि और सावधान होकर कहें तो पारंपरिक रंगमंच के रूप में देशभर में विद्यमान है। उत्तर प्रदेश में रामलीला, रासलीला व नौटंकी, राजस्थान में गवरी, ख्याल व कठपुतली, गुजरात में भवई, बिहार में विदापत नाच व बिदेसिया, असम में अंकिया नाट, छत्तीसगढ़ में कर्मा और नाचा, मध्यप्रदेश में माच व स्वांग, महाराष्ट्र में तमाशा, बंगाल में जात्रा, उड़ीसा में दशकाठिया, कश्मीर में जशिन, कर्नाटक में यक्षगान, तमिलनाडु में थेरुकुथु, केरल में कथकली जैसे नृत्य–संगीत–अभिनय समुच्चय आधारित लोक नाट्य रूप खूब प्रचलन में हैं। ये पारंपरिक नाट्य रूप, परंपरा से विच्छेद न होने के बावजूद अपनी कलात्मकता में आधुनिक हैं, स्थानीय संस्कारों के समावेशन के बावजूद आनंद प्रदान करने में सार्वभौमिक हैं, इनके दर्शक मायूस नहीं लौटते।

एक प्रश्न बारबार उठता है कि 'क्यों आज संभ्रांत जनमानस रंगमंच को देखने वापस नहीं आ रहा, अथवा क्यों रंगमंच से विरक्त आम जनमानस सिनेमा, संगीत की महफिलों और सर्कश–तमाशों में, हिंसात्मक तुष्टि देने वाली खुशी पाता है'।[2]

दरअसल रंगमंच को चाहिए आजमाई हुई भाषा, प्रशिक्षित अभिनेता और कल्पनाशील दर्शक। मराठी और बांग्ला रंगमंच की तरह हिंदी भाषा का रंगमंच खड़ा नहीं हो सका, यह रंगमंच के साथ–साथ भाषा पर भी लांछन है। जबकि हिंदी नई चाल में ढली ही अभी है, दो सदी भी पूरी नहीं कर पाई है, इस भाषा को वयस्क होने में अभी समय है, भाषा को निर्दोष साबित करता यह तर्क सामने आता है। वर्तमान हिंदी के स्वरूप का इतिहास वाकई ज्यादा पुराना नहीं है, पर

भारतेंदु काल में कोई तो फैक्टर था जो हिंदी भाषा के शैशव काल में लिखे और खेले गए नाटक हिट हो सके। इस फैक्टर को गिरीश रस्तोगी रेखांकित करती हैं "समाज संस्कार, देशवत्सलता, शृंगार को महत्त्व देते हुए भी उनके नाटक हास्य, दिल्लगी, कौतुक, तमाशा प्रहसन को नकारते नहीं। वह (भारतेंदु) शास्त्रीय पद्धतियों और लोक नाट्य रूपों दोनों को पचाकर रहते हुए नाट्य लेखन और रंगकर्म में उनकी संभावनाएं तलाशते हैं"।

पारसी कंपनियों ने आधुनिक युग में सांस्कृतिक जागरण का कोई जिम्मा नहीं उठाया पर दर्शक को टिकट लेकर नाटक देखने के लिए लुभाने में कामयाब रही। रंगमंच को ऐसा ढांचा दिया जो स्वतः सस्टेनेबल था, इसमें कलाकारों को वेतन दिया जाता था, लेखक खास रंगमंच पर खेले जाने के उद्देश्य से नाटक लिखता था, अभिनेता को ट्रेनिंग दी जाती थी, स्थानीय कथाओं और लोकगीतों से कंटेंट लिया जाता था, व्यापार के उद्देश्य से यात्राएं की जाती थीं। पर भाषा, कथानक, कला और प्रदर्शन की परिनिष्ठता और शिष्टतावादी आग्रहों के चलते इसका अवसान बहुत जल्दी हो गया। "राधेश्याम कथावाचक जैसे नाटककारों के नाटक का हमारे बुद्धिजीवी वर्ग और हिंदी लेखकों ने भ्रष्ट अश्लील कहकर बहिष्कार किया और समीक्षकों ने नाटक को दो भागों में बांट दिया– एक साहित्यिक नाटक, दूसरा रंगमंचीय नाटक। इस कृत्रिम, भ्रामक दृष्टि से हिंदी आज तक उबर नहीं पाई है रंगमंच से कटते हुए फारसी नाटक की प्रतिक्रिया में हिंदी नाटक लिखा जाने लगा, कि देखो तुम मनोरंजन करने और धन कमाने के लिए नाटक करते हो, हम साहित्य के लिए मानसिक भूख को शांत करने के लिए नाटक करते हैं। एक खतरनाक दृष्टि, झूठे अहं और भ्रम ने हिंदी नाट्येतिहास को गलत निष्कर्षों का शिकार बनाया। प्रतिक्रियात्मक दृष्टि होने के कारण साहित्यिकता पर अधिक बल हो जाने से नाट्य की दृश्यात्मकता खंडित होती गई और नाटक साहित्य से पाठ्य और फिर वक्तव्य बनता गया"।[3]

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना (1959) के बाद रंगकर्म के विभिन्न आयामों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने का एक और व्यवस्थिक क्रम स्थापित हुआ, देशभर से अभिनय, निर्देशन, रंगलेखन सीखने के लिए उत्सुक रंगप्रेमियों को राजधानी ने आकर्षित किया। 'अभिनय सीखना होता है जीवन से या अभिनय तकनीक के माध्यम से। फिर जो सीखा है उसे आजमाना होता है। और आजमाइश से आगे जाकर सच को पकड़ना होता है। ऐसे में अभिनेता की यात्रा आत्म से शुरु होती है। अभिनय कला की पराकाष्ठा अमूर्त होती है– आलौकिक, रसानुभूति की तरह, यूनानी रंगमंच में कथारसिस की तरह, लीलाधारी और समाजी की तरह, स्तानिस्लाव्सकी के श्रेष्ठ मकसद की तरह या फिर ग्रोतोव्स्की के मनोशरीर की तरह और आर्तो के भावात्मक धावक की तरह'।[4]

रानावि के पहले निदेशक रहे इब्राहिम अल्काजी ने रानावि के साथ कई नाटकों का निर्देशन किया, अपने जीवन काल में कलाकारों की कई पीढ़ियों को अभिनय की बारीकियां सिखाईं। 1947 में, उन्होंने रॉयल अकेडमी ऑफ ड्रामाटिक आर्ट से प्रशिक्षण प्राप्त किया था, 1958 में भारत लौटे हबीब तनवीर ने भी रॉयल अकेडमी ऑफ ड्रामाटिक आर्ट से प्रशिक्षण प्राप्त किया था, हालांकि द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षण को उन्होंने भारत में रंगकर्म करने के लिए उपयोगी नहीं पाया, इसलिए एक वर्ष का डिप्लोमा प्राप्त किया, और उसी स्कॉलरशिप और समय का सदुपयोग करते हुए ब्रिस्टल ओल्ड विक थिएटर स्कूल, और ब्रिटिश ड्रामा स्कूल से प्रशिक्षण लिया। इब्राहिम अल्काजी अर्बन थिएटर से परिचित थे, हबीब तनवीर की तरह रामलीला, महाभारत, दास्तानगोई, जैसी स्टोरी टेलिंग की भारतीय परंपराओं से परिचित नहीं थे। हबीब तनवीर इप्टा के साथ भारत में अलग–अलग हिस्सों में काम किया था वे लोक में रचे–बसे थे, जाहिर है थिएटर के लिए दोनों की अप्रोच में फर्क था, जहां इब्राहिम अल्काजी ने अर्बन थिएटर

पर काम किया "हबीब ने हिंदी रंग परंपरा को समन्वित, सांस्कृतिक शक्ति को रूप में व्यवहृत किया"।[5]

रानावि से प्रशिक्षित नसीरुद्दीन शाह राज्य सभा टीवी के लिए मोहम्मद इरफान को दिए अपने साक्षात्कार में कहते हैं रानावि की स्थापना के करीब साठ वर्ष बाद भी "किसी एक तरह का इंडीजीनस थिएटर हम लोग इजाद नहीं कर पाए हैं, क्योंकि हमने अपने ट्रेडीशन की कद्र नहीं की है। एक हबीब तनवीर साहब थे जो कोशिश कर रहे थे इस तरह की, पर वो भी जब से गुजरे, उनके बाद उनका ग्रुप तितर–बितर हो गया, उनका ग्रुप जो बहुत ही बेहतरीन काम करता था।

अल्काजी साहब मगरिबी (पश्चिमी) थिएटर से मुतासिब थे और उसी तरह का थिएटर करना चाहते थे। अच्छी बात ये थी कि अनुशासन और सॉफस्टिकेशन, और एक टेस्ट उन्होंने बख़्शा हिंदुस्तानी थिएटर को। लेकिन थिएटर करने का उनका अंदाज बहुत ही मगरिबी किसम का था। अगर वो तुगलक या अंधायुग जैसा ड्रामा भी करते थे, तो वो पेश किया जाता था जिस तरह से इंग्लैंड में पेश किया जाएगा, बहुत ही धूम धड़ाके के साथ, बहुत बड़े पैमाने पर।

साथ–साथ सत्यदेव दूबे भी थे, जो वो ही नाटक करते थे अक्सर जो अल्काजी साहब कर चुके हैं। बहुत ही सादे स्तर पर, पैसे थे नहीं दूबे जी के पास, तो वो किसी तरह का धूमधड़ाका करने में यकीन नहीं करते थे, उनकी पेशकश ज्यादा असरदार हुआ करती थी, अक्सर अल्काजी साहब से भी। और सोचने वाली बात है कि अगर दूबे को अल्काजी की जगह ड्रामा स्कूल का पहला डायरेक्टर बनाया जाता तो क्या होता। कुछ दिलचस्प बात जरूर निकल कर आती।"[6]

आगे वे एक राष्ट्रीय विद्यालय के आइडिया को प्रतिभाशाली स्थानीय कलारूपों के लिए लाभप्रद नहीं मानते हुए महत्त्वपूर्ण और महत्त्वाकांक्षी कहते हैं, कि एक गलती थी नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की स्थापना, जिसमें अलग–अलग क्षेत्रों से आए प्रशिक्षुओं को साफ हिंदी बोलना सिखाया जाता था, उनको वापस जाकर अपनी जबान में काम करना था तो साफ हिंदी बोलने का दबाव सही नहीं था। "नैशनल स्कूल की बजाय रीजनल स्कूल बनने चाहिए थे, पर मुश्किल यह होती कि हर एक रीजनल स्कूल में इतना एक ब्रिलिएंट हेड हम कहां से ढूंढते। लेकिन ढूंढने से मिल ही जाता है खुदा भी"।[7]

अभिनेता के लिए दूसरी भाषा का प्रशिक्षण और दूसरी भाषा में प्रशिक्षण हबीब तनवीर को भी खटकता था, "हर भाषा की संरचना के पीछे अपनी कुछ विशिष्ट परंपराएं एवं संस्कार रहते हैं। फिर भी मैं कहूंगा कि अभिनेता की ट्रेनिंग अपनी मातृभाषा में होनी चाहिए इसके लिए अखिल भारतीय स्तर पर नए काम की जरूरत है।"[8]

स्थानीय तत्त्वों को महत्त्व देते हुए हबीब इस बात को कतई स्वीकार नहीं करते कि समस्या किसी और की हो और उसके लिए समाधान कोई करे और उसके लिए बेचैन कोई और रहे। अपने से परे दूसरे वर्ग की समस्या मैं बेहतर समझता हूं अथवा उसका समाधान भी मेरे पास है, यह मानना अपने आप में बड़ा भारी ढोंग एवं फरेब है। जो थिएटर सार्वजनिक रूप से सार्वजनिक मंच पर ऐसा प्रदर्शित करते हैं, उनसे हबीब साहब को सख्त परहेज है। हबीब तनवीर के लिए छत्तीसगढ़ी कलाकारों के साथ काम करना केवल विचारधारात्मक चुनाव नहीं था एस्थेटिक चॉइस भी थी। उनकी स्पष्ट धारणा है कि 'हर इलाके की अपनी समस्या होती है, उसे उस इलाके के लोग बेहतर ढंग से समझते हैं। हां उनके साथ घुल–मिलकर उनके निरंतर साहचर्य से आप शायद उनकी समस्याओं का कोई हल ढूंढ सकें। लेकिन बाहर रहकर किसी दूसरे वर्ग की किसी भी समस्या के हल तक आप नहीं पहुंच सकते। इलाकाई समस्या का हल इलाके

के पास ही हो सकता है।"[9]

दूसरी–तीसरी सदी में ही स्थापित हो चुका है "नाट्य से पार पाना संभव नहीं, इस भौतिक जगत में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका अधिग्रहण नाट्य में न किया जा सके। नाट्य अनेक शिल्पों, अगणित कलाओं, नाना शास्त्रों तथा अनंत प्रकार के भौतिक दैविक व्यवहारों का प्रत्यक्ष प्रयोग होता है।"[10] अर्थात एक ऐसी कला जिसमें सभी कलाओं को समा लेने की शक्ति है, उसके लिए सॉफस्टिकेशन के बहाने सारे स्थानीय संस्कार, सारा इलाकाईपन, चाल–ढाल, ध्वनि, मिथक, मुहावरे, लोक कथाएं, लोकोक्तियां, लोक नृत्य संगीत आदि को झाड़–पोंछ कर निकालने की आवश्यकता नहीं है। उसे एक समन्वित शक्ति के रूप में बरता जा सकता है, यह सहूलियत रंगमंच देता है। रंगसंप्रेषण सिर्फ भाषा का मोहताज नहीं होता, इसके अपने कई माध्यम हैं, सबसे पहला माध्यम अभिनेता है। अभिनय के बल पर, वह रंगभाषा तैयार करता है, रंगभाषा भाषा से परे होती है, इसके बल पर वह मूक रहकर भी अपनी बात पहुंचा सकता है। भाव सार्भौमिक होते हैं, भाषा वहां आड़े नहीं आती। पर वह जिस भाषा या बोली को सबसे सहजता के साथ बरतता आया है, उसी में अभिनय कर पाना अभिनेता को बहुत अधिक संपन्न करता है। हबीब तनवीर के 'चरणदास चोर' के देश–विदेश के सफल मंचन और हाल के वर्षों में समागम रंगमंडल द्वारा 'अगरबत्ती' (लेखक– आशीष पाठक, निर्देशक– स्वाति दूबे) का दिल्ली, चंडीगढ़ और मुंबई में सफल मंचन, अभिनेता की शक्ति के परिचायक हैं। यहां क्रमशः छत्तीसगढ़ी और बुंदेली कलाकार उनकी अपनी भाषाओं और उनके अपने सच्चे भूगोल की कहानियां, कहानियों का समय दर्शकों के सामने प्रस्तुत करते हैं, और यह दर्शक को अपूर्व संतुष्टि देता है।

"अगर रंगमंच फिर से अपनी उस जरूरत का एहसास कराना चाहता है तो उसे वह सब कुछ पेश करना चाहिए– प्रेम, युद्ध, विक्षिप्तता, अपराध और पागलपन। प्रेम, व्यक्तिगत अभिलाषा, हर दिन की परेशानियां, दिक्क़तें, इस सबके कोई मायने नहीं हैं अगर उनका संबंध महान जनता द्वारा स्वीकृत और मान्य भयावह विस्मयकारी काव्य प्रगतितत्व प्राचीन गीतों के मिथकों में दर्शाए गए मानक स्रोतों से नहीं बनता।"[11]

संदर्भ

1. पृ. 121, अभिनय चिन्तन : स्तानिस्लाव्स्की, ग्रोतोव्स्की और आर्तोय दिनेश खन्ना
2. वही.
3. पृ. 4, हिंदी नाटक का आत्म संघर्ष, गिरीष रस्तोगी
4. पृ. 78, अभिनय चिन्तन : स्तानिस्लाव्स्की, ग्रोतोव्स्की और आर्तोय दिनेश खन्ना
5. पृ. 2, हिंदी रंग आंदोलन तथा हबीब तनवीरय कुसुमलता मलिक
6. https://www.youtube.com/watch?v=3-4VjMgnnRQ (46:05)
7. https://www.youtube.com/watch?v=3-4VjMgnnRQ (50:20)
8. पृ. 64, हबीब तनवीर एक रंग व्यक्तित्वय प्रतिभा अग्रवाल
9. पृ. 37, हबीब तनवीर एक रंग व्यक्तित्वय प्रतिभा अग्रवाल
10. नाट्य शास्त्र
11. पृ. 122, अभिनय चिन्तनः स्तानिस्लाव्स्की, ग्रोतोव्स्की और आर्तोय दिनेश खन्ना

❑❑❑

बांग्ला लोकगीतों में भाषाई परिप्रेक्ष्य

–तृष्णा रॉय

बांगला संगीत सदियों पुरानी धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष संगीत परंपरा को संदर्भित करता है। ऐतिहासिक बंगाल क्षेत्र अब स्वतंत्र बांग्लादेश और भारतीय राज्यों में विभाजित है। बंगाली भाषा में रचित और संगीत की विभिन्न शैलियों से समृद्ध बंगाली संगीत इन दोनों क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है। समय और भौगोलिक दृष्टि से मानक भाषा के सटीकता बदलते हैं। बंगाली बोली बंगाली भाषा की सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली है।

व्यक्ति के विसर्जन और निर्माण में आदि मानव के सामूहिक कल्याण की इच्छा ही इसका प्रमुख कारण था और आज जब हमारा यह समकालीन समाज अपने विकास की चरम सीमा को छूना चाहता है तो सामूहिक चेतना और निष्ठा संसार में मनुष्य अधिकाधिक उत्कृष्ट कर जाता है। यदि लोकभावना की उत्पत्ति पर विचार करें तो वेदों में, विशेषकर ऋग्वेद में लोक और भाव शब्द की उपलब्धि प्राप्त होगी। गीता में 'लोक' शब्द का प्रयोग 'अतोस्मि लोके वेद च प्रथिथा पुरुषोत्तम' के रूप में सभी लोगों के लिए किया गया है, जिसका अर्थ है 'बिना किसी सीमा के शाश्वत सार'।

संस्कृति मानव जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धियों की समग्रता है। इस परिप्रेक्ष्य में संस्कृति मानव विचार, रीति–रिवाज, परंपरा, लोकाचार, विश्वास, मूल्य, धर्म, कला, साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि का प्रतिनिधित्व करती है। लोक जीवन और लोक भाषा को उत्सवों, लोकनाटकों, लोकगीतों, लोकनृत्य, लोककथाएं आदि। अपने समय, प्रजाति और परिवेश के आधार पर मौखिक परंपरा ने रूप धारण करने तक अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं, लेकिन फिर भी इसने अपना वर्चस्व बनाए रखा है।

बंगाली जातीयता और संस्कृति का पोषण करने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण स्थलाकृतिक विशेषता इसकी प्रकृति की प्रचुरता है। लेकिन जहां तक बंगाली समुदाय की मौखिक परंपराओं का संबंध है, वे अभी भी उन क्षेत्रों की परंपराओं को आगे बढ़ा रहे हैं जहां से वे पूर्व औपनिवेशिक बंगाल में आए थे।

लोक गीत अकेले या कोरस में गाए जा सकते हैं। यह गीत साहित्य में उपलब्ध नहीं है। फील्ड वर्क से इन गीतों को संग्रह किया जाता है। व्यक्तिगत रूप से गाए जाने वाले लोक गीतों में बाउल, भटियाली, मुर्शीदी, मरफती शामिल हैं, जबकि कोरस में गाए जाने वाले गीतों में कविगान, लेटो, अल्कप और गंभीरा शामिल हैं। ऐसी लुप्त होती धुनों को पुनर्प्राप्त करने का प्रयास है और यह पता लगाने का प्रयास है कि विभिन्न स्थानों पर गाए जाने वाले लोक गीतों का भाषिक दृष्टिकोण क्या है।

त्रिपुरा के 3 जिलों (उनाकोटी, पश्चिम और दक्षिण जिलों) के बंगाली लोक गीत गायकों के कई छोटे समूहों थे। 72 बंगला लोकगीतों का संकलन किया गया था। त्रिपुरा के विभिन्न रीति–रिवाजों और त्योहारों के अनुसार गीतों का वर्गीकरण किया गया है।

श्रेणियां हैं– 1. कार्यात्मक गीत या सामयिक गीत 2. अनुष्ठान गीत 3. प्रेम गीत 4. कैलेंडर गीत 5. कार्य गीत 6. भक्ति या धार्मिक गीत 7. कीर्तन 8. नृत्य गीत 9. काव्य गीत 10. शोक गीत।

मेले और त्यौहार : पौष मेला, तीर्थमुखेर मेला, बैशाखी मेला, नीरमहल का मछली और नाव उत्सव, चरक मेला या गजन उत्सव, नबान्न उत्सव, माघी पूर्णिमा, भ्रमकुंड मेला आदि।

क्रियात्मक गीत : परंपरागत रूप से वे गीत जो किसी निश्चित अवसर पर या भारतीय पंचांग की किसी विशिष्ट तिथि पर गाये जाते हैं, क्रियात्मक गीत कहलाते हैं। इस तरह के गीत पारिवारिक बंधनों को पार करके एक बड़ी सांप्रदायिक सभा में गाए जाते हैं। एक बंगाली कहावत है कि 'बारो माशे तेरो पारबन (बारह महीनों में तेरह त्योहार होते हैं) जो अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि बंगाली कैलेंडर धार्मिक अनुष्ठानों से भरा हुआ है, जो एक भीड़ लोक देवताओं की पूजा की पेशकश है। चैत्र मास में कंपकंपी गाजन, वैशाख मास में काल भैरव, कार्तिक मास में कार्तिक पूजा, मनशा पूजा, शीतला पूजा आदि के रूप में शिव की आराधना से संबंधित अनेक गीत हैं। विभिन्न ब्रत से जुड़े गीत हैं जैसे अकुलानी ब्रत, माघमंडलर ब्रत आदि।

अनुष्ठानिक गीत : वे गीत जो बंगाली परिवार के जीवन भर विभिन्न सामाजिक प्रथाओं या प्रथागत अनुष्ठानों से जुड़े होते हैं जैसे शातिर गान (नामकरण समारोह), विवाह समारोह जिसके विभिन्न भाग कई दिनों तक फैले रहते हैं, साध बक्खन (उम्मीद करने वाली माँ का भोज समारोह), अन्नप्राशन (बच्चे को चावल खिलाने की पहली रस्म) इत्यादि। लेकिन विवाह गीत अनुष्ठान गीतों के लगभग प्रमुख खंड हैं। एक बंगाली शादी कई दिनों तक चलती है जिसमें कई रस्में होती हैं जैसे जल भरा (पानी भरना) रस्म, मंगलाचरण (होने वाली दुल्हन को आशीर्वाद देना), बार बरन गान (दुल्हन का स्वागत करना), अंगटी खेलर गान (रिंग गेम) समारोह, बौभातेर गान (नई दुल्हन की दावत) समारोह आदि। विवाह गीत राधा कृष्ण कथा या रामकथा के वर्णन के माध्यम से लोक जीवन और भावनाओं का जश्न मनाते हैं। इनमें से अधिकांश गीत विशेष महिला समूहों और लड़कियों द्वारा गाए जाते हैं, जिसके कारण उन्हें महिला गीत भी कहा जाता है।

भक्ति या धार्मिक गीत : वे गीत जो सर्वशक्तिमान या कुछ अवतारों या किसी गुरु के लिए उपासकों की भक्ति और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, भक्ति गीत हैं। बाउल गीत मध्य युग से गौर निताई (चैतन्यदेव और नित्यानंद) के सम्मान में गाए जाने वाले एक प्रकार के भक्ति गीत हैं।

कीर्तन : कीर्तन इस राज्य में लोक संगीत का एक बहुत ही लोकप्रिय रूप है, जो नियमित रूप से मंदिरों में, परिवार के देवता के सामने, किसी पंचांग अनुष्ठान के दौरान, परिवार में किसी की मृत्यु के बाद आदि में किया जाता है। त्रिपुरा के लगभग हर स्थानीय बाजार में पौष–माघ मास में 31 दिनों का कीर्तन चौबीसों घंटे होता है। कीर्तन दो प्रकार का होता है, नाम कीर्तन और लीला कीर्तन। नाम कीर्तन के दौरान, कृष्ण का नाम बार–बार गाया जाता है, जबकि लीला कीर्तन राधाकृष्ण के जीवन में विभिन्न प्रसंगों का वर्णन करता है।

काव्य गीत : काव्य गीत या कविगान लोक गीतों की एक अन्य लोकप्रिय शैली है, जो दुर्गा पूजा के मौसम से शुरू होती है और पूरे सर्दियों के मौसम में जारी रहती है। यह आम तौर पर

राजाओं या जमींदारों द्वारा संरक्षित विशेष समूहों में किया जाता है, जहां रचनात्मक गायक कवि, अमीरों और समृद्ध लोगों के लिए पारंपरिक गीतों के पुराने संस्करणों को गाते है।

प्रेम गीत : प्रेम गीत लोक जीवन का एक अनिवार्य घटक है, जो राधा कृष्ण या अन्य लोक कथाओं की शाश्वत प्रेम कहानी से प्रेरित है। भटियाली त्रिपुरा के कई निचले जिलों में प्रचलित लोक संगीत की एक बहुत लोकप्रिय शैली है।

कैलेंड्रिक गाने : कैलेंड्रिक गाने मूल रूप से साल भर बंगाली महिलाओं के जीवन में सांसारिक घरेलू गतिविधियों का वर्णन करते हैं। इनमें ऋतुओं के चक्र में परिवर्तन के अनुरूप नियमित अनुष्ठानों या मौसमी गतिविधियों के दौरान गाए जाने वाले गीत शामिल हो सकते हैं।

कार्य गीत : ये वे गीत हैं जिन्हें किसी प्रकार का शारीरिक कार्य करते समय गाया जाता है। कभी–कभी गीतों का एक समूह केवल एक विशेष कार्य के लिए निर्धारित किया जाता है और इसे कभी भी किसी अन्य प्रकार के शारीरिक कार्य के लिए नहीं गाया जाता है। बीज बोना, धान की रोपाई, हाथ से भूसी निकालने–बुनने या छत बनाने आदि से जुड़े गीत इसी श्रेणी में आते हैं, जो श्रमिकों को काम की नीरसता से उत्पन्न होने वाली नींद से छुटकारा दिलाने में मदद करते हैं। सारि गान एक विशेष प्रकार का कार्य गीत है जो नावों और पानी से जुड़ा होता है। यह समूह की भावना को प्रेरित करता है और मल्लाहों और नाव के मनोबल को गहरा करता है, जो बड़ी गति से पानी के माध्यम से अपना जीविका निर्वहन करते है।

शोक गीत : शोक गीतों का सबसे आम रूप कीर्तन है, जो श्राद्ध समारोह के दौरान गाया जाता है। विषयवस्तु पारंपरिक रूप से रामायण, महाभारत या चैतन्य कथा से ली जाती है और व्यक्तिगत दुःख को बढ़ाने और उन्हें एक पारलौकिक स्तर तक शांति कामना करने पर जोर दिया जाता है।

महिला लोक गायकों के समूह के साथ गायन और वाद्य यंत्रों में पुरुष होते हैं। उन टीमों को विभिन्न अवसरों पर प्रदर्शन करने के लिए बुलाया जाता है और प्रदर्शन लोकनृत्यों या 'जात्रा पाला' से भी समृद्ध होते हैं। अनुष्ठानों और पारंपरिक अवसरों के अलावा, सांस्कृतिक समारोहों में मंच प्रदर्शन के रूप में ग्रामीण लोक गीत की मांग भी रहती है। त्रिपुरा में लोक गीत प्रतियोगिताएं जिला स्तर पर भी आयोजित की जाती हैं। जैसे–मनशामंगल प्रतियोगिता।

भाषाई परिप्रेक्ष्य

बांग्ला संगीत सदियों पुरानी धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष संगीत परंपरा को संदर्भित करता है। ऐतिहासिक बंगाल क्षेत्र अब स्वतंत्र बांग्लादेश और भारतीय राज्यों में विभाजित है। बंगाली भाषा में रचित और संगीत की विभिन्न शैलियों से समृद्ध बंगाली संगीत इन दोनों क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है। समय और भौगोलिक दृष्टि से मानक भाषा के सटीकता बदलते हैं। बंगाली बोली बंगाली भाषा की सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली है। यह बांग्लादेश के खुलना, बरिसाल, ढाका, मैमनसिंह, सिलहट और कोमिला डिवीजनों और भारत के त्रिपुरा राज्य में बोली जाती है। जिसे आज शुद्ध उच्चारण माना जाता है, कल अशुद्ध माना जा सकता है। लोक साहित्य में अशिक्षित रसिक जनमानस के हृदय की सहज अभिव्यक्ति होती है। लोकगीत उस अभिव्यक्ति का गेय रूप है। गीतों का निर्माण व्यक्ति करता है, कभी ऐसा भी होता है की एक रचना कोई एक करता है तथा अन्य सभी अलग कड़ियां जोड़ देते हैं। ग्रामीण लोग या शहर में बसा हुआ

ग्राम्य समाज अनपढ़ या निरक्षर भले ही हो सकते हैं किन्तु उनके आस–पास घटित हो रहे लोकजीवन की सच्चाई और अनुभवों का इतना विराट संसार होता है कि अव्यक्त को सहजता से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। यदि समाज के सभी स्तरों के लोग शुद्ध उच्चारण के अभ्यस्त हो जाएँ, तो सभी के लिए मानक उच्चारण के प्रभाव में बोलियों का स्वर–विज्ञान बदल जाएगा। दुनिया के कई देशों में लोग तथाकथित शुद्ध उच्चारण के सुधार से मुक्त हो जाते हैं और समझते हैं कि जो कुछ हर कोई नहीं कर सकता वह कुछ हद तक कृत्रिम, असामान्य और मानक उच्चारण सभी मामलों में स्वीकार्य नहीं है। पल्लीगीत या लालनगीत गाते समय, मानक के बजाय क्षेत्रीय उच्चारण सुनना अच्छा लगता है। बंगाली में बोली संबंधी अंतर तीन रूपों में प्रकट होते हैं– मानकीकृत बोली बनाम क्षेत्रीय बोली, साहित्यिक भाषा बनाम बोलचाल की भाषा और शाब्दिक (शब्दावली) भिन्नता।

बोलियों का नाम आम तौर पर उस जिले से उत्पन्न होता है जहां भाषा बोली जाती है। जबकि भाषा का मानक रूप दक्षिण एशिया के बंगाली भाषी क्षेत्रों में बहुत भिन्नता नहीं दिखाता है, बोली जाने वाली बंगाली में क्षेत्रीय विविधता एक बोली निरंतरता का गठन करती है। अधिकतर भाषण केवल कुछ मील की दूरी पर भिन्न होते हैं और धार्मिक समुदायों के बीच अलग–अलग रूप लेते हैं। बंगाली हिंदू संस्कृतीकृत बंगाली (साधु भाषा के अवशेष) में बोलते हैं, बंगाली मुस्लिम तुलनात्मक रूप से अधिक फारसी–अरबी शब्दावली का उपयोग करते हैं और बंगाली ईसाई अपने स्वयं के मंडलियों में संलग्न होने पर ईसाई बंगाली में बातचीत करते हैं। वर्तमान बोलियों के अलावा कुछ और भी हैं जो लुप्त हो चुकी हैं।

लोकगीत साम्प्रदायिक जीवन की उपज हैं। आधुनिकता की शुरुआत और सांप्रदायिक और बड़े पारिवारिक ढांचे के विघटन के साथ, मौखिक परंपराएं लुप्त होती जा रही हैं। लोक गीतों का समृद्ध भंडार एक जातीय समूह के रूप में बंगाली समुदाय के विकास और क्रमागत उन्नति का पता लगाता है।

यह प्रयास ऐसी लुप्त होती धुनों को पुनर्प्राप्त करने और विश्लेषण करने का था कि कैसे पुरुष एवं महिलाएं मिलकर समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक संभावनाओं को विकसित करने में और लोकगीतों के मूल्य को बढ़ाने में मदद करती हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ गीत–

बंगला विवाह लोकगीत –

(कुंज में यह गीत गाया जाता है)
आई सो गो वृन्दावोने / शुभ लोगनो देखा जाय गो
हाथे – हाथे धोरा –धोरी / आर कुंजे नाचे शब नागोरी।
राधा कृष्णो नृत्य कोरे / नुपुर पाए दिए गो।

(हिंदी अनुवाद)
ओ जी चलो वृंदावन में / आओ शुभ लग्न दिखाई पड़ रही है
हाथों में हाथ है और / कुंज में नगर वासी नृत्य करते हुए मस्त है
अरे राधा कृष्ण नृत्य करें घुंगरू पैर में पहन के रे / घुंगरू पैर में पहन के

बंगला प्रेम लोकगीत– (भटियाली गीत)

के जास रे भाठीगंग बैया? आमार भाई धन रे कोइयो नैयोर नीतो बोइला? तोरा के जास,के जास? बोचोर खानी गहिरा गेलो गेलो रे? भैयेर देखा पैलम न पैलम? कोइल्जा आमर पुड़रा गेलो गेलो रे? छिलम रे कोटई आशा लोइया? भाई न आईलो गेलो गेलो रोथेर मेला चोइला? तोरा के जास के जास? प्राण कंडे कंडे? प्राण कंडे कंडे प्राण कंडे रे प्राण कंडे? नोयों झोरे झोरे नोयों झोरे रे नोयों झोरे? पोदा मनरे बुझैले बोझेना? प्राण कंडे कंडे प्राण कंडे ? शुजों माझी रे भिरे कोइयो गिया? न आसिले स्वपोनेते देखा दितो बोइला? सिन्दुरिया मेघ उईरा आईलो रे? भैयेर खोबोर आन्लो न आन्लो न? भतीर चोरे नौका फिरा आईलो रे? भैयेर खोबोर आन्लो न आन्लो न? निदोय बिभी रे तुमि सदय होइया? भिरे आइनों नोइले अमर पोरं जबे जोइला? तोरा के जास के जास

(हिंदी अनुवाद)

कोन जाते हो मेरे भाटीगंग भाईया / मेरे भैया को जाके कहो
मुझे मायके लेके जाने के लिए / एक साल खतम हो गया
पर भाई से मुलाकात नही हो पाया / मेरा कलेजा ज्वाल के राख हो गया
पर उनसे मुलाकात न हुई / हम बहुत आशा मन मे पाल रक्खे थे
पर भाई नहीं आया / और रथ का मेला खतम हो गया
प्राण रोता है, नयन झरते हैं / यह दिल अब समझता नहीं
सुजोन माझी भाई आप ही कृपा करके / भाई को जाकर बोलो
ना आने पर स्वप्न में मुझे आके वह मिले / बादल भी मेरे भाई की खबर नहीं लाया
भाटी के किनारे नाव भी आ गया / पर भाई का खबर न लाया
हे विधाता तुम जाकर मेरे भाई को ले आओ / नहीं तो मेरा प्राण का नाश हो जायेगा

लोकदेवता 'त्रिनाथ' के गीतों का संकलन एवं अनुवाद –
बंगला लोकगीत (१)–

ठाकुर त्रिनाथ साजाबो बनफुले गो सजनी
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो वनफुले।
सजनी गो, अष्ट गाछेर अष्ट फूल माँ आनो गो तुलीया।
ठाकुर तृणाथेर आसने पुष्प देउ ना सजाया गो सजनी।
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो बनफूले।
है सजनी गो छुआरे चंदन लोउगो कटोरा भूरिया,
ठाकुर त्रिनाथेर आसने चंदन देउना गो टाईया गो सजनी,
ठाकुर त्रिनाथ साजाबो वनफुले।
सजनी गो गाजा लव जटार जटा ताते सादा देउ मिशाया।
ठाकुर त्रिनाथेर आसने कलकी देउना सजाया गो
सजनी ठाकुर नाथ साजाबो वन फुले।

अनुवाद–

ठाकुर त्रिनाथ को हम बनफूल से सजाएंगे, ठाकुर त्रिनाथ को बनफूल से सजाएंगे।
सजनी आठ वृक्ष से आठ फूल तोड़ कर लाओ, ठाकुर नाथ के आसन में पुष्प सजा कर दो
सजनी, ठाकुर नाथ को बनफूल से सजाएंगे।
सजनी कटोरा भर चंदन लेकर आओ, भगवान त्रिनाथ के आसन में चंदन ड़क दो,
सजनी, भगवान त्रिनाथ को हम बनफूल से सजाएंगे।
सजनी हाथ में गांजा लो एवं उसमे सिद्धि दो,
भगवान त्रिनाथ के आसन म कलकी दो सजनी,
भगवान त्रिनाथ को हम बनफूल से सजाएंगे।

बंगला लोकगीत (२)–

तुम दया कर एसो आमार बाड़ीते / अ भोलानाथ तुमी दया कर एसो आमार बाड़ी।
भोलानाथ तुमी शशाने थाको मुखे बोलो होरी, / अनप्रूणा मां के आमार रेख कैलाशपुर
हे भोलानाथ तुम दया कर एसो आमार बारीते। / तुम दया करे एसो गो आमार बाड़ी।
भोलानाथ तुमी भांग खाओ धुतुराओ खाओ मुखे बोलो हरी,
परमार हस्ते त्रिशूल शोभे है शिरे जटाधारी
हे भोलानाथ तुमी दया करे एसो आमार बाड़ी।

अनुवाद–

भगवान तुम हम पर दया करो और हमारे घर आकर पधारो,
हे भोलानाथ तुम दया करके हमारे घर मे पधारो।
हे भोलानाथ तुम स्मशान मे रहते हो लेकन हरी नाम जप करते हो,
तुम मेरे अन्नपूर्ना मां को कैलाश में रखकर स्मशान आकर ध्यान करते हो।
तुम दया करके हमारे घर पधारो।
हे भगवान तुम हमारे घर पधारो।
भोलानाथ तुम भांग खाते हो धतुरा भी खाते हो, लेकन हरी नाम जप करते हो।
तुम्हारे हाथ मे त्रिशूल शोभा पाती है, और तुम्हारे माथे पर जटा
भोलानाथ तुम दया करके हमारे घर पधारो।

बंगला लोकगीत (३)–

तीन पयसाय होय बाबार मेला
कलीते तीन–नाथेर मेला।
एक पयसार सिद्धि एने तिन कलकि साजाए
साधु रे भाई कलीते तीन–नाथेर मेला।
एक पयसाय पान एने तीन खिली साजाए
साधु रे भाई कलीते तीन–नाथेर मेला।

एक पयसाय तेल एने तीन बात्ती जालाएं
बात्ति जालए दिले निभेनारे ताँर एक आजब लीला,
साधु रे भाई कलीते तीन–नाथेर मेला।

अनुवाद–
तीन पैसे से बाबा भोलानाथ के मेले होते है।
कलीयुग में तीननाथ के मेले होते है।
एक पैसे का सिद्धि लाया जाता है, इससे तीन कलकी दी जाती है।
साधु भाई कलीयुग में तीननाथ के मेले लगी है।
एक पैसे से पान लाकर इससे तीन पत्ते सजाते हो,
साधु रे भाई कलीयुग में तीननाथ के मेले लगी है।
एक पैसे से तेल लाकर तीन दिए जलाते हो,
जलाने के पश्चात वह भी और बुझती नहीं।
यह आश्चर्य की बात है।
साधु रे भाई कलीयुग में तीननाथ के मेले हो रहे है।

बंगला लोकगीत (४)–
दिन गेलअ त्रिनाथेर नाम लोईयो
साधू रे भाई लैयो नामटी परम जतने
साधु रे भाई दिन गेलो त्रिनाथेर नाम लोईया।
लैयो नामटी परम जतने।

अनुवाद
दिन ढलने से नाथ का नाम लेना मत भूलना
रे साधु भाई दिन जाने पर भी त्रिनाथ का नाम लेना।
इस नाम को जतन के साथ लेना साधु भाई
इस नाम को जतन के साथ लेना।

इन लोक संगीत के माध्यम से मौखिक भाषा का संरक्षण एवं संचार किया जा सकता हैं। लोक समाज का विकास और अन्य भारतीय समुदाय के पारंपरिक सम्बन्ध भाषा को विश्व द्वार पर और समृद्ध करने में अधिक सहायक प्रतीत होता है।

❒❒❒

त्रिपुरा विश्वविद्यालय
मोबाइल– 8837436178 ईमेल –roytrishna91@gmail. com
मुख्य लेखक की संख्या –1
मध्य बनमालीपुर, नियर बाप्पीराज फर्नीचर, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा–799001

वैश्विक पटल पर भाषा का प्रश्न

–डॉ. मंजू कुमारी

21वीं सदी में हिन्दी भाषा का लगभग साहित्य इंटरनेट पर उपलब्ध है। जो साहित्य अभी इंटरनेट पर नहीं आ सका है उसके लिए भी काम जारी है। एम.एच.आर.डी., यू.जी.सी. के द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य का स्नातकोत्तर का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम ई.पी.जी. पाठशाला के नाम से ऑनलाइन उपलब्ध है। अब घर बैठे उसको कोई भी कहीं से इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य से संबंधित ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

बीज शब्द : 'वैश्वीकरण, आभासी पटल, संक्रमणकालीन समाज, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रिंट इलेक्ट्रोनिक मीडिया, भाषिक संवेदना, वसुधैव कुटुम्बकम, उपभोक्तावादी संस्कृति, वैश्विक समाज, वर्चुअल रिअलिटी. सप्लाई और डिमांड आदि।'

सारांश : भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भावों एवं विचारों को एक–दूसरे तक आसानी से पहुंचा पाते हैं। समाज की निर्मित किसी भाषा के माध्यम से ही संभव है, भारतीय समाज में हिन्दी भाषा और उसका साहित्य बहुत विस्तृत स्तर पर मौजूद है। साहित्य ही वह जरिया है जिसके माध्यम से तत्कालीन समय एवं समाज की स्थिति को समझा जा सकता है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है– 'समाहार की संस्कृति' जो भी यहाँ आता है वह इस देश के तीज–त्यौहार, मूल चेतना, व्यक्तियों के स्वाभिमान इत्यादि से इतना प्रभावित होता है कि यहीं का बनकर रह जाता है। इस समाहार की संस्कृति की बदौलत हिन्दी भाषा का बहुत विकास हुआ है। उसने अन्य भाषाओं के शब्दों जैसे– अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, पुर्तगाली आदि के शब्दों को सहजता से आत्मसात किया है। हिन्दी ने सदैव ही शरणागत की रक्षा की है। विविधता में एकता इसकी विशेषता रही है। हिन्दी भाषा की यही विशेषता उसे आज वैश्विक दौर में वैश्विक पटल पर भी अपना वजूद कायम रखने की सामर्थ्य प्रदान करती है।

आज 21वीं सदी के दौर में वैश्वीकरण के मुख्य वाहक के रूप में 'बाजार और सूचना प्रौद्योगिकी' की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'सूचना–प्रौद्योगिकी' का सीधा सम्बन्ध भाषा से है। बिना किसी भाषा के माध्यम से 'सूचना प्रौद्योगिकी' यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। क्योंकि सूचना का जंजाल भाषा की ही देन है। भाषा के माध्यम से ही संवाद स्थापित किए जा सकते हैं। वर्तमान दुनिया 'वर्चुअल रिअलिटी' सूचना के आधार पर गतिशील हो संचालित हो रही है। अब बिना सूचना के वर्तमान दुनिया में गतिशीलता लाना सम्भव नहीं रहा। किसी भी देश की गतिशीलता के लिए अर्थात विकसित होने के लिए आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय भूमिका

अदा करने का काम वह सूचना और भाषा के माध्यम से ही सम्भव है। आज की दुनिया शारीरिक कम मानसिक कार्य ज्यादा मात्रा में करने के प्रति सक्रिय है जिसका एक मात्र आधार भाषा है। वह भारतीय साहित्य हो या किसी भी देश या भाषा का साहित्य हो, अब वह किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित न रहकर पूरे विश्व स्तर पर 'वर्चुअल दुनिया' में उपलब्ध हो चुका है। जिसे कहीं से भी ऑनलाइन प्राप्त किया जा सकता है। इंटरनेट की दुनिया में 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का भविष्य उज्ज्वल है। "इक्कीसवीं सदी कई अर्थों में विकास की सदी है। सूचना–प्रौद्योगिकी ने तो इस सदी में सबसे अधिक विकास किया है। आज विश्व को जितना सबल, सुलभ, समुन्नत और सशक्त बनाने में अन्य संसाधनों का महत्त्व है, उससे कहीं अधिक 'सूचना प्रौद्योगिकी' का महत्त्व है। उसके माध्यम से ही मानव को एक–दूसरे के निकट लाने का काम किया जा रहा है। जिससे उसकी भौगोलिक दूरियां ही समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसकी मानसिकता में भी परिवर्तन आया है। अब पहले से भी अधिक उदार, ज्ञानसम्पन्न, सहयोगी, सभ्य, समन्वयी, संकीर्णता से मुक्त, सुविधा सम्पन्न और रचनाशील प्रवृत्ति से युक्त है।"[1]

वर्तमान दुनिया में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से भाषा का विकास तीव्र गति से हो रहा है। इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी भाषा वैश्विक स्तर पर संवाद स्थापित करती हुई सम्प्रेषणीय बन रही है। "हिन्दी समकालीन भूमण्डलीकरण के दौर में तेजी से एक सशक्त, सर्वत्र उपस्थित विश्वभाषा बन चली है। उसके अनेक स्तर, अनेक रूप, अनेक शैलियाँ हैं और एक नयी अन्तरंग किस्म की बहुलता है। मुक्त बाजार, ग्लोबल, जनसंचार, तकनीकी क्रांति और हिन्दी क्षेत्रों के विराट उपभोक्ता बाजार ने हिन्दी को एक नयी शिनाख्त और ताकत दी है।"[2] वर्तमान दुनिया में हिन्दी कथा–कहानी या कहें कि कविता तक ही सीमित न होकर, वह विश्व स्तर पर संवाद स्थापित कर हिन्दी भाषा में व्याप्त आकंठ ज्ञान का चहुमुखी प्रसार–प्रचार कर रही है। "जब हम हिन्दी साहित्य की आज बात करते हैं, तब उसे खड़ी बोली में रचित काव्य–कृतियों तक ही सीमित नहीं करते, इसमें प्रसाद, पन्त, निराला, प्रेमचन्द, अज्ञेय, मुक्तिबोध, आदि की रचनाओं के साथ–साथ अवधी, ब्रज, मैथिली आदि बोलियों के साहित्यकार यथा जायसी, सूर, तुलसी, विद्यापति, आदि की कृतियों को भी समाहित करने में संकोच नहीं करते। इन विभिन्न बोलियों के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाला साहित्य एक है क्योंकि इनकी रचना करने वाले हिन्दी भाषाई समाज की जातीय अस्मिता एवं साहित्यिक चेतना एक है।"[3]

वर्तमान समय में हिन्दी इंटरनेट की भाषा के रूप में पूरे विश्व में फैल चुकी है। अंग्रेजी की भांति हिन्दी विश्व प्रसिद्ध भाषा के रूप में विराजमान हो चुकी है। वैश्विक दौर में हिन्दी की बोलियों पर स्थानीयता का प्रभाव देखा जा सकता है। बहुत ही रोचक और जीवंत रूप में साहित्य के माध्यम से बोलियों का प्रयोग किया जा रहा है। "आज पूरे संसार में करीब 2800 भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें से 12 भाषाएँ मात्र साहित्यिक महत्त्व की हैं। यदि बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से देखें तो सारे संसार में पहला स्थान चीनी भाषा का, दूसरा स्थान अंग्रेजी का और तीसरा स्थान हिन्दी का है। हिन्दी भाषा का प्रचलन भारत, नेपाल, मलेशिया, इंडोनेशिया, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, मोरिशस, ट्रिनिडाड एवं टोबैगों जैसे करीब पचास देशों में हैं।"[4] आभासी दुनिया के विश्व पटल पर हिन्दी भाषा और साहित्य विकसित हो दुनिया के कोने–कोने तक पहुँच रहा है और साथ ही साथ हिन्दी भाषा बोल–चाल सम्वाद स्थापित करने के एक भाषायी

माध्यम के रूप में विकसित हो रही है। इस संदर्भ में "भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति भाषा का प्रयोग अपने परिवेश, स्थिति तथा संदर्भ के अनुसार करता है' आज के परिवेश एवं संदर्भ के अनुसार हिन्दी भाषा केवल साहित्यिक या सम्प्रेषण की भाषा नहीं रही। वह तो कामकाज, कार्य पद्धति, विज्ञान, तकनीक, प्रौद्योगिकी, विधि चिकित्सा, वाणिज्य के साथ–साथ संगणक, सेल्युलर, इंटरनेट, सैटेलाईट सूचना सुपर हाइवे की भाषा बनने लगी है। संचार माध्यमों की समाज सापेक्ष्य सेवा माध्यम (सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त हो रही है। सामाजिक सन्दर्भ के गतिशील प्रवाह में अपने गुणों को बढ़ा रही है। वह संचार की भाषा बन भाषाई क्षमता तथा भाषा व्यवहार को गति प्रदान कर रही है। संचार भाषा के सभी गुण हिन्दी में है। जिसके कारण वह आज विश्व भाषा बन रही है।"[5] हिन्दी भाषा ही भारतीय समाज में राष्ट्र भाषा बनने के योग्य है। क्योंकि हिन्दी भाषा की सहजता मानव मन की गहराई अपनी सहज मातृभाषा में ही सम्भव होती है। हिन्दी भाषा की महत्ता को बताते हुए "सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा है कि– हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा की उन्नति बढ़ाने और उसकी सेवा करे, जिससे कि सारे भारत में वह बिना किसी संकोच या संदेह के स्वीकृत हो। हिन्दी भाषा का पट महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए जिसमें मिलकर और भाषाएँ अपना बहुमूल्य भाग ले सके। राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रान्त न किसी जाति की है। वह सारे भारत की भाषा है।"[6] हिन्दी ही वह भाषा है जिसके माध्यम से पूरे भारत वर्ष के लोगों को एकता के सूत्र में बाधा जा सकता है।

हिन्दी भाषा की कुछ महत्त्वपूर्ण "अभिव्यक्ति अनुभूति, साहित्य कुञ्ज, गद्यकोश, कविता कोश, हिन्दी युग्म, प्रवासी टुडे, प्रवासी दुनिया, प्रभा साक्षी डॉट काम ऐसी ही प्रचलित साइट्स हैं। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा ने 'हिन्दी समय' के नाम से अपना वेबसाइट शुरू किया है। इसमें बहुत से उपन्यासों, कहानियों, निबंध संग्रहों, यात्रा वृतांत, रिपोर्ताज, डायरी आदि को पढ़ा जा सकता है। अलग–अलग विधाओं की पुस्तकें यहाँ उपलब्ध है। "जो नई तकनीक है चाहे इंटरनेट हो, ई–मेल, ई–बुक, ई–कामर्स, सभी में हिन्दी का सफल प्रयोग हो रहा है। इंटरनेट पर हिन्दी की पुस्तकें, अखबार, पत्र–पत्रिकाएँ दूसरे देशों के विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित बारह हजार पृष्ठों का 'विश्व हिन्दी कोश' भी इन्टरनेट पर उपलब्ध है।...टेलीविजन तथा रेडियों में भी हिन्दी ने अपना वैश्विक स्थान बना लिया है।"[7]

21वीं सदी में हिन्दी भाषा का लगभग साहित्य इंटरनेट पर उपलब्ध है। जो साहित्य अभी इंटरनेट पर नहीं आ सका है उसके लिए भी काम जारी है। एम.एच.आर.डी., यू.जी.सी. के द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्य का स्नातकोत्तर का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम ई.पी.जी. पाठशाला के नाम से ऑनलाइन उपलब्ध है। अब घर बैठे उसको कोई भी कहीं से इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

गौरतलब है कि "भूमण्डलीकरण के औजार बाजार और मीडिया ने न सिर्फ हिन्दी को बल्कि अपनी देहरी तक सीमित अन्य भाषाओं को भी विस्तार दिया है। प्रौद्योगिकी ने इसे आसान बनाया है। एक–बार फिर भाषा निर्णायक रूप में बदल रही है। हम एक ऐसे 'संक्रमण बिन्दु' पर खड़े हैं, जहाँ से हमें भाषा की ताकत और कमजोरियों के सवाल से भी दो चार होना होगा। मीडिया में हिन्दी के बढ़ावें को देखकर जो लोग खुश हो रहे हैं, उन्होंने स्थिति पर गहराई से

विचार ही नहीं किया है। इसका अर्थ है, जनता को लगातार एक ऐसी भाषा में बनाएं रखना, जिसमें ज्ञान नहीं, दैनिक सूचनाएँ ही अधिक हो, ज्ञान का केन्द्रीयकरण इस मायने में अंग्रेजी भाषा के पक्ष में और अधिक हुआ है।"[8] कवि 'निलय उपाध्याय' की कविता में अभिव्यक्ति समाज और संस्कृति की बेचौनी का एक दृश्य–

"बेचते–बेचते
खरीद लेने वालों पर टिका था बाजार
खरीदते–खरीदते बिक जाने वालों पर टिकी थी,
यह दुनिया"

भाषा की मानवीय सम्वेदना दिन–प्रतिदिन घट रही है। सनसनी फैलाने हेतु 'मीडिया भाषा' का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा है। भाषिक संवेदना की शून्यता मात्र खबर बनकर रह गई हैं। बाजारीकृत संस्कृति ने शब्द से उसकी जीवन्तता खत्म कर उसे बेजान बना दिया है। वैश्वीकरण के इस दौर में भाषा, समाज और संस्कृति का नया रूप मीडिया की ही देन है। आधुनिकता की भाषा में कहे तो बिना मीडिया क्रांति के तथाकथित 'पिछड़े समाज और रूढ़िवादी संस्कृति से मुक्ति पाना संभव न था। भारतीय समाज और संस्कृति में जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का तात्पर्य 'पूरा विश्व परिवार है' था। वहीं दूसरी तरफ आज 'वैश्वीकरण' का मतलब– 'पूरा विश्व बाजार' है। जहाँ वस्तु बनायीं जाती है, वस्तु बेची जाती है। जहाँ समाज बाजार है, लोग उपभोक्ता हैं और बाकी जो बचे उत्पादक या व्यापारी। मानवीय सम्वेदना मात्र छल है और कुछ भी नहीं। आज के समाज की यह नई सोच है। इसलिए भी समाज की हर–एक वस्तु का वजूद उसके बाजारी मूल्यों पर आधारित होता जा रहा है। क्या भाषा का अस्तित्व भी नई सोच को आत्मसात कर लेने मात्र से बचा रह सकता है? मीडिया सूचनाओं का जंजाल है। मीडिया जब उद्योग बन जाती है तो उसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना मात्र हो जाता है। 'इसी लाभ का शिकार कहीं न कहीं हमारी भाषाएँ भी हो रही हैं। जिस कारण भाषा तो व्यावसायिक हो रही है, लेकिन भाषा की जीवन्तता पर खतरा बढ़ता जा रहा है। इस बात से इंकार भी नहीं किया जा सकता है।

समकालीन समय में अब हिन्दी केवल साहित्य की भाषा नहीं रही, बल्कि उसका चौमुखी विकास हो रहा है। हिन्दी भाषा अंग्रेजी भाषा की भांति अपना विस्तार कर रही है। हिन्दी भाषा आज साहित्य और विचार की भाषा मात्र का माध्यम न होकर सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की भी भाषा है। हिन्दी अगर आज देश के विकास की गति के साथ विकासशील से विकसित होने की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है, तो वह सूचना क्रांति रूपी मीडिया की ही देन है। जिसके माध्यम से हिन्दी भाषा का तेवर काफी हद तक बदला है। इस बात को स्वीकार करने में किसी को कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर लाने में समकालीन मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका रही है। अंततः भाषा समाज और संस्कृति की महत्ता को नेल्सन मंडेला के शब्दों में कहें तो 'जब किसी को कोई बात उस भाषा में बताते हैं जिसे वह जानता है तो कथन उसके मस्तिष्क तक पहुँचता है और जब उसकी अपनी भाषा में बताते हैं तो संवाद दिल को छू जाता है।' वर्तमान दुनिया में हिन्दी भाषा बहुत ही समृद्ध हो रही है लेकिन मानवीय संवेदना और सहजता की भांति भाषा की भी सहजता और उसकी संवेदना दिन प्रतिदिन घटती जा रही है

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। वैश्वीकृत समाज की बाजारूभाषा में मरती सम्वेदना को 'कुँवर नारायण' की कविता "भाषा की ध्वस्त पारिस्थितिकी में" की एक झलक!

एक भाषा जब सूखती
शब्द खोने लगते अपना कवित्त
भावों की ताजगी
विचारों की सत्यता
बढ़ने लगते लोगों के बीच
अपरिचय के उजाड़ और खाइयाँ"[9]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा मात्र एक भाषा या एक संवाद का माध्यम ही नहीं है बल्कि वह हम भारतीयों की पहचान और हमारा अस्तित्व है। वैश्वीकरण के इस दौर में बाजार और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी भाषा का प्रवेश उसके उज्ज्वल भविष्य का सूचक है। स्वदेश सिंह का कथन सही प्रतीत होता है कि "इंटरनेट और मोबाइल के दौर में हिन्दी और भी तेजी से उभर कर सामने आई है, क्योंकि अब तो तकनीक और भी सस्ती हुई है, साक्षरता दर और शहरीकरण भी पहले के मुकाबले काफी बढ़ा है। बाजार तो 'सप्लाई और डिमांड' पर चलता है। हिन्दी की डिमांड तेजी से बढ़ी है तो विभिन्न माध्यमों से हिन्दी का प्रसार भी तेजी से बढ़ा है।"[10] इस प्रकार इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी भाषा विश्व स्तर पर पहुँच देश के विकास में अपना योगदान दे रही है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. सम्पादक–कल्पना वर्मा, भूमण्डलीकरण और हिन्दी, पृ. सं. 331
2. वही–पृ. सं.151
3. डॉ.रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,भाषाई अस्मिता और हिन्दी, वाणी प्रकाशन, प्र. सं–1992 पृ. सं. 18
4. महिपाल सिंह, देवेन्द्र मिश्र, विश्व बाजार में हिन्दी–पृ. सं.190)
5. डॉ शैलजा पाटील, वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी–पृ.सं.30
6. वही–पृ.सं.51
7. सम्पादक–कल्पना वर्मा, भूमण्डलीकरण और हिन्दी, पृ. सं. 42
8. www.Abhivyakti-hindi.org इन्टरनेट की दुनिया में हिन्दी का भविष्य–भास्कर जुयाल–
9. http://www.hindisamay.com/content/3047/1/कुँवर–नारायण–कविताएँ–भाषा–की–ध्वस्त–पारिस्थितिकी–में
10. दैनिक जागरण, 23 अक्टूबर–2018, पृ.सं.09

❑❑❑

(हिन्दी–विभाग) रा. महा. देहरा, कांगड़ा, हि. प्र.
ईमेल – manjoo89jnu@gmail.com मो.: 8076674373

वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा का प्रश्न

—डॉ. अनुरूद्ध सिंह

संयुक्त राष्ट्रसंघ के मूल सिद्धांत शांति और सुरक्षा को स्थापित करने में हिंदी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2014 के बाद जिस प्रकार हमारी सरकार ने अपनी राजनीतिक, कूटनीतिक एवं विदेशी नीति के माध्यम से नीतियों की तेजी दी है उससे विश्व में न केवल भारत वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा है, बल्कि हिंदी के संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा बनाने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है।

हिंदी विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं में से एक है। पिछले तीन दशकों से हिंदी का प्रभाव वैश्विक पटल पर बढ़ा है। हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।[1] अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या 150 करोड़, मंदारिन (चीन) बोलने वालों की संख्या 110 करोड़, हिंदी बोलने वालों की संख्या 60 करोड और स्पेनिश बोलने वालों की संख्या 54 करोड़ है। विश्व के लगभग 46 देशों में हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था है। जिन देशों में अप्रवासी भारतीयों की आबादी देश की जनसंख्या में 40% से अधिक है, उन देशों में सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई करायी जाती है।[2] विभिन्न देशों के अधिकांश अप्रवासी भारतीय जीवन के विविध क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करते हैं एवं अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में हिंदी को ग्रहण करते हैं। तथा इन देशों के लोग हिंदी को एक 'विश्व भाषा' के रूप में सीखते हैं, पढ़ते हैं तथा हिंदी में लिखते हैं।

भारत के अतिरिक्त अन्य देश जहाँ हिंदी बोली जाती है अथवा जहाँ हिंदी का अध्ययन–अध्यापन होता है उन देशों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है[3]–

(क) वे देश जहाँ अप्रवासी भारतीय बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं –

(1) मारीशस (2) फीजी (2) सूरीनाम (4) गयाना (5) ट्रिनिडाड एण्ड टुबेगो

(ख) भारत के पड़ोसी देश–

(6) पाकिस्तान (7) बांग्लादेश (8) श्रीलंका (9) नेपाल (10) भूटान (11) म्यांमार (बर्मा)

(ग) अन्य देश.

क्रमांक	महाद्वीप	देश
1	अमेरिका महाद्वीप	(12) संयुक्त राज्य अमेरिका
		(13) कनाड़ा
		(14) मैक्सिको
		(15) क्यूबा

2 यूरोप महाद्वीप (16) रूस, (17) ब्रिटेन (इंग्लैण्ड) (18) जर्मनी (19) फ्रांस (20) बेल्जियम (21) हालैंड (नीदरलैंड) (22) आस्ट्रिया (23) स्विट्जरलैंड (24) डेनमार्क (25) नार्वे (26) स्वीडन (27) फिनलैण्ड (28) इटली (29) पोलैंड (30) चेक (31) हंगरी (32) रोमानिया (33) बल्गारिया (34) यूक्रैन (35) क्रोशिया

3 अफ्रीका महाद्वीप (36) दक्षिण अफ्रीका (37) री–यूनियन द्वीप

4 एशिया महाद्वीप (38) चीन, (39) जापान, (40) दक्षिण कोरिया (41) मंगोलिया (42) उज्बेकिस्तान (43) ताजिकिस्तान (41) तुर्की (45) थाइलैंड

5 ऑस्ट्रेलिया (46) ऑस्ट्रेलिया।

इनमें कुछ देश ऐसे हैं जहाँ के एक से अधिक विश्वविद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इसके विपरीत कुछ देशों में वहाँ के केवल कम से एक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।

किसी भाषा के महत्त्व को तीन संदर्भों के आधार पर देखा जा सकता है– (1) क्षेत्रीय, (2) राष्ट्रीय, (3) अंतर्राष्ट्रीय। भाषा का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ कई महत्त्वपूर्ण बातों पर निर्भर करता है[4]–

(1) वह किसी बड़े और महत्त्वपूर्ण देश की राष्ट्रभाषा व राजभाषा होने के साथ–साथ विश्व के कई देशों में पढ़ी और पढ़ाई जा रही है।

(2) उसका साहित्य, इतिहास, धर्म, दर्शन तथा संस्कृति अंतर्राष्ट्रीय रुचि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(3) अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उस देश की अपनी अच्छी व्यापारिक साख हो।

हिंदी इन सभी अर्हताओं को पूरा करती है। वह इस समय विश्व के लगभग 150 देशों के विश्वविद्यालयों और सैकड़ों अन्य संस्थाओं में पढ़ी तथा पढ़ाई जा रही है। अमेरिका तथा यूरोपीय देशों की इधर हिंदी के प्रति रुचि बढ़ी है जिसके विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कारण हैं।[5] एशिया के देशों में हिंदी की रुचि अपेक्षाकृत कम है जिसका कारण उन देशों में हिंदी के अध्ययन की उपयोगिता तथा साधन और सुविधाओं की कमी होना है। फिर भी इधर विकासशील देशों में अपने अस्तित्व तथा अपनी उन्नति के प्रति चेतना जाग्रत हुई है।

इसके अतिरिक्त अन्य भी कई कारण हैं जिससे हिंदी भाषा ने वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ी है–

(1) भारत की वर्तमान आर्थिक उदारीकरण की नीति के कारण भी विश्व के महान एवं शक्तिशाली देशों की रूचि भारत में बढ़ी है। अतः स्वाभाविक है कि भारत की भाषा हिंदी की लोकप्रियता वैश्विक पटल में बढ़ी है। इस पृष्ठभूमि में विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों का विशेष महत्त्व है।

(2) हिंदी विश्व पटल पर 14 अक्टूबर 1977 को राष्ट्र संघ के मंच से व्यापक रूप से तब जाना गया जब भारत के तत्कालीन विदेशमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी ने पहली बार राष्ट्र–संघ को हिंदी में संबोधित कर हिंदी को विश्वमंच पर स्थापित किया।[6] हिंदी जगत ने इसे काफी सराहा तो कुछ अंग्रेजी जैसे तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इस प्रयास पर देश का बहुत सारा धन अपव्यय करने का कुप्रचार भी किया। बहरहाल विश्व को इस बात का एहसास हुआ कि हिंदी विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सबसे बड़ी संपर्क–भाषा एवं राजभाषा है तथा इसी भाषा के माध्यम से भारत जैसे बहुभाषी देश में अरबों रुपयों का कारोबार संपर्क–भाषा हिंदी के मः

यम से ही संपन्न होता है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण–देश की आर्थिक राजधानी मुंबई तथा कई महानगरों में चलने वाला करोबार है।

(3) अटल बिहारी बाजपेयी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी ने आते ही 2014 में न केवल राष्ट्र–संघ को हिंदी में संबोधित किया, बल्कि 7 जुलाई 2015 के दौरान मध्य एशिया के देशों (कजाकिस्तान, किरगिस्तान. उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान) एवं रूस की राजनयिक यात्रा के दौरान अधिकतर हिंदी का ही प्रयोग किया, जिसमे आर्थिक मुद्दे भी शामिल थे।[7] उस समय मध्य एशिया एवं रूस के अतिरिक्त सम्पूर्ण वैश्विक पटल पर हिंदी की सर्वश्रेष्ठता का भावबोध लोगों के अंदर जगाया।

(4) हिंदी को वैश्विक पटल पर स्थापित करने में फिल्मों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशन संस्थाओं, भारत सरकार के उपायों, उपग्रह–चैनलों, विज्ञापन–एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों, यांत्रिक सुविधाओं तथा शिक्षण प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में प्रशिक्षित पेशेवर मानव संसाधन का विशेष योगदान रहा है। इनके अतिरिक्त विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकारों के योगदान को देखा जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के मूल सिद्धांत शांति और सुरक्षा को स्थापित करने में हिंदी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2014 के बाद जिस प्रकार हमारी सरकार ने अपनी राजनीतिक, कूटनीतिक एवं विदेशी नीति के माध्यम से नीतियों की तेजी दी है उससे विश्व में न केवल भारत वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा है, बल्कि हिंदी के संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा बनाने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है।

(5) 13 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भारत के हिंदी भाषा के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। अब संयुक्त राष्ट्र के सभी कामकाज और जरूरी संदेश हिंदी भाषा में भी पेश किए जाएंगे। यू.जी.एन.ए. में भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत टी. एस. तिरुमूर्ति ने बताया कि इस वर्ष पहली बार हिंदी भाषा को भी शामिल किया गया है। राजदूत टी. एस. तिरुमूर्ति ने यह भी कहा– भारत 2018 से संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (डी.जी.सी.) के साथ साझेदारी कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के समाचार और मल्टीमीडिया के कंटेट को हिंदी भाषा में प्रसारित करने और बनाने के लिए फंड भी दे रहा है। 2018 में हिंदी/परियोजना शुरु की गई थी, जिसका लक्ष्य हिंदी भाषा में संयुक्त राष्ट्र की सर्वजनिक पहुँच को बढ़ाना और दुनिया भर में हिंदी बोलने वाले लोगों को ज्यादा से ज्यादा कंटेट देना था।[8]

भारत सरकार की इन सफलताओं के अतिरिक्त हमें यह भी प्रयास करना है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान करने के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं अधिकारिक भाषा घोषित कराने के लिये भारत सरकार को ठोस पहल करनी होगी। संयुक्त राष्ट्र की 6 आधिकारिक भाषाएं निम्नलिखित हैं– अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश भाषाएं हैं, जिसमें अंग्रेजी और फ्रेंच मुख्य है। वैश्वीकरण एवं सूचना क्रांति के युग में हिंदी को कम्प्यूटर की भाषा के रूप में विकसित करना होगा। शिक्षा, चिकित्सा का क्षेत्र हो, व्यवसाय अथवा तकनीक का क्षेत्र हो सभी क्षेत्रों में हिंदी भाषा को प्राथमिकता देना होगा। ऐसा तभी संभव होगा जब प्रत्येक दिवस को हिंदी दिवस के रूप में मनायें। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को अधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिये भारत को दृढ़ कूटनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए विश्व समुदाय से पर्याप्त समर्थन प्राप्त करना होगा।

हिंदी भाषा का प्रश्न केवल राजनैतिक अथवा वाणिज्यिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। भारतीय मूल के लोग जो विभिन्न देशों में बस गए हैं, अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान को हिंदी के माध्यम से सुरक्षित रखना चाहते हैं। अपनी मूल भूमि की संस्कृति से बहुत दूर बस जाने की विवशता भी है। भारतीय मूल के लोगों में एक प्रकार की बेचैनी और पूर्वदीप्ति (नॉस्टेलजिया) पैदा करती है। जो अपनी मूल भाषा और संस्कृति से होने वाले अतिशय प्रेम के रूप में प्रकट होती है। यही कारण है कि विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन में प्रवासी भारतीयों के देशों मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका आदि ने विशेष रूचि दिखाई है। अभी तक आयोजित 12 विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी भाषा के प्रश्न को वैश्विक पटल पर बड़ी ही सहजता के साथ उठाया है।

वर्तमान स्थिति यह है कि लगभग विश्व समुदाय दबी जुबान से ही सही, यह कहने लगा है कि 21वीं (इक्कीसवीं) सदी भारत और चीन की होगी क्योंकि भारत और चीन विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से हैं तथा विश्व स्तर पर इनकी स्वीकार्यता और महत्ता स्वतः बढ़ रही है। इन दोनों देशों के पास नैसर्गिक विशाल प्राकृतिक भण्डार हैं तथा युवा मानव संसाधन है जिसके कारण ये भावी वैश्विक संरचना में उत्पादन के बड़े स्रोत बन सकते हैं। देश की आर्थिक समृद्धि उस देश की भाषायी, सामाजिक, सांकृतिक और राजनीतिक समृद्धि का भी द्योतक है।9 इस प्रकार तमाम कसौटियों में कसे जाने के बाद हिंदी सही मायने में विश्वभाषा की गरिमा के साथ गतिमान है। हिंदी की भावी दिशा इस ओर संकेत कर रही है कि वह वैश्विक पटल पर लगातार फैल रही है। बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद् के 8वें वार्षिकोत्सव में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था[10]–

"सबकी भाषाएँ समृद्ध हों, हिंदी है मेरी भाषा
पूरी हो मेरे भारत की उससे आशा, अभिलाषा"

संदर्भ–ग्रंथ :

1. BBC NEWS
2. जैन, महावीर सरन, विश्व भाषा हिंदी, (1999), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा उ.प्र., पृ.सं.–25,
3. वही पृ.सं.–26
4. चतुर्वेदी, अरुण, विश्व भाषा हिंदी प्रथम संस्करण, (1999), केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा उ.प्र., पृ. सं.–77
5. वही पृ.सं.–77
6. बहुवचन अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका, अंक रू 46 (जुलाई–सितम्बर 2015) महात्मा गांधी, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) पृ.सं.–211
7. वही पृ.सं.–211
8. दैनिक भास्कर समाचार पत्र 13 जून 2022
9. उपाध्याय करुणाशंकर, हिंदी का विश्व संदर्भ, पहली आवृत्ति (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृ.सं.–50
10. गुप्त मैथिलीशरण, राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान, द्वितीय संस्करण विक्रम संवत (2004), बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद पटना, पृ.सं.–70

❑❑❑

हिंदी विभागाध्यक्ष , मारवाडी महाविद्यालय दरभंगा
पोस्ट–लाल बाग बिहार 846004 मोबाइल– 9582194288 ईमेल–shvmsngh0@gmail.com

अरुणाचल प्रदेश के हिंदी उपन्यासों में स्त्री स्वर

—अरविंद कुमार यादव

'मिनाम' मोर्जुम लोयी का उपन्यास है। यह गालो जनजाति पर केंद्रित है। इस उपन्यास के केंद्र में गालो जनजाति की स्त्री की संघर्ष गाथा है। मिनाम का अर्थ है – सोच विचार। इस उपन्यास में मिनाम का ही नहीं बल्कि सिलसिलेवार अलग–अलग स्त्रियों के शोषण और उनके संघर्ष की कथा कही गई है। पहली कहानी यामी की है।

बीज शब्द : पूर्वोत्तर भारत, बहुपत्नी प्रथा, वधू मूल्य, नेप्प न्यीदा, परम्परा

शोध सार

हिंदी उपन्यासों की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत समृद्ध है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक तक तो बाहर के रचनाकार पूर्वोत्तर पर केंद्रित उपन्यासों की रचना करते रहे। लेकिन वर्तमान सदी के दूसरे दशक में रचनात्मक परिदृश्य तेजी से परिवर्तित हुआ। बड़ी संख्या में स्थानीय साहित्यकार हिंदी में लेखन कार्य करने लगे। स्थानीय रचनाकारों की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश विशेष आस जागृत करता है। अरुणाचल प्रदेश की वर्तमान पीढ़ी अपने मूल्यों और परंपराओं को हिंदी भाषा और साहित्य के माध्यम से व्यक्त कर रही है। हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में विकसित होने के कारण हिंदी में अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति देने में इन्हें सहजता होती है। अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय लेखकों के महत्त्वपूर्ण उपन्यास– जंगली फूल (जोराम यालाम नाबाम), मिनाम (मोर्जुम लोयी), मेरी आवाज सुनो (जुमसी सिराम), उस रात की सुबह (तुम्बम रीबा 'लिली') हैं। 'जंगली फूल' तानी लोककथा पर आधारित उपन्यास है, जिसमें तानी वंश के आदि पुरूष आबोतानी अनाज के बीज की खोज के लिए लंबी यात्रा पर निकलते हैं जिससे कि अपने कबीले की भूख को मिटाया जा सके और समृद्धि लायी जा सके। अपने वंश की वृद्धि के लिए आबोतानी कई विवाह भी करते हैं। शेष तीन उपन्यास पारंपरिक मूल्यों का दंश झेलती स्त्रियों पर केंद्रित हैं। वधू मूल्य और बहुपत्नी प्रथा प्राचीन अरुणाचली समाज में सामाजिक मूल्य के रूप में स्थापित थे। जिसके पास वधू मूल्य देने की आर्थिक क्षमता होती थी, वे प्रायः एक से अधिक विवाह कर सकते थे । एक से अधिक विवाह करना सामाजिक प्रतिष्ठा का सूचक था। वधू मूल्य के कारण प्रायः अनमेल विवाह होते थे जिसमें स्त्री की इच्छा का ध्यान नहीं रखा जाता था। तलाक लेने की प्रथा भी जटिल थी। इन्हीं समस्याओं को केंद्र में रखकर अरूणाचल के रचनाकारों ने उपन्यास लिखे हैं।

अरुणाचल प्रदेश के हिंदी उपन्यासों में स्त्री स्वर

अरुणाचल प्रदेश भारत के पूर्वोत्तर में स्थित एक राज्य है। यह प्रदेश जनजातीय है। यहाँ निवास करने वाली जनजातियों में आदी, आपातानी, न्यिशी, मिश्मी, मोनपा, शेरदुकपेन, खाम्ती, वांचो नोक्टे आदि प्रमुख हैं। इन सभी आदिवासी समूहों की भाषा भी भिन्न–भिन्न है। लेकिन संवाद के लिए एक–दूसरे से ये हिंदी का प्रयोग करते हैं। संपर्क भाषा हिंदी होने के कारण पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की अपेक्षा हिंदी में साहित्यिक रचनाओं की दृष्टि से यह प्रदेश समृद्ध है। हिंदी से पूर्व यहाँ पर असमिया भाषा संपर्क और शिक्षा की माध्यम थी। यही कारण है कि यहाँ की पूर्व की पीढ़ी असमिया में अपना लेखन करती थी। भारत सरकार और हिंदी सेवी संस्थाओं के प्रयास से हिंदी यहाँ के लोगों के बीच अपना स्थान बनाने में सफल हुई। ध्यान देने की बात है कि हिंदी यहाँ पर किसी सरकारी माध्यम से थोपी नहीं गई है, बल्कि हिंदी का स्वाभाविक विकास हुआ है। भाषाई तौर पर यह प्रदेश विविधता लिए हुए है, लेकिन हिंदी सभी जनजातीय समूहों में समान रूप से बोली और समझी जाती है। यह पक्ष उसे शेष भारत से आसानी से जुड़ने में सहायक है। हिंदी में साहित्यिक रचना करने की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश की भूमि अत्यंत उर्वर है। पिछले एक दशक में यहाँ की युवा पीढ़ी ने अपने लेखन से राष्ट्रीय पहचान बनाई है। यहाँ हिंदी में साहित्यिक लेखन करने वालों में प्रमुख नाम– जुमसी सिराम 'नीनो', जोराम यालाम नाबाम, मोर्जुम लोयी, तुम्बम रीबा जोमो 'लिली', जमुना बीनी, तारो सिंदिक, रेमोन लोंग्कु आदि हैं। इन सभी रचनाकारों ने अपनी कृतियों में प्रदेश की संस्कृति, स्त्री–दशा, सामाजिक संरचना और परंपरा को प्रमुखता से अभिव्यक्ति दी है। उपर्युक्त रचनाकारों में से चार ने उपन्यास भी लिखे हैं। इन उपन्यासों के नाम– जंगली फूल (जोराम यालाम नाबाम), उस रात की सुबह (तुम्बम रीबा जोमो 'लिली'), मिनाम (मोर्जुम लोयी) और मेरी आवाज सुनो (जुमसी सिराम) है।

हिंदी में प्रथम महत्त्वपूर्ण उपन्यास जंगली फूल है। यह तानी समूह के आदि पुरुष आबोतानी पर केंद्रित है। तानी समूह की महत्त्वपूर्ण जनजातियाँ आपातानी, न्यिशी. आदी, गालो, तागिन और मिसिंग हैं। आदि पुरूष आबोतानी के विषय में लेखिका लिखती है कि "अनगिनत पत्नियाँ रखी उसने ! प्रेम किसी से भी नहीं किया। वह गृहस्थी के लिए बना ही नहीं था ! आवारा सा कोई पैदा हुआ था ! उसकी शक्ति और बुद्धि के चर्चे भी खूब रहे। उसने उसका इस्तेमाल भी औरत के शरीरों को हासिल करने के लिए ही किया था ! वह सिर्फ और सिर्फ अपना वंश बढ़ाना चाहता था ।" दरअसल यह उपन्यास तानी लोककथा पर आधारित है, जिसमें आदि पुरूष आबोतानी के संघर्ष, विवाह और सृजन की कहानी कही गई है। आदिम समाज में जनबल का विशेष महत्त्व था। कबीले के सदस्यों की संख्या के आधार पर उसकी शक्ति आंकी जाती थी। इस शक्ति में वृद्धि करने करने के लिए अधिक से अधिक बच्चों को पैदा करना जरूरी थी, अधिक बच्चों का जन्म तभी होगा जब अधिक शादियाँ की जाएँगी। इसी को ध्यान में रखते हुए आदिम तानी समाज में बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन था। तानी ने भी कई विवाह किए। उपन्यास में आबोतानी की तीन पत्नियों– आसीन, याई और जीत – का अलग–अलग अध्यायों में उल्लेख है।

कबीले में अधिक सदस्यों का होना अधिक सुरक्षा की गारंटी थी। उपन्यास में दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना आबोतानी की लंबी और जोखिम भरी यात्रा है, जो धान के बीज की खोज के

लिए की गई थी। बीज की खोज के उपरांत कबीले में समय–समय पर आने वाली भुखमरी से निजात मिल गई। धान के बीज को आबोतानी ने अन्य कबीलों में भी बाँटा जिससे कि विपन्नता और भुखमरी को दुनिया से भगाया जा सके। यह जनजातियों में आदिम साम्यवाद की एक नजीर है। लोककथा के अनुसार– "गरीबी की हालत में संघर्षपूर्ण जीवन जीते हुए उसने फिर से संपन्नता प्राप्त कर ली। बुढ़ापे में आबोतानी ने इस धरती का शुक्रिया अदा किया और स्थाई रूप से रहने के लिए दूसरे संसार को रवाना हो गया।"

'उस रात की सुबह' तुम्बम रीबा द्वारा लिखित उपन्यास है। इसमें यापी के माध्यम से गालो समाज की स्त्री– दशा का वर्णन किया गया है। दरअसल यह गालो ही नहीं, बल्कि अन्य समूहों की जनजातीय स्त्री का सच है। उपन्यास की शुरूआत पंचायत घर (कबा देर) से होती है, जहाँ पर विवाह के एक मामले को सुलझाने के लिए गाँव के बड़े बुजुर्ग एकत्रित हुए हैं। इस पंचायत का संबंध पापी के विवाह और उसके इंकार से है। मामला बहुत पेचीदा था। पेचीदा इसलिए हो गया था क्योंकि यापी उस पुरुष के साथ ब्याहकर नहीं जाना चाहती थी जो उससे उम्र में काफी बड़ा होने के साथ–साथ फूफा भी था। बात यह हुई थी कि यापी की बुआ याका का विवाह तातो से हुआ था, लेकिन विवाह के कुछ दिनों के बाद ही याका की मृत्यु हो गई। परंपरा के अनुसार याका के विवाह में मिले उपहारस्वरूप वधू–मूल्य को या तो वापस किया जाए या याका के बदले उसी घर से कोई लड़की तातो की पत्नी बनकर जाए। याका के परिवार की आर्थिक स्थिति वधू–मूल्य वापस कर सकने की नहीं थी, दूसरे वधू–मूल्य वापस करना उचित भी नहीं माना जाता था। चूँकि यापी बहुत छोटी थी इसलिए उसे भेजा नहीं जा सकता था। आदिम गालो समाज में स्त्री की क्या स्थिति थी, इसको यापी के पिता द्वारा पंचायत में कही गयी बात से जाना जा सकता है – "याका के गुजर जाने के बावजूद उसके ससुराल वाले – यानी कि तातो और उनके खानदान वाले इस रिश्ते को कायम रखना चाहते हैं। अब परिवार में से किसी को तो दुग्ने की जगह लेनी है ही। इसलिए हम सबने मिलकर खानदान की भलाई के लिए कुछ वर्षों पहले इसी जगह यह फैसला किया था कि उन दस मिथुनों और सारे हिसाब–किताब के बदले जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम्हारा विवाह तातो से करा दिया जाएगा।" यापी जैसी स्त्री के साथ जो भी हो रहा था, वह परंपरा के नाम पर हो रहा था। याका की मृत्यु के बाद कबा–देर में हुए फैसले के बाद से अब तक तातों की तीन पत्नियाँ हो चुकी थीं और उम्र भी लगभग यापी के पिता के बराबर यानी लगभग पैंतालीस वर्ष थी। उसी अधेड़ तातो की चौथी पत्नी बनकर नवयुवती यापी को जाना था। लेकिन यापी के प्रतिकार और तातो के ही परिवार के दो शिक्षित युवकों– तामार और कातम – के सहयोग वह इस विवाह से बच पाती है। उपन्यास में तामार और कातम का आगमन आधुनिक शिक्षा और नव परिवर्तन के आगमन का सूचक है।

'मिनाम' मोर्जुम लोयी का उपन्यास है। यह गालो जनजाति पर केंद्रित है। इस उपन्यास के केंद्र में गालो जनजाति की स्त्री की संघर्ष गाथा है। मिनाम का अर्थ है – सोच विचार। इस उपन्यास में मिनाम का ही नहीं बल्कि सिलसिलेवार अलग– अलग स्त्रियों के शोषण और उनके संघर्ष की कथा कही गई है। पहली कहानी यामी की है। उसने आर्थिक तंगी के बावजूद उच्च शिक्षा ग्रहण करने की ठान रखी थी। लेकिन उसका सोचा–विचारा कुछ भी फलित नहीं हुआ।

गाँव के स्कूल की स्थिति सुधारने और बच्चों को पढ़ाने के क्रम में उसके जीवन में ऐसा कुछ घटित हुआ जिसने उसे नर्क जैसी जिंदगी और अंततः मृत्यु दी। यामी गवर्नमेंट कॉलेज, ईटानगर की मेधावी छात्रा थी। स्कूल की छुट्टियों के दौरान उसने गाँव के स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया। वहीं पर एक दिन तातुम नाम के लड़के को उसने शराब पीने के कारण सजा दे दी। यही सजा यामी के लिए काल बन गयी। इस अपमान का बदला लेने की उसने ठान ली और अपने पिता तादर के सामने यामी के साथ विवाह करने का प्रस्ताव रख दिया। इस विवाह के प्रस्ताव से यामी के माता–पिता भी खुश हुए क्योंकि तातुम गाँव के सबसे समृद्ध घर का बेटा था। यामी के विरोध करने के बावजूद उसका विवाह तातुम के साथ लेपा लिङनाम के तहत कर दिया गया। लेपा लिङनाम एक सामाजिक प्रथा थी जिसमें लड़की के मना करने पर जबरदस्ती उसका संबंधित लड़के के साथ विवाह कर दिया जाता था। लड़की को कमरे में बंद करके भूखा–प्यासा रखा जाता था। अगर लड़की स्वेच्छा से समर्पण न करती तो उसके साथ पति द्वारा बलात्कार भी किया जाता था। इस परंपरा के संबंध में लेखिका लिखती है कि– "अन्य समाज में इसे लाफिया, लेफा आदि के नाम से जाना जाता है। ये सिलसिला तब तक चलता जब तक लड़की गर्भवती न हो जाती। लेपा लिङनाम में लड़कियों के साथ किसी पशु से कम व्यवहार नहीं किया जाता था। यह प्रथा भी वक्त के साथ कम होती चली गई।" यामी के साथ तातुम द्वारा मारपीट का जो सिलसिला शुरू हुआ वह यामी की मृत्यु तक जारी रहा। यामी की मृत्यु भी तातुम की मार खाकर हुई थी । यामी ने यापी और याजुम नामक दो लड़कियों को जन्म दिया । इस कारण तातुम और अधिक मारपीट करने लगा। तातुम शराब के नशे में धुत्त होकर यामी से कहता है कि – "मेरा जमीन इतना ज्यादा है, मिथुन इतना ज्यादा है, तादोक (माला) है, सबकुछ है, लेकिन मेरा माईकी बेटा नाई पैदा कर सकता... मेरा वंश को कौन चलाएगा ? हम तो दूसरा शादी करेगा ही।" दरअसल पुरूष वर्चस्व वाले आदिम समाज में स्त्री का काम लड़कों को जन्म देकर वंश वृद्धि करना था। कमोबेश यह आज भी पाया जाता है। यदि स्त्री वंश वृद्धि में सक्षम नहीं होती थी तो पति दूसरा विवाह कर लेता था। बहु विवाह वाले समाज यह एक बहाना था। गालो समाज में भी बहु विवाह प्रचलित था। वधू–मूल्य चुकाने की क्षमता हो तो पुरूष कई विवाह कर सकता था। वधू–मूल्य अरुणाचल प्रदेश की कई जनजातियों का स्याह सामाजिक पक्ष था। वधू–मूल्य के अन्तर्गत वर पक्ष द्वारा मिथुन, मीट, कपड़े, माला, शराब (आपोंग) आदि उपहार स्वरूप वधू पक्ष को दिया जाता था। यामी की मृत्यु के बाद यापी और याजुम पढ़ने के लिए बाहर रहने लगीं। एक दिन उनकी मुलाकात मिनाम से हुई जो प्रोफेसर थीं और अरुणाचल प्रदेश से ही थीं। इस मुलाकात के बाद उपन्यास मिनाम की डायरी के माध्यम से 'मैं' शैली में शुरू होता है। मिनाम का भी संघर्ष कमोबेश यामी की ही तरह था। लेकिन दोनों में फर्क यह था कि यामी स्त्री प्रताड़ना के दलदल से नहीं निकल पाई जबकि मिनाम सभी परिस्थितियों को मात देती हुई सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने में सफल हुई।

जुमसी सिराम का 'मेरी आवाज सुनो' स्त्री संवेदना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास के केंद्र में नेप्प न्यीदा और उससे उपजी समस्याएँ हैं। नेप्प न्यीदा का अर्थ पेट विवाह है। इसके अन्तर्गत गर्भस्थ शिशु का विवाह किसी के साथ तय कर दिया जाता था। यदि गर्भस्थ शिशु का विवाह किसी पुरुष से तय किया गया हो और जन्म लड़के का हो तो अगले बच्चे के

जन्म की प्रतीक्षा की जाती थी। लेकिन पुरूष किसी अन्य से दूसरा विवाह भी कर सकता था। एक बार वधू–मूल्य चुका कर तय कर दिए गए विवाह को स्त्री टाल नहीं सकती थी। वधू–मूल्य, पेट विवाह और बेमेल विवाह एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। 'मेरी आवाज सुनो' में इन तीनों समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। लेखक ने अपने लेखकीय वक्तव्य में लिखा है कि– " बहुत पहले जब यह एक लघु उपन्यासिका के रूप में प्रकाशित हुआ था तो विवादों के केंद्र में आ गया था। कारण यह था कि यह उपन्यास हमारे प्रदेश में फैली एक कुरीति नेप्प न्यीदा की आलोचना करता है।" आयि का विवाह लगभग बीस वर्ष पूर्व उसके जीजा ताकार के साथ तय कर दी गयी थी। अब आयि युवती हो चुकी थी। अब पूर्व निर्धारित रिश्ते को अमली जामा पहनाने का समय आ गया था। ताकार आयि के घर आकर पूर्व में दिए गए वधू–मूल्य का हवाला देता है– "तुम्हारी बहन यायि (आयि) की शादी मुझसे तय हो चुकी थी। मेरे स्वर्गीय पिता जी ने तुम्हारे घर वालों को कई गाएँ और मिथुन, साथ ही दूसरी कीमती चीजें भी दी थीं।" आयि इस विवाह को स्वीकार नहीं करती है, क्योंकि वह आलुक नामक युवक से प्रेम करती थी दूसरे ताकार आयि का जीजा था और उसकी उम्र लगभग पचास वर्ष की थी और आयि अभी अट्ठारह की हुई थी। चूँकि ताकार संभ्रांत परिवार से था और वधू–मूल्य चुकाने में सक्षम होने के कारण कई विवाह कर सकता था। यह परंपरा स्त्री को भोग्य वस्तु के रूप में प्रस्तुत करती है। तानी समाज में ही नहीं बल्कि अन्य में स्त्री की दशा अच्छी नहीं रही है। समय–समय पर ऐसी स्त्री–विरोधी परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठती रही है। इसमें स्त्री का विद्रोही स्वर ज्यादा रचनात्मक, प्रभावी और परिवर्तनकारी होता है। उत्तर भारत में दहेज रूपी परंपरा ने स्त्री जाति को मनुष्य होने से वंचित कर रखा है तो पूर्वोत्तर भारत के तानी (गालो) समूह की जनजातियों में वधू–मूल्य के रूप में यह स्त्री जाति के अस्तित्व को नकार रहा है। लेकिन अन्तर यह है कि जहाँ उत्तर भारत का समाज परिवर्तन की आहट का तीव्र विरोध करते हुए स्त्री विरोधी मूल्यों से चिपके रहने का प्रयास करता है तो वहीं अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों में परिवर्तन अपेक्षाकृत तीव्र गति से हो रहे हैं। आधुनिक शिक्षा से आ रहे परिवर्तनों का संगठित विरोध प्रायः नहीं देखने को मिलता है। आलुक–आयि की हत्या ताकार के लोगों के द्वारा कर दी जाती है लेकिन इस हत्या के बाद याकेन की माँ, बाबी और याजुम के नेतृत्व में जो आक्रोश भीड़ की शक्ल में उमड़ता है, वह परिवर्तन की आकांक्षा से भरा हुआ है। मुखिया का वक्तव्य इस परिवर्तन की गवाही दे रहा है– "अब हमारा भविष्य नई पीढ़ी पर निर्भर है। तुम लोग ठीक कह रहे हो। उन कुरीतियों को सुधारना तुम लोगों के हाथ में है। मुझे आयि–आलुक की मृत्यु का बहुत गम है।" मुखिया का यह वक्तव्य इस ओर भी संकेत करता है कि यहाँ का समाज प्रतिगामी परंपराओं को त्यागकर प्रगतिगामी परंपराओं को अपनाने में हिचकता नहीं है।

❐❐❐

पीएचडी, शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय,
मोबाइल नं. 6033092485 793022 ईमेल – arvind.yadav488@gmail.com

सुब्रमनी कृत उपन्यास 'डउका पुरान' में साहित्यिक संवेदना

—सुअम्बदा कुमारी

फीजी हिंदी में लिखा गया उपन्यास 'डउका पुरान' फीजी के बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप को उद्‌घाटित करता है। उपन्यास की शुरुआत में ही यह प्रश्न उठता है कि 'डउका' किसे माना जाए? 'फीजी लाल गिरमिट राम डउका' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। 'डउकाओं' की कोई खास पहचान नहीं है। फीजीलाल कहता है "बाप हमार बोला करत रहिन हम लोग डउका जात हैं। जात पात कै बात तो हम ना जानित। हाँ, जब कोई डउका देखित तो जुरूत पहिचान लेइत।...

साहित्य का मर्म एकता और समरसता को बनाए रखना है। वह एक होकर सबका हो जाता है और देश, धर्म, भाषा, लिंग, रंग, जाति, वर्ग इत्यादि की सभी सीमाएँ तिरोहित हो जाती हैं। प्रवासी साहित्य भारत से बाहर रचे जाने पर भी भारत के पाठकों को आकर्षित करता है और उन्हें जिससे भारतेतर समाज से उनका लगाव स्वतः स्थापित हो जाता है। सन् 1962–63 में डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने प्रवासी हिन्दुस्तानियों के लिए 'भारतवंशी' शब्द का प्रयोग किया था। "भारतवंशी ऐतिहासिक शब्द है जो वंश को किसी जाति या परिवार से सम्बद्ध करने के साथ–साथ देश और मातृभूमि से भी तालमेल जोड़ता है। इस तरह से व्यक्ति एक देश के मूल का होकर भी दूसरे देश का निवासी, प्रवासी नागरिक होता है। भारतवंशी बहुल देश वस्तुतः भारतीयता की लोकसंस्कृति का ज्योति स्तम्भ है।" फीजी में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का आगमन 9 मई, 1870 ई. से शुरू हुआ था। 'लेओनादी दास' मात्र एक जहाज नहीं था बल्कि वह ऐसा संवाहक था जो एक समूची भाषाई संस्कृति को अपने में समेटे, एक नए देश की ओर जा रहा था और इसके वाहक कोई साहित्य–मनीषी नहीं थे। इसके वाहक थे भारत के खेत–खलिहान में काम करनेवाले आम मजदूर, जिनके शब्द थे–कुदाल, कुल्हाड़ी, खेत, बिछौना, आँगन, तुलसी कुआँ।...भगवान राम की यह प्रजा अपने साथ मुल्ला दाऊद की 'चंद्रायन', जायसी की 'पद्‌मावत' और तुलसी की 'रामचरितमानस' की भाषाई संस्कृति अपने साथ लेकर जा रही थी।

मूल शब्द :
भारतवंशी/प्रवासी, प्रवासन, सांस्कृतिक गठरी, सामाजिक संघर्ष, नॉस्टेल्जिया, फीजी हिंदी।

उद्देश्य :

'भारतवंशी' शब्द की व्याख्या करना।

फीजी में प्रवासन के स्वरूप पर प्रकाश डालना।

उपन्यास 'डउका पुरान' की साहित्यिक संवेदना का विश्लेषण करना।

प्रासंगिकता :

किसी भी भाषा को अगर अनादि काल तक जीवित रहना है तो साहित्य के कंधे पर ही चढ़कर वह जीवित रह सकती है। हिंदी भाषा में लेखन की प्रक्रिया देश की सीमा को पारकर विदेशों में भी अपने पांव पसार रही है। प्रवासी हिंदी साहित्य आज हाशिए का साहित्य न होकर मुख्य धारा में अपने विषय विविधता के कारण उपस्थिति दर्ज करा रहा है। विषयगत और भाषागत विभिन्नता के कारण उपन्यास 'डउका पुरान' प्रवासी साहित्य में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में अनिल जोशी द्वारा संपादित 'प्रवासी लेखन नयी जमीन, नया आसमान (2018), कमल किशोर गोयनका द्वारा संपादित 'हिंदी प्रवासी साहित्य, गद्य विधाएँ (2018) प्रवीण कुमार झा द्वारा रचित कुली लाइन्स (2019) मैनेजर पाण्डेय कृत 'साहित्य और समाजशास्त्रीय दृष्टि' (2016) आदि सैद्धांतिक ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। इस शोध–पत्र हेतु सुब्रमनी के उपन्यास 'डउका पुरान' के अतिरिक्त हिंदी पत्रिकाओं, वेब पत्रिकाओं एवं प्रवासी साहित्य के विशेष ब्लॉग्स का अनुशीलन भी किया गया है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तावित शोध–पत्र का आधार सुब्रमनी कृत उपन्यास 'डउका पुरान' में साहित्यिक संवेदना है। अतः विषय की गंभीरता को देखते हुए विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है, ताकि शोध–पत्र में स्पष्टता, नूतनता एवं तथ्यात्मकता दिखाई जा सके और अंत में उद्धृत सारे तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष भी निकाले गए हैं।

उपन्यास 'डउका पुरान में साहित्यिक संवेदना'

20 जून, 1943 को लाबासा, फीजी में जन्मे सुब्रमनी एक मशहूर लेखक हैं, जो फीजी हिंदी और अंग्रेजी भाषा में फिक्शन और नॉन फिक्शन लिखते हैं। गिरमिटिया पुत्र होने की वजह से इनकी रचनाओं में अनुभव की प्रामाणिकता झलकती है। लेखक बनने का श्रेय ये अपने पिता को देते है तथा साहित्य सेवा को अपने जीवन का प्राथमिक उद्देश्य मानते हैं। 'साउथ पेसफिक लिटरेचर फ्रॉम मिथ टू फैबुलेशन', 'द फैंटेसी ईटर्स' (लघु कथा संग्रह), 'वाइल्ड फ्लावर्स' (कहानी संग्राह), 'आफ्टर नैरेटिव्स', 'अल्टरिंग इमेजिनेशन' (भाषणों, निबन्धों और समीक्षाओं का संग्रह), 'फिजी मॉंरू एक हजार की माँ', 'डउका पुरान' (उपन्यास), 'रीजन टू इमेजिन' इत्यादि रचनाएँ लिखकर इन्होंने खुद को एक उपन्यासकार, निबंधकार और आलोचक के रूप में स्थापित किया है।

फीजी हिंदी में लिखा गया उपन्यास 'डउका पुरान' फीजी के बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप को उद्घाटित करता है। उपन्यास की शुरुआत में ही यह प्रश्न उठता है कि 'डउका' किसे माना जाए? 'फीजी लाल गिरमिट राम डउका' इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। 'डउकाओं' की कोई खास पहचान नहीं है। फीजीलाल कहता है "बाप हमार बोला करत रहिन हम लोग डउका जात हैं। जात पात कै बात तो हम ना जानित। हाँ, जब कोई डउका देखित तो जुरूत पहिचान लेइत।...बस समझो ई पुरान डउकन कै मेला है।" डउकाओं को खोजने का मतलब है, मिल गया डउका पुरान सुनाने को। कथानक की शुरुआत ही इतिहास लेखन की घटना से शुरू होती है जहाँ नॉस्टेल्जिया प्रमुख तत्त्व के रूप में उभर कर आता है। साहित्यकार अजय नवरिया नॉस्टेल्जिया को रचनात्मक यात्रा का पहला चरण मानते हैं जिसकी अनगूँज पूरे उपन्यास में सुनाई पड़ती है। एक दिन फीजीलाल को किसोरवा बुलाने आता है कि कोई बाबू उससे मिलकर इतिहास लिखना चाहते है। "जेकप हम्मे समझाइस। बाबू डउकन के इतिहास

लिखै है। इतिहास लिखैके है तो गोरमिंट के पास जासक चाही।...आज तलक तो कोई ना आइन हमार इतिहास लेवै। हाँ गिरमिट कै खिस्सा लई गईन केतनो। डउकन कै इतिहास मांगे तो सुनाय देईब डउका पुरान"। फीजीलाल इस बात से अत्यंत खुश है कि कोई डउकाओं का इतिहास लिखने का सोच रहा है। वह सोचता है कि सबको इस देश के इतिहास में शामिल होना चाहिए चाहे वह डउका हो, औघड़ या लाकुडू लफाड़ी। वह मन ही मन हँसता है कि "अब तो तोहार इतिहास होइ जाई डामा डोल। उबड़ खाबड़। जऊन कुछ तू बिदमान लोगन रददी समझत हौ, निकार कै करत हौ बाहेर, वही सब सान कै बनाइब डउका पुरान"। इतिहास का डाँवाडोल होने की बात उन प्रवासियों की मूक आवाज है जिसे शासन सत्ता द्वारा दबा दिया गया है, जो इतिहास के काल खंडों में विलीन हैं। फीजीलाल जानता है कि डउकाओं का इतिहास कोई रोमांचक घटना से भरपूर नहीं है, इसके पीछे छुपा है छल–कपट, शोषण, अत्याचार की अनन्तहीन व्यथा। जिसे रद्दी समझकर हमेशा नकारा गया है। इतिहास की स्वर्णिम गाथाओं में किसानों के रक्त से रंजित अध्याय को लिखने का साहस किसी में है? फीजीलाल कह उठता है कि अगर आप इतिहास लिखना शुरू करोगे तो आपकी सारी व्यवस्था डांवाडोल हो जाएगी। प्रवीण कुमार झा के शब्दों में "यह इतिहास है विश्व के सबसे बड़े पलायन और अप्रवास का, जो लगभग भुला दिया गया। लाखों लोग समन्दर से जहाज पर भेजे गये, ऐसे कागजों पर हस्ताक्षर करवाकर जिन्हें न वो समझ सकते थे, न पढ़ सकते थे। हिन्दुस्तान से दूर कई हिन्दुस्तानियों की। यह कहानी कई गैर–अदालती सवाल पूछती है उन ब्रिटिश सरकारों से, जिन्होंने यह होने दिया। जिन लोगों को कभी इंसाफ नहीं मिल सका। जो लोग कभी लौट कर न आ सके। एक अनचाही दुनिया बसा ली । बिना किसी सरकारी मुआवजे के, किसी सरकारी माफी के। यह कर्ज ब्रिटेन पर रह ही गया।" डउका पुरान कोई विश्राम सागर नहीं है न ही कोई कोक–शास्त्र। यह गिरमिटियों की महागाथा है। फीजीलाल का मानना है इसे सुनाने के लिए तीन दिन का समय चाहिए। डउका पुरान में केवल गोबर थोड़े ही है इसमें नदी, पहाड़, पर्वत, चाँदनी रात, शादी–ब्याह, महातीर्थ और एक औरत है जिसका नाम है पिंगला। यहाँ लोक समुदाय का जमवाड़ा हैं। उपन्यास में यह प्रश्न बार–बार आता है कि 'डउकास कमती है का? यहाँ पर डउका समुदाय से तात्पर्य भारतवंशीयों से है। जब व्यक्ति अपने देश से प्रवासित होता है तो उसके साथ उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक गठरी भी साथ जाती है। फीजीलाल जीवन भर अपनी लोकसंस्कृति और भाषा को छोड़ नहीं पाता है। अपने देश से दूर होना उनके लिए बेगानापन नहीं है बल्कि बेगानापन का मतलब है आपसी मेल–जोल की कमी। "सबेरे सबेरे मुरगन सरदार कै रेडियोम गवनई सुनारू देस भवा बेगाना । हम बोला देस ना भय बेगाना, छोड़ दिहिन हम लोग एक दुसरेक हाथ। अउर कुछ ना है। यही असल बात है। कोईक कोई का न रहा। सब आपन सवारथ के पीछे भागे।"

यह उपन्यास अतीत और वर्तमान के लेखा–जोखा में विस्तार पाता है। अतीत में भयानक कष्ट है लेकिन लोक व्यवहार और आपसी प्यार की डगर मजबूत है, जिस पर डउकन समाज हंसी–खुशी एक दूसरे के सुख–दुःख में शामिल होकर आगे बढ़ते हैं। अतीत के झरोखे में है फीजीलाल का जन्म, युवा होता प्रेम, प्रेम की असफलता, बनता–बिगड़ता, टूटता–जुड़ता सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश, राजनीति से प्रभावित डउका समाज। इस उपन्यास में नॉस्टेल्जिया का परावर्तक स्वरूप विरासत संरक्षण के संदर्भ में उद्धृत हुआ है। फीजीलाल को एक 'घर' की तलाश है। वह घर जिसमें कामिनी के साथ वह अपने सपनों को सृजित कर सके। 'घर' यहाँ

पर स्थायित्व का प्रतीक है। प्रेम की असफलता घर के खोने की बिडम्बना से शुरू होती है। अन्यतम की तलाश में यायावर बन जीवन भर भटकता रहता है फीजीलाल। फीजीलाल के लिए कामिनी का चेहरा 'पुनामासी के चंदरमा' जैसे है। एक दिन बातों ही बातों में कामिनी फीजीलाल से बोल देती है कि उसकी माँ और ताजी (पिताजी) उसे बहुत पसंद करते है पर उसकी माँ को फीजीलाल के पंगुल हाथ पर मया (दया) आता है। इस बात को सुनकर फीजीलाल का स्वाभिमान बहुत आहत होता है, "हमार दिमाग मा पता नहीं का दउरत रहा। जइसे कोई मंतर पढैरू पंगुल, पंगुल, तु पंगुल हौ । पंगुलपना। देहीं मारी पंगुल। दिमाग आतमा पंगुल। फीजीलाल पंगुल। पंगुल जीवनी, पंगुल दुनिया...। हमरी जिंदगी तो एक तमासा बन गय।" यहाँ पर फीजीलाल का दर्द केवल एक पंगुल व्यक्ति का दर्द नहीं है बल्कि सम्पूर्ण दिव्यांग समाज की संवेदना का दर्द है जिसे सुब्रमनी फीजीलाल के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश करते हैं। अनगिनत पात्रों के मध्य दिव्यांग फीजीलाल को नायक के रूप में स्थापित कर सुब्रमनी साहित्य के क्षेत्र में नया प्रतिमान स्थापित करते हैं। फीजीलाल की घुमक्कड़ी रूपी तीर्थयात्रा का अंतिम उद्देश्य अपने राजा से मिलकर गाँव लौटना है। फीजीलाल की यह इच्छा अधूरी रह जाती है। फीजीलाल निराश है। निराशापन शारीरिक नहीं मानसिक है। इच्छाओं के अधूरे रहने का मलाल, समय से न पहुँचने का अफसोस, जीवन संग्राम की विवेचना करता फीजीलाल अचेतावस्था में है, "चलत गयो, फीजीलाल। न आगे देखेव, ना पीछे। ना पढ़ेव लिखेव, ना कोई अड्डा बनायो। ना माइक बहुत ममता मिला, ना अउरत कै पियार। कउवाक रकम जकरे पलेट मा मिला, खाय लिहेव। ना हरदम कै साथी पायो, ना ईसवर से मेल। कोई बात नहीं, फीजीलाल, एतना तो जान लिहेव की रास्ता जाते रहे अउर खलास भी होय जाय–साथे साथे।" फीजीलाल का आत्मंथन केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि इसका विस्तार संपूर्ण भारतवंशी समाज में जाकर होता है। यायावरी का उद्देश्य यहाँ पर केवल मन बहलाना नहीं है बल्कि गिरमिटिया समाज के एक–एक रेशे से पाठकों को रूबरू कराना है। सुब्रमनी इस उद्देश्य में सफल होते हुए दिखाई देते हैं। सात अध्यायों में विभाजित यह उपन्यास सैकड़ों किस्से–कहानियों को आपस में समेटे हुए है। फीजीलाल का कामिनी के प्रति प्रेम निश्छल और निस्वार्थ है। सुब्रमनी ने प्रेम के गरिमामयी स्वरूप का निर्वाह पूरे उपन्यास में किया है। जीवन के अंतिम चरण में फीजीलाल दिग्भ्रमित है। स्वप्न, कल्पना और भ्रम के जाल में डूबते फीजीलाल से कामिनी पूछ रही है कि कहाँ भटक गये फीजीलाल? फीजीलाल कामिनी से कहना चाहता है कि मुझ से पहले तुम भटक गयी लेकिन वह बोल नहीं पाता है। "तोहार तो सदास भटकेक आदत ! कहां भटकत फिरत रहेव, अब देख लिहेव नतीजा? तू हिंया भी टेम से ना आय पायो।...हम भटकत नहीं, कामिनी। खाली हमार चाल धीमा पड़ गय।...भीड़ मा कामिनीक चेहरा देखान।...हम उठ कै बइठ गवा। केसर चंदन छोड़ के राजा...अबकी हमार मुंह से सच्चे आवाज निकरा। कामिनी!' 'दया ना आई ओ निर्मोही, ओ निर्मोही।" इस उपन्यास के पात्र फीजीलाल के माध्यम से वे भाषाई अस्मिता की बात भी करते हैं। फीजीलाल कहता हैं, "भाखाक कदर हम जान पावा जब हमार तीरथ सुरु भय। केतने आनुआनुम रात गुजारा। कभी जहाज मा कभी कभी कोरोम । खाली भाखाक दुई बात जानेक जरिये लोग आपन दुवारी खोल देवैं । आखिर ई डउका पुरान का है–भाखा तो है जड़ एकर। दूनो जड़ अउर पुलई।" फीजीलाल द्वारा इस बात को स्वीकार करना कि 'डउका पुरान' की जड़ भाषा है जो भाषाई अस्मिता को संदर्भित करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इस उपन्यास के माध्यम से सुब्रमनी फीजी समाज

की आंतरिक हलचलों से पाठकों को रूबरू कराते हुए मानवीय संवेदना का सूक्ष्म चित्रण करते हैं। मातृभाषा की स्थापना इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है, स्वयं सुब्रमनी के शब्दों में, "मैं ग्रामीण क्षेत्र का रहनेवाला हूँ और मेरे चरित्र आस पास के निर्धन तथा अति साधारण पात्र ही हैं। अतः इनके प्रति न्याय उनकी ही भाषा में लिखकर हो सकता है, इसलिए अपने दोनों उपन्यासों के लिए मैनें उनकी भाषा फीजी हिंदी ही चुनी।" विमलेश कांति वर्मा के शब्दों में,"फीजी के समाजशास्त्रियों और भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि 70–80 वर्षों के बाद फीजी हिंदी के लुप्त हो जाने पर फीजी हिंदी में लिखी सुब्रमनी की ये दोनों कृतियाँ ही होगी जो फीजी के गिरमिटिये समाज की संस्कृति की दस्तावेज बनेंगी और जिनको पढ़कर हो शोधकर्ता यह जान सकेंगे कि फीजी में आये गिरमिटियों के जीवन और संस्कृति का स्वरूप क्या था।

संदर्भ सूची

1. श्रीधर, प्रदीप, (सं) प्रवासी हिंदी साहित्य दशा एवं दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018, (भूमिका से)
2. सुखलाल, गंगाधर सिंह, विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी सचिवालय स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड मॉरीशस 2010, पृष्ठ–27
3. सुब्रमनी, डउका पुरान, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, पृष्ठ–24.
4. सुब्रमनी, डउका पुरान, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, पृष्ठ–6.
5. पूर्ववत्, पृष्ठ–6
6. झा, प्रवीण कुमार, कुली लाइन्स, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019.
7. सुब्रमनी, डउका पुरान, स्टार प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 पृष्ठ–8.
8. पूर्ववत्, पृष्ठ–56
9. पूर्ववत्, पृष्ठ–137
10. पूर्ववत्, पृष्ठ–56
11. पूर्ववत्, पृष्ठ–137
12. बीना शर्मा (सं), प्रवासी जगत (फीजी विशेषांक), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, खंड–4, अंक–2, जनवरी–मार्च, 2021, पृष्ठ–14.
13. नावरिया, अजय, सुषमा आर्य, (सं) प्रवासी हिंदी कहानीरू एक अंतर्यात्रा, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2013.
14. जोशी अनिल, प्रवासी लेखन नयी जमीन, नया आसमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018.
15. गोयनका कमल किशोर, (सं), हिंदी प्रवासी साहित्य, (गद्य विधाएँ), यश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, संस्करण 2018.
16. बीना शर्मा (सं), प्रवासी जगत (फीजी विशेषांक), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, खंड–4, अंक–2, जनवरी–मार्च, 2021, पृष्ठ–13.

❑❑❑

शोधार्थी, हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
मोबाइल – **7009086924** ईमेल – Suambadabhu29@gmail.com

भाषा का प्रश्न और इक्कीसवीं सदी का भारत

—अरुण कुमार अग्रहरि

शोध–पत्र सारांश

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लेखित भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए NEP–2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) में प्रावधान किया गया है। प्रस्तुत शोध सारांश में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए विषयवस्तु का विश्लेषण किया गया है जो कि भारतीय भाषा माध्यम उच्च शिक्षा की संभावनाओं पर विश्लेषण करने का एक प्रयास है।

भारत विभिन्न भाषाओं और विविध संस्कृतियों वाला देश है। इसी भाषाई विविधता के कारण भारत की उच्च शिक्षा पूर्णतः प्रभावी नहीं बन पा रही है क्योंकि यहाँ की भाषाएँ विविधता होने के कारण भारतीय भाषाओं में उच्च शैक्षिक समाग्रियों का पूर्णतया अभाव है। विषय गत पुस्तकें अधिकतर इंग्लिश माध्यम में ही प्राप्त होती है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी प्रबंधन आदि पर आधारित पुस्तकें पूर्णतः इंग्लिश पर ही आधारित है, जबकि हिंदी कुछ कला विषयों या प्रचलित विषयों तक ही सीमित है। अगर बात करें अंग्रेजी भाषा की तो अंग्रेजी को वैश्विक भाषा की श्रेणी में रखा जाता है, इसके उलट चीन अपनी प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा को अपनी ही भाषा (मंदारिन) में उपलब्ध कराता है। अब भारत के आईआईटी संस्थानों में भी शिक्षण सामग्री हिंदी भाषा में भी उपलब्ध होंगी। इसी क्रम में IIT BHU ने अपने कदम को पिछले सत्र में ही बढ़ा दिया है।

एक स्नातक डिग्री धारक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह वस्तु की आधारभूत विश्लेषणात्मक क्षमता से युक्त हो या विश्लेषण करने की योग्यता अपने पास रखता है। परंतु अगर शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में बात किया जाए तो यहाँ पर भी चुनौतियों से पल्ला नहीं झाड़ा जा सकता है। उत्तर प्रदेश या बिहार में प्रशिक्षित शिक्षकों का पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल तथा अन्य प्रदेशों प्रांतों में कोई प्रभाव नहीं मिल पाता है ऐसा कहा जा सकता है कि यह उनकी भाषाई पृष्ठभूमि जनित कारकों के कारण हो सकते हैं।

बीज शब्द : भाषाई विविधता, मंदारिन समझ अभिव्यक्ति

शोध पत्र का उद्देश्य :

इस शोध पत्र के द्वारा हिंदी भाषा मे उच्च शिक्षण संस्थानों मे शिक्षण के क्या उद्देश्य हो सकते इसके क्या लाभ है या हानि है, इसको समझना आसान हो जायेगा। शिक्षा का माध्यम एक छात्र के लिए क्या महत्त्व रखता है यह उसको अपने विषय वस्तु को समझने मे बताने का प्रयास है,

हम माध्यमिक तक शिक्षा अपनी मातृ भाषा में प्राप्त करते है या उत्तर भारत में हिंदी में प्राप्त करते हैं। जबकि उच्च शिक्षा विशेष कर विज्ञान, गणित और वाणिज्य की शिक्षा पूर्णतः अंग्रेजी में हो जाती है, यहां तक कला वर्ग में बहुत से विषयो के अध्ययन सामग्री हिंदी में उपलब्ध ही नहीं होती है और कक्षा का वातावरण भी अंग्रेजी ही रहता है। जैसे मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र विषय को ले लिया जाय तो बहुत ही कम किताबें ही हिंदी में प्राप्त होंगी, भूगोल का उदाहरण लिया जाय तो भारतीय प्रशानिक सेवा या उच्च शिक्षा में प्रोफेसर बनने के लिए सिर्फ अंग्रेजी वाले ही सफल होते हैं ऐसा क्यूं होता है? इस शोध पत्र में इसी पर अध्ययन का प्रयास किया गया है।

राष्ट्र निर्माण की यह संकल्पना बहुत विवश करने वाली है, क्यूंकि हम अधिकतर उस स्नातक युवा का निर्माण करते हैं जिसकी उस विषय पर कोई समझ ही नहीं होती बहुत से स्ववित्त पोषित संस्थान सिर्फ डिग्री निर्माण की कंपनी बन चुकी हैं और सरकार को अपनी वार्षिक रिपोर्ट बनाना है कि इतने स्नातक हो रहे हैं और पिछली सरकार से तुलना कर आंकड़े को सही करते हैं।

प्रतिभा निर्माण की अवधारणा को अगर समझा जाय तो छात्र को अपने विषय में अगर समझ विकसित नहीं होती है तो उसके अंदर कोई रचनात्मकता का निर्माण नहीं होगा और उसका ज्ञान किसी भी तरह प्रभावी नही होगा।

विकसित राष्ट्र बनने की संकल्पना तब ही सम्भव हो सकती है जब रूस, चीन, अमेरिका और जापान आदि देशों की तरह अपने देश में भी मातृभाषा को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जाए तथा अधिक से अधिक शिक्षण सामग्री का भी निर्माण किया जाए।

विद्या देती नई कल्पना,
कल्पना देती नई विचार।
नए विचारों से मिले ज्ञान,
ज्ञान बनाए हमें महान।।

—डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

उपरोक्त पंक्तियों से तात्पर्य है कि शिक्षा के माध्यम से हमे ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से ही हमारी अवधारणाओं का निर्माण होता है। वही अवधारणा हमारे विचारों को निर्मित करती हैं और हमारे विचार ही हमें महान बनाते हैं।

यह पंक्ति एक अपनी मातृ–भाषा में शिक्षा प्राप्त किए हुए छात्र के लिए असम्भव है क्योंकि हम अपनी विद्यालयी शिक्षा को अपनी भाषा में प्राप्त करते हैं और उसी मातृ–भाषा में ही हमारी सोचने और समझने की शक्ति निर्मित हो जाती है। जब हम उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय/कॉलेज में जाते हैं तो हमारा माध्यम प्रत्यक्ष रूप से बदल जाता है। उच्च शिक्षा में शिक्षकों द्वारा अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बहुतायात रूप में किया जाता है, जो छात्रों के सोचने और समझने की शक्ति को कमजोर करते हैं तथा आत्मविश्वास तोड़ने का प्रयास करते हैं। एक छात्र अपनी भाषा में अच्छी समझ को विकसित कर सकता है तथा उच्च गुणवत्ता का प्रदर्शन

कर सकता है। हमारी उच्च शिक्षा का माध्यम हमारी अपनी मातृ–भाषा/राज–भाषा में होनी चाहिए।

डॉ. कलाम की डिजाइन टू फेल की रणनीति यह बताती है कि किसी बालक की शिक्षा वह जो प्रमाण पत्र पर दिख रही है तथा वह शिक्षा जो वास्तविक (मानसिक) है के प्रारूप में अंतर है तो यह पूरी शिक्षा प्रक्रिया फेल मानी जाएगी। जैसे भाषा माध्यम की बात है तो मातृ–भाषा में बालक की समझ उच्च वैचारिक होती है, जबकि बालक की स्नातक में भाषा माध्यम बदल दिए जाने से उसकी समझ उच्च नहीं बन पाती है और छात्र की जो अवधारणा निर्मित होती है वह पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो पाती है यहाँ पर एक दुविधा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि वह क्या करें? यही स्थित प्रतिभा को दमित कर जाती है जो कि किसी भी छात्र के लिए घातक साबित होता है कि वह शिक्षा माध्यम की वजह से अपनी शिक्षा को त्याग देता है।

प्रधानमंत्री ने एक सम्बोधन में बताया कि देश के 8 राज्यों के 14 इंजीनियरिंग कॉलेज हिन्दी, तमिल, तेलगु, मराठी तथा बांग्ला इन पाँच भारतीय भाषाओं में शिक्षा देना शुरू कर रहे हैं। इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम का 11 भाषाओं में अनुवाद करने का टूल विकसित किया जा रहा है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा पर जोर देने से गरीब ग्रामीण, पिछड़े लोगों में आत्मविश्वास बढ़ेगा।

COVID–19 के दौरान आनलाइन शिक्षण में दीक्षा एवं स्वयं जैसे पोर्टल पर 2300 करोड़ से ज्यादा हिट्स हुये जो कि इस बात का स्पष्ट का प्रमाण है की छात्र समय में परिवर्तन के साथ बदलाव की ओर अग्रसर हो रहा है।

भाषा के सन्दर्भ में साइन लैंग्वेज को एक विषय का दर्जा दिया गया है अब छात्र इसे एक भाषा के रूप में पढ़ सकते हैं। इससे दिव्यांग वर्ग को बहुत सहयोग मिलेगा।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (21.02.2022) को तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री एम.वैंकैया ने जोर देते हुए कहा कि तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करके ही शिक्षा को असल में समावेशी बनाया जा सकता है। अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने वाले जापान, फ्रांस तथा जर्मनी जैसे विकसित देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि अपनी मातृभाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए इन देशों द्वारा अपनाए गए तरीकों और नीतियों से हमें सीखना चाहिए। वहाँ का अध्ययन, अनुसंधान और शोध अंग्रेजी बोलने वाले देशों के समान विश्व–स्तरीय रहता है। जरूरी है तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली को भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाए और उपयुक्त विषय–वस्तु को तैयार किया जाए।

कोठारी आयोग 1964–66 की सिफारिशों में शामिल एक संस्तुति थी कि ''उच्च शिक्षा भी भारतीय भाषा में दी जानी चाहिए'' लेकिन कुछ विदेश से अंग्रेजी पढ़कर आये लोगों ने अंग्रेजी का ऐसा हौवा खड़ा किया कि यदि अंग्रेजी नहीं रहेगी तो देश टूट जायेगा, देश पिछड़ जायेगा, विज्ञान और तकनीक का विकास कैसे होगा? भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी के मुकाबले जानबूझ कर पीछे रख दी गयी है।

कुछ लोगो का कहना है कि अंग्रेजी नहीं होगी तो विदेशों (यूरोप) में नौकरी नहीं मिल सकती है, अगर अंग्रेजी का महत्त्व इतना ही है, तो चीन और जापान क्यूँ अपनी भाषा में ही पढ़ाते हैं? जबकि ये दोनों विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आते हैं तथा तकनीकी में पूरा विश्व इनका अनुसरण करता है।

लगभग 200 साल में अंग्रेजी के आतंक, लालच और झूठी प्रतिष्ठा ने समाज के अंदर जो जगह बनायी है, उसी का परिणाम है की शिक्षा व्ययस्था पूर्णतः अव्यवस्थित हो गयी है, और फलस्वरूप देश की तरक्की उस स्तर पर नहीं हो पायी है, जिस स्तर पर अन्य देश उदाहरण स्वरूप– चीन, जापान, यूरोपीय देश और दक्षिण कोरिया आदि आगे बढ़े हैं और यह सब संभव हुआ है शिक्षा में बदलाव यानी अपनी भाषा, मातृभाषा में शिक्षा देने से।''

अंग्रेजी रहने से पूरी पीढ़ी में रचनात्मकता का अभाव हो गया है।

उच्च शिक्षा में भाषा सम्बन्धी सुधार के क्रम में राष्ट्रीय भर्ती परीक्षा (National Testing Agency) ने प्रवेश परीक्षा के माध्यम में बदलाव किया है। मेडिकल की पढ़ाई के लिए जो नीट (NEET) की परीक्षा सिर्फ अंग्रेजी माध्यम में होती थी पिछले वर्षों में यह परीक्षा 8 भारतीय भाषाओं मे शुरू करने के बाद इस वर्ष यह परीक्षा का आयोजन 13 भारतीय भाषाओं में आयोजित की गई।

NEET–UG 2022 प्रवेश परीक्षा में अंग्रेजी और हिन्दी के अलावा गुजराती भाषा में 49625 आवेदन, बंगाली भाषा में 42136 आवेदन तथा तमिल भाषा में 31803 आवेदन किये गये थे।

भारतीय प्रद्यौगिकी संस्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (IIT-BHU) हिन्दी माध्यम में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू करने जा रहा है। यह देश का पहला ऐसा संस्थान होगा जहाँ इंजीनीयरिंग कर रहे छात्रों को हिन्दी में पढ़ने का विकल्प मिलेगा।

IIT-BHU के निदेशक और राजभाषा समिति के अध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा किए जाने का प्रावधान है जिसको ध्यान में रखते हुये IIT-BHU इंजिनीयरिंग प्रथम वर्ष की पढ़ाई अब हिन्दी माध्यम में शुरू करने जा रहा है।

म. प्र. सरकार और वहाँ के शिक्षा मंत्री विश्वास नारंग ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर, अपने यहाँ की प्रचलित शिक्षा पद्धति के अगले शैक्षिक सत्र से हिन्दी माध्यम द्वारा MBBS पाठ्यक्रम को शुरुआत करने की घोषणा की। मेडिकल छात्रों के लिए यह MBBS हिन्दी कोर्स दो चरणों में शुरू किया जाएगा। पहले चरण में हिन्दी में कोर्स पाठ्यक्रम का विकल्प चुनने वाले छात्रों को हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषा माध्यमों के द्वारा शिक्षा दी जाएगी, वहीं दूसरे चरण उनके आंकलन के प्रदर्शन के अनुरूप होगा।

"उ. प्र. मे आठ लाख बच्चे हिंदी भाषा में असफल हो जाते हैं।" वर्तमान परिवेश समझ आधारित न होकर प्रस्तुतीकरण आधारित हो रहा है, एक बालक की उसकी विषय–वस्तु पर क्या समझ बनी है इसका मतलब अभिभावक को नहीं है, वह सिर्फ तात्कालिक प्रस्तुतीकरण से मतलब रख रहा है। बालक की मातृ–भाषा जो होगी उसी भाषा के द्वारा उसकी समझ उच्च होगी।

आज प्रदर्शन के युग में ज्ञान और समझ की महत्ता कम हुई है। इस प्रदर्शन को सोशल मीडिया भी बढ़ावा दे रहा है जहाँ काम कम और प्रदर्शन ज्यादा हो रहा है।

आज देश के करीब 21 करोड़ बच्चे स्कूल जाते हैं, 15 करोड़ मध्याह्न भोजन का लाभ उठा रहे हैं। स्कूलों की उपलब्धता 98% के लिए एक किलो मी. के दायरे में हैं। मातृभाषा का परिचय बच्चों को घर से ही हो जाता है। इस भाषा में बातचीत समझने–समझाने की क्षमता के साथ बच्चे विद्यालय में दाखिला लेते हैं।

सामान्य मानव की बात की जाए तो अंग्रेजी या अन्य भाषा जो उसकी मातृभाषा नहीं रही हो यदि उसमें किसी कार्य को बताना या उसके परिणाम का विश्लेषण करना पड़े तो उसे इसके लिए बहुत कठनाई का कार्य हो सकता है। इसे एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है, एक बालक जो हिन्दी भाषी है अर्थात् उसकी मातृभाषा हिन्दी है। उसे एक विद्यालय में प्रवेश करवाया जाता है, जहाँ पर शिक्षा का पूर्ण माध्यम अंग्रेजी है तो उस बालक के सामने यह एक बहुत बड़ी समस्या आ जाएगी जिसे नया तो अभिभावक समझ रहे हैं और न ही वह संस्थान। सभी लोग उसे सिर्फ अंग्रेजी पढ़ाने के पीछे पड़े हैं । और इन सबके फलस्वरूप जब बच्चे का वार्षिक परिणाम आता है तो यह देखा गया कि वह बालक सिर्फ उत्तीर्ण है इसके साथ ही साथ वह कक्षा का सबसे निम्न स्तर का बालक बन गया है।

ऐसा क्यों हुआ ?

इसके साथ ही अगर अंग्रेजी भाषी को हिन्दी भाषा में सोचने और समझने को कह दिया जायेगा तो वह व्यक्ति क्या कर पायेगा?

कुछ भी नहीं।

यूनेस्को द्वारा भाषाई विविधता को बढ़ावा देने और उनके संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (21-Feb) की शुरुआत की गई।

मातृ–भाषा को हतोत्साहित करने की प्रवृत्ति विद्यालयों में देखी जाती है। जैसे हिंदी बोलने में इंग्लिश मध्यम के विद्यालयों में दंड लगने वाली घटनाओं के बारे में हमने सुना है।

उच्च शिक्षा में भाषा की महत्ता विषय की समझ बढ़ाने के लिए होती है उत्तर भारत में हिंदी भाषी क्षेत्र में अधिकतर बच्चे हिन्दी माध्यम से अपनी माध्यमिक शिक्षण को प्राप्त करते हैं और वह स्नातक की शिक्षा के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों में प्रवेश लेते हैं, जहाँ पर BA में भाषा का माध्यम हिन्दी चल रहा है।

चीन में उच्च शिक्षा पाने वाली आबादी की संख्या 24 करोड़ तक पहुँच गयी है। नये श्रमिक औसतन 13.8 वर्षों के लिए शिक्षा ले चुके हैं। चीन के श्रमिकों की गुणवत्ता में भारी परिवर्तन आया है। उच्च शिक्षा सुयोग्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण, पढ़ाई फॉर्मूला प्रबंध व्यवस्था और गारंटी व्यवस्था आदि क्षेत्रों में निरंतर सुधार करता रहा है।

चीन में पचास फीसदी से अधिक आबादी मंदारिन भाषा ही बोलती है। भाषायी बहुलता को चीन में राष्ट्रीय एकता के अंतर्गत कभी भी स्वीकार नहीं किया गया।

चीन की कम्यूनिष्ट सरकार राष्ट्रीय भाषा मंदारिन पूरे देश में पूरी तरह से थोपने के लिए अक्रामक अभियान शुरू कर रहा है जिसका लक्ष्य है 2025 तक 85 प्रतिशत नागरिक इस भाषा का प्रयोग करें। इतना ही नहीं 2035 तक शत प्रतिशत नागरिकों को मंदारिन भाषी बनाने का लक्ष्य है। साथ ही साथ अधिकारियों को सख्त निर्देश दिया गया है कि अंतर्राष्ट्रीय अकादमिक संस्थाओं और वैश्विक समारोहों में मंदारिन की स्थिति और प्रभाव को बढ़ाया जाए।

उच्च शिक्षा में अध्ययन माध्यम में मातृ भाषा या राज भाषा का ही प्रयोग किया जाए, इसके लिए भारत में भाषा से संबंधित विभिन्न संस्थान और संगठन की स्थापना हुई जो भाषा स्थानीय भाषा के संवर्धन का कार्य करते है तथा उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रयास करती है–

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर
केन्द्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान, चेन्नई
राष्ट्रीय सिन्धी भाषा संवर्धन परिषद, दिल्ली
राष्ट्रीय उर्दू भाषा संवर्धन परिषद, दिल्ली
महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

उक्त संस्थानों के अलावा सभी विश्वविद्यालय/कॉलेज में भी भाषा विभाग में विभिन्न भाषाओं के द्वारा नियमित रूप से उच्च शिक्षा प्रदान की जा रही है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम
हिन्दी शिक्षण में निष्णात (एम. एड.)
हिन्दी शिक्षण पारंगत (बी. एड.)
हिन्दी शिक्षण प्रवीण (बी. टी. सी.)

हिन्दी शिक्षण विशेष गहन (पूर्वोत्तर राज्यों के अंहर्र प्राथमिक स्कूल के लिए नागालैंड) के लिए तीन वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम

इसी तरह राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को संचालित करता है। भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण माध्यम में भारतीय भाषाओं का प्रवेश प्रारंभ हो गया। राष्ट्र भाषा हिन्दी पूर्णतः जहाँ मातृ भाषा के रूप में बोली का माध्यम है, वहाँ शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी ही है वहीं दूसरी तरफ अन्य भारतीय भाषाएं भी विकास के क्रम में है जिसे लोग अधिक से अधिक अपना माध्यम बना रहे है।

निष्कर्ष :–

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है यहां पर संविधान भी बहुत भाषाओं को मान्यता देता है, एक लोकतान्त्रिक देश में किसी एक भाषा को लागू करना कठिन है लेकिन जनसंख्या को आधार बनाकर हिंदी भाषा को उत्तर भारत एवं मध्य भारत की उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जा सकता और इसके माध्यम से उन छात्रों को अपने सपनों को पूरा करने का अवसर अवश्य मिलेगा क्योंकि आधी से ज्यादा जनसंख्या को इसका लाभ मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसका समर्थन करता है, केंद्र सरकार इसकी शुरूआत भी कर चुकी है लेकिन हमारे बहुत से विद्वान शिक्षक इस पर काम नहीं करना चाहते है क्योंकि यह एक कठिन कार्य है उनके लिए उन्हें हिंदी नहीं आती है, सभी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में एक अनुवाद विभाग की स्थापना अवश्य हो जिससे शिक्षक एवं छात्र अपनी भाषा की समस्या को वहां से हल कर सके।

गूगल ट्रांसलेटर क्लिष्ट हिंदी का अनुवाद करता है। इससे हिंदी और कठिन हो जाती है। प्रतिभा निर्माण के लिए विकसित देशों के उच्च शिक्षा देने के माध्यम को अनुसरण करना होगा, अगर विकसित देशों मे शिक्षा का माध्यम वहां की अपनी भाषा हो सकती है तो भारत मे क्यूँ

नहीं। सभी केंद्रीय, राज्य, निजी विश्वविद्यालयों को इस बात को मानना पड़ेगा और भाषा के माध्यम को बदलना होगा जो कि छात्र हित में और साथ ही साथ विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भी एक मील का पत्थर साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मेरे सपनों का भारत– ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, प्रभात प्रकाशन, न्यू दिल्ली
2. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ– अरुण कुमार सिंह, एम. एल. डी. प्रकाशन, दिल्ली
3. 'एडवांटेज इंडिया' ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सृजन पाल सिंह, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
4. शोध गंगा
5. "वार्षिक रिपोर्ट 2015–16" उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार
6. पत्र सूचना कार्यालय (PIB) 29.July.2021, 03.Sep.2021, 22.Feb.2022
7. जागरण ब्लॉग
8. जागरण 09.थ्मइ.2022, भोपाल
9. एजेंसी बीजिंग 02.क्मब.2021
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022
11. My.gov.com
12. google.com

❒❒❒

शोधार्थी (शिक्षा संकाय) राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ. प्र.)

ई–मेल : agrahari515@gmail.com

21वीं सदी में हिंदी भाषा और बाजारवाद

–दीपा कुमारी राम

हिन्दी सिनेमा ने हिंदी भाषा को विश्वस्तरीय भाषा का दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा की फिल्में अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक प्रचलित हैं खास कर इसके संगीत। व्यक्ति चाहे किसी दूसरी भाषा का क्यों न हो फिर भी वो बड़ी आसानी से हिन्दी गानों को समझ लेता है। जुरासिक पार्क, स्पाइडर मैन, हैरी पॉटर आदि जैसी अनेक अँग्रेजी फिल्में बनायी गई। अँग्रेजी भाषा में बनी इन फिल्मों से उतना मुनाफा नहीं हुआ जितना इन फिल्मों के हिन्दी डबिंग से हुआ।

भाषा भाव को अभिव्यक्त करने का माध्यम भर नहीं, बल्कि विचारों का आदान–प्रदान कर मनुष्य से मनुष्य को जोड़ने का माध्यम भी है। भाषा के संदर्भ में कह सकते हैं कि भाषा विचारों की पोशाक है। हम अपने विचारों को ही अलग–अलग भाषा रूपी पोशाक पहनाकर भावों को अभिव्यक्त करते हैं। जब हम 21वीं सदी के हिंदी भाषा के संदर्भ में बात करते हैं तो हम पाते हैं कि यह समस्त हिंदी भाषा भाषियों की आत्मा से जुड़ी है। हम जो सोचते हैं, हमारे मन मस्तिष्क में जो खयाल आता है, वह सब हमें अपनी भाषा में ही आता है। इसलिए भाषा के ज्ञान बिना सब व्यर्थ है। भाषा के संदर्भ में गिरजा कुमार माथुर की कविता है–

"जैसे चीटियाँ लौटती हैं / बिलों में
कठफोड़वा लौटता है / काठ के पास
• • •
ओ मेरी भाषा / मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते–रहते / अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है / मेरी आत्मा।"

21वीं सदी में हिंदी भाषा केवल साहित्यिक भाषा या बोलचाल की भाषा नहीं है बल्कि यह वैश्विक संदर्भ में बाजार की भाषा बन गई है। हिंदी भाषा की प्रसिद्धि सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञापनों, सिनेमा जगत, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रचार–प्रसार, सांस्कृतिक परिवर्तन आदि में अत्यधिक है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण हिंदी का क्षेत्र विस्तृत हुआ है। भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को ग्लोबल गांव में तब्दिल कर दिया है। भूमंडलीकरण के कारण देश की संकटग्रस्त आर्थिक व्यवस्था में उदारीकरण का उदय हुआ जिसके कारण विदेशी पूँजी को अपने देश में निवेश करने की अनुमति मिल गयी जिससे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विस्तार हुआ। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने अधिक लाभ कमाने हेतु निजीकरण को प्रश्रय दिया। चीन, सोवियत युनियन आदि देशों ने निजीकरण को

अपनाया ताकि उसका स्वायत सत्ता कायम हो सके। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की अगली कड़ी है बाजारवाद। बाजारवाद को मायावीरूप देने में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बहुआयामी विमर्श, विज्ञापन का ग्लैमरीकरण और मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। इस स्थिति में हिन्दी भाषा भारत में व्यवसायिक भाषा के रूप में भी अलग पहचान बनायी। हिन्दी भाषा के भूमंडलीकरण के संदर्भ में कई विद्वान मानते हैं कि भूमंडलीकरण के दौर में भाषाओं की स्थिति को लेकर हिंदी भाषा के सामने चुनौती तो है पर संकट नहीं। प्रौद्योगिकी और बाजार के साथ हिंदी जितना सामंजस्य स्थापित करेगी उतनी ही तीव्रगति से वृद्धि होगी। यह सच है की हिन्दी भाषा अन्य भाषाओं को भी अपने में आसानी से सम्माहित कर लेती है। जिसके कारण इसका क्षेत्र काफी विस्तृत हुआ है।

21वीं सदी में ऑनलाइन बाजार का प्रचलन चरमोत्कर्ष पर है। वर्तमान समय में ऑनलाइन बाजार के तौर पर अमेजन, फ्लिपकार्ट, आजीओ, मीसो, आदि जैसी अनेक प्लेटफार्म इजात की गयी हैं जिसके द्वारा हम घर बैठे अपनी इच्छानुसार किसी भी वस्तु को हिन्दी में लिख कर खोज और खरीद सकते हैं। इसके अलावा जरूरत के अनुसार अलग–अलग एप्प भी है, जैसे दवाई के लिए फार्मेसी, मेडप्लस, फ्लिपकार्ट हेल्थ आदि सौंदर्य प्रसाधन सामग्री के लिए नायिका, शृंगार कॉस्मेटिक आदि हैं। इस दौर में हमें किसी वस्तु को खरीदने के लिए बाजार जाने की जरूरत नहीं है बल्कि बाजार खुद हमारे घर आ जाता है। घर बैठे ही एक आदेश पर सब कुछ मिल जाता है। इस बाजार में वस्तु खोजना बहुत आसान है।

21वीं सदी में बाजारवाद की जड़े मजबूत करने में विज्ञापन की अहम भूमिका है। बाजार में नई वस्तु आने के साथ उस वस्तु की गुणवक्ता से ग्राहक को परिचित कराने के लिए विज्ञापन दिखाये जाते हैं ताकि ग्राहक को उस वस्तु के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त हो जाए और वह अपनी जरूरत के अनुसार सही वस्तु का चुनाव कर सके। इसके लिए विज्ञापनदाता कहीं हिन्दी भाषा में तो कहीं हिन्दी–इंग्लिश दोनों भाषाओं को मिला कर सुंदर जींगल्स या कहानी या कुछ पंक्तियों के माध्यम से विज्ञापन देते हैं ताकि ग्राहक अधिक प्रभावित हो सके। इसी संदर्भ में ज्ञानेन्द्रपति ने अपनी कविता 'उत्तर परमात्मा' के माध्यम से विज्ञापन की दुनिया की वास्तविकता से हमें रूबरू कराया है कि विज्ञापन किस तरह हमारे रोजमर्रा के जीवन में सम्माहित हो चुका है। दिन के आरंभ में ही टूथपेस्ट बन हमारी दाँतों से लिपट जाता है और साबुन, शैंपू बन कर सिर से पैर तक अपना आधिपत्य जमा लेता है और खाने–पीने से लेकर पहनने–ओढ़ने तक की तमाम वस्तुएं पूरे दिन उपयोग करते हैं, जैसे हम खाने की वस्तुओं से जुड़े विज्ञापनों में दिखाये गये मेग्गी, पीज्जा, नूडल्स आदि का सेवन करते हैं। गर्मियों में हम प्यास बुझाने के लिए विज्ञापन में दिखाये जाने वाले शीतल पेय का सेवन करते हैं साथ ही आकर्षक विज्ञापन से प्रभावित हो कर वस्त्र में लक्स कोजी आदि का उपयोग करते हैं, और इन सब का विज्ञापन हिन्दी और इंग्लिश दोनों भाषाओं को मिला कर दिया जाता है जैसे 'ठंडा–ठंडा कूल–कूल' 'दिल मांगे मोर' आदि वस्तुतः वे हमारी इच्छाओं का मूर्तिकर्ता एवं पूर्तिकर्ता दोनों ही है। कवि कहते हैं–

"वह एक माया पुरुष है
एक छाया पुरुष है
वैज्ञानिक की प्रयोगशाला में फूल फैलकर
पूँजीवाद की निर्माणशाला बनाने की प्रक्रिया में
सिरजा गया है वो
बहुरूपधारी।"

आज बाजारवाद इतना बलशाली हो गया है कि वह मायावी पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। वह अपने मायावी शक्ति से पूरी दुनियाँ को अपनी मुट्ठी में कर रखा है।

उपभोक्तावादी संस्कृति में वस्तु और उपभोक्ता दो ही प्रमुख हैं। भूमंडलीकरण के युग में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उपभोग की लालसा को बढ़ा दी है। बड़ी कंपनियाँ अपना एक ब्रांड बना कर उत्पाद को बड़ा कर रही है। बहुत सी वस्तु पर भारी छूट, सेल, आफर, एक के साथ एक फ्री जैसे शब्दों के उपयोग कर व्यक्ति को प्रलोभन दिया जाता है और उनको वस्तु का गुलाम बनाया जाता है। इस संस्कृति के तहत लोग दिखावे के चक्कर में अनावश्यक वस्तुओं से घर भर देते हैं। जंगलों को काट कर मल्टी नेशनल कंपनियाँ स्थापित की जा रही हैं छोटे–छोटे दुकानों को हटा कर ईको–फ्रेंडली सुपर मार्केट बनाया जा रहा है जो इस बात का प्रमाण है कि लोग व्यक्ति से उपभोक्ता में तब्दील हो रहें हैं। इस संदर्भ में प्रफुल्ल कोलख्यान ने कहा है– "एक बाजार से दूसरे बाजार में सिर्फ माल ही नहीं माहौल भी जाता है। अपने साथ संदेश और संस्कृति भी ले जाता है।"

हिन्दी सिनेमा ने हिंदी भाषा को विश्वस्तरीय भाषा का दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा की फिल्में अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक प्रचलित हैं खास कर इसके संगीत। व्यक्ति चाहे किसी दूसरी भाषा का क्यों न हो फिर भी वो बड़ी आसानी से हिन्दी गानों को समझ लेता है। जुरासिक पार्क, स्पाइडर मैन, हैरी पॉटर आदि जैसी अनेक अँग्रेजी फिल्में बनायी गई। अँग्रेजी भाषा में बनी इन फिल्मों से उतना मुनाफा नहीं हुआ जितना इन फिल्मों के हिन्दी डबिंग से हुआ।

बदलते दौर में हिन्दी फिल्म के अलावा हिन्दी वेब सीरीज भी बनाये जा रहे हैं। लोग इसे काफी पसंद भी कर रहे हैं। वेब सीरीज में मुख्य रूप से हिन्दी भाषा ही है किन्तु कुछ सीरीज में क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रभाव दिखाई देता है। अनेक ऐसे वेब सीरीज हैं जो समाज में घटित सच्ची घटना पर आधारित हैं जैसे 'ह्यूमन' दवा ट्रायल पर आधारित है, 'माई' क्राइम पर आधारित है, 'जामताड़ा– सबका नम्बर आयेगा' फाल्स कॉल द्वारा अंजान व्यक्ति के अकाउंट हैक कर पैसे ट्रांसफर करने पर आधारित है। इसी तरह 'मुंबई डायरीज', 'भौकाल', 'दिल्ली क्राइम' आदि जैसे अनेक वेब सीरीज अमेजोन प्राईम और नेटफ्लिक्स पर दिखाये जाते हैं।

हम आज किसी भी सर्च इंजन जैसे गूगल, फायर फॉक्स, मोजिला आदि पर इंग्लिश भाषा के साथ हिन्दी भाषा में लिख कर या बोल कर भी किसी चीज को खोज सकते हैं। यह कहीं

न कहीं हिन्दी भाषा के महत्त्व को बढ़ा रहा है। 21वीं सदी में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में भी काफी प्रचलित हो रही है। वर्तमान समय में लिंगुआ फ्रांका में अंग्रेजी के साथ हिंदी भाषा भी शामिल है। आज विदेशों में भी हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। आजकल विदेशों में भी हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है, जैसे जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एन. एच. के वर्ल्ड, चीन के चाईना रेडियो इंटरनेशनल आदि पर हिंदी कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। संचार की भाषा के रूप में भी हिन्दी भाषा के शब्दों को विशेष पहचान मिली है कुछ नए शब्द जुड़े हैं जैसे पोस्टर्स, डायरी जर्नल्स, हैंडबिल, न्यूज बुलेटिन, मैसेजबुक आदि।

वर्तमान समय में फेसबुक, व्हाट्सप्प, इंस्टाग्राम आदि जैसे सोशल मीडिया पर इंग्लिश के समानांतर हिन्दी भाषा में भी पोस्ट लिखे जा रहे हैं। यही कारण है कि इन दिनों हिंगलिश भाषा भी जोरों से प्रचलन में है जिसमें हम मनमाने ढंग से हिन्दी और अँग्रेजी दोनों भाषाओं का उपयोग एक साथ करते हैं। हमें इससे चिंतित होने की जरूरत नहीं बल्कि उसे अवसर के रूप में ग्रहण करने की जरूरत है क्योंकि हिंदी अन्य भाषाओं के शब्दों को लेकर आगे बढ़ी है और समृद्ध हुई है। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता के सिद्धांत को लेकर आगे बढ़ी, हिंदी की सबसे बड़ी ताकत है कि उसने प्रायः 40 भाषाओं से शब्द ग्रहण किया। अतः हम कह सकते हैं कि इस भाषा के समृद्धि का एक कारण उसका यह समन्वयवादी दृष्टिकोण है।

हिन्दी भाषा और बाजारवाद के संदर्भ में देखे तो बाजार के कारण हिन्दी भाषा का विकास तो हुआ है किन्तु भाषा में काफी बदलाव भी देखने को मिला है। पहले हिन्दी भाषा में उच्च कोटी के साहित्य लिखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था किन्तु व्यवसायीकरण की वजह से हिंदी में नए–नए पारिभाषिक शब्दवालियों को जोड़ा गया है, जैसे सेल, डिस्काउंट, ईएमआई इत्यादि। इसके कारण हिन्दी भाषा का विस्तार हुआ है और हमारी पुरानी संस्कृति में भी बदलाव आया है हम मॉल संस्कृति की तरफ जा रहे हैं। इसके कुछ नकरात्मक प्रभाव की बात करें तो बाजारवाद के प्रभाव के कारण मानवीय मूल्य भी वस्तुगत मूल्य की तरह आंके जा रहे हैं। यहाँ जो व्यक्ति जितना अधिक चाहे जिस भी तरिके से (ईमानदारी या बेईमानी) अर्थोपार्जन करता है, वह उतना ही अधिक धन वान और श्रेष्ठ माना जाता है। बाजार के साथ सरकार की नजरों में भी ऐसे लोग ही महत्त्वपूर्ण हैं। इन परिस्थितियों को देखते हुये भारतीय बाजार के संदर्भ में विष्णु नागर की पंक्तियाँ हैं – "भारत एक बाजार है जहाँ वैसे तो अभी भी एक सरकार है मगर वह भी यही सोचती है कि इस देश में इंसान नहीं सिर्फ खरीदार बसते हैं और जो खरीदार नहीं हैं वे इन्सान भी भला कैसे हो सकते हैं और जो इंसान नहीं हो सकते, वे भला भारत के नागरिक भी कैसे हो सकते हैं।" यहाँ बाजारवादी दुनिया ऐसी हो गयी है कि इंसान को इंसानियत के कटघरे से बाहर कर उसकी पहचान तक छीन लेती है। ज्ञान चतुर्वेदी ने बाजारवाद को बाढ़ की तरह माना है। इनके ही शब्दों में–" सारी बस्ती बाढ़ में डूबने को थी। हर तरफ बस बाजार ही बाजार था। घर डूब रहे थे। सम्बन्ध तो सबसे पहले डूबे। दोस्तियाँ गले–गले तक इस मटमैले पानी में थीं। बोर्ड, होर्डिंग्स और विज्ञापनों का कीचड़ हर मकान में घुस गया था। घरों की अपनी

पहचान गुम थी। सब तरफ बाजार ही बाजार लहरा रहा था।" वस्तुतः बाढ़ जिस तरह सब कुछ अपने में समाहित कर लेता है उसी तरह बाजारवाद भी अपने में सब कुछ समाहित करता जा रहा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि बाजारवाद के कारण हिंदी भाषा का विस्तार हुआ है। विज्ञापन, सिनेमा एवं संचार माध्यम में उपयोग के कारण यह भाषा आज विश्वस्तरीय भाषा के रूप में जानी जा रही है। इन तमाम अच्छाइयों के बावजूद भी इसमें कुछ कमी है क्योंकि बाजार का सिद्धांत है किसी तरह से लाभ कमाना। अतः कई जगहों पर लाभ के लिए हिन्दी भाषा का उपयोग कर इसके सांस्कृतिक सौंदर्य को नष्ट किया जा रहा है। भाषा की संवेदना, आत्मियता, मानवीयता नष्ट हो रही है। लोग भौतिक सुख सुविधा के आदि हो रहे हैं और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अतः हमें आधुनिकता और उपभोक्तवादी संस्कृति की तरफ अग्रसर होते हुये भाषिक मर्यादा को बचाए रखने की जरूरत है, तभी हिन्दी भाषा का सर्वांगीण विकास हो सकेगा और वह विश्व कि सर्वश्रेष्ठ भाषा बन सकेगी।

संदर्भ सूची

1. https://www.amarujala.com]kavita
2. कोलख्यान प्रफुल्ल, बाजारवाद और जनतंत्र, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण–2006 पृ सं–23
3. ज्ञानेंद्रपति, संशयात्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2004, पृ.सं.– 23.
4. रामशरण जोशी, मीडिया और बाजारवाद, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2015, पृ.सं.– 67
5. ज्ञान चतुर्वेदी , पागलखाना, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृ.सं.– 64

❒❒❒

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) सेरामपुर गर्ल्स कॉलेज, पश्चिम बंगाल

मोबाइल नं.– 8981747036 ईमेल – ramdipakumari@gmail.com

भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति

—आचार्य (डॉ.) एस. हुसैन

भारत सरकार ने 29 जुलाई को जो शिक्षा नीति पारित की है। वह अतिउत्तम है। क्योंकि यह नीति देश के संपूर्ण युवाओं को अपना सर्वांगीण विकास तथा रोजगार के अवसर सृजित करने वाली है। नीति से पूर्व जो शिक्षा प्रणाली संचालित थी। वह परंपरागत शिक्षण विधियों पर आधारित थी। जिसमें अल्प मात्रा में रोजगार की संभावनाएं थी। यही ऐसे कारण हैं, जिनके द्वारा भारत में बेरोजगारी जैसी ज्वलंत समस्याओं को जन्म दिया था।

शिक्षा एक सीखने व सिखाने की प्रक्रिया है। जिसको भाषा के संप्रेषणीय माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है। भाव से भावनाएं और भावनाओं से भाषा का उदय होता है जो एक संप्रेषण का उत्तम माध्यम है। जिससे ज्ञान का आदान–प्रदान होता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित व क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाने और आज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 को लागू किया। जो राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनी हुई है। नई शिक्षा नीति 2020 के भाषा के संबंध में उत्पन्न उन सभी सवालों को समझाया, व शिक्षा नीति का हिस्सा भी बनाया गया है। संपूर्ण देश में प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस पर चर्चा होती आ रही है। राजभाषा आयोग ने 1995 की सिफारिशों में से एक भारतीय भाषाओं के ज्ञान और सीखने को शामिल किया गया। जबकि पूर्व 1968 में कोठारी आयोग (1964–66) जिसे भारतीय शिक्षा के इतिहास में पहला कदम कहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भाषाओं के विषय में गहन चिंतन की आवश्यकता होनी चाहिए। भारत में ब्रिटिश शासन के समय से भाषा एक विवाद का प्रश्न बना रहा है अंग्रेजों ने भी भारतीय भाषाओं का विरोध किया, एवं अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ भाषा बताकर, भारतीयों के ऊपर थोप दिया गया जिसका परिणाम यह हुआ, कि भारतीय जनमानस की शिक्षा प्रभावित होने लगी। क्योंकि ऐसा माना जाता है। मातृ भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम होती है।

बहुत से विद्वान यह पक्ष रखते हैं कि अंग्रेजी में विश्व का सबसे बड़ा साहित्य उपलब्ध है तो जिन देशों में भी अपनी राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी से अलग है, वह कैसे सीखते होंगे। जैसे कि चीन, रूस, फ्रांस, जापान आदि देश, तो अपनी राष्ट्रीय मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम रखते आए हैं। अतः हमें भी अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भाषागत प्रश्नों को सुलझा कर किसी एक भाषा को पूरे देश की शिक्षा का माध्यम रखना

होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में सीखने एवं भाषा का प्रश्न अति चिंतनीय है। जिस पर हमारे विद्वानों को गहन चिंतन करके उचित कदम उठाना होगा। अतः हम कह सकते हैं। कि पूरे देश में शिक्षा का माध्यम अपनी राष्ट्रीय भाषा होनी ही चाहिए।

हाल ही में वर्तमान समय में विषम परिस्थितियां रही, जिससे शिक्षा का स्तर भी प्रभावित हुआ। वैसे शिक्षाविद यह पहले से ही मानकर चल रहे थे की लॉक डाउन और ऑनलाइन कक्षाओं की वजह से छात्रों की पढ़ने–लिखने की क्षमता में कमी आएगी। बरहाल जो कमी साल 2022 में दिखी है। उसे साल 2023 में तेजी से दूर कर लेना चाहिए। शिक्षा की वार्षिक स्थिति की ताजा रिपोर्ट से यह पता चलता है, कि पिछले कुछ वर्षों में सरकारी स्कूलों में छात्रों के नामांकन में काफी वृद्धि हुई है। सर्वेक्षण में शामिल 72.9 प्रतिशत छात्र सरकारी स्कूलों में जाते हैं। देश में निजी ट्यूशन लेने वालों की संख्या भी बढ़ी है। मतलब ज्यादा नंबर लाने की होड़ तेज हुई है, साथ ही यह देखना भी चाहिए कि क्या स्कूलों में पर्याप्त या संतोषजनक पढ़ाई हो रही है? प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन की रिपोर्ट से तमाम शिक्षा संस्थानों को मदद मिलती है। देश के 616 जिलों और 19060 हजार 7 गांव में हुए सर्वेक्षण 6,99,597 बच्चों की पढ़ाई लिखाई को टटोला है। ऐसे सर्वेक्षण स्कूलों या कम से कम सभी बड़े स्कूलों को अपने स्तर पर भी करने चाहिए, ताकि छात्रों की कमियों को समय रहते दूर किया जा सके। निजी स्कूलों की संख्या भले ही बढ़ रही है लेकिन सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ रहा है। सरकारों को अपने स्कूलों पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। सबसे बड़ी खुशी की बात यह है कि स्कूल न जाने वाली लड़कियों की संख्या 4 प्रतिशत से घटकर 2 प्रतिशत हो गई है शिक्षा में जो कसर छूट जा रही है। उसे जल्दी दूर करने से ही सबकी भलाई और राष्ट्र का भला होगा।

प्रस्तावना :

हमारे संविधान में भारत को लोकतांत्रिक, न्याय पूर्ण, सामाजिक रूप से सचेत सांस्कारिक और मानवीय राष्ट्र जहां सभी के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव हो, एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है। जैसे–जैसे भारत ज्ञान आधारित, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिक तकनीकी और समाज की ओर बढ़ता जा रहा है। वैसे–वैसे और अधिक हमारे देश का युवा वर्ग उच्चतर शिक्षा की ओर बढ़ेगा। 21वीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा के बाद नई शिक्षा नीति 2020 को 34 वर्षों के बाद भारत सरकार ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूरी मिलने पर लागू कर दिया। जिसको इसरो के प्रमुख रह चुके डॉ. कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में तैयार किया गया था। जिसका उद्देश्य देश में स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणालियों में परिवर्तन कार्य सुधारों का मार्ग प्रशस्त कर भारत को विश्व में वैश्विक ज्ञान में अग्रणी स्थान दिलाना है। इस नीति के तहत बहुत से महत्त्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं जैसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम परिवर्तित करके शिक्षामंत्रालय रखा गया है। नीति के तहत 3 से 18 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत रखा गया है। कर्नाटक नई शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य है। इस नीति में शिक्षण का माध्यम पहली से पांचवी कक्षा तक में मातृ भाषा का इस्तेमाल करेंगे। शिक्षा

को 5 + 3+ 3+4 के स्कूली पाठ्यक्रमों में विकसित किया जाएगा। जिसमें बच्चे पांच साल फाउंडेशन स्टेज में तीन साल प्रीपेड स्टेज में तीन साल मिडिल स्टेज में और 4 साल सेकंड स्टेज में बिताएंगे। शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 5 तक की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के रूप में अपनाने पर बल दिया जाएगा, साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा 8 और आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है। स्कूल और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए संस्कृत और अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन :

इस नीति का विजन विद्यार्थियों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में हो बल्कि व्यवहार, बुद्धि, कर्म, ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए। जो मानवाधिकारों स्थाई विकास जीवन यापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वह सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें। इसी के आधार पर नई शिक्षा नीति के आधारभूत 5 स्तंभों के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।

नई शिक्षा नीति के पांच स्तंभ :

1. Accessibility (सब तक पहुंच)
2. Equity (भागीदारी)
3. Quality (गुणवत्ता)
4. Affordability (किफायती)
5. Accountability (जवाबदेही)

भारत सरकार ने 29 जुलाई को जो शिक्षा नीति पारित की है। वह अतिउत्तम है। क्योंकि यह नीति देश के संपूर्ण युवाओं को अपना सर्वांगीण विकास तथा रोजगार के अवसर सृजित करने वाली है। नीति से पूर्व जो शिक्षा प्रणाली संचालित थी। वह परंपरागत शिक्षण विधियों पर आधारित थी। जिसमें अल्प मात्रा में रोजगार की संभावनाएं थी। यही ऐसे कारण हैं, जिनके द्वारा भारत में बेरोजगारी जैसी ज्वलंत समस्याओं को जन्म दिया था। मेरे ख्याल से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति कई मायनों में हितकारी होगी। क्योंकि जिस तरह संपूर्ण विश्व में डिजिटल शिक्षा पद्धति तथा व्यवसायिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। उसे ध्यान में रखते हुए यह नीति अवश्य लाभकारी होगी। भारतीय युवाओं को आज के इस तकनीकी, सूचना व संचार प्रौद्योगिकी सीखने की ओर प्रेरित भी करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की आवश्यकता एवं महत्त्व :

वर्तमान समय ज्ञान विज्ञान व उभरती हुई अर्थव्यवस्था व प्रौद्योगिकी के साथ–साथ ई–शिक्षा का है। क्योंकि आने वाला समय जन–धन को डिजिटल रूप मिलने वाला है, इस पर सरकार की प्रायोगिक योजनाएं तीव्रगति से चल रही है। नई शिक्षा नीति में छात्र किताबी ज्ञान के अलावा भौगोलिक/बाहरी ज्ञान की भी समझ व परख ठीक से कर सकें। बच्चों को कुशल बनाने के साथ–साथ जिस क्षेत्र में वे रुचि रखते हैं, उनको उस क्षेत्र में पूर्ण अवसर देने के

साथ–साथ उन्हें प्रशिक्षित करना है। इस प्रकार सीखने वाले अपने उद्देश्य और अपनी क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम होंगे। बस इसी बाबत शिक्षा नीति में बदलाव की आवश्यकता पड़ी जिस का वर्तमान में महत्त्व भी रहेगा।

भाषायी विविधता का संरक्षण प्रदान करना :

इस नीति के अंतर्गत पांचवी कक्षा में शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया है। स्कूली और उच्च शिक्षा में क्षेत्रों के लिए संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का भी विकल्प मौजूद होगा। जिनमें निम्न प्रकार से भाषाओं का बालकों को लाभ मिलेगा।

- मातृभाषा को आगे बढ़ाने में सहायता के साथ–साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास सम्भव हो सकेगा।
- अंग्रेजी भाषा के साथ–साथ संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के विकल्प मौजूद होने से छात्रों को भाषा चुनने की कोई बाध्यता नहीं होगी।
- इंटर्नशिप की व्यवस्था लागू होने से नए इंटर्न्स को मौका व सीखने के नवीन अवसर मिलेंगे।
- एनसीईआरटी द्वारा एक नई रूपरेखा तैयार की जाएगी, जिसमें कक्षा 10 व 12 की परीक्षाओं में कुछ बदलाव कर सेमेस्टर में बहुविकल्पीय प्रश्नों में सुधार से छात्र–छात्राओं में भ्रम को लेकर होने वाली समस्या से छुटकारा मिलेगा।
- देश में उच्च शिक्षण संस्थानों में नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 3.5 करोड़ नई सीटें जुड़ने से छात्र एवं छात्राओं को आगे बढ़ने के नये–नये अवसर मिलेंगे।
- उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंको को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए (एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट) दिया जाएगा।
- इस नीति में मानव संसाधन मंत्रालय को बदल कर उसका नाम शिक्षा मंत्रालय करने पर मुहर लगी है।
- संगीत, योग, खेल, मुख्य रूप से पाठ्यक्रम में शामिल करेंगे, जिनका मौलाना अबुल कलाम आजाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री रहे, समर्थक थे।
- स्कूलों में नई शिक्षा नीति 2020 में 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 के प्रारूप को मंजूरी दी गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत विद्यालयों में सभी स्तरों के छात्रों को बागवानी नियमित रूप से खेल–कूद/योग/नृत्य/मार्शल आर्ट को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी। इनके साथ ही पाठ्यक्रम में भाषा के संदर्भ में निम्न प्रकार के उद्देश्यों को सम्मिलित किया गया है। जो बिंदु बार नीचे दिए गए हैं।

- भारत को एक वैश्विक स्तर पर महाशक्ति बनाना।
- कक्षा 5 तक की शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय/भाषा क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध कराना।

- मातृभाषा को कक्षा आठ और उसके आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
- उच्च–शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता के स्तर को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात (gross enrollment number ratio GER) percent तक लाना।
- 10+2 का पाठ्यक्रम समाप्त कर 5+3+3+4 के मॉडल को विकसित कर अमल में लाना।
- राष्ट्रीय प्रगति समान नागरिकता एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करना।

तथ्यों / आंकड़ों का विश्लेषण :

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर 2022) से मिले आंकड़े राहत और चुनौती दोनों का एहसास कराते हैं राहत की बात यह है, कि भारत में महामारी के कहर के बाद शिक्षा का विकास और विस्तार फिर शुरू हो गया है। हालांकि 4 साल बाद राष्ट्रीय स्तर पर हुए इस व्यापक सर्वे में एक बड़ी चुनौती भी सामने आई है, कि राष्ट्रीय स्तर पर पढ़ने वाले की बुनियादी क्षमता साल 2012 के पहले से स्तर तक गिर गई है। पिछले कुछ वर्षों में इसमें सुधार दिखने लगा था। लेकिन अब लगता है, कि महामारी ने गहरा असर दिखाया है। देश के अधिकांश राज्यों में सरकारी और निजी दोनों तरह के स्कूलों में लड़कों के साथ ही लड़कियों की भी पढ़ने की क्षमता घटी है। सरकारी एवं निजी स्कूलों में कक्षा 3 के सिर्फ 20.5% छात्र पढ़ सकते हैं, जबकि 2018 में 27.3% छात्र पढ़ने में सक्षम थे। उत्तर भारत के राज्यों में ही नहीं बल्कि दक्षिण के अपेक्षाकृत विकसित राज्यों में भी गिरावट चिंता जगाती है। कक्षा 5 की बात करें तो साल 2018 में 50.5% छात्र पढ़ने में सक्षम थे, पर 2022 में सक्षम छात्र 42.8 प्रतिशत हो गए हैं। साल 2018 की तुलना में बच्चों के बुनियादी अंकगणितीय स्तर में भी गिरावट आई है। कक्षा 3 के छात्रों के मामले में 2018 में 28.2% की तुलना में राष्ट्रीय स्तर पर अनुपात अब 25.9% हो गया है। यह भी लगभग पूरे स्कूल स्तर पर गणित की क्षमता को बढ़ाएं रखने के लिए स्कूलों में विशेष अभियान चलाने की जरूरत है। शिक्षा के स्तर को सुधारना और गणित ही या अंकगणित को ज्यादा व्यावहारिक बनाना बहुत जरूरी है। वैसे शिक्षाविद यह पहले से ही मान कर चल रहे थे, कि लॉकडाउन और ऑनलाइन कक्षाओं की वजह से छात्रों की पढ़ने की क्षमता में कमी आएगी। बहरहाल जो कमी साल 2022 में दिखी है उसे साल 2023 में तेजी से पूरा कर लेना चाहिए। यदि देश के हर बच्चे की नींव पढ़ने में लिखने और गणित के अभ्यास में पक्की हो जाए, तो देश का भविष्य बदल जाएगा। मगर इस मंजिल तक पहुंचने के लिए जोरदार कोशिश करनी होगी।

सामान्यकरण / निष्कर्ष :–

1986 की शिक्षा नीति जहां विभिन्न सामाजिक समूह को मानक शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए तैयार की गई थी। इसमें वंचित समूह पर बल प्रदान किया गया था। वही 2020 की शिक्षा नीति में सामाजिक समावेशन पर बल दिया गया है। इसमें शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण मानव

क्षमता एवं न्याय संगत समाज का विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देना है। नई शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम आलोचनात्मक सोच चर्चा और विश्लेषणात्मक सीखने की अनुमति देने पर केंद्रित है। कुल मिलाकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 शिक्षा और प्रशिक्षण मानव संसाधनों को अनूकूल बनाया, जिन्होंने मूल्य शिक्षा में योगदान दिया। मानव संसाधन बनाने का सपना देखती है, जो मूल्य प्रस्ताव तैयार करेगा। इस प्रकार नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली अंतरराष्ट्रीय होने की ओर अग्रसर हो रही है। नई शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा के लिए एक नया पाठ्यक्रम और सक्षम रचना की परिकल्पना की गई है, जो विद्यार्थियों की आवश्यकता और उनके विकास के विभिन्न चरणों में प्रसांगिक है। इस नीति का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को तैयार करना है, जो भारत के सभी बच्चों को लाभान्वित कर सके। इसका लक्ष्य भारत को एक वैश्विक ज्ञान के स्तर पर महाशक्ति बनाना है। शिक्षण के लिए न्यूनतम योग्यता 4 वर्ष एकीकृत बी०एड०शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.एफ.टी. 2021 एन.सी.ई.आर.टी. के परामर्श से बनाई जाएगी। 2030 तक शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत B-Ed होगी।

स्कूली शिक्षा में मौजूदा 10̣2 संरचना को 3 से 18 वर्ष की आयु वाले छात्रों के लिए 5+3+3+4 को कवर करते हुए एक नया शैक्षणिक और पाठ्यक्रम पुनर्गठन के साथ संशोधित किया जाएगा। वर्तमान में 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को 10+2 प्रस्तुत रचना में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि कक्षा 1 से 6 वर्ष की उम्र में शुरू होती है। इसके मुख्य रूप से यह लाभ होगा। नई शिक्षा नीति छात्रों के व्यवहारिक ज्ञान को सिर्फ हटाकर सीखने पर महत्त्व नहीं देगी। यह छात्रों को कम उम्र से वैज्ञानिक स्वभाव में विकसित करने में मदद करेगी।

संदर्भ सूची :

1. पाल हंसराज (पाठ्यचर्या कल आज और कल) शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली – 2006
2. महाजन, बी.डी. प्राचीन भारत का इतिहास, एस०चंद एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
3. कोठारी, अतुल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीयता शिक्षा का पुनरुत्थान, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, जनवरी–2021
4. त्यागी, पाठक, पी.डी.जी.एस.डी. कोठारी कमीशन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2021
5. मल्होत्रा ममता, शिक्षा का आधार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली जनवरी–2020
6. पचौरी, गिरीश, कार्य शिक्षा, गांधीजी के नई तालीम एवं सामुदायिक सहभागिता आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ–2020
7. पांडेय, रमाशंकर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नवयुग पब्लिकेशन,रामबाग आगरा,
8. बयाती, जमुनालाल, सर्व शिक्षा, राखी प्रकाशन, संजय पैलेस व्यवसायिक कंपलेक्स आगरा 28202।

❒❒❒

एस्ट्रान कॉलेज ऑफ एजूकेशन, मेरठ

वैचारिक क्रांति में भाषा का योगदान

—डॉ. माया शर्मा

राष्ट्रीय चेतना किसी भी देश के राष्ट्रवादी विकास के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है, भाषा किसी भी संस्कृति की धुरी होती है। समाज, संस्कृति एवं सभ्यता को विकसित करने में भाषा का बहुमूल्य योगदान होता है। हिंदी भाषा का इतिहास अधिक पुराना है। हिंदी भारत की केंद्रीय भाषा है। इस रूप में वह प्रांतीय व्यवहार का साधन भी है तथा प्रदेश की विभिन्न संस्कृतियों को समर्थन पूर्वक अभिव्यक्त करने वाली शक्ति भी है।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं राष्ट्रीय चेतना विकसित करने में वैचारिक क्रांति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वैचारिक क्रांति का विस्तार तब संभव होता है जब राष्ट्र में कोई एक भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम हो। एक भाषा के न होने का यह अर्थ नहीं है कि, उस क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना विकसित नहीं होगी, परंतु एक राष्ट्रीय भाषा संप्रभुता, अखंडता, एकत्त्व, और राष्ट्रीयता को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वह अपने वास्तविक अर्थ को ना केवल समाज में विकसित करती है बल्कि, संपूर्ण समाज में भाषाई विविधता होते हुए भी एकता के सूत्र में समाज को बांधे रखती है, यह भाषा की शक्ति है। अपने विचारों को दूसरों तक आसानी से पहुंचाने के लिए सर्वश्रेष्ठ माध्यम भाषा ही होती है। भाषा समझने योग्य हो तो वैचारिक क्रांति उत्पन्न होती है। एक समझने योग्य भाषा के अभाव से समाज एवं राष्ट्र को एक सूत्र में बांधना कठिन हो जाता है यही कारण है कि, राष्ट्रीय चेतना के लिए राष्ट्रीय भाषा का होना अधिक आवश्यक है ।

उद्देश्य

किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना एवं नवजागरण के लिए वैचारिक क्रांति का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वैचारिक क्रांति में योगदान देने वाले लेखक, कवि, एवं साहित्यकारों ने अपनी कलम के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना विकसित करने का प्रयास किया। भारत के संदर्भ में भी साहित्यकारों ने सुस्ती नहीं दिखाई राष्ट्रीय चेतना के लिए उन्होंने, भारतीय साहित्य में वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया। अपने विचारों के माध्यम से भारत में राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने का जो प्रयास किया गया उसमें भाषा की मुख्य भूमिका रही। भाषा के माध्यम से विकसित नवीन अवधारणा को "वैचारिक क्रांति" की संज्ञा दी गई। उसके लिए सर्वाधिक जो मूल तत्त्व विद्यमान रहा वह भाषा का प्रश्न था। हिंदी भाषा में लेख एवं कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना विकसित करने में भारतीय साहित्यकार अग्रणी रहे, उनके विचारों से समाज में ना केवल राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई बल्कि मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव भी

उत्पन्न हुआ। यह तब संभव हुआ जब भारत में भाषा के माध्यम से अपने विचार साहित्यकारों द्वारा प्रेषित किए गए। राष्ट्रीय चेतना विकसित करने में भाषा सदैव मुख्य भूमिका में रही। भाषा के इसी मुख्य तत्त्व को समाज के सम्मुख रखना मेरे शोध का मूल उद्देश्य है।

परिकल्पना

राष्ट्रीय चेतना विकसित करने में भाषा मूल तत्त्व का कार्य करती है। एक वैचारिक क्रांति राष्ट्रीय क्रांति को प्रभावित करती है, और उस राष्ट्र में राष्ट्रवाद का उद्भव होता है। राष्ट्रवाद की उत्पत्ति राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता पर निर्भर करती है जिसका आधार स्तंभ भाषा है। भारत में राष्ट्रीय भाषा हिंदी की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय विषय मानना श्रेष्यकर होगा।

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

इसमें साहित्य के सर्वेक्षण पर विशेष बल दिया गया है।

लेखन प्रणाली में यह ऐतिहासिक एवं राष्ट्रवादी इतिहास लेखन पर आधारित है।

आंकड़ों का एकत्रीकरण साहित्यिक स्रोतों के माध्यम से किया गया है।

शोध की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग भी किया गया है।

"वैचारिक क्रांति"

राष्ट्रीय चेतना किसी भी देश के राष्ट्रवादी विकास के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है, भाषा किसी भी संस्कृति की धुरी होती है। समाज, संस्कृति एवं सभ्यता को विकसित करने में भाषा का बहुमूल्य योगदान होता है। हिंदी भाषा का इतिहास अधिक पुराना है। हिंदी भारत की केंद्रीय भाषा है। इस रूप में वह प्रांतीय व्यवहार का साधन भी है तथा प्रदेश की विभिन्न संस्कृतियों को समर्थन पूर्वक अभिव्यक्त करने वाली शक्ति भी है। हिंदी की सर्वव्यापकता हमारी राष्ट्रीय भावना से प्रेरित है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि, हिंदी के पीछे राष्ट्रीय शक्ति काम कर रही है, क्योंकि हिंदी केंद्रीय या राष्ट्रीय भाषा के रूप में एकता का आधार बनी हुई है। वर्तमान में अनेक देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है। राष्ट्रीय चेतना एवं भाषा के प्रश्न के संदर्भ में यह बात अधिक सोचनीय है कि, भारतवर्ष की मूल अवधारणा में किसी एक भाषा को संपूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा घोषित करने का कोई प्रावधान नहीं किया गया है। बल्कि हिंदी भाषा से एकत्व तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास होना अवश्यंभावी है। भारत भाषाई आधार पर विविधता वाला देश है यहां धर्म, संस्कृति, जाति एवं मान्यताओं की विविधता पाई जाती है। भाषाई विविधता होने के बाद भी भारत में राष्ट्रीय एकता एवं चेतना विकसित होने का मूल कारण यह रहा कि भारत में हिंदी भाषा के लिए आंदोलन प्रारंभ हो चुके थे। भारत में रहने वाले समस्त व्यक्तियों के हृदय में भारतवर्ष की मूल अवधारणा विकसित हो रही थी, जिसमें केंद्रीय भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकारा जा रहा था। हिंदी भाषा की संकल्पना धीरे–धीरे संपूर्ण राष्ट्र में फैल गई।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय भाषा के विषय को दो संदर्भों में देखा जा सकता है एक, वह भाषा, जो प्रारंभ से राष्ट्रीय परिदृश्य पर थी और जिसने समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधकर राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व संभाला और दूसरा, कांग्रेस की भाषा नीति। यह सर्वविदित है कि अपने उदय काल से ही हिंदी भारतीय भाषाओं में सर्वप्रमुख रही है। क्षेत्र की दृष्टि से भी और प्रयोगकर्ताओं की दृष्टि से भी हिंदी सर्वश्रेष्ठ है। अपने उद्भव के 200–300 वर्षों में हिंदी संपूर्ण भारतवर्ष के भाषिक व्यवहार और साहित्य की भाषा बन गई थी और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में इसका प्रचार–प्रसार प्रारंभ हो गया था। यह भी स्पष्ट तौर पर कहा जा

सकता है कि, इस समय तक खड़ी बोली का महत्त्व अन्य भाषा रूपों से अधिक नहीं था। साहित्य के क्षेत्र में तो कम से कम हिंदी की अन्य बोलियों और शैलियों को पर्याप्त महत्त्व मिलता था। सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भारत में हिंदी भाषा के महत्त्व को कैसे सर्वमान्य तक लाया जा सकता है। भारत में उत्तर भारतीय एवं मध्य भारत से लेकर पश्चिम–उत्तर भारत में अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहां हिंदी भाषा प्रचलित है। यही सबसे बड़ा प्रचार का माध्यम रहा होगा। क्योंकि व्यक्तियों में आपसी भाषाई मतभेद पूर्व में उपस्थित नहीं थे। मध्यकालीन भारत को हिंदी भाषा तथा भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का काल माना जा सकता है। सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत एक ही था। विविधता में एकता ही भारत की सबसे बड़ी विशेषता भारत के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न धर्मों के जो तीर्थ स्थान है, इन स्थानों में आने वाले यात्रियों ने हिंदी को देश के कोने–कोने में पहुंचाने का प्रयास किया। हिंदी भाषी प्रदेशों के लोग, हिंदी तीर्थ स्थानों पर आते थे और हिंदी भाषी प्रदेश के निवासी भी आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेशों में अपने तीर्थ स्थानों पर जाते थे। ऐसे में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो विभिन्न भाषा भाषियों के बीच सेतु का कार्य कर सके। हिंदी ने उस काल में इस दायित्व का निर्वहन किया।

"डॉक्टर मलिक मोहम्मद के अनुसार, देश के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करने वालों को एक सामान्य भाषा का सहारा लेना पड़ता था। उन दिनों एक सामान्य व्यापक भाषा केवल हिंदी थी, जो उत्तर–दक्षिण, पूरब–पश्चिम के बीच तीर्थ यात्रियों के बीच में बातचीत की सामान्य भाषा थी। विशेषकर दक्षिण और उत्तर के सांस्कृतिक संबंध की दृढ़ श्रृंखला के रूप में हिंदी भाषा सशक्त माध्यम बनी हुई थी।" सच्चाई तो यह है कि जनसंपर्क की भाषा किसी के बनाए नहीं बनती, परंतु उसको सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियां सदियों से स्वरूप देती आई है। भारत देश की सांस्कृतिक परंपराओं को अक्षुण्य बनाए रखने में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के बाद हिंदी को व्यापक रूप धारण करने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ है। इस आधार पर हम यह मान सकते हैं कि, उस समय भारत में, सांस्कृतिक सहभागिता तथा तीर्थ यात्रियों के माध्यम से भारत में हिंदी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से विकसित किया गया होगा।

भारत में प्राचीन काल से ही विभिन्न भाषाओं का उद्‌भव हुआ, एवं भाषाई प्रगति सांस्कृतिक प्रगति का माध्यम बनी। आधुनिक काल में हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता और अभिमान की प्रतीक मानी जाने लगी थी। हिंदी भाषा के संदर्भ में आधुनिक काल का आरंभ 1800 ईस्वी में कोलकाता में फोर्ट विलियम महाविद्यालय की स्थापना से माना जा सकता है। यह महाविद्यालय अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदुस्तानी, बंगला, ग्रीक आदि भाषाओं में शिक्षा दिया करता था। हिंदी भाषा, हिंदुस्तानी भाषा ही थी, परंतु गिलक्रिस्ट जो कि फोर्ट विलियम महाविद्यालय में हिंदुस्तानी विभाग के अध्यक्ष थे, की भाषा नीति हिंदी के विरुद्ध रही, अतः इसी कारण हिंदी में उर्दू का समावेश हो गया और एक अपभ्रंश वाली हिंदी का उदय हुआ। इसी महाविद्यालय में 1823 में विलियम प्राइस के विभागाध्यक्ष बनने के पश्चात हिंदुस्तानी के स्थान पर हिंदी का अध्ययन प्रारंभ हो गया। उस समय संपूर्ण भारत में ऐसी शिक्षण संस्थाएं उपस्थित थी जो हिंदी भाषा में अध्ययन करा रही थी। जिनमें अनेक विद्यालय एवं महाविद्यालय शामिल थे।

भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के समय हिंदी भाषा ही संपर्क के लिए अपना दायित्व निभा रही थी। सभी क्रांति समाचार, संवाद और संकेत हिंदी में ही प्रसारित किए गए। क्रांति का विस्तार भारत के अधिकांश राज्यों में तो था, परंतु दक्षिण भारत से क्रांति अछूती रह

गई, इसका एकमात्र कारण हिंदी भाषा का ना होना था। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने यह अनुभव किया कि हिंदी के प्रचार–प्रसार से ही देश को स्वाधीनता मिल सकती है। इस संबंध में ऐसे प्रदेश जहां हिंदी भाषा नहीं बोली जाती उन क्षेत्रों में हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार प्रसार किया गया।

केशव चंद्र सेन ने 1873 में अपने बंगाली पत्र "सुलभ समाचार" में लिखा कि, यदि भाषा एक न हो और भारतवर्ष में एकता और अखंडता सुनिश्चित न हो पाई तो उसका उपाय क्या है? यह विचारणीय तथ्य है। संपूर्ण भारत में एक भाषा का उपयोग करना इसका एकमात्र उपाय हो सकता है। इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित है उनमें हिंदी भाषा सर्वश्रेष्ठ है।

वंदे मातरम के रचयिता बंकिमचंद्र चटर्जी ने भी हिंदी का पक्ष लेकर भारत को एक सूत्र में बांधने की कल्पना प्रस्तुत की थी।

सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती मूलतः गुजराती थे, परंतु अपने भाषणों, ग्रंथों, लेखों में उन्होंने हिंदी को वरीयता प्रदान की, और अपने भाषण हिंदी भाषा में दिए।

ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय मानते थे कि, केवल हिंदी ही अखिल भारतीय भाषा बन सकती है।

पुनर्जागरण एवं भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए बनाई गई "सनातन धर्म" सभा ने भी भारत के विभिन्न प्रदेशों में हिंदी को प्रोत्साहन दिया।

पंडित मदन मोहन मालवीय, गोस्वामी गणेश दत्त तथा श्रद्धा राम फिल्लौरी आदि ने पंजाब में हिंदी की लगभग 200 सायंकालीन पाठशाला की स्थापना की, तथा लाहौर में "विश्व बंधु" हिंदी दैनिक का प्रकाशन किया।

महाराष्ट्र में प्रार्थना सभा के माध्यम से महादेव गोविंद रानाडे ने हिंदी के प्रचार पर बल दिया।

संपूर्ण भारत में हिंदी भाषा के प्रचार के लिए समितियां बनाई गई, जिनमें मुख्य रूप से काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मुंबई हिंदी विद्यापीठ, महाराष्ट्र राष्ट्र सभा, मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, केरल हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक महिला सेवा समिति, सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति, आदि प्रमुख थी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1885 से 1904 तक कांग्रेस के अधिवेशनों में अधिकांशत हिंदी में भाषण दिए गए।

ब्रिटिश सरकार द्वारा 1900 में हिंदी को उत्तर प्रदेश में फारसी के साथ न्यायालय की भाषा घोषित किया गया।

महात्मा गांधी ने "हिंद स्वराज्य" नाम की किताब में हिंदी के महत्त्व को बताते हुए यह स्वीकार किया कि, भाषाई विचारों को प्रस्तुत कर हम एक सूत्र में बंध सकते हैं। वे लिखते हैं कि हर एक पढ़े–लिखे हिंदुस्तानी को अपनी भाषा हिंदी का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को फारसी का, और इन सभी को हिंदी का ज्ञान होना चाहिए। तब हम अपने आपस के व्यवहार में से अंग्रेजी को निकाल बाहर फेंक सकते हैं।

1917 ईस्वी में गांधी ने अपने उद्देश्यों को प्रकट करते हुए उपनिवेशो में बसे भारतीय विषय पर कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में हिंदी में भाषण दिया था।

1918 ईस्वी में महात्मा गांधी हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए थे।

1919 ईस्वी तक गांधी जी सदा यही कहते रहे कि हिंदी ही "राष्ट्रभाषा" के सर्वथा योग्य है। महात्मा गांधी के अनुसार राष्ट्रभाषा की पांच विशेषताएं बताई गई –

वह भाषा राज्य कर्मियों के लिए सरल हो।

राष्ट्र के लिए सरल हो।

क्षणिक या अल्प स्थाई स्थिति के ऊपर निर्भर ना हो।

वह भाषा भारतवर्ष के परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार निभा सके।

उस भाषा को देश के अधिकांश निवासी बोलते हो।

गांधीजी मानते थे कि हिंदी ही इन पांचों शर्तों को पूरा करती है।

1925 में कानपुर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में कांग्रेस कमेटी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति एवं कार्यकारिणी समिति की कार्यवाही में यह निर्णय लिया गया कि, साधारणतः कार्यवाही हिंदुस्तानी में होगी यहां पर हिंदुस्तानी से तात्पर्य हिंदी भाषा ही है। यदि कोई अवसर उपस्थित हो जाए तो अंग्रेजी या कोई प्रांतीय भाषा प्रयुक्त हो सकती है। प्रांतीय समितियों की कार्यवाही साधारणतः प्रांतीय भाषाओं में चलेगी, हिंदुस्तानी का भी प्रयोग किया जाएगा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का यह निर्णय ना केवल भाषा की वैचारिक क्रांति से संबंधित था, अपितु भारतीय राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को महत्त्व भी देना था।

1935 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में महात्मा गांधी ने पुनः राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हिंदी का महत्त्व बताया।

1936 में महात्मा गांधी के प्रयासों से पश्चिम व पूर्वी क्षेत्रों में हिंदी भाषा के प्रचार के लिए "हिंदी प्रचार समिति वर्धा" की स्थापना हुई।

भाषा संबंधी संदेहों को दूर करने के लिए 1938 में हिंदी के स्थान पर राष्ट्रभाषा कर दिया गया।

आचार्य किशोरी दास वाजपेई के शब्दों में 1901 से 1910 तक जो राष्ट्रभाषा की प्रगति हुई थी, उसमें अत्यधिक प्रेरणा कुछ राजनैतिक आंदोलन से मिली थी, जिसके सूत्रधार राष्ट्रपिता महामना लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक थे, और जिसकी भुजाएं बंगाल और पंजाब थी।

1921 से 1923 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह आंदोलन अपने पूर्ण जोरों पर था। जिसमें राष्ट्रभाषा की पताका संपूर्ण भारत में फहर रही थी।

1924 से 1930 के बीच राष्ट्रभाषा का प्रसार संपूर्ण भारत में हिंदी के संदर्भ में तीव्र गति से हुआ।

1942 से 1944 तक के राष्ट्रीय संघर्ष में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया और अब तक भारत का कोई भी प्रदेश राष्ट्रभाषा से शून्य ना रहा।

भारतीय वैचारिक क्रांति के एक और अग्रदूत माधव राव सप्रे हुए जिन्होंने संपूर्ण भारत में भाषाई आधार पर राष्ट्रीय एकता का पक्ष रखा। उन्होंने अनेक पत्र निकाले जिनमें हिंदी केसरी, कर्मवीर पत्रिका, देश सेवक एवं छत्तीसगढ़ मित्र प्रमुख थे। 1924 में माधव राव सप्रे जी देहरादून अधिवेशन में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी चुने गए। अधिवेशन में सप्रे जी ने हिंदी भाषा के पक्ष में राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने की बात कही। राष्ट्रवादी चेतना निर्मित करने का माधव राव सप्रे जी का भाव स्वतंत्रता संग्राम लड़ने की प्रेरणा से ओतप्रोत था। व्यक्तिगत तौर पर उन्होंने लेखनी के माध्यम से अपना आंदोलन जारी रखा।

हिंद केसरी ने 30 जून 1960 के अंक में क्रांतिकारियों का एक पत्र प्रकाशित किया था। देशभर में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलनों के समाचार दूर–दूर से संकलित कर "हिंद केसरी" के माध्यम से प्रसारित किए जा रहे थे। उस काल में माधव राव सप्रे जी "हिंद केसरी" में इलाहाबाद से लेकर मद्रास, तथा कोचीन तक के समाचार छपते थे।

22 अगस्त 1960 को ब्रिटिश सरकार ने माधवराव सप्रे जी को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। हिंद केसरी के द्वारा राष्ट्रवादी चेतना के साथ ही राष्ट्रभाषा का प्रचार–प्रसार भी बड़े जोरों शोरों से किया गया। माधव राव सप्रे जी की संकल्पना थी की राष्ट्रभाषा ही राष्ट्रवाद को जन्म देती है।

निष्कर्ष – वैचारिक क्रांति में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में भाषा का प्रश्न एक जटिल समस्या थी। परंतु सर्वव्यापी राष्ट्र के जनमानस द्वारा आत्मसात किए जाने के साथ–साथ हिंदी के प्रचार–प्रसार ने इसे राष्ट्रीय भाषा बनाने में कठोर परिश्रम किया। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी प्रचार समानांतर रूप से चलते रहे। आंदोलनकारी नेताओं के साथ–साथ जनता का ध्यान राष्ट्रीय घटनाओं की ओर तो था ही, साथ ही भारतीय यह जान चुके थे कि, स्वाधीनता आंदोलन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक राष्ट्रीय भाषा का होना अति आवश्यक है और इसी माध्यम से संपूर्ण भारत में राष्ट्रवाद लाया जा सकता। भारत में हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। उपरोक्त कथनों से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान परिदृश्य में वैचारिक क्रांति ने हिंदी की अनिवार्यता को अन्य भाषाओं की अपेक्षा पहले पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया है। खास बात ये है कि, 2011 के जनगणना के आधार पर हिंदी बोलने वाले लोगों में इजाफा हुआ है । 2001 में 41.03 फीसदी लोगों ने हिंदी को मातृभाषा बताया था, जबकि 2011 में इसकी संख्या बढ़कर 43.63ः हो गई है। वहीं दूसरे स्थान पर बांग्ला भाषा बरकरार है।

संदर्भ

1. शुक्ला राम लखन, आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. थरेजा, पुष्पा, भारतेंदु युगीन साहित्य में राष्ट्रीय भावना दिल्ली 1978
3. शर्मा रामविलास, भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, दिल्ली 1982
4. देसाई आर, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि दिल्ली 1977
5. अग्रवाल डॉ विजय, हिंदी भाषा अतीत से आज तक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
6. अहमद डॉ इकबाल, राजभाषा हिंदी प्रगति और परायण, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
7. सप्रे डॉ अशोक, पंडित माधव राव सप्रे व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन, पंडित माधव राव सप्रे साहित्य शोध केंद्र, रायपुर छत्तीसगढ़
8. माधवराव सप्रे संग्रहालय भोपाल
9. ठाकुर हरी, छत्तीसगढ़ के रत्न, रायपुर 1970
10. वर्मा डॉक्टर श्रीमती सरोज, हिंदी सेवी माधव राव सपरे, साहित्य वाणी पब्लिकेशन

❏❏❏

सहायक प्राध्यापक डेनियलसन डिग्री महाविद्यालय छिंदवाड़ा

भाषा का प्रश्न और पूर्वोत्तर की हिंदी

—डॉ. अशोक कुमार

त्रिपुरा हमारे देश का एक ऐसा प्रांत है जो तीन तरफ से बंगलादेश से घिरा हुआ है। यहां पर हिन्दू, मुस्लिम व बौद्ध सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। बंगला यहां की प्रमुख भाषा है, आदिवासियों की अपनी अलग भाषाएं हैं परन्तु यहां पर हिंदी भाषियों की संख्या भी काफी है। राजधानी अगरतला में हिंदी निदेशालय के साथ हिंदी शिक्षण कालेज की भी स्थापना की गई लेकिन हिंदी के प्रचार–प्रसार का यह दौर यहां पर लंबे समय तक नहीं चल सका क्योंकि हिंदी भाषा के बढ़ते प्रभाव से चिंतित कुछ सांप्रदायिक ताकतों ने हिंदी प्रतिष्ठानों पर ध्वंसात्मक प्रहार करना शुरू कर दिया इससे भाषायी एकता एवं अखंडता को बड़ी ठेस पहुंची।

जब हम भाषा का प्रश्न उठाते हैं तो उस समय भारत की संस्कृति, अस्मिता तथा स्वाभिमान का प्रश्न भी जेहन में उठता है। आजादी के पहले से एक ऐसी भाषा के लिए प्रश्न उठाया जाता रहा है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोए रखे तथा सम्पर्क भाषा का कार्य कर सके। यह प्रश्न उन नेताओं एवं समाज सेवियों ने भी उठाया जिन की मातृभाषा हिंदी नहीं थी। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, विवेकानंद, स्वामी दयानंद, रवीन्द्र नाथ टैगोर, सुभाष चन्द्र बोस आदि तमाम मुख्य व्यक्तियों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के समर्थन में बात कही है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया हिंदी ने ही किया है। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश के कुछ संकीर्ण मानसिकता वाले राजनेताओं के स्वार्थी मनसूबों के फलस्वरूप हिंदी को राष्ट्रभाषा बनने में अड़चनें आती रही हैं। आज भारत भूमि का कोई ऐसा कोना नहीं है जहां पर हिंदी को बोला या समझा न जाता हो। क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने भूमंडलीकरण को जन्म दिया, इससे पूरी दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन गई है। ग्लोबल विलेज की धारणा के कारण भाषा, संस्कृति में बदलाव आना स्वाभाविक है और बदलाव प्रकृति का नियम है। अतः आज लोगों के बीच दूरियां खत्म होने से भाषाओं का दायरा बढ़ गया है। इसी संदर्भ में हिंदी ने तो अपनी सीमा का बहुत ही ज्यादा विस्तार किया है। आज विश्व के समस्त कोनों में भारतवंशी निवास कर रहे हैं, चाहे वे वहां पर गिरमिटिया मजदूर के रूप में बसे हों या किसी व्यवसाय, तथा नौकरी–पेशा की वजह से। और ये सब किसी न किसी रूप में हिंदी के संवर्धन में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

भारत में वैधानिक रूप से हिंदी की स्थिति पर दृष्टिपात किया जाए तो यह संघ राज्य की राजभाषा है तथा उत्तर भारत के हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार व झारखंड की सरकारों

ने भी अपने सरकारी राज–काज की भाषा के रूप में इसे स्वीकार किया हुआ है। दक्षिणी राज्यों ने हिंदी को लेकर हमेशा बवाल खड़ा किया है, ऐसा भी नहीं है कि वहां के लोग हिंदी नहीं जानते। बल्कि वहां पर वाणिज्य, व्यापार में हिंदी का व्यापक रूप से प्रयोग होता है। वहां के लोगों को हिंदी को कानूनी रूप से राष्ट्रभाषा/राजभाषा स्वीकार करने में ही तकलीफ होती है। शायद उनको ऐसा लगता है कि हिंदी को अगर राजभाषा/राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया तो इन राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा। हिंदी के प्रति कमोबेश ऐसी ही स्थिति पूर्वोत्तर राज्यों की है, (असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा) जिन्हें हम 'सेवन सिस्टर' के नाम से जानते हैं। पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी के तीन केन्द्र गुवाहाटी, शिलांग वह दीमापुर हैं पूर्वोत्तर के राज्यों में हिंदी एक सशक्त सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान इन राज्यों में हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभा रहा है।

पूर्वोत्तर राज्यों में भाषायी दृष्टि से असम में असमिया और त्रिपुरा में बंगला भाषा बोली जाती है। मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड तथा अरूणाचल प्रदेश में तिब्बत–बर्मा उप परिवार की और मोन–खमीरा वर्ग की भाषाएं बोली जाती हैं। देश की आजादी के बाद भारत सरकार ने इन राज्यों में सम्पर्क भाषा हिंदी के अध्ययन–अध्यापन और प्रचार प्रसार के कार्यों पर विशेष ध्यान दिया है।

आजादी के बाद हिंदी को जब राजभाषा घोषित किया गया तो यहां पर इसका कोई विशेष विरोध नहीं हुआ क्योंकि असमिया मागधी अपभ्रंश से उत्पन्न हुई भाषा है इसलिए असम के लोग हिंदी को आसानी से समझ लेते हैं। यहां पर हिंदी के प्रचार–प्रसार में महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, मारवाड़ियों एवं मजदूरों का बड़ा योगदान रहा है। असम के लब्धप्रतिष्ठित कवि श्रीमंत शंकरदेव ने 'ब्रजबुलि' नामक कृत्रिम भाषा को जन्म दिया– जिसमें मैथिली, ब्रज, अवधी तथा भोजपुरी शब्दों की भरमार थी। 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति'–वर्धा' ने भी यहां पर अपने परीक्षा केंद्र खोल कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है। अतः कहा जा सकता है कि असम में हिंदी एक सम्पर्क भाषा के रूप में अच्छा कार्य कर रही है। प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' जी को पूर्वोत्तर हिंदी के सजग प्रहरी के रूप में जाना जाता है। इन्होंने 'हिंदी साहित्य : युग और धारा', 'अलंकार विमर्श', 'हिंदी बावनी काव्य', 'शंकरदेव : साहित्यकार और विचारक', 'असम प्रान्तीय हिंदी साहित्य', 'माधवदेव : व्यक्तित्व और कृतित्व' आदि अनेक ग्रंथों की रचना कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। असम में हिंदी के प्रचार –प्रसार में कमलनारायण देव, चित्र महंत तथा रजनीकांत चक्रवर्ती आदि का भी सराहनीय योगदान रहा है।

सूर्योदय की भूमि वाले राज्य अरुणाचल प्रदेश में लगभग 26 जनजातियां तथा 110 उपजातियां मानी गई हैं। इन सबके रहन–सहन रीति–रिवाज, सामाजिक मान्यताएं, धार्मिक विश्वास एवं भौगोलिक परिवेश भी अलग–अलग है। इसी विभिन्नता के चलते इनकी

भाषाएं भी उतनी ही हैं जितनी जातियां, बल्कि जातियों से अधिक बोलियां और उपबोलियां हैं। यहां पर मुख्य रूप से निशी, आदी, आपातानी, गालो, नाक्ते, खामती, तांडसा, तांगिन, वांड्चू, शेरदुक्पन, मेम्बा आदि जनजातियां निवास करती हैं, जिनकी भाषा भी जनजाति के नाम से है। जैसे निशी जाति की 'निशी' भाषा तथा तागिन जाति की 'तागिन' भाषा। नेफा के असम से सटे इलाकों में असमिया और तिब्बत की सीमा से लगते इलाकों में हिंदी भाषा प्रचलन में थी। आजादी के पश्चात सन् 1967–68 में जब नेफा के समीपवर्ती स्कूलों में हिंदी माध्यम को बदलकर असमिया माध्यम प्रारम्भ किया गया तो यहां के जनजातीय लोगों ने इसका घोर विरोध किया। जिसके फलस्वरूप प्रशासन की टीम ने उनकी मांग को सही पाया और हिंदी को ही शिक्षा का माध्यम रहने दिया गया। इसीलिए कहा जाता है कि इतिहास गवाह है कि यह एक ऐसा प्रदेश है जो अहिंदी भाषी क्षेत्रों में होते हुए भी हिंदी भाषा के संदर्भ में जन आंदोलन हुए। तवांग गोम्पा में उस समय का आंदोलन का अभिलेख अभी भी सुरक्षित है। यहां के एकमात्र विश्वविद्यालय में हिंदी विषय में शोध कार्य भी हो रहें हैं तथा विश्वविद्यालय सन् 2001 से 'अरूण प्रभा' पत्रिका का प्रकाशन भी कर रहा है तथा हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह तथा अन्य हिंदी से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

अरूणाचल प्रदेश से हिंदी की अनेक पत्रिकाएं छपती रही हैं। 'सांगपो' (डॉ रमण सांडियाल) यहां की पहली हिंदी पत्रिका थी। इसके बाद पूर्व नागरी (डॉ रमण सांडियाल), अरूण नागरी, प्रवाह (डॉ भारती वर्मा), दिशा (डॉ अवधेश कुमार मिश्र), अरूणोदय (जयप्रकाश शुक्ल), अरूण ज्योति, विवेकानंद केंद्र से, 'अरूण आवाज' पत्र तथा 'अरूणोदय भूमि' का प्रकाशन अरूणाचल प्रदेश हिंदी समिति द्वारा होता है। अरुणाचल प्रदेश में डॉ. रमण शांडिल्य, डॉ. बी. बी.पांडेय, डॉ. धर्म राज सिंह, डॉ. माता प्रसाद, डॉ. मधुसूदन शर्मा, डॉ. सत्यदेव झा, नंदन राम जैसे साहित्यिकारों ने हिंदी साहित्य का संवर्धन किया है। यहां पर अच्छी बात यह है कि अन्य प्रान्तों की तरह हिंदी विरोधी भावनाएं नहीं दिखाई देती हैं। यहां पर राजनेता भी चुनाव प्रचार या जनसभाओं में हिंदी का प्रयोग करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि यहां पर घर, दफ्तर, सामान्य विचार विमर्श के लिए हिंदी का प्रयोग होता है। हालांकि यहां पर मीडियम आफ इंस्ट्रक्शंस अंग्रेजी, लेकिन संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग अधिक होता है।

त्रिपुरा हमारे देश का एक ऐसा प्रांत है जो तीन तरफ से बंगलादेश से घिरा हुआ है। यहां पर हिन्दू, मुस्लिम व बौद्ध सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। बंगला यहां की प्रमुख भाषा है, आदिवासियों की अपनी अलग भाषाएं हैं परन्तु यहां पर हिंदी भाषियों की संख्या भी काफी है। राजधानी अगरतला में हिंदी निदेशालय के साथ हिंदी शिक्षण कालेज की भी स्थापना की गई लेकिन हिंदी के प्रचार–प्रसार का यह दौर यहां पर लंबे समय तक नहीं चल सका क्योंकि हिंदी भाषा के बढ़ते प्रभाव से चिंतित कुछ सांप्रदायिक ताकतों ने हिंदी प्रतिष्ठानों पर ध्वंसात्मक प्रहार करना शुरू कर दिया इससे भाषायी एकता एवं अखंडता को बड़ी ठेस पहुंची। इस तरह की संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों की सोच के कारण यहां पर हिंदी भाषा का विरोध होता रहा है इसी

कारण हिंदी का अध्यापन विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर निराशाजनक है। त्रिपुरा में 'राष्ट्र भाषा प्रचार समिति–वर्धा' की एक शाखा काफी समय से हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत है, परन्तु जनता की उदासीनता एवं राज्य सरकार की उपेक्षा के कारण यहां पर हिंदी की स्थिति में सुधार नहीं आया है। यहां पर हिंदी प्रचारकों में रमेंद्र कुमार पाल का नाम प्रमुख है। इन्होंने भारत–पाक युद्ध (1971) में आये सैनिकों एवं आम जनता के बीच द्विभाषीय का कार्य किया। इन्होंने देवी मां, वर्षा वंदन, जानवरों की क्रांति, तथा प्राथमिक कोक बोरक भारती आदि पुस्तकों की रचना कर हिंदी साहित्य को समृद्ध करने व हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम योगदान दिया है।

मेघालय अर्थात 'बादलों का घर'। यहां पर खासी, गारो, अंग्रेजी तथा हिंदी प्रमुख भाषाएं हैं। यहां पर हिंदी के प्रचार प्रसार का कार्य करने वाली स्वेच्छिक संस्थाओं का अभाव है। केवल मात्र दो संस्थाएं– 'हिंदी प्रसार मंडल' तथा 'राष्ट्र भाषा प्रचार परिषद' वित्तीय अभाव के बावजूद भी हिंदी कार्यों से जुड़ी हुई हैं। सन् 1952 में मिसामारी हिंदी प्रशिक्षण केन्द्र के सक्रिय योगदान से मेघालय में हिंदी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में काफी अभिवृद्धि हुई है। यहां पर ईसाई मिशनरियों के वर्चस्व के बावजूद भी हिंदी के बढ़ते प्रभाव को समझने लगे हैं।

मेघालय में आरम्भिक काल में हिंदी के प्रचार–प्रसार में महात्मा सिंह, बैकुंठनाथ सिंह, केशव शर्मा, विश्वनाथ उपाध्याय, पद्मनाथ बरठाकुर आदि का अहम योगदान रहा है। इनके पश्चात डॉ. विवेक श्रीवास्तव, डॉ. दिनेश कुमार चौबे, डॉ. मानवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय तथा अकेलाभाई का भी सराहनीय योगदान रहा है। यहां पर हिंदी के विकास एवं प्रचार प्रसार में सन् 2005 में सम्पन्न 'अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन' की भी विशेष भूमिका रही है।

मिजोरम को आजादी से पहले 'लुशाई हिल्स' तथा बाद में 'मिजो हिल्स' नाम से जाना जाता था। यहां की प्रमुख भाषा मिजो तथा अंग्रेजी है। यहां पर हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए 'मिजोरम हिंदी प्रचार समिति' तथा 'हिंदी टीचर्स एसोसिएशन' एक लंबे समय से कार्यरत हैं। यहां आइजोल में आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था है।

मिजोरम में हिंदी साहित्य के संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार में मिजो भाषी साहित्यिकारों आर. जल्हैया, सेलेत थाड़, वी. एन. ठहाका, सी. कामलोवा, डॉ. सी. ई. जीनी, डॉ. बी. आर. राल्ते, आर. ललथला मौनी, लाल रिकिमी रेंथली आदि का विशेष योगदान रहा है।

मणिपुर पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी विकास में अच्छी स्थिति में है। एक पुराकथा के अनुसार शिव–पार्वती के लीला–नृत्य के समय नागराज ने 'मणि' का प्रकाश किया था। उसी की स्मृति में इसका नाम मणिपुर पड़ गया। यहां पर हिंदी क्षेत्र में कार्य करने वाली तीन संस्थाएं–'मणिपुर हिंदी परिषद', 'मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इंफाल' तथा 'अखिल भारतीय शिक्षक संघ, इंफाल' कार्यरत हैं। ये संस्थाएं हिंदी परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम तथा पाठयपुस्तकें तैयार करती हैं तथा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए संगोष्ठी एवं सम्मलेनों की व्यवस्था करती हैं। यहां पर प्रारंभिक कालीन हिंदी सेवियों में भागवत देव शर्मा, पंडित राधामोहन शर्मा तथा द्विजमणि

शर्मा का नाम प्रमुख है इनके पश्चात ललित माधव शर्मा, बंक बिहारी शर्मा, थोकचोक मधुसिंह, कुंजबिहारी सिंह, मयूम गुणाधर शर्मा, सिजगुरु मयूम, नीलवीर शर्मा, नवीन चंद, कंजकिशोर सिंह तथा राजकुमार खिदिर चंद आदि ने हिंदी भाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए हैं। यहां पर 'महिप' पत्रिका कविता प्रकाशन के लिए हिंदीत्तर कवियों को उपयुक्त मंच प्रदान करती है। यहां से चार दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं जिनमें पूर्वांचल प्रहरी, सेंटिनल, पूर्वोदय खबर तथा उत्तरकाल प्रमुख हैं। आज मणिपुर में राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी लेखन हो रहा है। यहां के हिंदी और गैर हिंदी विद्वानों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य कर हिंदी की श्रीवृद्धि की है। मणिपुर पूर्वोत्तर राज्यों में ऐसा राज्य है जहां पर हिंदी का विकास द्रुत गति से हुआ है।

नागालैंड में वैसे तो अंग्रेजी प्रमुख भाषा है परन्तु आओ, अंगामी, लोथा, सेमा, कोन्यक आदि भाषाएं भी बोली जाती हैं। यहां पर 'राष्ट्र भाषा प्रचार समिति', 'वर्धा असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति', 'मणिपुर हिंदी परिषद' आदि स्वैच्छिक संस्थाओं के परीक्षा केंद्र हैं। नागालैंड की एकमात्र स्वैच्छिक संस्था 'नागालैंड भाषा परिषद' है जो हिंदी माध्यम से जनजातीय भाषाओं की सेवा कर रही है। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सहयोग से यहां पर हिंदी प्रचार कार्य संतोषजनक है। नागालैंड में कुछ अवरोध के पश्चात भी हिंदी भाषा के विकास को गति मिली है। यहां के स्थायी निवासी पी. तमजन आओ तथा राबेमो लोथा ने हिंदी प्रशिक्षक के रूप में पहचान बनाई है। नगाभाषी हिंदी साहित्यकारों में के फ्योखामो लोता, एम. पी. तमजन आओ, की मांओं कमजक, जकिएनी अंगामी, किनजाकीर आदि का नाम प्रमुख है।

भाषाई दृष्टि से पूर्वोत्तर राज्यों का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि यहां पर अब हिंदी का इतना विरोध नहीं होता है जितना आजादी के प्रारम्भिक वर्षों में होता था। यहां पर हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में ही नहीं बल्कि साहित्यिक रूप में भी प्रतिष्ठित हो रही है। इसका प्रमुख कारण है यहां पर सैन्य बलों, सैलानियों, फिल्म इंडस्ट्री का आवागमन। यहां का नैसर्गिक सौंदर्य सभी को आकर्षित करता है। लोगों के आवागमन से यहां पर सभी की आमदनी बढ़ती है। अतः यहां के स्थानीय लोगों ने मन बना लिया है कि सम्पर्क भाषा हिंदी ही हमें जीवनयापन में मदद कर सकती है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि अब पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी अच्छी स्थिति में है तथा वह दिन दूर नहीं जब हिंदी राष्ट्र भाषा घोषित की जाएगी तो यहां पर इसे विरोध का सामना नहीं करना पड़ेगा।

❐❐❐

सहायक प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय कन्या महाविद्यालय सेक्टर–52 गुरुग्राम
ईमेल–ashokkoslia385@gmail.com मोबाइल –9811108079

भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा-नीति

–डॉ. विभाषा मिश्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में शालाओं में सीखने के माध्यम के रूप में मातृभाषा की अनुशंसा की गई है। इसके अनंतर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क तथा अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम–2009 में भी मातृभाषा को ही शिक्षा के माध्यम के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है। (एस. सी.ई.आर. टी.2018) राष्ट्रीय शिक्षा–नीति में तो मातृभाषा को शिक्षा प्रारंभ का अनिवार्य माध्यम निरूपित किया गया है। तद्नुसार, कम से कम कक्षा–5 तक तथा जहाँ संभव हो सके, कक्षा–8 तक मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी है।

भाषा मानव को मिला वह वरदान है, जिससे वह अन्य प्राणियों से न केवल भिन्न है, अपितु श्रेष्ठ भी है। इसका मुख्य कारण है इसकी सृजनात्मकता, जो अन्य प्राणियों की भाषा में उपलब्ध नहीं है। अन्य प्राणी जन्म से प्राप्त भाषा का ही आजीवन व्यवहार करते हैं, जबकि मानव–भाषा समुदाय–विशेष में अर्जित की जाती है। इसीलिए समुदाय–भेद से भाषा–भेद की स्थिति संभव हुई है, और विश्व में अनेक भाषाएँ अस्तित्व में आईं। अन्य प्राणियों में वह विकास संभव नहीं हो पाया, जो मानव ने किया, क्योंकि मानव को विरासत में पिछली पीढ़ियों की अनुभव–संपदा भाषा के ही जरिए सुलभ हो सकी। भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है कि सारा ज्ञान वाक्–रूप ही है (अय्यर, 1981)। देकार्ते ने इसीलिए भाषा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। वे कहते हैं– "Thanks to language, Man became man" अर्थात् भाषा से ही मनुष्य मनुष्य बन सका। इस दृष्टि से भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम न होकर संस्कृति–सभ्यता की वाहिका ही बन गई और पीढ़ी–दर–पीढ़ी मनुष्य ने ज्ञान–विज्ञान–प्रौद्योगिकी में अकथनीय उन्नति की।

भारत विश्व का वह देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँ का प्रायः प्रत्येक व्यक्ति एकाधिक भाषाओं का व्यवहार करता पाया जाता है। भाषिक भिन्नता या सांस्कृतिक भिन्नता यहाँ किसी भी प्रकार से बाधक नहीं है, क्योंकि यहाँ 'भिन्नता में एकता' का आदर्श चरितार्थ होता है। इसी भिन्नता को दृष्टिगत रखते हुए संविधान ने शिक्षा के लिए भाषा–नीति की पहल की, क्योंकि शिक्षा ही राष्ट्र की रीढ़ है और भाषा ही शिक्षा की आधारभूमि है।

बच्चा जब बोलना शुरू करता है, तब वह भाषा के माध्यम से ही अपने वातावरण से परिचित होता है। उसका संज्ञानात्मक विकास अपनी भाषा में होता है, नामशः व्यक्ति, वस्तु, घटना, रंग, प्रकाश, वृक्ष, पशु–पक्षी, मौसम आदि का ज्ञान भाषा के जरिए ही होता है। इतना ही नहीं, धीरे–धीरे वह अपनी इच्छा, आवश्यकता, अनुभूति को भी अपनी भाषा में ही व्यक्त करता है। निरंतर अभ्यास से भाषा की आदत उसके स्वभाव में परिणत हो जाती है और अंततः वह अपना व्यक्तित्व भी भाषा में ही रचता–गढ़ता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय संविधान के अनुच्छेद–350 (ए) ने यह प्रावधान किया कि "यह प्रत्येक राज्य एवं स्थानीय अधिकरण का प्रयास होना चाहिए कि प्राथमिक अवस्था से भाषायी चुनौतियों को दूर करने और उनमें अवसरों को बढ़ाने के लिए भारतीय शिक्षा–प्रणाली आधिकारिक रूप से त्रिभाषीय

सूत्र का अनुसरण करती है।"

इसी अनुक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 में शालाओं में सीखने के माध्यम के रूप में मातृभाषा की अनुशंसा की गई है। इसके अनंतर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और निःशुल्क तथा अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम–2009 में भी मातृभाषा को ही शिक्षा के माध्यम के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है। (एस. सी.ई.आर. टी.2018) राष्ट्रीय शिक्षा–नीति में तो मातृभाषा को शिक्षा प्रारंभ का अनिवार्य माध्यम निरूपित किया गया है। तद्नुसार, कम से कम कक्षा–5 तक तथा जहाँ संभव हो सके, कक्षा–8 तक मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी है। (एन. ई.पी.–2020) इसका एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि बच्चा घर पर प्राप्त अपने स्थानीय ज्ञान को पाठशाला में जाकर जब दुहराएगा, तब उसे न केवल घर–जैसा वातावरण मिलेगा, बल्कि उसकी जिज्ञासा, रुचि, भी सीखने के लिए बढ़ती जाएगी।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 तथा राष्ट्रीय शिक्षा–नीति–2020 में दो या अधिक भाषाओं के शिक्षण का भी प्रावधान है, जिससे बच्चों का क्षितिज–विस्तार संभव है, क्योंकि प्रत्येक भाषा एक विश्व–दृष्टि है और अनेक भाषाओं के ज्ञान से उसकी सोच का दायरा बढ़ेगा और उसमें सौहार्द, सहअस्तित्व, सहकारिता–जैसे मानवीय मूल्यों का विकास होगा। तथापि यह भी सच है कि अन्य भाषाओं का ज्ञान मातृभाषा के ही माध्यम से विकसित होता है। भारतेंदु ने बहुत पहले ही कहा है कि–' निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।'

यह ज्ञातव्य है कि अन्य भाषाओं के ज्ञान से निजभाषा कभी विकृत या अविकसित नहीं होती, वरन् और भी अधिक पुष्ट होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में इसीलिए मातृभाषा को भी अन्य विषयों की तरह पढ़ाए जाने का निर्देश है, क्योंकि 'भाषा जानना' और 'भाषा के बारे में जानना' दो अलग–अलग स्थितियाँ हैं। भाषा के बारे में जानने का अर्थ है– भाषा की यांत्रिकी को जानना, जिसमें उसकी संरचना का ज्ञान तो है ही, साथ ही विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में भाषा की भिन्न–भिन्न भूमिकाओं का ज्ञान भी समाहित है।

मातृभाषा के पुष्ट ज्ञान से विषय–वस्तु का ज्ञान स्वयमेव सहज रूप से संभव है और एक खास अवस्था (कक्षा–8) के बाद बच्चा स्वयं अन्य भाषा (ओं) में दक्षता प्राप्त करके अन्य भाषा (ओं) में भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है, क्योंकि भाषाएँ सतही स्तर पर भिन्न प्रतीत होती हैं, परंतु आंतरिक दृष्टि से समान हैं, तभी तो अनुवाद संभव होता है। सामाजिक–भूमिकाएँ सभी भाषाओं में समान हैं, केवल उनका प्रत्यक्षीकरण भिन्न–भिन्न होता है। (द्रष्टव्य–हैलिडे, 1976–3)

भूमंडलीकरण के इस युग में कोई भी राष्ट्र एक भाषा के जरिए विकास नहीं कर सकता। वहाँ के प्रत्येक नागरिक को कम से कम दो भाषाएँ आनी ही चाहिए, जिससे वह स्थानीयता की परिधि में ही कैद न रहे, वरन् अवसरों की खोज में अन्यान्य देशों में भी अपनी पैठ बना सके।

भारतीय परिवेश में शिक्षा–नीति में भाषा का प्रश्न महत्वपूर्ण है। तद्नुसार यहाँ प्रत्येक शिक्षार्थी को अपनी भाषा के अलावा एक अन्य भारतीय भाषा तथा एक विदेशी भाषा का ज्ञान अनिवार्य है।

संदर्भ–

1. अय्यर, के.ए. एस. (1981), भर्तृहरि का वाक्यपदीय (अनु.–रामचंद्र द्विवेदी), जयपुर।
2. Krishnaswamy, N., Verma, S.K., Nagarajan, N. (2009, 66): Modern Applied Linguistics, Macmillan, Delhi.
3. Halliday, M.A.K. (1970, 140-165)), Language Structure & Language Function, New Horizon's in Linguistics (ed-J. Lyons.), Penguin Books.
4. Government of India Ministry of Human Resource Devlopment (2020), National Education Policy -2020.
5. S.C.E.R.T. Raipur (2018), National Seminar on School Education in The 21st Century. (Souvenir)

❒❒❒

अतिथि प्राध्यापक, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

फोन– 9131028611 ई.मेल.– vibhashamishra@gmail.com

वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता एवं प्रासंगिकता

—सीमा देवी

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंगेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके।

हिंदी एक आधुनिक भारतीय–आर्य भाषा है तथा यह भारतीय–यूरोपीय भाषाओं के परिवार से सम्बन्धित भाषा है और संस्कृत की वंशज है, जो भारत के उत्तर–पश्चिमी सीमाओं में आर्यन बसने वालों की बोली से उद्भूत है। समय की अवधि के साथ विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती हुई शास्त्रीय संस्कृत से पाली–प्राकृत और अपभ्रंश तक, हिन्दी का उद्भव 10वीं शताब्दी में पाया जाता है। हिन्दी को हिन्दवी, हिन्दुस्तान और खड़ी बोली के रूप में भी जाना जाता था। देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी (जो विश्व की वर्तमान लेखन प्रणाली के बीच सबसे वैज्ञानिक लेखन प्रणाली है) भारत गणराज्य की राष्ट्रीय आधिकारिक भाषा है और इसे दुनिया के सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में स्थान दिया गया है। इसके अलावा हिन्दी बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान राज्य की राज्यभाषा भी है। दुनियाँ भर में लगभग 600 मिलियन लोग हिन्दी को पहली या दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं।

वैश्विक स्तर पर भाषा को जमने के लिए जो सबसे महत्त्वपूर्ण एवं किसी भी भाषा की सम्प्रेशणीय क्षमता के लिए आवश्यक शर्त है कि उस भाषा की निज अभिव्यक्ति क्षमता कितनी है। यदि भाषा विश्व के सभी लोगों को अपनी बात समझाने में असमर्थ है या यूं कहें कि उसमें सम्प्रेशणीयता का स्तर उच्च नहीं है, तो वैश्विक धरातल पर भाषा के टिके रहने का कोई आधार और औचित्य नहीं है।

हमें हिन्दी भाषा के अस्तित्व को बनाए रखना है तो सबसे पहले सैकड़ों बोलियों जैसे बुंदेलखंडी, भोजपुरी, गढ़वाली, अवधी, मगधी आदि की रक्षा करनी होगी। ऐसी क्षेत्रीय बोलियां ही हिन्दी की प्राणवायु हैं। आज हिन्दी का ज्ञान गैरहिन्दी क्षेत्रों में फैल रहा है और देश में सार्वभौमिक लिंगुआ फ्रैंका के रूप में हिन्दी के उद्भव का सूर्य चमक रहा है।

मुख्य शब्द : हिन्दी भाषा, राजभाषा, स्वीकार्यता, प्रासंगिकता

परिचय

हिन्दी भाषा न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेशक और परिचयायक भी है। यह बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की सम्भवतः वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनियों भर में समझने, बोलने और चाहने वाले और बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सशक्त माध्यम भी है। भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिन्दी का एक विशेष स्थान है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है।

हिन्दी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केन्द्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में हो। राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में 14 सितम्बर 1949 का दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितम्बर, 2017 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द द्वारा देश भर के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के प्रमुखों को राजभाषा कार्यान्यिन में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है।[1]

हिन्दी ने अपनी विभिन्न बोलियों और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से प्रभाव ग्रहण करते हुए अपना एक अखिल भारतीय मानक रूप विकसित कर लिया है। अब इसका एक अत्यन्त समृद्ध साहित्य है, जिसमें साहित्य के अलावा इसके पास अन्य अनुशासनों में रचित साहित्य का विशद भंडार है। यह भारत की राजभाषा और सम्पर्क भाषा होने के साथ अघोषित राष्ट्रभाषा भी है। इस कारण सिर्फ यह नहीं है कि यह देश की बहुसंख्या की भाषा है, बल्कि इसलिए भी कि यह देश के सम्पूर्ण सांस्कृतिक उत्तराधिकार का वहन करती है।

एक तरफ देश की संस्कृति की वाहिका संस्कृत भाषा के समीप है, जो समस्त आर्यभाषाओं की जननी है, तो दूसरी ओर आधुनिक ज्ञान–विज्ञान को भी व्यक्ति करने में सक्षम है। खड़ी बोली हिन्दी साहित्य को अभी एक सदी से थोड़ा ही जो अधिक हुआ है किन्तु इतनी अल्पावधि में ही इसने जितना विकास कर लिया है उतना अंग्रेजी, जर्मन आदि भाषाएं कई सदियों में कर पाई हैं। यह गर्व का विषय है। हिन्दी अपने अपार अभिव्यक्ति सामर्थ्य के बल आज के युग की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूर्ण सक्षम है, कम से कम अपने देश में तो अवश्य। इसमें सम्भावनाएं अनन्त हैं। किन्तु सम्भावनाओं का होना एक बात है और उन सम्भावनाओं को यथार्थ का रूप देना दूसरी बात।

आजादी के पूर्व हिन्दी ने अगर भारतीय नवजागरण की चेतना का वहन किया तो आजादी

के बाद राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा का माध्यम भी बनी। साहित्य और ज्ञान के विविध क्षेत्रों में हिन्दी में नये और मौलिक काम हुए। एक उद्देश्य था कि देश को अपनी भाषा में, आम जन को सम्मिलित करते हुए सशक्त बनाना है, आगे बढ़ाना है। यह उत्साह अब मृतप्राय है।

आजादी के सात दशक बीतते बीतते यह स्पष्ट दिखने लगा है कि हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को लेकर भारत की तरक्की की जा सकती है। इसका कोई विश्वास हममें नहीं बचा है। पूरा देश इस बात पर एकमत दिखता है कि भारतीय भाषाओं में कोई भविष्य नहीं, यदि आज की वैश्वीकृत दुनियां में आगे बढ़ना है तो वह अंग्रेजी के रास्ते ही सम्भव है।

हिन्दी में चाहे जितनी भी सामर्थ्य है और सम्भावना हो उसे अपनाने का ही कोई उत्साह लोगों में नहीं रहा। हिन्दी में साहित्य के क्षेत्र में भले ही पूर्ववत सक्रियता बनी हुई है, लेकिन कोई भाषा केवल साहित्य के बल पर आगे नहीं बढ़ती। बल्कि साहित्येत्तर क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग उसकी व्यावहारिक शक्ति का परिचायक है, वही उसमें जीविकोपार्जन की क्षमता लाता है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंगेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाये गये कदमों के परिणामस्वरूप कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबन्धन प्रणाली विकसित की गई है, जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग से सम्बन्धित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्ट राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिन्दी में तैयार की ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जनकल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी का आरम्भ अंग्रेजी में हुआ, लेकिन तकनीक किसी एक भाषा को हो, सुविधा या अवसर नहीं देती। सूचना प्रौद्योगिकी के पंखों पर सवार होकर हिन्दी अपना अभूतपूर्व प्रसार कर रही है। ज्ञान और मनोरंजन के माध्यमों में हिन्दी का स्थान दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

इन्टरनेट पर हिन्दी के प्रयोक्ताओं की संख्या किसी भी अन्य भारतीय भाषा की अपेक्षा अधिक है। मास मीडिया के जबरदस्त उभार से पत्रकारिता व इससे जुड़े अन्य क्षेत्रों में हिन्दी के लिए अवसर बढ़े हैं और उल्लेखनीय रूप से रोजगार सृजन हुआ है।

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त ही हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिन्दी सम्मेलन'' ओर अन्य अन्तर्राष्ट्रीय

सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ''प्रवासी भारतीय दिवस'' मनाया जाता है, जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल कर रहे हैं जिससे हिन्दी को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिन्दी को भी मान्यता मिली है।[2]

आज संचार साधनों की बदौलत स्थानों के बीच की दूरियां कम हो गयी हैं या यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से मिट गई हैं। सम्पूर्ण विश्व एक गांव बन गया है, जिसमें कभी भी, कहीं से भी, किसी से भी तत्काल सम्पर्क स्थापित हो सकता है, यदि आपके पास उसके लिए अपेक्षित साधन हों। यह भी भविष्यवाणी की जा रही है कि वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व की दस भाषाएं ही जीवित रहेंगी, जिनमें हिन्दी भी एक होगी। वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के सन्दर्भ में हिन्दी का महत्त्व इसलिए बढ़ेगा क्योंकि भविष्य में भारत व्यावसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश होगा।

विश्व भाषाएं तो विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिसमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए हैं, किन्तु विश्वभाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएं हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती है। वस्तुतः प्रत्येक विश्वभाषा के प्रमुख कार्य होते हैं – बोल–चाल एवं जनसम्पर्क, साहित्य सृजन, शिक्षा एवं जनसंचार माध्यम, प्रशासनिक कामकाज, व्यवसायिक और तकनीकी अनुप्रयोग और विश्वबोध या वैश्विक चेतना।

विश्वभाषा से अपेक्षाएं होती हैं कि उसे बोलने–समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो। आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फीजी, मॉरीशस, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, इंग्लैण्ड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी भाषी प्रचुर संख्या में हैं। दूसरी अपेक्षा है कि वह भाषा लचीली हो, उसमें भिन्न सन्दर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो, उसका एक सर्वस्वीकृत मानक रूप हो, उसमें भिन्न सन्दर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो, उसका एक सर्वस्वीकृत मानक रूप हो, उसमें उपमानकों की कुछ दूर तक स्वीकृत होते हुए भी परस्पर सम्प्रेषणीयता किसी न किसी स्वीकृत मानक के माध्यम से बनी हुई हो और हिन्दी में यह गुण भी है।[3]

हिन्दी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुन्देली, बघेली, मगधी, छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी उपजन भाषाओं के शब्द भंडार, मुहावरे और उसकी लोकोक्तियां रच बस गई हैं। इसके अलावा हिन्दी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों से घनिष्ठ सम्पर्क रहा है विश्वभाषा से तीसरी अपेक्षा है कि भाषा में विश्व मन का भाव हो। हिन्दी भाषी अपने देश में भी अनेक राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीयता से ऊपर उठा हुआ है और उसके पास ऐसे साहित्य की विशाल परम्परा है, जो विश्व के पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

हिन्दी विश्वभाषा की ओर–सकारात्मक प्रवृत्तियां[4]

हिन्दी एक विश्वभाषा है, क्योंकि वह देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ–साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी, बोली और समझी जाती है। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में

हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तियां इस प्रकार दिखाई दे रही हैं—

1. जनतांत्रिक आधार पर हिन्दी विश्व भाषा है, क्योंकि उसके बोलने—समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है।

2. विश्व के 132 देशों में बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिन्दी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं।

3. एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिन्दी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है।

4. हिन्दी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्दग्रहीत होकर हिन्दीमय बन गए हैं। यही कारण है कि आज हिन्दी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है।

5. हिन्दी स्वयं में अपने भीतर एक अन्तर्राष्ट्रीय जगत छिपाए हुए है। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फारसी चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री व वसुधैव कुटुम्बकम वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।

6. प्रवासी भारतीय वैश्वीकरण का सबसे प्रत्यक्ष वाहक लगते हैं और आडियो—वीडियो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उसके बीच हिन्दी एक जीवंत कड़ी बन रही है।

7. इंटरनेट पर हिन्दी भी स्वीकार्य और लोकप्रिय हो रही है। हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्व भर में प्रसारित होने लगा है।

निष्कर्ष :

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के साथ—साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल की जाए। हिन्दी में यह शक्ति कब आएगी कि वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्त्वपूर्ण भाषा बन जाए, जिसकी उपेक्षा न हो सके। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता बदलेगी। हमें अपनी भाषा बोलते हुए गौरव का अनुभव होगा। जापान जर्मनी, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस, चीन आदि सभी शक्तिशाली देश अपनी भाषा में वक्तव्य देते हैं और अनुवादक के माध्यम से उनकी बात विदेशी श्रोताओं तक पहुंचती है। हिन्दी को लेकर भी ऐसे प्रयासों की आवश्यकता है। हिन्दी के सामने कई चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियां समझें, हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो, लक्ष्य प्राप्ति की सार्थक योजनाएं बनें, ईमानदारी तथा दृढ़ता से योजनाओं को कार्यान्वित किया जाए तथा समय—समय पर प्रगति का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हिन्दी को विश्व में अपना स्थान बनाये रखने के लिए मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी दिवस (देश की आत्मा है हिन्दी), मेरी सरकार, 14 सित. 2017
2. उपर्युक्त
3. राकेश शर्मा 'निषीथ' विश्वभाषा की ओर हिन्दी के बढ़ते कदम, विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस 18—20 अगस्त, 2018
4. उपर्युक्त।

❒❒❒

भाषा का प्रश्न और दक्षिण का हिंदी साहित्य

—नायराह कुरैशी

जिस प्रकार कबीर, ज्ञानेश्वर, नामदेव, गुरूनानक जैसे संतों ने ऊँच–नीच, जात–पात की भावना को नष्ट करने का, कर्मकाण्ड, आडम्बर आदि को समाप्त करने का प्रयास किया उसी प्रकार दक्खिनी हिन्दी के सूफी कवियों ने कुरान तथा भारतीय वेददान्त का सुन्दर समन्वय करते हुए सत्य–मार्ग, प्रेम–मार्ग, हृदय की शुद्धता आदि गुणों को अपने काव्य के माध्यम से दर्शाया।

दकन या दक्खिन शब्द की उत्पति संस्कृत से मानी जाती है। आर्य जब भारत आए तो यहाँ के उत्तर और पश्चिम प्रदेशों को पार करके जब पंजाब पहुँचे तो उनके हाथ की तरफ जो भौगोलिक क्षेत्र दिखाई पड़ा उसे उन्होंने दक्षिण कहा। प्राकृत में दक्षिण शब्द परिवर्तित होकर दक्खिन बन गया। फारसी और अरबी में इसे दकन कहा गया। दक्खिनी भाषा का साहित्य महत्त्वपूर्ण है। ख्वाजा बंदे नवाज, गेसुदराज ने सर्वप्रथम इस भाषा में अपने विचार व्यक्त करने का श्रय प्राप्त किया है। उत्तर भारत में जो खड़ी बोली उपेक्षित हो गई थी वही बोली दक्षिण में अपने चरमोन्ति तक पहुँच गई।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप का निर्माण करने में दक्खिनी हिन्दी के साहित्यकारों का योगदान महत्त्वपूर्ण है। दक्खिनी हिन्दी साहित्य को फारसी लिपी में देखकर उसे उर्दू समझना गंभीर भूल होगी। दक्खिनी हिन्दी के सूफी साहित्य का मूल संबंध हिन्दी सूफी साहित्य से है। दक्खिनी हिन्दी के सूफी कवियों की सांस्कृतिक देन उत्तर के सूफियों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। विदेशी भाव को अपने देश के अनुरूप बदल देने में इन कवियों की अद्भुत क्षमता थी। जिस समय हिन्दु–मुस्लिम अपनी धार्मिक कट्टरता पर स्थिर थे ऐसे समय में भारत में सूफियों का आगमन शांती का संदेश लेकर आया।

शोध–पद्धति

आलोच्य शोध पत्र में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है जिसमें दक्खिनी हिन्दी साहित्य पर आधारित अंग्रेजी एंव दक्खिनी हिन्दी साहित्य की प्रमुख आलोचनात्मक पुस्तकों का अध्यन्न किया गया है।

परिचय

दकन शब्द की उत्पति संस्कृत से मानी जाती है। कहा जाता है आर्य जब भारत के पश्चिम और उत्तर प्रदेशों को पार करके पंजाब पहुँचे तो अपने हाथ की तरफ जो भौगोलिक क्षेत्र दिखाई पड़ा उसे दक्षिण कह दिया। प्राकृत में दक्षिण शब्द परिवर्तित होकर दक्खिन बन गया। फारसी और अरबी में इसे दकन कहा गया। डॉ. हेमचंद्र राय चौधरी के अनुसार, 'दक्खिनी

शब्द से तात्पर्य उस ऐतिहासिक भू–भाग से है, जो सह्याद्री पर्वत माला से दक्षिण की तरफ फैला हुआ है। और जिसकी श्रृंखला को ही महेन्द्रगिरी से मिलकर महानदी और गोदावरी से आवरीज बनाता हुआ, यह भाग दक्षिण में कृष्णा और तुंगभद्रा नदी तक व्याप्त हुआ है।'' आगे दक्खिनी हिन्दी के उद्‌भव के संबंध में डॉ. श्रीराम शर्मा लिखते हैं 'दक्खिनी शब्द से वर्तमान बरार, हैदरबाद राज्य, महाराष्ट्र और मैसूर राज्य का बोध होता है। इस प्रदेश की गोदावरी और कृष्णा दो प्रधान नदियाँ हैं।' दक्खिनी हिन्दी इन्हीं प्रदेशों में विकसित हुई। दक्षिण के केरल प्रान्त के साथ अरबों का समुद्री व्यापारिक संबंध पुराना है किन्तु राजनैतिक दृष्टि से मुसलमानों के साथ दक्षिण भारत का संबंध कुछ समय बाद स्थापित हुआ जिससे दक्खिन के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों को प्रभावित किया।

विषय–विस्तार

राजनीतिक और सामरिक महत्त्व की दृष्टि से मोहम्मद तुगलक ने दक्षिण में अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया और सन् 1328 ई. में दौलताबाद को राजधानी बनाया गया। 1328 ई. में दिल्ली के नागरिकों, पदाधिकारों, सैनिकों, विद्वानों और कलाविदों को दिल्ली छोड़कर दौलताबाद जाने और वहां आवास के लिए मकानों का निर्माण करने का आदेश दिया। इतिहासकारों और राजनीति के विद्वानों में इसकी निश्चिता को लेकर मतभेद हो सकता है कि मोहम्मद तुगलक की यह नीति कहाँ तक सफल हुई थी किन्तु भाषाई दृष्टि से उसका यह कार्य दक्खिनी हिन्दी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। दक्खिनी, दखनी या दकनी का प्रयोग दो अर्थों में होता है। इसका अर्थ है दक्षिण निवासी मुसलमान। दूसरा अर्थ है, दक्खिनी या दकनी भाषा। दक्खिनी हिन्दी भाषा की शैली है, एक स्वाभाविक भाषा है। इसका यह नाम देशपरक है जिसमें विदेशी शब्दों की मात्रा भी अल्प है। 15वीं शताब्दी में अमीर खसरो की भाषा हिन्दी हिन्दुस्तानी थी। उस समय भारतीय मुस्लिम संस्कृति का विकास हो रहा था। तत्संबंधित भाषाएँ दक्षिण में उत्तरी भारत की भाषाओं से भिन्न रूप धारण करने लगीं। उत्तरी भारत वाले मुसलमान दक्षिण भारत आकर जिस हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग करते थे उसे दकनी हिन्दी या दकनी कहा गया। 15 वीं, 16 वीं तथा 17 वीं सदी के लेखकों ने दकनी हिन्दी द्वारा फारसीकरण का मार्ग प्रशस्त किया अर्थात दक्षिण की हिन्दुस्तानी में अरबी–फारसी के शब्दों के प्रयोगधिक्य के द्वारा फारसीकरण किया जाने लगा। आधुनिक कालीन दकनी पर उत्तरी भारत की उर्दू का अधिक प्रभाव पड़ा जिसके परिणामस्वरूप दकनी अब केवल एक स्थानीय बोली मात्र नहीं रह गई। इसने अब साहित्यिक रूप ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया। 17 वीं व 18 वीं शताब्दी के उत्तरी भारत के मुसलमानों द्वारा प्रयोग किया जाने लगा तथा 'दक्खिनी' को नया नाम 'रेख्ता' दिया गया। फ्रेंच विद्वान गार्सा–द–तासी ने दक्खिनी हिन्दी की इस विशिष्टता को देखते हुए इसे राष्ट्रीय भाषा कहा है। दक्खिनी का इतिहास 14वीं से 18 वीं सदी तक लगभग पाँच सौ वर्ष में व्याप्त है।

जिस प्रकार कबीर, ज्ञानेश्वर, नामदेव, गुरूनानक जैसे संतों ने ऊँच–नीच, जात–पात की भावना को नष्ट करने का, कर्मकाण्ड, आडम्बर आदि को समाप्त करने का प्रयास किया उसी प्रकार दक्खिनी हिन्दी के सूफी कवियों ने कुरान तथा भारतीय वेददान्त का सुन्दर समन्वय करते हुए सत्य–मार्ग, प्रेम–मार्ग, ह्रदय की शुद्धता आदि गुणों को अपने काव्य के माध्यम से दर्शाया। दक्खिनी हिन्दी का सूफी काव्य उत्तर के सूफी काव्य से कम नहीं। खवाजा बन्दा नवाज अपने सिद्धान्तों को अरबी और फारसी में व्यक्त करते हैं पर आम जनता को समझाने के लिए वह

दक्खिनी हिन्दी का प्रयोग करते हैं। दक्खिनी हिन्दी साहित्य के विकास में निर्गुण हिंदू कवियों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है जैसे नामदेव, एकनाथ, संतज्ञानश्वर आदि। संत ज्ञानश्वर ने सन् 1210 ईसवी में गीता पर जो टीका लिखी जिसमें उनका नाम ज्ञानेश्वरी है दक्खिनी भाषा की झलक मिलती है, जैसे

'निर्गुण ब्रह्म भुवन से न्यारा, पाथी पुस्तक भय अपारा।
कोरा कागज पढ़कर जाये, लेना और एक देना दोय'
संत एकनाथ के काव्य में भी दक्खिनी भाषा की झलक मिलती है
'अल्ला रखेगा वैसा ही रहना, मौला रखेगा वैसा ही रहना
कोई दिन शक्कर, दुध–मिलदा, कोई दिन अल्ला माँगता गया।'
कर्मकाण्ड की निन्दा करते गुए कबीर कहते हैं
केसन कहा बिगारिया, जो मूडों सौ बार
मन को काहे न मँडीओं, जामे विषम विकार

इसी बात को दक्खिनी सूफी कवि मिरांजी लिखते हैं, लूचत मंडत फिर, फोकट तीरथ करें या हज दान देख, जे भान भई मूरक भज अर्थात तीर्थयात्रा या बाम मुँवाने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। सच्ची भक्ति तथा आचरण की शुद्धता पर उन्होंने बल दिया। इस प्रकार से दक्खिनी कवियों ने अपनी आध्यत्मिक तथा आंतरिक अनुभूति को सरलता से अभिव्यक्त किया है। दक्खिनी का सूफी साहित्य उत्तर के सूफी साहित्य का बाधक न बनकर साधक बनकर उभरा है। यह मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का गौरव है कि उसकी एक सशक्त धारा अहिन्दी प्रदेश में समस्त रूप से बहती आ रही है। डॉ. मुहम्मद कुंज मेत्तर जी का माना है, 'हिन्दी भाषा और साहित्य के सह्रदय काव्य रसियों को प्रेम की संजीवनी पिलाने वाले दक्खिनी हिन्दी के सूफी साहित्यकार सदैव अमर रहेंगे'

दक्खिनी हिन्दी सूफी साहित्य में हिन्दी तथा भारतीय साहित्य की वे सभी परम्पराएँ सुरक्षित हैं तथा इन भारतीय परम्परा का विदेशी परम्पराओं के साथ सुन्दर संयोग हुआ है। हिन्दी का प्रथम शोक–गीत भी दक्खिनी भाषा में ख्वाजा बंदानवाज ने लिखा है। भारतीय संगीत को भी दक्खिनी हिन्दी सूफी कवियों की देन अविस्मरणीय मानी गयी है। सूफियों में समा अथवा संगीत सभा का महत्त्व विशेषकर माना जाता है। चिश्ती परम्परा के सूफी संतों ने भारतीय संगीत को और समृद्ध किया है। स्वयं ख्वाजा बंदा नवाज जी ने दक्खिनी भाषा में गीत लिखे है। जानम ने भी विविध रागों में अनेक गीत लिखें हैं। दक्खिन सूफी मत को लोकप्रिय बनाने का श्रेय मिरांजी तथा उनके पुत्र जानम को जाता है। मिरांजी ने हिन्दी को अपने विचारों का माध्यम बनाया। उन्होंने हिन्दी में लिखने का अपना उद्देश्य इस प्रकार बताया है वे अरबी बोल न जायें, न फारसी पछाने, यूँ देखत हिन्दी बोल, पन मानी है नप तोल। काजी मुहम्मद बहरी, कुतुबुद्दीन कादरी, फिरोज बिदरी, शेख अश्रफ, अब्दुल वजही आदि सूफी के श्रेष्ठ साहित्यकार माने जाते हैं।

❒❒❒

अिसस्टन्ट प्रोफेसर,हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वद्यालय,श्रीनगर,जम्मू कश्मीर 190006
ईमेल –naairah@uok.edu.in, 9419623309

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा नीति का समीक्षात्मक अध्ययन

—डॉ. शीलम भारती

21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 है। इस शिक्षा नीति का मुख्य लक्ष्य विभिन्न प्रकार की असमानताओं को कम करते हुए सतत् विकास के लक्ष्य को 2030 तक प्राप्त करना है। इस नीति में सरकार ''क्या सोचे'' से ''कैसे सोचें'' के जरिये एक उल्लेखनीय बदलाव करना चाहती है। सोच की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है। भारत एक बहुभाषी देश है। भाषायी अन्तर को कम करने एवं विद्यार्थियों का सर्वोत्तम विकास करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा नीति की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य यह देखना है कि भाषा नीति कितनी कारगर है। भाषा नीति को लेकर जो प्रावधान किये गये हैं उसकी समीक्षा करना।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाषा नीति, बहुभाष्यता, विधार्थी।

भारत में कुछ भाषाएं बहुमत में है और कुछ अल्पमत में है और कुछ भाषाएं नहीं बल्कि बोलियां हैं। इस अंतर को कम करने के लिए ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र का प्रयोग किया गया है। त्रिभाषा सूत्र केवल एक लक्ष्य नहीं है बल्कि भारत के भावनात्मक एकीकरण का मार्ग है।

भारत एक बहुभाषी देश है। इसकी 15 प्रमुख भाषाएं हैं जिनमें से प्रत्येक का इतिहास और साहित्य कम से कम 1,000 वर्ष पुराना है। भारत में भाषाई विविधता के आधार पर कई राज्यों का पुनर्गठन किया गया है। भारत की अपनी एक विशिष्ट भाषाई भौगोलिक संरचना है। इस विविध भाषाई भौगोलिक संरचना के आधार पर भारत में विद्यालयी शिक्षा में भाग लेने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक भाषीय रह पाना असम्भव है। भाषा चयन, भाषा उपयोग और भाषा इंजीनियरिंग को ध्यान में रखकर ही विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में द्विभाषीय सूत्र और त्रिभाषीय सूत्र को अपनाया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है (रा. शि.नी. 2020, पृष्ठ–4) बहुभाषावाद भारत की अनिवार्य आवश्यकता है। इस अनिवार्य आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया। भारत देश जिसके प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट भाषा, शैली और साहित्य है, इस विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता एवं संचेतना का विकास एक–दूसरे की भाषा और उनके द्वारा व्यक्त किये गये दृष्टिकोण के लिए आपसी सम्मान से ही संभव है। इस प्रकार के आपसी सम्मान के वातावरण का

निर्माण केवल ज्ञान के माध्यम से ही संभव है। प्रत्येक राज्य की अपनी पहचान को प्रदर्शित करते हुए एक विशिष्ट भाषा है। अतः केन्द्र व राज्य दोनों का दायित्व है कि वो प्रत्येक राज्य की स्थानीय क्षेत्रीय भाषा के विकास एवं संवर्द्धन में योगदान दें। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है इसलिए केन्द्र व राज्य सरकार का परम दायित्व है कि वो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करें, इसलिए प्रशासन के साथ–साथ शिक्षा में भी प्रमुख क्षेत्रीय भाषा प्रगतिशील उपयोग करना होगा। देश को समग्र रूप से बहुभाषावाद को अपने लक्ष्य के रूप में अपनाना होगा।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में असक्षारता एवं ड्राप आउट की दर अब भी बहुत अधिक है। क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाकर इस असाक्षरता और ड्राप आउट की दर में कमी लायी जा सकती है। शिक्षा में क्षेत्रीय भाषा/स्थानीय भाषा–मातृभाषा का प्रयोग ऊर्जा के नये स्रोत खोलेगी, जो संरचनात्मकता, नवाचार और अनुरूपण को बढ़ावा देगी। यहां पर बहुभाषावाद को राष्ट्रीय नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर देखे जाने की आवश्यकता है। इसके प्रति हमें एक बौद्धिक अभिवृत्ति विकसित करने की आवश्यकता है।

भारत में कुछ भाषाएं बहुमत में है और कुछ अल्पमत में है और कुछ भाषाएं नहीं बल्कि बोलियां हैं। इस अंतर को कम करने के लिए ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र का प्रयोग किया गया है। त्रिभाषा सूत्र केवल एक लक्ष्य नहीं है बल्कि भारत के भावनात्मक एकीकरण का मार्ग है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार शिक्षा के विकास, प्रचार एवं प्रसार के लिए समय–समय पर विभिन्न शिक्षा नीति लेकर आई। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948, माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952, भारतीय शिक्षा आयोग 1964–1966 नई शिक्षा नीति 1968–1992. नई शिक्षा नीति 1992, पुरानी शिक्षा नीति 1986 का ही संशोधन रूप थी। नई शिक्षा नीति 1992 में नई शिक्षा नीति 1986 के अधूरे काम को पूरा करने का प्रयास किया गया था। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009, पिछली शिक्षा नीति 1986–1992 के बाद है। इस अधिनियम द्वारा सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध कराया गया था। इसी क्रम में भारत सरकार नई शिक्षा नीति 2020 लेकर आयी। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जिसे 29 जुलाई 2020, को भारत के केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया। यह नीति प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए व्यापक ढांचा है। शिक्षा नीति के कुल 4 भाग 1. प्राथमिक शिक्षा, भाग 2, उच्चतर शिक्षा, भाग 3, अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे भाग 4, क्रियान्वयन की रणनीति है। इस दस्तावेज की व्याख्या 107 पृष्ठों में की गयी है।

त्रिभाषा सूत्र की उत्पत्तिः–

(1) केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद; CABE) ने सन् 1956 में विचार–विमर्श करके त्रिभाषा सूत्र प्रस्तुत किया। जिसे 1961 में मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में अनुमोदित किया गया।

(2) विश्वविद्यालय आयोग (1948–1949), मुदालियर आयोग (1952–1953), कोठारी आयोग (1964–1966) नई शिक्षा नीति 1968, 1986 में किसी न किसी रूप में त्रिभाषा सूत्र का समर्थन किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भाषा नीति : लक्ष्य एवं दृष्टि

इस नीति के आधार सिद्धान्त में ही कहा गया है कि बहुभाषिता और

अध्ययन–अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन देना है (पृष्ठ 7)। इस नीति में पूर्व में प्रचलित 10 + 2 + 3 वाली प्रणाली को 5 + 3 + 3 + 4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित कर दिया गया है। नए 5 + 3+ 3 + 4 में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल किया गया है। 5 + 3 + 3 + 4 प्रणाली इस प्रकार है।

4. कक्षा 9 से 12
3. कक्षा 6 से 8
3. कक्षा 3 से 5
5. कक्षा 1 से 2 (2 वर्ष) आंगनबाड़ी / प्री स्कूल / बालवाटिका (3 वर्ष)

3 वर्ष के बच्चों के लिए आंगनबाड़ी केन्द्रों की व्यवस्था की गयी है। इस नीति में भाषा से संबंधित निम्नलिखित प्रावधान किये गये हैं:–

प्रारम्भिक बाल्यवस्था से ही इस नीति में बहुभाषा पर ध्यान दिया गया है। सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओं में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य और सभी स्तर के विधार्थियों के लिए स्कूल और स्थानीय पुस्तकालयों में बड़ी मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध करायी जायेंगी। इस नीति में बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति नामक शीर्षक में उल्लेखित है। जहां तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन यह बेहतर होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा / मातृभाषा / स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा होगी। विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकों को घरेलू भाषाएं / मातृभाषा में उपलब्ध कराया जायेगा। ऐसे मामलों में जहां घर की भाषा की पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद की भाषा भी जहां संभव हो, वहां घर की भाषा बनी रहेगी। शिक्षकों को उन छात्रों के साथ जिनके घर की भाषा / मातृ–भाषा शिक्षा के माध्यम से भिन्न है, द्विभाषी शिक्षण–अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी एप्रोच का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा। (4.11)

संस्कृत के अलावा भारत की अन्य शास्त्रीय भाषाएं और साहित्य, जिनमें तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, पालि, फारसी और प्राकृत शामिल है, स्कूलों में भी व्यापक रूप से छात्रों के लिए विकल्प के रूप में संभवतः ऑनलाइन मॉड्यूल के रूप में अनुभवात्मक और अभिनव एप्रोच के माध्यम से उपलब्ध होंगे। (4.18)।

भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में उच्चतर गुणवत्ता वाले कोर्स के अलावा, विदेशी भाषाएं, जैसे कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली और रूसी भी माध्यमिक स्तर पर व्यापक रूप से अध्ययन हेतु उपलब्ध करायी जायेगी। (4.20)।

फाउंडेशनल स्टेज की शुरूआत और इसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषाओं में (लेकिन मातृभाषा पर विशेष जोर देने के साथ) एक्सपोजर दिये जायेंगे। शुरूआती वर्षो में पढ़ने और बाद में मातृभाषा में लिखने के साथ ग्रेड–3 और आगे की कक्षाओं में अन्य भाषाओं में पढ़ने और लिखने के लिए कौशल विकसित किये जायेंगे। राज्य, विशेष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों के राज्य अपने–अपने राज्यों में त्रिभाषा फार्मूले को अपनाने के लिए और साथ ही देश भर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए आपस में द्विपक्षीय समझौते कर सकते हैं। विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए और भाषा शिक्षण को लोकप्रिय बनाने के लिए तकनीक का वृहद उपयोग किया जायेगा (4.12)।

उच्चतर गुणवत्ता वाली विज्ञान और गणित में द्विभाषी पाठ्य पुस्तकों और शिक्षण अधिगम

सामग्री को तैयार करने के सभी प्रयास किये जायेंगे ताकि विधार्थी दोनों विषयों पर सोचने और बोलने के लिए अपने घर की भाषा/मातृभाषा और अंग्रेजी दोनों में सक्षम हो सकें (4.14)।

संवैधानिक प्रावधानों, लोगों, क्षेत्रों और संघ की आकांक्षाओं और बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत का ध्यान रखते हुए त्रिभाषा फॉर्मूले को लागू किया जाना जारी रहेगा (4.13)।

इस प्रकार संस्कृत को त्रि–भाषा के मुख्य धारा विकल्प के साथ स्कूल और उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों के लिए एक महत्त्वपूर्ण समृद्ध विकल्प के रूप में पेश किया जायेगा (4.17)।

दुर्भाग्य से भारतीय भाषाओं को समुचित ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाई जिसके तहत देश ने विगत 50 वर्षो में ही 220 भाषाओं को खो दिया है। युनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को ''लुप्तप्राय'' घोषित किया है (22.5)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : समीक्षात्मक मूल्यांकनः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (13,29,54) में कम से कम 4 बार इस शब्द का प्रयोग किया गया है कि ''जहां तक संभव हो'' सम्पूर्ण भारत में मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाया जाये। यह इस शिक्षण नीति की महत्त्वाकांक्षा है। लेकिन वास्तविकता में देखा गया है कि सभी आवश्यक कानून, अधिनियम बैंक फार्म, अस्पताल फार्म, स्कूल नामांकन फार्म, न्यायिक उपक्रम और सरकारी नौकरी आवेदन फार्म अक्सर सभी अनुसूचित भाषाओं में अनुवादित नहीं होते हैं। यहां तक कि माननीय उच्चतम न्यायालय में भी भाषा का माध्यम अंग्रेजी ही है। माननीय उच्चतम न्यायालय की भाषा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के साथ–साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी बराबर प्राथमिकता देने की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। ऐसी परिस्थिति में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मातृभाषा, शिक्षा की आकांक्षा कितनी विश्वसनीय होगी इस पर संदेह है। सिद्धान्त और व्यवहार का अंतर पूर्व की तरह भविष्य में भी बने रहने की संभावना है।

मातृभाषा, बहुभाष्यताः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यदि गहनता से अध्ययन किया जाए तो इस नीति की भाषा नीति में कोई नयापन नहीं है। यह पूर्ववर्ती शिक्षा नीतियों का ही दुहराव है या उनसे उधार लिया गया है। पूर्ववर्ती नीतियों की तरह इस नीति में भी बोलियों, भाषाई छात्रवृत्ति और भाषाई शोध पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया गया है।

भारत के अधिकांश राज्यों में अब भी कई स्कूल विद्यालयों, कॉलेजों में कक्षाओं को अक्सर हिन्दी और अंग्रेजी जैसे विभिन्न भाषा माध्यमों में पढ़ने वाले छात्रों के आधार पर विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है। ऐसी व्यवस्था सरल और लागू करने में आसान है। लेकिन व्यवहारिक दृष्टि से यह देखा गया है कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों बनाम हिन्दी माध्यम या मातृ भाषा में पढ़ने वाले छात्रों के बीच एक पदानुक्रम विकसित हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम के छात्र स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगते हैं और हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों में हीनभावना घर करने लगती है। यह पदानुक्रम का अंतर समाज द्वारा भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनाया जाने लगता है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि सरकार मातृभाषा पर तो बल दे रही है लेकिन समाज और विधार्थियों में अंग्रेजी बनाम मातृभाषा के अंतर को कैसे कम कर पायेगी।

भाषाएं वैचारिक निर्माण है जिनमें सामाजिक स्थान और संस्थागत समझ गंभीर और महत्त्वपूर्ण है (लाडोसा 2010ः 603)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में क्षेत्रीय भाषाओं का अनुवाद

एवं अल्पसंख्यक भाषा बोलने वालों के प्रति पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण पर ध्यान नहीं दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन मूलभूत वास्तविकताओं को स्वीकार करने से चूक गयी है।

निजीकरण एवं वैश्वीकरण का विरोधाभासः—

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को वैश्विक परिदृश्य से भी देखे जाने की आवश्यकता है। भारत ने दिसम्बर 2015 में व्यापार पर सामान्य समझौता (General Agreement on Trade in Services GATS) पर हस्ताक्षर किया था। उच्च शिक्षा में गेट्स (GATS) पर हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से शिक्षा को वस्तुकरण की ओर ले जाता है। इसने शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों को सेवा प्रदाताओं और विद्यार्थियों को सेवा उपभोक्ताओं में परिवर्तित कर दिया, जिससे शैक्षिक सेवाओं का लाभ उठाने के लिए सेवा कर का भुगतान करना होगा (संतोष 2006)। इस व्यवस्था ने भारत में सार्वजनिक वित्त पोषित विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शुल्क संरचना को प्रभावित करना आरम्भ कर दिया। इस हस्ताक्षर का एक अन्य प्रभाव यह भी है कि भारत ने विदेशी शिक्षा प्रदाताओं के लिए अपने द्वार खोल दिये हैं। इनके पास अब उच्च शिक्षा में निवेश, प्रवेश व डिग्री देने का अधिकार होगा। इससे विदेशी संस्थानों की संख्या में वृद्धि होगी। उच्च शिक्षा में वैश्वीकरण के इस प्रयास का भारत के उपर प्रतिकूल प्रभाव पड सकता है क्योंकि इससे निजी एवं सरकारी, देशी और विदेशी शिक्षण संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा होगी। इस प्रतिस्पर्धा का नकारात्मक प्रभाव देश पर पड़ेगा क्योंकि भारत की अभी भी एक बड़ी आबादी गरीबी स्तर के नीचे है। जाति धर्म के नाम पर अभी भी भारत असमानता एवं पदानुक्रम की समस्या से जूझ रहा है। विश्व बैंक (2020) के अनुमान के अनुसार लगभग 176 मिलियन लोग अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं।

भाषा नीति की एक प्रमुख समस्या हिन्दी और संस्कृत को मुख्य धारा में लाने और सभी राज्यों से उन्हें अपनाए जाने का दबाव है। यह नीति अन्य स्थानीय या क्षेत्रीय भाषाओं की अवहेलना कर हिन्दी और संस्कृत को ही सभी स्कूलों में व्यापक रूप से बढ़ावा देने पर बल देती है। यह छात्रों पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करती है। साथ ही उन्हें कुछ भाषाओं को श्रेष्ठ मानने के लिए मजबूर भी करती है। (फेरोओ 2020)। इसके पूर्व की शिक्षा नीतियों में भी त्रि—भाषा सूत्र को अपनाया गया है जिसकी व्यापक आलोचना हुई है। विशेषकर दक्षिण भारत से जो इसे गैर हिन्दी भाषी राज्यों पर हिन्दी थोपने के कदम के रूप में देखते हैं। जिस तरह से इस नीति में भाषा सूत्र को रखा गया है वह 1965 में हिन्दी को अधिकारिक भाषा बनाने के केन्द्र के निर्णय के विरोध में हिंदी विरोधी आंदोलन की याद दिलाता है।

कुछ विधार्थियों के अभिभावकों की नौकरी स्थानान्तरण वाली है जैसे सशस्त्र बल, सेना, निजी एवं केन्द्रीय सरकारी नौकरियां आदि। इनके सदस्यों का बड़ी मात्रा में अन्तर्राज्यीय स्थानान्तरण होता है। स्थानान्तरण वाले मामलों में मातृभाषा में शिक्षा की स्पष्टता का अभाव है, यदि प्रत्येक राज्य का अपना शिक्षा का माध्यम होगा तो इस प्रकार के विधार्थी किस माध्यम में शिक्षा लेंगे। इसके साथ ही इससे इनके ज्ञान के स्तर में कमी आयेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में GDP का कुल 6 प्रतिशत ही खर्च किया जायेगा। भाषा नीति की क्रियान्वयन की जटिलताओं को देखते हुए यह राशि बहुत ही कम दिखाई पड़ती है।

भाषा अभिव्यक्ति एवं शिक्षा का माध्यम मात्र है। हमारी निष्ठा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और इसके रख—रखाव पर होनी चाहिए ना कि भाषा पर। भाषा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक अनिवार्य घटक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषा सूत्र पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है। भाषा मात्र साधन है न कि स्वयं में साध्य।

निष्कर्षः–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा में सम्मिलित कर भाषा का संवर्द्धन, व्यक्ति एवं समाज का विकास करना है। सरकार ने प्रयास तो अच्छा किया लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की योजना एवं क्रियान्वयन के बीच विरोधाभास देखने को मिलता है। इसके साथ ही असमानता और समावेशित शिक्षा के लिए मातृभाषा के माध्यम से सार्वभौमिक शिक्षा का लक्ष्य एक कभी न पूरे होने वाले सपने की तरह लगता है। इसके साथ ही इस नीति में सिद्धान्त और व्यवहार का भारी अन्तर देखने को मिलता है।

मानवीय प्रकृति का सार्वभौमिक सत्य यह है कि मानव द्वारा निर्मित चीजों में थोड़ी बहुत कमियां रह ही जाती हैं। उपरोक्त कमियों के बावजूद भी यह नीति उपलब्ध विकल्पों में से सर्वोत्तम विकल्प का चयन करती है। संघीय लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि जिस भाषा सूत्र (1954) से आरम्भ हुआ और जिसे पूरे राष्ट्र को दिया गया, इसमें कुछ संशोधन करके इसे सशक्त और प्रगतिशील तरीके से क्रियान्वयन किया जाये। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भाषा नीति निःसंदेह उज्जवल भविष्य की दशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. अगनिहोत्री, आर.के. एण्ड ए.एल. खन्ना (1997)
   प्राब्लेमेटाइजिंग इंग्लिश इन इंडिया, न्यू डेलटी, सेज पब्लिकेशन
   http://www.mbrd,gov.in/sties/upload-files/mbrd/files/NEP Final Hindi O.pdf
2. संतोष बी. (2006)' ''द यूनिवर्सिटी इन द सेन्चुरी' टूवर्ड ए डेमोक्रेटिक एण्ड इमैनसिपेटोरी यूनिवर्सिटी रिफार्म, ''द यूनिवर्सिटी, स्टेट एण्ड मारकेटः द पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ ग्लोबेलाइजेशन इन द अमेरिकॉस, आर.ए. रहोड्स एण्ड सी ए टोरेर्स (इडीएस), स्टैनफोर्डः स्टैनफोड यूनिवर्सिटी प्रेस
3. दासगुप्ता, प्रोबल (2004), ''लैंगवेज, पब्लिक स्पेस एण्ड एन एजुकेटेड इमैजिनेशन'' इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 39, नं0 21, पृष्ठ 2169–73
4. रिपोर्ट ऑफ गवरमेंट ऑफ इंडिया, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020
5. राय कुमकुम (2020)ः ''नेशनल एजुकेशन पॉलिसी नीड्स क्लोस स्कूटनी फॉर व्हाट इट सेस् एण्ड व्हाट इट इज नॉट, ''इंडियन एक्सप्रेस, 31 जुलाई
6. लाडोसा, चाइस (2010)ः ''ऑन मदर एण्ड अदर टंगसः
7. सोसियोलिंगविस्टिक, स्कूल्स एण्ड लैंगवेज् आइडियोलॉजी इन नॉरथन इंडिया'', लैंगवेज साइंसेस, वाल्यूम 32 नं0 6, पृष्ठ 602–14
8. विकटर, फेरोओ (2020) न्यू एजुकेशन पॉलिसी, ए क्रिटिकल एनालिसिस, मैटर्स इंडिया।
   http:// mattersindia.com//2020/08/national-education-policy-a-critical-analysis/
9. वर्ल्ड बैंक (2020)ः पार्वती एण्ड इक्वैलिटी ब्रीफ– साउथ एशियाः इंडिया,
10. वर्गीज, एन.वी. (2007)ः गेट्स एण्ड हायर एजुकेशनः द नीड फॉर रेगुलेटरी पॉलिसीज, पेरिसः इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एजुकेशन प्लानिंग।
11. ड्रेजे जेन एण्ड अमर्टसेन (2002)ः इंडियाः डेवेलोपमेन्ट एण्ड पारटिसिपेशन सेकेण्ड 3डी, ऑक्सफोर्डः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

❑❑❑

बुराड़ी कांड में भाषा की भूमिका

—डॉ. पूजा जग्गी

एक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत जिसको मान्यता मिली की यह मौतें तंत्र–मंत्र या कर्मकांडों का एक हिस्सा थीं। यह न तो कोई अकेली घटना थी और न ही यह अपनी तरह की पहली घटना थी। इस प्रकार की सामूहिक आत्महत्या या हत्या बिल्कुल भी असामान्य नहीं है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, इस सदी की शुरुआत के बाद से, धार्मिक समुदायों में सामूहिक आत्महत्याएं व्यापक रूप से देखी गई है।

यह शोध पत्र बुराड़ी सामूहिक आत्महत्याओं के मामले में भाषा की भूमिका का पता लगाने के लिए अत्यंत सहायक है। शिक्षाविदों ने पिछले शोधों में ऐसे मामलों के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और फोरेंसिक दृष्टिकोणों का पता लगाया है, लेकिन जहां तक भाषा की भूमिका का संबंध है, बहुत कम काम किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र ऐसे मामलों में भाषा की भूमिका के विषय में विभिन्न सिद्धांतकारों द्वारा दिए गए सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है तथा बुराड़ी कांड के बाद चुंडावत निवास से बरामद किए गए रजिस्टरों की भाषा के साथ उन सिद्धांतों की समानताएं बताता है। यह शोध पत्र बुराड़ी जैसे कांडों की रोकथाम करने और उनके बारे में जागरूकता फैलाने का कार्य करता है, जहाँ पर ललित जैसे मानसिक संतुलन खोए हुए व्यक्तियों या चरम पंथियों द्वारा हानिकारक भाषा का प्रयोग किया गया हो। यह शोध पत्र सभी संभावित मंचों पर इस मुद्दे पर खुली और विस्तृत चर्चा का आह्वान भी करता है। इस शोध पत्र में प्रासंगिक स्कूल पाठ्यक्रम में, संवेदनशील, सहानुभूतिपूर्ण और प्रभावी तरीके से युवाओं और किशोरों में जागरूकता फैलाने की बात भी कही गई है।

कीवर्ड्स : बुराड़ी कांड, भाषा की भूमिका, चुंडावत परिवार, 11 रजिस्ट्रो की टिप्पणियाँ

1 जुलाई, 2018 को सुबह लगभग 7:15 बजे ललित चुंडावत के साथ अक्सर सुबह सैर पर जाने वाले एक पड़ोसी गुरचरणसिंह, रोजाना की सैर से उनकी गैरमौजूदगी देखकर बुराड़ी स्थित चुंडावत आवास पर गए। वह इसलिए भी चिंतित हो गए क्योंकि चुंडावत के स्टोर भी बंद थे जो आमतौर पर सुबह 5 से 5:30 बजे के बीच खुल जाया करते थे। गुरचरण सिंह ने ललित चुंडावत सहित दस लोगों को फांसी पर लटके देखा और घर का दरवाजा खुला देखा। उन्होंने शोर मचाया और सभी पड़ोसियों को बुला लिया। सुबह करीब साढ़े सात

बजे पुलिस से संपर्क किया गया। ग्यारह में से दस लोग – दो पुरुष, छह महिलाएं और दो किशोर – घर के आंगन में दालान की छत में एक जाल से लटके पाए गए, सभी एक साथ बंद थे। उनकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी और उनके मुंह पर टेप लगा हुआ था और उनके हाथ–पैर भी बंधे हुए थे। उनके चेहरे लगभग पूरी तरह से लिपटे हुए थे, कान रुई से भरे हुए थे और हाथ पीछे की ओर बंधे हुए थे। वहाँ पाँच स्टूल थे, जिन्हें शायद 10 सदस्यों ने साझा किया था। उनके चेहरे एक ही चादर से काटे गए कपड़े के टुकड़ों से ढँके हुए थे। एक अन्य महिला, 80 वर्षीय नारायणी देवी दूसरे कमरे में मृत पाई गई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसका गला घोंटा गया है। राजीव तोमर, एक पुलिस अधिकारी, ने पाया कि परिवार के शव पेड़ों की शाखाओं की तरह लटके हुए थे। इस भयानक घटना ने सब लोगों को झकझोर कर रख दिया और वास्तव में क्या हुआ, इसे समझने के लिए अनगिनत अटकलों को जन्म दिया।

राजधानी, देश और दुनिया को झकझोर कर रख देने वाली ऐसी भीषण और हृदय विदारक घटना के पीछे के कारणों को समझने के लिए पुलिस, मीडिया और शिक्षाविदों ने तरह–तरह के सिद्धांत प्रतिपादित किए हैं। शुरू में पुलिस ने बताया कि उनकी हत्या कर दी गई थी। अपराध स्थल इतना अविश्वसनीय रूप से असामान्य था, जिसने इस परिकल्पना को जन्म दिया। परिवार के सभी लोगों के हाथों को पीठ के पीछे बांध दिया गया था, और छत से निलंबित होने के दौरान उनकी आँखे ढकी हुई थीं। समग्र रूप से यह दृश्य इस बात का विरोधी था कि परिवार के लोगों ने आत्महत्या की थी क्योंकि उनका दरवाजा भी सुरक्षित रूप से बंद नहीं था तो पुलिस ने सोचा कि कोई व्यक्ति बाहर से आकर हत्या कर गया। पुलिस की यह सोच और दृढ़ हो गई क्योंकि आत्महत्या से संबंधित कोई भी लेख घर से प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन इस सिद्धांत को बाद में खारिज कर दिया गया था। सीसीटीवी में किसी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश नहीं दिखा तथा किसी भी पड़ोसी को घर से किसी तरह की गड़बड़ी की आवाज सुनाई नहीं दी। एक अकेला व्यक्ति बिना किसी ध्वनि या गलती किए हुए, पूरे अपराध स्थल को मंचित करने में कामयाब नहीं हो सकता था।

एक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत जिसको मान्यता मिली की यह मौतें तंत्र–मंत्र या कर्मकांडों का एक हिस्सा थीं। यह न तो कोई अकेली घटना थी और न ही यह अपनी तरह की पहली घटना थी। इस प्रकार की सामूहिक आत्महत्या या हत्या बिल्कुल भी असामान्य नहीं है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, इस सदी की शुरुआत के बाद से, धार्मिक समुदायों में सामूहिक आत्महत्याएं व्यापक रूप से देखी गई है। आत्म–विनाश का मार्ग प्रशस्त करने वाले धर्म और परंपरा के कुछ उदाहरण मसाडा के यहूदियों, मोंटानिस्टों के विधर्मी ईसाई समुदायों और यहाँ तक कि जौहर करने वाली राजपूत महिलाओं की सामूहिक आत्महत्याएं है।

चुंडावत निवास के उन बंद दरवाजों के पीछे क्या हुआ था, हम शायद कभी पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे, जहां तीन पीढ़ियां, जो अच्छी तरह से शिक्षित, काफी समृद्ध, सामान्य और खुशमिजाज दिखती थीं, ने इस तरह के अत्यंत विचित्र कदम उठाने के लिए सहमति व्यक्त की।

इस विषय पर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रीयों ने अपने दृष्टिकोण दिए परंतु भाषा की भूमिका को विस्तार से किसी ने भी नहीं बताया। इस लेख का विचार–विमर्श सामूहिक आत्महत्याओं, हत्याओं या अन्य ऐसी घटनाओं को समझने और रोकथाम करने में भी मदद करेगा। जहाँ सामाजिक प्रभाव जैसे कि किसी पंथ को अंधाधुंध मानने की प्रवृत्ति पाई गई हो।

पलायन, टॉड वुंगथोंग (2020) ने "विनाशकारी संप्रदायों की भाषा" पर अपने लेख में इस तरह के संचार की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या की है। समाज में जीवन के अर्थ और मूल्य को बढ़ावा देना धर्म के अंतिम लक्ष्यों में से एक है (चौटर्स, 2000, कोएनिग, किंग, और कार्सन, 2012)। यह लोगों को आध्यात्मिक, मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से स्वस्थ जीवन जीने का निर्देश देने की कोशिश करता है (एलिसन एंड लेविन, 1998, फ्लेचर, 2004)। हालाँकि, कुछ धार्मिक संगठन शुरू में फलदाई रूप से काम करते हैं अंत में नकारात्मक हो जाते हैं और अपने अनुयायियों को हिंसक अपराध करने या सामूहिक आत्महत्या करने के लिए प्रोत्साहित करते है। अनुसंधान दर्शाता है कि विनाशकारी पंथों में कट्टरपंथी गैर–धार्मिक विचारों का प्रयोग किया जाता है जो मुख्यधारा के धार्मिक समूहों के उपदेशों में नहीं होता। उनकी शब्दावली और संचार, वश में करने के लिए बहुत सारे तरीकों का उपयोग करते हैं जैसे कि अपने समूह पर अंधाधुंध विश्वास, चीजों को बढ़ा चढ़ा कर पेश करना और हुक्म न मानने पर दंड देना और मानने पर इनाम देना।

यदि बुराड़ी मामले के साथ समानताएं खींची जाए तो, यह ध्यान रखना उचित होगा कि जांचकर्ताओं ने बताया कि पिछली शाम को चुंडावत निवास पर एक धार्मिक समारोह को संपन्न करने के चिन्ह मिले हैं। उन्होंने घर से 11 पत्रिकाएं बरामद की। उनका संचार मुखर, क्रोधित और निर्देशात्मक था। न केवल लिखित सामग्री बल्कि परिवार वालों से ललित भी पिता की तरह स्वर और ढंग से संप्रेषित करता था। इस प्रकार, परिवार के सदस्यों को विश्वास होने लगा कि उनके पिता वास्तव में उनके साथ हैं। कथित तौर पर पिता की आत्मा, परिवार का पितृसत्तात्मक मुखिया ललित को निर्देश देता था कि उसे क्या करना है। टिप्पणियों ने ललित के इस दावे को इंगित किया कि परिवार समृद्ध था क्योंकि पिता की आत्मा उससे बात कर रही थी और उसे निर्देश दे रही थी। ललित परिवार के मुखिया का प्रतीत बन गया था। इसके बाद जो तर्क दिया गया वह यह था कि बड़ की पूजा की प्रतिक्रिया पिता की आत्मा को श्रद्धांजलि प्रकट करने और उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए की जा रही थी। "ललित के पिता की आत्मा के साथ अन्य आत्माएं", जिनकी मृत्यु 2007 में हुई थी, और "वे आत्माएं अभी भी मोक्ष के लिए कैसे तरस रही हैं" जैसे अंधविश्वास भरे विचारों के प्रमाण थे।

रजिस्टरों में मिली टिप्पणियों की भाषा में परिवार के सदस्यों को नियंत्रित करने और डर पैदा करने की कोशिश करने के कई उदाहरण हैं जैसे– उन्होंने "भटकती आत्माओं" के बारे में उल्लेख किया है, यह आशंका व्यक्त की गई कि परिवार अगली दिवाली नहीं देख सकता है। "धनतेरस पहले ही मनाया जा चुका है। किसी की गलतियों के कारण आप कुछ हासिल करने

से बहुत दूर हैं। हो सकता है कि आप अगली दिवाली न देख पाए। चेतावनी को नजर अंदाज मत किया करो," प्रविष्टि में कहा गया। 11 नवंबर, 2017 ललित से एक और प्रविष्टि परिवार के "कुछ पाने" में असफल होने के पीछे "किसी की गलतियों" का उल्लेख किया था, वह भी इसी तर्ज पर था। 19 जुलाई, 2015 को हिंदी में लिखे गए लेख में कहा गया है, "चार आत्माएं अभी भी मेरे साथ भटक रही हैं। अगर आप खुद को सुधार लेंगे तो ये आत्माएं मुक्त हो जाएंगी/ रुवके फोन की लत अच्छी नहीं, इसके अलावा परिवार की महिलाओं में एक दूसरे के साथ अक्सर झगड़ा होना भी ठीक नहीं"। टिप्पणियों में चीजों को बढ़ा चढ़ाकर पेश करने के उदाहरण भी थे, जहाँ स्वर्गीय ललित और टीना के गुणों का उल्लेख किया गया था और परिवार के अन्य सदस्यों को आदेश दिया गया था कि वह ललित और टीना जैसे बने। मतारोपण की दिशा में अत्यधिक प्रयास किए गए थे। एक प्रविष्टि ने परिवार के सदस्यों को "टिप्पणियों को बार–बार पढ़ने और उनमें दिए गए निर्देशों का पालन करने की सलाह दी, साथ ही परिवार के सदस्यों को ललित के बारे में बहुत अधिक चिंता न करने का आदेश दिया"।" टिप्पणियों में चेतावनी दी गई थी, कि कैसे घर के निर्माण में देरी हुई और कैसे प्रियंका के 'मांगलिक दोष' ने उसकी शादी की संभावनाओं को प्रभावित किया क्योंकि किसी ने टिप्पणियों में लिखी बातों का पालन नहीं किया।" इसके अलावा परिवार को एक बंद समूह बनाने का सक्रिय प्रयास किए गए थे। प्रविष्टियों में उल्लेख किया गया था कि बड़ की पूजा और ललित के पिता की आत्मा का आगमन घर में बाहरी लोगों की उपस्थिति में नहीं होगा। "यह टिप्पणियाँ बताती है कि जब प्रियंका की सगाई के लिए घर में मेहमान थे तो ललित ने ऐसा व्यवहार क्यों नहीं दिखाया। पूछताछ के दौरान, पुलिस ने पाया कि ललित अपनी पत्नी के साथ परिवार पर काफी नियंत्रण रखता था ("बुराड़ीडेस : नोट्स इन फैमिली रजिस्टर्स से दे मई नॉट सी नेक्स्ट दिवाली," 2018)। यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि रजिस्टर की टिप्पणियों में अत्यंत ही स्पष्ट भाषा में बड़ की पूजा की एक–एक प्रक्रिया को बहुत विस्तार से प्रस्तुत किया गया था ताकि कोई भी परिवार का सदस्य इसको संपूर्ण रूप से करने से बच न सके।

ऊपर प्रदान किए गए साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि लिखित और मौखिक भाषा ने सामूहिक आत्म क्षति की इस घटना में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके परिणामस्वरूप दुखद मौतें हुई है। इस तरह की भाषा ने, नियंत्रण, रहस्यमय हेरफेर, शुद्धता की मांग, अपराधबोध के सिद्धांतों को समूह नियंत्रण को बढ़ावा दिया है न कि व्यक्तिगत कल्याण को। संप्रेषित भाषा में जितने इस प्रकार के लक्षण होते हैं, वह उतनी ही अधिक विनाशकारी हो सकती है। इसी तरह की विशेषताओं को पेथरिक (2017) द्वारा भी साझा किया गया है। वार्ड (2002) ने विनाशकारी समूहों की विशेषताएँ प्रदान की हैं जहाँ वह संचार की पिरामिड संरचना के बारे में बात करता है, जिसके शीर्ष स्तर के नेतृत्व के लिए निर्विवाद प्रतिबद्धता है। बुराड़ी मामले में ललित सर्वोच्च नेता थे और उनकी पत्नी उनकी सहायता करती थी और कोई उनसे सवाल नहीं करता था। वार्ड आगे पुरस्कार और दंड के माध्यम से सदस्यों के साथ हेरफेर और शोषण की ओर इशारा

करता है। टिप्पणियों की भाषा ऐसे उदाहरणों से भरी थी। ललित ने सदस्यों को विश्वास दिलाया कि परिवार ने जो आर्थिक समृद्धि अनुभव की है, वह पिता की आत्मा की आज्ञा का पालन करने के कारण है। यदि परिवार के सदस्य ऐसा करने में विफल रहे तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। विनाशकारी समूहों में बाहरी लोगों से समूह की गुप्त बातों को न करने की हिदायत भी होती है। चुंडावत परिवार को भी बाहरी लोगों से बात नहीं करने की हिदायत दी गई थी। यह ध्यान रखना उचित है कि 11 रजिस्टर बरामद किए गए थे और वे 2015 से लिखे गए थे, 3 साल से अधिक समय होने के बावजूद परिवार के सदस्यों ने कभी भी ललित के बारे में या रजिस्टरों में लिखी गई टिप्पणियों के बारे में किसी भी व्यक्ति चाहे वह परिवार के कितना भी निकट मित्र या रिश्तेदार क्यों न हो, नहीं बताया।

एक बहुत ही पेचीदा मुद्दा यह है कि ललित द्वारा इस तरह के संचार का उपयोग करने का मूल कारण क्या था। ललित के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में विभिन्न परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की गई हैं। 2004 में भोपाल के सबसे छोटे बच्चे ललित को एक दर्दनाक घटना का सामना करना पड़ा था जिसके कारण उसकी आवाज चली गई थी। डीएसएम–5 (DSM-V) में, यह रूपांतरण विकार (Conversion Disorder) का मामला बताया गया है। फ्रायड के दृष्टिकोण के आधार पर, ललित को एक अस्वीकार्य अचेतन संघर्ष का सामना करना पड़ा जो चिंताजनक था, जिसे उन्होंने अचेतन मन में दबा दिया। फिर भी, किसी भी अन्य दमित यादों की तरह, इन संघर्षों ने प्रच्छन्न रूप में चेतना में उभरने की कोशिश की और शारीरिक लक्षणों में परिवर्तित हो गया (बारलो और डूरंड, 2014)। एक अन्य परिकल्पना का दावा है कि यह साझा मनोविकार (Shared Psychoses) का मामला था जहां सभी परिवार के सदस्यों ने ललित के भ्रम और मतिभ्रम पर विश्वास करना शुरू कर दिया और उसके चरम विश्वासों के शिकार हो गए। ललित के व्यवहार के पीछे जो भी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारण रहे हो, घटना में उसके द्वारा संचार की प्रक्रिया और गुणवत्ता की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है।

इस शोध पत्र का एक प्रमुख निहितार्थ यह है कि उपदेशों और संचार में प्रयुक्त भाषा के आधार पर सभी हित धारकों को इस तरह के प्रयासों के बारे में सतर्क किया जा सकता है। इस जागरूकता को आम लोगों में फैलाने की जरूरत है कि वह परिवार के भीतर या सामाजिक और सामुदायिक ढांचों में ऐसे हानिकारक संचार से बचें। इसके अलावा, ऐसे विषयों पर खुली चर्चा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस तरह के मुद्दों पर सभी संभव मंचों पर चर्चा करने की प्रवृत्ति को वर्जित बनाने के बजाय सुगम बनाया जाना चाहिए। ऐसे सभी प्रयासों में एक बड़ी चुनौती यह है कि आध्यात्मिक और धार्मिक संचार और अस्वास्थ्यकर मतारोपण के बीच अंतर की बहुत पतली रेखा है। हमारे जैसे देश में जहाँ धर्मों और भाषाओं में इतनी विविधता है, और विशाल आबादी है, एक तरफ हम बहुत सहिष्णु राष्ट्र हो सकते हैं, लेकिन दूसरी तरफ कट्टरवादी या रूढ़िवादी हो सकते हैं जो कि हमारे देश के हित में नहीं है। बड़ी संख्या में निरक्षर और कमजोर आबादी जो अत्यधिक अंधविश्वासों में विश्वास करने के लिए आसान लक्ष्य बन सकते हैं और इस तरह की रणनीति से आसानी से गुमराह हो जाते हैं। युवा इस जागरूकता को फैलाने

में योगदान दे सकते हैं। इस तरह की शिक्षा भी स्कूल के पाठ्यक्रम का हिस्सा होनी चाहिए, लेकिन ऐसी भाषा और शैली में जो किसी भी वास्तविक धर्म या आध्यात्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाए बिना संवेदनशील तरीके से किशोर के मन को आकर्षित करें। इसके अलावा, ऐसी हानिकारक संचार प्रथाओं को रोकने और प्रबंधित करने के लिए प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रमों को विकसित करने में अनुसंधान किया जा सकता है ताकि बुराड़ी सामूहिक मानव वध जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से बचा जा सके।

References

Barlow, D. H., Durand, V. M., Lalumière, M. L., & Stewart, S. H. (2014). Abnormal psychology. W. Ross MacDonald School Resource Services Library.

Burari Deaths: Notes In Family Registers Say They May Not See Next Diwali. (2018, July 11). Outlook India. https://www.outlookindia.com/website/story/burari-deaths-notes-in-family-registers-say-they-may-not-see-next-diwali/313332

Chatters, L. M. (2000). Religion and health: Public health research and practice. Annual review of public health, 21(1), 335-367.

Ellison, C. G., & Levin, J. S. (1998). The religion-health connection: Evidence, theory, and future directions. Health education & behavior, 25(6), 700-720.

Fletcher, S. K. (2004). Religion and life meaning: Differentiating between religious beliefs and religious community in constructing life meaning. Journal of Aging Studies, 18(2), 171-185.

Koenig, H., Koenig, H. G., King, D., & Carson, V. B. (2012). Handbook of religion and health. OupUsa.

Petherick, W. (2017). Cults. In The Psychology of Criminal and Antisocial Behavior (pp. 565-588). Academic Press.

Palayon, R. T., Todd, R. W., &Vungthong, S. (2020). The Language of Destructive Cults: : Keyness Analyses of Sermons. Communication & Language at Work, 7(1), 42–58. https://doi.org/10.7146/claw.v7i1.123251

Ward, D. (2002). Cults and the family. Australian and New Zealand Journal of Family Therapy, 23(2), 61-68.

❒❒❒

मनोवैज्ञानिक विभाग, माता सुंदरी कॉलेज फॉर वुमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली –110002

ईमेल: poojajaggi@ms.du.ac.in व्हाट्सएप मैसेज नंबर –.919899759439 मोबाइल नंबर –.919811161600

भाषा के प्रश्न और काशीनाथ सिंह

—प्रीति पाण्डेय

अर्थात ऐ दुनिया वालो! वह पालना लकड़ी का है जिस पर बचपन में सोए थे। वह गुल्ली—डंडा भी लकड़ी है जिससे खेले थे! वह पटरी भी लकड़ी है जिसे लेकर मदरसा गए थे! ब्याह का मँड़वा और पीढ़ा भी लकड़ी है जिस पर ब्याह रचाया था! सुहाग की सेज भी लकड़ी है जिस पर दुल्हन के साथ सोए थे और बुढ़ापे का सहारा लाठी भी तो लकड़ी है! ऐ दुनियावालों! अंतकाल जिस टिकटी पर मसान जाते हो और जिस चिता पर तुम्हें मिटाया जाता है— सब लकड़ी है! ऐ दुनियावालों! यह संसार कुछ नहीं, सिर्फ लकड़ी का तमाशा है।"[13]

बीज—शब्द : मौलिकता, बेमशक्कत, सपाट, बहुअर्थी, दुरूहता, प्रवाहमयता, धक्कामार, ठसकीली, जिंदादिली, भदेसपन, स्पष्ट बयानबाजी, अश्लील, औघड़ किस्सागोई, मशक्कत, गालियाँ, ऊब, प्रसंगानुकूल।

भाषा और मनुष्य का गहरा रिश्ता है। मनुष्य भाषा के माध्यम से ही अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त करता है। व्यक्ति प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से ही एक—दूसरे के प्रति श्रद्धा, प्रेम एवं निष्ठा की भावना प्रकट करता है। भाषा है तो समाज है, समाज है तो भाषा अर्थात् दोनों एक—दूसरे के पूरक हैं। साहित्य की प्रत्येक विधा में भाषा का विशेष महत्त्व है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके सहारे लेखक पाठकों के अंतःकरण में प्रवेश करता है। रचनाकार अपने ह्रदय और बुद्धि में आने वाले विचारों और संवेदनाओं को समाज तक पहुँचाने हेतु भाषा नामक सेतु से ही होकर गुजरता है। साहित्यकार के लिए कलात्मक विचारों के साथ—साथ उपयुक्त भाषा एवं सुंदर व सार्थक शब्दों का चयन भी आवश्यक है। रेमंड विलियम्स कहते हैं— "असल में एक लेखक की रचना में, उसके रूप में और भाषा में भी अनुभव और अभिव्यक्ति का संबंध महत्त्वपूर्ण होता है। वही संबंध समाज से लेखक को जोड़ता है।"[1] कथा—लेखन में तो अनुभव और अभिव्यक्ति का संबंध वास्तव में महत्त्वपूर्ण होता है।

भाषा की दुरुहता भावनात्मक एवं प्रवाहशीलता में बाधक तत्त्व है। अतः भाषा सहज और आडंबर विहीन होनी चाहिए, यथा काशीनाथ सिंह की भाषा। श्यामसुंदर दुबे लिखते हैं— "अपने समय और अपनी अभिव्यक्ति की भाषा पा लेने की ईमानदार कोशिश हर अच्छी रचना में होती है। इस भाषा को काशी ने तलाशा है।"[2] काशीनाथ सिंह में कथा—लेखन की अद्भुत क्षमता है, जो कि उनके कथा—साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

दरअसल भाषा काशीनाथ सिंह के गद्य—साहित्य की बहुत

बड़ी ताकत है। उनका भाषागत वैशिष्ट्य उनके कथा–लेखन के विकास का प्रतीक है। आनंद नारायण पांडे लिखते हैं– "काशीनाथ सिंह ने बड़ी मशक्कत के साथ बोलचाल की भाषा के विभिन्न रूपों को पहचानकर अपनी कथा भाषा की सर्जना की है।"[3] काशीनाथ सिंह की भाषा प्रवाह की गति हर जगह एक जैसी नहीं है। उनकी भाषा का गतिसूचक यंत्र समय, स्थान एवं परिवेश के अनुसार निरंतर बदलता रहता है। उनकी भाषा की यह गति, प्रवाहमयता तात्कालिक सामाजिक स्वरों के उत्थान–पतन पर निर्भर करती। व्यंग्य उनकी रचना का गहरा आधार–बिंदु है। योगेश देसाई उनकी भाषागत वैशिष्ट्य के संबंध में लिखते हैं–"उनकी भाषा लोक जीवन से सम्पृक्त है, टनाकेदार है। उसमें किसान चेतना है। किसान का व्यंग्य–विनोद उनकी भाषा में मौजूद है। वे सामान्यजनों के बीच उठना–बैठना अधिक पसंद करते हैं। वे चायवाला, पानवाला, रिक्शावाला, खोमचेवाला, मजदूर, किसान, वकील, इंजीनियर और छात्रों के साथ बैठना और उनसे वार्तालाप करना उचित समझते हैं। उनकी भाषा की तल्खी और रवानगी का राज यही है। उनकी भाषा धक्कामार है, ठसकीली है और उसमें सही जगह चोट मारने का खिलंदड़पन है।"[4] पात्रों के परिवेश एवं जीवन–स्तर के अनुकूल कब, कहां, किससे और किस तरह की बात कहलवानी है यह लेखक बखूबी जानता है। कथा–साहित्य की रचनात्मक प्रवृत्ति एवं सामाजिकता के अनुरूप लेखक की भाषा भी गतिमान है।

सूरज पालीवाल काशीनाथ सिंह की भाषा पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं– "मैं उनकी भाषा पर इतना मोहित हुआ जितना एक जमाने में फणीश्वरनाथ रेणु की भाषा पर। एक रचनाकार के पास ऐसी भाषा को जो उसे जहां चाहे तोड़े और जहां चाहे मोड़े, फिर भी वह भाषा बनी रहे– बोली और गाली से अलग ऐसे रचनाकार हिंदी में बहुत कम है। हम या तो नकली भाषा बोलते हैं और लिखते हैं या उस भाषा का ढोंग करते हैं। जो हमारे कहने में ही नहीं हैं, जो हमारे इशारे पर नहीं नाचती और हमारे बिना कहे बोलती नहीं है।"[5] काशीनाथ सिंह की भाषा हमारे परिवेश के इर्द–गिर्द घूमती हुई सरल एवं सहज भाषा है। उनका लेखन आम आदमी के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ से पूरी तरह जुड़ा हुआ है। जिस परिवेश और जिस प्रकार का लेखन वो करते हैं, उनमें बनावटीपन की कोई जगह नहीं है। जिस समस्या, परिवेश, स्थान और समय से टकराती हुई उनकी रचना सामने आती है, उनकी भाषा उसी रंग में खुद को ढाल लेती है। यही कथाकार की रचनात्मक भाषा की विशेषता उन्हें अन्य समकालीन कथाकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

काशीनाथ सिंह ने अपने कथा–लेखन में बनारसी लहजे वाली आम–बोलचाल की सहज भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें कहीं–कहीं यथा प्रसंग अश्लील शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। सर्वाधिक विवादित रचना रही 'काशी का अस्सी' का उद्धरण दृष्टाव्य है– "एक अपरिचित और दूसरे परिचित स्वर के बीच संवाद– 'ई कौन है बे', लेखक है भोसड़ी के', 'लिखता क्या है?', 'हमारी झाँट। जो हम बोलते हैं, वही टीप देता है।', 'अरे, वही तो नहीं देख तमाशा लकड़ी वाला?' हां वही। देखो तो कितना शरीफ, लेकिन हरामी नंबर एक।"[6] ये अश्लील कहे जाने वाले शब्द वास्तव में बनारस की आम–बोलचाल में सामान्यतः हंसी–मजाक एवं वैचारिक संवादों में

सहज ही प्रयोग किए जाते हैं।

काशीनाथ सिंह पर अश्लील शब्दों के प्रयोग हेतु लगाए गए आरोप पूर्णतः निराधार है, क्योंकि यह अश्लील शब्द कथाकार की मात्र अपनी शब्दावली ना होकर संपूर्ण बनारस की सभ्यता एवं संस्कृति में रची–बसी है। 'काशी का अस्सी' का यह उद्धरण उन सभी शंकाओं का समाधान है, जो काशीनाथ सिंह को अश्लील शब्दों का प्रयोगकर्ता मानते हैं– "धक्के देना और धक्के खाना, जलील करना और जलील होना, गालियां देना और गालियां पाना औघड़ संस्कृति है। अस्सी की नागरिकता के मौलिक अधिकार और कर्तव्य हैं। इसके जनक संत कबीर रहे हैं और संस्थापक औघड़ कीनाराम। चंदौली के एक गांव से नगर आए एक अप्रवासी संत। अस्सीवासी उसी औघड़ संस्कृति की जायज–नाजायज औलादें हैं। गालियां संस्कृति की राष्ट्रभाषा है, जिसमें प्यार और आशीर्वाद का लेन–देन होता है।"[7] समकालीन लेखक व पाठकगण जिसे काशीनाथ सिंह की भदेसपन से युक्त भाषा कहते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि बनारस की गली–मोहल्लों में अश्लील कहे जाने वाले शब्दों का प्रयोग आम–बोलचाल की भाषा में सामान्य तौर पर किया जाता है। कथाकार ने तो केवल बनारस की वास्तविक सभ्यता एवं संस्कृति को उजागर करने हेतु काशी की मूल एवं वास्तविक सभ्यता का प्रयोग अपने कथा–लेखन में जस–का–तस कर दिया है।

काशीनाथ सिंह अपनी मूल भाषा पर पकड़ बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। उनकी गद्य–भाषा की विशिष्टता का बखान करते हुए चंपा कुमारी सिंह ने लिखा है–'काशीनाथ सिंह साठोत्तरी कथा–लेखकों की उस पीढ़ी में आते हैं, जिसने पहली बार हिंदी कहानी की भाषा की पवित्रता को तोड़ा। भाषा काशीनाथ सिंह के गद्य की बहुत बड़ी ताकत है। उनकी भाषागत वैशिष्ट्य कहानी और उपन्यास के विकास का प्रतीक है। उस दौर में भाषा में जो मुहावरा कविता बना रही थी, वह काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियों में बनाया। कविता के भाषा की लाक्षणिकता कहानियों में है।"[8] अर्थात लेखक ने अपने गद्य साहित्य में नई मूल्य अभिव्यक्ति के साथ कविताओं, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। व्यंगपूर्ण विनोद के रूप मे औघड़ संस्कृति का प्रयोग निःसंदेह गद्य–साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय है।

काशीनाथ सिंह पूरी सादगी एवं संजीदगी के साथ अपनी भाषा–शैली में एक तरफ अभिजात्य मूल्यों पर बात करते हैं, तो दूसरी तरफ संदर्भ के अनुसार स्थानीय रंगों को भी घुला–मिलाकर प्रस्तुत करने में माहिर हैं। उनके कथा–लेखन में किस्सागोई वाचिक परंपरा का बोध होता है। वह सीधी–सादी व्यंग्यपूर्ण लोक–प्रचलित कथाओं एवं किंवदंतियों से कथा–साहित्य का अपना पूरा ठाठ अविष्कृत करने में सबसे अधिक सफल हुए हैं।

दरअसल काशीनाथ सिंह अश्लील कहे जाने वाले शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग 'काशी का अस्सी' उपन्यास में किया है। एक ईमानदार और जिम्मेदार लेखक की हैसियत से उन्होंने उपन्यास के पहले अध्याय की शुरुआत निम्न शब्दों से की है– "मित्रों, यह संस्मरण वयस्कों के लिए है, बच्चों और बूढ़ों के लिए नहीं और उनके लिए भी नहीं जो यह नहीं जानते कि अस्सी और भाषा के बीच ननंद–भोजाई और साली–बहनोई का रिश्ता है। जो भाषा में गंदगी, गाली,

अश्लीलता और जाने क्या–क्या देखते हैं और जिन्हें हमारे मोहल्ले के भाषाविद् 'परम' (चूतिया का पर्याय) कहते हैं, वह भी कृपया इसे पढ़कर अपना दिल ना दुखाए।"[9] 'काशी का अस्सी' गद्य में किसी तरह का कोई आवरण नहीं है। काशीनाथ सिंह की भाषा के इसी अनावृत्त रूप के कारण इसे अश्लील कहा गया है।

काशीनाथ सिंह की भाषा में जो व्यंग्यात्मक धार है, नुकीलापन है, वह भाषा संबंधी कट्टर अभिजात्य मानसिकता के प्रति ऊब की उपज है। 'काशी का अस्सी' का उदाहरण दृष्टव्य है– "जिस देश में मुर्दा फूंकने के लिए घूस देना पड़ता हो उसमें सिद्धांत?"[10] आगे काशीनाथ सिंह अस्सी के प्रमुख पात्र राय साहब पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए लिखते हैं– "रायसाहब का गला ही लाउडस्पीकर है और लाउडस्पीकर से निकलते रहते हैं ईट, पत्थर, गोले! बहुतों को उनसे बतियाना अपना मुंह पिटाना लगता है।"[11] दरअसल काशीनाथ सिंह का लोक–जीवन पर्यवेक्षण और ग्रामीण आंचलिक बोलचाल के शब्दों में ध्वनि–विवेकी रूप परिष्कृत रहा है। वह सीधी–साधी व्यंगपूर्ण लोक–प्रचलित कथाओं– किवदंतियों उसे कहानी का पूरा–का–पूरा ठाठ अविष्कृत करने में सक्षम है। वे लिखते है– "जब सौ रचनाकार मरते हैं तब एक आलोचक पैदा होता है।"[12] छात्र–आंदोलन आधारित 'अपना मोर्चा' उपन्यास में व्यंग्यात्मक पात्र 'ज्वान' पर टिप्पणी करते हुए अभिजीत सिंह लिखते हैं– उपन्यास में 'ज्वान' जैसे पात्र का होना अर्न्तविरोधों से व्यक्त होने वाले व्यंग्य की तीक्ष्णता में सहायक है। 'ज्वान' चीजों को हमेशा एक द्वन्द्व–न्याय से देखता है। इससे भाषा में एक नया सा व्यंग्यात्मक तनाव पैदा होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कथाकार काशीनाथ सिंह ने बनारस की आम भाषा का प्रयोग करते हुए यथोचित प्रसंगानुकूल व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग बड़ी ही कुशलता पूर्वक किया है।

काशीनाथ सिंह ने अपने कथा–साहित्य लेखन के बीच–बीच में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग कलात्मकता उत्पन्न करने एवं ऊब से बचने हेतु किया है। 'काशी का अस्सी' उपन्यास में व्यक्ति के जीवन में लकड़ी के महत्त्व की ओर इशारा करते हुए लिखते हैं–

"सुनो सुनो ए दुनियावालों
यह जग बना है लकड़ी का
जीते लकड़ी, मरते लकड़ी
देख तमाशा लकड़ी का.

अर्थात ऐ दुनिया वालो! वह पालना लकड़ी का है जिस पर बचपन में सोए थे। वह गुल्ली–डंडा भी लकड़ी है जिससे खेले थे! वह पटरी भी लकड़ी है जिसे लेकर मदरसा गए थे! ब्याह का मँड़वा और पीढ़ा भी लकड़ी है जिस पर ब्याह रचाया था! सुहाग की सेज भी लकड़ी है जिस पर दुल्हन के साथ सोए थे और बुढ़ापे का सहारा लाठी भी तो लकड़ी है! ऐ दुनियावालों! अंतकाल जिस टिकटी पर मसान जाते हो और जिस चिता पर तुम्हें मिटाया जाता है– सब लकड़ी है! ऐ दुनियावालों! यह संसार कुछ नहीं, सिर्फ लकड़ी का तमाशा है।"[13]

'आछे दिन पाछे गए' संस्मरण में काशीनाथ सिंह ने बनारस शहर की विशेषताओं सहित अपनी कर्मभूमि के प्रति लगाव को बड़े ही काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुति दी है–

"इसे मजबूरी कहिए या पसंद मैंने अपनी– जीविका के लिए यही शहर चुना!
अखंड हरिकीर्तनओं का शहर!
रात रात कव्वालियों और बिरहा दंगलों का शहर!
कंधे पर लखोटिया लंगोट की पगड़ी बांधे सिर का शहर!
पान की दुकानों के आगे सुबह–शाम गप्पे मारता
और ठहाके लगाता शहर!
गलियों और गालियों, घाटों और मालियों, 'हर हर महादेव'
के नारों और तालियों का शहर!
प्राणों से प्यारा शहर
दुनिया में न्यारा शहर
आंखों का तारा शहर
मस्ती का मारा शहर
हाय हाय हमारा शहर!

'हाय–हाय' इसलिए कि यह शहर भी था और एक भारी–भरकम ओखल भी, जिसमें अपनी मर्जी से अपना सिर डाले हुए सारा जीवन पड़ा रहा!"[14]

विस्तृत कथ्य को सूक्ष्म रूप में नारे एवं सूक्तियों के माध्यम से कथाकार ने अपने गद्य–लेखन में कसावट उत्पन्न की है।

"ठाकुर बुद्धि, यादव बल झंडू हो गया, जनता दल.
राम लला हम आएंगे मस्जिद वहीं बनाएंगे (मंदिर की जगह)
पाउच नहीं, दूध चाहिए बनिया नहीं अहिर चाहिए.
अबकी बारी, अटल बिहारी.
पत्थर रखो छाती पर मोहर मारो हाथी पर."[15]

काशीनाथ सिंह का गद्य लेखन सूक्तियों एवं उद्धरणों से भरपूर है। लेखन के बीच–बीच में सूक्तिपरक वाक्यों का सटीक प्रयोग उनकी भाषागत कसावट को दर्शाता है। कम शब्दों में प्रभावी ढंग से कहना उनकी भाषा की विशेषता रही है, जिसके लिए उन्होंने यथोचित स्थानों पर ही सूक्तिपरक वाक्यों का प्रयोग किया है। यहां पर कुछ सूक्तियों के उदाहरण दृष्टव्य है–

"धांधलियाँ विश्वविद्यालय का चरित्र है।"[16]

"भ्रष्टाचार लोकतंत्र के लिए ऑक्सीजन है।"[17]

"सिद्धांत सोने का गहना है।"[18]

"मैं तुम दोनों के चरम सुख का वरदान थी।"[19]

"गेहूं के सिर्फ दो उपयोग थे– शादी–ब्याह और श्राद्ध।"[20]

"जिसका कोई घर नहीं होता, या तो उसका कुछ नहीं होता या उसकी पूरी दुनिया होती है।"[21]

राजनीतिक नारे एवं सूक्तिपरक का प्रयोग लेखक ने चरित्र के भावों को अभिव्यक्त करने हेतु

किया है। इनके प्रयोग से लेखक ने कथ्य को रोचकता एवं शिल्प को मजबूती प्रदान की है। काशीनाथ सिंह की भाषा सदैव एक चरित्र का रूप धरकर सामने आती रही है। "उपसंहार में विषय की मांग के अनुसार (संभवतः पहली बार) उनकी भाषा सांस्कृतिक आस्वाद से गुजरती है। 'मितकथन' इसकी विशेषता है और 'अमित अर्थ' उपलब्धि।"[22] हालांकि उपसंहार उपन्यास में संस्कृत श्लोक का यथावत प्रयोग न करके उनके अर्थो का साहित्यिक तुकबंदी के साथ प्रयोग लेखक ने किया है–

"जैसे कर्म में ही फल छिपा रहता है, वैसे ही
जीवन में भी मृत्यु छिपी रहती है।"[23]

काशीनाथ सिंह हिंदी की साठोत्तरी पीढ़ी के कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। भाषा सदैव उनके लिए जीती–जागती, जिंदा चीज रही है। 'बनारस की बानी और गंगा का पानी' उनके लेखकीय व्यक्तित्व में समाया हुआ है। भाषा उनके गद्य की बहुत बड़ी ताकत है, जिसका उपयोग कब, कैसे और कहाँ किस रूप में किया जाए यह उनकी लेखकीय साधना का आवश्यक अवयव रहा है। 'हिंदी भाषा में क्रियाओं के प्रयोग' विषय पर शोध–कार्य करते हुए उन्हें यह अनुभव हो गया था कि 'भाषा हमारी तरह एक जीवित सावयव प्रक्रिया है, जिसके भीतर फैले हुए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अवयव वगैरह स्नायु–जाल की तरह है। यदि वे वाक्य में आएँ तो इनका निजी अर्थ और अस्तित्व होना ही चाहिए, उनका फालतू या बेजा इस्तेमाल कुछ वैसा ही अपराध है, जैसे बिना जरूरत के किसी आदमी को कहीं खड़े रहने का उपदेश देना। काशीनाथ सिंह की रचनाओं के भीतर से गुजरने वाला कोई भी विवेकशील पाठक यह स्वीकार करेगा कि उन्होंने अपनी शक्ति भर इस प्रतिज्ञा का निर्वहन किया है।' बड़ी मशक्कत के बाद काशीनाथ सिंह ने बनारस की बोलचाल की भाषा के विभिन्न रूपों की पहचान कर अपनी कथा–भाषा की सर्जना की है। बासी–तिवासी, सरपोटना, प्यौना–चकत्ती, फींचना, सबुनाना, अगोरना, कल्ला फूटना, तेल चिपोरना, न्योता–हंकारी, अहरा–भौरीं, बुड़बक जैसे शब्द उनके कथा–साहित्य में आसानी से मिल जाएँगे।

उनकी बनारसी लहजे वाली भाषा की मौलिकता एवं जीवंतता का राज इन्हीं शब्दों में छिपा हुआ है। ऐसा नहीं है कि 'काशीनाथ सिंह ने केवल शब्द प्रयोग के क्षेत्र में ऐसा किया हो। उनकी पूरी भाषा, सारा वाक्य–विन्यास, हिंदी की बोलचाल की प्रकृति को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है। अपनी रचनाओं के संवाद को वे इस प्रकार नियोजित करते हैं कि उससे उनका पूरा परिवेश, व्यक्तित्व और संस्कार हमारे सामने उद्‌भाषित हो उठते हैं।' काशीनाथ सिंह की रचनाओं में जितनी तरह के पात्र हैं, उतनी ही तरह के अंदाज वाली भाषा, शैली व वाक्य–विन्यास हैं। वे मुख्यतः ठेठ बनारसी ठाठ के कथाकार हैं, जिनकी कथा–भाषा जन–भाषा के अत्यंत निकट जान पड़ती है। उनकी भाषा ऊपर से सपाट पर भीतर से बहुअर्थी है।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कथा–साहित्य में प्रतीकों का बेहतरीन इस्तेमाल किया है। चूँकि वे रोजमर्रा की घटनाओं को केंद्र में रखकर लेखन–कार्य करते हैं, इसी कारण वे प्रतीकों के प्रचलित रूपों व अर्थों के अलावा नये प्रतीकों का प्रयोग करते नजर आते हैं। इन प्रतीकों के

उपयोग से कथाकार की लेखनी को पैनापन तो मिला ही, टेक्स्ट को अर्थवेत्ता भी मिली है। 'सूचना' कहानी में उन शोषक वर्गों पर प्रतीकात्मक प्रहार किया गया है, जो ना केवल हमारे समाज बल्कि पूरे देश के लिए नासूर बन गए हैं– "उसकी आंखें फैली हैं, मुंह खुला है और गोश्त की मोटाई को मापते चाकू का सिरा छाती के बीचों–बीच उभरा है, जिस पर बैठने के लिए मक्खियां आपस में मर–कट रही हैं। समूचे धड़ पर इतनी अधिक मक्खियां भनभना रही हैं, जैसे वहां पानी से तर कोई चीनी का बुरा हो। उसके दो सुनहले दाँतों से बंधी हुई जबड़े के बराबर एक दफ्ती खड़ी है, जिस पर सुर्ख हर्फो में लिखा है 'कृपया मक्खियां उड़ाने की हिम्मत ना करें वह भूखी हैं।"[24]

इसके अलावा उनकी कुछ ऐसी कहानियां भी हैं, जो पूर्ण रूप से प्रतीकात्मक रूप में लिखी गई हैं 'पहला प्यार' सदी का 'सबसे बड़ा आदमी' 'लोग बिस्तरों पर', 'जंगलजातकम्' आज कहानियां संपूर्णतः है प्रतीकात्मक यथार्थपरक अब दृष्टिगोचर होती हैं। काशीनाथ सिंह की रचनात्मक प्रभावशीलता में उनकी बिम्बात्मक भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होते हुए भी आमतौर पर वे ऐन्द्रिक प्रयोग से बचते दिखाई पड़ते हैं। 'रेहन पर रग्घू' में वे लिखते हैं–"आकाश साफ था। आधा आंगन चांदनी में था, आधा उसकी छाया में। चाँद सीधे रघुनाथ के चेहरे को देख–देख कर मुस्कुरा रहा था। उसके जल्दी खिसक जाने की उम्मीद कर रहे थे लेकिन वह अपनी जगह से हटने का नाम नहीं ले रहा था। वे उसे एकटक देखते रहे और उन्हें अब लगने लगा– जैसे चाँद दर्पण हो और उसमें दिखाई पड़ने वाले धब्बे उन्हीं के चेहरे की झाइयाँ! गांव के छोरे से पार से ही शुरू हो जाते थे ईख और अरहर के खेत जहां से सियारों ने एकसाथ हुआँ–हुआँ शुरू किया।"[25] भाषा के माध्यम से कथाकार के विचार, भाव एवं उसकी दृष्टि के बारे में पता चलता है। बिम्बात्मक भाषा के प्रयोग का उचित तरीका पूरी कथा की संरचना के बारे में सही रूप से प्रसिद्धि दिलाने में सक्षम है।

साठोत्तरी कथाकारों में अग्रणी काशीनाथ सिंह 'काशी का अस्सी' में एक साथ अनेक गूँथे हुए प्रसंगों, अनेक संश्लिष्ट मूल्यों, बोधों तथा अंतर्विरोधों को सूक्ष्मता, सांकेतिकता, व्यंग्यात्मक एवं काशी के अस्सी घाट समेत वहां की सभ्यता एवं संस्कृति से पाठकों को अवगत कराया है। आंचलिक शिल्प–विधान में वातावरण को सघन बनाने के लिए कथ्य के अनुकूल भाषा का विन्यास लेखक के लिए आवश्यक हो जाता है, जिसका काशीनाथ सिंह ने बखूबी निर्वहन किया है– "तो, सबसे पहले इस मुहल्ले का मुख्तसर–सा बायोडाटा–कमर में गमछा, कंधे पर लंगोट और बदन पर जनेऊ–यूनिफॉर्म है अस्सी का!...... 'हर हर महादेव' के साथ 'भोसड़ी के' नारा इसका सार्वजनिक अभिवादन है!... जो मजा बनारस में, न पेरिस में न फारस में'। है इसका।. 'गुरु' यहां की नागरिकता का 'सरनेम' है। ना कोई सिंह, ना कोई पांडे, ना जादो ,ना राम! सब गुरु! जो पैदा भया, वह भी गुरु, जो मरा वह भी गुरु!"[26]

काशीनाथ सिंह ने अपने कथा–साहित्य में भाषा के साथ शिल्प को भी महत्त्वपूर्ण माना है। उन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से खुद को तो परिभाषित किया ही है, साथ ही लोक–चेतना में अपनी आत्म–चेतना का विलय करके वे समाज को भी परिभाषित करने में सफल रहे हैं।

काशीनाथ सिंह की कथा–भाषा की महत्ता बताते हुए आनंद नारायण पांडे लिखते हैं– "भाषा की धुरीहीनता के इस जमाने में काशीनाथ सिंह जैसे रचनाकार का होना हिंदी के लिए बहुत ही सौभाग्य पूर्ण है। नई पीढ़ी के लेखकों से मेरा आग्रह है कि वह हिंदी भाषा की प्रकृति और सौन्दर्य से परिचित होने के लिए, अच्छी हिंदी की पहचान के लिए, हिंदी लिखना सीखने के लिए भी उन्हें अवश्य पढ़ें।"[27] निष्कर्ष हम कह सकते हैं कि काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में भाषा और शिल्प का अत्यंत सुंदर प्रयोग हुआ है आप के कथा साहित्य में प्रयुक्त भाषा बनावटी पन से परे है और सिर्फ प्रयोग सटीक है इस मायने में काशीनाथ सिंह समर्थ कथाकार होने के साथ–साथ अपने समकालीन कथा कारों में अपना स्थान बनाए हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. सिंह, कामेश्वर प्रसाद. कथा शिखर काशीनाथ सिंहय पृष्ठ 362.
2. सिंह, कामेश्वर प्रसाद. कथा शिखर काशीनाथ सिंहय पृष्ठ 350.
3. सिंह, कामेश्वर प्रसाद. कथा शिखर काशीनाथ सिंहय पृष्ठ 342–345.
4. देसाई, योगेश. गरबीली गरीबी के कथाकार काशीनाथ सिंहय पृष्ठ 247.
5. जगताप, रमेश. काशीनाथ सिंह का कथा साहित्यय पृष्ठ 119.
6. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 53.
7. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 38.
8. सिंह, चंपा कुमारी. समकालीन समीक्षा के धरातलय पृष्ठ 223.
9. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 11.
10. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 25.
11. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 28.
12. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 19.
13. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 31.
14. सिंह, काशीनाथ. आछे दिन पाछे गएय पृष्ठ 22.
15. मोहन, संपादक. आशुतोष काशी का अस्सी पाठ पुनरूपाठय पृष्ठ 24.
16. मोहन, संपादक. आशुतोष काशी का अस्सी पाठ पुनरूपाठ य पृष्ठ 45.
17. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 34.
18. सिंह, काशीनाथ. काशी का अस्सीय पृष्ठ 34.
19. सिंह, काशीनाथ. महुआ चरितय पृष्ठ 55.
20. सिंह, काशीनाथ. महुआ चरितय पृष्ठ 318.
21. सिंह, काशीनाथ. आदमी नामाय पृष्ठ 121.
22. सिंह, काशीनाथ. उपसंहारय फ्लैप कवर से.
23. वही, 108.
24. सिंह, काशीनाथ. कहनी उपखानय पृष्ठ 149.
25. सिंह, काशीनाथ. रेहन पर रग्घूय पृष्ठ 55.
26. शर्मा, प्रदीप कुमार. हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधानय पृष्ठ 214.
27. सिंह, कामेश्वर प्रसाद. कथा शिखर काशीनाथ सिंहय पृष्ठ 345.

❑❑❑

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, पिन कोड–492013

मो–9131071726 ईमेल– pritipandey301187@gmail.com

भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य

—जगबीर सिंह

21वीं सदी विज्ञान का युग है। इसमें विश्व में त्वरित गति से परिवर्तन देखो जा रहे हैं। भूमंडलीकरण के औजार बाजार और मीडिया ने ना सिर्फ हिंदी को बल्कि अपनी देहरी तक सीमित अन्य भाषाओं को भी विस्तार देने का काम किया है। हिंदी भाषा ने भी अपने गतिशीलता बनाए रखी है। हिंदी सत्ता की नहीं बल्कि प्रारंभ से ही जनता की भाषा रही है। इसका विकास राजाओं के दरबारों में नहीं बल्कि जनता के ह्रदय में हुआ है।

भाषा विचार विनिमय एवं अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। इसके माध्यम से तत्कालीन समाज की समस्याओं व स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। भारत बहुभाषिक व बहु सांस्कृतिक देश है। इसके संबंध में कहा गया है कि 'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी'। भारत भाषाओं का अजायबघर है। आज हिंदी भाषा आसपास के देशों तक सीमित नहीं रही बल्कि वैश्विक स्तर पर अपना परचम लहरा रही है। हिंदी भाषा मात्र साहित्य और विचार की भाषा का माध्यम न होकर सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की भाषा बन गई है। यह भाषा विदेशों में रह रहे लोगों के प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू–भाग से जुड़े लोगों की स्थिति से अवगत करवाने का कार्य कर रही है। प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन प्रदान की है। प्रवासी साहित्य हिंदी भाषा और भारतीय संस्कारों की परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का कार्य कर रहा है। वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य को अलग प्रकार से न देखकर हिंदी की ही एक शाखा के रूप में देखा जा सकता है। प्रवासी साहित्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य को पुष्पित और पल्लवित कर रहा है। इसलिए प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाय उसे हिंदी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए।

भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य

भाषा शब्द की उत्पत्ति भाष् धातु से हुई है। भाषा का अर्थ है बोलना, कहना, कुछ बताना। वास्तव में लोग व्यवहार में जिस बोलचाल का प्रयोग करते हैं वही भाषा कहलाती है। भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों एवं भावों को एक दूसरे तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार 'जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है उनको समष्टि रूप में भाषा कहते हैं।'[1] मानव शुरुआत में अपने भावों को समझाने के लिए संकेतों का प्रयोग करता था लेकिन धीरे–धीरे मानव सभ्यता के

विकास, शिक्षा और संस्कृति के ज्ञान से भाषा के ये संकेत बदलते गए। भाषा के माध्यम से ही समृद्ध समाज का निर्माण संभव है। इसके माध्यम से ही तत्कालीन समाज की समस्याओं व स्थिति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी भाषा अपने समाज और संस्कृति की पहचान होती है। अपनी भाषा के बिना कोई भी देश अपने सहज अस्तित्व को खो सकता है। भाषा के माध्यम से ही देश में जीवंत प्राण फुंके जा सकते हैं। भाषा जोड़ती है संस्कृतियों को, देश को, युगों को।

भारत में भाषिक विविधता

भारत एक बहुआयामी, बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषी देश है। यहां के बारे में एक कहावत प्रसिद्ध है ,'कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी'[2] इसलिए भारत को भाषाओं का अजायबघर कहा जाता है। भाषिक संरचना की दृष्टि से देखें तो प्रत्येक प्रांत की अपनी भाषा या बोली है जैसे पंजाबी, हरियाणवी, तमिल ,तेलुगू, कन्नड़, मराठी आदि। भाषिक विभिनता के साथ–साथ खानपान, पहनावा संस्कृति, भूगोल आदि के रूप में विभिन्नताएं हमारे देश में प्रचुर मात्रा में मिलती है। विभिनता में एकता हमारे राष्ट्र की प्रमुख धरोहर है।

एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 1600 मातृ भाषाएं प्रचलन में हैं, जिनमें 121 भाषाएं ऐसी हैं जिन्हें भारत में 10000 या उससे ज्यादा लोग बोलते हैं तथा उनमें से 58 भाषाओं को तो स्कूलों में पढ़ाया जाता है। भाषाओं के इसी सागर में से भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 मुख्य बोलियों को भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। आज हिंदी भाषा राजभाषा के तौर पर अपना निर्वहन करते हुए संपूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाने की ओर अग्रसर है।

21वीं सदी विज्ञान का युग है। इसमें विश्व में त्वरित गति से परिवर्तन देखे जा रहे हैं। भूमंडलीकरण के औजार बाजार और मीडिया ने ना सिर्फ हिंदी को बल्कि अपनी देहरी तक सीमित अन्य भाषाओं को भी विस्तार देने का काम किया है। हिंदी भाषा ने भी अपने गतिशीलता बनाए रखी है। हिंदी सत्ता की नहीं बल्कि प्रारंभ से ही जनता की भाषा रही है। इसका विकास राजाओं के दरबारों में नहीं बल्कि जनता के ह्रदय में हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी संपूर्ण भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य तथा आजादी की लड़ाई को धार देने में अहम भूमिका हिंदी भाषा की रही है। हिंदी भाषा मात्र भाषा या संवाद का माध्यम नहीं बल्कि हम भारतीयों की पहचान है, हमारा अस्तित्व और शान है। हिंदी भाषा आज साहित्य और विचार की भाषा मात्र का माध्यम न होकर सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की भाषा है। हिंदी भाषा आज केवल भारत या उसके कुछ पड़ोसी देशों तक सीमित नहीं रही है बल्कि इसके फलक ने वैश्विक विस्तार प्राप्त किया है।

हिंदी भाषा व प्रवासी साहित्य

शब्दकोश के अनुसार प्रवासी शब्द का अर्थ–

संस्कृत की वस् धातु से शब्द बना है वास जिसका अर्थ है कहीं पर रहना, निवास करना। वास में 'प्र' उपसर्ग लगने से बना प्रवास शब्द का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना, प्रदेश

में रहना। किसी दूसरे देश की धरती पर निवास करने वाला व्यक्ति प्रवासी कहलाता है। प्रवासी साहित्य का उद्‌भव और विकास इंडियन डायसपोरा से हुआ है जिसका अर्थ है वह बिखरी हुई आबादी विशेषकर अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्रों में जा बसी है। वास्तव में अपने वतन से दूर रहकर जो लेखन कार्य किया जाता है उसे प्रवासी साहित्य कह सकते हैं।

परिभाषाः–

डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार, 'प्रवासी साहित्य' ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।'[3]

राजेंद्र यादव के अनुसार, 'विदेशों में जो लोग साहित्य की रचना कर रहे हैं वह हमेशा दोहरी पहचान में बंधे रहते हैं, जो न तो यहां की और न वहां की जिंदगी में हस्तक्षेप कर पाते हैं।'

प्रवासी साहित्य के मूल रूप से दो आधार हैं–

प्रथम, गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों की दूसरी पीढ़ी का लेखन है जो अपने पूर्वजों की पीड़ा को भुला नहीं पाए और उस दर्द को कहानी, उपन्यास और कविता के माध्यम से व्यक्त किया।

दूसरा – उन भारतीय लोगों का है जो जीविकोपार्जन व सुख सुविधा की चाह में विदेशों में तो बस गए लेकिन अपनी भाषा, संस्कृति और समाज की संवेदना को जीवित रखने के लिए लेखन कार्य शुरू किया।

हिंदी भाषा : प्रवासी साहित्य का विस्तार

प्रवासी साहित्य भारत से अपनी संस्कृति, भाषा और समाज से कटकर जीविकोपार्जन के लिए विदेशों में संघर्ष करते रहे भारतीयों की मनोदशा और आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करता है। इसका अपना एक वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, परिपक्व जीवन दृष्टि और परिवेश में दिखाई पड़ता है। पराए देशों में पराए होने की अनुभूति और उस अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास, नॉस्टैल्जिया (घर की याद या अतीत के परिवेश में विचरना), सफलता और असफलताओं को प्रवासी साहित्य का आधार माना जा सकता है। इनके साहित्य में प्रेम, राग–विराग जैसी संवेदनाओ की अभिव्यक्ति उसी प्रकार से दिखाई देती है जैसी सामान्य भारतीय साहित्य में। इनके साहित्य में जिन देशों में यह रह रहे हैं उनकी माटी की गंध वहां की जीवन शैली के साथ साथ दो संस्कृतियों के संकरीकरण एवं आत्मसातीकरण, सांस्कृतिक अलगाव, सामाजिक विच्छेदन, अतीत की स्मृतियों और उत्तर औपनिवेशिक गाथा का सम्मिश्रण दिखाई देता है। अलग प्रकार की बेचैनी और अकुलाहट के साथ अलग प्रकार की संवेदना इनके साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। भले ही प्रवास की गतिविधियों एवं संस्कृतियों ने प्रभावित किया हो लेकिन इनका हृदय भारत से उसी प्रकार जुड़ा रहा जिस प्रकार से श्री 420 फिल्म में राज कपूर जी कहते हैं –

मेरा जूता है जापानी,
यह पतलून इंगलिस्तानी,

सर पे लाल टोपी रूसी,

फिर भी दिल है हिंदुस्तानी।

हिंदी प्रवासी साहित्य व उसके साहित्यकारों का योगदान

अभिमन्यु अनत

आधुनिक काल में मॉरीशस के अभिमन्यु अनंत ने साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनके 32 उपन्यास, 7 कहानी संग्रह तथा अनेक धार्मिक, आर्थिक लेखों का व्यापक प्रकाशन मिलता है। इनके 'लाल पसीना' उपन्यास ने काफी प्रशंसा पाई है। 'लाल पसीना' जैसे उपन्यासों में इन्होंने मारीशस में भारतीयों के जीवन का सजीव चित्रण किया है। इनके अपने कविता संग्रह 'कैक्टस के दांत' में मजदूरों की पीड़ा, उनकी दुर्गति, उनका शोषण, अत्याचार व सामाजिक विषमताओं का चित्रण किया है। इन्हें मॉरीशस का प्रेमचंद कहा जाता है।

नरोत्तम पांडेय

90 के दशक में बिहार के बक्सर जिले से इंग्लैंड (यूके) में जाकर बसने वाले नरोत्तम पांडेय के उपन्यास 'जो नहीं लौटे' में गिरमिटिया बन कर गए मजदूरों की व्यथा पीड़ा को दिखाया गया है। वहीं 'बाबा की धरती' में बिहार प्रदेश की आंचलिकता के दर्शन देखने को मिलते हैं।

सुधा ओम ढींगरा

प्रवासी साहित्यकारों में सुधा ओम ढींगरा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। सुधा जी ने 'कौन सी जमीन अपनी' कहानी संग्रह से साहित्य के क्षेत्र में जगह बनाई। अमेरिका में रहने वाले मंजीत सिंह अपनी पत्नी मनविंदर के साथ नवांशहर पंजाब में रहने वाले अपने भाई के पास बार–बार पैसे भेजता है जो उस पैसे से जमीन खरीद लेता है। जब मनजीत सिंह अमेरिका से आकर अपने हक की बात करता है तो रात में ही उसका भाई उसे मरवाने की योजना बनाता है। मंजीत सिंह आने वाले खतरे को भांप कर वहां से चल देता है चलते वक्त अपनी पत्नी से पूछता है कि 'जान नहीं पा रहा हूं कि कौन सी जमीन अपनी है'।[4] 'टॉरनेडो' कहानी भारत की याद और उसकी खुशबू की कहानी है। जबकि 'क्षितिज से परे' कहानी में एक प्रताड़ित स्त्री के विद्रोह को दर्शाया गया है। उनकी एक कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' को पढ़ते हुए पाठक को सहसा ही प्रेमचंद के घीसू और माधव की याद आने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। उनकी कहानियों की विशेषताओं में आदर्श का संसार है परंतु मूल रूप से वह संसार यथार्थ की जमीन पर खड़ा है।

सुषम बेदी

पंजाब के फिरोजपुर शहर में जन्मी न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाती हैं। इनके 'हवन' तथा 'मैंने नाता तोड़ा' प्रमुख उपन्यास हैं। इनका पहला उपन्यास हवन 1979 साहित्यिक पत्रिका 'गंगा' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। जिसका बाद में अंग्रेजी तथा उर्दू में अनुवाद हुआ। इसमें विदेशी सभ्यता की भौतिक चमक–दमक से लेकर विदेश जाने वाले व्यक्ति वहां पहुंचकर उल्लास और आनंद को प्राप्त करने के प्रयास में अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं उनकी मन स्थिति कैसी है, इसका सटीक चित्रण 'हवन' में हुआ है।[5] 'मैंने नाता तोड़ा'

उन नाते रिश्तों के विडंबना पूर्ण सच को उजागर करता है जो चाचा, मामा होकर भी घर में ही स्त्री देह का शोषण करते हैं। 'लौटना' उपन्यास में विदेशी शिक्षा को सदैव ऊंचा तथा भारतीय शिक्षा के स्तर को निम्न मानना जैसी समस्या का वर्णन किया गया है।

उषा राजे सक्सेना

इंग्लैंड में प्रवासी भारतीय के रूप में साहित्य रचना में लगी हुई हैं। ये यूके में हिंदी की त्रैमासिक पत्रिका पुरवाई की सह संपादिका है। इनका हिंदी साहित्य मूल रूप से भारतीय संस्कृति, सभ्यता व भाषा के प्रति गहन लगाव के साथ प्रवासी जीवन के अनेक प्रकार के अनुभवों ने भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। कहानी संग्रह 'प्रवास' में कुल 10 कहानियां हैं। इनकी कहानी 'वह रात' बेहद चर्चित कहानी है। एक मां और उसके छोटे बच्चों के साथ कल्याणकारी राज्य की भूमिका पर केंद्रित इस कहानी की मर्मस्पर्शी संवेदना झकझोर देती है।[6]

जोगिंदर सिंह कंवल

ये फिजी के प्रसिद्ध कथाकार हैं। इन्होंने सदैव अपनी रचनाओं में फिजी के जनजीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है। इनकी साहित्यिक यात्रा 'मेरा देश मेरे लोग' से हुई थी। श्री कंवल ने सवेरा, करवट, धरती मेरी माता आदि कई उपन्यासों की रचना की। इनके उपन्यासों में भारतीय लेखक मुंशी प्रेमचंद के समान अत्याचार, शोषण तथा अपने जीवन के अनुभवों को उकेरा है।

जकिया जुबैरी

लखनऊ में जन्मी जकिया जुबैरी ब्रिटेन की प्रवासी हिंदी लेखिका है। ये यूके की पुरवाई पत्रिका की संरक्षक तथा भारत में प्रवासी सम्मेलन के आयोजन के लिए जानी जाती हैं। जकिया जी का पहला कहानी संग्रह 'सांकल' प्रकाशित हुआ। इसमें स्त्री मन की कशमकश को चित्रित किया गया है। जुबैरी का अपनी कहानियों के माध्यम से जिंदगी की परेशानियों को सुलझाने की तरफ गहरा रुझान है। 'बाबुल मोरा' तथा 'मारिया' जैसी कहानियां उन्होंने जिंदगी के यथार्थ से उठाई हैं। जिनमें व्यथा से ज्यादा घृणा, चाहत से ज्यादा घिन, मजबूरी से ज्यादा भटकाव नजर आता है। 'मेरे हिस्से की धूप' कहानी हमारी और आपकी परखी हुई सी लगती है।

नीना पाल

हरियाणा के अंबाला शहर में जन्मी नीना पाल ने तीन उपन्यास रिहाई, तलाश और कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर लिखे हैं। 'अठखेलियां' तथा 'शराफत विरासत में नहीं मिलती' कहानी संग्रह तथा 'वैश्विक कहानियों का संपादन' किया। कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर उपन्यास में इंग्लैंड के लेस्टर शहर के बनने की कहानी के साथ–साथ गुजरातियों के यहां जमने और संघर्ष करने को दिखाया गया है। इस उपन्यास में गुजराती परिवार की तीन पीढ़ियों का संघर्ष दिखाया है जो गुजरात से युगांडा और युगांडा से लेस्टर पहुंचे हैं।[7]

प्रोफेसर हरिशंकर आदेश

प्रोफेसर हरिशंकर आदेश प्रवासी हिंदी लेखक, कवि एवं संगीतकार हैं। आदेश जी ने अनेक महाकाव्यों की रचना की। उनकी लगभग 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

उनके प्रमुख महाकाव्य शंकुतला, देवी सावित्री, महारानी दमयंती, रघुवंश शिरोमणि तथा ललित गीत रामायण हैं। खंडकाव्य जिनकी संख्या लगभग 30 है में महाभारत कथा, देवी उपाख्यान, शवदहन स्थान, जन गीता, पिछली सुधियां आदि प्रमुख हैं। प्रोफेसर आदेश त्रिनिडाड में भारत के सांस्कृतिक दूत नियुक्त हुए थे, उसके बाद वह वहीं के होकर रह गए। उन्होंने कनाडा, अमेरिका व त्रिनिडाड के मिनिस्टर ऑफ रिलीजन, भारतीय विद्या संस्थान के महानिदेशक, श्री आदेश आश्रम त्रिनिडाड के कुलपति, ज्योति एवं जीवन ज्योति त्रैमासिक पत्रिका के प्रधान संपादक तथा वर्ष विवेक एवं अंतरिक्ष समीक्षा के संपादक जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। अंतर्राष्ट्रीय हिंदू समाज अमेरिका तथा विद्या मंदिर कनाडा के आध्यात्मिक गुरु, स्वतंत्र साहित्यकार के रूप में भी उन्होने समाज को सेवाएं अर्पित की।

वर्तमान में देश–विदेश में प्रवासी हिंदी साहित्य

जिस प्रकार तकनीक और सभ्यता के प्रचार प्रसार की गति में तेजी आ रही है उसी प्रकार प्रवासी साहित्य के लेखन में भी गति आ रही है। इन प्रमुख लेखकों के अलावा दक्षिण अफ्रीका में किशुन बिहारी, तुलसीराम पांडे, भावना सिंह, पुर्तगाल में शिव कुमार सिंह, जर्मनी में राम प्रसाद भट्ट, मॉरीशस में बृजेंद्र भगत मधुकर, रामखिलावन, डॉ. वीरसेन जग्गा सिंह, न्यूयॉर्क के डॉ. विजय कुमार मेहता, फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय की डॉक्टर निकोल बसवी आदि साहित्यकार हिंदी के समर्थन में योगदान दे रहे हैं । इसके अतिरिक्त यूके हिंदी समिति, कृति, कथा, गीतांजलि, भारतीय भाषा संगम (मार्क), हिंदी समिति मेनचेस्टर, विद्या मंदिर टोरंटो, अंतर्राष्ट्रीय भारतीय विद्या संस्थान और विश्व हिंदी संस्थान जैसी संस्था हिंदी लेखन, शिक्षण और प्रचार–प्रसार को काफी प्रोत्साहन दे रही हैं।

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य निश्चित रूप से कथानक, शैली और शिल्प की दृष्टि से भिन्न और विशिष्ट पहचान वाला है। प्रवासी हिंदी कविता भाव, विचार और अभिव्यक्ति की दृष्टि से समृद्धतम आधार लिए हुए है। विषय वैविध्य की दृष्टि से उसका फलक व्यापक और अभिव्यंजना कौशल में उसकी प्रस्तुति बेजोड़ है।[8] प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कारों का आत्मसातीकरण मानवीय संवेदना, मूल्यों की खोज तथा अस्मिता के प्रति जागरूकता का संयोग कदम–कदम पर दिखाई देता है। प्रवासी साहित्य गणना की दृष्टि से ही नहीं बल्कि गुणवत्ता की दृष्टि से भी बेहतर स्थिति में कहा जा सकता है। वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य तो साहित्य की एक शाखा है और यदि हम इस शाखा को काट देंगे तो हिंदी की जड़े कैसे मजबूत हो सकेंगी। हिंदी भाषा और साहित्य की जड़ें चाहे स्वदेश में हो या प्रदेश में वह मजबूत तभी होंगी जब उसकी शाखाएं फूलवती और फलवती होंगी। वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट संसार का एक अंग है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा की साहित्यिक दुनिया में प्रवासी साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिंदी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा जो चाहे छोटा ही था परंतु उसने अलग साहित्य संसार की रचना की जो पूरे विश्व में निरंतर फैलता

गया। साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रवासी भारतीयों को जाता है। 'वसुधैव कुटुंबकम' जो हमारी संस्कृति का मूल भाव है वह विदेशियों को बहुत आकर्षित करता है। हिंदी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है जो उसकी संवेदना, जीवन दृष्टि, सरोकार तथा परिवेश में परिलक्षित होता है। प्रवासी हिंदी साहित्य आज 'दूसरी परंपरा' के तर्ज पर दूसरा राजपथ तैयार कर रहा है और सशक्त कदमों से आगे बढ़ रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य के विशाल वटवृक्ष की समृद्ध और सशक्त शाखाओं में से एक है जो दिन प्रतिदिन अपनी रचना धर्मिता से हिंदी के साहित्य को सघन बनाने के साथ–साथ पाठक वर्ग को प्रवास की संस्कृति, संस्कार एवं उस भू–भाग से जुड़े लोगों की स्थिति से अवगत करवाने का कार्य कर रहा है। यह हिंदी भाषा और भारतीय संस्कारों की परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ सुरेंद्र शर्मा, राजभाषा हिंदी– कल, आज और कल, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) पृष्ठ संख्या–14
2. रघुवीर सिंह मथाना व बाबूराम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास ,लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन रोहतक, प्रथम संस्करण– 2004, पृष्ठ संख्या 5
3. डॉ.वर्षा गुप्ता ,हिंदी का प्रवासी साहित्य ,लेख– मई 23 ,2021
4. कौन सी जमीन अपनी, डॉ सुधा ओम ढींगरा ,भावना प्रकाशन, 109ए पटपड़गंज, दिल्ली– 110091 5.प्रवासी लेखन, नई जमीन नया आसमान– वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं. 2018
5. हवन, सुषमा बेदी, अभिरुचि प्रकाशन ,114 करण गली विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली110025
6. उषा राजे सक्सेना, प्रवासी हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी, वर्तमान साहित्य, कुंवर पाल सिंह, नमिता सिंह (संपादक) जनवरी–फरवरी– 2006
7. कुछ गांव –गांव कुछ शहर– शहर, नीना पॉल, यश पब्लिकेशन 11848 पंचशील गार्डन न्यू शाहदरा, दिल्ली– 110032
8. डॉ सुधा जितेंद्र, प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रमुख चिंतन बिंदु, प्रवासी साहित्य और साहित्यकार, पृष्ठ 26
9. प्रवासी साहित्य संवेदनाओं से भरा, दैनिक जागरण 28 फरवरी 2012विभिन्न पत्र पत्रिकाएं
10. ठन्ना, स्वर्ण लता ,हिंदी के प्रवासी साहित्य की परंपरा, जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, वर्ष 22, अंक–2, दिसंबर 2016, पृष्ठ संख्या 121
11. अरोड़ा मधु ,प्रवासी साहित्य और चुनौतियां ,प्रवासी संसार, वर्ष 10, अंक दो पृष्ठ 12 (जनवरी–मार्च 2014)
12. कमल किशोर गोयंका प्रवासी साहित्य गवेषणा–, अंक 103, जुलाई – सितंबर –2014, पृष्ठ 11

❒❒❒

तुलसी का कबित विवेक

—डॉ. मलखान सिंह

जिस काव्य के केंद्र में राम का चरित्र हो, वह काव्य संसार का कल्याण करने वाला ही होगा— राम कथा जग मंगल करनी। जो कविता चरित्र निर्माण में सहायक नहीं है, तुलसी उसे उत्तम काव्य नहीं मानते। कोई कितना अच्छा और बड़ा कवि क्यों न हो, उसकी अनूठी रचना तब तक अच्छी नहीं मानी जा सकती जब तक कि उसमे राम जैसा चरित्र न हो—भणिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ।

विषम स्थितियों में सकारात्मक मनोवृत्तियों के साथ भारतीय जीवन दृष्टि को रूपायित, व्याख्यायित और परिष्कृत करने वाले कवि तुलसी का साहित्य कटुता, निराशा और संकीर्णता से मुक्त करने वाला साहित्य है। तुलसी के अनुसार विचार और उच्चार के सम्यक समन्वय की अभिव्यंजना ही काव्य है। वाणी और विनायक ही लोकमंगलकारी काव्य के कर्त्ता हैं अर्थात वाक् शक्ति की प्रांजलता और उसमें निहित विचारों की उपस्थिति ही कविता का मानक है।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ।

रामचरितमानस के मंगलाचरण का यह प्रथम श्लोक भारतीय काव्य शास्त्र की परंपरा–"शब्दार्थौ सहितौ काव्यं " के अनुरूप है। शब्द कविता के मर्म उदघाटन में सहायक मात्र होते हैं। तुलसी के यहाँ शब्द सौंदर्य और वस्तु सौंदर्य की अन्तःसंबद्धता ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। उनके अनुसार शब्द और अर्थ उसी प्रकार अभिन्न हैं जैसे जल और जल की लहर– गिरा अरथ जल बिचि सम कहियत भिन्न न भिन्न। भारी भरकम शब्दों के बोझ तले दबी, सिसकती, कराहती कविता उन्हें स्वीकार नहीं है। उनके अनुसार विद्वान लोग उसी कविता का आदर करते हैं, जो सरल हो, जिसमें निर्मल चरित्र का वर्णन हो तथा जिसे सुनकर शत्रु भी स्वाभाविक वैर को भूलकर सराहना करने लगे—सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान। सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान/अपने समय के समस्त प्रश्नों से टकराने वाली तथा अपने विरोधियों को भी सहमत बना लेने वाली रचना को तुलसी उत्तम काव्य मानते हैं। तुलसी का साहित्य तीनों प्रकार के दोषों (दैहिक, दैविक, भौतिक) दुखों, दरिद्रताओं, कुचालों और पापों से बचाने वाला साहित्य है– त्रिविध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन/ तुलसी के अनुसार जो रचना सबको आनंद से भर दे तथा विद्वानों को सुकून प्रदान करे, वही मानक कविता है –बुध विश्राम सकल जन रंजिनि। आनंदविधायनी

कविता को तुलसी लोकमंगल की कविता कहते हैं। उनके अनुसार कविता का मुख्य प्रयोजन लोकमंगल है। तुलसी की कविता, कविता के लिए नहीं है, लोक कल्याण के लिए है – मंगल करनी कलिमल हरनी तुलसी कथा रघुनाथ की। ऐसी कविता विवेक रूपी अग्नि को प्रकट करने वाली लकड़ी अरणि के समान होती है –पुनि बिबेक पावक कहुं अरनि। विवेकवान समाज ही सशक्त राष्ट्र के निर्माण का आधार होता है। विभेदपरक मानसिकता और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के स्थान पर सर्वहितकारी रामराज की स्थापना, ज्ञानवान समाज के आधार पर ही की जा सकती है। इसलिए तुलसी भारतीय ज्ञान परम्परा के उज्ज्वल पक्ष को कविता का आधार बनाते हैं तथा सामजिक, धार्मिक और राजनैतिक विकृतियों का विरोध करते हैं । तुलसी संसार के समस्त दुखों का कारण अज्ञानता को मानते हैं । तुलसी का 'मानस' आनंद का विधायी तभी बनता है, जब उसके प्रत्येक सोपान को ज्ञान के नेत्रों से देखा जाये। आँखों में पट्टी चढ़ाकर या अंधभक्त बनकर तुलसी की रचना का आनंद नहीं लिया जा सकता –सप्त प्रबंध सुभग सोपाना, ज्ञान नयन निरखत मन माना अर्थात सात कांड ही इस मानस सरोवर की सात सुंदर सीढ़ियाँ हैं, जिनको ज्ञान रूपी नेत्रों से देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है। तुलसी के काव्य का आस्वाद वही ले सकता है जिसका ह्रदय विशाल हो और बुद्धि विमल हो – ह्रदय सिंधु मति सीप समाना.

तुलसी अपनी कविता द्वारा पाठकों को संस्कारित करने वाले रचनाकार थे। वे संसार की अधिकांश समस्याओं– अंतर्विरोधों की वजह कुदृष्टि को मानते हैं। देखने का नजरिया जितना उदार, समग्र और समावेशी होगा, मानवतावादी समाज उतना ही प्रगतिशील होगा। अज्ञानता का अंधकार चाहे जितना घना हो अगर दृष्टि सही है, तार्किक और संवेदनशील है, तो समस्त दुखों और दोषों को दूर किया जा सकता है। आज सूचना विस्फोट का युग है। जानकारी और सूचनाओं के जंगल में भटकने का खतरा बढ़ता जा रहा है। आलोचनात्मक विवेक के विकास की राह में अनेक बाधाएँ और चुनौतियाँ हैं। दिमाग का विस्तार तो खूब हुआ परंतु ह्रदय की सरसता दिनों दिन शुष्क होती जा रही है। मन की आँखों से देखना यानी प्रेम से– अपनत्व से देखना है। तुलसी उसी रचना को श्रेष्ठ मानते हैं जो ह्रदय की आँखें खोल दे –उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।। इसलिए तुलसी ह्रदय की आँखें खोलने और दृष्टि दोष को दूर करने वाले कवि हैं। उनके अनुसार उत्तम रचना वही हो सकती है जो नेत्र दोषों को दूर करने वाली नयनामृत के समान हो –नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

तुलसी समदर्शी, उदार ,सहिष्णु और संवेदनशील समाज के निर्माण के लिए प्रेम, शील और ज्ञान पर बल देते हैं। उनके अनुसार ज्ञान से अंहकार और प्रेम से द्वेष को दूर किया जा सकता है। अहमन्यता से मुक्त होकर जब कोई रचनाकार अपनी ग्रहण क्षमता और रचनात्मक क्षमता में वृद्धि करता है, तो वह कालजयी रचनाकार बन जाता है। तुलसी बार–बार अपने को कवित विवेक से शून्य कहकर –कबित बिबेक एक नहिं मोरें ' अपनी रचनाधर्मिता को पांडित्य के अहं से और शास्त्र के दंभ से मुक्त करते हैं तथा मनुष्यता की विस्तृत भूमि 'लोक' को अपनी रचना का आधार बनाते हैं –भाषा भणिति भोरि मति मोरी। उनके अनुसार चिंतन, मनन, अध्ययन और सत्संगति से प्राप्त विवेक, प्रेम के बिना उसी प्रकार असुंदर है जैसे प्राण के बिना शरीर। इसलिए तुलसी के राम को केवल प्रेम प्रिय है– रामहिं केवल प्रेमु पियारा। मनीषी विद्वान मानते हैं कि परहित और त्याग प्रेम के बिना संभव नहीं है। इसलिए भक्तिकाल के सभी कवि अपनी कविता का केंद्रीय तत्त्व प्रेम को बनाते हैं।

जीवन की समस्त चुनौतियों का समाधान करने के लिए विवेकवान, चरित्रवान, कर्मठ, साहसी, समदर्शी और परहितकारी मनुष्य का निर्माण करने वाली कविता को तुलसी उत्तम काव्य मानते हैं। इसलिए वे लोकमंगल के लिए चरित्र निर्माण पर सर्वाधिक बल देते हैं और चरित्र निर्माण का मानक राम को बनाते हैं। राम के गुण समूह कलयुग के कुमार्ग, कुतर्क, कुचाल, कपट, दंभ और पाखंड को जलाने के लिए वैसे ही हैं जैसे ईंधन के लिए प्रचंड अग्नि।

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपटदंभ पाषंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड।

तुलसी के काव्य का मूल विषय 'राम चरित' है। राम का चरित्र उनके गुण, व्यवहार और स्वभाव के आधार पर निर्मित होता है 'राम रूप गुन शील सुभाऊ'। एक ऐसा प्रेरक चरित्र जो न्याय, समानता, सम्मान और कल्याण के लिए अपने युग की विसंगतियों से टकराता है तथा वीरता, धीरता और दृढ़ता के साथ जीवन मूल्यों को अपने आचरण में उतारता है। वह उच्च आदर्शों का व्यावहारिक पाठ बन जाता है। इसलिए श्री रघुनाथ जी के निर्मल चरित्र का वर्णन चारों फलों (धर्म अर्थ काम मोक्ष) को देने वाला है –बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि। उस चरित्र पर रीझ कर तुलसी गर्व से कहते हैं कि उनकी कविता अनगढ़, भदेस क्यों न हो किन्तु उसका विषय श्रेष्ठ है–भणिति भदेस बस्तु भलि बरनी। तुलसी कहते हैं कि हे ! राम आपके चरित्र को देख–सुनकर मूर्ख लोग मोह को प्राप्त होंगे और ज्ञानीजन सुखी होगें –राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहि बुध होहिं सुखारे। जो गुणों को आपका और दोषों को अपना समझता हैं दृगुन तुम्हार समुझइ निज दोसा, जो जाति– पांति, धन, धर्म, परिवार, घर के अहं से मुक्त हैं, जिनकी दृष्टि में स्वर्ग, नरक और मोक्ष सब समान हैं, जो कर्म से, वचन से और मन से केवल रामके गुणों के अनुरागी हैं, जो दूसरे की संपत्ति देखकर हर्षित होते हैं और दूसरे की विपत्ति देखकर दुखी होते हैं, जो अवगुणों को छोड़ कर सबके गुणों को ग्रहण करते हैं, राम उसके हृदय में निवास करते हैं – राम करहु तेहि कें उर डेरा। इस प्रकार तुलसी राम नाम मनिदीप द्वारा भीतर और बाहर उजाला करने वाले कवि थे।

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार
तुलसी भीतर बाहेर हु जौं चाहसि उजिआर

जिस काव्य के केंद्र में राम का चरित्र हो, वह काव्य संसार का कल्याण करने वाला ही होगा– राम कथा जग मंगल करनी। जो कविता चरित्र निर्माण में सहायक नहीं है, तुलसी उसे उत्तम काव्य नहीं मानते। कोई कितना अच्छा और बड़ा कवि क्यों न हो, उसकी अनूठी रचना तब तक अच्छी नहीं मानी जा सकती जब तक कि उसमे राम जैसा चरित्र न हो–भणिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ। "तुलसी के काव्य की मूल वस्तु है– लोकमंगलकारी आदर्शों की उपलब्धि। रामचरित मानस इन्हीं आदर्शों की प्रतिष्ठा का परिणाम है। यह आदर्श प्रतिष्ठा ही तुलसी के काव्य का मर्म है। काव्य के तथाकथित उपादान इसकी सौंदर्य वृद्धि में सहायक मात्र हैं। "सुकवि की कविता उत्पन्न कहीं और होती है, शोभा अन्यत्र कहीं पाती है। अर्थात कवि की वाणी से उत्पन्न हुई कविता वहाँ शोभा पाती है जहाँ उसमें कथित आदर्श का ग्रहण और अनुसरण होता है – उपजहिं अनत अनत छवि लहहिं। इस प्रकार तुलसी उच्च मूल्यों– आदर्शों को मनुष्य के आचरण से जोड़ देने वाले कवि हैं, जिससे उनकी रचना 'मंगल भवन अमंगल हारी' करने वाली बन जाती है।

तुलसी की कविता न तो दरबारी रस देने वाली कविता है– जदपि कबित रस एकउ नाहीं और न तो चमत्कृत करने वाली या पांडित्य प्रदर्शन करने वाली कविता है– कबि न होऊँ नहिं बचन प्रवीनू। जब कवि चंद सिक्कों के लालच में बिक जाते हैं तथा झूठ, पाखंड और राजप्रशस्ति के प्रसार का माध्यम बन जाते हैं तब ऐसे रचनाकारों के रचनाकर्म पर सरस्वती जी भी सिर धुन कर पछताने लगती हैं –कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लागि पछिताना / तुलसी वर्ण–वर्ण बेचने वाले सुवर्ण लोभी कवियों के काव्य विवेक को दूर से नमस्कार करते हैं। तुलसी ईमान के साथ जीने मरने वाले कवि थे। यही कारण है कि वे दाने–दाने को तरसते रहे परन्तु लेखनी को सत्ता की शक्ति के सामने झुकने नहीं दिया– तुलसी अब का होइहैं नर के मनसबदार। कुछ पाने का लोभ और कुछ होने का गुरूर व्यक्ति को अंधा बना देता है। विषम विकराल स्थितियों में जीने वाला कवि अपने ईमान से समझौता नहीं करता है। इसलिए तुलसी का रचना कर्म मन को संतोष देने वाला, लोकभाषा में संवाद और समन्वय स्थापित करने वाला है– भाषा बद्ध करब मैं सोई, मोरे मन प्रबोध जेहिं होई। शास्त्रीय भाषा से वैयक्तिक पांडित्य या अहं भले ही तुष्ट होता हो किन्तु जब उद्देश्य लोक कल्याण का हो तो रचना के समस्त उपादानों का लोकमय हो जाना स्वाभाविक है। इसलिए तुलसी की कविता में सुख–दुख, हार–जीत, स्वप्न–संघर्ष, आशा–निराशा के अनेक चित्र पाठकों को सहजता से बांध लेते हैं। ये चित्र लोक के सहज चित्र हैं, कहीं से आरोपित या चिपकाए हुये नहीं।

कोई भी रचनाकर अपने युग के घात–प्रतिघात से निर्मित होता है। उसके युग का सच क्या है? उस सच को देखने की दृष्टि कितनी पैनी और वैज्ञानिक है? युगीन विसंगतियों और अंतर्विरोध ों को पकड़ने में कवि कहाँ तक सक्षम है? उसके रचनात्मक फलक में परिवर्तनकामी चेतना के साथ नवीनता और निरंतरता की स्थिति क्या है? क्या रचनाकार अपने युग के तीखे सवालों से टकराता है ? क्या उसकी रचना अपने पाठकों से संवाद करती है ? इसके साथ–साथ यह देखना और भी जरूरी है कि रचना अपने पाठकों के मस्तिष्क में कितनी नवीन संभावनाओं को जन्म दे पाती है ? कवि के आस–पास आमूलक्रांति की भावना भले न हो परंतु जो नहीं है उसके बीज बो देने वाला कवि ही कालजयी होता है। तुलसी परिवर्तन के बीज बोने वाले कवि हैं। परिवर्तनशीलता और निरंतरता ही तुलसी की रचनाधर्मिता को विशिष्ट बनाती है। असाधारण को साधारण करना, शास्त्र को लोक में और लोक को शास्त्र में उतार देना तुलसी की अप्रतिम रचना शैली का प्रमाण है। भारतीय जीवन मूल्यों को न केवल जिंदा करना अपितु उन्हें निरंतर बनाना ही तुलसी का असाधारण प्रदेय है। नाथों–सिद्धों से कबीर तक जाति–पांति, भेदभाव और धार्मिक आडंबरों का विरोध होता रहा है। लेकिन तुलसी के काव्य में जाति आधारित अपमान की गहरी पीड़ा एक नए विमर्श को जन्म देती है। तुलसी ने जाति के आधार पर किए गए अपमान को संसार का सबसे बड़ा दुख माना है–जद्यपि जग दारुण दुख नाना। सबसे कठिन जाति अपमाना। इसी प्रकार पराधीनता के विरुद्ध महामंत्र फूँकने वाले वे मध्यकाल के प्रथम कवि थे– कत विधि सृजि नारि जग माही, पराधीन सपनेहु सुख नाही। चाहे जाति के आधार पर अपमानित वर्ग की पीड़ा हो या लिंग के आधार पर स्त्री पराधीनता के सवाल हों या अन्यायी राज व्यवस्था का प्रतिकार हो या कर्मवाद–भाग्यवाद के द्वंद्व के बीच कर्मवाद की प्रतिष्ठा का सवाल हो– सुभ अरु असुभ करम अनुहारी, तुलसी प्रत्येक स्थिति में अनुभूत सत्य और सद के प्रति अपनी निष्ठा

व्यक्त करते हैं। वे अपनी रचनाओं में समाजैतिहासिक यथार्थ का चित्रण करते हैं। तुलसी अपने समय के दरिद्रता रूपी रावण को देखकर हा–हाकार करने वाले कवि थे, न कि आपदा में लाभ का अवसर तलाशने वाले कवि थे – दारिद दसानन देखि तुलसी ह हा करी। इस प्रकार तुलसी अपने युग का भोगा हुआ यथार्थ रचते हैं। दुख, दुर्भिक्ष, दरिद्रता, दुर्वृत्ति तथा कुशासन के दौर में जब चारों तरफ कुपंथ, कुतर्क, कपट, कुचाल, दंभ तथा पाखंड का बोलबाला था तब तुलसी की लेखनी कभी डगमगाई नहीं। एक ऐसे समय में तुलसी डटकर खड़े रहे जब दंभियों ने अनेक पंथ बना लिए थे तथा गाल बजाना और दंभ बघारना ही पांडित्य था और दूसरों का धन लूटना ही टैलेंट था –सोइ सयान जो परधन हारी, जो कर दंभ सो बड़ आचारी। इतिहास उस रचनाकार को सदैव याद रखता है जो अपने समय–समाज के सच से आँखे नहीं चुराता। तुलसी ऐसे रचनाकार थे जो बिना किसी भय के अपने समय के सच को अपनी रचनाओं में उतार देते हैं। विश्वनाथ त्रिपाठी ठीक लिखते हैं कि "तुलसी का काव्य मध्यकालीन उत्तर भारत का सबसे प्रामाणिक संदर्भ कोश है। उसमें तुलसी द्वारा देखा और समझा हुआ भारत मौजूद है।"

तुलसी स्वप्न और संघर्ष के कवि थे। तुलसी समझौतापरस्त, चुप्पी साध लेने वाले मूक दर्शक कवि नहीं थे। तुलसी घोर गरीबी में जीने वाले और सत्ता के प्रलोभन को हँसकर ठुकरा देने वाले कवि थे। तुलसी परंपरा और जीवन संघर्षों से अर्जित मूल्यों–सिद्धांतों के साथ जीने वाले व्यक्ति थे। तुलसी नींद से जगाने वाले, संवेदनशील बनाने वाले, कर्तव्यबोध कराने वाले कवि थे। एक तरफ वे यह कहकर कि "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नरक अधिकारी "न्यायप्रिय व्यवस्था का मानक स्थापित करते हैं, दूसरी तरफ सत्ता के अन्य महत्त्वपूर्ण उपादानों को भी बिना भय के सत्य बोलने के लिए प्रेरित करते हैं– सचिव बैद गुरु तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस। राज धर्म तन तीनिकर होई बेगिहीं नास/इस तरह वीरगाथा, भगवतगाथा और विलासगाथा के उस दौर में तुलसी जीवनगाथा रचने वाले कवि थे। देखना यह है कि कवि की चिंताएं समाज के हर स्तर को छूती हैं कि नहीं ? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते थे कि विद्रोह और भक्ति दोनों सहयोगी धारणाएं हैं। तुलसी के यहाँ एक ओर 'क्षमा शील जे पर उपकारी' विश्वामित्र, वाल्मीकि, भारद्वाज जैसे ऋषितुल्य ब्राह्मण, देवता हैं, जो सर्वथा आदरणीय हैं दूसरी ओर धर्म का धंधा करने वाले, वेदों को बेचने वाले, लंपट, कपटी, ईर्ष्यालू ब्राह्मण भी हैं, जिनकी तुलसी घोर भर्त्सना करते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि तुलसी की काव्य रचना में मनुष्य के द्वारा धारण किए गए गुण ही उसे लोक में पूजनीय या अवांछनीय बनाते हैं। वस्तुतः तुलसी गुणग्राही कवि थे। इसलिए उनके साहित्य में गुणों के प्रति उत्कट प्रेम सर्वत्र विद्यमान है।

तुलसी लोक और शास्त्र के समन्वय के कवि हैं। तुलसी की राम कथा सुंदर नदी के समान है जिसमें राम और सीता का यश रूपी जल भरा हुआ है। लोकमत और वेदमत इसके दो किनारे हैं –लोक वेद मत मंजुल कूला। इस मानस रूपी नदी में अनेक प्रश्न हैं जो नाव के समान है और इन प्रश्नों के उत्तर ही केवट हैं। जैसे केवट पार लगाता है वैसे ही इन प्रश्नों की नाव में बैठाकर कवि केवट की भांति विवेक पूर्ण उत्तर देकर अपने पाठको को पार लगाता है। प्रश्न ही इस कथा रूपी नदी की शोभा हैं–नदी नाव पटु प्रस्न अनेका। केवट कुसल उत्तर सबिबेका। कवि उसी रचना को श्रेष्ठ मानता है जो अपने पाठकों से संवाद करती है और समन्वय का विवेक जगाती है। तुलसी संवाद के कवि हैं। इस कथा में बुद्धि से विचार कर जो चार अत्यंत सुंदर

और उत्तम संवाद रचे गये हैं, वही इस पवित्र कथासरोवर के मनोहर घाट हैं –सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि। तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि/संवाद से श्रेष्ठ विचारों की वर्षा होती है। तुलसी विचारविहीन कविता को सुंदर नहीं मानते हैं – जौं बरषइ बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुतामनि चारू/तुलसी काव्य के चार तत्वों के समन्वय पर बल देते हैं– रामचरित (कथानक), हृदय (भाव), बिचारु (बुद्धिपक्ष) और जुगुति (युक्ति)। अर्थात सदविचार रहित भावों के उच्छल मात्र से सज्जनों के निर्मल हृदय की परितुष्टि नहीं हो सकती है। वही कवि महान है जिसकी कलात्मक भाव व्यंजना उत्कृष्ट जीवन दर्शन से युक्त हो –जुगुति बेधि पुनि पोही अहि राम चरित बर लागा। पहिरहि सज्जन बिमल उर शोभा अति अनुराग। उत्तम विचार या सिद्धान्त मनुष्य के चरित्र में ढलकर अत्यधिक शोभायमान होते हैं– लहहिं सकल सोभा अधिकाई। भारतीय चिंतन, मानवीय मूल्य और सिद्धांत राम के चरित्र में ढलकर न केवल शोभायमान होते हैं अपितु सुग्राह्य भी बनते हैं। इस प्रकार तुलसी जीवन मूल्यों और सिद्धांतों को सुग्राह्य बनाने वाले कवि हैं।

तुलसी शिल्प को भाव के उत्कर्ष का साधन मानते थे। तुलसी के काव्य में भावों की स्थिति और विकास लोक–मर्यादा के दायरे में होता है। राम लक्ष्मण के अद्भुत रूप लावण्य को देखकर विह्वल सखी सीता से केवल इतना ही कह पाती है कि–स्याम गौर किमि कहऊँ बखानी। गिरा अनयन, नयन बिनु बानी / यह सुनकर सीता के हृदय में राम दर्शन की उत्कंठा बढ़ जाती है। जो देखने लायक हैं उसे अवश्य देखना चाहिए परंतु पिता का प्रण इसकी अनुमति नहीं देता। यहाँ प्रेम की विह्वलता और लोकमर्यादा का द्वंद्व देखते ही बनता है। यह द्वंद्व सूरदास के यहाँ भी है। वहाँ गोपियाँ कृष्ण से मिलने रात के अंधेरे में जाती हैं। कोई देख न ले इसलिए जहाँ चंद्रमा का प्रकाश नहीं है अर्थात वृक्षों की छाया तले से होकर मिलने जाती हैं। तुलसी के यहाँ भी सीता भवानी पूजा रोककर राम दर्शन को जाती हैं और राम को देखते ही सीता का मोहित हो जाना, जड़वत, अपलक राम को निहारना और राम रूप को हृदय मंदिर में बसाकर पलकों के कपाट बंद कर लेना। न किसी और को देखना और न किसी और को देखने देना – अनन्य प्रेम की व्यंजना – थके नयन रघुपति छबि देखे ,पालकन्हिहूँ परिहरी निमेखे। नेत्रों का गोपन संवाद कुछ क्षण के लिए लोक मर्यादा के बंधनों से मुक्त कर देता है। जब राम के भुवन मोहन सौंदर्य पर मुग्ध सीता पिता के प्रण को स्मरण कर अधीर हो जाती है, तब विह्वलप्रेम, क्षोभ व आकुलता में परिणत हो जाता है। सीता की विह्वलता और अधीरता काव्य को और अधिक मार्मिक बना देती है–नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पन मन अति छोभा/इस प्रकार तुलसी की सौंदर्य चेतना की परिधि में आने वाले संचारी भाव– उत्कंठा, आकुलता, जड़ता, संकोच, अधीरता आदि तुलसी के काव्य को भावप्रवण बनाने वाले उपादान हैं। तुलसी के काव्य में प्रेम व्यंजना और रतिजन्य अनुभावों का सहज चित्रण अद्वितीय है। जहाँ–जहाँ तुलसी की भक्ति भावना कविता में हावी हो गयी है वहाँ–वहाँ काव्य कलात्मक सौष्ठव का ह्रास हुआ है।–पौढ़िए लालन पालने हौं झुलावौं, चारु चरित रघुबर तेरे तेहि मिलि गाई चरन चितु लावौं। कौशल्या माता का यह कहना– "हे रघुश्रेष्ठ ! मैं कविता कामिनी के साथ मिलकर तुम्हारे पवित्र चरित्र को गाकर तुम्हारे चरणों में चित्त लगाऊँ।" यहाँ तुलसी की भक्ति भावना का अतिरेक कलात्मक सौष्ठव का ह्रास कर देता है। माता का स्थान तुलसी ने ले लिया। इस प्रकार कवि और भक्त की चरम द्वंद्वता

ही तुलसी के काव्य का वैशिष्ट्य बन जाता है। इस सन्दर्भ में आचार्य राम स्वरूप चतुर्वेदी का यह मत युक्त संगत प्रतीत होता है कि "तुलसीदास की दो दृष्टियाँ हैं। एक है ईश्वर में पूरी आस्था और दूसरी है मनुष्य का पूरा सम्मान। उनके अनुसार ये दोनों दृष्टियाँ तुलसी में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। सिया राम मय सब जग जानी जैसी पंक्तियाँ इस गहरे आत्मविश्वास पर ही लिखी जा सकती हैं, जहाँ ईश्वर और मनुष्य दोनों की एक साथ प्रतिष्ठा हो। 'सियाराम' यदि उनकी भक्ति के लिए आश्रय स्थल हैं तो 'सब जग' उनके रचना कर्म के लिए। अनुभूति और अभिव्यक्ति का जैसा संश्लिष्ट रूप तुलसी की रचना में देखने को मिलता है, वह ईश्वर और मनुष्य की एकरूपता से ही निकलता है।"

तुलसी मार्मिक प्रसंगों के चयन के साथ–साथ कहानी कहने की कला में भी पूर्णतः निपुण थे। नाटकीयता तुलसी के प्रबंध काव्य की प्रमुख विशेषता है। मुहावरेदार भाषा का प्रयोग हो या मनोदशा को व्यक्त करने वाली शारीरिक चेष्टाएं अनुभाव, विभाव, संचारीभाव या चुटीला और धारदार व्यंग्यविधान हो या वातावरण का सजीव वर्णन या सूक्ष्म सौंदर्य चित्रण हो, वस्तु और शैली दोनों ही दृष्टि से तुलसी की सन्तुलित और सटीक शैली कथा को रोचक और प्रभावशाली बनाती है। यथा–

रेख खंचाइ कहउ बलु भाषी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी।
जौं सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई।
तन पसेउ कदली जिमि काँपी। कुबरी दसन जीभ तब चांपी।
कुबरी करि कबुली कैकेई। कपट छुरी उर पाहन टेई।
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुं महिप मृदु लच्छ समाना।

यहाँ पर जीभ को कमान और शब्दों को बाण बनाना, कपट की छुरी में धार चढ़ाना, दूध की मक्खी होना, पसीने से नहा जाना और केले के पत्ते की तरह काँपना, दांतों तले जीभ दबाना या व्यंग्य करना आदि अनेक मनोदशाओं, क्रियाओं द्वारा कथा की सजीवता, संवाद धर्मिता , अर्थव्यंजकता में वृद्धि की गयी है। आचार्य शुक्ल ठीक कहते हैं कि– "तुलसी भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि हैं इनकी वाणी की पहुँच मनुष्य के सारे भावों एवं व्यापारों तक है।" इस प्रकार प्रबंध काव्य की सजीवता, चित्रमयता, रोचकता, सरसता, नाटकीयता, ध्वनिमयता, उत्सुकता, संवाद धर्मिता के साथ सिद्धान्त और व्यवहार का समन्वय तुलसी की विनम्र रचनाधर्मिता को अतुल्य बनाता है। तुलसी की रचना ही तुलसी की काव्य मर्मज्ञता का प्रमाण है। तुलसी की रचना में वस्तु और शिल्प की अभिन्नता ही उसकी विशिष्टता है–

मुख सुखाहिं लोचन स्त्रवहिं सोकु न हृदय समाइ।
मनहुं करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ।

इस पंक्ति में एक तरफ कथा के करुण प्रसंग का मार्मिक चित्रण है, दूसरी तरफ उद्धरण के रूप में करुण रस का मानवीकरण किया गया है। वस्तु और शिल्प की अभिन्नता की दृष्टि से यह अन्यतम उदाहरण है। रामवन गमन प्रसंग में शोक, राम के बाल रूप में वात्सल्य, युद्ध भूमि में हनुमान, अंगद, लक्ष्मण आदि में उत्साह, शिव विवाह, नारदमोह के प्रसंग में हास्य, परशुराम लक्ष्मण संवाद में क्रोध, लंकादहन में भय, विनय पत्रिका में निर्वेद आदि अनेक प्रसंगों में स्थायी भाव के अतिरिक्त काव्यशास्त्र में वर्णित सभी संचारी भावों का चित्रण किया गया है।

तुलसी साहित्य में मानव मन को प्रभावित करने वाली प्रत्येक क्रिया और जीवन की अनेक स्थितियों का चित्रण तन्मयता और गहराई के साथ किया गया है। तुलसी के काव्य में वस्तु शिल्प और भाव विचार आदि प्रत्येक घटक के बीच अद्‌भुत संतुलन मिलता है। विरूद्धों का सामंजस्य ही तुलसी की काव्यनिपुणता है।

तुलसी ने अपनी रचना में अनेक गुण–दोषों का बखान किया है। उनके अनुसार जो प्रासंगिक हैं वही ग्राह्य है। अंधश्रद्धा या दुर्भावना से ग्रसित पाठक तुलसी जैसे रचनाकार के साथ न्याय नहीं कर सकता। इसलिए तुलसी आलोचनात्मक विवेक के आग्रही कवि थे –ते हिं ते कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने। इस प्रकार तुलसी मूलतः भारतीय चिंतनपरंपरा के उदात्त तत्त्वों को आगे बढ़ाने वाले कवि हैं। दरअसल तुलसी को समझना सम्पूर्ण भारतीय चिंतन परंपरा को समझना है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार जो लोग तुलसी को संकुचित दृष्टि से देखते हैं वे लोग हिन्दी भाषी जनता को तुलसी की विरासत से वंचित करना चाहते हैं।" वस्तुतः तुलसी एक ऐसे महान सृष्टा और जीवन द्रष्टा कवि हैं जिन्होंने मध्यकालीन भारत की सम्पूर्ण जड़ता पर प्रहार किया। फ्रैंज काफ्का के अनुसार "एक किताब को हमारी आत्मा के भीतर जमी बर्फ को तोड़ने के लिए कुल्हाड़ी होना चाहिए।" इस कथन के अनुसार अगर तुलसी के काव्य को परखा जाए तो तुलसी का काव्य न केवल अपने पाठकों की आत्मा में जमी बर्फ को पिघला देता है अपितु उसे नयी ताजगी और स्फूर्ति से भर देता है। अन्याय, असमानता, भुखमरी और सत्ता षड्यंत्र के विरुद्ध तुलसी का आत्म संघर्ष रघुवीर सहाय जैसे बाद के कवियों की कविता की पूर्वपीठिका बन जाता है –

कुछ होगा, कुछ होगा अगर मैं बोलूँगा
न टूटे, न टूटे तिलिस्म सत्ता का
मेरे अंदर एक कायर टूटेगा

इस प्रकार तुलसी दैहिक, दैविक और भौतिक तापों का शमन करने वाली रचना को सार्थक रचना मानने वाले कवि थे। तुलसी की रचना सुकवि रूपी शरद ऋतु के मन रूपी आकाश को सुशोभित करने वाले तारागण के समान है –सुकबि सरद नभ मन उडगन से।

संदर्भः

1. बालकाण्ड , रामचरित मानस –तुलसीदास
2. अयोध्या काण्ड ,रामचरित मानस – तुलसीदास
3. परंपरा का मूल्य और मूल्यांकन –रामविलास शर्मा
4. गोस्वामी तुलसी दास –आ रामचन्द्र शुक्ल
5. लोकवादी तुलसी दृविश्वनाथ त्रिपाठी
6. गोस्वामी तुलसी दास –डॉ रामचंद्र तिवारी
7. दोहावली –तुलसीदास

❑❑❑

असिस्टेंट प्रोफेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–67
मोबाइल–9990765648 ईमेल– malkhan1979@gmail-com

थाई समकालीन कविताओं में रामायण का प्रभाव : रावण के पात्र के विशेष संदर्भ में

—कित्तिपोंग बुनकर्ड

वर्ष 1977 में राष्ट्रीय कवि श्री नवरत्न फोंगफाईबून द्वारा रचित कविता "छकमाछोममुअंग" नामक कविता संकलन की पंक्तियों में भी रावण विशेष उल्लेखानीय है। छकमाछोममुअंग का अर्थ है घोड़े पर शहर की सैर। इस संकलन की कविताओं में स्थानीय बौद्ध विहारों की चित्रकलाओं का वर्णन किया गया है। थाईलैंड के बौद्ध विहारों में रामकथा से संबंधित प्रसंगों के चित्र व्यापक रूप से देखने को मिलते हैं।

प्राचीन काल से थाईलैंड के साहित्य एवं संस्कृति पर रामायण का प्रभाव विविध रूपों में दिखाई देता रहा है। महाराजा रामप्रथमफ्राफुथयोदफाचुलालोक कृत "रामकीयन" थाईलैंड की रामकथा का सबसे प्रमाणित, विस्तृत तथा विशाल ग्रंथ माना जाता है। यह रचना सन् 1797 में संपन्न हुई। इस रचना से पहले भी और इस रचना के बाद भी थाईलैंड की चित्रकला, नृत्य, लोककथा और साहित्य आदि में रामकथा का प्रभाव व्यापक रूप से विद्यमान रहा। आज तक समकालीन थाई कविताओं पर भी रामकथा नये—नये रूपों में प्रभावित रही। विशेषकर "रावण" जो थाई साहित्य में थोसकन के नाम से जाना जाता है। उसकी थाई लोगों में लोकप्रियता बहुत हुई है। यह थोसकन शब्द दशकंठ से रूपांतरित है। इस लेख में रावण के पात्र को केंद्रित रखते हुए इस तरह अध्ययन किया गया है कि थाई समकालीन कविताओं में रावण के पात्र का उल्लेख किन—किन रूपों में किया जाता है। और उन रूपों से क्या—क्या विशिष्ट मूल्य प्राप्त किए जाते हैं।

हिंदी साहित्य की दृष्टि में नवगीतों को कविता के दायरे में गिना जाता है या नहीं, इस विषय के संबंध में भिन्न—भिन्न विचार हुए। लेकिन वर्तमान में ऐसा प्रतीत होता है कि नवगीत भी कविता का एक रूप स्वीकृत है। जबकि थाई साहित्य की दृष्टि में देखा जाए, नवगीतों को भी समकालीन कविता के दायरे में गिना जाता है। थाईलैंड के सुविख्यात विद्वान प्रो. सुमालीवीरवोंग का कथन है कि "नवगीत को ही कविता के दायरे में प्रमुख रूप से गिना जाता है क्योंकि यह विधा लोक काव्य की परम्परा से विकसित हुई और लोक काव्य ही संपूर्ण थाई कविताओं का आधार है।"[1] उक्त कथन के अनुसार, इसलिए इस लेख में समकालीन थाई कविताओं के साथ थाईनवगीतों को भी उदाहरण के रूप में लेकर अध्ययन किया गया है। जिन कविताओं और नवगीतों का इस लेख में अध्ययन किया जाने वाला है उनकी रचना का समय सातवें दशक से लेकर 2016 तक है।

सर्वप्रथम थाई रामायण का संक्षिप्त परिचय जानना आवश्यक है। रामायण का प्रभाव दूसरे देशों खासकर एशियाई देशों में

व्याप्त देखने को मिलता है। इन देशों पर न केवल वाल्मीकि रामायण या तुलसीदास कृत रामचरितमानस का प्रभाव पड़ा, बल्कि भारत में रची गई अन्य रामायणों का प्रभाव भी पड़ा।[2] एशियाई देशों में रामकथा का जो स्वरूप विकसित हुआ वह विभिन्न रामायणों का सम्मिश्रण था जिसमें स्थानीय छोटी–छोटी कथाओं का भी समावेश हो गया। जब रामकथा दूसरे देशों में पहुँची, उन देशों की संस्कृति का प्रभाव भी उसपर पड़ा जिससे उसके स्वरूप में परिवर्तन आ गया। थाईलैंड की रामकथा "रामकीयन" के नाम से जानी जाती है। रामकीयन "रामकीर्ति" शब्द का थाई भाषा में रूपांतरण है जिसका अर्थ है राम की कीर्ति। यह थाई भाषा में फिर से लिखा भारतीय रामायण ग्रंथ है। थाई रामकथा ग्रंथों में से राजा राम प्रथम फ्रा बुद्ध योदफाचूलालोक महाराज का रामकीयन ग्रंथ थाईलैंड का सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय ग्रंथ है। यह रचना गेयपद के रूप में सन् 1797 संपन्न हुई। रामकीयन की कथा प्रमुख रूप से उसी रामकथा के समान है जिसमें राम के 14 वर्ष के वनवास के दौरान रावण द्वारा सीता का अपहरण किया गया है। लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव और विभीषण आदि की सहायता से सीता को बचाने के लिए लंका पर राम की विजय हुई। लेकिन कुछ पात्रों के नामों में और कुछ प्रसंगों में थाईरामकीयन में भारतीय रामायणों से भिन्नता मिलती है। थाईरामकीयन की कथा राजा राम प्रथम के शासनकाल में प्रायः होने वाले युद्धों को प्रतिबिम्बित करती है। जब राजा राम प्रथम ने सन् 1782 में बैंकॉक को अपने राज्य की राजधानी बनाया था, तब भी थाइयों और उनके उत्तर–पूर्व, पश्चिमी तथा दक्षिणी पड़ोसियों के बीच बहुधा युद्ध होते रहते थे। थाई लोग रामायण के विषय में लगभग 13वीं शताब्दी से जानते थे। अयुथ्या राज्य के युद्ध में नष्ट होने के बाद रामायणी साहित्य के मात्र कुछ अंश ही बचे रह गए। अतः राजा राम प्रथम ने अनुभव किया कि थाई संस्कृति को दोबारा स्थापित किया जाए। विशेष रूप से साहित्य और कला के क्षेत्र में। इसलिए उन्होंने थाई कवियों को संगठित किया और रामकीयन को इस प्रकार से रचने के लिए प्रेरित किया कि वह थाई मान्यताओं और सांस्कृतिक परंपराओं को व्यक्त कर सके। संभवतः उन्होंने अपने सुझाव भी दिए होंगे और उसके कुछ अंशों का सृजन भी किया होगा।[3] रामकीयन की रचना उनके निरीक्षण में हुई और अंत में उन्होंने उसे अपनी स्वीकृति प्रदान की। तभी से यह रचना राजा राम प्रथम की रामकीयन के नाम से जानी जाती है।

थाईरामकीयन के अनुसार रावण तो वही खलनायक है जिसने छल–कपट करते हुए राम से सीता का अपहरण किया और अंत में राम द्वारा उसका वध किया गया। लेकिन आश्चर्यजनक और ध्यान देने योग्य विषय है कि थाई समकालीन कविताओं में रावण का उल्लेख दशकों से बार–बार मिलता रहा। रचना के समय के क्रम से उदाहरण निम्नलिखित हैं –

वर्ष 1972 में सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गीतकार श्री फयोंगमुकदा द्वारा रचित नवगीत "पेन पाई माईडाई" अर्थात् "असंभव" की पंक्तियों में रावण का उल्लेख अलग दृष्टि से किया गया है। इस प्रकार है –

अगर रावण की तरह मेरे दस चेहरे हों
दसों चेहरों को मुड़कर तुम्हारे लिए मुस्कराता रहूँगा
दस जीभों से, दस मुंहों से एक ही स्वर में बतलाऊँगा
कि प्यार करता हूँ तुमसे

प्यार करता हूँ तुमसे
अगर रावण की तरह मेरी बीस आँखें हों
बीसों आँखों से तुम्हीं ताकता रहूँगा
बीसों बाँहों से तुम्हीं लिपटाता रहूँगा
बीस सीता हों तो मेरी नजर में
कभी नहीं आ सकेंगी

• • •

उक्त पंक्तियों में ऐसा लग रहा है कि रावण खलनायक न होकर एक बड़े प्रेमी के पात्र में परिवर्तित हुआ। रचनाकार का यह सुंदर सृजन प्रशंसनीय है। रावण के भयानक रूप को विपरीत दृष्टि से प्रस्तुत किया जाने वाला यह रूप अनोखा है क्योंकि किसी थाई रचनाकार ने ऐसा कभी किया नहीं। इसलिए इस गीत को दशकों से बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हुई। आज तक लोगों में इस गीत की पंक्तियाँ गायी जाती रहीं।

वर्ष 1977 में राष्ट्रीय कवि श्री नवरत्न फोंगफाईबून द्वारा रचित कविता "छकमाछोममुअंग" नामक कविता संकलन की पंक्तियों में भी रावण विशेष उल्लेखनीय है। छकमाछोममुअंग का अर्थ है घोड़े पर शहर की सैर। इस संकलन की कविताओं में स्थानीय बौद्ध विहारों की चित्रकलाओं का वर्णन किया गया है। थाईलैंड के बौद्ध विहारों में रामकथा से संबंधित प्रसंगों के चित्र व्यापक रूप से देखने को मिलते हैं। इस कविता संकलन में कवि ने घोड़े पर शहर की सैर करते हुए उन चित्रों का बौद्ध दर्शन पर आधारित वर्णन किया है।[4] किसी स्थान में रावण का चित्र प्रत्यक्ष होने पर ये पंक्तियाँ लिखी गयी हैं –

• • •

दशानन वही "तृष्णा" है जो / सारे दुखों का कारण
बीस बाहें "उपादान" हैं जिससे / "भव","जाति" उत्पन्न हो जाती हैं
सीता के प्रति तृष्णा हुई / इसलिए क्रोध और द्वेष लाया वंशनाश
बुद्धि भ्रष्ट, असत्य और अन्याय हुआ / इसलिए हुआ सर्वनाश
चाहे दशमुख का हो या सहस्र मुख का हो[5]

• • •

उक्त पंक्तियों में रावण का पात्र और बौद्ध दर्शन का सम्मिश्रण है। तृष्णा, उपादान, भव और जाति ये चार शब्द जो उक्त पंक्तियों में अंकित हैं वे बौद्ध दर्शन पर आधारित पटिच्चसमुप्पाद यानी प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत के अंग हैं। यह सिद्धांत कहता है कि कोई भी घटना अन्य घटनाओं के कारण ही एक जटिल कारण और परिणाम के जाल में विद्यमान होती है। कर्म और कर्म के परिणाम के अनुसार अनंत संसार का चक्र बनता है। तृष्णा यानी विषयों के प्रति आसक्ति, यह उपादान का कारण है। उपादान का आशय है संसार की वस्तुओं के प्रति राग–मोह जो भव का कारण बनता है। इस सिद्धांत के अनुसार भव का अर्थ है जन्म ग्रहण करने की इच्छा। यही इच्छा यानी भव है जो जाति का कारण बनता है। जाति अथवा जन्म लेने से जरा, मरण, शोक इत्यादि दुःखों की पूरी प्रक्रिया उत्पन्न हो जाती है। तृष्णा को जो दुःख का कारण है, उसे त्यागकर निर्वाण पाया जा सकेगा।

उक्त पंक्तियों में कवि ने रावण को लेकर प्रतीकात्मक रूप से बौद्ध दर्शन प्रस्तुत किया है। रावण की सीता के प्रति तृष्णा के कारण से ही सर्वनाश का परिणाम उसे मिला।

वर्ष 1990 में सुपरिचित गीतकार श्री लोबबुरीरद ने "हुआचाईथोसकन" गीत रचित किया। हुआचाईथोसकन का मतलब है रावण का मन। इस गीत में बुरे मन वाले प्रेमी को रावण का बिंबात्मक प्रयोग किया गया है। गीतकार ने इस प्रकार लिखा है –

• • •

इच्छा थी राम का जैसा प्रेम पाना / जिसने सीता की तलाश में लड़ाई लड़ी
सच्चे मन से, अपने जीवन से अधिक प्रेम से / सुंदर है राम का चेहरा
सुंदर है राम का मन / मगर एक सुन्दर चेहरे वाले के मारे
मुझे बड़ी पीड़ा हुई / उस सबसे सुन्दर वाले के मारे
जिसका लोकप्रिय है चेहरा / मगर मन क्यों जैसा रावण का

इन पंक्तियों में किसी उदास प्रेमिका की शिकायत की आवाज सुनाई देती है। तुलना भी की जाती है कि उसके प्रेमी का राम जैसा सुंदर चेहरा है मगर रावण जैसा बुरे मन का है। इस गीत में खलनायक रावण का पात्र वही पारंपरिक दृष्टि से देखा गया है। इन पंक्तियों से एक बात और देखी जा सकती है कि सीता–राम का प्रेम एक वांछनीय आदर्श प्रेम है।

इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के गीत में भी रावण का उल्लेख किया गया है । 2016 में रचित "तुआरायथीरकथुआ" नामक एक गीत है जिसे अधिक लंबे समय तक लोगों में लोकप्रियता प्राप्त हुई। गीतकार ने अपने उपनाम को थोसकन अर्थात् रावण भी रखा। "तुआरायथीरकथुआ" का हिंदी भावानुवाद है "मैं हूँ तुम्हारा खलनायक दीवाना"। इस गीत के शब्दों में लड़के का उदास स्वर इस प्रकार सुनाया गया है –

• • •

शायद मुझे रावण की तरह बनना पड़ेगा
जो हमेशा राम से हारता रहेगा
जितना भी करेगा सीता के मन को न जीत सकेगा
बुरा तो सही मगर
तुम्हारे लिए प्यार किसी से कम नहीं
क्यों है हमेशा हार मेरी रही

• • •

उक्त शब्दों से स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इक्कीसवीं शताब्दी में भी समकालीन थाई कविताओं पर रामकथा का प्रभाव रहा और उसमें रावण का विशेष स्थान विद्यमान रहा। थाई लोगों की सामान्य मान्यताओं में यह बात सर्वविदित है कि रावण एक खलनायक है जो किसी प्रेमिका को रावण जैसा प्रेमी मिलने या पाने की इच्छा नहीं होती। उक्त पंक्तियों में रचनाकार उदासी और निराशा महसूस करते हैं कि अपनी प्रेमिका के मन को जीतना असंभव है। इसलिए अपने को रावण की तुलना की गयी और हार स्वीकार किया गया।

निष्कर्ष

थाई साहित्य की दृष्टि में रामायण न केवल पुराने समय का धार्मिक ग्रंथ है बल्कि यह रचना एक अनुपम साहित्यिक भंडार के रूप में देखी जा सकती है। थाई रामकथा अर्थात् रामकीयनथाई साहित्यकारों को प्रेरित करती रही है कि नई–नई रचनाओं का पुनर्सृजन किया जाए। उदाहरणार्थ समकालीन थाई कविताओं में जो रामकीयन का प्रभाव पड़ा, उसमें रावण का पात्र एक बहुत रुचिकर विषय है। समकालीन थाई कविताओं को ध्यानपूर्वक देखकर यह विषय स्पष्ट रूप से सामने प्रकट हुआ कि बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक से इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक रावण का पात्र भिन्न–भिन्न रूपों में वर्णित किया गया है। इस प्रस्तुति के अनुसार समकालीन थाई कविताओं में रावण का पात्र भिन्न चार प्रकारों का वर्णन किया गया है। क्रमशः एक प्रेम दीवाना, तृष्णा का प्रतीक, बुरे मन वाला प्रेमी और प्रेम से उदास वाला व्यक्ति। ऐसा प्रतीत होता है कि थाईरामकीयन की भाँति जिसमें विविध स्रोतों की कथाओं का सम्मिश्रण है, समकालीन थाई कविताओं में भी पुरानी कथाओं के पुनर्सृजन विविध रूपों में निर्माण किए गये हैं जिन्हें समकालीन थाई कविताओं का विशिष्ट लक्षण माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कवीनिफोनथाईबोदविख्रलैसननिफोन, सुमालीवीरवोंग, थाईलैंडरीसर्चफंड, बैंकॉक,1998, पृ.1
2. रामकीर्ति (रामकीयन) रामायण का थाई रूप, डॉ.करुणा शर्मा,भारतीय दूतावास,बैंकॉक, 2015, पृ. 5
3. वही, पृ. 7
4. बुद्धधम्म नाई कवीनिफोनथाईसमयमाई, सुचित्राचोंगस्थितवथना,चूड़ालंकरण विश्वविद्यालय, बैंकॉक, 2002, पृ.193
5. छकमाछोममुअंग,नवरत्न फोंगफाईबून,कारवेक प्रकाशन, बैंकॉक,1977पृ. 23

❑❑❑

पीएचडी कैंडिडेट, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग–793022 (मेघालय),

मो. 66649696091, ई–मेल kittipongboonkerd@gmail.com

काशी का साहित्यिक योगदान

—प्रो. सुचिता त्रिपाठी

गोस्वामी जी के समय में दरबारी साहित्य का बोलबाला था। फारसी की गजलें और कव्वालियां काव्य का आदर्श थी। शाही दरबार में इन्हीं के अनुकरण पर लिखी गयी रचनाओं को सम्मानित किया जाता था दरबारों में रहने वाले या राज्यागित रचनाकारों के लिए अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करना ही प्रमुख उद्देश्य था। दरबार की शान–शौकत, इमारतों की भव्यता, उत्सवों की सफलता आदि के अतिरिक्त आश्रयदाताओं की वीरता का अतिरंजित वर्णन ही साहित्य का प्रमुख प्रतिपाद्य था।

काशी विश्व की प्राचीनतम नगरी है, हमारा सबसे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में काशी का उल्लेख मिलता है। रामायण, महाभारत तथा बुद्ध की जातक कथाओं में काशी का उल्लेख किया गया है। काशी के माहात्म्य का वर्णन सबसे बड़े पुराण स्कन्द महापुराण में काशी खण्डनाम से एक विस्तृत पृथक विभाग ही है। इस पुरी के प्रसिद्ध नाम– काशी, वाराणसी, अविमुक्त क्षेत्र, आनन्द कानन, महाश्मशान, रूद्रावास, काशिका, तपःस्थली, मुक्ति भूमि, शिवपुरी, त्रिपुरारिकाज नगरी की और विश्वनाथ नगरी है।

जो भूतल पर होने पर भी पृथ्वी से संबद्ध नहीं है, जो जगह की सीमाओं से बँधी होने पर भी सभी का बंधन काटने वाली है, जो महात्रिलोक पावनी गंगा के तट पर सुशोभित तथा देवताओं से सुशोभित है। ऐसा माना जाता है कि प्रलय में भी काशी का नाश नहीं होता। वरूणा और असि नामक नदियों के बीच पाँच कोस में बसी होने के कारण इसे वाराणसी कहते हैं। काशी नाम का अर्थ हैं– जहाँ शब्द (बह्म) प्रकाशित हो। भगवान शिव काशी को कभी नहीं छोड़ते। जहाँ देह छोड़ने मात्र से प्राणी मुक्त हो जाये वह अविमुक्त क्षेत्र यही है। काशी में इस समय लगभग 1500 मंदिर है जिसमें से बहुतों की परम्परा इतिहास के विविध कालों से जुड़ी हुई है। बाबा विश्वनाथ के मूल मंदिर की परम्परा अतीत के इतिहास के विविधकालों से जुड़ी हुई है। बाबा विश्वनाथ के मूल मंदिर की परम्परा अतीत के इतिहास के अज्ञात युगों तक चली गयी, संकटमोचन मंदिर की स्थापना गोस्वामी तुलसीदास ने की थी, दुर्गा मंदिर को 17वीं शती में मराठों ने बनवाया था। घाटों के तट पर अनेक मंदिर बने है इनमें सबसे प्राचीन गहड़वालों का बनवाया राजघाट का आदि केशव मंदिर है। प्रसिद्ध घाटों में दशाश्वमेध, मणिकर्णिका, हरिश्चन्द्र और तुलसीघाट की गिनती की जा सकती है। नवीन मंदिरों में भारत माता का मंदिर तथा तुलसी मानस मंदिर प्रसिद्ध है। आधुनिक शिक्षा के केन्द्र काशी हिन्दू श्विविद्यालय की स्थापना महामना पं0 मदन मोहन मालवीय ने की प्राचीन परम्परा की संस्कृत पाठशालाएं तथा सम्पूर्णानन्द

संस्कृत विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विभिन्न विषयों की शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कारवान तथा उन्नत राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव जागृत करने के लिए कृत संकल्प है।

शब्द ही ब्रह्म है, शब्द ही शिव है, शब्द की विभा से विभूषित काशी की धरती में ऋषि मुनि सभी ज्ञान और मुक्ति की आशा में आये, आदि शंकराचार्य को यहीं चांडाल ने ज्ञान–बोध कराया। संत तेंलंग स्वामी, विशुद्धानन्द तथा माधवाचार्य अन्याय संतो की तपःस्थली है काशी, जैन धर्म रैदास के 4 तीर्थकारों की ज्ञानभूमि भी यहीं रही है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कबीर, जयशंकर की जन्मभूमि तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू श्याम सुन्दरदास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इत्यादि साहित्यकारों की कर्मभूमि काशी रही है, चाहे भक्तिकाल हो या आधुनिक काल हर दौर में हिन्दी साहित्य का गढ़ काशी ही बना, यहाँ साहित्य किताबों के पन्नों में ही नहीं सिमटा, बल्कि मानव–जीवन को अंदर तक प्रभावित किया है। काशी हिन्दी साहित्य के निर्माण, विकास और नवजागरण का गढ़ बना, कबीरदास, मध्यकाल के साहित्यिक चेतना के शिखर है, उनसे थोड़ा पहले काशी में रैदास हुए, इन लोगों के पीछे सम्बल के रूप में जड़े है रामानन्द, दक्षिण से उत्तर की ओर साहित्य रामानन्द लेकर आये और काशी को गढ़ बनाया, रामानन्द मध्ययुग के महागुरू थे, उनके शिष्यों में कबीर, रैदास और तुलसीदास तीनों ही थे। ये अपनी वाणी और तपस्या से सबके पूज्य हो गये। काशी के घाट पर महाकाव्य की रचना करने वाले तुलसीदास ने काशी में ज्ञान और भक्ति की धारा बहाई। विद्वानों से लेकर सामान्य जन की कुटियां तक उनकी वाणी का प्रसार हुआ। लोगों के बीच भगवान श्रीराम को बैठाया, ये उनके साहित्य का सबसे बड़ा अवदान है। काशी में रामलीला की शुरूआत का और पूरेनगर को थियेटर बनाने का श्रेय भी तुलसीदास को जाता है। वाल्मिकी, भास, कालिवास, भवभूति तक तो लगभग राम को शक्ति सिन्धु शील सिन्धु, सौन्दर्य सिन्धु मानने की, फलतः आदर्श सम्राट और आदर्श पुरूषोत्तम जानने की जो परम्परा रही उसे तुलसी ने उनके मर्यादा स्वरूप को अंगीकार करते हुए तुलसी के विश्व दृष्टिकोण ने राम को स्वयं प्रकृति और सृष्टि का ही गुणधाम स्वामी एवं स्रष्टा बनाया, उनकी लोकराधक तथा लोकमंगल प्रधान जीवन दृष्टि से तत्कालीन शैव तथा वैष्णव संघर्ष को समन्वय में बदलकर लोकनेता राम में शिवधर्मी राम का भी विचित्र संयोग किया। तुलसी के समय तक इतिहास अभिजात्य– संस्कृति के पूरे ऐश्वर्य तथा विलास को, सामन्तीय सम्राटों की अनन्त शक्ति तथा अपार शैर्य को, लोकजीवन की शोकपूर्ण पीड़ा तथा अथाह दैन्यता, दरिद्रता को झेल चुका था। इतिहास चक्रवर्ती तथा विश्व विजेता सम्राटों के अलौकिक अप्राकृतिक अतिमानवीय कर्तव्यों में इतना भ्रांति हो चुका था कि प्रजा के लिए वह अगम, अगोचर, अकल, अदृश, अमूर्त, अनन्त आदि हो चुका था। शंकर की ब्रह्म की धारणा को अधिक फैलाने के लिए सम्पूर्ण प्रकृति तथा उसकी सृष्टि के मूल व्युत्पत्ति तत्त्वों को भी दार्शनिक धरातल 'ऐक' और 'पूर्ण' और अद्वैत करने की आवश्यकता ने तुलसीदास की परबह्म की धारणा को 'सगुण' बृहत रूप में विराटीकृत किया। फलतः परवृक्ष, सगुण राम में पूर्ववर्ती अनेक सामाजिक सूत्राकरणों, ऐतिहासिक दशाओं, सांस्कृतिक आकांक्षाओं और यथार्थ समस्याओं का एक संग्रह हो जाता है। श्रीराम के स्वरूप तथा कथा को लेकर उनकी दूसरी महत उपलब्धि अविरल ऐतिहासिक चेतना की सिद्धि है। उनका ऐतिहासिक काल मध्यकाल था एक ओर राम को उन्होंने जहाँ मध्यकाल की लोक चेतना में ढाला वहीं दूसरी

ओर अपने वर्तमान काल के समकालीन अनुभवों तथा समस्याओं की अपनी ग्राम्भीकृत, पवित्र दृष्टि से छानकर प्रस्तुत करना पड़ा उनकी तीसरी महत्त्वपूर्ण देन उनका परिवाद की छोटी इकाई से लेकर समाज तथा राज्य की एक व्यापक परम्परा थी जिसमें परिवार के लोगों की व्याख्या उनका मतैक्य से लेकर राजनीति में भी रामराज्य की परिकल्पना आज भी विश्व के कोने–कोने में रामराज्य की परिकल्पना और बात की जाती है मारीशस से लेकर अन्य गिरमिटिया प्रवासी देशों में तुलसी का रामचरित मानस इस कदर व्याप्त हुआ जहाँ आज भी लोग एक दूसरे से मिलते है तो सीताराम या जय सीताराम कहकर अभिवादन करते हैं।

किसी मानव समुदाय या राष्ट्र के उत्थान–पतन में वहाँ के तत्कालीन साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। युग विशेष में निर्मित होने वाला साहित्य जहाँ एक ओर समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों का प्रमाण प्रस्तुत करता है। वहीं दूसरी ओर रचनाकार सन्तोष अथवा असन्तोष की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति भी करता है। यदि साहित्य में समकालीन अभावात्मक स्थितियों, विकृतियों अथवा विकृतियों के प्रति व्यथित वेदना की अभिव्यक्ति हो तो उससे रचनाकार की सामाजिक संसस्टि और ध्येन धर्मिता प्रमाणित होती है। किन्तु यदि ऐसा न होकर किसी इतर उद्देश्य या लाभ–लोभ से अवसरानुकूल लेखन को बढ़ावा दिया जाय तो रचनाकार को दायित्वहीनता का प्रमाण मिलता है।

गोस्वामी जी के समय में दरबारी साहित्य का बोलबाला था। फारसी की गजलें और कव्वालियां काव्य का आदर्श थी। शाही दरबार में इन्हीं के अनुकरण पर लिखी गयी रचनाओं को सम्मानित किया जाता था दरबारों में रहने वाले या राज्यागित रचनाकारों के लिए अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करना ही प्रमुख उद्देश्य था। दरबार की शान–शौकत, इमारतों की भव्यता, उत्सवों की सफलता आदि के अतिरिक्त आश्रयदाताओं की वीरता का अतिरंजित वर्णन ही साहित्य का प्रमुख प्रतिपाद्य था। इसके अतिरिक्त विलासी आश्रयदाताओं के मनोरंजन के लिए कामोत्तेजक साहित्य का सृजन किया जाता था। तत्कालीन साहित्य में उदात्त जीवन–मूल्यों और सात्विक सारणियों को प्रेरित–प्रतिष्ठित करने की शक्ति नहीं थी। कृष्णोपासक भक्तों ने अपने साहित्य में जिस संजीवनी शक्ति का सन्निवेश किया वह भी कालान्तर में वासना सिक्त होने लगा। राधा–कृष्ण की लीलाओं को सामान्य धरातल पर लाकर वासनात्मक श्रृंगार का साधन बना लिया गया। मनोरंजन ही साहित्य का उद्देश्य बन गया। सूफियों का साहित्य प्रेम–साधना पर आधारित था। आख्यानों के वर्णन में आध्यात्मिक तत्त्व का स्रोत अत्यन्त सूक्ष्म पर सामान्य जनता के लिए अदृश्य होता था। इसलिए उसका भी समाज पर कोई अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ रहा था। नीतिपरक रचनाएँ लिखी जा रही थी किन्तु वे मात्रा में अल्प और कम प्रभावकारी थी। शाही दरबार में पनपने वाले साहित्य का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था परिणाम स्वरूप समाज की साहित्यिक अभिरूचि श्रृंगारी साहित्य की ओर उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। इसी ह्रासशील साहित्यिक पृष्ठभूमि पर गोस्वामी जी का आविर्भाव हुआ उनकी सबसे बड़ी कृति रामचरितमानस जो काशी में लिखी गयी उसका साहित्यिक अवदान जहाँ लोगों की अभिरूचियों में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला वहीं पर साहित्य काशी में पुस्तकालय से लेकर मठों, मंदिरों, घाटों पर स्थान पाने लगी यही कारण था। जिस रामचरितमानस को तुलसीदास ने तुलनी घाट पर बैठकर लिखा उसकी साहित्यिकता– सुर सरि सम सब कर हित होई की भावना को

संजोये से लेकर आज तक गंगा की अविरल मध्यकाल घाट की तरह सबको अभिसिंचित करती, पवित्र करती, कल्याण करती चली आ रही है।

मध्यकाल में ही बनारस को दूसरा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अवदान कबीर को माना जा सकता है। कबीर अपने जीवन–काल के जनजीवन को प्रभावित किये। जैसा कि रविदास और तुलसीदास के मामले में है। कबीर का काशी में रहना एक महत्त्वपूर्ण बात है। कबीरदास काशी के थे, इसका अर्थ यह था कि उनकी अभिव्यक्ति इतनी तेजी और प्रमाणिकता से प्रसारित हो सकती थी जिसकी कल्पना आज मुश्किल है। आज की तरह उस समय भी बनारस शिक्षा, व्यापार तथा तीर्थाटन का एक बड़ा केन्द्र था। वहाँ कही गई बात के प्रतिध्वनित होने का स्वतः प्रबन्ध था क्योंकि शहर में छात्रों, व्यापारियों, कलाकारों और तीर्थयात्रियों का आना–जाना लगा रहता था और ये लोग भारत भर और उसके बाहर तक आते–जाते रहते थे। यह एक आदर्श मंच था। जाहिर सी बात है कबीर के बोल अविस्मरणीय है। उनके निधन के एक सदी के भीतर लोग उन बोलों को सैकड़ों मील दूर राजस्थान और पंजाब में लिखकर रख रहे थे। इन सबसे अलग बनारसी कबीर काफी अलग है। कबीरपंथ इसी कबीर को याद करता और पूजता है। कबीरपंथ ऐसे साधुओं और गृहस्थों का समुदाय है जो मुख्यतः साधारण तबकों से आते हैं और जिन्होंने 'बीजक' नामक खंड (कविताओं की सूची या निर्देशिका, जो बताती है कि कोश कहाँ मिलेंगे) तैयार किया कबीर उकसाते हैं, फटकारते हैं, चुनौती देते है। अपनी मौखिक क्षमता पर पूरा विश्वास रखते हुए वे कागज पर लिखी हर चीज के साथ–साथ उन लोगों को खारिज करते हैं जो खुद को बहुत महत्त्वपूर्ण मानते हैं, खुद को धूल भरे दस्तावेजों के रखवाले के तौर पर प्रस्तुत करते हैं। मुसलमान हो या हिन्दू, काजी हो या ब्राह्मण सभी एक ही मूल से निकले हैं, और योगी भी बहुत बेहतर नहीं है बल्कि और बुरे भी हो सकते हैं। ये जो बीजक वाले कबीर हैं, वे किसी भी देवता का कम ही उल्लेख करते हैं। राम का उल्लेख होता है लेकिन नाम, ईश्वर के लिए आम तौर पर प्रयुक्त नाम के लिए और शिव की तरह कृष्ण हास्य या इनकार को छोड़ बाकी सबके लिए अनुपस्थित है।

कबीर के लिए जाति–पांति का भी कोई विशेष अर्थ नहीं था कबीर तुलसी से पहले हुए थे। सगुण और निर्गुण के अंतमिश्रण की संस्कृति उन्हीं की देन है। कबीर ने कहा गुण में र्निगुण, निर्गुण में गुण वाट छड़ि क्यों कहिये। उन्होंने ईश्वर की जीव में तथा सृष्टि के घट–घट में रमा हुआ बताकर मानव मात्र की एकता का संदेश दिया, खालिक खलक, खलक में खालिक, सब घट रहयो समाई।

कबीर ने पूरी उम्र काशी के ब्राह्मणों से लोहा लिया। मौलवियों के अत्याचारों का पर्दाफाश किया नाथपंथियों के पाखंडों को चकनाचूर किया। उनके जीवन के अंतिम समय में पुनः काशी एक चुनौती था। कहा जाता है कि काशी में मरने से मुक्ति होती है। कबीर ऐसे भक्त थे जो ईश्वर को भी कसौटी पर कस देते थे। वे सोचने लगे कि यदि मैं काशी में मरकर मुक्त होऊँ तो राम का कौन सा निहोरा है। इस भ्रम को तोड़ने के लिए उन्होंने मगहर जाना उचित समझा और अन्ततः मगहर चले गये। कबीर का मगहर जाना मगहर के लिए वरदान साबित हुआ जिस कठिन परिग्राम और एक निष्ठता की उन्होंने अलख जगायी उसने बंजर के कलेजे में भी संवेदना के अंकुर उगा दिये। कबीर का काशी को साहित्यिक योगदान कबीर के अनुयायियों ने कबीर मठ

बना डाला निश्चित रूप से काशी की साहित्यिक परम्परा पुस्तकालय से लेकर मठों, मंदिरों, घाटों तक परिव्याप्त होती रही लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिस मंदिर, मस्जिद का कबीर जीवन भर विरोध करते रहे आज उनके अनुयायियों द्वारा लहरतारा में तालाब के किनारे कबीर का मंदिर बनाया और पार्थिव पूजन प्रारम्भ किया प्रश्न उठना स्वाभाविक है निर्गुण, निराकर ब्रह्म का उपासक स्वयं आकार लेकर मंदिर में विराजमान किया गया यह प्रश्न कबीरपंथियों पर बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा करता है।

काशी आधुनिक काल तक आते–आते जिस साहित्य आन्दोलन को आकार प्रकार देकर गढ़ी उसमें नयी–नयी विधाओं के साथ भाषा का भी प्रचुर विकास, परिस्कार हुआ। इसके पुरोधा काशी में चौक से ठठेरी बाजार होकर पुराने महाल से आगे सौ कदम की दूरी पर चौक की पुरानी हवेली की ड्योढ़ी जो आज भारतेन्दु भवन के नाम से जाना जाता है में जन्में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है। चौतीस वर्ष तीन महीने सत्ताइस दिन के जीवन काल में काशी के इस साहित्यकार ने हिन्दी में युगान्तर स्थापित किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य निर्माण के साथ–साथ हिन्दी प्रचार का भी कार्य किया। उन्हीं के प्रभाव से स्थान–स्थान पर हिन्दी वद्धिनी सभाओं, 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई उन्होंने हिन्दी को नयी चाल में ढालने के साथ–साथ हिन्दी पुस्तकों का एक नया पाठक वर्ग तैयार करने में भी सहायता प्रदान की। उन्होंने स्वयं की रची और दूसरों की लिखी सैकड़ों, पुस्तकें उत्तम कागज तथा उत्तम टाईप में छपवाकर हजारों की संख्या में हिन्दी प्रेमियों तथा साहित्य प्रेमियों को या तो प्रेम स्वरूप भेंट कर दी या नाम मात्र के मूल्य पर उनका वितरण किया। इससे हिन्दी पुस्तकों का प्रचार होने के साथ–साथ हिन्दी प्रचार भी व्यापक स्तर पर हुआ उनका एक महती योगदान विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का या जिसमें 'कविवचन सुधा', हरिश्चन्द्र मैगजीन, हरिश्चन्द्र चनिद्रका का सम्पादन किया जिससे हिन्दी में युगान्तर स्थापित हुआ। हिन्दी गद्य के निर्माता के रूप में भारतेन्दु की बहुत बड़ी देन हिन्दी साहित्य को हुआ इनसे पहले हिन्दी साहित्य का मुख्य माध्यम कविता थी, उन्होंने हिन्दी गद्य को हिन्दी साहित्य का प्रथम रूप बनाया हिन्दी गद्य को उन्होंने जन्म ही नहीं दिया उसका परिष्कार और परिमार्जन भी किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक भारत में चेतना की एक लहर सी दौड़ चुकी थी। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में व्यक्ति कार्य कर रहे थे और उनके मूल में राष्ट्रीयता की प्रबल भावना थी, साथ ही वे देश के सामाजिक स्तर को भी ऊँचा उठाना चाहते थे। इतिहास की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा था और वे अतीत से भी प्रेरणा प्राप्त करना चाहते थे। विश्व में प्रचलित नवीन विचारधाराओं से भी उन्होंने कुछ न कुछ ग्रहण ही किया। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना का स्वरूप धीरे–धीरे बन रहा था और देश की बिखरी हुई शक्तियाँ संगठित की जा रही थी। उन्नीसवीं शताब्दी ने उस सुदृढ़ पृष्ठभूमि का कार्य किया जिस पर आगे चलकर बीसवीं शताब्दी के शक्तिशाली भारत का निर्माण हुआ जो राजनीति, समाज, साहित्य, प्रत्येक दृष्टि से गतिशील रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के इस आन्दोलित वातावरण में हिन्दी साहित्य की नवीन परम्परा का विकास हुआ। भारतेन्दु ने अपने युग का प्रतिनिधित्व किया। देश की अनेक रूढ़ियों और कुरीतियों के सुधार का उन्होंने प्रयास किया इस सामाजिक कार्य के लिए प्रायः उन्हें नाटकों

का अवलम्बन ग्रहण करना पड़ा किन्तु कविता में भी उन्होंने इन भावनाओं को स्थान दिया। साहित्य के क्षेत्र में एक सर्वथा नयी चेतना का आरम्भ भारतेन्दु युग से हो जाता है, भारतेन्दु के साहित्य में प्राचीन नवीन का सम्मिलन, देश प्रेम, समाज सेवा आदि भावनाएँ प्राप्त होती है। यद्यपि सामाजिक दृष्टि के कारण गद्य का अवलम्ब अधिक ग्रहण किया गया, किन्तु काव्य में भी सुधारवादी भावनाएँ प्रतिपादित की गयी। काव्य के भाव, भाषा, शैली सभी में भारतेन्दु ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया। वे उस समय की प्रचलित विचारधारा से प्रभावित थे। आचार्य शुक्ल के शब्दों में "नवीन धारा के बीच भारतेन्दु की वाणी का सबसे ऊँचा स्वर देश भक्ति का था। नीलदेवी, भारत दुर्दशा, आदि नाटकों के भीतर आयी हुई कविताओं में देश–दशा की जो मार्मिक व्यंजना है, उसके अलावा बहुत सी स्वतंत्र कविताएं भी उन्होंने लिखी जिसमें कहीं देश की अतीत गौरवगाथा का गर्व, कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोभ भरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जमी हुई चिंता इत्यादि अनेक महत्त्वपूर्ण भावनाओं का संचार पाया जाता है। सामाजिक रचनाओं के अतिरिक्त उनकी प्रेम और श्रृंगार की रचनाएं, अनुभूति की तीव्रता में पर्याप्त संरसता है। इस प्रकार भारतेन्दु के बहुमुखी व्यक्तित्व ने आगे की परम्परा को प्रभावित किया। उनके साथ में प्रताप नारायण मिश्र, बदरीनारायण प्रेमघन, जगमोहन सिंह आदि ने कार्य किया। इनकी रचनाएँ अनेक विषयों को लेकर चलती थी। वे देश की दशा पर दुःख प्रकट करते थे, समाज के कुरीतियों के सुधार की चर्चा और अन्य, अनेक सामान्य विषयों पर भी वे लिखते थे। भारतेन्दु ने विभिन्न दिशाओं में कार्य किया और आधुनिक हिन्दी काव्य की राष्ट्रीय परम्परा को जन्म दिया। जीवन और काव्य एक दूसरे के निकट आये तथा रीति काव्य की घोर श्रृंगारिकता से काव्य को मुक्ति मिली। इसने हिन्दी काव्य की नयी पृष्ठभूमि का कार्य किया। भारतेन्दु के बहुमुखी व्यक्तित्व ने स्वयं प्रसाद को भी प्रभावित किया प्रसाद साहित्यिक जगत में अपने वास्तविक कृतित्व के साथ बीसवीं शताब्दी में प्रवेश करते हैं। बीसवीं शताब्दी का यह समय जो जातीय भावना के स्थान पर राष्ट्रीयता ने ग्रहण कर लिया था भारत की कल्पना माँ के रूप में दृढ़ हुई राष्ट्रीय प्रेरणा के लिए कवि अपने प्राचीन आदर्शों को पुनः सम्मुख लाने का प्रयास करने लगे। उन्हें यदि वीरता की प्रेरणा इतिहास–पुरूषों से मिलती तो जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए राम और कृष्ण का आदर्श आकृष्ट करता। इसी पृथ्वी पर अपनी समस्याओं का समाधान करने की इच्छा से उसने ईश्वर को भी देश में बुला लिया, देवत्व का मानवीकरण हो गया। बढ़ती हुई देश–प्रेम की भावना में समस्त कवि–समाज ने अपनी–अपनी शक्ति के अनुसार योग दिया। इस भावना का विकास होता गया और कवि ने देश की सीमाओं से आगे बढ़कर विश्व की ओर झांका। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में काव्य ने अतीत गौरव, राष्ट्रीय भावना, मानवता भाव को ग्रहण किया। इन सभी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भारतेन्दु गद्य का भी अवलम्ब किया। समाज और साहित्य के इसी नव सुधार काल में काशी के महाकवि जयशंकर प्रसाद ने प्रवेश किया, कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास सभी क्षेत्रों में अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से कार्य करने वाले इस महान रचनाकार ने अपने समय की सांस्कृतिक चेतना का नया संस्करण साहित्य में प्रस्तुत किया। उनके साहित्य में वे अनुभूतियाँ मिलती है जिनका सम्बन्ध परम्परा और पूर्व पीठिका से भी है। कवि प्रसाद ने परम्परा का अनुकरण न करते हुए भी उसमें योगदान दिया उन्होंने प्राचीन का एक नवीन संस्करण प्रस्तुत किया। 'कामायनी' विश्वकाव्य में एक नया चरण

है। आंसू विरह काव्यों में मेघदूत के समीप रखा जा सकता है। दीर्घ काव्य–परम्परा के होते हुए भी जिस समय कवि ने पदार्पण किया, उसके सम्मुख एक विचित्र समस्या थी। उसने महान कलाकारों की भांति अपने नवीन पथ का निर्माण किया। प्रसाद प्राचीन परिपाटी और स्वच्छन्दतावाद के संगम रूप में हिन्दी में प्रतिष्ठित है। युग के कवि–रूप में उन्होंने आस–पास बिखरी हुई सामग्री का उपयोग किया, उनके साहित्य की मूल प्रेरणा भारतीय है। उन्होंने उपनिषद दर्शन से अपने रहस्यवाद की प्रेरणा ली थी। इसके अतिरिक्त धीरे–धीरे उनके काव्य में परिस्कार होता गया। भारत की गतिशील सामाजिक परिस्थितियों ने उन्हें प्रभावित किया। प्रेम–पथिक को सीमित क्षेत्र 'कामायनी' तक आते–आते सार्वभौमिक रूप ग्रहण करता है। प्रसाद के यौवनकाल की राष्ट्रीयता अन्तिम समय तक प्रखर रूप धारण कर चुकी थी। भारतीय नेताओं के सम्मुख स्वतंत्रता ही एक मात्र लक्ष्य नहीं रह गया था। वे संसार में भारत को एक उन्नत राष्ट्र के रूप में देखने के इच्छुक थे। वे राष्ट्रीय के स्थान पर सार्वभौतिक दृष्टिकोण से विचार करने लगे थे।

काशी में साहित्य की एक विस्तृत परम्परा नागरी प्रचारिणी सभा के रूप में विकसित हुई, बाबू श्याम सुन्दर दास, रामचन्द्र शुक्ल इत्यादि विद्वानों ने नागरी प्रचारिणी सभा के रूप में एक मानक स्थापित किया। लेकिन आज नागरी प्रचारिणी सभा की स्थिति को देखते हुए यह प्रश्न विचारणीय है, जिन साहित्य संतों ने इस विशाल साहित्यकोश में अपनी आहुति देकर इसको पूरे विश्व में प्रकाशमान बनाया, उसको उन्नत समुन्नत बनाना आज बनारस के साहित्यकारों का दायित्व है।

हम इस दायित्व बोध में कितने खरे उतर पा रहे है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रसाद का काव्य–प्रेमशंकर।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचाय रामचन्द्र शुक्ल।
3. हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका–भाग–3
4. आधुनिक काल – डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित।

❒❒❒

रेडियो प्रसारण में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अन्य प्रायोजित कार्यक्रमों की जनहितकारी भूमिका

–प्रो. नीलम राठी

जल शक्ति अभियान और पानी की चिट्ठीके संदर्भ में भारत सरकार की योजनाओं के सफल क्रियान्वयन और उनका लाभ देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में रेडियो की भूमिका असंदिग्ध है। रेडियो अपने कार्यक्रमों के जरिए मनुष्य को भीतर तक प्रभावित करता है। मनुष्य अपने दैनिक कार्य करते हुए जैसे रसोई में काम करते हुए, बस कार आदि में सफर करते हुए, मजदूर वर्ग अपनी दिहाड़ी करते हुए भी रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं। यही कारण है कि महिला शिक्षा की बात हो, सर्व शिक्षा अभियान हो या बाल स्वास्थ्य मंत्रालय का पोलियो अभियान, विधवा विवाह और बाल विवाह रोकथाम आदि सब के सफल क्रियान्वयन में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस हेतु को ही लक्षित करते हुए जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा एफएम पर **पानी की चिट्ठी नाम** से **किस्सा गोई शैली** अर्थात कहानी वाचन का प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित किया गया।जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से जल संबंधी समस्याएं,जल समस्या निवारण की चुनौतियां, जन जागरण के कारण चुनौतियों से निपटान अर्थात समाधान की कोशिशों कोसत्य घटनाओं पर आधारित लघु कथाओं के रूप में लिखकर जन सामान्य नागरिकों या साहित्यकारों द्वारा मंत्रालय या एफएम गोल्ड में भेजी गई। उन्हीं कहानियों का प्रसारण इस कार्यक्रम **पानी की चिट्ठी में** किया गया। ये सभी सत्य घटनाओं पर आधारित कहानियां थी। ये कार्यक्रम 22 फरवरी 2019 से 5 अगस्त 2019 तक प्रसारित किया गया जिसमें 36 कहानियां प्रसारित की गई, यह कार्यक्रम **पानी की चिट्ठी विद नीलेश मिश्रा** नाम से प्रसारित हुआ।

बीज शब्द – जल शक्ति,पानी की चिट्ठी, जल संरक्षण, भूजल प्रबंधन, राष्ट्रीय मिशन ।

भूमिका – भारत सरकार द्वारा जल संरक्षण को मिशन के रूप में लागू किया गया है ताकि वर्षा जल संरक्षण और जल प्रबंधन को बढ़ावा मिले। बाढ़ प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन, भूजल प्रबंधन, बांध पुनर्वास के महत्व के मद्देनजर राष्ट्रीय जल मिशन

कार्यान्वयन का महत्व असन्दिग्ध है। भूजल प्रयोग में भारत पहले नंबर पर है। केंद्रीय जल बोर्ड बताता है के 2007 से 17 तक भूजल स्तर में 61 प्रतिशत तक की गिरावट आई है बढ़ती आबादी, शहरीकरण, औद्योगिकरण और मानसून में देरी इस गिरावट की बड़ी वजह है। एक बड़ी चिंता यह भी है की भारत जल पुनर्चक्रण के मामले में बेहद पिछड़ा है। पुराने समय के बनेतालाब, कुएं, खर, झीलबड़ी मात्रा में पूरी तरह खत्म हो चुके हैं। वे या तो स्वयं बिना देख–भाल छंटनी आदि की उपेक्षा के कारण अनउपयोगी हो गए हैं या मनुष्य के स्वार्थ ने उनके स्थानों पर अतिक्रमण कर लिया है। स्थिति की भयावहता को देखते हुए सरकार के एजेंडे में जल संरक्षण प्राथमिकता पर है। यही कारण है कि सरकार ने जल शक्ति अभियान का बिगुल फूंक दिया है और पानी की कमी से जूझ रहे देश के 255 जिलों में 1 जुलाई 2019 से जल शक्ति अभियान प्रारंभ करने की घोषणा की है। इस अभियान में गंभीर रूप से जल स्तर की कमी वाले 313 ब्लॉक शामिल किए गए हैं। 1186 ब्लॉक जहां भूजल का अत्यधिक दोहन हुआ है, 94 जिले जहां जल स्तर काफी नीचे चला गया है। पानी की कमी से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में सरकार ने जल शक्ति अभियान के रूप में हर घर जल योजना प्रारंभ की है। जलाभाव से उत्पन्न समस्याओं में पानी के कारण पलायन एक बड़ा मुद्दा है जिस कारण जनसंख्या अनुपात भी असंतुलित हो जाता है।

अंतर्वस्तु का विश्लेषण भारत सरकार की योजनाओं के सफल क्रियान्वयन और उनका लाभ देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में रेडियो की भूमिका असंदिग्ध है। रेडियो अपने कार्यक्रमों के जरिए मनुष्य को भीतर तक प्रभावित करता है। मनुष्य अपने दैनिक कार्य करते हुए जैसे रसोई में काम करते हुए, बस कार आदि में सफर करते हुए, मजदूर वर्ग अपनी दिहाड़ी करते हुए भी रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं। यही कारण है कि महिला शिक्षा की बात हो,सर्व शिक्षा अभियान हो या बाल स्वास्थ्य मंत्रालय का पोलियो अभियान, विधवा विवाह और बाल विवाह रोकथाम आदि सब के सफल क्रियान्वयन में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस हेतु को ही लक्षित करते हुए जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा एफएम पर **पानी की चिट्ठी** नाम से **किस्सा गोई शैली** अर्थात कहानी वाचन का प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित किया गया।जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से जल संबंधी समस्याएं, जल समस्या निवारण की चुनौतियां, जन जागरण के कारण चुनौतियों से निपटान अर्थात समाधान की कोशिशों कोसत्य घटनाओं पर आधारित लघु कथाओं के रूप में लिखकरजन सामान्य नागरिकों या साहित्यकारों द्वारा मंत्रालय या एफएम गोल्ड में भेजी गई। उन्हीं कहानियों का प्रसारण इस कार्यक्रम **पानी की चिट्ठी** में किया गया। ये सभी सत्य घटनाओं पर आधारित कहानियां थी। ये कार्यक्रम 22 फरवरी 2019 से 5 अगस्त 2019 तक प्रसारित किया गया जिसमें 36 कहानियां प्रसारित की गई, यह कार्यक्रम **पानी की चिट्ठी विद नीलेश मिश्रा** नाम से प्रसारित हुआ। बकोल नीलेश मिश्रा–**"यह कार्यक्रम सप्ताह में तीन बार प्रसारित होता है भारत के अलग–अलग हिस्सों से सच्ची कहानियों पर आधारित कहानियों को आप तक पहुंचाया जा रहा है जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा"[1] (प्रत्येक एपिसोड के प्रारंभ में)**। सप्ताह में 3 दिन भारत के अलग–अलग हिस्सों से घटित घटनाओं के सच्चे किस्से इस कार्यक्रम का आधार बने।

रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम "पानी की चिट्ठी" में उपस्थित जल संबंधी समस्याएं

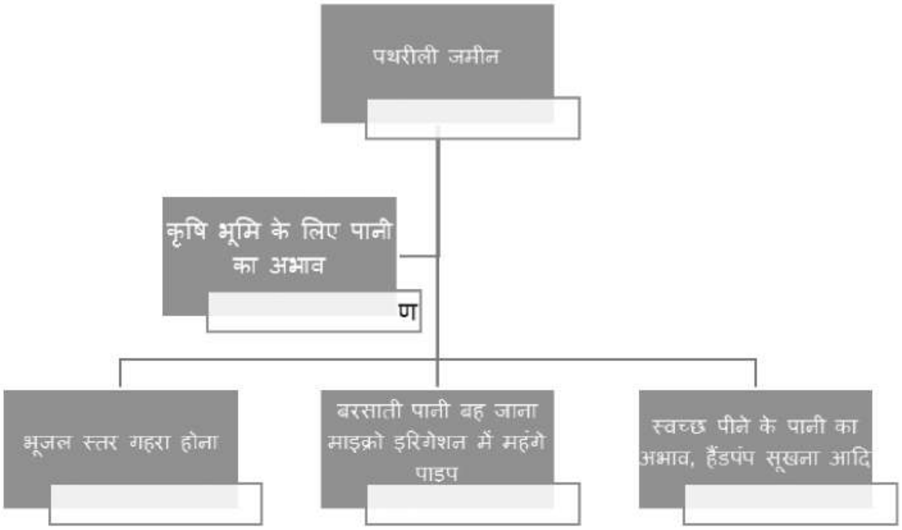

रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम पानी की चिट्ठी में उपस्थित समस्याओं के समाधान के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले प्रयास ,योजनाएं जिन पर सरकार सब्सिडी भी प्रदान करती है।

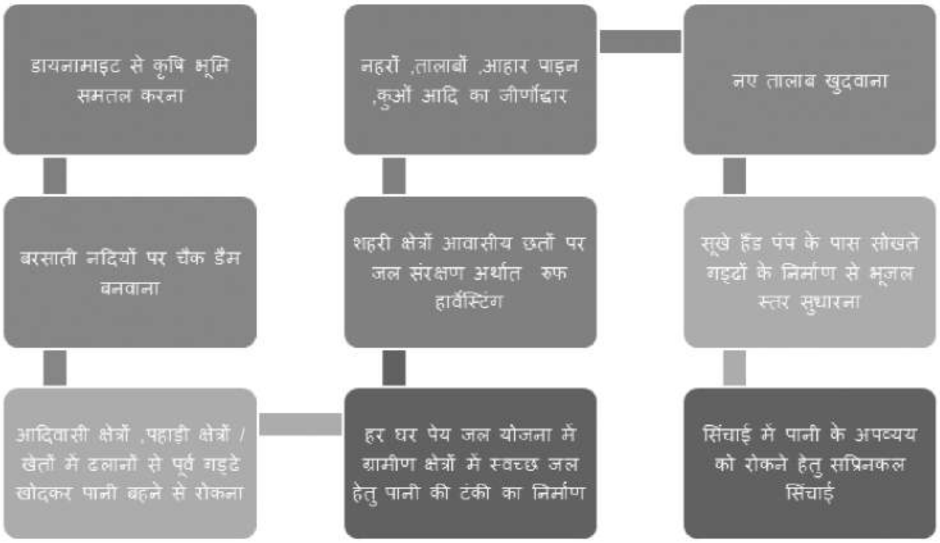

पानी की चिट्ठी कार्यक्रम का प्रारंभ मनजीत ठाकुर की कहानी बदलाव की बूंद से हुआ (प्रथम पानी की चिट्ठी है) जो एफएम पर मंत्रालय के प्रायोजित कार्यक्रम में प्रसारित हुई जिसमें आत्मकथात्मक शैली में पानी की विशेषता, गुण एवं आवश्यकता के साथ साथ पानी की समस्या

और कारणों पर प्रकाश डाला गया है। –"मैं पानी हूं, पानी पहाड़ों से गिरता हो तो झरना कहलाता है और किसी की आंख से गिरा तो आंसू, मैं बादल से गिरकर धरती को सींचता हूं। गंगा जी में मिल जाऊं तो अमृत माना जाता हूं पर अजीब बात है इतना जरूरी होने के बावजूद भी मेरी कद्र करने वाले कितने कम है। कई जगह तो ऐसी होती हैं जहां बारिश कम होती है या कुदरत की वजह ही ऐसी होती है कि मैं ज्यादा टिक नहीं पाता। ऐसा ही एक इलाका है गुजरात का बनास कांठा जिला"[2] (एपिसोड 1)

कहानी में जल द्वारा मनुष्य के अपने प्रति किए जाने वाले उपेक्षित व्यवहार को रेखांकित किया गया है। – आत्मकथात्मक शैली में प्रारंभ हुई पानी की चिट्ठी देश के अनेक स्थानों का पता बांचती हुई अपने अंतिम पड़ाव 5 अगस्त 2019 को 36वें एपिसोड में शबनम की लिखी कहानी वूज़ू का पानी तक पहुँच कर विराम ले लेती है। जिसके अनुसार पानी के उपयोग और संरक्षण में व्यक्ति के प्रयासों का प्रसारण कर प्रेरणा प्रदान की गई है। "मैं पानी हूं, वही पानी जो आकाश से बरस जाए तो बारिश कहलाता है और यदि जमीन पर पड़े तो नदी बन जाए, ठहर जाए तो झील और प्यासी जबान को तर करे तो अमृत कहलाता है। जरूरत तो सबको है मेरी लेकिन दुनिया में इस वक्त जो हालात हैं उनको देखकर लगता है कि लोग मेरी फिक्र कम ही करते हैं। सब लोग जमील कुरैशी जैसे थोड़े होते हैं। यह जो भोपाल की एयरपोर्ट रोड पर इंद्र कॉलोनी की मस्जिद है ना इसमें नमाज पढ़ने वालों के कतार में सबसे आगे जो सफेद कुर्ते पजामे में शख्स बैठा है वही तो है जमील कुरैशी"[3] (एपिसोड 36) उसी के पानी की बर्बादी को रोकने और सदुपयोग में लाने के प्रयासों को रेखांकित करती है यह अंतिम प्रसारित पानी की चिट्ठी। इसके अतिरिक्त पानी और पलायन, लकीरें, एक और एक ग्यारह, कायाकल्प, मजदूर से मशहूर तक, घर वापसी, हर हर गंगे, शर्मा जी का बेटा, मैं अकेला ही चला था, मिशन काकतिया, किफायत आदि बेहद महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं जो जल की मूल्यवत्ता, जल ही जीवन है, जल है तो कल है,आदिस्लोगन का वास्तविक बोध करती हैं।

पानी के अभाव के कारण एवं समाधान – पानी की चिट्ठी कार्यक्रम में कहानियों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में पानी के अभाव के कारणों की पड़ताल की गई है। जिसमें कुछ क्षेत्रों में बरसात की कमी,नदी एवं नहरों का अभाव, बंजर एवं पथरीली जमीन, वृक्षों का कटाव, पानी का अतिशय दोहनआदि इसके प्रमुख कारण हैं।

जिन्हें प्रथम कहानी में कितने स्पष्ट शब्दों में कारण को स्पष्ट किया गया है। –"खेत तो हैं साहब मगर पथरीले हैं" [4] (एपिसोड 1) जिसके निदान के लिए इस कहानी में बांधों के निर्माण द्वारा जल समस्या के समाधान को रेखांकित किया गया है। – "यहां बांधों में जमा रहूंगा तो फसलें लहराएंगी फिर कोई भूखा नहीं सोएगा। पर जब बादल छाए और बूंदों के रूप में उछलता कूदता मैं धरती में जम गया तो नीचे रिसने में मेरा रास्ता रोके खड़े थे पत्थर हंसमुखभाई ही नहीं उन जैसे सैकड़ों किसानों की मेहनत पर पानी फिर गया था अब मैं मौजूद था लेकिन धरती का पेट नहीं भर पा रहा था। बांध बनाने का असली मकसद पूरा नहीं हो पा रहा था, बांधों में जमा मैं भाप बनकर उड़ गया"[5] (एपिसोड 1) कहानी किसी समस्या आने पर रुकती नहीं अपितु समाधान ढूँढने के प्रयास में पुनः लग जाती है। तत्पश्चात इस स्थिति से निपटने के लिए माइक्रो इरिगेसन का विकल्प दृष्टिगोचर होता है। जिसमें अल्प मात्रा में ही पानी का

उपयोग करते हुए सिंचाई की जा सकती है। इस प्रणाली में पाईप के द्वारा पानी को सीधे पौधे तक लाया जाता है इसलिए इसमें पानी की खपत बहुत काम होती है और पानी के अपव्यय की संभावना भी नहीं रहती। किन्तु फिर एक अन्य समस्या या खड़ी होती है जो बहुत व्याहरिक समस्या है वह है अत्यंत गरीब,सीमांत किसान के पास पाइप पाइन खरीदने के पैसे नहीं है। क्योंकि पानी का जलस्तर अधिक गहरा होने के कारण पाईप भी अधिक चाहिए।

माइक्रोइरिग्रेशन में पाइपलाइन पर अधिक व्यय– "पानी इतना नीचे है सारा पैसा पीवीसी लाइन लाने में खर्च हो जाता है जो बूंद सिंचाई में पैसा बचता है वह इधर निकल जा रहा है"[6] (एपिसोड 1)। इस तरह से हम देखते हैं कि पानी के अभाव से एक अन्य समस्या उत्पन्न होती है वह है। भूजल स्तर का अधिक गहरा होना भी एक बडा कारण है। जिसके विकल्प के रूप में पानी की अल्प खपत के रूप में माइक्रो इरिगेशन समाधान परक बताया गया है। और ये सब समाधान मनुष्य की समझ , अथक परिश्रम न खोने वाले धैर्य के साथ साथ जिस कारण संभव होते हैं वह है सरकार की इनके लिए दी जाने वाली सब्सिडी । साथ ही किसानों को जागरूक करने के लिए स्थानीय एन जी ओ की भूमिका।

पानी के अभाव में फसल उत्पन्न नहीं होगी तो आय नहीं होगी फलस्वरूप किसान गरीबी, कर्ज और पोषण के अभाव से ग्रस्त हो जाएगा। –"गुजरात का बनासकांठा जिला जिले की 2 तहसीलें हैं जिनमें ज्यादातर जनजातीय लोग ही रहते हैं नाम तो है अमीरगढ़, लेकिन यहां के 150 गांव के लोगों ने कभी अमीरी की झलक तक नहीं देखी वजह वही बारिश की कमी तालाब सब सूखे पड़े रहते हैं.जिस कारण फसल नहीं हो पाती फलस्वरूप किसान कर्ज में डूबें हैं जिसके कारण पलायन की समस्या भी बन गई है"[7] (एपिसोड 1) सुविधाओं की इच्छा और बेहतर जीवन की लालसा लिए लोग पलायन कर जाते हैं।जल के अभाव में गरीबी और पलायन जैसे एक दूसरे के पर्याय हैं।

"कितने लोग गांव छोड़ गए कितने उखड़ गए कितने उजड़ गए"[8] (एपिसोड)

पानी के एकत्रीकरण के अभावके कारण भी जल समस्या उत्पन्न होती है।–बरसात के पानी के बह जाने से पानी एकत्र नहीं हो पाता। जिस कारण भूजल स्तर बहुत नीचे चल जाता है। गहरे भूजल स्तर में सिचाई में अधिक खर्च – पानी तो इतना नीचे है पंप से सिंचाई करेंगे तो डीजल का खर्चा बढ़ेगा बात सही थी पुराने तरीके से सिंचाई के लिए मेरी अधिक मात्रा की जरूरत होती है लेकिन बनासकांठा में तो मैं कम था अभी तो नीचे बहुत नीचे। ये तो वही बात हुई कंगाली में आटा गीला। क्योंकि पहले ही बनासकांठा जिला आर्थिक रूप से कमजोर था। भूजल गहरा था। सिंचाई करो तो खर्च अधिक न करो तो फसल नहीं। फसल न हो तो गरीबी, भुखमरी और कुपोषण। जलाभाव के कारण समस्या विकराल थी।

पानी के अभाव से उत्पन्न समस्याओं के समाधान/निदान हेतु छोटे छोटे बांध बनाकर पानी रोककर प्रयास की गए – "एनजीओ के साथ कोशिशें शुरू कर दी साल 2002 में इलाके में तो

छोटे बांध बनाने के लिए अनुदान का पैसा लेकर आए थे गांव के चौराहे पर सब जुटे तो हसमुख भाई ने मुस्कुरा कर कहा क्यों भाइयों अब तो खुश हो हम सब मिलकर छोटे–छोटे बांध बनाएंगे यहां के पानी को रोककर उस से इस धरती को हरा–भरा बनाएंगे"[9] (एपिसोड 1)

भूजल स्तर में सुधार याभूजल स्तर को बनाए रखने का हल हैसोखते गड्ढे का निर्माण। इसके कारण लोगों के बीच खींची लकीरे भी मिट जाएंगी क्योंकि जब झगड़े की वजह ही नहीं रही तो फासले क्यों होंगे।

पानी के घरेलू उपयोग के लिए हैंडपंप लगवाना सरकार की जल संबंधी एक और योजना है पीने के पानी की व्यवस्था।जिसके लिए सरकार सार्वजनिक स्थानों पर हैंडपंप लगवा रही है। पानी की किल्लत से आपसी मनमुटाव और झगड़े होने के कारण समाज का सौहार्द भी समाप्त होता है–अंकिता चौहान की लिखी कहानी लकीरें में – पानी नदी में बैठा हूं ,अठखेलियां मेरा स्वभाव है कभी बादल बनकर सूरज को ढक लिया तो कभी धरती पर धड़ाधड़ बरस पड़ा। मन से जरा चंचल हूं लेकिन दिल का साफ"[10] (एपिसोड 25) मध्यप्रदेश के दलोदा इलाके में सरकार द्वारा लगाए गए इस हैंडपंप के मुहाने पर इकट्ठा हो गया जिससे लड़ाई झगड़ा होने के कारण मौहल्ले में कटुता उत्पन्न हो गई।" पानी क्या बंटाकि पूरा मौहल्ला ही दो हिस्सों में बंट गया मन में एक लंबी सी लकीर खींच गई अपनों के बीच"[11] (एपिसोड 25) मनचाही व अनचाही दूरी ने घर कर लिया। मौहल्ले के हैंडपंप पर हुई कहासुनी से मौहल्ले के लोगों में मन मुटाव हो गया। जिसे दूर करने के प्रयास में सुनीता द्वारा हैंडपंप के बाहर फैले पानी की दूर तक निकासी कर दी गई। हैंडपंप के पास पानी न रहने से भूजल स्तर गिर गया और हैंडपंप सूख गया। जिसके निदान स्वरूप हैंडपंप के करीब सोखता गड्ढा बनाकर और उसमें अतिरिक्त पानी इकठ्ठा कर भूजल स्तर बढ़ाया गया तब लोगों के पीने के लिए हैंडपंप में पानी आया। वह करीबी लोगों से हुए मनमुटावभी समाप्त हो गए।

पथरीली जमीन को सम बनाना– "बनासकांठा का कलेजा भी न चट्टानों से बना है इस पत्थर दिल धरती का कलेजा मोम करने के लिए डायनामाइट लगवा देंगे। डायनामाइट भी लगे चट्टाने भी तोड़ी गई धरती का कलेजा मॉम भी हुआ और मैं वहाँ जाकर जमा लेकिन तेज गर्मी आई तब मुझे और नीचे पहुंचना पड़ा खूब नीचे"[12] (एपिसोड 1)

तेज गर्मी में पानी का वाष्प बनकर उड़ जाता है इसलिए भी ग्रीष्म ऋतु में भूजल नीचे चल जाता है। जिसे बचाए रखने के प्रयास ही जल समस्या के निवारण के प्रयास भी हैं। ऐसी स्थिति में जबकि भूजल के स्तर की समस्या हो जहां पानी की अल्प मात्र हो वहाँ सिंचाई के लिए माइक्रो इरिगेशन ही एक मात्र उपाय है। जल को यदि भविष्य के लिए भी सुरक्षित रखना है तब भी इसी प्रणाली का उपयोग करना चाहिए।

माइक्रोइरिग्रेशन– माइक्रो इरिगेशन का नाम सुना है क्या बोला माइक्रो सिंचाई यानी पानी का कम खर्चा, पानी को बचाकर खर्चा, पानी का सोचा समझा इस्तेमाल, लेकिन "इसमें तो खर्चा

आएगा ना हरी भाई के पास जायज सवाल था हां खर्च तो आएगा पर राज्य सरकार माइक्रो सिंचाई को बढ़ावा देने के लिए मदद कर रही है हम उन तक अपनी गुहार लेकर जाएंगे कुछ तो जरूर होगा ना हसमुखभाई सरकारी मदद ले आए और गांव में सिंचाई के लिए मेरा इस्तेमाल और स्प्रिंकल से होने लगा"[13] (एपिसोड 1) माइक्रो इरिगेशन के लिए सरकार द्वारा सब्सिडी की व्यवस्था इस प्रणाली के लिए की गई है इस की तरफ ही यहाँ इंगित किया गया है। जिसका लाभ उठाकर किसान भूजल स्तर की समस्या का निस्पादन कर सकते हैंऔर सरकार से माइक्रोइरिग्रेशन के लिए बिना ब्याज वाला कर्ज का लाभ उठा सकते हैं। तत्पश्चातनिजी कंपनी की मदद से सस्ते पाइप बनाए जाने लगे तो लागत कम हो गई। सोलह में से बारह आना सरकारी मदद आने से (अर्थात लागत का एक चौथाई) कोशिश के बाद किसानों की जिंदगी थोड़ी आसान हो गई।

तालाब खोदकर बारिश का पानी इकट्ठा कर सिंचाई करना – "महाराष्ट्र के मराठवाड़ा में मेरी इतनी कमी थी उनके सपने भी सूख गए थे खेती के बढ़ने के लिए चाहिएपानी लेकिन कुछ लोग मुझे बहने देते हैं नलो से नालियों से"[14] (एपिसोड 3) बब्बल पानी की ताकत को समझ कर खेत में तालाब खरीदने खोदने का परामर्श देता है तो मालिक उसे डपट देता है। बात बब्बन को चुभ जाती है। वह बीबी के जेवर बेचकर खेत खरीदता है। तालाब खोदने के लिए सरकार सब्सिडी भी देती है तहसील से सब्सिडी का फार्म लेकर उसे भरदेता है तहसील के अतिरिक्त यह फार्म केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए कॉमन सेंटर पर भी मिलते हैं। बब्बन ने सरकारी बैंक से लोन लेकर तालाब खुदाया, उसके सपने धीरे–धीरे आकार लेने लगे। उसने इस बार भी जी तोड़ मेहनत की, अपने लिए, अपनी फसल के लिए। धरती माता ने उसे भरपूर फसल के रूप में आशीर्वाद दिया, फसल काटने जिस दिन वह अपने खेत में उतरा उस दिन वह भावुक हो गया चेहरे पर तो खुशी थी लेकिन आंखों से आंसू बह रहे थे। आंसुओं में भी मैं ही था यानी पानी गांव के लोगों ने बब्बन से जानकारी लेकर अपने अपने खेतों में तालाब खोदे। इस तरह अथक परिश्रम और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर बब्बन मजदूर से मशहूर हो चुका था।

पानी के अभाव की समस्या का निदान, प्रभाव और उत्पादन– गुजरात का बनासकांठा "मैं पानी हूं जो बनासकांठा के पत्थरों में ठहर गया था चल तो दिया था पता है कोशिश करता हुआ इंसान दुनिया का सबसे खूबसूरत इंसान होता है। हाड़ तोड़ मेहनत से पाने के लिए बांध की मिट्टी जमा करते चलते लोगों के पसीने के पानी को क्या मैं ऐसे ही बर्बाद होते देख सकता था लेकिन इंसानों के बीच एक कहावत है – राम सहायक उसके होते, जो होते हैं आप सहायक। – अब तो खेत लहरा रहे हैं ना –पथरीले पहाड़ों से गुजरते हुए मैं जानता हूं कि रास्ता उसी को मिलता है जो आगे बढ़ता है।– बनासकांठा में जो किसानों के खेत में मैं पहुंचा तो ठहरी हुई जिंदगी अब चल पड़ी । खेतों में मुझे अपनी जड़ों में हर वक्त महसूस करते हैं । यानी माइक्रो इरिगेशन के पाइपसे गिरती मेरी आवाज बहुत धीमी है लेकिन इससे होने वाले बदलाव की

आवाज बहुत तेज है बनासकांठा के किसानों से पूछना कभी हो सके तो हसमुख भाई से पूछना वह कहेंगे पानी की टप टप करती बूंद की आवाज में आवाज नहीं पूरा संगीत है” [15] (एपिसोड 1)

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हम अज्ञानवश या आलस्य और असावधानी, बढ़ती जनसंख्या आदि के कारण सदियों से चले या रहे अपने परंपरागत जल स्रोतों को भूल रहे हैं। केवल अपने आज को देखते हैं स्वार्थवश केवल अपने विषय में सोचकर पानी का अपव्यय करते हैं। जल शक्ति मंत्रालय की तरफ से न केवल हमें सजग किया जा रहा है अपितु जिन क्षेत्रों में जल की समस्या भयावह बन गई थी। पलायन हो रहे थे और छोटे किसान सिंचाई के अभाव में फसल बर्बाद होने के कारण कर्ज में डूब रहे थे। आवासीय कालोनियों में भी ग्रीष्म काल में पानी की समस्या बन जाती थी सरकार की अनेक योजनाएं जिन पर हमने ऊपर बात की हर घर जल योजना, नहरों ,तालाबों ,आहार पाइन आदि के जीर्णोद्धार की योजना, बरसाती नदियों पर चौक डैम बनाने, तालाबों के निर्माण, पहाड़ी क्षेत्रों में ढलान पर और खेतों की मेढके बाहर गड्ढे खोदकर पानी जमा कर भूजल स्तर को बनाए रखने की योजना, हैंडपंप के पास सोखते गड्ढे बनाकर भी भूजल स्तर को बनए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं अनेक गैर सरकारी संस्थाएं एवं समाज सेवी भी इस महायज्ञ में प्रयासरत हैं। हरसुख भाई, आबिद सुरति, जमील कुरैशी के प्रयास और हर हर गंगे एवं भागीरथ एपिसोड में महेश शर्मा जी के प्रयास इस के जीवंत प्रमाण हैं। महेश जी आदिवासी क्षेत्रों की समस्या उन्ही की सदियों की परंपरा ‘हलमा’ प्रथा (निशुल्क श्रमदान) का पुनय उपयोग कराके 113 गांव में शिवलिंगों का निर्माण और कांवड यात्रा कर शिवरात्रि को संकल्प लेकर रामनवमी के दिन शिव जटाओं (चौक डैम आदि) से अपने अपने गाँव में सिंचाई के लिए जल पहुंचाते हैं।देश केकई राज्यों के विभिन्न स्थानों जिसमें मध्यप्रदेश के आदिवासी झाबुआ क्षेत्र भी हैं उत्तराखंड का पहाड़ी क्षेत्र गुमखल भी है गुजरात महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब के विभिन्न कृषि आधारित सिंचाई की समस्या है तो डेल्ही, मुंबई जैसे महानगरों की आवासीय कॉलोनियों की जल संबंधी समस्याओं को भी लिया गया है। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय इसकी कथा शैली की रोचकता में भी है तो वही यह बात भी महत्वपूर्ण है की कार्यक्रम सिर्फ समस्याओं का चित्रण मात्र नहीं करता बल्कि समस्या समाधान में प्रयास रत सरकार और जनता दोनों का ही बखूबी चित्रण करता है तथा श्रोताओं को भी प्रयास की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। यह कार्यक्रम मीडिया के सूचना, शिक्षा और मनोरंजन तीनों उद्देश्यों को पूर्ण करता है।

संदर्भ –

एपिसोड के लिंक
एपिसोड 1 https://www.youtube.com/watch?v=Wy1zOW8q2u4
एपिसोड 2 https://www.youtube.com/watch?v=gJa10-rJqBk
एपिसोड 3 https://www.youtube.com/watch?v=ufVTHAQlp1o

एपिसोड 4 https://www.youtube.com/watch?v=7wCP909Qb5c
एपिसोड 5 https://www.youtube.com/watch?v=wQty8HsY8XM
एपिसोड 6 https://www.youtube.com/watch?v=D7g_nXLKx3Q
एपिसोड 7 https://www.youtube.com/watch?v=9dJMTQPX1EE
एपिसोड 8 https://www.youtube.com/watch?v=S1KeDQBmeyA
एपिसोड 9 https://www.youtube.com/watch?v=IVHUrnd9LvM
एपिसोड 10 https://www.youtube.com/watch?v=4t7SlDKIYQw
एपिसोड 11 https://www.youtube.com/watch?v=DIgPgmWhH68
एपिसोड 12 https://www.youtube.com/watch?v=pghsAuYfW5s
एपिसोड 13 https://www.youtube.com/watch?v=ChHhInkBlxE
एपिसोड 14 https://www.youtube.com/watch?v=6GzB9NQZ-Nc
एपिसोड 15 https://www.youtube.com/watch?v=saRhPSbnoyM
एपिसोड 16 https://www.youtube.com/watch?v=_VbjEK6XpLI
एपिसोड 17 https://www.youtube.com/watch?v=tWGdmZSDB_M
एपिसोड 18 https://www.youtube.com/watch?v=-QaMnWXEy2c
एपिसोड 19 https://www.youtube.com/watch?v=iE5tUPLs4ow
एपिसोड 20 https://www.youtube.com/watch?v=maZf7h20VvM
एपिसोड 21 https://www.youtube.com/watch?v=_hOdPyxGzLA
एपिसोड 22 https://www.youtube.com/watch?v=XTgAlKpHhl8
एपिसोड 23 https://www.youtube.com/watch?v=2c3ca-0o7Uo
एपिसोड 24 https://www.youtube.com/watch?v=GAHRsFnCZRU
एपिसोड 25 https://www.youtube.com/watch?v=RnQl0_zHDHY
एपिसोड 26 https://www.youtube.com/watch?v=s6vR-n9XChw
एपिसोड 27 https://www.youtube.com/watch?v=iKV_xg2zqYQ
एपिसोड 28 https://www.youtube.com/watch?v=deDm7qr5IEM
एपिसोड 29 https://www.youtube.com/watch?v=B7EuBqjMHXo
एपिसोड 30 https://www.youtube.com/watch?v=q7P8HiCgGo0
एपिसोड 31 https://www.youtube.com/watch?v=NuU-YdWwf4w
एपिसोड 32 https://www.youtube.com/watch?v=q46EoiNEIP8
एपिसोड 33 https://www.youtube.com/watch?v=Huwi-m5GgBA
एपिसोड 34 https://www.youtube.com/watch?v=i6vbwuz90hc
एपिसोड 35 https://www.youtube.com/watch?v=iIKzyikQ5Jo
एपिसोड 36 https://www.youtube.com/watch?v=c2oS9k0SIH0

❐❐❐

प्रोफेसर
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मोबाइल नं – 9873910379 ईमेल –drneelamrathi123@gmail.com

सॉफ्ट पावर : भारतीय विदेश नीति की अहम् रणनीति

–डॉ. अमित कुमार गुप्ता
–डॉ. अपर्णा

महात्मा गांधी ने बताया था–"मेरा मानना है कि जिस सभ्यता में भारत का विकास हुआ है, उसे दुनिया के सामने उपहास के रूप में नहीं आने देना है। हमारे पूर्वजों द्वारा बोए गए सांस्कृतिक बीजों की बराबरी कोई नहीं कर सकता। रोम चला गया गया, ग्रीस ने वही भाग्य साझा किया, फिरौन की शक्ति टूट गई, जापान पाश्चात्य हो गया है, चीन का कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन भारत अभी भी और एक मजबूत नींव के साथ किसी ना किसी तरह आगे भी रहेगा।

भारत अन्य राष्ट्रों के तरह विश्व परिदृश्य पर अपनाप्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्षरत है। भारत के राजनीतिक विचारकों में ये बहस की बात है कि, क्या भारत महाशक्ति बनेगा तथा क्या वह कभी अपना वैश्विक वर्चस्व को स्थापित कर पाएगा? अपने इसी वैभव की प्राप्ति के लिए। भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर (मृदु शक्ति) क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया है। इस लेख में हम मृदु शक्ति के रूप में भारत की क्षमताओं को तलाशने का प्रयास करेंगे। साथ ही भारत सरकार अन्य राष्ट्रों के समक्ष अपनी सकारात्मक छवि को बढ़ाने के लिए मृदु शक्ति का उपयोगकैसे कर रही है, इस पर भी चर्चा करेंगे।

बीज शब्द– मृदु शक्ति, सार्वजनिक कूटनीति, भारतीय संस्कृति, लोकतंत्र, भारतीय प्रवासी।

मूल लेख : सतत प्रतिस्पर्धा अंतराष्ट्रीय राजनीति की विशेषता रही है, जिसमे बड़े राष्ट्र हमेशा से छोटे राष्ट्रों को अपने दबाव में रखना चाहते हैं । विश्व राजनीति का इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्र निरंतर अपनी शक्ति बढ़ाने तथा राष्ट्रहित को साधने हेतु कार्यरत रहते हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक दूसरे को पीछे छोड़ने की जद्दोजहद में शामिल राष्ट्रों में भारत कोई अपवाद नहीं है, वैश्विक पटल पर भारत भी अलग–अलग राष्ट्रों से अलग–अलग मुद्दों के बहस में अपने आप को स्थापित किए हुए है। भारतीय खद्मे में ये एक बहस का मुद्दा है कि क्या भारत महाशक्ति बनेगा? तथा क्या वह वैश्विक स्तर पर वर्चस्व स्थापित कर पाएगा? इस बात को बार बार बहस का मुद्दा बनाने वाले को भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में क्रय शक्ति की क्षमता (PPP) को देखना चाहिए, जिसमें भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यही नहीदुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारतीय अर्थव्यवस्था है। इसके पास अपने शस्त्रागार में परमाणु हथियार रखने के अलावा दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सक्रिय सेना व इन सबसे ऊपर इसकी आणविक क्षमता (World atlas, 2018) है। वैश्विक जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत से अधिकभाग भारत का है। (India Today, 2011), तथा इसके

विदेशी मुद्रा भंडार में दिन पर दिन बढ़ोत्तरी हो रही है। जिससे भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के अधिक प्रवाह को आकर्षित करने की क्षमता बढ़ी है। दुनिया के शीर्ष 10 अरबपतियों की सूची में भारतीयों अव्वल हैं तथाहाल के कुछ वर्षों की सूची में भारतीयों के नाम दो से चार के बीच हैं (Gupt, 2008)। इस समय भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा 'उभरती तथा जिम्मेदार वैश्विक शक्ति' के रूप में संदर्भित किया जाता है।

उपरोक्त तथ्यों के संदर्भ में देखे तो क्या यह भारत के वैभव को वैश्विक परिदृश्य पर सिद्ध करता है? क्या अब इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी रूप से जगह मिल सकती है तथा समाज के उत्कृष्ट शक्ति समूह में शामिल होने की अनुमति मिल सकती है? क्या अब इसे 'विकासशील दुनिया' की स्थिति से ऊपर रखा जा सकता है, और क्य यह दुनिया को एक विकसित देश के रूप में जाना जा सकता है? परंतु उत्तर निश्चित रूप से नकारात्मक है। क्योंकि भारत को कोई इस तरीके से देखना ही नहि चाहता है। (Cohen, 2001, Gupta, 2008)

एक विडंबना यह भी है कि इतिहास हमें भारत के गौरवशाली अतीत विलुप्त संपदाओं के बारे में बताता है। प्राचीन भारतीय सभ्यता (मुख्य रूप से सिंधु घाटी सभ्यता) प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ 'दुनिया की पहली महान शहरी सभ्यताओं में से एक थी' (Harappa.com), 'आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार, भारत पहली शताब्दी तथा 11वीं शताब्दी में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, जहां पहली शताब्दी में विश्व जीडीपी का 32.9ः हिस्सा तथा 1000 CE में 28.9 प्रतिशत भारत का था।' (Maddison, 2001) हालाँकि, औपनिवेशिक शासन ने धीरे–धीरे तथा क्रमिक रूप से भारत को तीसरी दुनिया की स्थिति में कमजोर कर दिया, जो अब एक विकासशील अर्थव्यवस्थाके रूप में विकसित हो रहा है।

इस प्रकार भारत अपनी खोई हुई गरिमा और वैभव को वापस लाने तथा स्वयं को विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए आगे बढ़ रहा है। जैसा कि महात्मा गांधी ने बताया था–"मेरा मानना है कि जिस सभ्यता में भारत का विकास हुआ है, उसे दुनिया के सामने उपहास के रूप में नहीं आने देना है। हमारे पूर्वजों द्वारा बोए गए सांस्कृतिक बीजों की बराबरी कोई नहीं कर सकता। रोम चला गया गया, ग्रीस ने वही भाग्य साझा किया, फिरौन की शक्ति टूट गई, जापान पाश्चात्य हो गया है, चीन का कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन भारत अभी भी और एक मजबूत नींव के साथ किसी ना किसी तरह आगे भी रहेगा। (Vision of Indi, 1983)"

स्टीफन पी. कोहेन ने अपनी पुस्तक 'इमर्जिंग पावर इंडिया'में तर्क दिया है कि, 'भारतीय सामरिक अभिजात वर्ग की चिंता के लिए, भारत ने अपनी शक्ति तथा प्रभाव की तुलना में अपने विदेशी तथा गूढ़ गुणों के कारण एक राज्य के रूप में पश्चिमी कल्पना को अधिक उत्तेजित किया है"। (Cohen, 2001)

भारत के पास जो मृदु शक्ति की अवधारणाहैं वो वैश्विक परिदृश्य पर बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता रखती है। जिसकी क्षमता को भारत के विदेश नीति निर्माताओं ने एक अहम हिस्सा माना है, और विदेश मंत्रालय द्वारा 2006 में एक सार्वजनिक कूटनीति विभाग की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रमुख नीतिगत मुद्दों पर वैश्विक तथा घरेलू राय को एक शिक्षित तथा प्रभावित तरीके से पेश करना है। जिससे की राष्ट्र की एक बेहतर छवि वैश्विक पटल पर पेश हो, जो इसकी बढ़ती अंतरराष्ट्रीय स्थिति (The Times of India, 2006) के अनुरूप रहे। विदेशों

में भारतीय छवि को उन्नत बनाने में सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग की सहायता कई अन्य मंत्रालय तथा परिषद् कर रहे हैं, जैसे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), भारतीय विश्व मामलों की परिषद (ICWA), सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग प्रभाग, विदेश प्रचार विभाग, पर्यटन मंत्रालय तथा प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय आदि। सभी व्यक्तियों, समाजों, संस्थानों, संगठनों तथा विभिन्न मंत्रालयों के संयुक्त प्रयासों से भारतीय मृदु शक्ति को उभारने का प्रयास किया जा रहा है और अंततः भारत के बारे में दुनिया की जो धारणाये है उनमें सकारात्मक बदलाव लाया जा रहा है। नवदीप सिंह सूरी (संयुक्त सचिव, लोक कूटनीति प्रभाग, विदेश मंत्रालय, भारत) जो की प्रथम भारती सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग का नेतृत्व कर रहे थे, उन्होंने साक्षात्कार में बहुत गर्व से कहा था कि ''बहुत ही कम अवधि में विदेशों में भारत की छवि में एक सकारात्मक बदलाव आया है''।

मृदु शक्ति क्या है?

मृदु शक्ति राजनीति का वह महत्वपूर्ण अंग है, जो संस्कृति, मूल्यों, विचारधारा, किसी के गुप्त ज्ञान तथा अन्य तरह के अमूर्त प्रभावों पर आधारित है (Gupta, 2008)। यह सैन्य बल या आर्थिक प्रोत्साहन का उपयोग किए बिना दूसरों के साथ मित्रवत सम्बन्धों के तरफ ले आनेकी क्षमता है। जोसेफ एस नाई जूनियर ने मृदु शक्ति कोपरिभाषित करते हुए बताया है कि– अवधारणा के प्रतिपादक इस प्रकार है :

मृदु शक्ति दबाव या भय के बजाय आकर्षण के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय मामलों में वांछित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता है, मृदु शक्ति किसी के विचारों की अपील या दूसरों की प्राथमिकताओं को आकार देने वाले कार्यसूची को निर्धारित करने की क्षमता पर आधारित हुई है। यदि कोई राज्य दूसरों की धारणा में अपनी शक्ति को वैध बना सकता है तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना कर सकता है जो उन्हें अपनी गतिविधियों को चैनल या सीमित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो उसे अपने महँगे पारंपरिक आर्थिक या सैन्य संसाधनों को खर्च करने की आवश्यकता नहीं हो सकती है। (Nye, 1996)नाई आगे बताते हैं कि किसी भी राष्ट्र की मृदु शक्ति मुख्य रूप से तीन संसाधनों पर टिकी होती है, संस्कृति (उन जगहों पर जहां यह दूसरों के लिए आकर्षक है), राजनीतिक मूल्य (जब यह देश तथा विदेश में उनके लिए रहता है), और अंतिम है विदेश नीति (जब उन्हें वैध तथा नैतिक अधिकार के रूप में देखा जाता है) (छलम, 2006) जोसेफ एस. नाई जूनियर ने पहली बार (मृदु शक्ति) शब्द को अपनी 1990 की किताब 'बाउंड टू लीडरू द चेंजिंग नेचर ऑफ अमेरिकन पावरश' में दिया। यद्यपि मृदु शक्ति की अवध ाारणा नई है परंतु इस अवधारणा के पीछे का विचार बहुत पुराना है, जिसे ऐतिहासिक रूप से भी परखा गया है। अतीत में, भारत के राजा अशोक, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, महात्मा गांधी तथा कई अन्य लोगों ने बिना अवधारणा के भी मृदु शक्ति के विचार को बहुत कुशलता से प्रयोग किया है। विडंबना यह भी है कि हिटलर, मुसोलिनी तथा ओसामा बिन लादेन ने भी मृदु शक्ति का उपयोग किया है लेकिन बिल्कुल अलग तरीकध्े से। (Gupta, 2013)।

मृदु शक्ति (सॉफ्ट पावर) की अवधारणा को हार्ड पावर की अवधारणा के साथ जोड़ा जाता है– जैसे कि सैन्य शक्ति तथा आर्थिक दबाव, जिसका उपयोग हमेशा रक्तपात, तबाही के साथ होता रहा है। इस बदलती नई विश्व व्यवस्था में जहां परमाणु शक्तियां अब प्रभुत्व हासिल करने

के लिए एक पूर्ण युद्ध के बारे में नहीं सोच सकती हैं, और न ही आतंकवाद को खत्म करने के करीब पहुंच रही है, वस्तुतः हार्ड पावर की भूमिका सीमित हो रही है। हार्ड पावर सैन्य और आर्थिक बल के उपयोग पर अत्यधिक बल देता है। सैन्य बल निश्चित रूप से एक हार्ड पॉवर का एक उपकरण है वहीं अर्थव्यवस्था को भी विवादास्पद रूप से कठोर शक्ति के स्रोत के रूप में देखा गया है, खासकर जब इसे अपनी इच्छा को लागू करने के मकसद से राष्ट्रों पर व्यापार प्रतिबंध और प्रतिबंधों के रूप में लगाया जाता है। इसी तरह अर्थव्यवस्था भी मृदु शक्ति उपकरण का एक हिस्सा बन सकती है, उदाहरण के लिए, अमेरिका द्वारा मार्शल प्लान का कार्यान्वयन (जिसके द्वारा अरबों डॉलर पश्चिमी यूरोपीय देशों में पंप किए गए थे), जिसके कारण लेने वाले देशों में अमेरिकी मृदु शक्ति का विस्तार हुआ। इसी तरहवाल्टर रसेल मीड ने तर्क दिया है कि "आर्थिक शक्ति लालचि शक्ति हैयह सामने वाले को जरूरत के समय मजबूर करने के साथ–साथ उद्देश्य से बहकाता भी है। इसी तरह आर्थिक संस्थानों और नीतियों का एक समूह हमारी प्रणाली में आकर्षित करता है तथा उनके लिए उसे छोड़ना मुश्किल बनाता है"। (Nye, 2006)

भारत की मृदु शक्ति क्षमता

भारत मृदु शक्ति के प्रबल दावेदारों में से एक है। इसकी सांस्कृतिक पहेली हर किसी के विचारोत्तेजक संज्ञान को प्रभावित करती है। मार्क ट्वेन के अनुसार, भारत सपनों तथा रोमांस की भूमि है, हर तरीके से धनाढ्य परिपूर्ण जैसे गरीब भी हैं, अमीर भी हैं, वैभव और शान से परिपूर्ण, महलों और झोंपड़ियों का एक विहंगम संगम, जहां पर कभी अकाल और महामारी भी हुई है। अलग अलग राज्यों में अलग अलग मातृ भाषा, अलग–अलग धर्मों के बीच बहुत से देवी–देवताओं को पूजा जाना। यह एक ऐसी भूमि है जिसे सभी मनुष्य देखना चाहते हैं और एक झलक में, एक बार देख लेने पर भी मनुष्य अपने आप को धन्य मानता है। मिश्रित संस्कृति का ऐसा विहंगम दृश्य जो कि विश्व के किसी भी राष्ट्र में नही देखने को मिलेगा। (Indology, 2009) भारत के अतीत की प्रशंसा में इस तरह के दृष्टांत बहुसंख्यक हैं। यह सब 'भाषाओं और बोलियों, देवी–देवताओं, मूल्यों और विश्वासों, रीति–रिवाजों और प्रथाओं, कामुकता और तपस्या की बहुलता' का समृद्ध मिश्रण है। (Singh, 1998;Gupta, 2013;Gupta] 2018)।

भारत के पास मृदु शक्ति की अपार संभावना है, जो निम्नांकित हैं–

- **भारतीय संस्कृति**

संस्कृति एक प्रभावी मृदु शक्ति संपदा है, जिसे वैश्विक पटल पर खुद को पेश करने के लिए आवश्यक उपकरणों में से एक माना जाता है, साथ हीयह विदेशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को भी बढ़ाता है। भारत के अतीत से पता चलता है कि कैसे सांस्कृतिक आदान–प्रदान रत्नों और गहनों, कला वस्तुओं और कलाकृतियों का उपहार, दरबारी कवियों, नर्तकियों, संगीतकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों, यहां तक कि रसोइयों, बुनकरों, वगैरह के माध्यम से राजनीतिक मुद्दों को सुलझाया गया है। एक उदाहरण है की भारत के राजनीतिक मुद्दे कैसे रहे हैं जो कि एक राष्ट्र के सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं। (Verma, 2008; Gupta, 2013;Gupta, 2018)।

भारत की सांस्कृतिक विरासत सबसे प्राचीन और विविध में से एक रही है। सदियों से, कई जातियों और लोगों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति की ताकत इस तथ्य में निहित है कि इसने समय की अनिश्चितताओं का सामना किया

है तथा इसलिएयह और भी अधिक स्थायी, व्यावहारिक और सरल हो गई है, जिसके पास दुनिया को सिखाने के लिए बहुत कुछ है। विभिन्न जातियों के लोग आए, पहले से ही बसी हुई जातियों के साथ घुलमिल गए, और विविधता में एकता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया (Singh, 19980। भारतीय संस्कृति के विविध घटक, जो अध्यात्म से लेकर कला और शिल्प, संगीत, नृत्य और नाटक, साहित्य, व्यंजन, और बहुत कुछ हैं, दुनिया के सौंदर्यपूर्ण चेहरे का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो एक ऐसी अनुभूति पैदा करता है जो न केवल समझ से बाहर है बल्कि अमूर्त भी है। जिसकी नीचे चर्चा की गई हैः (Gupta, 2013; Gupta, 2018)

- **भारतीय आध्यात्मिकता**

आध्यात्मिक जीवन भारत का सच्चा सार है। ऐसा माना जाता है कि जो लोग भारतीय मन को सबसे ज्यादा आकर्षित करते हैं, वे सैन्य विजेता, धनी व्यापारी या महान राजनयिक नहीं हैं, बल्कि पवित्र गुरु, ऋषि मुनि तथा संत हैं जो आध्यात्मिकता को उसके बेहतरीन तथा शुद्धतम रूप में मूर्त रूप देते हैं। भारत का गौरव यह है कि लगभग हर पीढ़ी में और देश के हर हिस्से में अपने दर्ज इतिहास के समय सेउसने इन पवित्र पुरुषों को पैदा किया है, जो देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र हैं। (Chatterji et. al, 1958)

माना जाता है कि भारत ने अपनी आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से पश्चिमी कल्पना को प्रभावित किया है। यहां सबसे अच्छा उदाहरण स्टीव जॉब्स का भारतीय मंदिर में जीवन बदलने वाले आध्यात्मिक प्रतिबिंबों का अनुभव होगा और इसी तरह, मार्क जुकरबर्ग की भारत यात्रा उस समय महत्वपूर्ण रहा जब फेसबुक बहुत अच्छा नहीं कर रहा था। इसके साथ हीमन की पूर्ण शांति की तलाश में सैकड़ों विदेशी भारत आते हैं, और सबसे बड़ी बात यह है कि विदेशों में भारत को अपनी मृदु शक्ति को एक दूसरे के बीच पहुँचाने के लिए अपने गुरुओं तथा संतों को धन नहीं देना पड़ता है। (Gupta, 2018)

- **भारतीय जीवन शैली**

भारतीयों की समृद्ध सांस्कृतिक प्रथाएं उनके जीवन जीने के तरीके में परिलक्षित होती हैं। भारतीय जीवन शैली का प्रमुख हिस्सा सदस्यों के बीच प्रचलित पारिवारिक बंधन है। यह वह बंधन है जो एक भारतीय को पश्चिम में अपने समृद्ध समकक्षों की तुलना में अधिक संतुष्ट और खुशहाल जीवन जीने के लिए तैयार करता है। विदेशी नागरिक, भारतीय परिवार की इस विशेषता से बहुत प्रभावित होते हैं। भारत में पारिवारिक मूल्यों की व्यापकता भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने एक ऐसे देश के रूप में प्रस्तुत करती है, जहां प्रेम और भाईचारा बहुतायत रूप में फल–फूल रहा है। इससे विश्व समुदाय में भारत की छवि मजबूत होती है। (Gupta, 2013; Gupta, 2008)

2. भारतीय चिकित्सा तथा योग

आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी तथा सिद्ध औषधीय प्रथाएँ भारतीयों की एक उत्पत्ति है। ये औषधीय प्रथाएं इसके प्राचीन सभ्यता के इतिहास में गहराई से निहित हैं और इन्हें चिकित्सा की सबसे पुरानी संगठित प्रणालियों में से एक माना जाता है। इसके अतिरिक्तभारत अब आधुनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में अत्याधुनिक तकनीक की राह पर चल रहा है तथा इस प्रकार उपचार के उद्देश्य से भारत विदेशी नागरिकों को आकर्षित कर रहा है। (ळनचजं, 2013),

वर्तमान में भारत जेनेरिक दवाओं और टीकों के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है।

योग एक भारतीय खोज है, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसके पास सभी शारीरिक अस्वस्थता का जवाब है। दुनिया भर में लाखों लोग योग का अभ्यास करते हैं। इससे पहले विभिन्न देशों द्वारा विभिन्न योग स्थितियों को अपने स्वयं के रूप में पेटेंट कराने का प्रयास किया गया था। भारत ने इसका हमेशा विरोध कियाक्योंकि भारत दावा करता है कि योग की उत्पत्ति भारतमें हुई है। इस प्रकारभारत सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि संयुक्त राष्ट्र महासभा योग को मान्यता देफलतः2015 से 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया। इस प्रकारबिना किसी संदेह के कहा जा सकता है कि योग भारत के मृदु शक्ति उपकरण में से एक हो सकता है, जिसके माध्यम से यह भारत को एक ऐसे देश के रूप में प्रदर्शित कर सकता है जिसने विश्व समाज में एक ऐसा ज्ञान दिया है जो दुनिया भर के लोगों के लिए अच्छा काम करेगा और यह सब न्यूनतम या बिना किसी मौद्रिक लागत पर होगा। (ळनचजं, 2013यळनचजं, 2018)

3. भारतीय प्रवासी

भारतीय प्रवासी जो पूरी दुनिया में फैले हुए हैं, अपने व्यवहार और सौम्य गुणों से दुनिया का दिल जीत रहे हैं। श्रीराम चौलिया ने अपने लेख 'द ग्रेट इंडियन डायस्पोरा'में उल्लेख किया है कि, "अधिकांश भाग के लिएएक औसत अमेरिकी, कनाडाई या डचमैन भारतीय अप्रवासियों को राष्ट्रीय सुरक्षा या आर्थिक खतरों के रूप में नहीं देखते हैं, उनके विनम्र, लचीले और प्यारे गुण के लिए धन्यवाद।" (Chaulia,2006) भारत में उनके योगदान को स्वीकार करने के लिए, भारत सरकार ने 2003 से हर साल 9 जनवरी को श्प्रवासी भारतीय दिवसश मनाना शुरू कर दिया है।

4. भारतीय लोकतंत्र

1.25 अरब से अधिक की आबादी के साथ, भारत खुद को सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में आगे बढ़ा रहा है, जो अभी भी मजबूत और कार्यशील है। यह कई लोगों को आश्चर्यचकित करता है विशेष रूप से वे जो मानते हैं कि लोकतंत्र एक बहु–सांस्कृतिक और बहुभाषी देश में नहीं पनप सकता है और उन्होंने अधिकांश औपनिवेशिक तीसरी दुनिया के राज्यों को राजनीतिक क्षेत्र में विफल होते देखा है जो तबाही, सैन्य तानाशाही के साथ राजनीतिक स्थिति में रह रहे हैं या पूर्व रहे हैं। भारत निश्चित रूप से आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की समस्याओं के बिना नहीं है। नक्सलवाद से लेकर अलगाववादी आंदोलनों, उग्रवाद से लेकर आतंकवाद, सांप्रदायिक दंगों से लेकर भ्रष्टाचार तक की समस्याएंये सभी भारत में दृश्यमान विशेषताएं हैं। हालांकिभारतीय लोकतंत्र की लचीली प्रकृति के कारण भारत ने सब कुछ झेला है। भारतीय जनमानस लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास करते हैं और अगर सरकारें लोगों की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरते हैं तो उन्हें गिराने से वे बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते। भारतीय अपनी लोकतांत्रिक संस्कृति को बढ़ावा देते हैंऔर यही कारण है कि इस संबंध में भारत को चीन पर एक अनुकूल बढ़त देता है। (Gupta, 2013)

5. भारतीय फिल्म उद्योग और खेल

भारतीय फिल्म उद्योग और धारावाहिक सभी सीमाओं को पार कर रहे हैं। भारत अब प्रति

वर्ष 800 से अधिक फीचर फिल्मों के औसत उत्पादन के साथ फिल्म निर्माण में दुनिया में सबसे आगे है। मुंबई स्थित हिंदी भाषा का फिल्म उद्योग, जिसे बॉलीवुड के नाम से जाना जाता है, से कम से कम एक चौथाई भारतीय फिल्मों का निर्माण करता है। बॉलीवुड उद्योग सिर्फ एक मनोरंजन उद्योग नहीं है, बल्कि एक आवश्यक मृदु शक्ति उपकरण है जो खुद को जीत रहा है और भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक नामफिल्मों के माध्यम से भारत और इसकी संस्कृति के बारे में जान रही है। भारतीय फिल्म उद्योग के अलावाहाल के नए धारावाहिकों ने भी न केवल भारत में बल्कि दक्षिण एशियाई और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ–साथ यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका में भी एक बड़ा मनोरंजन उद्योग स्थापित किया हैं। भारतीय फिल्म उद्योग चारों ओर से दिल जीत रहा है, जो भारत के लिए एक प्रभावी मृदु शक्ति सम्पत्ति साबित हो रहा है। (Gupta, 2018)

इसी तरह, खेल के क्षेत्र में विश्वनाथन आनंद (शतरंज), सचिन तेंदुलकर (क्रिकेट), साइना नेहवाल और पी.वी. सिंधु (बैडमिंटन), गीत सेठी (स्नूकर), अभिनव बिंद्रा (शूटिंग), मैरी कॉम (मुक्केबाजी) और कई अन्य, जो अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत को गौरवान्वित कर चुके हैं। (Gupta, 2018)

भारत के द्वारा मृदु शक्ति का उपयोग

भारत ने खुद को मूल राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध होने और बदलते अंतरराष्ट्रीय परिवेश के अनुसार कुशलतापूर्वक स्वयं को प्रभावी रूप से ढलने के लिए स्थापित किया है। अनुकूलन करने के महत्व को संबोधित किया है। इस प्रकारभारत ने मृदु शक्ति के क्षेत्र में अपनी क्षमता को पहचानते हुए विदेश मंत्रालय के तहत वर्ष 2006 में एक सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, प्रमुख नीतिगत मुद्दों पर वैश्विक और घरेलू राय को शिक्षित और प्रभावित करना तथा विदेशों में देश की बेहतर छवि पेश करना है (The Times of India, 2006)। अन्य भारतीय संस्थान जो इस संबंध में सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग की सहायता कर रहे हैं, वे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), भारतीय विश्व मामलों की परिषद (ICWA), सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के प्रभाग हैं।विदेश प्रचार प्रभाग, पर्यटन मंत्रालय और प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय।

1) सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग

सार्वजनिक कूटनीति विभाग को वर्ष 2006 में विदेश मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य भारत के भीतर और विदेशों में जनता तक पहुंचना था, ताकि भारत की अधिक जानकारीपूर्ण समझ और प्रशंसा को सक्षम बनाया जा सके। यह विभाग भारतीय विदेश नीति को आकार देने में सार्वजनिक भागीदारी और जनहित के मामले को भी देखता है। इसकी गतिविधियों में व्याख्यान, सेमिनार तथा सम्मेलन आयोजित करना, विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों की मेजबानी करना, वृत्तचित्रों को चालू करना शामिल है, जिसका उद्देश्य भारत की छवि के सकारात्मक प्रक्षेपण, सांस्कृतिक प्रचार तथा प्रदर्शनियों का आयोजन,अन्य ऑडियो–विजुअल और प्रिंट प्रचार हैं। गतिविधियों को मोटे तौर पर आगे निकलने की क्षमता, ऑडियो–विजुअल प्रचार और प्रिंट प्रचार में विभाजित किया गया है।

भारत और विदेशों में कई वृत्तचित्रों, फीचर फिल्मों, सांस्कृतिक प्रचार और प्रदर्शनी कार्यक्रमों के माध्यम से, सार्वजनिक कूटनीति विभाग भारत की एक बहुत ही सकारात्मक छवि पेश करने का प्रयास करता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान पूरी की गई कुछ वृत्तचित्र इस प्रकार हैं:

- 'अफ्रीका के साथ संबंध'–अफ्रीकन महाद्वीप के साथ भारत के लगातार बढ़ते संबंधों की पड़ताल करता है,
- 'भारतीय सेना की मार्शल ट्रेडिशन्स' – आधुनिकीकरण की अपरिहार्य प्रक्रिया में सेना द्वारा सामंजस्य स्थापित करने के तरीके को दर्शाती है,
- 'हमसे दो राष्ट्र, दो पड़ोसी' – अफगानिस्तान और भारत की कहानी, उनकी दोस्ती जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है,
- 'थ्रू लेंस क्लियरली'– रघु राय का भारत,
- 'भारतीय चुनाव'– एक विशाल लोकतांत्रिक अभ्यास,
- 'स्पिरिट ऑफ इंडिया'– भारत के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करने वाली एक लघु फिल्म,
- 'इंडिया इन द मून' – चंद्रयान–I।

सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग (पब्लिक डिप्लोमेसी डिवीजन) विदेशों में भारत की छवि को प्रदर्शित करने के लिए पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी उपयोग कर रहा है। 'इंडिया पर्सपेक्टिव्स', विदेश मंत्रालय की प्रमुख और अत्यंत है, लोकप्रिय पत्रिका है, इसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला, साहित्य, वन्य जीवन, फिल्म और पुस्तक उद्योग तथादेश की उपलब्धियों से भिन्न विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, स्वास्थ्य देखभाल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी। यह पत्रिका कई भाषाओं में प्रकाशित होती है, जैसे अरबी, बहासा, इंडोनेशिया, बंगाली, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिंदी, इतालवी, पश्तो, फारसी, पुर्तगाली, रूसी, सिंहल, स्पेनिश, तमिल, उर्दू। पत्रिका दुनिया के सभी कोनों में वितरित की जाती है। (Annual Report, 2008-09)

अपने सार्थक प्रयासों तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सोशल मीडिया के उत्कृष्ट इस्तेमाल के लिए इस विभाग को 2010 और 2011 में पुरस्कार प्राप्त हुए। हालाँकि, इस विभाग को 2014 में भारत के विदेश मंत्रालय के 'बाहरी प्रचार प्रभाग'में मिला दिया गया था।

2) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)

भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद वर्ष 1950 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की स्थापना इस बात पर प्रकाश डालती है कि भारत अपनी सांस्कृतिक शक्ति और मूल्यों को क्या महत्व देता है। परिषद का प्राथमिक उद्देश्य दुनिया भर के देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना है, जो उनके बीच बेहतर और बेहतर आपसी समझ को सक्षम बनाता है।

उपर्युक्त उद्देश्यों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए, परिषद लगातार काम कर रही है और दुनिया भर में अपनी गतिविधियों का संतोषजनक ढंग से विस्तार कर रही है। परिषद द्वारा की जाने वाली प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं, विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना, जो भारतीय नृत्य और संगीत सीखना चाहते हैं, भारत और विदेशों दोनों में विभिन्न प्रदर्शनियों, सेमिनारों, व्याख्यानों और सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन और भाग लेना, प्रदर्शन करने वाले समूहों के कलाकारों का आदान–प्रदान करना, विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों का रखरखाव करना हैं, और इसके

अलावा विशिष्ट आगंतुक कार्यक्रम भी आयोजित करना हैं, जिसके तहत विदेशों से प्रतिष्ठित हस्तियों को भारत आने के लिए आमंत्रित किया जाता है, और बाहर जाने वाले कार्यक्रम के तहतआगंतुक कार्यक्रम जिसमें व्याख्यान देने, पुस्तकों की प्रस्तुति, ऑडियो–विजुअल सामग्री के लिए विशेषज्ञों को विदेश भेजा जाता है।

3) विश्व मामलों की भारतीय परिषद (ICWA)

भारतीय विश्व मामलों की परिषद, जिसने वर्ष 1943 में एक थिंक टैंक के रूप में अपनी यात्रा शुरू की थी, को 2001 में संसदीय अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में सम्मानित किया गया था। यह परिषद विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और विश्व मामलों के अध्ययन के लिए समर्पित है। यह वर्तमान में एक थिंक टैंक और भारत में विदेशी मामलों की चर्चा के लिए एक मंच के रूप में काम कर रहा है। इस संबंध में, इसमें विभिन्न संगोष्ठियों, सम्मेलनों और व्याख्यानों का आयोजन करना शामिल है, जिसमें दुनिया के सभी हिस्सों से प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जाता है। आईसीडब्ल्यूए अपने सभी सेमिनारों, सम्मेलनों और भारत के भीतर और बाहर विभिन्न गतिविधियों में अपनी भागीदारी के साथ, विभिन्न विदेशी देशों के साथ सहयोग और आपसी समझ बढ़ाने में मदद कर रहा है और इसके अलावा विदेशों में भारत की सकारात्मक छवि प्रदर्शित कर रहा है।

4) भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (आईटीईसी)

भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रमजो अनिवार्य रूप से द्विपक्षीय प्रकृति रखता है वहपारस्परिक लाभ के लिए सहयोग और साझेदारी के बारे में है, जो विकासशील देशों की जरूरतों को पूरा करता है। ITEC कार्यक्रम औपचारिक रूप से भारत सरकार द्वारा 15 सितंबर 1964 को शुरू किया गया था और वर्तमान में यह भारत सरकार के तकनीकी सहयोग का प्रमुख कार्यक्रम है। (तकनीकी सहयोग प्रभाग)

ITEC कार्यक्रम और अफ्रीका कार्यक्रम के लिए विशेष राष्ट्रमंडल सहायता (SCAAP) में के 158 देशों की सदस्यता है, जिसमें एशिया और प्रशांत, लैटिन अमेरिका, कैरेबियन और पूर्वी व मध्य यूरोप के राष्ट्र शामिल हैं।इसका उद्देश्य अनुभवों को साझा करने प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और क्षमता निर्माण का कार्यक्रम है।

5) बाहरी प्रचार प्रभाग

विदेश मंत्रालय के विदेश प्रचार (एक्सपी) विभाग को मुख्य रूप से भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के साथ बातचीत के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भारत सरकार के विचारों/स्थितियों को स्पष्ट करने का कार्य सौंपा गया है। विभाग इस कार्य को मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर कई प्रेस वार्ताओं, बयानों, पृष्ठभूमिकारों और पोस्टिंग के माध्यम से करता है। हाल के वर्षों मेंविभाग ने अपने पड़ोसियों और दुनिया के प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंधों पर सूचना के प्रसार पर ध्यान केंद्रित किया है। विभाग को अतिरिक्त रूप से सभी जरूरी व्यवस्था करने का कार्य सौंपा गया है, जिसमें पत्रकारों के लिए पूरी तरह से सुसज्जित मीडिया केंद्रों की स्थापना और संचालन, मीडिया ब्रीफिंग और देश के अधिकारियों के साथ विदेश यात्रा पर जाने वाले मीडिया के लिए सुविधाएं शामिल हैं। (बाहरी प्रचार)

विदेश प्रचार विभाग पूरे वर्ष राष्ट्रीय और विदेशी मीडिया के साथ संपर्क बनाए रखता है और

भारत में स्थित विदेशी मीडिया को सारी जरूरी सहायता प्रदान करता है। विभाग द्वारा की गई सबसे रचनात्मक गतिविधि विदेशी पत्रकारों को भारत की परिचित यात्रा कराना है, जो विदेशियों को भारतीय राजनीति, विदेश नीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पहली सक्षम जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। विदेश में भारत की मृदु शक्ति को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करने के लिए विदेश मंत्रालय के हाथों में बाहरी प्रचार विभाग सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। आज तकइसने उचित काम किया है और हर गुजरते साल के साथ अपनी गतिविधियों का विस्तार कर रहा है।

6) पर्यटन मंत्रालय

भारत अपने पर्यटन उद्योग के उदय से जो विभिन्न लाभ प्राप्त कर रहा है, उसके अतिरिक्त भारत को एक वैश्विक ब्रांड के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है, ताकि भारत में पर्यटकों की आमद को बढ़ाया जा सके। इस प्रक्रिया में भारत की छवि विशेष रूप से इसकी अनूठी सभ्यता, विरासत और संस्कृति को विश्व समुदाय के सामने प्रदर्शित किया जा रहा है, जिससे दुनिया भारत को बेहतर ढंग से समझ सके। विदेश में अपने 14 कार्यालयों के साथ पर्यटन मंत्रालय विभिन्न प्रचार और विपणन अभियानों में शामिल रहा है, जिसमें भारत को एक ब्रांड और एक आकर्षक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जहां दुनिया भर के लोगों के लिए बहुत कुछ है। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर हैं यह अभियान शुरू किया गया है,जिनकी चर्चा इस प्रकार है :

I घरेलू अभियान

भारत में पर्यटकों के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, इसके महत्व को समझते हुए, पर्यटन मंत्रालय ने विदेशियों के साथ अच्छा व्यवहार करने के महत्व के बारे में भारत के नागरिकों को संवेदनशील बनाने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। मंत्रालय ने जिसमें प्रसिद्ध अभिनेता आमिर खान 'पर्यटकों के प्रति अच्छे व्यवहार' पर अभियान जारी किया है। पर्यटन मंत्रालय ने भारत को एक समग्र आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा देने के लिए घरेलू बाजार में एक सामान्य अभियान भी जारी किया। पर्यटन मंत्रालय ने 'ईमानदारी' विषयों पर 4 सामाजिक जागरूकता टीवी विज्ञापनों का भी निर्माण किया। इसमें सामाजिक जागरूकता प्रयासों के हिस्से के रूप में 'आतिथ्य', 'पर्यटकों के प्रति अच्छा व्यवहार और 'भारतीय होने पर गर्व'। इसके अतिरिक्त,''अतिथि देवो भवः'' संदेश को सुदृढ़ करने के लिए, जिम्मेदार व्यवहार के उद्देश्य को प्रोत्साहित करने, जनता और पर्यटन हितधारकों को संवेदनशील बनाने के लिए, दूरदर्शन और विभिन्न टीवी चैनलों पर सामाजिक जागरूकता पर एक अभियान शुरू किया गया है। (प्रचार और विपणन)

II अंतर्राष्ट्रीय अभियान

पर्यटन मंत्रालय ने भारत को एक साल के दौरआकर्षक, बहु–सांस्कृतिक, आधुनिक और खेल के अनुकूल गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय अभियान जारी किए हैं। ये अभियान हैं प्रिंट कैंपेन यूरोप, प्रिंट कैंपेन अमेरिका, प्रिंट कैंपेन एशिया पैसिफिक, प्रिंट कैंपेन ग्लोबल और टीवी कैंपेन एशिया पैसिफिक। (प्रचार और विपणन)

इन अभियानों के अलावा, 'अतुल्य भारत' अभियान भारत को विश्व की आबादी के लिए

सर्वोत्तम संभव तरीके से पेश करने के लिए पर्यटन मंत्रालय की प्रमुख पहल का गठन करता है। इस संबंध में, मंत्रालय नियमित रूप से 'अतुल्य भारत' शीर्षक से अपनी द्विमासिक पत्रिका का निर्माण करता रहा है। यह अतुल्य भारत की एक अद्यतन वेबसाइट का भी रखरखाव करता है, जो भारत और इसके भीतर के सभी पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी से भरा हुआ है और साथ ही उन सभी बारीकियों से भरा है जो एक पर्यटक को भारत में उतरने से पहले जानना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय दुनिया भर के विभिन्न विदेशी चैनलों पर अतुल्य भारत पर कई टेलीविजन विज्ञापन चलाता है। इन विज्ञापनों ने विभिन्न देशों में कई पुरस्कार जीते हैं, जो स्पष्ट रूप से विदेशों में इन विज्ञापनों की सफलता के बारे में बताता है।

7) प्रवासी भारतीय मामलों का मंत्रालय

हमें दुनिया भर में भारतीय मूल के लोगों की उपलब्धियों पर गर्व है। किसी भी अन्य लोगों की तुलना में, भारत और भारतीय मूल के लोग जाति, पंथ, धर्म या भाषा की परवाह किए बिना सहिष्णुता और एक साथ रहने की कला का अर्थ जानते हैं। – डॉ मनमोहन सिंह

भारतीय प्रवासन की क्षमता और हेडकाउंट को महसूस करते हुए, जो कि 25 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है और दुनिया भर के 189 देशों में मौजूद है, भारत सरकार ने वर्ष 2004 में 'अनिवासी भारतीयों के मंत्रालय (MOIA)' की स्थापना की जिसका नाम बदलकर सितंबर 2004 में 'प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय (एमओआईए)' कर दिया गया। मंत्रालय का दृष्टिकोण और मिशन, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवासी भारतीयों के साथ स्थायी, सहजीवी और रणनीतिक जुड़ाव को बढ़ावा देना है जो भारत को एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में सर्वोत्तम सेवा प्रदान करेगा। इसके अलावा इसका उद्देश्य विदेशी भारतीयों के साथ और उनके बीच पारस्परिक रूप से लाभप्रद नेटवर्क की सुविधा और समर्थन के लिए एक मजबूत और जीवंत संस्थागत ढांचा स्थापित करना, ताकि भारत के विकास प्रभाव को अधिकतम किया जा सके और प्रवासी भारतीयों को भारत में निवेश करने और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अवसरों से लाभ उठाने में सक्षम बनाया जा सके। अंत में इसके उद्देश्य हैं, भारत के साथ प्रवासी भारतीयों के निरंतर संपर्क को सुगम बनाना और उन्हें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों में विविध प्रकार की सेवाएं प्रदान करना, प्रवासी भारतीयों के ज्ञान, कौशल और निवेश योग्य संसाधनों का दोहन करने के लिए व्यक्तिगत पहल और सामुदायिक कार्रवाई के लिए संस्थागत समर्थन प्रदान करना। जिसमें भारत और इसके डायस्पोरा के बीच के बंधन को मजबूत करने के लिए, इसकी सफलता और उपलब्धियों को पहचानने और अंत में उपयुक्त घरेलू हस्तक्षेपों और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से उत्प्रवास के प्रबंधन को एक पारदर्शी, कुशल और मानवीय प्रक्रिया में बदलने में मदद मिलेगी।

कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि प्रवासी भारतीय मामलों का मंत्रालय यह सुनिश्चित करने के लिए निष्पक्ष काम कर रहा है कि प्रवासी भारतीय समुदाय की चिंता का समाधान किया जाएऔर अप्रत्यक्ष रूप से उनसे लाभ भी प्राप्त हो। भारत सरकार इस बात से अवगत है कि प्रवासी समुदाय इसकी प्रमुख मृदु शक्ति संपत्ति है और यही डायस्पोरा है जो भारत के बारे में दुनिया की धारणा को स्थापित कर रहा है। इसलिए भारत और उसके डायस्पोरा के बीच वर्तमान सहजीवन दोनों पक्षों के लिए जीतहै।

8) लोकतंत्र को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका

भारत में लोकतंत्र मजबूत और संपन्न हैऔर इस लोकतंत्र के बारे में दुनिया भारत को हर मंच पर संबोधित करती है। भारत ने उन देशों की सहायता करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अपनाना चाहते हैं। इसका जीवंत उदाहरण भूटान और अफगानिस्तान को लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया में भारत की सहायता है।

24 मार्च 2008 को भूटान में हुए पहले चुनावों के दौरान, भारत ने एक आधार स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाई, जिसने भूटान को एक राजशाही से एक लोकतांत्रिक देश के रूप में तेजी से बढ़ने के तरफ सक्षम बनाया। चुनावों से पहलेभारतीय चुनाव आयोग ने भूटानी नागरिकों और उसके अधिकारियों को चुनाव में भाग लेने और संचालन करने के लिए प्रशिक्षित किया। भूटान के अधिकारियों को भारत में चुनावी प्रक्रियाओं से अवगत कराया गयाऔर इसके अतिरिक्तवर्ष 2007 में नकली चुनावों में, भारत और संयुक्त राष्ट्र के अधिकारी पर्यवेक्षकों के रूप में खड़े हुए तथा स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने में भूटानी अधिकारियों की सहायता की। भूटान के सफलतापूर्वक एक लोकतांत्रिक देश में तब्दील हो जाने के बाद भीभारत भूटान को लोकतांत्रिक प्रयोगों के कार्यान्वयन में हर संभव सहायता का आश्वासन देना जारी रखता है। इसी तरह अफगानिस्तान के विकास में भारत की भूमिका की विश्व समुदाय द्वारा काफी सराहना की गई है। अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे के विकास में भारत की सहायता के अलावाभारत ने भी गहरी दिलचस्पी दिखाई है कि अफगानिस्तान में लोकतंत्र जीवित रहे और मजबूत हो। नया अफगान संसद भवन वर्तमान में भारत सरकार द्वारा बनाया जा रहा है जो अफगानिस्तान को एक मजबूत लोकतांत्रिक देश के रूप में बनाने की उम्मीद करता है। भूटान और अफगानिस्तान में इसकी भूमिका के अलावा, अन्य तीसरी दुनिया के देश भी भारतीय लोकतंत्र की लचीली प्रकृति में रुचि रखते हैं।

निष्कर्ष

विदेशों में भारतीय मृदु शक्ति को प्रदर्शित करने की कोशिश में विभिन्न मंत्रालयों के प्रयासों के अलावा, ऐसे संस्थान, समूह और व्यक्ति भी हैं जो भारत की मृदु शक्ति को प्रख्यापित करने में शामिल हैं। उदाहरण के लिए, बॉलीवुड, सरकारी नियंत्रण से स्वतंत्र, दुनिया भर के देशों में भारतीय संस्कृति और इसकी बहुरंगी चकाचौंध को प्रदर्शित करने का एक अनुकरणीय कार्य कर रहा है। कई उद्धरण मिल सकते हैं, जहां भारत के बारे में बात करते समय शाहरुख खान और अमिताभ बच्चन का संदर्भ मिलता है। विदेशों में बहुत से लोग आश्चर्यजनक रूप से बॉलीवुड अभिनेताओं को भारत के राजनेताओं के बारे में अधिक जानते हैं। हालाँकिकई लोग इस दृ ष्टिकोण से सहमत नहीं हो सकते हैं। बहरहालजब कोई बॉलीवुड फिल्म अंतर्राष्ट्रीय मंच पर ऑस्कर या कोई अन्य पुरस्कार जीतती हैतो भारत को गर्व होता है। भारत के लिए गर्व की बात होती है जब बॉलीवुड के गाने ऑस्कर और अन्य पुरस्कार जीतते हैं। इसी तरहखेल के क्षेत्र में, विश्वनाथन आनंद (शतरंज), सचिन तेंदुलकर (क्रिकेट), साइना नेहवाल (बैडमिंटन), गीत सेठी (स्नूकर), अभिनव बिंद्रा (शूटिंग), और भी कई नाम ऐसे हैंजो भारत को वैश्विक मंच पर गर्व की अनुभूति करा रहे हैं। अन्य भारतीय पेशेवर भी जैसे अमर्त्य सेन, अरुंधति रॉय, अनीता देसाई, आर.के. नारायण, विक्रम सेठ, अरविंद अडिगा भारत को गौरवान्वित करा रहे हैं, तथा अंतर्राष्ट्रीय

मंच पर अपनी अमूर्त स्थिति को भी बढ़ा रहे हैं।

इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीयों ने मृदु शक्ति के महत्व को महसूस किया हैऔर विश्व समुदाय के लिए भारत की मृदु शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए अपना काम कर रहे हैं। हालाँकिएक तथ्य यह है कि अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रतिस्पर्धा भयंकर है अन्य देश जैसे चीन, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य यूरोपीय देश अपने प्रयासों के मामले में भारत की तुलना में बहुत अधिक कर रहे हैं तथा अपनी स्वयं की मृदु शक्ति का प्रसार कर रहे हैं। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि में शीर्ष 20 मृदु शक्ति देशों में शामिल नहीं है। भारत की वर्तमान सरकार भी एक शक्तिशाली और समर्थ मृदु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र का स्वप्न देखती है । माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का भारत को "लोकतंत्र की नई रोशनी"कहने के पीछे का निहितार्थ यही है ।

संदर्भ सूची

1. Address of the Prime Minister of India, Dr. Manmohan Singh, at the Pravasi Bharatiya Divas, Chennai, January 8, 2009. (Source, *Annual Report* (2008-2009), Ministry of Overseas Indian Affairs, New Delhi, Government of India, [Online Web] Accessed: July 01, 2018, URL: http://moia.gov.in/services.aspx?mainid=17
2. *Annual Report* (2008-2009). Public Diplomacy Division, Ministry of External Affairs, New Delhi, published by Policy Planning and Research Division, Ministry of External Affairs.
3. Chatterji, Sunita Kumar, Dutt, Nalinaksha, Pusalker A.D. and Bose, Nirmal Kumar (eds.). (1958). *The Cultural Heritage of India: The Early Phases (Prehistoric Vedic and Upanishadic, Jaina and Buddhist),* Volume I, Calcutta, published by Swami Lokeswarananda, Secretary, The Ramakrishna Mission, Institute of Culture.
4. Chaulia, Sreeram. (2006). The Great Indian Diaspora. Overseas Indian: connecting India with its Diaspora, official e-Zine of ministry of Overseas Indian Affairs, (Online Web) Accessed June 18, 2018, URL: http://www.overseasindian.in/2006/feb/news/opinion24.shtml.
5. Cohen, Stephen P. (2001). *Emerging Power: India*, New Delhi: Oxford University Press.
6. External Publicity, *Annual Report* (2009-2010), Ministry of External Affairs, New Delhi, published by Policy Planning and Research Division, Ministry of External Affairs.
7. Gupta, Amit Kumar (June-December, 2013). Soft Power of the United States, China and India: A Comparative Analysis. *Indian Journal of Asian Affairs*, Vol. 26, No. 1/2, Jaipur.
8. Gupta, Amit Kumar (2008). 'Commentary on India's Soft Power and Diaspora', *International Journal on World Peace*, Vol. XXV No.3.
9. Gupta, Amit Kumar (2018). 'Indo-Japan Relations from the Lens of Soft Power', in*India-Japan Relations in the Era of Globalization,* Prof. Mohammed BadrulAlam (ed.), New Delhi: Gyan Publishing House.
10. Harappa.com, [Online Web] Accessed: June 15, 2018, URL:http://www.harappa.com/indus/indus1.html
11. *India Today* (2011). [Online Web] Accessed: June 12, 2018, URL: https://www.indiatoday.in/india/north/story/census-2011-population-of-india-is-1.21-billion-17.5-per-cent-of-world-131327-2011-03-31

12. Indology, 'Eternal India', by Life Positive, [Online Web] Accessed: June 17, 2018, URL: http://www.lifepositive.com/Mind/Indology/Eternal_India32007.asp
13. Maddison, Angus (2001). *The World Economy: A Millenium Perspective (Development Centre Studies*, OECD Publishing.
14. Nye Jr., Joseph S. (1990). *Bound to Lead: The Changing Nature of American Power*, Canada: Harper Collins Publishers.
15. Nye Jr., Joseph S. (01 March, 2006). 'Think Again: Soft Power', Yale Global Online Magazine: A publication of Yale Center for the study of Globalization, *Foreign Policy*, [Online Web] Accessed: June 20, 2018, URL: http://yaleglobal.yale.edu/content/think-again-soft-power.
16. Nye Jr., Joseph S. and Owens, William A. (March – April, 1996), 'America's Information Edge', *Foreign Affairs*, Vol. 75, No. 2.
17. Publicity and Marketing, *Annual Report* (2009-2010), Ministry of Tourism, Government of India, [Online Web] Accessed: June 21, 2018, URL: http://tourism.nic.in/annualreport.htm.
18. Singh, B. P. (1998). *India's Culture: The State, the Arts and Beyond*, Delhi: Oxford University Press.
19. The Economic Times (April 30, 2014). India Displaces Japan to become Third-Largest Economy in Terms of PPP: World Bank.
20. The Technical Cooperation Division, Government of India, [Online Web] Accessed: June 18, 2018, URL: http://itec.mea.gov.in/
21. The Times of India (05 May, 2006). 'India launches public diplomacy office', New Delhi, [Online Web] Accessed: June 11, 2018, URL: http://timesofindia.indiatimes.com/articleshow/1517855.cms
22. Varma, Pavan K. (2008). Culture as an Instrument of Diplomacy. *Indian Foreign Affairs Journal,* A Quarterly of the Association of Indian Diplomats, Volume 3, No. 2, New Delhi: Cambridge University Press India Pvt. Ltd.
23. *Vision of India* (1983). selections from the works of, 'Rabindranath Tagore,' 'Swami Vivekananda,' 'Mahatma Gandhi,' 'Sri Aurobindo,' 'Maulana AbulKalam Azad,' 'SarvepalliRadhakrishnan' and 'Jawaharlal Nehru.' New Delhi: Indian Council for Cultural Relations.
24. Worldatlas (2018). [Online Web] Accessed: June 11, 2018, URL: https://www.worldatlas.com/articles/29-largest-armies-in-the-world.html

---

सहायक प्राध्यापक , राजनीति शास्त्र विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोकय
(पूर्व निदेशक, सुषमा स्वराज विदेश सेवा संस्थान, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली)।
मोबाइल नं.– +91 8372801243 ईमेल–amitchess123@gmail-com;

सहायक प्राध्यापक, अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध विभाग, झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची–835222
मोबाइल नं– +91 8002042763) ईमेल– aparna@cuj.ac.in ;

स्वाधीनता आंदोलन और क्रांतिकारियों का जीवन तथा साहित्य

–डॉ. सत्यप्रकाश सिंह

आमुख : भारत का स्वाधीनता संघर्ष अपने मूल चरित्र में सांस्कृतिक रहा है। इसलिए वह नवजागरण कालीन चेतना के प्रसार के साथ–साथ राष्ट्र स्तर पर एक भावात्मक जुड़ाव के पुनर्निर्माण में भी सफल रहा था। भारत वर्षों तक साम्राज्यवादी और क्रूर शक्तियों का गुलाम रहा है। जिसका प्रभाव आज भी भारत के दृष्टिकोण और जीवन शैली पर परिलक्षित होता है। औपनिवेशिक मानसिकता और आंतरिक हीन भावना के कारण विजयी जैसे दिखने की लालसा हमारी भाषा, विचार, रहन–सहन में दिखाई पड़ रही है। अंग्रेज राजनीतिक ताकत न होते हुए भी हमारी मनःस्थिति पर प्रभाव बनाए हुए हैं। भूमंडलीकरण के दौर में यह प्रभाव पहले की अपेक्षा अधिक गाढ़ा हुआ है। युवाओं में राष्ट्र भाव और राष्ट्र नायकों के योगदान को लेकर एक विस्मृति का भाव दिखाई पड़ रहा है। इसलिए नए, समर्थ तथा समावेशी भारत के लिए उन मूल्यों का पुनरुत्थान आवश्यक है, जो आज के भारत को तार्किक और मानवीय दिशा तथा गरिमा प्रदान कर सकें। इसके लिए वैचारिक स्वतंत्रता और स्वावलंबन आवश्यक है। स्वतंत्रता, समानता का विचार और 'स्व' का सम्मान आवश्यक है। तभी हम दुःख, कष्ट, क्लेश और विनाश से निकलकर अमरता की ओर बढ़ सकते हैं। प्रस्तुत लेख, क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन और रचनाओं के माध्यम से उन मूल्यों की तलाश का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द : स्व, नवजागरण, स्वतंत्रता, स्वाधीनता, चित्त, भूमंडलीकरण, नैरेटिव, क्रांतिकारी

स्वतंत्रता और स्वाधीनता : स्वतंत्रता का संबंध अनिवार्य रूप से स्वाधीनता की चेतना से है। स्वाधीन चित्त ही सर्वतोमुखी स्वतंत्रता की साधना कर सकता है। इसलिए स्वाधीनता किसी भी राष्ट्र और जाति के लिए स्वतंत्रता से ज्यादा गहरी और व्यापक अवधारणा है। स्वतंत्रता उसका एक पक्ष है, जैसे राजनीतिक जागरण, सांस्कृतिक जागरण का एक अंग है। हिंदी साहित्य स्वाधीन चेतना के निर्माण के माध्यम से स्वतंत्रता की साधना करता है। 'भारति जय विजय करे' का भाव सीधे–सीधे उसकी स्वाधीन चेतना की अनुगूंज है। निराला की

कविता 'वर दे वीणावादिनी वर दे' इस भाव–बोध की अभिव्यक्ति करने वाली प्रमुख कविता है।

"नव गति, नव लय, ताल–छंद नव
नवल कंठ, नव जलद–मन्द्ररवय
नव नभ के नव विहग–वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!
वर दे, वीणावादिनि वर दे।"[1]

नव की यह आकांक्षा दरअसल, गुलाम भारत की स्वाधीनता की आकांक्षा है। स्वाधीन मानस ही अपने आपको प्रत्येक प्रकार के बंधन से मुक्त करते हुए सर्वतोमुखी विकास कर सकता है। परिस्थिति विशेष में गुलाम हो जाना अलग बात है किंतु गुलामी को नियति मान लेना अलग बात है। गुलामी स्वीकार कर लेने की स्थिति प्रायः तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति 'स्व' को समाप्त कर के किसी व्यवस्था या विचार की अधीनता स्वीकार कर लेता है। अंग्रेज हमसे हमारी 'चेतना', हमारा 'स्व' छीन लेना चाहते थे, ताकि स्वतंत्रता का विचार पैदा ही न हो सके। आज भी अनेक शक्तियां हैं, जो लोगों को गुलाम बनाये रखना चाहती हैं। ऐसे में स्वाधीनता का भाव व्यवस्था और हृदय की प्रत्येक जकड़बंदी के विरुद्ध मुक्ति का मार्ग बन सकता है।

क्रांति का विचार और इतिहास–बोध रू क्रांतिकारियों में गुलामी से मुक्ति का भाव आत्मबलिदान और कर्तव्य–बोध की भावना के साथ विकसित हुआ है। इस बोध में सदियों से प्रचलित उस साजिश का भी बोध है, जिसके आधार पर जनमुक्ति के वास्तविक बदलाव को बरगलाया जाता रहा है। दरअसल, नरम दल वालों की तरह क्रांतिकारियों का संघर्ष भी दोहरा था। वे साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था से संघर्ष तो कर ही रहे थे साथ ही सामाजिक बदलाव की वकालत भी कर रहे थे। क्योंकि सामाजिक बदलाव के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। इसलिए उनकी क्रांति के दायरे में सामंत, पूंजीपति भी आते हैं, जो अंग्रेजों के स्वाभाविक साझेदार तो थे ही, सामान्य जन को ठगने और उनका शोषण करने वाली प्रमुख कड़ी भी थे। इस परिप्रेक्ष्य में राम प्रसाद बिस्मिल की कविता 'गुलामी मिटा दो' का उदाहरण लिया जा सकता है।

"दुनिया से गुलामी का मैं नाम मिटा दूंगा,
एक बार जमाने को आजाद बना दूंगा।
बेचारे गरीबों से नफरत है जिन्हें, एक दिन,
मैं उनकी अमीरी को मिट्टी में मिला दूंगा।
बंदे हैं खुदा के सब, हम सब ही बराबर हैं,
जर और मुफलिसी का झगड़ा ही मिटा दूंगा।
जो लोग गरीबों पर करते हैं सितम नाहक,
गर दम है मेरा कायम, गिन–गिन के सजा दूंगा।"[2]

यह महज उबाल नहीं है, क्रांति तथा अपनी भूमिका के विस्तार की कविता है। वास्तविक देश प्रेम की कविता है। देश लोगों से बनता है और लोगों की चिंता ही देश की चिंता है। इस कविता में गरीबों की चिंता है, गरीबों के प्रति नफरत रखने वाली अमीरी को मिट्टी में मिला देने का भाव है और शैतानी किले को तोड़ने का कर्तव्यबोध है, साहस है। जिसकी प्रेरणा देश की सामाजिक स्थितियां तो हैं ही, उसका एक स्रोत साम्यवाद भी था। जो साम्राज्यवादी शासन के

विरोध में, क्रांतिकारियों को विचार के स्तर पर प्रभावित कर रहा था। 1929 में छपी पांडेय हीरालाल व्यग्र की इस प्रतिबंधित कविता में उस स्वर की अनुगूंज सुनायी पड़ती है।

"बलिदानों का ढेर देख बलिवेदी ज्वाला खिल जाए
हो ऐसी हुंकार द्रोहियों के दल के दल हिल जाए।
उड़े पताका साम्यवाद की, अवनति का पथ खाली हो,
फूली, फली पल्लवित, इस उपवन की डाली–डाली हो।"[3]

क्रांति, नैतिकता और समाज रू गदर पार्टी के क्रांतिकारी कर्तार सिंह सराभा, जिन्होंने मातृभूमि के लिए 20 वर्ष की आयु में अपना बलिदान दिया, वे अक्सर एक गीत गाया करते थे। भगत सिंह ने 'शहीद कर्तार सिंह सराभा' नामक लेख में इसका जिक्र किया है – "सेवा देश दी जिंदड़िए बड़ी औखी,६ गल्लां करनीआं ढेर सुखल्लीयां ने। जिन्नां देशसेवा विच पैर पाया, ६ लक्ख मुसीबतां झल्लियां ने।"[4] अर्थात देश–सेवा करना बहुत मुश्किल है, जबकि बातें करना बहुत आसान है। जिन्होंने देश–सेवा के रास्ते पर कदम उठा लिया वे लाख मुसीबतें झेलते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति के लिए हथियार चाहिए था। हथियारों के लिए रुपयों की आवश्यकता थी। जिसके लिए कर्तार सिंह ने डकैती डालने का सुझाव दिया। यह मार्ग उचित नहीं था, किंतु वह नहीं चाहते थे कि रुपयों की कमी से क्रांति में किसी प्रकार की रुकावट आये। जिससे देश का देश के लोगों का भविष्य जुड़ा हुआ था। उससे संबंधित एक घटना का जिक्र करते हुए भगत सिंह लिखते हैं– "एक दिन वे डकैती डालने एक गांव गए। कर्तार सिंह नेता थे। डकैती चल रही थी। घर में एक बेहद खूबसूरत लड़की भी थी। उसे देखकर एक पापी आत्मा का मन डोल गया। उसने जबरदस्ती लड़की का हाथ पकड़ लिया। लड़की ने घबराकर शोर मचा दिया। कर्तार सिंह एकदम रिवॉल्वर तानकर उसके नजदीक पहुंच गए और उस आदमी के माथे पर पिस्तौल रखकर उसे निहत्था कर दिया। फिर कड़ककर बोले, 'पापी ! तेरा अपराध बहुत गंभीर है। तुझे सजाए–मौत मिलनी चाहिए, लेकिन हालात की मजबूरी से तुम्हें माफ किया जाता है।"[5] उन्होंने उसे तब माफ किया, जब उसने लड़की और उसकी माँ के पैरों में गिरकर माफी मांगी। उस माँ ने कर्तार सिंह से दरख्वास्त की कि हो सके तो कुछ धन छोड़ दीजिए, ताकि इस लड़की की शादी हो सके। कर्तार सिंह ने सारा धन माँ के चरणों में रखकर कहा कि आप जितना धन लेना चाहती हैं, ले लीजिये। उस माँ ने थोड़ा धन रखकर बाकी सब कर्तार सिंह की झोली में डालते हुए कहा कि जाओ बेटा तुम्हे सफलता मिले। क्रांतिकारियों के लिए क्रांति साधना थी किंतु सामाजिक सरोकार और सामाजिकों से बनने वाले रिश्ते की अनदेखी उनके यहां प्रायः नहीं मिलती है। यह देश और देशवासियों के प्रति उनका विचार था। वे कोई कार्य करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि उस कार्य के बाद उनका और समाज का, समाज के एक–एक व्यक्ति का कैसा संबंध विकसित होने वाला है। इस आधार पर वह अपने स्थान पर सही भी थे और नैतिक भी। निश्चय ही उनके यहां सशस्त्र क्रांति पर बल था, संसाधनों की पूर्ति के लिए अनैतिक समझे जाने वाले कार्य थे, वर्ग–समन्वय के स्थान पर वर्ग–संघर्ष की भूमिका का आह्वान था। यह सब नरम दल वालों के हिसाब से अनुचित ही नहीं, पाप भी था। किंतु अनेक बार बड़े भाव के लिए उचित–अनुचित और पाप–पुण्य का प्रश्न इतिहास पर छोड़ दिया जाता है।

मुख्यधारा का साहित्य, राजनीति और क्रांतिकारियों की रचनाएँ : क्रांतिकारियों के द्वारा चुना हुआ मार्ग अंग्रेजों के लिए असहनीय तो था ही, नरम दल वालों की दृष्टि में, जिसका नेतृत्व

गांधी कर रहे थे, भी अनुचित और अनैतिक था। उन्हें क्रांति के दर्शन से ही समस्या थी। स्वतंत्रता सेनानी मन्मथनाथ गुप्त ने राम प्रसाद बिस्मिल रचनावली की भूमिका में अपना क्षोभ व्यक्त करते हुए लिखा है – "मैं गांधी का एक अच्छा सिपाही था। इस युग में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल मंत्र अहिंसा बताया गया। मानों राम, परशुराम, कृष्ण, राजा पुरु, शिवाजी, राणा प्रताप, रानी लक्ष्मीबाई आदि भारत में पैदा ही नहीं हुए या भारतीय सभ्यता और संस्कृति में उनके लिए कोई स्थान नहीं था। महात्मा गांधी जब तक जीवित रहे, क्रांतिकारियों के विरुद्ध जेहाद छेड़े रहे। यद्यपि उन्होंने 'हिन्दू समाज' में यह माना था कि क्रांतिकारियों के ही कारण एक के बाद एक शासन सुधार आते रहे।"[6] क्रांतिकारियों के क्रांति दर्शन से सहमत न होने वाले लोगों का ध्यान प्रायः उस विचार की तरफ कम जाता है कि मांग कर ली हुई आजादी में समझौते करने पड़ते हैं, जिसका परिणाम भारत विभाजन के रूप में हमारे सामने है। उसके लिए ये नौजवान सहमत नहीं थे। फिर जबरदस्ती घर में घुस आए और अमानवीय जीवन जीने को विवश करने वाले साम्राज्यवादियों से हाथ जोड़कर आजादी मांगने का औचित्य उन्हें समझ नहीं आ रहा था। इसलिए उन्होंने सशस्त्र संघर्ष का रास्ता चुना और साहित्य को उस संघर्ष का अनिवार्य हिस्सा बनाया। उनके द्वारा लिखित साहित्य को यदि अध्ययन–अध्यापन और शोध के दायरे में लाया गया होता तो आज साहित्य की उपस्थिति अधिक प्रभावशाली और व्यापक होती। कम से कम साहित्य और जीवन का एक गतिशील संबंध बना रहता। कोरा विचार प्रभावशून्य होता जाता है। जहां कुछ शब्दों का संगठन करना साहित्य लेखन मान लिया जाता है, वहीं क्रांतिकारियों की रचनाएं, सामूहिक गान और भावों की एकात्मकता की रक्षा करने में सफल रही हैं। श्री राजेंद्र लहिरी, जिन्हें काकोरी कांड के लिए फाँसी की सजा दी गयी थी, उन्होंने अदालत से निकलते हुए बाहर खड़ी हुई जनता के मन में राष्ट्र भाव जगाने के लिए, उपस्थित लोगों और अपने साथियों के साथ मिलकर गाया था–

"दरो–दीवार पर हसरत से नजर करते हैं।
खुश रहो अहले–वतन हम तो सफर करते हैं।।
इस गुलामी में तो हमको न खुशी आई नजर।
खुश रहो अहले–वतन हम तो सफर करते हैं।।"[7]

स्वदेशी की साधना रू हिंदी और हिंदुस्तानियत को आत्मसात करना, स्वाधीनता की साधना से गुजरना है। स्वदेशी की प्रतिज्ञा स्वाधीनता की साधना का ऐसा ही एक रूप था। आत्मनिर्भरता स्वतंत्रता को प्रशस्त करती है। इस रूप में स्वदेशी का संकल्प एक राजनीतिक, आर्थिक अस्त्र था, जिसने भारत के मन को गहरे अर्थों में प्रभावित किया। प्रेमचंद उर्दू साप्ताहिक पत्र 'आवाज–ए–खल्क में 1905 में 'स्वदेशी आंदोलन' नामक लेख लिखकर पढ़े–लिखे शहरी लोगों को विलायती कपड़े के स्थान पर देशी कपड़े के इस्तेमाल की नसीहत देते हैं। "अगर शहरों में विदेशी चीजों का रिवाज कम होने लगे तो देहातों में आप से आप कम हो जायगा। हम अपने सूबे के तजुर्बे से कह सकते हैं कि यहां देहाती ज्यादातर जुलाहों का बुना हुआ गाढ़ा इस्तेमाल करते हैं और जाड़े में गाढ़े की दोहरी चादरें। उनको परदेशी कपड़ों की जरूरत ही नहीं महसूस होती। हम उन लोगों पर हंसा करते थे जो हम लोगों को विलायती शक्कर खाते देखकर मुंह बनाते थे। हमारी नजरों में वह लोग असभ्य मालूम होते थे। अब हमको तजुर्बा होता है कि वह ठीक रास्ते पर थे और हम गलती पर। विदेशी चीजों का रिवाज सभ्य लोगों का डाला हुआ है

और अगर स्वदेशी आंदोलन को सफलता होगी तो उन्हीं के किए होगी।"[8] स्वदेशी भावना तो है ही, अपने लोगों को मजबूत करने और अंग्रेजों को आर्थिक रूप से क्षति पहुंचाने का मार्ग भी था। इसलिए अंग्रेजों को स्वदेशी आंदोलन से खासी परेशानी रही है। 1930 में रामकवि द्वारा लिखित 'स्वदेशी प्रतिज्ञा' कविता से इस भाव को महसूस किया जा सकता है, जिसे अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था।

"हमारे हिंद वालों के चलन सारे स्वदेशी हो।
पढ़े सब देश की भाषा वचन सारे स्वदेशी हो।
...
करें शोभित हमारे बाग को सब देश के तरुवर।
लगावें जो चमन उसमें सुमन सारे स्वदेशी हो।"[9]

इस कविता में प्रतिबंधित होने जैसा कुछ भी नहीं है, किंतु अंग्रेजों ने उसे प्रतिबंधित किया। यह कविता गांधी के हिन्द स्वराज की तरह भारतीयता का पक्ष अपने ढंग से रखती है। स्वदेश और स्वत्व के प्रति यह राग अंग्रेजों के श्रेष्ठत्व को चुनौती थी। जिस देश को पिछड़ा और असभ्य बताकर अपनी श्रेष्ठ सभ्यता का दावा अंग्रेजों ने किया था, उस को इससे बड़ा और बेहतर उत्तर और क्या दिया जा सकता था। किंतु इसके साथ–साथ ऐसी भी अनेक कविताएं हैं, जो सीधे–सीधे बगावत का ऐलान करती हैं। भारत माता से चण्डिका स्वरूप धारण करने का आह्वान करती हैं और देश हित में तांडव की मांग करती हैं। गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'स्वदेश' का 7 अक्टूबर 1924 में 'विजयदशमी विशेषांक' निकला। इस विशेषांक का संपादन पांडेय बेचन शर्मा उग्र ने किया था। प्रशासन ने उसमे छपी कुछ रचनाओं को विशेष तौर पर राजद्रोह पूर्ण माना। उसमें से एक है श्री रामनाथ लाल सुमन की कविता 'माँ'। किंतु कविता में माँ भारती की छवि सांस्कृतिक स्तर पर 'स्वत्व निज भारत गहै' के भाव को प्रशस्त करती है।

"मां ! अपनी आंखों से क्यों है गूंथ रही नन्हीं बूंदें।
खून छींट दे, आग जला, धधधध लपटें अंबर छू दे।
वे नृशंस बस दर्शन से ही मर जायें बस आंखे मूदे।
अत्याचारी वधिक विदेशी छाती पर न अधिक कूदें।
एक बार मां ! एक बार तू नाच काम बन जायेगा।
ताण्डव की बस एक कला में रक्त पात्र भर जायेगा।"[10]

बड़े भाव के लिए सर्वस्य समर्पण : "मालिक तेरी रजा रहे, औ तू ही तू रहे। /बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।। /जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे। /तेरा ही जिक्र यार, तेरी जुस्तजू रहे।।"[11] अपना जीवन देश की स्वतंत्रता, देश के जन–जन की स्वतंत्रता जैसे बड़े भाव के प्रति समर्पित कर देना ही क्रांतिकारी आंदोलन का मुख्य ध्येय था। 'विद्यार्थी बिस्मिल की भावना' कविता के अंतर्गत बिस्मिल देश के खातिर बुरी से बुरी स्थिति की कल्पना करते हैं। हाथ पैर में जंजीरें हों, सर कटे, फांसी मिले इत्यादि इत्यादि। किन्तु देश की सेवा से मन न विचलित हो। मातृवेदी संगठन के संस्थापक पंडित गेंदालाल दीक्षित कमजोर और रोगग्रस्त हुए तो उनकी पत्नी ने रोते हुए उनसे पूछा कि – मेरा इस संसार में कौन है ? तो पंडित जी ने कहा कि "आज लाखों विधवाओं का कौन है ? 22 करोड़ भूखे किसानों का कौन है ? दासता की बेड़ियों में

जकड़ी हुई भारत माता का कौन है ? जो इन सबका मालिक है वही तुम्हारा भी। ...मुझे दुख है तो केवल इतना ही कि मैं अत्याचारियों को अत्याचार का बदला न दे सका, मन की मन में ही रह गयी। मेरा यह शरीर नष्ट हो जाएगा, किंतु मेरी आत्मा इन्हीं भावों को लेकर फिर दूसरा शरीर धारण करेगी। अब की बार नवीन शक्तियों के साथ जन्म ले, शत्रुओं का नाश करूंगा।"[12] इस तरह का समर्पण और बलिदान का भाव भारत की स्वतंत्रता की जड़ों को सिंचित और पोषित कर रहा था। यह मातृभूमि के प्रति उसी प्रकार की अनन्यता है, समर्पण है जैसा भक्तिकाल के कवियों में उनके अपने ईश्वर के प्रति पाया जाता है। परम्पराएं हमेशा स्थूल नहीं होती हैं। उसकी सूक्ष्म स्तरों पर भी व्याख्या की जा सकती है। भक्तिकाल की कविता में ईश्वर का स्थान क्रांतिकारियों की कविता में माँ भारती ले लेती है। इस परिप्रेक्ष्य में 'मातृ–वंदना' कविता को देखा जा सकता है–

"हे मातृभूमि ! तेरे चरणों में शिर नवाऊँ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ।
माथे पे तू हो चन्दन, छाती पे तू हो माला य
जिह्वा पे गीत तू हो, तेरा ही नाम गाऊँ।
जिससे सपूत उपजें, श्रीराम–कृष्ण जैसेय
उस धूल को मैं तेरी निज शीश पे चढ़ाऊँ।"[13]

जब बिस्मिल को फाँसी दी गयी तो उनके चेहरे पर शिकन नहीं थी। माँ भारती के चरणों में खुद को बलिदान कर देने की संतुष्टि का भाव था। फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर उन्होंने कहा था– "अब न पिछले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़ / एक मिट जाने की हसरत, बस दिले–बिस्मिल में है।"[14] किसी बड़े भाव के प्रति सर्वस्य समर्पण का यह स्वाधीन भाव ही देश की स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि निर्मित करता है।

निष्कर्ष : स्वतंत्रता बहुत व्यापक भावना है। उसमें सभी प्रकार की मुक्ति का भाव निहित है। मुक्ति के प्रति समर्पण और कर्तव्यबोध का भाव निहित है। सुरक्षित जीवन की कामना करने वाले इस दायित्व का वरण न कर सकते थे न कर सकते हैं। यह भाव का वह व्यवहार पक्ष है, जो बलिदान मांगता है। क्रांतिकारियों का जीवन और उनकी रचनाएं व्यवस्था और ह्रदय की जकड़न को तोड़ने वाली ऐसी ही रचनाएँ हैं। व्यवस्थाएं स्वयं को स्थापित करने के लिए अनेक प्रकार के नैरेटिव गढ़ती हैं, शक्ति के बल पर लोगों पर नियंत्रण का प्रयास करती हैं। अंग्रेजों ने भी यही कार्य किया। क्रांतिकारियों ने अपने व्यवहार और रचनाओं के माध्यम से इस नैरेटिव को चुनौती देते हुए देशवासियों में उत्साह भरने का कार्य किया। उनका संघर्ष माँ भारती की मुक्ति के साथ–साथ करोड़ों दीन–दुखियों की सर्वतोमुखी मुक्ति का भी रहा। विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि समय के साथ नयी पीढ़ी के लिए ये कविताएँ इतनी प्रभावशाली नहीं रह जाएंगी। क्योंकि अब पराधीनता की वह स्थिति नहीं है। किंतु वह स्थिति नहीं आये, इसलिए इन क्रांतिकारी रचनाओं और क्रांतिकारियों का प्रासंगिक बने रहना आवश्यक है। देश के प्रति लगाव और जिम्मेदारी तथा व्यक्ति और व्यक्ति के संबंधों का जैसा पाठ हमें क्रांतिकारी रचनाओं में प्राप्त होता है, वह स्वयं में विशिष्ट है, अनुकरणीय है। हमारे मानस पर औपनिवेशिक प्रभाव बना हुआ है। व्यवस्था और जीवन यांत्रिक, अहंकेंद्रित तथा बाजार केंद्रित होता जा रहा है। सरोकार, आदर्श तथा बड़े भाव की सीख विस्मृत हो चुकी है। ऐसे में क्रांतिकारियों का जीवन और उनकी रचनायें,

युवाओं का चरित्र निर्माण करते हुए वर्तमान समय को मानवीय और तार्किक बना सकती हैं।

संदर्भ–सूची

1. संपादक– अमरेश कुमार त्रिपाठी, निराला रचनावली, भाग–1, पृष्ठ– 225, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण– 1983
2. http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%80_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%9F%E0%A4%BE_%E0%A4%A6%E0%A5%8B_/_%E0%A4%B0% E0%A4%BE%E0%A4%AE_% E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0 %A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6_%E0%A4%AC%E0%A4%BF% E0%A4%B8%E0% A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B2
3. संकलन एवं संपादन, रुस्तम राय, प्रतिबंधित हिंदी साहित्य खंड–2, (पांडेय हीरालाल 'व्यग्र'–व्यग्र अभिलाषाएँ) पृष्ठ– 282, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण–1999
4. चमन लाल, गदर पार्टी नायक कर्तार सिंह सराभा, पृष्ठ–62–63, नेशनल बुक ट्रस्ट, पहला संस्करण–2007
5. वही, पृष्ठ–64
6. संपादक– दिनेश शर्मा, आशा जोशी , रामप्रसाद 'बिस्मिल' रचनावली, पृष्ठ– 13–14, स्वर्ण जयंती, संस्करण–1997
7. संपादक–आचार्य चतुरसेन शास्त्री, चाँद फाँसी अंक, पृष्ठ–320, स्वर्ण जयंती, प्रथम संस्करण–1997
8. संपादक–राम आनंद, प्रेमचंद रचनावली–खंड–सात, पृष्ठ–40, जनवाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1996
9. संकलन एवं संपादन, रुस्तम राय, प्रतिबंधित हिंदी साहित्य खंड–2, पृष्ठ– 267, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण–1999
10. नरेन्द्र शुक्ल, उपनिवेश, अभिव्यक्ति और प्रतिबन्ध (ब्रिटिश कालीन उत्तर–प्रदेश में प्रतिबंधित साहित्य), पृष्ठ– 167, अनन्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2017
11. संपादक– कमलदत्त पाण्डेय, हिन्दू पंच बलिदान अंक, पृष्ठ–149, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पुनर्मुद्रण–1996
12. संपादक– आचार्य चतुरसेन शास्त्री, चाँद फाँसी अंक, पृष्ठ–302
13. http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%83-%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%A8%E0%A4%BE_/_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6_%E0%A4%AC%E0%A4% BF%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4% AE%E0%A4%BF%E0%A4%B2
14. संपादक– आचार्य चतुरसेन शास्त्री, चाँद फाँसी अंक, पृष्ठ–319

❒❒❒

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पता– फ्लैट नंबर– 69, तरुण विहार अपार्टमेंट, सेक्टर– 13, रोहिणी, दिल्ली– 110085

मोबाइल– 9811870076, ईमेल आईडी– satyaraghuvanshi@gmail.com

ज्योतिबा फुले का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान : एक सामाजिक विश्लेषण

–सरिता कुमारी

भारत में राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व जैसे लोकतांत्रिक भावों का विकास आधुनिक काल से ही प्रारंभ हुआ और इसे गति भी मिली। भारतीय समाज और भारतीय संस्कृति का स्त्री और दलित सवाल को एक नया रूप मिला। पहली बार ऐसे सवाल राष्ट्रीय सवाल बने। जब सामाजिक भेदभाव अपनी चरम सीमा पर थे तब फुले जैसे समाज सुधारक का जन्म हुआ और अपने जन्म के उद्देश्य को समझते हुए क्रांतिकारी आन्दोलन का कार्य किए।

सामाजिक, शैक्षिक क्रांति के प्रणेता के रूप में ज्योतिबा फुले को जाना जाता है। शिक्षा की ज्वाला महाराष्ट्र में जलाने के बाद पूरे भारत को आलोकित करने का काम इनके द्वारा किया गया। शिक्षा, संस्कार का दूसरा नाम है तथा नीति ही मानव जीवन का आधार है। इसी विचार को आधार बनाकर ज्योतिबा ने बिना भेद–भाव के समाज के प्रत्येक लोगों को स्वावलंबी बनाने का कार्य प्रारंभ किया। जब तक समाज में स्त्रियों को शिक्षित नहीं किया जाएगा तब तक शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। इसीलिए पुरुषों से अधिक स्त्री–शिक्षा पर बल दिया। शिक्षा का अधिकार सर्वप्रथम उपेक्षित लोग है उसके बाद अपेक्षित लोग। यह विचार ज्योतिबा फुले का था। समान शिक्षा का अधिकार, प्राथमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा का बीज इन्होंने ही बोया था। उन्नीसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण एवं सामाजिक क्रांति के साथ शिक्षा के माध्यम से नारी का उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले अपने जीवनकाल में कई पाठशाला, छात्रावास आदि खुलवाए। कई तरह की यातनाएँ भी समाज और परिवार से इन्हें मिली। मैकाले की शिक्षा नीति का भी विरोध करके उसमें आवश्यक परिवर्तन करवाए।

की–वर्ड :–समानता, समाज, ज्योतिबा फुले, वंचित, प्रकृति, शिक्षा, नारी, सावित्री बाई फुले।

मूल आलेख :–

महात्मा ज्योतिबा राव फुले का बहिष्कृत समाज वह है जो समाज के दलित, अल्पसंख्यक, महिलाएँ आदि सदियों से प्रताड़ित होती रही है। इनके विकास के लिए गए प्रयासों का अवलोकन करने की कोशिश की गयी है। विश्लेषण के क्रम में तर्क देकर प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि भारत विभिन्न धर्म मजहब आदि की खान है। यहाँ का प्राचीन धर्म हिन्दू रहा है जो कि परंपरागत कुरीतियों एवं सवर्ण समाज की मकड़जाल में फंसा हुआ है। सीमित एवं संकीर्ण मानसिकता की बहुलता थी। लोगों की सेवा करने वाले लोगों को हेय दृष्टि से देखने का कार्य किया जाने लगा। उन्हें शूद्र के नाम से पुकारा जाने लगा। एक उच्च समाज का निर्माण करके मानव

समाज को जानवरों से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर रहे। महात्मा फुले एक ऐसे समाज सुधारक बनकर आए जिनके द्वारा समाज के वंचितों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला और समाज एवं अंग्रेजी सत्ता से संघर्ष किया जाय।

ज्योतिबा फुले उन्नीसवीं सदी के महाराष्ट्र राज्य के समाज सुधारकों के बीच अप्रतिम स्थान रखते हैं। आधुनिक भारत के जनक और भारतीय नवजागरण के पिता के रूप में ज्योतिबा फुले स्थापित हैं। मनु के द्वारा व्यवस्थित असमानताएँ इन्हें उचित नहीं लगा। गैर ब्राह्मणों और शूद्रों को न सिर्फ अपमानित होते देखा बल्कि हाथियों से कुचलवाते देखा। गैर ब्राह्मणों को अपनी पीठ के पीछे झाड़ू बांधकर चलते देखा ताकि उसके चलने के पीछे–पीछे झाड़ू लगते जाय। महिलाओं के शोषण का भी ठिकाना न रहा। सत्ती प्रथा इनके द्वारा देखी हुई घटना है। डॉ० अम्बेडकर ने फुले के संबंध में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'शूद्र कौन थे' में लिखते हैं, "जिन्होंने हिन्दू समाज की छोटी जातियों को, उच्च्य वर्णों के प्रति उनकी गुलामी की भावना के संबंध में जागृत किया और जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति पाने से भी सामाजिक लोकतंत्र (की स्थापना) अधिक महत्वपूर्ण है, इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया, उस आधुनिक भारत के महान शूद्र महात्मा फुले की स्मृति को सादर समर्पित।"1

भारत में राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व जैसे लोकतांत्रिक भावों का विकास आधुनिक काल से ही प्रारंभ हुआ और इसे गति भी मिली। भारतीय समाज और भारतीय संस्कृति का स्त्री और दलित सवाल को एक नया रूप मिला। पहली बार ऐसे सवाल राष्ट्रीय सवाल बने। जब सामाजिक भेदभाव अपनी चरम सीमा पर थे तब फुले जैसे समाज सुधारक का जन्म हुआ और अपने जन्म के उद्देश्य को समझते हुए क्रांतिकारी आन्दोलन का कार्य किए। ज्योतिबा के पिता गोविन्दराव ने असामाजिक व्यवस्थाओं से बचपन में ही अवगत करा दिया था। शिक्षा से वंचित समाज की परिस्थितियों से परिचय करा दिया गया था। बाल्यावस्था से ही शिक्षा, रोजगार और सम्मान से वंचित दलितों, पिछड़ों को देखकर फुले के मन में प्रतिक्रिया होती रहती थी। यही बड़ा होने पर कार्यरूप में बदल गयी। ज्योतिबा का प्रमुख उद्देश्य था समाज से असमानता समाप्त हो, निम्न जातियों और स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो। क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही लोगों में चेतना का संचार हो सकता है। फुले कहते हैं– "विद्या बिना मति गयी, मति बिना नीति गयी, नीति बिना गति गयी, गति बिना वित गया, वित बिना शूद्र गये, इतने अनर्थ एक अविद्या ने किया।"2

एकमात्र शिक्षा के अभाव में ही इतने असामाजिक कार्य हो जाते हैं। इसी कारण 1848 ई०3 में सबसे पहले फुले दंपति ने कन्याशाला का आरंभ किया। 1849 में इसके परिणामस्वरूप उन्हें घर छोड़ना पड़ा। मुंबई सरकार के अभिलेखों से पता चलता है कि इनके द्वारा पुणे तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में बालक–बालिकाओं के लिए 18 विद्यालय खोले गए। 1855 में पुणे में भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला खोला गया। 1852 में मराठी पुस्तकों का प्रथम पुस्तकालय खोला गया। 1851 में फिमेल एज्यूकेशन सोसायटी, सितम्बर 1853 में सोसाइटी फॉर प्रमोटिंग द एज्यूकेशन ऑफ महाराष्ट्र एण्ड मांगरू की स्थापना की गई। कन्या शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान के कारण मुम्बई (महाराष्ट्र) सरकार की ओर से उन्हें पुणे के संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य मेजर कैंडी ने इन्हें 16 नवम्बर 1852 को 193 रुपये के दो शॉल भेंटकर सम्मानित किया। ज्योतिबा फुले आधुनिक विश्व के ऐसे पहले चिंतक थे जिन्होंने नारी को पुरुष से श्रेष्ठ माना है। उनका कहना था नारी को वे सभी अधिकार प्राप्त हो जो पुरुषों को मात्र प्राप्त है।

यदि पुरुष बहुपत्नि विवाह का अधिकारी है तो स्त्री को भी बहुविवाह की अधिकारिणी होनी चाहिए अन्यथा पुरुषों को यह अधिकार निषिद्ध कर देना चाहिए।4

इससे स्पष्ट पता चलता है कि कितना मुखर विचार था। उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलनों एवं सुधारवादियों में स्त्री के प्रति काफी चिन्ता की। स्त्रियों की भूमिका केवल गृहकार्य तक ही थी। ज्योतिबा के क्रांतिकारी विचारों से भारतीय सामाजिक इतिहास को शक्ति तथा गरिमा प्रदान की गयी। ज्योतिबा फुले का शिक्षा के क्षेत्र में अवदान के पूर्व स्थिति को देखा जाय तो पता चलता है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति से भिन्न शिक्षा पद्धति थी। एक समय तो उच्च वर्ग तक ही शिक्षा व्यवस्था सीमित थी। संस्कृत, व्याकरण, विधि, वैधक, धर्मशास्त्र और अंकगणित आदि की पढ़ाई होती थी। जिसे निम्न जाति वालों के लिए नहीं था।5 अपनी पुस्तक 'गुलामगिरी' में स्वयं कहते हैं ब्राह्मण अध्यापकों को यह चिंता थी कि यदि अछूतों को स्कूल में भर्ती कर लिया गया तो विद्रोह हो जाएगा। यही कारण है कि अंग्रेजी सरकार को भी शिक्षा के सवाल को हल करने में समस्या आ रही थी।6

अंग्रेजी शासन के पहले प्रजा को शिक्षा देने का दायित्व सरकार पर नहीं था। इसका दायित्व समाज के उच्च वर्ग के लोगों ने ले रखा था। शिक्षा को धर्म से जोड़कर स्वकेन्द्रित कर दिया गया था। निम्न जातियों को शिक्षा से पूरी तरह दूर कर दिया गया था। इनके लिए धर्मग्रंथों या धर्म विषयक ग्रंथों को पढ़ना तो दूर छूना भी अपराध समझा जाता था। भूलवश या किसी कारणवश यदि इस विषय के संपर्क में आ जाते थे तो अपवित्र समझकर उनकी शुद्धि का विध ाान धर्म के ठेकेदारों ने बना रखा था। इतना ही नहीं बल्कि निम्न जाति के लोगों के लिए प्रताड़ित करने की भी व्यवस्था थी।7

यह सर्वविदित है कि भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना से लोगों में चेतना आयी। शिक्षा के प्रति भी दृष्टि बदली। पहले जहाँ किसी खास वर्ग तक शिक्षा सीमित थी वही व्यापक रूप से सर्वसाधारण वर्ग के लिए भी सुलभ होने लगी। भारत के प्राचीन साहित्य का अध्ययन, उसका विकास के साथ–साथ अध्यापकों को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए शास्त्रों का ज्ञान और उसके प्रचार–प्रसार का कार्य किया जाने लगा। इस तरह शिक्षा का द्वार सभी के लिए खुल गया। अब एक नये समाज के निर्माण और उसके विकास के लिए शिक्षा का सूत्रपात हुआ। लेकिन अंग्रेजी सत्ता भी साफ नीयत से इस पर काम नहीं किए। फिर भी समय परिवर्तनशील होता है। थोड़ी भी चेतना निम्न वर्ग में आयी कि सामाजिक चिंतकों के द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन चलाए जाने लगे। सन् 1840 में बाम्बे नेटिव एजूकेशन सोसायटी ऑफ सरकारी विद्यालयों का एकीकरण करके शिक्षा परिषद का पुनर्गठन किया गया। इस तरह एक ठोस शुरूआत शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में की गई जिसका परिणाम हुआ कि निम्न जाति के लिए शिक्षा के रास्ते और आसान हो गए।8

प्राचीन काल से ही स्त्री और दलित वर्ग जहां शोषण के शिकार होते रहे, इन दोनों के लिए ज्योतिबा मध्यकाल में आगे आए। उनका कहना था कि जब तक समाज में स्त्री जाति को शिक्षित नहीं किया जाता है तब तक घर–परिवार अशिक्षित ही रहेगा। आदिकाल से जो परंपरा रही है कि माता ही बच्चों की प्रथम गुरु होती है उनके द्वारा ही दिए गए शिक्षा और संस्कार बच्चे सीखेंगे। ज्योतिबा ने इसके लिए कन्या पाठशाला खोला। धर्म के ठेकेदार और कट्टरपंथी विचारक इसका पुरजोर विरोध करने लगे। उनका मत था कि स्त्रियाँ प्रकृति से दुष्ट, चंचल और विवेकहीन होती है। वह विश्वास के योग्य नहीं है। इनके शिक्षित हो जाने से सामाजिक–व्यवस्था

अस्त–व्यस्त हो जाएगी। फुले का इस विचार से कोई लेना–देना नहीं रहा और अपने फैसले पर अडिग रहे। सबसे पहले अपने पत्नी को घर पर पढ़ाया और पाठशाला में एक शिक्षिका के रूप में स्थापित किया।9

1848 में पहली बार कन्या पाठशाला खोलने के पहले दिन से ही छात्राओं का आना प्रारंभ हो गया। यह बात और है कि जिसके पहले दिन से ही छात्राओं का आना प्रारंभ हो गया। यह बात और है कि जिस देश में आदि शक्ति के रूप में नारी को स्थान दिया गया उसी देश में नारी की स्थिति दयनीय हो गयी थीं। इन्हीं के उत्थान का बीड़ा उठाया गया। अपने विद्यालय में हर वर्ग, हर जाति की बालिकाओं को शिक्षित किया जाने लगा। अंकगणित और व्याकरण के मूलभूत सिद्धान्त जैसे विषय पढ़ाए जाने लगे। उस समय सादाशिवराव गोवडे नामक समाजसेवी ने तन मन धन से सहयोग किये।10

कट्टरपंथियों के गढ़ में ज्योतिबा महार, भंगी शूद्र अतिशूद्र आदि की लड़कियों को एक तरफ पढ़ाने का कार्य करते थे वहीं सामाजिक विरोधियों का कड़ा विरोध सहते थे। स्थिति एक समय ऐसा आ गया कि इन्हें धमकी तक मिलने लगी। इनके पिता गोविन्दराव को गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी गयी। सामाजिक दबाव के कारण ज्योतिबा अपने विद्यालय के लिए एक शिक्षिका ढूँढने लगे। नहीं मिलने पर स्वयं पत्नी सावित्री बाई को शिक्षित करके सहायक शिक्षिका के रूप में नियुक्त किया। पत्नी को भी सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ा। एक हिन्दू स्त्री के द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने का कार्य देखकर समाजद्रोही, धर्मद्रोही आदि कह दिया गया। इतना ही नहीं कुछ कट्टरपंथी के द्वारा तो आने–जाने के क्रम में फिकरेबाजी की जाती थी, छींटे कसे जाते थे। कीचड़, पत्थर आदि फेंके जाते थे। सावित्री बाई फुले अपनी प्रतिक्रिया में यही कहती थी कि मेरे उपर फेंके गये पत्थर और कीचड़ मेरे लिए फूलों के जैसे हैं। मैं अपना कर्त्तव्य निभा रही हूँ। भगवान आपको क्षमा करें।11

धीरे–धीरे स्त्री शिक्षा और निम्न जातियों की हिमायती करने वाले के रूप में ज्योतिबा का नाम सम्पूर्ण महाराष्ट्र में फैल गया। इस मिशन में जहाँ सफलता मिल रही थी वहीं कई अत्याचार का सामना भी करना पड़ा। यहाँ तक कि इन्हें घर से भी निकाल दिया गया था। बावजूद सामाजिक प्रताड़ना के अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं हटे। ज्योतिबा फुले को लगने लगा मात्र स्कूली शिक्षा तक सीमित रहने से ही मिशन पूरा नहीं हो सकता हैं इससे तो समाज के सीमित लोग ही शिक्षित हो सकते हैं। इसलिए समाज के प्रत्येक शिक्षित का दायित्व बनाता है कि वह अपने पास–पड़ोस के लोगों को भी शिक्षित करे, ज्ञान का दीप जलाएँ। इसके लिए प्रौढ़ शिक्षा, रात्रि पाठशाला, पुस्तकालयी शिक्षा आदि पर बल दिया जाने लगा। 1852 में पूना लाइब्रेरी की स्थापना की गयी। पूणे में लक्ष्मीबाई रोड पर एक वाचनालय था लेकिन वह कुछ खास वर्ग तक ही सीमित था। गरीब तबके के लोग इससे वंचित थे। एक बेहतर पुस्तकालय के निर्माण के लिए जहाँ समर्पित व्यक्ति चाहिए जो शिक्षित हो, समय पर पुस्तकालय खोले, पुस्तकों का रख–रखाव करे, लोगों को पुस्तक उपलब्ध कराए। ऐसी समस्याओं से घबराने के बजाय एक मकान में ही पुस्तकालय की स्थापना कर दी गयी और स्वयं कार्यभार संभालने लगे।12

इनके अथक प्रयास से अछूतों की शिक्षा के विषय में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आने लगा। भारत सरकार के मार्गदर्शन के लिए 19 जुलाई 1854 को शिक्षा के संबंध में एक ज्ञापन सौंपा जिसमें स्पष्ट लिखा था कि "जो करीब जनता खुद को मेहनत से भी शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ है, उसे जीवन में उपर्युक्त और व्यावहारिक ज्ञान के लिए योग्य बनाने हेतु शिक्षा दी जाये। हमारी

इच्छा है कि सरकार भविष्य में उचित कदम उठाकर इस लक्ष्य को हासिल करे। इसके लिए सरकार आर्थिक व्यय करने के लिए तैयार है। इस ज्ञापन पत्र में आगे यह भी लिखा था कि किसी भी विद्यार्थी को जाति के कारण सरकारी विद्यालय या महाविद्लाय में प्रवेश देने से इंकार नहीं किया जावे। वुड का यह ज्ञापन भारतीय शिक्षा क्षेत्र के इतिहास में शिक्षा संबंधी महान, आदेश के रूप में जाना जाता है।"13

इस विज्ञापन को शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर के रूप में शामिल किया गया। भारत में शिक्षा को धीरे–धीरे गति मिलने लगी। चार्ल्स वुड की इस शिक्षा नीति में भी बहुत गहराई छुपी हुई है। इसे मात्र बहुमुखी शिक्षा प्रसार की नीति ही मात्र नहीं समझना चाहिए बल्कि अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे। सरकार के उच्च पदों पर जितने भी अधिकारी पदस्थापित रहते थे सभी चाहते कि निम्नवर्ग के लोग इस पद पर कभी आसीन न हो। 1855 में अछूतों के लिए विद्यालय खोलने का आवेदन सरकार को दिया गया और इसके अनुसार सरकार के द्वारा सरकारी विद्यालय खोला गया। शिक्षा बोर्ड ने अपनी एक रिपोर्ट में लिखा कि "यह पहली बार ही अवसर है कि हमलोगों ने अस्पृश्यों के लिए विद्यालय खोला।"14

भारतीय शिक्षा के प्रेमी ज्योतिबा फुले पहले भारतीय थे जिन्होंने दलितों, महिलाओं में बहुत जोर–शोर से शिक्षा का प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाया। भारत की जटिल सामाजिक–व्यवस्था, पुरानी दासता, व्यापक गरीबी, धार्मिक कुरीतियाँ, जातिगत विभेद आदि के कारण शिक्षा की मूलभूत कल्पना ही समाप्त होती जा रही थी। इसके लिए इन्होंने कहा कि शूद्रों, दलितों, मेहनतकश के बच्चों को यदि पीढ़ी दर पीढ़ी शिक्षा प्राप्त नहीं होगी तो किसी खासवर्ग के गुलाम बन कर ही रह जाएंगे। इसलिए इनके लिए भी एक अलग स्कूल खोला जाय। यहाँ हर जाति के शिक्षकों की भर्ती की जाय। व्यक्तिगत या जातीय आधार पर कुछ लोगों के द्वारा जो संचालित शिक्षण है वह समाज के सभी वर्ग के लिए न्याय नहीं कर सकते हैं। इस तरह उनके आंदोलन आगे बढ़ते गये।

ज्योतिबा का संघर्ष चलता रहा। शिक्षा का दीप धीरे–धीरे और अधिक संख्या में जलने लगा। कई असामाजिक घटनाएँ समाज में होती रही। एक समय ऐसा हुआ कि 1856 में महार जाति के एक विद्यार्थी को धारवाड़ के एक सरकारी विद्यालय में प्रधानाध्यापक ने प्रवेश देने से मना कर दिया। इस मुद्दे को लेकर मुंबई सरकार और सभी वर्ग के विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालय में प्रवेश देने से मना नहीं किया जा सकता है। इस पर राय देते हुए लन्दन में स्थित कंपनी के संचालक ने लिखा कि "हमारा उद्देश्य है कि सरकारी शिक्षा संस्था सभी वर्गों के लिए खुली होनी चाहिए। कुछ अधिकारी मुंबई सरकार के डर से सदियों से चली आ रही दूषित परंपराओं तोड़ने से कतराते थे, परंतु अब मुंबई सरकार को चेतावनी दी जाने से उनके होश ठिकाने आये हैं और अब उन्होंने यह घोषणा की है कि सरकारी खर्च से चलने वाले सभी विद्यालय जाति–पांति निषेध रूप से सभी वर्गों के लिए खुले रहेंगे।"15

धीरे–धीरे शिक्षा की क्रांति का प्रभाव ब्राह्मण–वर्ग पर भी पड़ने लगा। ज्योतिबा के साथ सहानूभूतिपूर्वक लोग आगे बढ़ने लगे। कट्टरता की चरम सीमा होने के बावजूद इनके विचारों से प्रभावित होकर साथ मिलना बहुत बड़ी बात है। लेकिन मात्र दयाभाव से संतुष्टि मिलना फुले को पसंद नहीं था। उच्चवर्ग को प्राप्त समस्त अधिकार निम्नवर्ग को भी मिले। ज्योतिबा का स्पष्ट विचार था कि "निम्न वर्गों को इस प्रकार की शिक्ष दी जाय कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकारों व सामाजिक समानता के लिए लड़ सकें।"16

शिक्षा अब सर्वव्यापक हो गया। स्थिति यह बनने लगी कि यदि पुराण, धर्मशास्त्र, इतिहास आदि निम्न वर्ग भी पढ़ने लगे। कुछ लोगों को डर सताने लगा कि धर्मशास्त्र का अर्थ निम्न वर्ग के छात्र समझने लगेंगे तो इसका परिणाम उच्च वर्ग के लोगों पर भी पड़ने लगेगा। जयोतिबा ने तो पहले ही स्मृति, संहिताकार और सामाजिक कानून के ठेकेदारों का पर्दाफाश कर दिया था। दिन–प्रतिदिन बैठकों का दौर प्रारंभ होने लगा। फुले के सहयोगियों का विचार आया कि निम्नवर्ग के छात्रों को केवल पढ़ना–लिखना सिखाया जाय और अंकगणित ही पढ़ाया जाय, जबकि ज्योतिबा इसे मानने को तैयार नहीं थे। उनका कहना था कि प्रत्येक छात्र अपने जीवन के हितकारी–अहितकारी बातों को समझना सीखे। अच्छे–बुरे की पहचान करना सीखें। "अपने अधिकार हासिल करने के लिए केवल लड़ने के लिए ही नहीं वरन उनकी रक्षा के लिए भी उन्हें तैयार रहना चाहिए।"17

हमेशा जगाए रखने के लिए कई कार्य किये गये। हालांकि इनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत खराब थी। कारण कि पति–पत्नी निःस्वार्थ भाव से बिना वेतन लिये शिक्षण कार्य में लगे रहते थे। स्वयं की जीविका से वे उलझे रहे। कुछ कट्टरपंथियों के द्वारा तो इनकी हत्या के प्रयास भी किए गए। लेकिन बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे। इसाई मिशनरियों के एक निपुण अध्यापक और निम्नवर्गों के शुभचिंतक के रूप में प्रसिद्धि मिलने लगी। जब हंटर आयोग कमीशन की स्थापना हुई तब कई संस्थानों आयोगों से विचार–विमर्श लिये गये। ज्योतिबा फुले के विचार भी लिये गये। हंटर आयोग (1882) ने दलितों, महिलाओं में शिक्षा के प्रसार की सिफारिश तो की लेकिन कोई ठोस कार्य नहीं किया गया।18

भारतीय शिक्षा के प्रेमी ज्योतिबा फुले पहले भारतीय थे जिन्होंने दलितों महिलाओं में बहुत जोर–शोर से शिक्षा का प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाया। भारत की जटिल सामाजिक व्यवस्था, पुरानी दासता, व्यापक गरीबी, धार्मिक कुरीतियाँ, जातिगत विभेद आदि के कारण शिक्षा की मूलभूत कल्पना ही समाप्त होती जा रही थी। इसके लिए इन्होंने कहा कि शूद्रों, दलितों, मेहनतकश के बच्चों को यदि पीढ़ी–दर–पीढ़ी शिक्षा प्राप्त नहीं होगी तो किसी खास वर्ग के गुलाम बन कर ही रह जाएंगे। इसलिए इनके लिए भी एक अलग स्कूल खोला जाय। यहाँ हर जाति के शिक्षकों की भर्ती की जाय। व्यक्तिगत या जातिय आधार पर कुछ लोगों के द्वारा जो संचालित शिक्षण है वह समाज के सभी वर्ग के लिए न्याय नहीं कर सकते हैं। इस तरह उनके आन्दोलन आगे बढ़ते गये।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः ज्योतिबा राव अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के दलित–वंचित, शोषित, मजदूर आदि वर्गों के विकास के लिए जिया। अठारहवीं सदी के अंत से शुरू करके जीवन के अंतिम समय तक वंचितों को अधिकार दिलाने के लिए हमेशा प्रयास किया जिसका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों, कृषकों, मजदूरों, शूद्रों, शोषितों आदि के उत्थान और त्याग के लिए ज्योतिबा आज भी याद किए जाते हैं। वे सदियों से पीड़ितों को शिक्षित करने, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए हमेशा तत्पर रहे। समाज को स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्यों की स्थापना के साथ–साथ नए मूल्यों की नींव रखी। प्राचीन काल से चली आ रही दासता के बंधनों को तोड़कर शोषितों के कल्याण के लिए एक नवीन मार्ग तैयार किया। फुले का दर्शन, धर्म का इस्तेमाल सामाजिक असमानता को सही ठहराने के लिए किए गए प्रयासों के विरोध पर आधारित था न कि किसी धार्मिक सुधार या आंदोलन से उनका संबंध था। उन्होंने अपनी

रचनाओं के द्वारा स्पष्ट करना चाहा कि तर्क और नैतिकता के विरुद्ध किसी भी नियम अथवा सिद्धांत को उचित नहीं माना जा सकता है। समाज को शिक्षित होना इसके लिए अति–आवश्यक है। जितनी सशक्त और उचित शिक्षा मिलेगी उतना मजबूत और सामर्थ्यवान समाज का निर्माण संभव है। यही शिक्षा के माध्यम से ज्योतिबा के द्वारा दिया गया संदेश था।

संदर्भ संकेत :

1. डॉ० अम्बेडकर. 'शूद्र कौन थे ?' पुस्तक की समर्पण पत्रिका, 10 अक्टूबर 1946 के हवाले से सुभाष गताडे, आलेख : 1857 का संग्राम और शूद्र–अतिशूद्र, 1857 : निरन्तरता और परिवर्तन, पृ० 284.
2. डॉ० एम० बी० शाह, भारतीय समाज क्रान्ति के जनक महात्मा ज्योतिबा फुले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2016, पृ० 35.
3. अनुवादक वेदकुमार वेदालंकार, शेतक याचा आसूद–किसान का कोड़ा, महाराष्ट्र, शासन, मुम्बई, 1996, पृ० 01.
4. डॉ० हेमलता आचार्य, भारत में सामाजिक क्रांति के पथ–प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2015, पृ० 61.
5. के० एन० भावलकर, आटो–बायोग्राफी (मराठी), पापूलर प्रकाशन, बॉम्बे, 1997, पृ० 90.
6. वेदकुमार वेदालंकार, गुलामगिरी. महात्मा ज्योतिबा फुले महाराष्ट्र शासन, मुम्बई, 1994, पृ० 110.
7. यं०दि० फड़के, महात्मा फुले गौरव ग्रन्थ–खण्ड प्रथम, सम्पादक हरिनके, महाराष्ट्र राज्य शिक्षण विभाग, मुम्बई, 1991, पृ० 122.
8. डॉ० बैजनाथ पुरी. भारतीय संस्कृति के मूल तथ्य प्राच्य इतिहास विभाग, लखनऊ, सुलभ प्रकाशन, वर्ष 1996, पृ० 451.
9. सर जार्ज आटो ट्रेवेल्यान, द लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ लार्ड मैकाले, पृ० 329–330.
10. एल० जी० मेश्राम विमलकीर्ति (अनुवादक), महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली, तृतीय नाटक राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990, पृ० 17.
11. अकाल पीड़ितों की सहायता हेतु पत्र 17 मई, 1877, ज्ञान प्रकाश पत्र – 24 मई 1877, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1990.
12. जियालाल आर्य, ज्योतिपुंज महात्मा फुले, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 78–99.
13. महात्मा ज्योतिबा फुले. गुलामगिरी, सम्यक प्रकाशन, पूणे, 1873, पृ० 102.
14. राजभोंसले याचार, छत्रपति शिवाजी (काव्य), पुरन्द्रे प्रकाशन, मराठी, बॉम्बे, 1978, पृ० 206.
15. भवानी लाल भारतीय, नवजागरण के पुरौधा दयानन्द सरस्वती, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, 1983, पृ० 107.
16. सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, विवेकानन्द चरित्र. अनुवादक पं० मोहिनी मोहन गोस्वामी. रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1991, पृ० 107.
17. रोमां रोला. रामकृष्ण परमहंस (सम्पादक अनुवादक डॉ० रघुराज गुप्त, धनराज विद्यालंकार), इलाहाबाद, 1978, पृ० 98.
18. धनंजय कीर, डॉ० अम्बेडकर लाइफ एण्ड मिशन, पौपुलर पब्लिकेशन, मुम्बई, 2018, पृ० 05.

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, ज्योतिन प्रकाश कुशवाहा
राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
झील रोड, हजारीबाग, झारखण्ड, पिन नं०–825301, फोन नं०–6200763170

National Education Policy (NEP) 2020: Promotion of Indian Languages, Multilingual Education, and the Three Language Formula

–Swati Dwivedi

Abstract:

Language is not only the medium of expression but also the only source of development, communication, and preservation of our thoughts, civilization, culture, art, and heritage. India has 121 major languages, each of which is spoken by more than 10,000 people. More than 19,500 languages or dialects are spoken in India as mother tongues. Multilingualism has great cognitive benefits for young students. Holistic and critical thinking, which is one of the objectives of the National Education Policy (NEP) 2020, will be fulfilled only when the child receives education in his own language. Only then does the child understand the concept by doing holistic thinking and linking one subject to another. To promote India's cultural heritage, ancient knowledge, and tribal knowledge, education in the Indian language is necessary. The dream of "*Ek Bharat Shresth Bharat* Dream" will come true by preserving Indian art, culture, civilization, and tribal traditions through Indian languages.

That's why NEP 2020 for the development of Sanskrit language arranges for the Sanskrit Knowledge Systems, Simple Standard Sanskrit (SSS), and also promotes Indian classical languages: Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Odia, Pali, Persia, Prakrit, and other regional languages; Indian sign language (ISL); and promotes Indian languages in higher education institutions and programmes, including four-year B.Ed. dual degree programmes in language and education; and an Indian Institute of Translation and Interpretation (IITI). Further, it is also proposed that a new institution for languages be established. A National Institute for Pali, Persian, and Prakrit will also be set up on a university campus.

The main aim of this study is to determine how the New National Education Policy promotes Indian languages, the three-language formula, and multilingual

education.

Key words: National Education Policy 2020,The Three Language Formula, Vernacular Languages in NEP 2020, and Need to Encourage Indian Language.

1. Introduction

India is a country where languages change every 15 to 20 kilometres. In order to promote arts and culture, it is very important to promote Indian languages. People in India talk to each other in their native language, which also shows their culture and traditions through their language.Even Languages build harmonious relations. India is a multilingual country with a diverse cultural heritage. Language is a vehicle for gathering knowledge and a means of communication with the people in one's immediate vicinity, across the country, and abroad. The 21st century has witnessed a sea change due to technological advancement and globalization. India's NEP 2020 is to mesh the new learning outcomes with the changing world. India is home to 122 languages of which 22 languages are spoken by over one million people while remaining 100 languages are spoken by more than 10,000 people. India has lost 220 languages or dialects in the last 50 years, and UNESCO has declared 197 languages "endangered."

Multilingualism is yet effort is moving towards achieving the goal of education as also the vision of Indian Constitution. National education policy 2020 while deliberating on languages Education in school underscores the need for recognition and promotion of multilingualism as the path to realising the fundamental aim of schooling and education

2. Meaning of Indian language and Multilingualism

Indian languages are those spoken in the state of India. hundreds of languages spoken in India, 22 are mentioned in the Indian Constitution: Assamese, Bengali (Bangla), Dogri, Gujarati, Hindi, Kashmiri, Konkani, Maithili, Marathi, Nepali, Oriya, Punjabi, Sanskrit, Sindhi, and Urdu all belong to the Indo-Aryan group of the Indo-Iranian branch of Indo-European; Kannada, Malayalam, Tamil, and Telugu belong to the Dravidian language family; and, of the three remaining languages, Manipuri (Meitei), spoken in Manipur, and Bodo, spoken in northeaster India, are usually classified as belonging to the Tibeto-Burman branch of the Sino-Ti, Man, Man, Man, of the remaining three: Manipuri (Mei), Mani belong to the Dravidian language family; of the India's richness is marked by her cultural, ethnic, and linguistic diversity. Languages enrich our cultural, social, and educational practices. Bhasha Sangam, under the *Ek BharatShresthaBharat* initiative, celebrates the unique features of our country by promoting languages among young learners in school. Schools and educational institutions provide multilingual exposure to students in the **22 Indian languages listed in Schedule VII of the Constitution** of India**.**

Bhasha Sangam brings to **students, teachers, parents and those interested in getting familiarized** with and learning Indian languages, **the 100 sentences in various themes** in **22 Indian languages** to be practiced by schools with creative

activities to enhance language learning. This multilingualism characteristic of the country is reflected in the school curriculum, which advocates the learning of many languages.Bhasha Sangam attempts to realize the celebration of diversity and rich linguistic strength through language learning in school.Multilingualism is the ability of an individual speaker or a community of speakers to communicate effectively in three or more languages.

3. Objective of encouraging Indian languages and multilingualism in NEP 2020

- To strengthen and enrich Indian languages and her cultural heritage and to familiarise the students with India's unity in diversity through the Fun Project and the "Ek Bharat and Shreshth Bharat Mission" at the 6–8 level. Familiarization with similarities and differences amongst different Indian languages to know their connection with Sanskrit are predominant objectives.
- Other classical languages such as Tamil, Telegu, Kanada, Malayalam, Pali, Prakit, Persian, their richness will be explored and preserved.
- Multilingualism is intended to reduce school dropouts among backward and rural communities. They are not comfortable with any other language other than their own home languages as the medium of instruction, and so they leave schools in the upper grades.
- Early schooling in a child's mother tongue, as recommended in the new National Education Policy, can improve learning, increase student participation, and reduce the number of dropouts.
- Multilingualism will break down the limitations of language and provide better education, better job opportunities, and better employment to all.
- A person's identity and sense of self-esteem are linked to his language. because our best self-expression happens in our natural language.
- The child keeps positive self concert about his own identity.
- to familiarise students with the 22 Indian languages of the 8th schedule of the Indian Constitution.
- Foster linguistic harmony among students and promote national integration through the learning of languages.
- Multilingual education must be improvised in order to provide language education not only in terms of the literature, grammar, and vocabulary of the language but also to interact with the students in the same language.
- to bring students closer to the unique cultural hues and diversity of our country through languages.
- to preserve, promote, and develop the transfer of Indian languages.

4. Multilingual and Indian languages under NEP 2020.

As so many developed countries around the world have amply demonstrated, being well educated in one's language, culture, and traditions is not a detriment but rather a huge benefit to educational, social, and technological advancement.

India's languages are among the richest, most scientific, most beautiful, and most expressive in the world, with a huge body of ancient as well as modern literature, film, and music written in these languages that help form India's national identity and wealth. For purposes of cultural enrichment as well as national integration, all young Indians should be aware of the rich and vast array of languages in their country and the treasures that they and their literatures contain.

- According to NEP paragraph 4.11, the medium of instruction until at least grade 5, but preferably grade 8 and beyond, will be the home language, mother tongue, local language, or regional language. Thereafter, the home/local language shall continue to be taught as a subject. This will be followed by both public and private schools.
- In cases where home language/mother tongue textbook material is not available, the language of transaction between teachers and students will still remain the home language/mother tongue wherever possible.
- Teachers will be encouraged to use a bilingual approach, including bilingual teaching and learning materials, with those students whose home language may be different from the medium of instruction.
- Sanskrit will thus be offered at all levels of school and higher education as an important, enriching option for students, including as an option in the three-language formula.
- According to paragraph 4.18, other classical languages and literatures of India, including Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Odia, Pali, Persian, and Prakrit, will also be widely available in schools as options for students, possibly as online modules, through experiential and innovative approaches to ensure that these languages and literatures stay alive and vibrant.

5. Suggestions given by NEP for Promotion of Indian Languages and Multilingualism.

- *Sanskrit Language into Mainstream Curriculum* Sanskrit will be integrated into the mainstream curriculum rather than being restricted to single-stream Sanskrit pathshalas and universities. The language will be provided to higher education in innovative and interesting ways, along with other subjects such as mathematics, philosophy, astronomy, linguistics, yoga, drama, etc.
- The Department of Sanskritwill be strengthened in terms of the multidisciplinary higher education system.
- Sanskrit will be taught in ways that are interesting and experiential as well as contemporary and relevant, including through the use of Sanskrit Knowledge Systems and in particular through phonetics and pronunciation. Sanskrit textbooks at the foundational and middle school levels may be written in Simple Standard Sanskrit (SSS) to teach Sanskrit through Sanskrit (STS) and make its study truly enjoyable.

- *NEP paragraph 22.18: Language Vocabulary and Dictionary*Teachers andacademicians will consult with each other to prepare a language dictionary for the respective languages that will be used to study and for use in education, writing, journalism, speechmaking, and more.
- *Paragraph 22.19 Online Portals (Web and Wiki)* The languages of India, along with their art and culture, will be documented through the online portals, web, and wiki to preserve the native language and their knowledge. These platforms will consist of dictionaries, videos, recordings, people speaking the language, reciting poetry, telling stories, and performing folk songs, plays, dances, and much more.
- The general public, possessing a high level of knowledge of the language, will also be invited to contribute to the portal and add their own learning resources. These web portals will be managed by the universities and their research teams and funded by the NRF.
- *promotion of Indian languages.* In order to help students, high-quality learning materials in the form of workbooks, textbooks, magazines, videos, poems, plays, novels, etc. will be available.
- *Paragraph 22.14 An Indian Institute of Translation and Interpretation (IITI)*will be established, which will be responsible for translating the learning materials and providing multilingual language and subject experts.
- *Bilingual Programs in Higher Education 22.*15 offering of 4-year integrated multidisciplinary B.Ed. dual degrees in education and others Indian Languages, to develop outstanding language teachers in That language.
- 4.21. The teaching of all languages will be enhanced through innovative and experiential methods, including through gamification and apps, by weaving in the cultural aspects of the languages, such as films, theatre, storytelling, poetry, and music.
- There will be a 4-year B.Ed. degreeintroduced that will majorly focus on enhancing knowledge of native languages, through which students will be employed as teachers in their area of expertise. The programme will emphasise producing high-quality teachers with expertise in language teaching, music, the arts, philosophy, and writing.
- *22.20 Scholarships and Incentives* Students will be provided with scholarships based on their language. Various awards and incentives will be provided for outstanding poetry and prose in Indian languages in terms of various categories that will be established to ensure vibrant novels, poetry, nonfiction books, journalism, textbooks, and other works.
- 4.22. Indian Sign Language (ISL) will be standardized across the country, and National and State Curriculum materials developed, for use by students with hearing impairment. Local sign languages will be respected and taught as well, where possible and relevant.
- 22.10 higher education institutions will use the mother tongue or local language as a medium of instruction and/or offer programmes bilingually in order to

increase access and GER and also to promote the strength, usage, and vibrancy of all Indian languages.

- 22.16 A National Institute for Pali, Persian, and Prakrit will also be set up on a university campus.

6. Proposed activities

- According to NEP paragraph 4.16, every student in the country will participate in a fun project or activity on "The Language of India," sometime in Grades 6–8, such as under the "Ek Bharat Shrestha Bharat" initiative. In this Project/activity, students will learn about the remarkable unity of most of the major Indian languages, starting with their common phonetic and scientifically-arranged alphabets and scripts, their common Grammatical structures, their origins and sources of vocabularies from Sanskrit and other classical Languages, as well as their rich inter-influences and differences.
- They will also learn which geographic areas speak which languages, tribal languages, and the uplifting literature of each language.
  Such an activity would give them both a sense of the unity and the beautiful cultural heritage and diversity of India and would be a wonderful icebreaker their whole lives as they meet people from other parts of India.
- Students should be encouraged to prepare posters or infographics depicting these sentences and display them on the notice board or wall in their schools.
- During the teaching of subjects like language, geography, history, and science, these sentences can be used at an appropriate place in the right context because they are relevant to the subjects and to the students.
- It has to be creative and informal.

7. The three-language formula

4.13. The three-language formula will continue to be implemented while keeping in mind the Constitutional provisions, the aspirations of the people, regions, and the Union, and the need to promote multilingualism as well as national unity. However, there will be greater flexibility in the three-language formula, and no language will be imposed on any state. The three languages learned by children will be the choices of states, regions, and, of course, the students themselves, so long as at least two of the three languages are The NEP 2020 brings with it a novel concept of early implementation of the three-language formula, with the view to promote multilingualism and national unity. As per the new education policy, it is up to the state to decide which is the language of their choice.

- As a medium of instruction: Wherever possible, the medium of instruction until at least Grade 5, but preferably until Grade 8 and beyond, will be the home language, mother tongue, local language, or regional language.
- NEP states that there will be greater flexibility in the three-language formula. But no language will be imposed on any state.
- To learn three languages will be the choice of states, regions, and students

themselves, as long as at least two of the three languages are native to India.

- The NEP proposes "early implementation of the three-language formula to promote multilingualism" at the school level. The three-language policy leaves it to the states to decide what that language would be.

8. Conclusion

As an impact of the changes introduced by NEP 2020 in terms of promotion of Indian languages, multilingual education, arts, and culture, there will be more emphasis on the culture and heritage of the country. The languages that are on the brink of extinction due to a lack of recognition will be revived and encouraged for speaking, writing, and learning. The education system will be more prone to multilingual learning rather than using just Hindi or English as the medium of instruction. These changes will also increase employment opportunities for the teachers and subject matter experts of these languages. By promoting Indian languages at the school level, India will be bound in the thread of unity, and we will respect each other's culture and diversity. Self-esteem will develop in students in higher education, and the dropout rate will reduce.

REFERENCES

1. National Education Policy 2020.Ministry of Human Resource Development. Government of India. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf.
2. *Aronin, Larissa and Singleton, David. "Multilingualism" John Benjamins,(2012), Amersterdam.*
3. *Erard, Michael. "Are We Really Monolingual?" The New York Times Sunday Review, January 14, 2012.*
4. *Blackledge, Adrian and Creese, Angela. "Multilingualism: A Critical Perspective." Continuum, 2010, London, New York.*
5. *The Constitution of India. Government of India* Ministry of Law and Justice Legislative Department, As On 9th December, 2020.UNESCO. 2016.
6. Linguistic Diversity and Multilingualism on Internet.www.unesco.org/new/en/communication-andinformation/access-to-knowledge/linguistic-diversityand-multilingualism on-internet
7. National Council of Education Research and Training (NCERT) 2005.
8. *Auer, Peter and Wei, Li(2007) "Introduction: Multilingualism as a Problem? Monolingualism as a Problem?" Handbook of Multilingualism and Multilingual Communication. Mouton de Gruyter, Berlin.*
9. *Bleichenbacher, Lukas. (2007) "Multilingualism in the Movies." University of Zurich*

Ph.D. Research Scholar, Education
Jayoti VidyapeethWomen'sUniversity, Jaipur
sd072107@gmail.com

Research Article

Role of Information and Communication Technology (ICT) in the Development of Hindi in the 21st Century

– Dr. Harjinder Kaur

Abstract:

Present time is the era of Information Communication Technology (ICT) which has become an integral part of our life. All the work in all the offices is done on computers only. Technological development has also affected our life-style and the structure of society and language is no exception to it. Today, in this era of ICT, the importance of Hindi has become more than before. Hindi has its own special and important place in all the widely spoken languages around the world, more than 4% people in the world speak Hindi. It is our mother tongue and plays a very important role in our daily lives. It is incredibly important in the historical development of the world's cultures and deserves not only respect but also study. Under Article 351 of the Constitution of India, provision has been made to enrich Hindi language and on the basis of Article 343 of the Constitution, Hindi has got the status of official language in India, due to which the area of use of Hindi language is very wide, in all government offices. Hindi has got the status of official language in the offices and its scope extends to all the ministries, offices, corporations, departments and undertakings etc. of the central government. In contemporary times, information technology, whose soul is computer and internet, is the backbone of any economy. It is well known that working in the official language, Hindi has been made easier in the computer. The work of computer localization in Hindi started a long time ago and now it has taken the form of a movement. In this regard, through this article, an attempt has been made to discuss the role of ICT in the promotion of Hindi in the present era.

Key words: Language, Official language Hindi, Information communication technology, Computer, Internet

शोध सार

वर्तमान समय सूचना संचार तकनीक (आईसीटी) का युग है स यह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। सभी कार्यालयों में तमाम काम कंप्यूटरों पर ही किये जाते हैं। तकनीकी विकास ने हमारी जीवन–शैली और समाज के ढांचे को भी प्रभावित किया है और भाषा भी इससे अछूती नहीं है। आज सूचना संचार तकनीक के इस युग में हिंदी का महत्व पहले से अधिक हो गया हैस विश्व भर में व्यापक रूप से बोली जाने वाली समस्त भाषाओं में हिंदी का अपना विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है, दुनिया में 4 प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी बोलते हैं। यह हमारी मातृभाषा है और हमारे दैनिक जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दुनिया की संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास में अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है और न केवल सम्मान बल्कि अध ययन के योग्य भी है। भारतीय संविधान के अंतर्गत अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा को समृद्ध करने के प्रावधान की बात की गई है और संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वजह से हिंदी भाषा का प्रयुक्त क्षेत्र बहुत विस्तृत है, सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालय भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों, निगमों, विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है। समकालीन समय में सूचना तकनीक जिसकी आत्मा कंप्यूटर व इन्टरनेट है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। यह सर्व ज्ञात है कि कंप्यूटर में राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम बनाया है। हिंदी में कंप्यूटर स्थानीय करण का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्ल ले चुका हैस इसी संबंध में, इस आलेख के माध्यम से वर्तमान युग में हिंदी के प्रचार–प्रसार में सूचना संचार तकनीक की भूमिका की चर्चा का प्रयत्न किया गया है।

बीज शब्द : भाषा, राजभाषा हिंदी, सूचना संचार तकनीक, कंप्यूटर, इन्टरनेट

Introduction

The origins of Hindi influence in the world can be traced back to the Ancient Period, when Hinduism spread throughout the world. Gautam Buddha, Mahavira, and Lord Krishna were the driving forces behind this. They used Sanskrit to express or communicate messages among themselves and with common people, making it the most powerful language at the time. However, because of its Vedic origins, Sanskrit was made an official language of India after independence from British rule. However, as time passed and the need for a common language among Indians grew, Hindi became the preferred option for all. Because of its impact on other languages around the world, it has been ranked seventh in terms of knowledge. It is also taught in schools around the world that are affiliated with the International General Certificate of Secondary Education (IGCSE) board as part of Indian history. This demonstrates how important and widely spoken the Hindi language is today in various parts of the world.

Importance of Hindi

Hindi language is a very melodious and phonic language. It is our mother tongue as well as the national language of India and spoken by millions of people not only

in the native country but also in several other countries. Hindi is a beautiful language through which we can express our feelings to our families effectively. It is a very simple language that anyone can speak. It is of utmost significance to the historical evolution of cultures around the world and merits not only honour but also study. Today in foreign countries like America and others,there are many universities, colleges, and schools that teach Hindi. It is now among the languages that are most widely spoken worldwide. Many Asian nations even use it as a link language, and if we don't lose sight of how important it is to our culture, it will grow in popularity over the next few years.

Official language of India

Article 343(1) of the Constitution of India clearly states that "The official language of the Union shall be Hindi in Devanagari script. The form of the numerals to be used for the official purposes of the Union shall be the international form of the Indian numerals." Conversation in Indian Parliament or Government offices can be done only in Hindi or in English. The use of English is permitted throughout the country for official purposes such as parliamentary proceedings, communications between the central government and state governments, and judicial matters.

Information and Communication technology (ICT)

The modern age is termed as the era of knowledge explosion. This explosion has become possible due to the progress of science and technology. Each and every aspect of human life has changed due to the effects of science and technology. The use of science and technology in the field of communication has revolutionized the whole world. Use of modern technological tools has led to the rise of ICT (Information and Communication technology.)Information Technology refers to all communication technologies, including the computers, software's, internet, cell phones, wireless networks, video-conferencing, other media applications, services and social networking. Thus, we can say that ICT is playing the most important and pivotal role in the learning of language, especially Hindi Language Learning.

Information and communication Technology (ICT) and Hindi

Today's era is the era of information, communication and ideas. Information technology is a simple system that collects, processes and transmits information with the help of technical use. In ICT era,computer has benefitted many sectors like business, commercial, mass communication, education, medicine, etc. The advancementin the field of ICT has also become the bearer of silent revolution in the field of language. Present era is the era of information technology, where all the work in all the offices is done on computers. Information technology seems to be the foundation of daily life.Hindi has got the status of an official language in India under Article 343 of the Constitution, as a result the area of use of Hindi language is very wide, Hindi has got the status of official language in all the government offices and its work area is in all the ministries, offices of the central government.

Corporations, Departments and Undertakings, etc. Information, whose heart is the computer, has emerged as the foundation of any economy in modern times.In the present time, ICT, the soul of which is the computer, has become the backbone of any economy. It is well known that working in the official language Hindi has been made easier in the computer. It's because of ICT that Hindi which was spoken by 350 million people a decade back is being spoken by 615 million people today. The work of computer localization in Hindi started long back and now it has taken the shape of a movement. The work of Hindi software localization was first done by C-DAC in the 90s. At present, many organizations work for Hindi language, in which C-DAC, Department of Official Language of Ministry of Home Affairs, Central Hindi Institute and many non-governmental organizations are prominent.

The Department of Official Language of the Ministry of Home Affairs has made available several software in Hindi on its website http://www.rajbhasha.nic.in for the purpose of making it easier to work in official language Hindi, out of which the following are the main ones-

- First of all, we will talk about Leela Software. LILA i.e., Learn Indian Languages with Artificial Intelligence, is a self-learning multimedia package. It is a free software prepared by the Department of Official Language, through which Hindi courses of Prabodh, Praveen and Pragya level can be taught through various Indian languages like Kannada, Malayalam, Tamil, Telugu, Bangla etc., online practice, pronunciation improvement, self-assessment. etc. facilities are available.
- Mantra i.e., Machine Assisted Translation Tool is a machine translation software developed by CDAC. It is a machine-aided translation developed by the Department of Official Language to translate documents from English to Hindi in the administrative, financial, agriculture, small scale industry, information technology, health care, education and banking sectors of the official language. The design and development of Mantra Rajbhasha Internet Edition is based on thin client architecture, in which the entire translation process is done on the server, so this facility can be used to translate documents even on low end systems where internet is available in remote places.
- Shrutelekhan i.e.,(Dictation) is a continuous speaker independent Hindi speech recognition system developed by Allied AI Group of CDAC, Pune in collaboration with Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, Government of India. This is a speech to text tool; in this method the user speaks into the microphone and the speech to text program present in the computer processes it and writes it into text.
- Transliteration is a voice-to-text translation system consisting of two technologies. This tool is made available for translation from English speech to Hindi. Transliteration is the process of converting a word or single character from one writing system to that of another. This conversion process is normally done by taking a letter from one alphabet and phonetically matching it to one or more characters in another alphabet

- With the technical support of CDAC, Pune, an e-Mahashabdkosh was created, which is available free of cost on the official language site. It is a bilingual-two-dimensional pronunciation dictionary that enables direct word search using Hindi or English letters.
- Kanthasthai.e., Translation Tool is a machine translation software developed by CDAC. It is on the same e-tools available on the site of the Department of Official Language. On this one can easily translate from Hindi to English and from English to Hindi. Its specialty is that the translation done by you is safe for the future. In this, documents of administrative, financial, agriculture, small scale industry, information technology, health care, education and banking sectors can be translated. Along with this it also provides dictionary.
- A specially prepared e-book for word processing in Hindi is available on the website of the Department of Official Language. Continuous work is going on to support Hindi on mobile phones.

Many countries around the world have very capable translation tools. Institutions like C-DAC, IIT Kanpur and IIT Mumbai have played an important role in developing these tools. With their help, mutual meeting of different countries on global forums has become possible easily.

Aside from that, the website of the official language department has a specially created e-book for Hindi word processing. Additionally, technical advancement has occurred as a result of linguistic exchange. Through Google Translate, various languages can be translated. We now have chameleon, a script conversion programme. Anusarak is a software that translates between Indian languages. In Google's tools, the facility of text-to-speech is available through reader, reader, Google Text to Speech and through Google's voice typing. Microsoft Indic Language Input Tool is a simple typing tool for Indian languages.

The 21st century is the computer era, which has significantly lessened man's reliance on paper. Computers replaced the typewriter used for typing, but initially it was not comfortable for local languages. This problem was solved with the advent of Unicode, which created an easy platform for Hindi as well as other Indian languages to work on computers. Through this, blogs started being written in Hindi and other Indian languages.

Today, in the era of ICT, the importance of Hindi has become more important than ever.Every aspect of human life such as Business, Healthcare, Tourism and Travel, Bollywood, Research and Information exchange in Hindi are directly-indirectly related to the development and spread of Hindi language, is significantly influenced by computers.

Business: With increase in business opportunities in India being a Hugh market with more than 50 percent being Hindi speaking people, it is very important for multinational firms to have trained manpower fluent or at least understanding Hindi in order to get their share in the market. ICT have played a prominent role in propagation of Hindi for development of businesses.

Healthcare: With millions of Hindi speaking people living in rural areas, there

is need to assist them healthcare. ICT have assisted in propagation of Hindi through internet, You Tube, Medicare apps etc so that Hindi speaking people are able to understand stuff in their language. In order to do those doctors also have to learn hindi as well as ecommerce staff leading to propagation of India by computers and information technology.

Tourism and Travel: India is a vast country with varied culture and languages. It is a preferred tourist destination for millions of traveller's worlds over. In order to travel in India, foreigners should be more aware about Indian languages which they learn using ICT.

Bollywood: Hindi songs and movies are liked a lot world over. In order to enjoy Bollywood music and movies understanding Hindi is must. People learn Hindi using online classes or Hindi tutorials.

Research: Any original idea comes to a person in his or her own mother tongue. Researches in Japan, France etc have been conducted in Japanese, French etc whereas English is preferred language in India. There are so many bright students who come from rural backgrounds and they could not implement ideas or carry out original research as they are not comfortable with English language. Professors and students of some of the IITs thought on those lines and promulgated that research should be done in Hindi or their local language. That was the stepping stone for expansion of Hindi. Programming for Hindi language in premier institutes, key boards for Hindi, assistance by government of India assisted Hindi language in its propagation. Research in Hindi assisted in promulgation and propagation of Hindi language across globe with the help of ICT.

Information exchange in Hindi: In the present era one person sitting in India can see and speak to other person sitting in United States of America or France. Hindi is the best medium for exchange of information amongst Hindi speaking people and also between people and government of India or other Indian Hindi speaking states, Information exchange should only happen in Hindi as it will be easy for common man understanding and also propagate Hindi language across globe. Hindi pakhwaras are being made compulsory in government departments but their frequencies need to be increased. Intact there should be at least 50 percent official work in Hindi on regular basis.

Information and communication Technology Era and Increasing Supremacy of Hindi

While in today's 21st century, westernization has occupied its place so much in the lives of people that even a little child is forced to communicate in English and the emphasis is completely on English in a child's development, surprisingly, a drift is visible in people towards their own mother tongue, that is, Hindi. A large number of people today like to read, write and communicate in Hindi and also many people especially the youngsters have started realizing the relevance of their mother tongue. Many foreign students now take a keen interest in this subject. Exchange programmes have also been effective in promoting Hindi in these countries. India is now a land of opportunities and growth and Hindi is the key to these opportunities.

Thus, an optimistic step by the Indian subcontinent to encourage Hindi and its culture flourishing in the region will be useful for not only Hindi's fame but will take the language at an international level and make it a language of professional communication.

Conclusion

Finally, it is true that the role of the official language Hindi is growing in today's Indian society. It is now reaching common people's mobile phones and personal computers from government files and paper documents. It can be said that information and communication technology, as well as computer localization, have given the official language Hindi new identity. It won't be long before all government and civil service work can be done in Hindi.

References

http://ignited.in/I/a/89099

http://puneresearch.com/media/data/issues/572ed649c9fde.pdf

https://admissionjankari.wordpress.com/2011/12/10/relevance-of-hindi-in-21st-century/

https://billionvoices.magnonsancus.com/english/21st-century-evolution-of-hindi-and-the-role-of-technology/

https://medium.com/@eiindia/hindi-in-the-21st-century-can-we-live-without-it-f09eec43763b

https://renaissance-translations.com/hindi-language-history/

https://subodh-sannidhya.blogspot.com/2019/07/blog-post_17.html#:~:text=आज%20का%20/युग%20सूचना%2C%20संचार, कई%20क्षेत्र%20लाभान्वित%20९ हुए%20हैं

https://www.civilserviceindia.com/subject/Essay/hindi-as-the-national-language-advantages-and-disadvantages1.html

https://www.gkexams.com/pdf/forum/DFHT-04-Unit-01-1520926861%20(1).pdf

https://www.hindikunj.com/2017/08/internet-hindi-sahitya.html

https://www.importanceoflanguages.com/importance-hindi-language/

https://www.jansatta.com/politics/jansatta-editorial-hindi-in-internet-world/37321/

https://www.nextias.com/current-affairs/15-09-2022/promotion-of-hindi-in-institutions

https://www.rachanakar.org/2017/08/blog-post_23.html

https://www.researchjourney.net/upload/3%20Dr.%20Sunil%20Kulkarni%20&%20Mr.%20Gajanan%20Wankhede.pdf

https://www.sdcollegeambala.ac.in/wp-content/uploads/2021/11/hindi2021-33.pdf

https://www.springfieldschool.net/importance-of-hindi-in-our-life/#:~:text=There%20are%20many%20Hindi%20teaching,its%20value%20of%20our%20culture.

https://www.successcds.net/hindi/essays/essay-on-internet-in-hindi.html

https://www.superprof.co.in/blog/hindi-language-influence/

https://www.vishwahindijan.in/hindi/

Assistant professor
Khalsa College of Education Ranjit Avenue , Amritsar (Punjab) 143001
Mobile: 7986204871 Mail Id: harjindersoni19@gmail.com

Research Article

Analysis on the Different Features of Modern Tibetan Literature

–Lhundup Dorjee

Introduction :

Have you ever seen any piece of writing that does not follow its grammatical rules, syntactic patterns, andflow of words in the anal of Tibetan literature? Actually, there are a few ways of categorizing the Tibetan literature as a whole. They are the traditional writing which is known as *srolgyun rtsomrig* in Tibetan language and the modern literature which is considered to have been imported in the world of Tibetan literature round 1980s. Because of this innovation of the literary genre, there are ways of attributing some features to this novel writing. Hence, here I am going to write some of its special attributes or explicit features both analytically and reasonably expounded by quite a number of young Tibetan scholars.The attributes are: 1. The development of new Tibetan writings, 2. The core meaning or 'life' of poetry, 3. Significance given to writers' thoughts rather than the words, 4. How it is an indigenous Tibetan poem, and 5. Limitation of spreading the poem in society.

1. The Development of New Tibetan Writings

Generally, whenever there occurred any kind of novel knowledge in society, there should be some preceding causes without which it would not have taken place. To make it clearer, by the dint of the special causes, and the society or the way of leading life garnered varied thoughts in the minds of the people. These uncommon thoughts or ideas made different the ways of expressing one's thoughts. Likewise, the modern Tibetan poetry also came into being under the effective causes of different historical and political backgrounds. A Tibetan writer named *Namse*said, ‘’The unusual way of expressing love in the modern

literature depends on one's psychological pattern."[1] In the same way, *Pema Bhum*, a renowned Tibetan writer, said, "The present feelings of happiness and sadness can't be replaced with the happiness and sadness of the past. The present living people's mind is filled with either contemporary happiness or sadness."[2] Therefore, this so called modern Tibetan writing came into being by the impetus of individuals' thoughts and feelings. The concerned writers seized upon the slightly political relaxation in Tibet around 1980s and they preferred the writing as the most suited channel through which theyarticulated the politically undergone sufferings during the so called 'Cultural Revolution' in Tibet. That politically propelled movement negatively shook the entire Tibetan society and it led to the destruction of learning centres, famine, separation of families, cultural genocide, and assimilation of one's own identity pathetically.

2. The Core Meaning or 'Life' of Poetry

There is no doubt that a theme is should be there if someone writes a piece of writing in any kind of literary body and that implied sense is nothing but so called 'life' in both treatises of Indian and Tibetan poetry. That sense or meaning can be designated as 'life' in any form of writing in general and poetry in particular. When we demarcate the line between our traditional and modern Tibetan literature, we can not differentiate these two primarily based on whether a writing is written in prose or metricform or *shlok* in Sanskrit. But It can be identified based on its theme or life directly or indirectly expressed in it. A renowned Tibetan writer named Namse, (2009) said, ''Putting pause to the metriclines of traditional Tibetan writings by imitating the practice of modern Tibetan free verse is merely a sign of falling in love with it. And on the other hand, its nature, features, and depth are not properly understood."[3] Furthermore, "The line between the traditional poem and modern poem can not be drawnonly by enjoying the freedom of keeping metric pause. Their distinction should be drawn by analysing whether there is new thoughts or life in the mind of the writer.''[4]hesaid. The theme of modern Tibetan writers' write-upsis patriotism, pride for one's culture, and a sense of moving forward economically, academically, politically, ideologically and so on. There has been vehement calling for dismantle the chains of strong conservatism, demoralization, and backwardness throughout the writings, even in a paragraph or a linein themcan be seen. And they deal with positively futuristic anticipation, thereby material development is focused and leading a prosperous life by the dint of material advancement is totally impregnated within their write-ups like water being sunk into a heap of sands.

3. Significance Given to the Writers' Thoughts Rather the Words

The asymmetrical meters in the modern literature undoubtedly shows that this way of writing gives more importance to the writer's thoughts rather than the metric patterns. Speaking from our own experiential feelings, environment and external causes lead to psychological changes, thereby ups and downs in vocal pitches occurs naturally. In this case we can't prolong the metric words by adding some words or shorten it by eliminating some words like the practice being made in the literary genre of our Tibetan traditional writings. If a writer needs to control his thoughts just for the sake of interesting and elegant prosody, then he or she has no option but rather controlling his thoughts by attempting to frame the required interesting/ aesthetically arranged words. Moreover, that kind of write-up is diluted with unwanted substance and it can not satiate the sheer will of the readers.

A renowned writer named Pema Bhum, said "In the mind of a modern writer, his or her thought is more important than the aesthetic prosody for penning down a piece of writing. Aesthetic prosody is just a literary device meant for expressing the inner thoughts or emotions of the writer clear. Therefore, we must follow the inner thoughts or emotions rather the aesthetic prosody".[5] We can feel anything and there is no such boundary that human feelings can not transverse certain line in our day-to day life. Hence, those thoughts can not be imprisoned in the cage of aesthetic prosody of the traditional writings. Furthermore, from the aesthetic perspective, occurring of an everlasting taste is imminent if we try to churn it out poetic stuff in a piece of writing based on our psychological fluctuations or emotions.

Therefore, looking at both the traditional and modern Tibetan writings, the former one is more focused on wishes or widely accepted things. The theme or life of their literary outputs under this category is similar even though their poetically woven words are different. In this writing the name of *yak*, a domesticated animal not only familiar but also very helpful in everyday life for Tibetans, is nowhere to be seen and in contrast, the name of elephant, which is widely known in India is commonly penned down. However, the latter one holds expressing inner thoughts or emotions at its centre so that the name of Yak is explicitly mentioned there, even their shit – which protects human bodies from the freezing coldness in winter- is apparently written.

4. How it is a Tibetan Indigenous Writing

PART-1

It is true that the pioneer of this novel writing studied free verse in other languages and imported this genre into the world of Tibetan literature. It is quite true that Shri Dhondup Gyal learnt Chinese language too and he had good command

over it. Furthermore, some writers said that he even studied English language. If we look at the history of free verse writing chronologically, firstly it came into being in America and then it spread to China as Chinese writers composed free verse write-ups in their language after studying the novel genre. Shri Dhondup Gyalnot only focused more on freedom for expressing writers' thoughts but also on being able to articulate their feelings or thoughts completely by primarily attempting to comply with Tibetan language, the treatise of Tibetan grammar, and literature as well. In other words, it is not that he swallowed everything while neglecting the physical strength and the digestive capabilities of Tibetan people.It means that he pioneered this genre by considering its suitability to the environment, mental aptitude of the people, and special contribution to the world of Tibetan literature. Hence, Namgo, said, "This novel writing has come with the help of the spring water of modern era and it has been a newly grown flower in the fertile land of Tibetan literature."[6]Thus, we can see that this genre did not come into being in Tibetan literature easily, but rather with the help of the openly receptive environment and the sheer diligence of the concerned writer.

PART-2

This new writing has held the features of Tibetan traditional writing like, pouring praise on great beings and didactics related to socially good or bad actions as its primary essence. Furthermore, it attempts to showcase explicitly the multiple as well as complicated issues of social life with the help of arts. Therefore, this new writing has traversed the traditional writing which gave importance to external word structure and it has possessed with the efficacy of digging into the deepest emotion or feelings of common people. Likewise, its topic is multiple, rich and realistic in nature. Moreover, the line drawn in order to differentiate between modern Tibetan writings and traditional Tibetan writings is not based on externally framed words, but rather what themes contained in the writing. Therefore, this idea has tremendously contributed to increasing the number of writers and publications of books, in turn it has undoubtedly helped to strengthen the identity of our people. As Rita Mae Brown said, "Language is the road map of a culture. It tells you where its people come from and where they are going."[7]This quotation aptly shows how important the language is for a nation or a people not only to understand their history but also to know what preventive things needs to be implemented in order to prolong their existence both effectively and proudly.

5. Limitation of Spreading the Poem in Society

In our society, there are many people who love this new genre without knowing

that it must have a theme or *srog* which is embellished with rhythmic fluctuations, pausing while reciting it, and strong feelings as well. They think that just chunking out some lines written in traditional way into some pieces and they would naturally become free verse poem without any endeavour being put by the writer both persistently and pervasively. Therefore, a reputed Tibetan poet named Kalsang said, “Educated people write modern poems, so do uneducated people. And not only college students pen down their feelings in modern poems, but also primary school students jot down their feelings in it.”[8] He sarcastically said it to those people who love and cherish modern Tibetan free verse vehemently, but the truth to be told, neither do they understand the unique features of it nor do they write it by themselves. Furthermore, he said,

“No one can advise better than parents,
No one can explain the reality better than Guru,
No one can share heartfelt feelings better than a friend,
But do find an authentic poet somewhere”.[9]

Here the reputed poet emphatically stated that the best people in advising, showing the reality, and sharing heartfelt feelings are parents, spiritual Guru, and friends respectively. But, a genuine Tibetan poet, who knows perfectly the nature, features, and scopes of modern Tibetan free verse poem, is nowhere to be seen and people need to find him yet. It means that there are certain number of Tibetan writers who pen down write-ups under the name of composer, but an acceptable writer, having the knowledge of modern Tibetan free verse poem, is so rare.

The above utterance is a sarcasm as per the way he perceives while looking at both the new genre and the writers. Butwe can’t accept it blindly and an unbiased analysis needs to be done before accepting his words. As Indian Master Dandi, the composer of “The Mirror of Poetry”, said “Since the human beings’ flow of thoughts is unlimited, no one can teach the entirely different poetic expressions in a treatise.”[10] Hence, this point clearly shows that neither does anyone can apply all the arts in writing nor does everyone should have the same inclination or taste in the form of writing. To put in a nutshell, the likes and dislikes of everyone can’t be similar as their mental aptitudeis absolutely uncommon.

Conclusion

As there have been two different ways of views on when the modern Tibetan literature came into being, it automatically leads to forming two groups. Chronologically speaking, a group of writers commonly accepts that around 1950 the novel writing occurred in the world of Tibetan literature. But on the other hand, the other group thinks that the practice of writing it began only around 1980s.

Therefore, the reason behind these two different views is the content being talked in the whole concerned write-ups.

The new writing has been attributed with many special features but due to limitation of word, I have mentioned some of them. They are: 1. The causes that made occurred it, 2. the implied sense or 'life' which is known as *srog* in Tibetan and spreads throughout the writing. 3. Significance given to thoughts rather than artistically well-arranged words, 4. How it is an indigenous Tibetan poem, and 5. Limitation of spreading the poem in society. These features being attributed to modern Tibetan literature are unanimously accepted by modern Tibetan writers. They explained these features by comparing the nature and the features of both Tibetan classical literature and modern Tibetan literature. Therefore, these features can be seen vividly in the modern Tibetan literature if we analyse it meticulously.

Bibliography

1. Namse, *Research on Modern Tibetan Literature*, Nationality Press, 2009
2. Pema Bhum, *Throbbing Alive Heart of New Generation*, Anyen Machen Tibetan Research Centre, 1999
3. Tsering Namgon, *A Collection of Best Articles Arranged by Sbragn Char Editorial Board*, Tsongon Nationality Press, 2016
4. Tibetan Art and Literature, Volume 1, 1991
5. 'Inspirational Quotes for Language Learners', *british-study.com* 08 APR 2015
6. Wikipedia, '*bo.m.wilipedia.org'*

(Footnotes)

[1] Namse, *Research on Modern Tibetan Literature* , Nationality Press, 2009, p. 118

[2] Pema Bhum, *Throbbing Alive Heart of New Generation* , Anyen Machen Tibetan Research Centre, 1999, p.7

[3] Namse, *Research on Modern Tibetan Literature*, Nationality Press, 2009, p. 124

[4] Ibid, p. 124

[5] Pema Bhum, *Throbbing Alive Heart of New Generation*, Anyen Machen Tibetan Research Centre, 1999, p. 15

[6] Tsering Namgon, *A Collection of Best Articles Arranged by Sbragn Char Editorial Board*, Tsongon Nationality Press, 2016, p. 247

[7] 'Inspirational Quotes for Language Learners', *british-study.com* 08 APR 2015

[8] Tibetan Art and Literature, Volume 1, 1991, p. 17

[9] Ibid, p. 19

[10] Wikipedia, '*bo.m.wilipedia.org'*

Research Scholar

Research Article

Bhikhari Thakur: Gender inclusive representation in the modern Bhojpuri theatre

–Prof. M.R. Verma
–*Pankaj Kumar*

Abstract:

Representation of women as subaltern has always been a contested domain in folk literature. It is interesting to look at Bhojpuri folk dramatist Bhikhari Thakur as his plays are about women embedded in the social reality of Bhojpuri society foregrounding as well as challenging their stereotypical representations. The representations of Bhojpuri women in folk literature seem to be subscribing to the feudal and patriarchal mores of society and Thakur is no exception to it but his (re)representations question their essential subalternity. His characters reinforce and subvert the existing representations and at the same time, as subaltern, experience the oppression of socially entrenched beliefs. If patriarchy celebrates male achievements, women characters are represented in ways they collude with patriarchal values making them twice marginalised which this paper interrogates. The two plays examined here show the subsequent movement of the characters towards liberating women from stranglehold of the reigning ideologies of feudalism, caste and patriarchy ushering in social change. A need to look at these subversive representations and (re)representations in the plays is mandated for gauging their effectiveness and success.

Key Words: Representation, (Re) Representation, Subaltern, Marginalised, Doubly-marginalised, Patriarchy, Caste.

Women and their representation in literature, both in mainstream or folk, have always elicited curiosity as well as interest. The emergence of modern literary and critical theories has renewed and invigorated the desire of both readers and theorists to better situate and locate these representations. This has led to necessary postulates being framed- enlightening and enriching the vast repertoire of knowledge. Feminist studies have highlighted the way in which patriarchy

has suppressed women and have designated them an inferior position. For Gayatri Spivak (1993) "...the subaltern has no history and cannot speak, the subaltern as a female is even more deeply in shadow" (p. 82-83). The question of marginalisation of women in a patriarchal society is a given fact as it does not provide for equal status for women particularly in rural settings. It is not marginalisation on account of patriarchy alone but caste based discriminations in rural India add a different dimension to this already marginalised population. If patriarchy celebrates male achievements in a series of male oriented myths, women are subject to these representations in social discourses in ways they collude with patriarchal values (Petersen & Rutherford, 1986, p.9). It is in light of such arguments that this paper sets out as it focuses on (re)representations of women by Bhikhari Thakur in his plays centred on the Bhojpuri women.

Bhikhari Thakur (1887-1971), a renowned Bhojpuri playwright, ably (re) represents the women characters in his plays as they appear to collude as well as challenge the said representations. He both subverts and reinforces the image of women through his (re)representations. Women are not allowed to construct their own identities as is the case of Bhojpuri women portrayed in his plays. Their identity formation is guided by patriarchy and caste considerations which is dependent on their male counterparts who not only construct their identities but also provide these women with their identities. Thakur felt a need to voice the concerns of these oppressed and marginalised subjects who are perpetually in quest of identity and provide them with agency to achieve an identity of their own. He makes the mute women, muted by patriarchy and caste, speak because as subaltern they do not have voice as their words cannot be properly interpreted and the onus lies with intellectuals to provide them with speech. It is here that Thakur becomes important as he makes his 'doubly marginalised' women articulate their position through their (re)representations in his works. The term (re)representation signifies the novelty of presentation of subject and characters in folk literature, challenging the dominant discourses and forcing audiences or readers to take note. (Re) representations are subversive in nature and do not confirm to accepted constructs and beliefs of society.

There already exists oppression in the society as far as women are concerned. This is evident in writings of many writers which seemingly attack these patriarchal representations. Dalit writing too mirrors the caste prejudices that were inherent in society and women owing to their double marginalisation have understood that the caste realities and resistances to it can be seen as male centred and poses a question over the freedom they offer to women because women are seen as fighting the patriarchal system on one hand and caste based discriminations on other. We need to question the way the representations of men and women are gendered evoking the need to make women discourses to be heard instead of being marginalised and silenced. Women's passivity has association with femininity and is reinforced through their passive images.

Bhikhari Thakur's Gabar Ghichor challenges these representations of women and (re)represents women as an active participant, challenging the set stereotype

in form of its protagonist, Galiz Bahu, who has no control over her passions owing to separation from her husband and questions him:

Shiv-Sati ji ke pooth, devan me majgooth;
Giraat baani tohare charan me ho swamiji!
Gawana karike gaila, ghar ke na sudhi kaila;
Maratani tohra viyog me ho swamiji!
Haanth-baahin dhaiyla ke, shaadi-gawaana kaila ke;
Aaj le na kaila nigahawa ho swamiji!

(Yadav and Singh, 2005, p. 163)

(“Thou son of Shiva-Parvati , powerful among Gods I fall at your feet/ Oh! My husband, I am pining in your separation / you married me with proper rituals yet never cared/ You have never fulfilled your responsibility of being husband) (Thakur and Gupta, 2000, p. 128).

She breaks free from the patriarchal authority and challenges the patriarchal traditions that imprisoned and oppressed women within their home and outside. On the other hand, Pyaari Sundari of Bidesia accepts this subjugation and appears inconsolable:

Piyawa gailan kalkattawa a saajani
Turi dihalan patti-patni natwa a saajani,
Kirin bhitare paratawa a saajni! Piya....
Likhat ‘Bhikhari’ khjikar bahi khatwa a saajani,
Pyari Sundari ke baatwa a saajani!

(Yadav and Singh, 2005,p. 27)

(My Husband has left for Calcutta O! Companion/ Has severed husband-wife relationship O! Companion / Before morning O! Companion! Husband...../ .....Bhikhari makes entry in his ledger O! Companion / The words of Pyaari Sundari O! Companion) (My Trans.)

Pyaari Sundari represents the female sexuality embodied traditionally in marriage, wifehood, domesticity and is seen as tool of controlling women’s bodies by patriarchal society. Galiz Bahu seems to break free from all these traditional ideologies and restraints and puts the onus on her husband for her transgression.

Galiz Bahu has a relationship outside marriage and begets a son out of this illicit relationship. She is not like Pyaari Sundari and is ready to experiment with adultery as her husband has been away for fifteen long years. She is unable to control her passion and demands of flesh make her wayward as per the patriarchal norms. Pyaari Sundari, on the other hand, waits patiently for her husband:

Karanwa paranwa dukhit baate,
Daaya kar ke darshan de da ho balamwa!
Kai kaili Kari ke gawnawa bhawanawa mein chod kar,
Aapne paraayile purabawa balamawa!
...Tohre chukwa ki chodla mulukwa tu,
Kahal na dilwaa ke haalia balamua!

(Yadav and Singh, 2005, p. 37)

(After getting married and bringing me home, you left for East leaving me behind O Husband!/ ...it's because of you that my life is unhappy,/ Please have mercy on me and be with me Husband!/What mistake did I commit that you left the country/ Speak out your heart my dear Husband!.) (My Trans.)

She protects herself and her chastity from the advances of the Devar. She values her chastity and purity and considers it to be her husband's property. Pyaari Sundari and Galiz Bahu are part of the same system yet they represent two different mindsets one traditional and the other modern, one accepting the other condescending. While the protagonist of Bidesia accepts the societal norms Galiz Bahu of Gabar Ghichor questions and challenges these very norms. Pyaari Sundari accepts her husband and excuses him for his relationship with other women outside marriage and provides space to Saloni, the prostitute (Randi), to stay with her as second wife while Galiz Bahu fights to get custody of her illegitimate son and challenges patriarchal mores of chastity and purity. These two characters reinforce as well as subvert the traditional image of women in the plays.

Bhikhari Thakur focuses on unequal gender relationship in the two plays through the character of Pyaari Sundari and Galiz Bahu respectively. Bhikhari Thakur poignantly (re)represents the pain and struggle of women in general and single women in particular. The pain of the 'left- behind' women is beautifully captured in these lines of Bidesia:

> Piya galianl kalkatawa e sajani
> Turi dihalan pati-patni-natawa e sajani
> Kirini bhitare paratawa e sajni. Piya...
> Gorwwa me juta nakhe, sirwa pe chatwa e sajani
> Kaise chalihen rahatwa, e sajni
>
> (Yadav and Singh 2005, 27)

(My Husband has gone to Calcutta O! Companion / Has broken the husband-wife relationship O! Companion / During the day he struggles, O!Companion.../ Does not have shoes in his feet nor umbrella over his head O! Companion / How will he walk on road, O! Companion) (My Trans.)

While Pyaari Sundari is desolate and leading a life of penury, her husband Bidesi, who has migrated to Calcutta has a 'temporary marriage' with Saloni (Randi). There seems to be two sets of rules guiding a husband and a wife. If a wife has to be pure and chaste, it was acceptable for the husband to have an adulterous relationship. In case of Galiz Bahu her husband appears after fifteen years of marriage and tries to get custody of the illegitimate son. No questions are asked about his whereabouts but the wife's succumbing to her passion is unacceptable which she questions and fights back:

> Babua bhailan paiyda, kucch na milal faiyada;
> Sab bidhi kaila bekaida ho swamiji!"
>
> (Yadav and Singh, 2005, p. 163)

("I begot a son, it was of no avail/ My husband you forced me to adopt wrong means") (Thakur and Gupta 2000: 128).

Bhikhari Thakur is ill at ease at the marginalisation of women's voices leading to their silencing which he contests by voicing and providing them agency to protest and present their view. The protagonist of Gabbar Ghichor not only challenges but is in open defiance of these patriarchal strategies which are aimed at silencing her legitimate voice. She uses the public institutions, the panchyat in this case, to demand justice for herself and her illegitimate son. Galiz Bahu's approaching the panchayat is both an attempt to break free from clutches of patriarchy and subvert caste based discrimination as panchyats consisted of upper caste male members. The rural women could not muster courage to speak against their male counterparts as patriarchy was the ruling ideology. Galiz Baahu does not believe in traditional or the patriarchal concept of 'Pati devo bhava' and caste hierarchies, evidenced in her having physical relationship outside marriage which Pyaari Sundari, the protagonist of Bidesia, cannot think of.

Saloni, referred to as Randi (prostitute), of Bidesia too is a tool of patriarchal control and succumbs to patriarchal machinations. She is the 'Urhari' women and appears to be breaking the set stereotype of a prostitute. She not only gets into temporary marriage with Bidesi but also begets him children. It is noteworthy to mention that women like Saloni do not have the subjective agency to question the treatment being meted to them. Bhikhari Thakur through Saloni has captured the plight of the 'Urhari' women who were used by migrants as stop gap arrangement at the destination point and these women were left to fend for themself once the migrants returned back home. Saloni is aware of the morass that she will fall into and desires security of marriage. She follows Bidesi to his village and accepts her status as second wife to Pyaari Sundari, thus securing not only her own life but the life of her children as well.

If Galiz Bahu is the agency through which Bhikhari Thakur questions and decimates patriarchy and at the same time frees her of caste hierarchies, through Saloni he reinforces the fact that it was not possible to live a dignified life without coming to terms with security provided by patriarchy which is the ruling and dominant ideology. Galiz Bahu in going out to satisfy her passion outside marriage not only challenges the status quo of entrenched patriarchy but the caste dynamics, freeing herself from its restrictive clutches. So Pyari Sundari of Bidesia is countered by Galiz Bahu of Gabar Ghichor, one accepting the hegemony of caste and patriarchy and other questioning and confronting them respectively. Both appear to be antithesis of one another but are at the same time complementing each other. It is through such characters and images that Bhikhari Thakur appears to be voicing as well as silencing the voices of subjugated women thereby reinforcing as well as challenging these constructs.

The representations and (re)representations in the plays can be seen as looking for the controlling ideologies in a literary text. Representation of subaltern must not come from the constructs given by patriarchy and caste hence the (re)representations of subaltern women in plays of Bhikhari Thakur equips them to reclaim their histories and the female characters emerge out of these shadows to have a identity of their

own. If Bhikhari Thakur (re)represents and draws figures from contemporary society, his main intention in doing so is to appropriate space for women whereby they are given the freedom and control over their destiny and find equal recognition in the established order which is the patriarchal worldview. Thakur's plays subscribe to this worldview wherein he pits and posits plays and characters against one another thereby making evident and building a case for their appropriation of a new space, giving agency to women to be recognized as equal. The plays of Bhikhari Thakur thus resist the dominant ideologies of caste and gender and present us with aesthetically enlightened new women.

References

Petersen, Kirsten Holst & Rutherford, Anna. (Eds.). (1986). A Double Colonisation: Colonial and Post- Colonial Women's Writing, Mundelstrup, Denmark: Dangaroo Press.

Prakash, Brahma, (2016). Performing Bidesiya in Bihar: Strategy for Survival, Strategies for Performance. Asian Theatre Journal, 33 (1), 57-81.

Singh, Dhananjay & Bhattacharya, Srirupa. (2018).The Image of Women in Folk-Traditions of Migration". Journal of Migration Affairs, I (1), 41-58.

Spivak, Gayatri Chakraborty. (1993).Can the Subaltern speak? In Patrick Williams and Laura Chrisman. (Eds.), Colonial Discourse and Post-Colonial Theory, Harvester Wheatsheaf Press, 66-111.

Thakur, Bhikhari & Gupta, Meenu. (2000). Gabar Ghichor. Indian Literature , 44 (1), Sahitya Akademi,127-140

http://www.jstor.com/stable/23343020 https://doi.org/10.36931/jma.2018.1.1.41-58

Tiwari, Badri Narayan (2003). Bidesia: Migration, Change, and Folk Culture, IIAS Newsletter, Research & Reports, 12.

Yadav, Virendra Narayan & Sinha, Nagendra Prashad, (Eds.). (2005). Bhikhari Thakur Rachanavali: Collected Works of Bhikhari Thakur. Patna: Bihar Rashtra Bhasha Parishad. (Text in Bhojpuri)

*Department of English, Gurukula Kangri
(Deemed to be University), Haridwar, Uttrakhand
(M) 6395700519 mrverma@gkv.ac.in

**Research Scholar, Department of English, Gurukula
Kangri (Deemed to be University), Haridwar, Uttarakhand
(M) 9711137541 pankaj@ss.du.ac.in

Teaching Aptitude and Academic Achievement of B.Ed Students in Relation to Medium of Instruction

–Beena Negi Chaudhary

Abstract:

The present investigation aims to find out the teaching aptitude and academic achievement of prospective teachers in relation to medium of instruction. The sample comprised of 507 B.Ed. Students drawn from 11 teacher training Colleges of Kumaun University, Nainital. The teaching aptitude test standardized by Dr. S.C. Gakhar and Dr. Rajnish (2012) was used for data collection. To analyse and interpret data the researcher used descriptive statistics such as Mean and Standard Deviation and t-test. Statistically significant differences between teaching aptitude and academic achievement of prospective teachers were observed in terms of medium of instruction.

Key points – medium of instruction, Teaching Aptitude, academic achievement

Teaching is one of the most important but complex and demanding art of guiding students through variety of selected experiences towards the attainment of appropriate teaching learning goals. There are many factors which influence the success in the field of teaching. Language is one of them. No matter how many languages a person knows, speaks them, but he thinks in his mother tongue. India is multi-cultural society. It's a mix of multi religious and ethnical groups. Every state hasnot only their different food habits, dress law, religion, culture etc. but they've multi languages, where the use of multiple languages i.e. other than the mother tongue for educational purposes is common. Different languages are used as medium of instruction within the same class. India and its more than 250 million scholars, 22 official languages and hundreds of regional languages represents a

particularly prominent case with the country being presently need a debate about the language of education (Groff, 2017), Karthik and Noblit, 2020). In para 4.11 of National Education Policy (NEP) 2020, "the home language/mother tongue/ local language/regional language shall, whenever possible, be the medium of teaching until at least Grade 5, but preferably until Grade 8 and beyond." Following that, wherever possible, the home/local language will continue to be taught as a language. An examination in a second language results in a loss of grade points of about 9.5%, according to a study done at the University of Bozen-Bolzano that takes advantage of the fact that students whose mother tongue is typically Italian or German learn and take exams in English. The study also found a significant correlation between academic achievement and the medium of instruction. Additionally, it appears that studying in a second language is becoming more and more common given the increasing international mobility of students. In the academic year 2019–2020, for instance, 237,800 students travelled overseas to study at higher education institutions despite the effects of COVID-19. When school-aged children are involved, international migration may also suggest that the mother tongue is not used as the primary language of instruction.

This essay adds to the body of research on the effects of instructional language on student learning. In Morocco, where the secondary school's language of instruction transitioned from French to Arabic in 1983, Angrist and Lavy (1997) take advantage of a variant. They discover a large drop in revenue as well as in French writing abilities. Angrist et al. (2008) discover, however, that a policy move that switched Puerto Rico's official language of teaching from English to Spanish had no impact on students' English competence. Ivlevs and King (2014) take advantage of a change made to the language of the Russian minority schools in Latvia in 2004 that changed the language from 100% Russian to 60% Latvian and 40% Russian to demonstrate how the results of the centralised exam, which was given in Latvian but allowed for responses in Russian, significantly declined across the board. When examining colonial India, Jain (2017) discovered that linguistically mismatched districts—those in which the district's language was not the same as the official language at the provincial level—had 18% lower literacy rates and 20% lower college graduation rates than linguistically matched districts.

After the 1956 reorganisation of Indian states along linguistic lines, the disparity vanishes. The difficulties of receiving an education in a language other than one's home tongue is highlighted in the previous two papers, however unlike this one, those studies are making use of reforms that may have an impact on educational aspects other than language. The body of research on how instruction language affects immigrant children's educational (and other) outcomes is also expanding. Lleras-Muney and Shertzer (2015) examine the impact of legislation requiring

English as the language of teaching in the US during the years 1910–1930, finding only minor effects on literacy and no impact on indicators of social integration or outcomes in the labour market. Both Slavin et al. (2011) and Chin et al. (2012) reported small effects (2013). Chin (2015) draws the conclusion in her review article on US data that "the impact of bilingual education programmes (which include some native language instruction) and English-only programmes on standardised test performance is not statistically different from that of English-only programmes." Of course, the context in which we study is completely different. Since non-migrants make up the majority of our research population, the situation is obviously significantly different. The usage of many languages is developing in tertiary education as a result of the increased international mobility of scholars. One hand the benefits of learning a foreign language, particularly English, are well known, but the cost of non-native literacy has not yet been thoroughly researched in the field of education. To close this gap, the researcher made the decision to investigate how the language of instruction affected the academic performance and teaching abilities of Kumaun University B.Ed. scholars.

Objectives of the study:

- ✓ To study the teaching aptitude of B.Ed. students in relation to Medium of Instruction.
- ✓ To study the academic achievement of B.Ed. Students in relation to Medium of Instruction

Hypothesis:

1.0 There is no significant difference in teaching aptitude of B.Ed. students in relation to medium of instruction.

2.0 There is no significant difference in academic achievement of B.Ed. students in relation to medium of instruction.

Method:

- ✓ Survey method was used for the study.

Sample and Sampling Technique:

- ✓ 507 B.Ed. students were randomly selected as a sample from 11 teacher training colleges of Kumaun University.

Tool Used:

- ✓ Teaching Aptitude Test (2010) prepared by Dr. S.C. Gakhar and Dr. Rajnish was used. Self-constructed questionnaire was used to collect personal

information along with medium of instruction, academic achievement scores of the students were collected from the University.

Analysis Technique:

- ✓ Mean, SD and 't' was used for data analysis.

Analysis of the collected data:

Table 1.0 There is no significant difference in academic achievement of B.Ed. Students in relation to medium of instruction:

	Medium of Instruction of the Student	N	Mean	Std. Deviation	t	df	Sig (0.05)
Acad-emic total	Hindi	360	1117.06	78.59	-4.79	500	Significant
	English	142	1156.49	93.07			

Figure: 1.0. Academic achievement of B.Ed. Students in relation to medium of instruction:

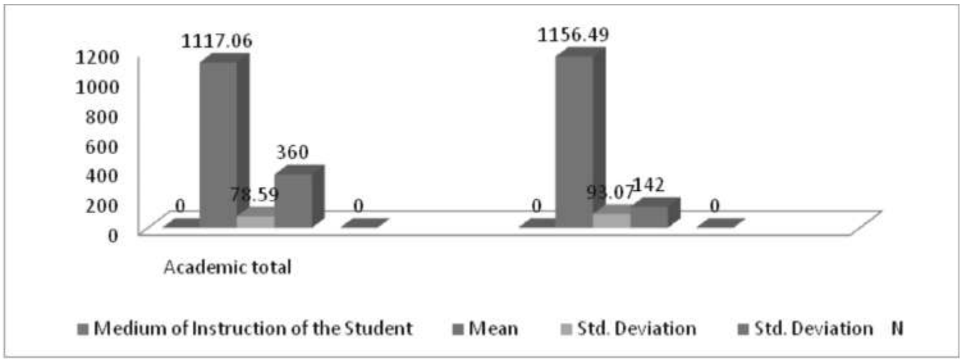

Table and figure 1.0 reveals that the SD score for B.Ed. students belonging to Hindi and English medium is 78.59 and 93.07 respectively. Mean value for Hindi medium B.Ed. Trainees is 1117.06 and for English medium B.Ed. Trainees is 1156.49. The't' test calculated for both the group is -4.79 which is significant for 0.05 level of significant at 500 degree of freedom. The null hypothesis, which was not assuming the significant difference in academic achievement and medium of instruction of B.Ed. students, was rejected.

Table 2.0.There is no significant difference in teaching aptitude of B.Ed. Students in relation to medium of instruction

	Medium of Instruction of the Student	N	Mean	Std. Deviation	t	df	Sig p value (0.05)	Sig (0.05)
Academic total	Hindi	360	26.50	2.77	-2.11	500	.03	Significant
	English	142	27.06	2.29				

Figure 2.0. Teaching aptitude of B.Ed. Students in relation to medium of instruction:

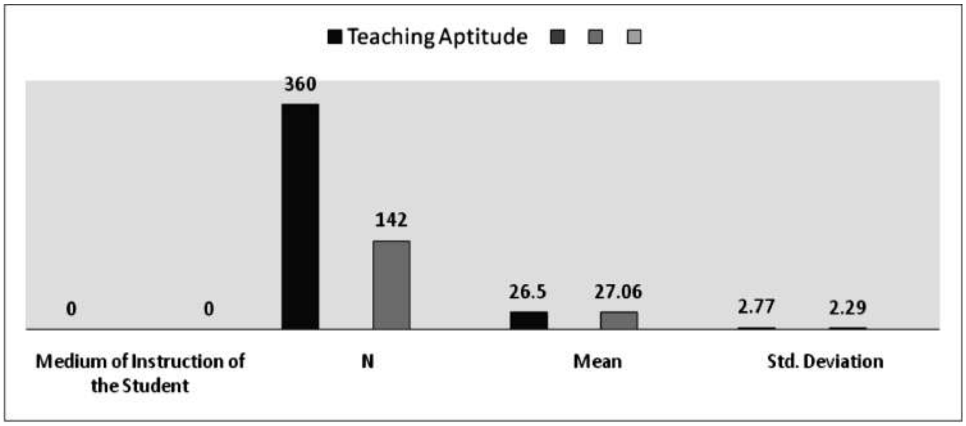

It is clearly depicted from the table and figure 2 that mean teaching aptitude score of Hindi and English medium B.Ed. students come out to be 26.50 and 27.06 respectively. The independent sample 't- test' analysis indicates that the 360 Hindi medium B.Ed. students had Standard Deviation (SD) of 2.77 and 142 English medium B.Ed. students had SD of 2.29. It may also be noted from the table that t-value testing significance of mean difference between two speciality groups (students using Hindi and English as medium of instruction of B.Ed. trainees) come out to be -2.11 which is greater than 1.96, the critical values required to reach 5% level of significance, and hence it is significant at 0.05 level. That indicates means differ significantly at 0.05 level (as p=.03 <0.05). On the basis of significance of mean differences in teaching aptitude of B.Ed. trainees in terms of medium of instruction, hypothesis assuming that 'there is no significant difference in teaching aptitude of B.Ed. students in terms of medium of instruction' was rejected.

Results and discussion:

In the study overall result shows statistically significant differences in teaching aptitude and academic achievement of prospective teachers were observed in terms of medium of instruction. The investigator mainly realizes that in the teaching profession medium of instruction also plays an important role. The results not only

reveal the effect of medium of instruction on academic achievement of the B.Ed. students but also affecting the teaching aptitude of the prospective teachers.

Conclusion:

In conclusion, the aim of this study was to examine the effect of medium of learning on academic performance and teaching aptitude of B.Ed. students and researcher document a negative impact in terms of marks. The benefits of bilingual education and the increased skill value provided by a curriculum is a topic that is fundamentally important but outside the purview of this investigation. Overall, keeping these findings in mind, higher education institution governing bodies should specifically address the issue of non-native learning and adopt tailored rules to prevent grade disparities between students from various language origins. NEP 2020 states that teachers will be urged to employ a bilingual approach with pupils whose native languages may differ from the medium of instruction, including bilingual teaching-learning resources. All students will receive high-quality instruction in all languages; one language does not have to be the medium of instruction to be taught and learned effectively.

References:

C. Groff (2017), Language and language-in-education planning in multilingual India: a minoritized language perspective, Lang. Policy, 16 (2) pp. 135-164, 10.1007/s10993-015-9397-4

https://shikshan.org/nep-2020/curriculum-pedagogy

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf, pp. 135-164.

Jain T. (2017), Common tongue: the impact of language on educational outcomes J. Econ. Hist., 77 (2) pp. 473-510, 10.1017/S0022050717000481

R. Karthik, G.W. Noblit (2020),Language policy and reform in the Indian school system Oxford Research Encyclopaedia of Education, Oxford University Press

Research Scholar, Kumaun University, Nainital

Research Article

Language at the universal level: philosophical problems and prospects for Hindi

–Garima Mani Tripathi

Introduction :

'Truth is one, but sages call it by different name'. (Rig Veda)

The relation between philosophy and language is as old as human civiilisation. The correlation was ubiquitous across the civilisations, whether western or Indian. Early Greek philosophical school of Stoics were the first to express concern about analysis of language. They also coined the phrase 'lekton' (science of language). In early modern period, William of Ockham, in his *Summa Logica*, codified mental language and declared rather emphatically that there is always a science behind language. The nineteenth century philosophers insisted that language does and should represent the world accurately and that the main function of language is to ensure logical analysis though rule of grammar, syntax and universal translation. Language related issues whether at the macro or micro level, are the generic concern of Linguistics, an academic discipline by itself. The entire school of Logical Positivism and Analytical Philosophy derive their inspiration from these philosophical propositions. Most importantly, philosophy of language has become a distinct sub-field for advanced research within the discipline of Philosophy and there have been many excellent publications to testify to this development[1]. Indian philosophy also harped upon the importance of language. For instance, '*artha*' stood for many western notions such as 'sense', 'reference', 'denotation', etc. The *Mimansa* school accepted Vedic scriptures as 'eternal' and accepted '*shabda*' as praman or valid source of knowledge.

Further, while the universalism vs particularism duel has evolved as a mature field of study within the academic jurisdiction of philosophy, the same has not been studied much when it comes to test the growth

and evolution of different languages.From a philosophical perspective, the issue of language at the global level can be seen in the context of tussle between competing values of universalism and particularism. The ubiquitous trend has been in the favour of universalism though the issue of linguistic universalism has generated some debates as well! This is indeed a challenge for an emerging country like India that would certainly like to emerge with its own language (Hindi) on the global platform. However, the trajectory is not that easy, given the challenges to Hindi within the country from other languages and sub-regional forces and established hegemony of English at the global level. This paper, would therefore, make an attempt to study the philosophical issues involved in this battle of languages at the global level and the rightful approach (perhaps) for India. The paper is based on the core hypothesis that while Hindi as one of the universal languages is desirable concurrent with India's rise as a great power; the national endeavour to promote Hindi as one of the universal languages would succeed only if the sub-national challenges to the dominance of Hindi are accommodated on volitional basis and aggressive public policy initiatives are adopted to promote it on international forums.

Languages: the existential truth

According to Steven Pinker, language is 'an instinct' and comes naturally to us. Thus, as human beings, we are ordained to learn, understand and speak particular language(s)[2]. Languages essentially develop as a result of human interaction in specific geographic and cultural context. Exclusive cultures lead to exclusive languages whereas open culture and cultural interactions lead to mixed languages. Further, the origins of languages are probably as old as human civilisation, though the written script may have emerged much later. However, the historical experience shows that nothing is permanent about languages and even popular languages have undergone the process of development, under-development or altogether elimination. The existential dilemma of languages is evident on many fronts. *First*, many languages have disappeared altogether or are in the process of disappearance. For example, Sanskrit may have been the lingua franca for the educated hoi polloi in Vedic times but today it is best limited to academic experts of that discipline[3]. In a country of 1.4 billion people, there were only 14,000 people who registered Sanskrit as their mother tongue in 2011 census[4]. It hardly exists as a popular language[5] and despite public policy efforts to preserve, protect and promote the same as one of the 22 official languages, barely 10,000 more could be added in last one decade. Similarly, popular languages like Pali and Prakrit have disappeared from the popular imagination. The trend is not limited to Indian languages; rather it is ubiquitous all over the world.

Second, many languages are on decline and have less number of people speaking them than earlier periods. This is true of many regional languages. Last year, the popular Indian English magazine came out with one study report in which it was reported that India has lost 220 languages since 1961 and another 150 languages might be lost in next 50 years[6]. The UNESCO maintains a list of endangered languages and as many as 42 Indian languages or dialects are identified in the list.

At the global level, 61 percent of the languages spoken around the world as first language in 1795 are doomed or extinct. Right now, 9 languages a year, or one every 40 days, cease to exist. By 2080, the rate will rise to 16 languages per year. If we do not tackle the problem of language loss, more than half of all languages will become extinct in the next 100 years[7]. The loss of regional languages is taking place partly because of the ongoing duel between universalism and particularism wherein the latter cedes space to the former and also because of the ongoing process of urbanization where people from rural areas migrate towards urban conglomerates in different parts of the country and lose out on their native languages, dialects and cultural exclusivities. They become part of the new cosmopolitan outlook that harps on dominant languages like Hindi or regional languages. This is true of major cosmopolitan cities like Delhi, Mumbai, Bengaluru, Pune or Ahmedabad.

Third, many languages are undergoing a metamorphosis even without undergoing pangs of elimination or decline. The English or Hindi that we speak today is fundamentally different than they were a century ago. Classical English was under huge influence of Greek, Latin and French culture. Further, due to colonial spread, English evolved due to local challenges and adoption. Consequently, English has developed a variety of continental and sub-continental styles. Within India, English has come to have its own desi avtaras distinct from British English. In contemporary times, there is a distinct internet English with interesting vocabulary popular amongst internet users. Similarly, contemporary Hindi is losing its vintage touch with Urdu that supplied much of the vocabulary to the language. However, Urdu is itself on decline and not able to influence Hindi anymore. At a regional or sub-regional level, Hindi is fast eating into the domain area of may tribal languages and local dialects as they are increasingly adopting to the standardized vocabulary of Hindi for comfort and ease! All these developments are part and parcel of a dynamic process wherein languages change and evolve over time due to a variety of factors. Language change study has become a distinct field of research in Linguistics. A variety of political, social, cultural, technological and even moral factors play a role in this change process[8] and we need not go into the details for the purpose of this paper.

Definitional aspects of universalism and particularism and language dynamism

The Dictionary of Philosophy defines universalism as 'as the view that all human beings are ethically / linguistically form the equal / general part of the whole. Membership of certain tribe, class, caste, nation, race, etc does not matter and are not justified in any sense'. On the other hand, particularism 'limits concern to a particular group, class, society or nation with the implicit rejection of universalism and value their contextual experiences'.

An early take on universalism is evident in Bible (confusion of tongues) that laments the entire confusion amongst mankind, primarily due to prevalence of many languages. In the Indian context, Brahma destructed the knowledge tree and gave rise to creation of multiple languages. Leibnitz was of view that harmony has already

been established by the highest active monad (God). So, this world is best of all possible worlds in which there should be definitely a universal language on the model of Algebra that is capable of expressing all rational and conceptual thought in a rationalised mind and a further rational society. Bacon said that language should be alphabets of human thought. In Hegel's philosophy, language is the very form of dialectics and an instrument of negation. For him, universal is the first and the primary in the order of explanation. Particular, on the other hand, is the actualisation of universal and comes into being through the medium of language. Most importantly, according to Hegel, the 'process of knowing is linguistically possible'[9]. Wittgenstein, in his *Tractatus*, took language which pictures the world and took a universalist kind of position but later made a U-turn and declared that language is like a game and there could be many players. So every culture could have their different language cultures. This gave rise to 'cultural relativism' in the field of language development. He also made a phenomenal statement by saying that 'what cannot be said can be shown'. Another contemporary philosopher, Noam Chomsky's work is related to innateness hypothesis of language which led to a proposal that 'there is underlying grammar structure for all the languages'. This concept was popularised as 'universal grammar'[10].

On the other hand, a clear enunciation of particularism was made by Edward Sapir who declared that 'indigenous languages are more important and there can be no common universal scheme for language users'. In Sapir's words, 'human beings do not live in the objective world alone….but are very much at the mercy of particular language which has become the medium of expression for their society. The worlds in which different societies live are distinct worlds, not merely the same world with different labels attached'. Nicholas Evans and C Levinson are two linguists who have written against the existence of linguistic universal, making a case for particular. They had criticized Chomsky's concept of universal grammar and argued that around 6000 to 8000 languages are spoken around the world today. These are strong tendencies that hint towards particular in the field of languages[11].

The constant competition between universalism and particularism

The competition between universal and particular in the field of philosophy is rather unending. The two competing values are at constant tussle with each other. Many aspects of civilisational progress have been metamorphosed from the impact of this competition. This includes the field of languages that have declined, eliminated, changed or even sustained in the face of competition. We did not have universal languages until the ushering of 16th century. Trade during this period became truly global as a result of colonial spread and development of global communication and transport linkages. Therefore, the domination of particular languages that had so far dominated the specific geographical locality due to closed historical, cultural and economic nature (autarkic) in different areas came under challenge from the universalist forces. Little surprising that colonial languages like Spanish and Portuguese dominated the early part of the colonial history and later challenged by

French and English languages in keeping with their respective countries' colonial spread and domination. Within India, the erstwhile monopoly of Persian and Urdu came under increasing challenge from English and soon replaced them as court languages. The new literati were not educated in the traditional languages like Persian and Urdu but chaste English.

The philosophical explanation for this competitionhas often taken critical notes. Robert Phillipson, for example, has coined the phrase 'linguistic imperialism' where higher market values are given to 'certain' languages, basking in European domination and they promote the universal language structure over colonial particular languages. In the long term, these 'certain' languages displaced the colonial languages and became the universal languages[12]. Elsewhere, Phillipson was also very critical of the hegemony of certain languages that he called as a 'paradigm' that serves western capitalism and neo-colonialism which creates a mis-conception of mono-linguicism[13]. A balanced view in this dualistic competition is provided by Saussure. Accordingly, language is a system of science, i.e. a semiotic system according to which language has both structural and social base. He instead, propounded the 'theory of arbitrariness' wherein all languages have the capacity to become universal or particular[14].

Impact of liberalisation, privatisation and globalisation (LPG):English as the universal

One of the most significant impacts of LPG has been breaking off of rigid national and cultural barriers shaping the very thought process of mankind. While global movement of people was there earlier also, the pace has increased in recent times due to increased international trade, commerce, educational shifts, tourism and cross border migrations. More and more people are moving from one place to another either on permanent basis or temporary basis. According to a UN estimate, growth in the number of international migrants has been robust in last two decades. While 173 million people migrated to other countries in 2000, the number reached to 221 million in 2010 and 281 million in 2020[15].

There is a definite move towards a global culture even while people may hold on to nationalistic sentiments.For example, Hollywood movies are increasingly getting popular across the continents, and in turn, English culture is getting exported as a soft power tool to many a countries and societies. Similarly, the information technology revolution is mostly in English though there are strong challengers in Mandarin, Japanese etc. The internet has also supported in massive surge in global communication, cutting across national barriers. Diffusion of innovations is reaching out to other corners of the country without any loss of time unlike earlier periods when there were too many barriers prohibiting their swift movement and instant adoption. As a result, people are no more parochial about holding on to their erstwhile languages and are willing to lean towards universally accepted and spoken languages (like English). It goes without saying that the trends are clearly in favour of the universalism vis-à-vis particularism. Though it may be bit early to predict but there is clear movement towards universalism in all aspects of our life where the

particularism is being relegated and left behind.

While the industrial revolution and the concurrent colonial spread allowed English to reach out to distant lands, Englishhas clearly emerged as the lead beneficiary of the LPG era and has become the lingua franca at the global level and is being understood in many times more countries than it was a century ago. As per latest estimates for 2022, around 1500 million people speak English in world (accounting for 17 percent of the world population) against 1100 million people speaking Mandarin and 660 million people speaking Hindi[16]. It is the official language of as many as 75 countries, including the US, UK, and many emerging powers like India. It is also the lead medium for higher education apart from industrial and scientific research. Within India, the educated literati read and understand English in all parts of the country with a significant proportion of these being able to speak as well! It is estimated that roughly 10 percent of Indians can speak English in some or the other way! India apparently boasts the second largest English speaking population after the US for whom it is a native language. English remains the aspirational language in India and a must-qualify for most Government jobs in India. Perhaps, that speaks why English speakers are on rise in India and English speaking coaching institutes do good business all over the country.

While English is the most acclaimed universal language, it is not the only language and does get stiff competition from many other languages. At the United Nations that is the most representative international organisation of countries, Mandarin, Russian, Spanish, French and Arabic are the other official languages. Except English and Mandarin, all other languages have less speakers than Hindi. Therefore, from a philosophical perspective, one may question the non-inclusion of Hindi as one of the official languages in the United Nations. Perhaps, it is the spread of all these languages across countries that has enabled them to be on the United Nations platform. For instance, French is recognised as official language in 29 countries and in all French overseas territories and departments. Arabic is an official language in 22 sovereign states. Spanish is the official language in 21 countries and a minority language in four more countries, including the United States. Chinese (Mandarin as well as Cantonese versions) are official languages in China, Taiwan, Singapore and Hong Kong apart from being minority language in many Southeast Asian countries[17]. Russian is the only official language that reflects the post-World War II power realities than the actual spread of the language itself.

India as an emerging power and challenges for Hindi in the age of universalism

India is making efforts to rise to global power status and the trends so far are quite positive. It is already the world's fifth largest economy in GDP terms and the third largest military spender. Interestingly, India has been quite accommodative of English and one may say that English is no more the colonial language and it is spoken in all countries and there is an 'Indian English' as well! But all great powers make attempts to position their own language and culture for global consumption

and there is no reason why India should not do this. While Hindi is the third largest spoken language in the world, it is primarily spoken within the geographical contours of the country and not spoken across different countries as is the case with English, Spanish, French, or Portuguese. While Indians are at ease with English being one of the universal language of expression and communication, there is, a philosophical challenge in promoting Hindi at the global level, concurrent with the co-existence of other universal languages.

India does have a policy of promoting Hindi at the global level. In June 2022, the United Nations General Assembly adopted an India co-sponsored resolution on multilingualism that mentioned three major languages of the sub-continent for the first time – Hindi, Urdu and Bengali – for the first time. The resolution encourages the United Nations to continue disseminating important communication and messages in official as well non-official languages, including in the three languages as well as in Portuguese, Kiswahili and Persian[18].Efforts are on, though, to get Hindi recognised as an official language at the United Nations but the process may take more time and efforts[19]. India has also been sponsoring World Hindi conferences in different corners of the world where Hindi has significant number of speakers. While the first such conference was organised in Nagpur way back in 1973, the 12th Conference was organised in Fiji in February 2023. The conference has got its own exclusive website called www.vishwahindisammelan.gov.in where all measures for promotion and proliferation of Hindi are listed. Additionally, there is a World Hindi Secretariat at Port Louis in Mauritius since 2001.

But are these diplomatic and institutional methods sufficient to promote Hindi? Unfortunately not! While contemporary universal languages spread more through colonial methods, we are no more living in the colonial times, and therefore, colonial methods of language and culture domination are not acceptable. Hindi can make its march to the universal level only when we adopt cost-effective but persuasive methods.Bollywood movies have helped the cause to some extent but the impact is limited to West Asian countries. The Indian Council of Cultural Relations (ICCR) needs to come out of its bureaucratic labyrinth and play a constructive and dynamic role in promoting the cause of Hindi like Alliance Frances centers do for French or Confucian Centers do for Mandarin. The Indian embassies and High Commissions abroad can play a much vibrant role in promoting the cause of Hindi learning than they are doing now.

At present, Hindi is the official language only in India and Fiji. Even in Nepal where 80 lakh people do understand or speak Hindi, it is not recognised as the official language. This is a paradox since Nepali is very much an official language in India. Broadly, Hindi is used as spoken or written language in at least a dozen countries including Mauritius, Surinam, Trinidad and Tobago, United States and South Africa. The real challenge would be to convert some of these countries for recognition of Hindi as one of their official languages!

Finally, the global spread of Hindi would become meaningful only if there is a larger acceptability at the national level. Unfortunately, many regional languages

are not willing to live under the subjugation of Hindi and are resisting the imposed spread of Hindi.Celebration of Hindi Diwas on 21st September and a dedicated Parliamentary Committee on Hindi are often interpreted as imposing Hindi over non-Hindi speaking people. This is a philosophical issue that mustbe pondered upon!Hindi will prosper and march ahead at the global level only when we popularise this language on a volitional basis at the national level and make it a true *lingua franca* for communication even amongst non – Hindi speakers. This is a research project that must be taken up for further studies.

Conclusion

This paper started with the philosophical truth of universalism taking a lead over particularism in most aspects of life, including languages. While some languageshave managed to remain universal, others - including Hindi, have a real cultural-geographical challenge in proliferating their spread and gaining wider acceptance, perhaps as one of the recognised UN official languages one day! Our recent public policy efforts have been quite fruitful, as evident in recognition of Hindi as one of the lead non-official languages in UN General Assembly resolution last year. But it is only a resolution! Perhaps, there is a lot of philosophical introspection that need to be done to promote and metamorphose Hindi at the universal level.

Note: Dr Garima Mani Tripathi is an Associate Professor of Philosophy in Mata Sundri College for Women, Delhi University, New Delhi.

(Footnotes)

1 See, Scott Soames, *Philosophy of Language* (London: Princeton University Press, 2012); Chris Daly, *Philosophy of Language: An Introduction* (New York: Bloomsbury, 2013); Colin McGinn, *Philosophy of Language: The Classics Explained* (Cambridge, Massachusetts, 2016). These are just representative illustrations since the actual number of publications is quite vast and mature.

2 For elucidation of this theory, see, Steven Pinker, *The Language Instinct: How the Mind Creates Language?* (New York, Penguin Press, 2015).

3 See, Sheldon Pollock, 'The death of Sanskrit', *Comparative Studies in Society and History*, Vol 43, No 2 (April 2001), pp. 392-426.

4 AjaiSrivatsan, 'Where are the Sanskrit speakers?' *The Hindu*, 10th August 2014.

5 Priyadarshi Dutta, 'Why Sanskrit remains confined', *The Pioneer*, 7th August 2017.

6 Shreya Basak, 'The endangered and extinct languages of India', https://www.outlookindia.com/national/the-endangered-and-extinct-languages-of-india-news-194995 5th May 2022.

7 'The loss of our language: the swelling wave of extinctions across the globe', www.languageconservancy.org/language-loss

8 Octavian Mantiri, 'Factors affecting language change', https://ssrn.com/abstract=2566128 17th March 2010.

9 M A R Habib, *Hegel and the Foundations of Literary Theory* (London: Cambridge University Press, 2018), p.136.

10 For elaboration of 'universal grammar', see, Noam Chomsky, *Reflections on Language*

(New York: Pantheon Books, 1975).

11 Nicholas Evans and C Livingston, *The Myth of Language Universal; Language Diversity and its Importance for Cognitive Science* (London: Cambridge University Press,2009), p. 492.

12 Robert Phillipson, *Linguistic Imperialism* (Oxford: Oxford University Press, 1992), 27.

13 Robert Phillipson, 'Linguicism: structures and ideologies in linguistic imperialism', in J Cummins and T Skutnabb-Kangas (eds), *In Minority Education: From Shame to Struggle* (London: Multilingual Matters, 1988), pp. 339-58.

14 Ferdinand D Saussure, *Course in General Linguistics* (Geneva: University of Geneva Press, 1916), p. 18.

15 International Migration 2020, www.un.org

16 Source: www.statista.com

17 'Countries and languages' www.nationsonline.org/oneworld/counties_by_languages.htm

18 'UN mentions Hindi, other sub-continental languages for the first time', *The Tribune* (Chandigarh), 11th June 2022.

19 'Efforts on for Hindi's inclusion in official languages at the UN, but will take some time, says S Jaishankar', *The Hindu* (New Delhi), 27th October 2022.

Research Article

Criteria for Inclusion in the Eighth Schedule: A Work in Progress

–Dr. Bipin Kumar Thakur

Abstract:

Originally the Constitution of India in its eighth schedule enshrined just fourteen languages. Over the years more and more languages were added to it through various constitutional amendments making the overall count to twenty-two. Many other languages are waiting for getting the constitutional status although there is no mention in the Constitution of any such qualifying criteria. So far, two Committees namely Ashok Pahwa Committee (1996) and Sitakant Mohapatra Committee (2003) were set up by Union Government to do the needful but no objective criteria could be framed. This is high time a fresh attempt is made by all the stakeholders to take the call again because scheduled status for a language brings certain advantages for the language on the one hand; it leads to formation of national identity and national consciousness helping in people's empowerment on the other.

***Key Words**: Official Language; Regional Language; Constitutional Status; National Identity; National Consciousness; Language and Politics.*

The Constitution of India enshrined just fourteen languagesin its eighth schedule. Over the years more and more languages were added to it through various constitutional amendments making the overall count to twenty-two although there is no mention in the Constitution of any such qualifying criteria. *Sindhi* language was added in the eighth schedule in 1967 by the 21st Amendment Act; *Konkani, Manipuri and Nepali* were added by the 71st Amendment Act in 1992 while *Bodo, Dogri, Maithili* and *Santhali* were added to it by 92nd Amendment Act in 2004.There arerising demands for many other languages for getting included in the Constitution.

Constitutional Provisions

Part XVII of the Indian Constitution mentions about official language (Articles 343 & 344); regional languages (Articles 345-347); languages of the Supreme Court, High Court etc. (Articles 348 & 349) and special directives (Articles 350, 350A, 350B and 351).Eighth schedule contains names of twenty-two languages. In addition, Article 29 talks about "protection of interests of minorities". The Constituent Assembly deliberated rigorously on the language issue during 12-14th September 1949 expressing diverse opinions.

Concluding the debate, Dr. Rajendra Prasad said, "I think, we have adopted a chapter for our Constitution which will have very far-reaching consequences in building up country as a whole. Never before in our history did, we have one language recognized as the language of rule and administration in the country as a whole… we have now accomplished political unification of the country, such as it is. We are now going to forge another link which will bind us all together from one end to the other."[1] He said further, "Our Constitution so far has evoked many controversies and raised many questions which had very deep differences; but we have somehow or other, managed to get over them all…We have done the wisest thing possible and I am glad, I am happy and I hope posterity will bless us for this."[2]

Calling the language provisions, a "compromise", Granville Austin says, "the members of the Constituent Assembly did not attempt the impossible, they did not lay down in the language provisions of the Constitution that one language should be spoken over all India. Yet they could not avoid giving one of the regional languages special status, so they provided, not that there be a 'national' language, but, using a tactful euphemism that Hindi should be the 'official language' of the Union."[3]

Eighth Schedule of the Indian Constitution

Eighth schedule referring Articles 344(1) & 351 originally enlisted fourteen languages, namely, Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Odia, Punjabi, Sanskrit, Tamil, Telugu and Urdu. Sindhi was added to the eighth schedule by the 21stAmendment Act, 1967. As per Census 2011, there are 27,72,264 Sindhi speakers which covers 0.23 per cent of the country's population.[4] It is mainly spoken in its western part particularly in Gujarat, Maharashtra and Rajasthan. In Census 2011, three mother tongues namely, Bhatia, Kachchhi and Sindhi were grouped under Sindhi as variants.[5]

Konkani, Manipuri and Nepali languages were scheduled in 1992 by the 71st Amendment Act. Belonging to Indo-Aryan family of languages and being the official language of Goa, there are 22,56,502 speakers of Konkani (0.19 per cent of India's population) spread over Goa, Karnataka, Maharashtra, Kerala etc.[6] Manipuri, mainly spoken in Manipur belongs to the Kuki Chin group of Tibeto-Burman language family. It uses two types of scripts in writing—one is Bengali script (mostly used) and another is original Manipuri script named as *Metei Mayek*. It recorded the number of its speakers as 17,61,079.[7]In Census 2011, the number of Nepali speakers was recorded as 29,26,168 mainly spread over in Sikkim, West Bengal, Himachal

Pradesh and Uttarakhand. Belonging to Eastern Pahari sub branch of Indo-Aryan language family, it is the official language of Sikkim and West Bengal.

Bodo, Dogri, Maithili, Santhali were added to the eighth schedulein 2004. Bodo belonging to the family of Tibeto-Burman languages included three mother tongues, namely, Bodo, Kachari and Mech/Mechhia during the 2011 Census and the number of its speakers were 14,82,929 representing 0.12 per cent of the Indian population. The number of Dogri speakers remained 25,96,767 representing over 0.21 per cent. It belongs to the family of Indo-Aryan languages. Maithili, written in Devanagari script, mainly spoken in Bihar and Jharkhand states belongs to the eastern Bihari branch of the Indo-Aryan language family having nearly 1,35,83,464 speakers representing 1.12 per cent of the Indian population.[8] Santhali, mainly spoken in Bihar, Jharkhand, Odisha and West Bengal falls under the Munda branch of Austro-Asiatic family of languages and is written in five scripts, namely, Devanagari, Bengali, Odia, Alchiki and Roman. As per Census 2011, there are 73,68,192 Santhali speakers.[9]

Criteria for Inclusion in the Eighth Schedule

Any discussion on the criteria for languages to be getting a place in the eighth schedule must be seen with reference to the following Constitutional provisions: (i) Article 344(1) provides, "the President shall, at the expiration of five years from the commencement of this Constitution and thereafter at the expiration of ten years from such commencement, by order constitute a Commission which shall consist of a Chairman and such other members representing the different languages specified in the eighth schedule as the President may appoint, and the order shall define the procedure to be followed by the Commission." (ii) Article 351specifies, " it shall be the duty of the Union to promote the spread of the Hindi language to develop it so that it may serve as a medium of expression for all the elements of the composite culture of India and to secure its enrichment by assimilating without interfering with its genius, the forms, style and expressions used in Hindustani and in the other languages of India specified in the eighth schedule, and by drawing, whenever necessary or desirable, for its vocabulary, primarily on Sanskrit and secondarily on other languages."

A detailed analysis of the Constituent Assembly debates provides a meaningful insight into its scheme of inclusion of fourteen languages in the eighth schedule. According to Granville Austin, "the *Munshi -Ayyangar* formula provided that each language should be represented on the language commission; later it was agreed that these languages should be the sources from which Hindi should broaden itself. But these were the only tangible advantages according to the regional languages from being listed in the Constitution. As the first language Commission observed, 'there is no particular distinction bestowed on a language' because it is named in schedule VIII".[10]

He further says that "the major advantage of being enlisted of languages in the eighth schedule was really psychological, particularly, for those who feared the dominations of the supporters of Hindi". This apprehension became quite clear by

the opinion expressed by G. Durgabai in the Constituent Assembly. She said, “the question of national language for India was almost an agreed proposition, until recently has suddenly become a highly controversial issue. Whether rightly or wrongly, the people of non-Hindi speaking areas have been made to feel that this fight or this attitude on behalf of the Hindi speaking areas is a fight for effectively preventing the natural influence of other powerful languages of India on the composite culture of this nation.”[11]

Syama Prasad Mookerjee, on the other hand, welcomed the inclusion of languages in the eighth schedule. He said, “we are considering a matter which is of vital importance, not to the people belonging to one or other of the provinces of India, but to the entire millions of India’s population…The decision that we are about to take is something which has never been attempted in the history of India for the last thousand of years…We should realize at the very outset that we have been able to achieve something our ancestors did not achieve…all must feel that nothing has been done in the Constitution which may result in the destruction or liquidation or weakening of any of these languages.”[12]

Commenting on the language debates, Rama Kant Agnihotri says, “even though India’s Constituent Assembly debates were informed by remarkable seriousness, scholarship and integrity, most of the linguistic decisions taken by the Constituent Assembly, in many cases insightful, were located in consensual democracy and the domination of the elites in that body…In trying to prepare a blueprint for a liberal and secular democracy, the makers of the Constitution were forced to reconcile several contradiction.”[13]

Even today, there is no mention in the Constitution of qualifying criteria for a language to be included in the eighth schedule. Once included in the schedule, the language gets many advantages. It becomes obligatory on the government to take measures to develop the language to make it an effective means of communication. They are allowed to be opted as mediums in the Union Public Service Commission (UPSC) examination. Literary bodies such as Sahitya Akademi are bound to recognize books written in those languages and translation of literary materials are also supposed to be initiated into other languages. Above all, Hindi is expected to be enriched by drawing sources from these languages.

In order to address the increasing demands of inclusion of more and more languages in the eighth schedule, Government of India constituted a Committee under the Chairmanship of Ashok Pahwa in 1996. The mandate of the Committee was to evolve and frame criteria for inclusion of languages in the eighth schedule. As a follow up measure, a nine-memberCommittee of linguistic experts under the Chairmanship of Sitakant Mohapatra was constituted in 2003 to evolve a set of objective criteria with reference to inclusion of more and more languages in the eighth schedule. Other members of the Committee were, namely, B.H. Krishnamurti; Brij Kishore Sharma; G.C. Narang; Birendranath Datta; S.R. Faruqi; Suraj Bhan Singh; Uday Narayan Singh and Secretary, Department of Official Language (O/L) was the Member-Secretary of the Committee.

After conducting several meetings, the Committee submitted its report in 2004. An inter-ministerial Committee was constituted in 2012, chaired by the then joint secretary (HR), ministry of home affairs to make in depth study of the whole issue. Many consultations were made among the concerned ministries and departments of the Union Government. Finally, a committee was formed by the ministry of home affairs (MHA) with representatives from the department of personnel & training; department of official languages; ministry of culture; ministry of law and justice; sahitya akademi; central institute of Indian languages, Mysore and the registrar general of India. But despite many meetings, no objective criteria could be finalized.[14] Therefore, the task of framing the criteria for inclusion in the eight schedule is still a work in progress.

The minister of state in the MHA in his answer to the parliament question said, "the problem is that as the evolution of dialects and language is dynamic, influenced by socio-eco-political developments, it is difficult to fix any criterion for languages, whether to distinguish them from dialects, or for inclusion in the eighth schedule to the Constitution of India. Thus, both attempts, through the Pahwa (1996) and Sitakant Mohapatra (2003) Committees to evolve such fixed criteria haven't borne fruit."[15] He said further that the Government is conscious of the sentiments for inclusion of other languages in the eighth schedule and will examine the requests keeping in mind these sentiments, and other considerations such as evolution of dialects into language, widespread use of a language etc. It means that evolution and determination of any such criteria is still a work in progress without having a time frame within which the work may be completed.

Conclusion

Over the years there has been rising demands for inclusion of more and more regional languages into the eighth schedule because languages have become the means of getting national identity and consciousness and a political tool to settle regional and national aspirations posing challenges to the issue of national integration. So far, two Committees namely,*Ashok Pahwa Committee* (1996) and *Sitakant Mohapatra Committee* (2003) were set up by Union Government to do the needful but no objective criteria could be framed. This is high time; a fresh attempt is made by all the stakeholders. But any such attempt must take into consideration certain parameters for new language's inclusioninto the eighth schedule, namely, a) whether that languageis spoken at least by a million people?b) whether that language is used at the schools and colleges in the specified area?c) whether that language is supported by a distinguished script or not? d) And whether that language has been popularized among the masses by literary bodies or not? Till then we must say determination of criteria for inclusion in the eighth schedule is a work in progress.

Notes & References
(Endnotes)

1 Lok Sabha Secretariat (2014).*Constituent Assembly Debates*, Book No. 4, Vol. IX, 30th

July to 18th September 1949, pp. 1491-1492.

2. Ibid., p. 1493.

3. Austin, Granville (1985). *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*, OUP, Bombay, p. 266.

4. Census of India (2011). *Language Atlas of India*, MHA, Government of India, New Delhi, p.77.

5. Ibid., p.77.

6. Ibid., p.57.

7. Ibid., p.63.

8 Ibid., p.59.

9. Ibid., p. 75.

10. Austin, Granville, op. cit., p. 297.

11. Lok Sabha Secretariat, op. cit., p. 1428.

12. Lok Sabha Secretariat, op. cit., pp.1391-1392.

13. Rama Kant Agnihotri, "Constituent Assembly Debates on Language", *Economic & Political Weekly*, Vol. L, No. 8, February 21, 2015, pp. 47-56.

14. Lok Sabha, *Unstarred Question No. 2237* dated 29.11.2016.

15. Ibid.

Associate Professor, Department of Political Science,
Sri Guru Tegh Bahadur Khalsa College, University of Delhi, Delhi-110007
Mobile No.: 9899173167 Email: bkthakur1510@gmail.com

Research Article

Tagore Uses of Language and Literatureas Nationalism

–Deepak Kumar[1]
–Dr Anita Kumari[2]

Abstract:

The contribution of Indian literature occupies it own importance in the grapple or struggle for independence of India. Some principal figure were sarojini Naidu. Bankim Chandra Chatterjee, Pandit Makhan Lal Chaturedi. Shyamala, Gupta who try to portrait the glorious past of India and its rich cultural heritage. On the Other hand Mulk Raj Anand and Munshi Premchand noted and analysis of explotation, impoverishment and mis furtune But Ravindranath Tagore was a rare figure who try to build a fusion of eastern and western knowledge. During the age of conflict with british he travelling atleast three times to western countries and performs his plays to collects funds for Visvabharti. Even he sold the copyright of his collective books and literatures and he produced classical literature which was full of patriosm. His originally composed Bharat Bhagya Bidhat in Bengali which becomes National Anthem after independence. He was 1st man to received Noble prize for Gitanjali. It is large volumes of poem devoted to god. Though novel 'Gora he expressed the Brahmo Samaj Philosphy which does not accept the authority of the vedas and not insists on belied in Karma. It belived in One god. Besides writing large numbers of novel. Playwrites and poems based on nature and love for nation, he founded shanti niketan in 1901, the Main mitive was to provide education in nature beauty and wanted to connect a blend best of both western and Indian education system. By deep Observation we can sa that Tagore theme based on love for freedom and non conformity.

Keywords :

Patriotism, fusion, analysis, conflict, devoted, vividness, heritage, philosophy, prominent.

Introduction :

The contribution of Indian writers occupies an

important place in the time of struggle for freedom during British rule in which Rabindranath Tagore is the most prominent figure. He was a man who try to adopt both western and Indian cultures in his works of novel and poetry which creates a fusion of new civilization in world stage. Most of his novels and poems were based on religious themes with patriotism in a parallel way. Indian culture and heritage deeply influenced Tagore from the early stage of life. Both his Bengali and English literary works occupies a special rank in world stage. In modern time too, his masterpiece works were Manasi, Sonar Tari, Gitanjali, Gitimalya Balaka, The Post Master, Gora, Waiting, Friend, On the Nature of Love, Paper boats etc. In the poems collection of Gitanjali based on devotional songs from India in the middle ages. It is mainly based on love theme but in some poems we came to know about the struggle between spiritual longings and early desires. He was the man who gives our national anthem "Jana Gana Mana" which was originally composed as Bharato Bhagyo Bidhata in Bengali. Tagore's main sources of his literary inspiration were Vishnava poets of Medieval Bengal and the Bengali folk literature, Indian classical aesthetic, cultural and philosophical heritage as well as the modern European literary tradition, particularly the work of the English. Tagore established Santi Niketan because he wanted to establish an ideal school which help to cultivate a love for nature and impart knowledge and wisdom in mother tongues and to eventually enrich Indian culture. He was awarded the Nobel prize in 1913 for Gitanjali which included a prize money of 8000 pounds. Tagore spent this entire sum on the asrama school in Santi Niketan and build his dream project- the Visva- Bharati University. He also sold most of his play's play writes and also performed his plays in world stage to setup Santi Niketan in proper way. He was a great poet and patriot who believed in the peaceful coexistence of human beings, cultures, races and countries. He believed the idea of social harmony among all human beings and described wars fought by nations for selfish, material gains. His poems express feelings of national consciousness. The desire of Tagore is to awaken the soul of Indian people reanimate the lost glory of the past. Still Tagore's poems and poetries were performed as Rabindra Sangeet. An integral part of almost every Bengali occasion and cultural festival and it seems as an important aspect of Bengali cultural heritage. Tagore famous slogan was "You cannot cross the sea merely by standing and staring at the water." Actually, he wants a nation where people are truthful and words come out from the depth of their hearts. Deep sentiments found in poems like Gitanjali, The Child, Chitto Jetha Bhayshunya, Vocation, Birpurush, Sandhya Sangeet and so on. Nevertheless, his purpose of writings in English is pretty large and manifold. His most patriotic poem in English was "Freedom". He also produced short poems in devotion to motherland like The boat, Clouds and Waves, I cannot Remember my Mother, Endless Time were notable works. His best known another short types poem list were 'Where The Mind is Without Fear', I wish, On the Nature of Love and My Mother. Overall we can say that through his literary works Tagore wants to achieve freedom for a nation where every mass of population have self-identities and follow the ideas of life based on rich culture and heritage as our ancient civilization.

Review of Literature :

As we know Tagore contribution in Indian literary work is unmatchable from past to present era. By deep observation of vivid books and texts we came to know that he was a man who purely devoted to nationalism and most of his literary works based on patriotism whether it was novels or poetry in Bengali as well as in English based on the philosophy and message of Tagore, the text interprets the Indian ideal of philosophy ,art and religion. Here Dr. Radhakrishnan's acquaintance with the soul of nation. In the very best of Rabindranath Tagore- Short Stories by EMBASSY CLASSICS considered Tagore as the most sensitive and creative writers of his time. Though one can find his reflection in over a hundred short stories. It also carried a pure message of Indian spiritual heritage, we get lots of knowledge from short stories like my Boyhood days ,Nationalism ,Kabuli Wala and Gora which deals with vividness of human nature and problems in contemporary life. Other books like The Cambridge Companion to Rabindranath Tagore by Sukant Chaudhari, History of Sriniketan: Rabindranath Tagore pioneering works in Rural Reconstruction by Uma Das Gupta focus Tagore's philosophy of life and self-realization in modern period of time. These books deals with India rich glorious past. Anil Mishra- "Main Tagore Bol Raha Hoon" based or we can say that it provides large keen knowledge on patriotism nature of Tagore and his desire which he wants to get or achieve through literary works.

Problem Statemement

When we talk about Indian freedom fighter, we basically remembered the names of political leaders of that time. But one thing we have forgotten that there were number of figures who try to show their devotion to motherland to achieve independence. There were number of novelists and poets of 18th and 19th century in India who build conflict with British rule. Tagore was also one of the prominent figure of 19th century but we basically know him as great universal philosopher and writer but actually he was one of the great figure or we can say a strong warrior. Still we cant observe many literary works of Tagore and in academic syllabus very less numbers of novels and poetry were included in present time.

Need for the Research

Tagore was a Bengali poet, writer, music composer and painter during British rule. He always tried to appreciate Indian culture and heritage but also admire western knowledge. Through large books of Tagore one can learn fundamental principles of educational philosophy, nationalism, internationalism, humanism and idealism. Some key points of literary works were- Idealist, Humanist, Naturalist, Patriotism, Internationalist, Vedantist.

Research Methodology

Through research methodology one can come to know about various branches and aspects of analysis the subject matter. Vivid methods and techniques were

followed to know brief knowledge on topic of research, suggested solution, formulating hypothesis, organizing, collecting and evaluating data. For specific topic of research, a literature review involves researching, analyzing, reading, evaluating and summarizing scholarly literature.

Limitation of Research

In modern period of time we came across with numbers of Indian novelists and poets who occupies a special place in the world of English literature. But more or less we ignore the initial writers who have sown seeds of English literature in India. the special qualities of such novelists and poets were- they aways try to portrait the Indian culture an rituals. Rabindranath Tagore was one of the prominent figures in this category who not only focus on Indian glories past in his plays and other literary works but also adopts many good things from western civilizations. Patriotism was the major theme of his play wrights. But he was never considered as freedom fighter or warrior after independence till now. Tagore was always remembered as a poet only by large mass of Indian population.

Expected Outcome

By deep observation through various texts and books available about great philosopher and thinker of 20th century and 1st novel winner from India for literature Shri Rabindranath Tagore, who not only writes vivid numbers of novels and poetries in his native language Bengali as well as in English in, later part of his literary career. His poems basically written on struggle between spiritual longings and earthly desires. His works particularly poems and songs are much like a flow of emotion and love. Tagore devotion of mother India was found in most of his plays. He was the man who sold copyrights of his plays for the sake of Shanti Niketan (now visva-Bharati University). He wanted to blend best of both western and Indian education systems. Overall we can considered him as Bengali poet, philosopher, social reformer and dramatist.

Conclusion

The contribution of Tagore as nationalist can't be ignored or neglected because he was the man who not only portrait's Indian cultures and heritage of glories past but also develops himself as reformer and great philosopher. The message behind his poems was freedom is more desirable than power, gold or beauty. The central idea is mind without fear. His literary poems based on flow of love and emotion. Three things were mainly found in poetry 1. Mystery 2. Emotion 3. Lastly confirmation. the central themes of Tagore's short stories mainly or always occupy the household matters of rural people. Poverty of individual and struggles as well as the society problems especially of rural areas of Bengal. He always sees in nationalism , instincts of self- aggrandizement of whole people organized together with all the paraphernalia of power as well as prosperity. Its flags and hymns and patriotic bragging. During the time when India was struggling to find the right language

of freedom movement. He advocated the clear idea of global integrity and that the man himself is a gateway of the world.

References

- THE PHILOSOPHY OF RABINDRANATH TAGORE by Dr. Sarvepalli Radhakrishnan.
- RABINDRANATH TAGORE OMNIBUS II -THE RELIGION OF MAN FOUR CHAPTERS RED OLEANDERS THE HIDDEN TREASURES AND OTHER STORIES SHESH LEKHA MY REMINISCENCES.
- The Home and the World- RABINDRANATH TAGORE
- The Very Best of RABINDRANATH TAGORE Short Stories- EMBASSY CLASSICS.
- Rabindranath Tagore(set of 5 books) Gitanjali, My Boyhood Days, Nationalism , Kabuli Wala and other stories, Gara by Rabindranath Tagore.
- History of Sriniketan: Rabindranath Tagore Pioneering Work in Rural Reconstruction- Uma Das Gupta.
- SELECTED SHORT STORIES RABINDRANATH TAGORE edited by SUKANTA CHAUDHARI The Oxford Tagore Translations.
- The Cambridge Companion to Rabindranath Tagore(Cambridge Companions to Literature) Edited by Sukant Chaudhari.
- Main Tagore Bol Raha Hoon by Anil Mishra.

Ph.D Research Scholar
English Department
RKDF University, Ranchi, Jharkhand
Mob: 7050660602 Email : dk4850727@gmail.com

Associate professor Cum Dean Academics
R.K.D.F University Jharkhand
Mob:9798148889 Email : anita.kumari81@gmail.com

Research Article

English vs. Hindi: Does Language Matters in Career Development

–Dr. Shaizy Ahmed*
–Mr. Praveen Singh**

Abstract:

Language is a medium to communicate and express our feelings, ideas, and thoughts. During childhood, one learns native language through various interactions with his family, peers, relatives and neighbours. He also develops confidence and self-esteem during the interaction process being done in mother tongue. This need of giving significance to mother tongue is well recognized in National Education Policy ,2020 where guidelines are being issued to use local language as a medium of instruction at least upto primary level. However, in this pace of rapid globalization English is assigned as the status of global language. As an outcome, Hindi speaking students are facing a tug of war between their free expressions of feelings and path of career development. Many institutions are also biased and relate English as a measure of intelligence, creativity and cognition. This paper is raising pertinent questions related to use of language in different facets of life and explaining its significance in career phase. For this purpose, the perceptions of college going students of Jaipur have been studied about their choice of learning English. Few policy measures that may be taken to enhance the awareness and sensitization of local language is also been suggested.

Keywords: Language, Intelligence, Hindi & English debate.

Introduction : Language is a medium of expression and a way to cherish once dreams. The Indians proudly relate their language with culture. The very first language that a child learns is from her mother. A child without knowing any formal language started speaking to her mother and that language is called the 'Language of love' which has no words but expressions. Slowly,

the family help the child learns their culture and same is passing on from one generation to another. It is immaterial that her mother speaks Hindi, English or any regional language but that language actually introduced the child with the outer world. Henceforth, this language should always be pure and here lies the question of language and its purity. Purity signifies the purity of words, character and meaning. If it is so, then only we can build a sense of belongingness in the child towards our culture. In twenty first century, many parents are either unknowingly or because of inferiority complex and other reasons prioritize English as a mode of communication with their children and henceforth, the mixing of language have initiated. This is also an indication towards vanishing of many regional scripts and languages. Globalization has paved a way to this kind of culture.

The next stage of learning is to familiarize a child with the 'Language of Gyana'. There is a sudden shift for children in this stage from Matribhasha to Bhasha of instruction. It is unfortunate that a big section of population still beliefs that teaching in English helps their children learn better. If it is so, IAS officers Ms.Surbhi Jain, Mr.Nishant Gautam, PayTM founder Mr. Vijayshekhar Sharma and ISRO scientist Mr.Pratamesh Hirve would have never been a successful person after coming from Hindi background. In this race of Matribhasha vs. bhasha of learning, many children lost their confidence and dropped out. Many even thought themselves as failure. NEP,2020 is a welcoming move in this regard as it emphasize more on learning in Matribhasha which not only help the children in understanding the concepts easily, but also help in developing their critical thinking and other skills.

In the next stage, the question of 'Language of Karma' has emerged. During this stage, the child has grown up and started looking towards his Karma or career. Here comes the question of choosing one language amongst Hindi/Matribhasha or English. The fact is that majority of youth is still attracted towards English and are opting for English as language of commerce and employment. Further they have no better options. Foreign jobs are also requiring good communication skills in English. Hence, until Hindi and regional languages couldn't be promoted to such an extent that they fulfill the needs of employability; purpose of promoting Hindi or regional language would not be served.

Literature Review

English is considered as a language that affects an individual life at many spheres including economic, political and social (Casale & Posel, 2011; Grant & Li, 2019 & Coleman, 2014; Plonski et al., 2013). However, the impact of English language on career development, especially in situations where multiple languages are used is less researched (Leibowitz, 2015; Treffers-Daller, 2019). However, an association between language and career within commerce and industry is clearly established (Bloch, 1995). The researchers also confirmed that the relationship between language and skills that a company likes to see mutates with time (ibid., 1995; Hong and Ganapathy, 2017). Regardless of differences and variations, English has become the lingua franca of the international corporate world. Most of the corporate firms

are recruiting personnel fluent in English considering them as an asset and also opined that they may represent their organization better and take it to international markets. Hence, English proficiency is critical to an individual's success in this highly competitive corporate world (John et.al., 2021). It is also practiced as a medium of communication in most government and private offices (Graddol, 1997). In addition, people believes that knowledge of foreign language enables one to do things that would otherwise be impossible (Copenhagen Business School Faculty of Languages, 1994). Lack of linguistic proficiency is also an obstacle to mobility for job (Enderwick, and Gray, 1992; European Union News, 1994). Deutsche Bundesamt prepared an interesting and useful "wish list" indicating what employers want from graduates and kept Foreign Language at second place. English has relevance in the technical world as well. All business communication requires fax, phone calls, video recordings, print and electronic media, and other social media platforms. This all is possible only by knowing English as the main service providers are still working in English language.

In contrast, there are studies which promote the advantage of native language over the foreign language in job market. According to them, communication in native language with clients can make a big impression on the customers. Covele has conducted one study with Mozambican university and found that the relationship between English language competence and professional status remains inconclusive (Covele, 2020). Many organizations are now looking for second-language training to give their executives an edge (Shipman, 1992; Bourgoin, 1993).

To conclude, the debate of English vs. Hindi is immaterial. The significance of every language is well explained in Three Language Formula as proposed in NEP,2020. Hence, it should be implemented in its true sense so that children may develop proficiency in English, Hindi and their mother tongue equally. In addition, early diagnostic assessments should be done after the transition of knowledge by the teachers to best support the students. Research-based continuous professional development for language teachers is also essential to reduce this gap (Jaekel, et.al., 2022).

Objectives on Study

1. To diagnose the need of language in different phases of life.
2. To study relationship between language and career development from student's point of view.
3. To suggest specific measures for bridging gap between native language and language of employment.

Research Methodology

The study is more descriptive in nature. It is based on the analysis of primary data collected from two colleges of Jaipur city of Rajasthan. Sixty students including males and females who are graduating from the colleges were included in the study. Interview schedule was used to collect the information related to the subject. The data was analyzed through percentage analysis.

Findings & Discussions

The findings are based on variables which classifies the importance of English in the life of students from their career point of view. These students are pursuing graduation in various streams. Their experiences are discussed in Table No.1 as given below:

Sr. No	Variable	Response	Frequency	Corresponding Percentage
1.	Gender	Male	30	50%
		Female	30	50%
2.	Family status	Joint	06	10%
		Nuclear	54	90%
3.	First level learners from family	Yes	42	70%
		No	18	30%
4.	Language spoken at home frequently	Hindi	10	16.66%
		English	3	5%
		Regional Language	47	78.33%
5.	Proficiency in speaking English	High	6	10%
		Medium	9	15%
		Low	45	75%
6.	Difficulties in English utilization (Multiple responses)	Writing difficulty	32	53.33%
		Difficulty in speaking fluent English	40	66.66%
		Grammatical Errors	43	71.66%
		Inability to construct sentences	32	53.33%
		poor Vocabulary from school level	24	40%
		Hesitation while speaking in public	48	80%
		No Difficulty	6	10%

7.	English as a medium for career growth	Yes No	54 7	90% 10.37%
8.	Reasons for learning English (Multiple responses)	It can help find a better job.	52	86.66%
		It is an international language	23	38.33%
		Develop confidence to face interview	51	85%
		People give more weightage to English speaking persons	53	88.33%
		In Universities, medium of instruction is English	36	60%
		Parents/teachers ask to learn English	20	33.33%
		Found it as basic requirement to work in MNCs	16	26.66%
9.	People perceiving English speaking people as intellectual	Yes	38	63.33%
		No	22	36.66%
10.	Recruiters prefer English speaking students for placement	Yes	56	93.33%
		No	4	6.66%
11.	Perform better in regional language	Yes	48	80%
		No	12	20%

From above findings, it is clearly evident that English is still perceived as a language of Karma or work by the youth as almost ninety percent of the youth opined English as an essential requirement for their career. Majority also holds the view that English speaking persons are given more weightage during placements and interviews. Almost sixty three percent students are of the belief that recruiters found English speaking students as more knowledgeable and skilled. Many students are accepting the importance of Hindi or other regional language, but considering English as a

language which provides better employment opportunities; they are more inclined towards the same. Since majority belongs to first generation learners, they are facing difficulties in developing proficiency to speak and write English in the later stage of their life. They wish that they would have learned it earlier. Hence, need is to adopt the 'three language formula' from the inception of schooling in its true sense so that the cultural heritage and the employability may go hand in hand.

Suggestions

- Students should be motivated to respect their regional language and protect it at all platforms maybe educational, cultural, social or political.
- More employment opportunities need to be created in Hindi and other regional and local languages to reduce the craze of English in India.
- The parents should also promote the use of local languages by speaking to their children in local language most of the time and not by mixing languages.
- Proficiency and purity of each language should be emphasized through training by establishing regional language councils in each state.
- English should be taught in schools with an attitude that it is essential to learn English but don't consider it as a mandatory qualification for success.

Conclusion

No language is good or bad. Both English and Hindi and other regional languages have their own richness and value. Acceptance of Language only depends upon the number of population which knows and speaks that particular language. Today English is a medium of communication at global level but who knows that tomorrow any other language may take up that lead. One should learn that proficiency in career comes through skills and positive attitude and not through dependency on any language in which you can't perform. Hence, instead of criticizing any language, we should sensitize people towards developing a habit of growing Hindi and other regional languages to acclaim an International status.

References

Bloch, Brian. 1995. Career enhancement through foreign language skills. International Journal of Career Management.Vol.7. Issue: 6. pp.15-26. https://doi.org/10.1108/09556219510098073.

Bourgoin, E. 1993. Foreign Languages and Your Career. Audio-Forum. Guilford: CT.

Casale, D., & Posel, D. 2011. English language proficiency and earnings in a developing country: The case of South Africa. Journal of Socio-Economics. 40(4). Pp. 385-393.

Coleman, H. 2014. Teaching English: The English Language in Development. British Council.

Copenhagen Business School Faculty of Languages. 1992. The Language of Tomorrow. Brochure.

Covele, Ricardo. Pinto. Mário. 2020. An Analysis of the Use of English Language for Career Development in African Higher Education: The Case of Two Mozambican Flagship Universities. Journal of Comparative & International Higher Education. December. Vol. 12. No. 6S1. pp. 23-30. DOI: 10.32674/jcihe.v12i6S1.3118. Retrieved from https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1289270.pdf retrieved on 04-02-2023 at 11:57 IST.

Enderwick, P. and Gray, D. 1992. Foreign languages in international business: the case of New Zealand. Journal of Teaching in International Business. Vol. 4. No. 9. pp. 49-68.
European Union News. 1994. EU/NZ investment flows. Delegation of the European Commission to Australia and New Zealand. Canberra ACT: October/November.
Graddol, David. 1997. The Future of English?: Guide to forecasting the popularity of theEnglish language in the 21st century. The British Council: The English Company (UK) Ltd.
Grant, A. and Li, P. (2019). Proficiency affects intra- and inter-regional patterns of language control in second language processing. Language, Cognition and Neuroscience. 34(6). Pp. 787–802. https://doi.org/10.1080/23273798.1582788
Hong, Yee. Chee. and Ganapathy, Malini. 2017. To Investigate ESL Students' Instrumental and Integrative Motivation towards English Language Learning in a Chinese School in Penang: Case Study. English Language Teaching. Vol. 10. No. 9. August. ISSN 1916-4742. E-ISSN 1916-4750. Published by Canadian Center of Science and Education.
Jaekel, Nils. Schurig, Michael. Ackern, Isabelle. Van. and Ritter, Markus. 2022. The impact of early foreign language learning on language proficiency development from middle to high school. System: Volume 106. 102763. ISSN: 0346-251X. https://doi.org/10.1016/j.system.2022.102763.(https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0346251X22000446)
John, Stephn. Gurario, Subhash. Halepota, Jamshed. Adil. 2021. The Role of English Language Skills in Career Growth: A Study of Perceptions and Strategies Used to Improve English Language Skills by Graduate and Undergraduate Students of Karachi, Pakistan. Global Social Sciences Review (GSSR). Vol.-VI. No. I (winter). Pp. 346 355. p- ISSN: 2520-0348; e-ISSN: 2616-793X; ISSN-L: 2520-0348. DOI: 10.31703/gssr.2021(VI-I).35URL: http://dx.doi.org/10.31703/gssr.2021(VI-I).35.
Leibowitz, B. 2015. The problems with language policy and planning. Journal of Language, Identity & Education. 14(1).Pp. 36–49. https://doi.org/10.1080/15348458.2015.988571
Plonski, P., Teferra, A., & Brady, R. 2013. Why are more African countries adopting English as an official language? ASA: Annual Meeting Paper.
Shipman, A. 1992. Talking the same languages. International Management. June. pp. 69-71.
Treffers, Daller. J. 2019. What defines language dominance in bilinguals? Annual Review of Linguistics. 5. Pp. 374-393. https://doi.org/10.1146/annurev-linguistics 011817-045554

* Department of Social Work, Central University of Rajasthan,
NH-8, Bandarsindri, Kishangarh, Ajmer-305817, sahmed_sw@curaj.ac.in

** Independent Researcher,
Jaipur, Rajasthan. praveen.singh934@gmail.com

Nature Protection Through Indian Vedic Culture

–Dr. Kavita Singh@1
–Prof. Harpreet Kaur[2]

Abstract:

Every religion and culture has something to give when it comes to environmental protection and conservation. Several prohibitions or exhortations from each faith can be put forth to build a guideline for ecologically friendly development.Thisis amply and extensively established in the codes of the various religions.Nature has always been charitable and resilient. Indians are proud of their diverse cultural heritage. Religion protects the environment. Hinduism reveres life-giving elements such as the sun, wind, land, trees, and plants. Wildlife, such as garudas, lions, peacocks, and snakes, has long been treasured and preserved in our culture. Ram and Sita spend the majority of their time outside. There is a lot of information in Sanskrit, Pali, and other writings. The Sanskrit Vishnu Samhitâ recommends biodiversity protection.

The Indus Valley Civilization grew up near water. Culture and nature are inextricably linked. Our history, traditions, and beliefs are all reflected in our culture. Our culture has been transformed by globalisation, technology, and communication. We must embrace new ideas while remaining committed to our essential values, particularly environmental conservation. India is culturally and linguistically diverse. Many of the communities there have their own social structures and rely exclusively on their surroundings to thrive.

Keywords :*nature, protection, language, concepts, diversity*

Introduction

Use the European form of the Latin word for "nature," which is translated as "nature" in French and English and "natur" in German and "nâtturan »"

in Icelandic. Almost always originating in liturgical languages (Latin, Arabic, Sanskrit, Pali.), these words for "nature" are defined in relation to a particular religion or culture. The term "thoamachat" originates from Southeast Asia and means "nature made up of huge cycles," which can include both the celestial race and the seasonal or biological cycles. "Prakrti" is an Indian word that conveys the dynamic idea of a never-ending creative hatching. Thus, there is no equivalence between the concepts of safeguarding "nature," "wilderness," "thoamachat," and "praktri." Therefore, there are substantial policy implications for conservation if we can unpack the meaning of these phrases. Some non-governmental organisations (NGOs) have institutionalised an American hegemonic image of the wilderness, which these authors believe may be at odds with the conservation practises of other countries. Among other things, our conservation policies take the form of regional parks that include fields and villages, which is unfathomable for the concept of "wilderness." This is the case in France, where the natural environment has been heavily developed with man and his pastoral or landscape activities. Every stakeholder in conservation efforts (researchers, government officials, representatives from international organisations, and even educators) works hard to avoid spreading the status quo and instead advocate for policies and procedures that are sensitive to the specific ecological and cultural conditions of each country.

Indigenous rights have been receiving increasing attention from international bodies like the United Nations since the 1980s. The texts call for access to ancestral lands, natural resources, and the knowledge of the people who lived there. Therefore, autochthonies are characterised by territorialized cultures that place a high priority on natural elements. That "unique and exceptional treasures to whichever people they belong to" (UNESCO's phrase) in cultural and natural material heritage must be conserved was a proclamation made by UNESCO in 1972. (Barnosky Ad et al., 2011). The conference is centred on the theme of "preserving indigenous customs" [UNESCO, 1973]. In 1982, the OHCHR established a working subgroup on indigenous populations, which was later made permanent in 2000. It keeps an eye on human rights around the world and offers suggestions. According to the United Nations' "Our common future" report from 1987, indigenous peoples' rights to return to ancestral lands and form autonomous local governments there is essential to preserving their cultural traditions (Brundtland, G.H., 1987).

Materials and Methods

Analytical research techniques with descriptive components were applied.

Although it may seem difficult to see the connection between nature and languages at first glance, materials and extracts from government papers from various eras have been processed and studied to highlight the critical need of safeguarding nature and the role that languages play in doing so.

Nature and Indian Civilization

Nature has continuously been very vivacious, philanthropic, and remarkably

resilient. Indians are proud of their rich cultural history. Nature is nurtured and protected by religion. If we look at Hinduism, we worship the elements that are essential to human survival, such as the sun, wind, land, trees, and plants. Likewise, since the beginning of time, our cultural ethos has emphasised respect for and conservation of wildlife, including garudas, lions, peacocks, and snakes. God Ram and Goddess Sita spent almost their whole lives in close proximity to nature. A substantial amount of information can also be found in old manuscripts written in Sanskrit, Pali, or other languages. For example, the Sanskrit scripture Vishnu Samhitâ contains some explicit advice regarding biodiversity conservation.

In fact, entire civilizations, such as the Indus Valley Civilization, have developed close to water sources. In this way, culture and nature are entwined. Our history, traditions, and beliefs are reflected in our culture. Globalization, technological advancements, and communication advancements have all had an impact on our culture, which has changed over time. It is crucial that we adopt new ideas without sacrificing the fundamental nature of our dearly held backgrounds and values, which include environmental preservation. India is a culturally diverse and rich country where people speak a wide variety of languages. Many communities there live in their own unique social structures and are entirely dependent on their surroundings for their survival.

Though necessary for any country's progress, industrialization and urbanization—which involve transportation, the burning of fossil fuels, and deforestation—have resulted in environmental degradation and the release of greenhouse gases into the troposphere. These gases absorb solar radiation's heat, which warms the atmosphere, seas, and oceans and causes floods, droughts, violent storms, melting of polar ice, retreat of glaciers, and an increase in sea level. These problems have highlighted the need of environmental preservation and sustainable development.

Use the European form of the Latin word for "nature," which is translated as "nature" in French and English and "natur" in German and "nâtturan »" in Icelandic. Almost always originating in liturgical languages (Latin, Arabic, Sanskrit, Pali.), these words for "nature" are defined in relation to a particular religion or culture. The term "thoamachat" originates from Southeast Asia and means "nature made up of huge cycles," which can include both the celestial race and the seasonal or biological cycles. "Prakrti" is an Indian word that conveys the dynamic idea of a never-ending creative hatching. Thus, there is no equivalence between the concepts of safeguarding "nature," "wilderness," "thoamachat," and "praktri." Global sustainable development is encouraged by the Convention on Biological Diversity, which was adopted at the Rio Earth Summit in 1992. It acknowledges that the importance of biological diversity extends beyond the ecosystems of plants, animals, and microorganisms to include human needs for nutritious food, effective medicine, pure water, fresh air, a safe place to live, and a roof over our heads. Article 48(A) of the Indian Constitution mandates that the government must take care of the country's forests and wildlife and maintain and enhance the quality of the environment. Indians have a constitutional obligation to care for the natural world

and treat all sentient beings with kindness, per Article 51(A)(g). Greenhouse gas emissions, ozone depletion, and air pollution are all addressed by legislation like the Water, Air, and Environment Act, but these statutes must be followed to the letter.

UNESCO's 32nd General Conference approved the Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage in September 2003. It safeguards the skills and information that have been passed down from generation to generation and are essential to a people's sense of self and their ability to maintain their cultural traditions.

You could also hear this referred to as "traditional" or "indigenous" knowledge. Respect for indigenous people's "knowledge, customs, and traditional practises" is essential to achieving "sustainable and equitable development and decent management of the environment," as stated in the United Nations Declaration on the Rights of Indigenous Peoples, which was ratified by the UN Human Rights Council in June 2006. There is a system in place in the Indian Biological Diversity Act to ensure that the unique knowledge of these indigenous peoples is protected, but we never seem to put it into practise.

Traditional Knowledge For environmental conservation: Case studies

Modern medicine has always relied on traditional knowledge. Indigenous tribes have survived climate change by adapting their agriculture, fishing, and hunting for generations. It's odd that we're searching outside for solutions while climate change is so impending. Another worry is losing these groups to destruction or mainstreaming. Traditional wisdom that maintained sustainable harvest levels has been ignored as natural resources are commercialised. Privatisation, alienation, and "bio-piracy" disturb me. Globalization intensifies these forces. Traditional knowledge protection policies seldom engage these groups. Thus, they fail to protect indigenous and indigenous community needs, values, and customary rules regarding traditional knowledge and genetic resources. We must preserve this tradition and combine it with contemporary approaches to conserve the environment.

Analyzing ethnic communities helps us comprehend inherited knowledge. Some small examples will support this claim.The Buddhist eco-cultural environments of Demazong in the Sikkim Himalayas and Apatani in Arunachal Pradesh first show the use of traditional knowledge and information in long-term resource management.

Mendha village in Maharashtra's Gadhchiroli district conserves natural resources. Villagers resumed biodiversity conservation in 1987. Except for Non-Timber Forest Produce, commercial forest exploitation was banned. Villagers also controlled forest resource extraction and soil degradation. No forest fires. No trespassing. The locals make their own decisions but are receptive to outside knowledge, which is crucial.

North-Eastern India, with its numerous tribal and ethnic groupings, is a third case study. These long-term residents get most of their resources from a restricted catchment region. They coexist with nature. Manipur and Assam's Meetei. Manipuri nature worship includes sacred groves, or Umang Lais in Meetei. These groves

safeguard vegetation, birds, and animals. Teak, lemon, ginger, eucalyptus, and bamboo are examples. Meetei eat fish, ducks, snails, and insects. For sustainable collection and conservation, many of these species are not eaten during specific times. 2 Thus, certain religious acts conserve ecology and biodiversity.

The fishermen of Greater Mumbai and Sindhudurg areas of Maharashtra also have vast, diversified indigenous expertise of gill net, long line, bag net, shore-seine, and traditional trawl fisheries management.

Ethno-botanical studies were done in communities of Bhadra Wild Life Sanctuary in Karnataka's Western Ghats in 1998 and 1999. Centella Asiatica leaves with Ichnocarpus Frutescens roots heal jaundice and diabetes. 4 At a time when the West is finding consolation in our ancient practises like medicine, meditation, and Yoga, we have just 1.5 percent of the global herbal market despite our great herbal riches.

Yanadi tribals of Chittoor, Andhra Pradesh, have medical skills. The Yanadi's loss of natural resources and traditional knowledge is a severe concern environmental management". The Biological Diversity Act of India protects this uncommon indigenous knowledge, but implementation is always a problem.

Conservation of Indian Vedic Culture: Case Studies

Most countries' development approach prioritizes people and systems. All resources are deemed for unlimited human consumption and exclusively accountable for happiness.

Ramayan and Mahabharat (including Bhagwad Gita), two of humanity's greatest epics, are full of conservation wisdom. Vedic India views human evolution holistically as part of the cosmos. Our scriptures distinguish pleasure from wellness. Happiness doesn't always equal well-being. Deeds that benefit society and the environment also benefit individuals.

Our texts describe the subcontinent's ancient biodiversity.

Earth, Water, Air, Fire, and Space are the five elements of Rig Veda (Ether). Man is obligated to protect these five components that sustain life.

Yajur Veda talks about propitiation and world peace.

Atharvana Veda considers earth the Mother and creates her children. Avoid depleting Mother Earth's resources. Water is the Earth's milk that nurtures and purifies its progeny. Water symbolises dignity and rivers power life.

Veda instructs the wise to use Yagnas or sacrificial fire to purify the atmosphere.

Yagnas connect humans with Devatas. Propitiate these Devatas, natural powers. Yagnas cleanse air and worship the god. The "vid" must live for yagnas to balance man and environment.

Puranas' Environmentalism

Each tree had a god during the puranic era (320 BC onward). People watered and ringed trees with holy threads to safeguard them.

Narsingh purana considers trees God.

Varaha purana recommends frequent planting for paradise.

Matsya purana compares planting one tree to having 10 sons.

Vishnu purana states God likes those who don't hurt animals.

In Padma and Kama puranas, peepal, bel, her, neem, and other trees are God's home and should not be cut.

Durga saptsati believes humans would endure as long as mountains, woods, trees, and vegetation exist.

Charak samhita blames drought on vegetation degradation.

The Padma purana says cow sacrificers will perish.

Manusmirthi condemns animal abuse.

It also recommends using natural resources efficiently to preserve eco-system equilibrium.

Bhagwad Gita conservation

This treatise, adored by millions in India and across the world, not only instructs a person on his obligations at many levels, deeds, fruits of acts, and a holistic view of the universe, but it also discusses sustainability in a very complete manner. It says insatiable consuming is a sign of demons. Bhagwad Gita advises balancing thoughts and deeds, including materialistic consumption and conservation. This involves settling the mind, which is easily distracted and always seeking fulfilment. Thus, Gita promotes mental purity from material to spiritual. It recommends against excessive consumerism, which causes Tamasic behaviour, does not satisfy, and harms health, society, and the environment.

Gita distinguishes "Eating to live" from "Living to eat". Yoga holistically trains the sense organs and organs of action, even in the middle of domestic life. A balanced lifestyle makes a person happy and benefits the world. This makes Satvic activity natural rather than forced.

LokmanyaTilak's Gita Rahasya commentary on Bhagwad Gita advises humans to pursue the ultimate spiritual aim without ignoring family or community.Gita argues that all living and non-living things share a universal awareness, forming a brotherhood. This makes one a friend to everybody. Gita advises humanity to use natural resources sparingly. Instead of non-renewables, use renewable resources wisely so they may be renewed. Instead of "Shoshan," resources are "Dohan".

Conclusions

At least on a global scale, the involvement of native and ethnic peoples appears to be a paradigm in environment conservation. The state in many parts of the realm is at odds with this trend since, during the past thirty years, the rate of ethnocide against communities that had a close relationship with the environment has increased. The present policy of safeguarding nature and its biodiversity, or within the context of a protected area, is based on the prospects for financial gain that it may produce. It is based on theft. They are pitted against one another on the same ground in an effort to develop a worldwide mecca of nature tourism for affluent foreign tourists

while limiting the prospects for the exploitation of different mineral resources, such as diamonds, the world's top producer of which is Botswana. A territorialized indigenous culture does not appear to be very interesting at that price. However, although the valuation of natural capital is based on economic factors and global conditions, political decisions and regional and local socio-historical circumstances are equally crucial considerations.

By defending regional tongues, we defend the natural world.

Bibliography

Hultman, Martin, et al. "Unsustainable Societies - Sustainable Businesses? Introduction to Special Issue of Small Enterprise Research on Transitional Ecopreneurs." Small Enterprise Research, vol. 23, no. 1, Taylor & Francis Ltd., Jan. 2016, p. 1.

Brundtland, G.H. (1987) Our Common Future: Report of the World Commission on Environment and Development. Geneva, UN-Dokument A/42/427.

Rai, S. C. (2007), "Traditional ecological knowledge and community-based natural resource management in northeast India", Journal of Mountain Science, Volume 4, Number 3, pp. 248-258.

Singh, L. Jeetendro et al.(1998), "Environmental Ethics in the Culture of Meeteis from North East India" in Song Sang-yong et al.(eds), Bioethics in Asia in the 21st Century, Christchurch: Eubios Ethics Institution.

Nirmale, Vivek H et al. (2004), "Assessment of indigenous knowledge of coastal fisherfolk of Greater Mumbai and Sindhudurg districts of Maharashtra", Indian Journal of Traditional Knowledge, Vol. 3(1), pp. 37-50.

Parinitha, M. et al.(2004), "Ethno-botanical wealth of Bhadra wild life sanctuary in Karnataka", Indian Journal of Traditional Knowledge, Vol. 3(1), pp. 51-58.

[1@] Assistant Professor, Department of Environmental Science,
Mata Sundri College For Women, University of Delhi-110002.
[2] Principal,Professor, MataSundri College For Women
University of Delh-110002

Research Article

Linguistic Challenges and Quality of Research in Cross-Cultural Research

–Sadhna Jain

Abstract:

Language is a human ability to perceive, receive, save, and share pieces of information. The usage of language reflects the nuances of the society-its ethos, pathos, logos, culture, etc. Language and culture are dynamic, ever-changing, and ever-developing. India is a multilingual and multicultural country. The children must develop linguistic skills. For the optimal development of language processing skills among children, it is pertinent that they have the opportunities to develop multilingual proficiency from school education to university education. National Education Policy, 2020 has fully acknowledged the power of language in teaching and learning.

Language plays a central role in research. It is impossible to conduct, present, and communicate research without the use of language. Framing, asking, and answering questions are the main elements of any research, especially in Social Sciences. Sometimes, supposedly clear and simple questions are differently interpreted by different research participants and can bring changes in the meaning of the questions depending on who asks the questions to whom and in which context and thus in turn affect the validity of the research. The likelihood of these complexities is high in transnational and cross-cultural research when the researchers and the respondents are neither from the same cultural background nor use the same language. This paper highlights these issues and tries to give insights to resolve them.

Keywords: Language, Culture, Research, Cross-cultural, Multiregional, multinational Language plays an integral role in survey responses, data quality, and interview/ questionnaire development, and its conduct across national, linguistic, and social boundaries and among multicultural populations within one nation. Language and culture are intertwined. Processing of

language plays a pivotal role in research. Language influences survey responses and data quality because language functions within social and cultural contexts.

Relationship between Language and Research

Framing, asking, and responding to questions are the main elements of any especially social science research. With the increasing number of people of multiple cultural backgrounds in modern societies, research on ethnic minorities and immigrants is becoming more common. Survey data are of no use if respondents do not respondents after understanding the intended meaning of the survey questions. Question comprehension depends onthe processing of the syntactic structure and understanding the literal and pragmaticintended meanings. Many times, supposedly clear and simple questions are differently comprehended by the research participants and can bring changes in the meaning of the questions. and thus, in turn, affect the validity of the research. There is a high likelihood of these complexities in transnational and cross-cultural research when the researchers and the respondents are neither from the same cultural background nor use the same language. Although the research participant and the researcher may use a common language that is understood by both for the survey,that language may not be the home language/mother tongue for either of them. The wording of questions may result in unnecessary measurement errors if respondents misinterpret or misunderstand the true meaning of the questions. Following are the language-associated key challenges in survey research

Language-Associated Challenges in Conducting Cross-cultural Research

Linguistic Diversity: India is a country full of diversity in the usage of language. This is true for many other countries. Almost every state and tribe have a different language/ dialect. This means respondents and interviewers may not share the same home (native) language all the time. At the same time, it may not be reasonable to translate all surveys in all languages and dialects due to economic constraints, the nonavailability of qualified translators, and data collectors. If the survey is not conducted in the research participant's home language, the research participant eithermay not participate in the survey or participate in a language other than their homelanguage.The language used in surveys is dynamic and has words, sometimes pictures, symbols, emojis, etc.The researcher and the research participants must speak the same language to interact with each other.

Research has shown that in surveys that involve immigrant and ethnic minority populations, the choice of language of survey administration affects both the quality and quantity of recall. The first-language clues brought forward first-culture memories, while second-language clues generally activate relatively recent memories. For example, we recall multiplication tables in the language in which the tables were learnt during childhood.

Bilingual immigrants or ethnic minorities are likely to use different languages in different domains of life, for example, at work, and at home.It has been reported in the studies that when the data collector and respondent had different first languages,

they most often chose to use a third language as a bridge for communication. The bridge language is mostly the broadly spoken language. The data collectors and respondents may choose to use it because they consider broader languages as more appropriate for a survey. Itmay be because technical terms may be easier to discuss in a broader language.

Respondents may also engage in changing languages within the survey. For example, they may use a broader language for complex questions and a local language for standard questions. Using nonhome language in a survey, either because of choice or constraint, may have implications for data quality.

Ethnic Diversity: From a Social Science research point of view, ethnic migrant minorities represent hidden populations that are hard to sample, identify, reach, and persuade. They have a low chance to participate in surveys. To increase their participation, the research team needs to check potential language barriers if any for the research. To avoid such a situation,differenttypes of research surveys wouldneed to be translated. There may be a paucity of qualified translators in the needed language. These factors may force the researchers to exclude ethnic minorities from the research.

Standardized vs Non-Standardized Tools: Standardized interviews have a fixed set of questions in a fixed sequence. The researcheris expected to adhere to it strictly. Accordingly, when respondents need any clarification regarding the meaning of a question, the data collectors can only provide fixed and nondirectional information, like "Please, answer as per your understanding of the question". Standardization may at times limit the interaction between the interviewer and respondent and may affect data quality.

Conversational interviews are unstructured with a set of issues related to the research problem to be explored. The data collectors can deviate from scripted question wording as and when necessary to achieve survey objectives. It is more difficult to translate questions in structured interviews than those in unstructured interviews becausestructured questions allow less room to take care of differences between the source and target languages.

*Question designing:*The questions may also suffer from various issues such as poor grammar and syntax and semantic issues. Many unanticipated differences in the comprehension of the question may occur when the language of the research tool is not the home language of the respondents.The wording of questions may lead respondents to misinterpret or misunderstand the actual meaning of the questions. The use of ambiguous, vague words oruse of terms that are unfamiliar to respondents may result in different interpretations. The questions may be framed in such a manner thatleads respondents to the "right" answer. The respondent may forget the actual question in case of long questions.

*Abstract/Problematic Questions:*Abstract/ problematic questions can be immensely useful in survey methodology to measure the reliability of the responses. A researcher assumes that all respondents would ask for clarifications when presented with deliberately problematic questions.Respondents usually have

comprehension difficulties when the questions are abstract and lengthy (Johnson et al., 2019). Asking for clarification is considered necessary before providing an opinion on problematic questions because it shows that respondents have understood the question, and are not just trying to satisfy the researcher. Research has shown that less educated respondents are more likely to interrupt the interview process and ask for clarification because they may need more help.

Question Interpretation: Question interpretation involves processing the syntactic structure and understanding the semanticand pragmatic meanings of the question. Sometimes “clear” and “simple” questions can elicit different responses depending on who asks whom and in which context. These complexities get aggravated when researchers and respondents have different cultural backgrounds and/ or use different languages or both. The respondents may not ask for clarification either because respondents may have the impression that they haveunderstood the question, though it may not be true or respondents are aware of the fact that they have not understood the question but stilltry to provide a reply (The Essential Role of Language in Survey Research, n.d).Such practices can seriously affect the validity and reliability of the research. The researchers must use simple and easy-to-understand language so that all participants have a common understanding of the questions being asked.

Strategies to Reduce Language-Associated Challenges and Improve Data Quality

In recent years, substantial advances have been made in the field of cross-cultural, multinational, and multiregional research. For such research, the data collectedfrom each specific group must be valid and reliable, and also comparable across groups. Even when research tools are carefully translated and adapted, the research participants may differ in the ways they comprehend certain questions or respond to them. This issue poses a threat to the validity of the comparisons. The followingstrategies can be of great help to the researchers.

*Translation:*Translation is an integral step in multilingual research. Questionnaire translation once viewed as essential only for international surveys, is important even for surveys within a single country.Most countries have a complex, multilingual structure. People may grow up speaking the language of their local communityortribe but often also learn languages of broader communication in schools.

In most translation practices, a questionnaire is prepared in one language which is called the source language,and then is translated into other languages which are called target languages.

Thetranslator while translating the research tools makes a few assumptions. Firstly, the equivalent words and concepts exist in the source and target languages. Secondly, grammatical forms in the source language are the same as in the target language.Thirdly, the concepts are understood in the same way in different languages as in the source language.

The problem arises from the fact that the languages are not isomorphic. Secondly,

translation is more than a mechanical process. It often involves the careful adaptation of the process of translation in terms of language for use in the cultures associated with the target languages. Sometimes, the translation of response scales like attitudinal scales, inventories, etc may also change the structure of the scales that respondents perceive implicitly. The literal equivalence may not guarantee functional equivalence of the translated tools all the time.

Back Translation: In back translation, two bilingual translators work separately, without collaboration, whereby one individual translates from the source to the target language and the other translates from the target to the source language. Both translated documents are then compared against the source text to ensure accuracy. If the inaccuracy is identified as translation errors and the instances where the two documents are not equivalent in words, then the researcher discusses discrepancies in the documents with the translatorsuntil the meaning of the translated documents is mutually agreed upon. The translation must be equivalent as far as possible to get valid and reliable results

*Pre-testing:*Pretesting is crucial to any research prior to the administration of the tool. . In the context of cross-cultural research, pretesting offers valuable information about the probable role of language and culture in the question-response process.

Researchers should pre-testthe research instruments which are language dependent with each of the cultural groups that will participate in the research.Pretesting is used once the research tools have been developed and adapted. Pretesting allows for corrections prior to data collection. Through pretesting of research tools, the researcher candetect questions that function differently when translated or administered to different groups. Once the data collection has started, it is usually too late to make substantive changes, and is very challenging to predict whether respondents will need assistance with some of the questions.

To improve the quality of research data, the survey questions should adapt to the needs and culture of respondents. Research has shown ethnic background can affect the quality of research because respondents' cultural background may affect the response patterns and interpretation of the questions.

*Peeping into cognitive processing:*It refers to the range of techniques that are used to provide information about the way in which respondents process and answer survey questions. Two main strategies thinking aloud and verbal probesare used, either alone or in conjunction. Thinking aloud encourages participants to verbalize their thoughts as they answer research questions. Probing requires interviewers to ask follow-up questions to obtain additional information about the response process. These probes can be designed in advance or be spontaneous and non-scripted, triggered by participants' behaviors. This will enable the researcher to know whether the question has been understood in the intended manner by the respondent within the cultural and linguistic realms.

Vignettes/Hypothetical Situations: Vignettes are hypothetical situations that can be used to assess survey questions. When used, the participants are provided

with one or more scenarios, in textual or visual form, and asked to answer a few questions regarding the interpretation of terms and the process followed by them to answer the questions. vignettes can be particularly useful to test sensitive questions because they shift the focus from participants to hypothetical cases (The Essential Role of Language in Survey Research, n.d.). Despite their potential, vignettes have many drawbacks. The participants' responses to scenarios may differ from their own responses in real-life situations. In the context of cross-cultural research, it is important to pay attention to the cultural appropriateness of the vignettes, as scenarios developed for and tested with a group may not be appropriate in other groups.

Triangulation Methods: Combining pretesting methods and triangulating the findings provides additional information that helps to improve data quality and make informed decisions. Theresearchers may combine quantitative and qualitative methods to assess the cross-cultural comparability of the data.

*Use of technology:*A chatbot is a computer program that uses Artificial Intelligence (AI) to communicate via text or audio can help in overcoming language barriers in research to some extent. The AI-powered chatbots open up new possibilities to conduct research on specific populations and collect qualitative insights. A chatbot survey can be seen as harnessing a new type of language and communication style and can provide a consistent and documented interaction with the respondent.

From the above discussion, it can be concluded that the adaptation of the research tools is integral when the same instrument is used in a different culture or country to improve the quality of the research.

References

New Education Policy | Government of India, Ministry of Education. (n.d.). https://www.education.gov.in/en/nep-new

Parr, M. (2022, September 12). *How to Overcome Language Barriers to Communication*. Language Learning With Preply Blog. https://preply.com/en/blog/how-to-overcome-language-barriers/

Peytcheva, E. (2021, October 22). *The effect of language of survey administration on the response*. RTI. https://www.rti.org/publication/effect-language-survey-administration-response-formation-process

The essential role of language in survey research. (n.d.). Google Books. https://books.google.nl/books?id=WwYLEAAAQBAJ&redir_esc=y

Research Article

From Theory to Practice: An Approach to the Importance of English Language in Contemporary India

–Dr. Zubair Ahmad Bhat

Abstract:

Language is a tool or device through which we can interact or communicate with each other or with a mass. It may be any language, either English or Spanish or Hindi or Canadian or anyone. It may be the regional language or it may be the mother tongue, it wholly depends upon the speaker's language whichever he/she is using in conversation. Through language we can share our thoughts, opinions, ideas, and other things. Language is a medium of conversation which we use during interaction. As per English language is concerned it is said to be the language of Britishers or Englishmen. It evolves from England which is the main country of Europe. Today it is considered as an international language, because of its most users and speakers throughout the globe. English language is of utmost importance in today's era, because of its usage in every field, for instance in education, administration, politics, economics, law making and in other fields as well. It occurs as a medium of instruction as well for most of the subjects throughout the globe. It had played a vital part in the society for most of the works and still it is playing a crucial role in every individual's life, either he/she is the passive learner or an active learner. English is the first and foremost language which connects most users throughout the globe. It acts as a platform for most of the users throughout the globe to interact with each other and share idea or information or communicate on any matter or field. In India English language is considered as the second language after Hindi. But it is used mostly in all the walks of life. This paper analyses the importance of English language in contemporary India in the context of theory and practice and also it explores the vital use of English language in communication, trade, and in commerce at global level.

Key Words: English language, Globe, India, communication and Interaction, Trade and Commerce, Education and Administration.

Review of Literature

Dr. Manish Kumar (2019) in his research article "Role of English Language in Present Scenario in India" published in Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education talked about the usage of English in different walks of life. He also gave the stress on communication as well as the development of English in India. Parupalli Srinivas Rao (2019) in his research article "The importance of English in the Modern Era" published in Asian Journal of Multidimensional Research gave more stress on communication in English language. This paper discusses the importance of the English language and its application to various fields and finally, the benefits that people get from it in this modern era. It also brings to light the importance of English and how English plays a significant role in the modern era. Moreover, the need to learn English language, due to its usage and importance, is comprehensively expounded. Finally, some important suggestions are given to the learners as well as the professionals to make use of the English language effectively in achieving extraordinary and amazing results in their attempts in all the fields. Govardhan Adimalla (2017) in his research article "Role of English Language in the Modern Context in India" published in International Journal of Advance Research and Innovative Ideas in Education discusses the importance of usage of English language in the modern context. He also gave stress on the functions of English language. R. Meganathan (2015) in his review article "Research in English Language Education in India" traces out language policy and the role and place of English language in education, multilingualism in school education, language curriculum design, materials in English language teaching, methods and processes of teaching of English and how English language classroom operates in the diverse Indian contexts.

Research Objectives

i) To analyse the status of English Language in present context in India.
ii) To analyse the usage and implementation of English language as a second language from the educational point of view.
iii) To analyse the importance of English language from the educational, administrational and business point of view.

Research Methodology

For this research the researcher has taken into the consideration the qualitative mode of research methods and has collected the material through extensive survey of the literature on internet and outside internet. The researcher has done extensive reading of the books, reference materials, texts related to topic, blogs, essays, magazines, research articles, reports, policies regarding the set-up of English education commission. Most of the material collected for this research by researcher

has been collected in different form from different dimensions. The researcher has consulted the material regarding the practice of English language from post-independence and has also consulted the modern-day books, Texts, reference material for different courses in English Language and English subject practiced in different domains of Indian society. The researcher has also taken into the consideration the literature survey method through content analysis and has dealt with abundance literature for the collection of the material.

Introduction

"Language is the blood of the soul into which thoughts run and out of which they grow." (Oliver Wendell Holmes) Language has an important role to play in the society. Language is the heart and soul of any society. It is the one of the important elements through which we can communicate with eachother. Its essence is of utmost importance and we cannot measure the importance of language. It is such a tool through which we share our ideas, information, opinions, data, knowledge, thoughts, feelings etc. Language is the primary source of communication for humans and it is the means through which every process occurs. It is such an important tool which differentiates us from animals and give us the place of utmost importance. In the modern scenario we have thousands of languages prevailing throughout the globe with national as well as the regional dialects. Every country is having the national as well as the regional language through which they communicate with eachother on regional and national level. Language is such an element through which communication is successful between the humans within the globe. It is having a crucial role in human life that we cannot neglect and that cannot be avoided or refuted. It is such a tool of prime importance which has contributed a lot to the human world and has made life possible on earth, otherwise life would be a hell without it. Its contribution in different walks of life is extravagant and eloquent.

Why English?

Being the mother tongue of England English language has a long back history of evolution in the mid-5th to 7th centuries AD by Anglo Saxon migrants from Germany, Denmark and the Netherlands. This language has acquired today a first place in globe for being the most of the speakers. In this contemporary era English language has got so many speakers in different parts of the world that its role and importance is highly credible. As English language is the language of Britishers but today it is the dominant language of the United States, the United Kingdom, Canada, Australia, Ireland, New Zealand and various island nations in the Caribbean Sea and the Pacific Ocean. Due to its inter-connectivity, it has connected majority of the countries on the global level as of now. This contemporary era is dominated by English language and in each and every corner of the world majority of the transactions are happening in this language. Through globalization the world has become a global village and their needs a common language to communicate for the different purposes of the life activities. This language is the only language which

connects majority of the people on the global level for different activities such as; education, employment, business, travel, commerce, short trip, long trip etc. Though its prime importance in different walks of life it has crossed all the borders and is not only the language of native speakers but of non-native speakers as well. Its role is of utmost importance and pivotal because of its usage and implementation through out the globe. It has not only touched the upper levels of the society but is the part and parcel of every level of the society. It is the only language which is used in all the realms of world today for the different activities.

English as a Lingua Franca

As this language is widely spoken globally so is it called as the 'lingua franca' of the contemporary era. This is the only language which connects every individual on the global context. Crystal (2003) says, "Since roughly only one out of every four users of English in the world is a native speaker of the language, most English as lingua franca (ELF) interactions take place among non-nativespeakers of English".

English as an International Language

Nearly 25% of the population on earth speaks English and among them 400 million speak it as a first language while as other speak it as a second or foreign language. According to David Crystal (2006), "Non-native speakers outnumbered native speakers by a ratio of 3 to 1". So, this proves that both native and non-native speakers speak around the world.

Present Scenario of English Language in India

English language has enriched India from colonization towards post colonization era. It has not only touched the education system but it has delved deep into the culture of India and has manifested it in different angles. It has broadened the outlook of the Indians and by enriched the language and culture. From T.B. Macaulay's 1835 minutes till the National policy on Education, this language has not only touched the realms of Indian society but has penetrated into every individual's life. It has become part and parcel of life. This language has changed the lives of people in many ways. It has helped India to achieve unity in diversity. India moved towards progress in different fields though this language.

Education

English language is the medium of instruction almost in all subjects except language papers. In India it is taughtas a second language but as far as its role is concerned it acts as a first language in usage and practice. There are diverse examples in India where this language is given first priority such as in Manipur and Nagaland where this language acts as an official language. In the southern states of India English language is given prime importance in communication in secondary and higher education. Most of the reputed Universities, IIT's, IIM's, deemed

Universities, IISC's, IISER's, engineering colleges and other institutes of national importance communicates in English language only. English language acts as a medium of instruction in majority of the educational set-ups. Most of the research occurs in this medium from different domains such as; Science subjects, Social Science and Arts and Humanities subjects. English language also plays a vital role in promoting the learner's learning skills. Almost all the books related to higher education are available only in English.

Science and Technology

In this contemporary era, English is widely used as the language of science. It is having the status of de facto universal language of science. It has an extraordinary effect on scientific communication. Scientists and researchers around the globe have access to most of the literature through this language and can communicate with each other as well. Majority of the scientific journal are available in English only. This language is used for the purpose of scientific research not only in India but in majority of the countries as well.

Business

English is the only language through which we can connect with other parts of the globe for the trade and commerce. It paves us way into the international market to get connected with majority of the countries. We can import and export different products/instruments/machines with the help of this language from different corners of the world. This language makes it easily accessible for we people to handle and do business in the long run with majority of the countries. Through Business English we can connect with the rest of the world for business activities in different organizations. Having good proficiency in English Language our individuals get best trade and commerce with other parts of the world and can develop our country in different walks.

Tourism and Travel

This department is the most important department of India because most of the parts of India is having well developed tourist places and regions. Most of the states in India are having different geographical locations with different tourist and travel places. This language assists us in attracting more and more tourists from different corners of the world. Through English language wecan bring our business well and can retain it for the ongoing generations. This language is of immense importance from the point of tourism management. People can travel throughout the globe only if they can understand this language well. So, it is important for the employees of this department to learn this language well so as to bring many tourists from different corners of the world for the betterment of the country.

The Internet and Press

Major websites are designed in English Language andeven sites in other

languages often give you the option to translate the site. English is the primary language of the press and more newspapers and books are written in this language than other languages. Major and leading national newspapers are written only in this language. This language gives its worth through its usage in different walks of life.

Media and Mass Communication

One of the important domains of the Indian society through which we can get news of incidents, events, facts and reports from different parts of the country. Not only it connects the every region of the country but it also connects us to the other parts of world as well. It gives the live coverage of the events, incidents, important reports, facts, and the coming events in different parts of the world. So, with this language our department of Journalism and Mass Communication has established a good repute and connection with the other parts of the world.

Conclusion

As we have seen that English language is the need of the hour, because we are bound to it in each and every aspect, whether it may be our daily life activities or it may be our responsibilities or duties. English language has become the bread and butter of our society and without it our society cannot go for the long run. This language has become the primary essence in our society irrespective of its secondary status. It has changed the whole panorama of our nation through decades and it remains stick to our lives. This language intermingles with our respective regional languages and has become the vital tool of communication in day today life. It has also intermingled with our mother tongue i.e. Hindi and has become Hinglish which our northern speakers speak during conversation.

Suggestions

From time-to-time English language has led to the changing scenario of our nation in each and every walk. This language has become most important in corporate sectors, public sectors, private sectors, and administrative sectors and most important in civil services especially in foreign services.

- Because of its prime importance, this language should be taught in our higher and secondary education system with care and responsibility.
- Our policy makers should take into consideration the need of the English in this post- modern era and according to it frame the policy for the secondary and higher education system.
- They should also set up English as a medium of instruction in all the colleges and secondary schools.
- English trainers should be available in both secondary and higher education system of our country so that they can teach better to the students who show more interest in this language.
- After every session English language teacher should be trained by the University

professors and higher authorities so as to boost them in the English language.

- Training centres especially for English language should be set up in university campuses for the training purposes of English teachers.
- Guidance and Counselling cell should be set up in respective colleges for the students so as to aware them about the future prospectus of English language.
- Students should be aware about the global level examinations in English language such as International English Language Test System (IELTS), Teaching of Foreign English Language (TOEFL), Teach English as a Foreign Language (TEFL), and Certificate in Teaching English to Speakers of Other Languages (CELTA) for getting the jobs in abroad or for study purposes.

References

Auddy, Ranjan Kumar (2020). *In Search of Indian English: History, Politics and Indigenisation.*London & New York: Routledge.

Crystal, D. (1997). English as a Global Language.(1st Ed.). Cambridge: Cambridge University Press.

Govardhan Adimalla (2017) Role of Indian Language in the Modern Context in India. *International Journal of Advance Research and Innovative Ideas in Education*. 3 (7), 524-526.

Kumar Manish (2019) Role of English Language in Present Scenario in India. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education.* 16 (4), 1136-1142. https:// DOI: 10.29070/JASRAE

Meganathan, R. (2015) Mediumof instruction in school education in India: The policy, status and the demand for English medium education.*Indian Educational Review,* 53 (2), 7-31.
Srinivas Parupalli Rao (2019) The Importance of English Language in Modern Era. *Asian Journal of Multidimensional Research,* 8(1), 7-19.https://10.5958/2278-4853.2019.00001.6

Assistant Professor Department of English
Theivanai Ammal College for Women
Villupuram Tamil Nadu
email id: zubairscholar@gmail.com

Research Article

"From Margin to Mainstream": An Inquiry into the Select Poems Written by Indian Women Poets in English

–Dr. Santanu Saha

Abstract:

Shashi Deshpande (b.1938) in her article "Macaulay's People" tries to locate the dilemma of an Indian writer who writes in English language. English language in India, she finds distinctly different from Bhasa languages. Thus when she thinks about writing in English, which comes spontaneously to her, she finds herself vacillating in the socio-linguistic dichotomy of Indian social culture. Shashi recollects the guilt she felt at that time for writing in English. That was the time when she was rummaging about her root in the writings of already established writers like R.K.Narayan, Raja Rao and Mulk Raj Anand. And On the flip side, she recollects, " … the bhasa writers made it clear that English writing had no place in Indian Literature"(159). So, as a budding writer, she was on the horns of dilemma.

So, the politics behind the adoption of language in creative writingswas a burning topic in the post-Independent India. And SashiDeshpande, in this essay, describes the situation about India in 1980's. So, it is evident what other Indian English writers had to face in those early years. In case of women the situation was much worse. That in Colonial time Toru Dutt and Sarojini Naidu wrote poems in English, can be substantiated from their social status and from the positions their family belonged to. But in the early days of post-1947 context writing as a means of expression in women remained almost beyond their reach due to several social issues.Andwhen a few of these women writers adopted English language as their mode of expression, it made the whole project almost impossible to pursue. Deshpande knew in her initial days that this problem had to be overcome as she desperately wanted to be a writer. Herearly attempts at novel writing deal with rape, sadism, woman emasculating man and woman's long monologue concerning her

understanding about her own life. She deliberately changed the course of her ways of expression where all the roles played by her characters were defined by 'gender'. And she chose this way in order to find her own 'voice', "They were not easy novels to write. But what was most difficult, even more than the language, was to find my own voice. Which I ultimately did. And with the voice came the language" (159). What Deshpande did in her novels, were already been done by Indian Women Poets in English like Kamala Das (1934-2009) and MamtaKalia(b.1940)

Kamala Das's first collection of English poems *The Summer in Calcutta* was published in 1965. Though she was a bilingual poet, she chose English to write poems. Das's poems bear the initial attraction that makes the reader addicted to her compositions. Primarily she is hailed as the worshipper of love in her poems. But unlike her predecessors and some of her contemporaries, her love poems at times appears strategic as well as manipulative. Being a practitioner of the confessional school of poetry that emerged in 1950's, Das like her American counterparts like Sylvia Plath and Anne Sexton exhibits intimate personal details in her poems. These autobiographical details, the confessions of the lived life divulge such facts which have been regarded forbidden in our patriarchal society. Feminine issues like child abuse, molestation, marital rape, domestic violence, miscarriages, abortions and extramarital affairs form the part and parcel of her works. Kamala Das truly stands out as an "aggressively individualistic" (Iyenger677) poet among her contemporaries. She can be considered a pioneer initiating the new genre of "New Woman" in Indian Women's writing in English. In their poems they are bold, courageous and uninhibited. And in this regard English language appears instrumental in bringing this change.

This set of Indian Women writers of English found English language a medium to empower themselves, keeping aside all socio-political aspect of language politics. Post-Independence Indian English Poetry can be called 'modern' as they were influenced by European modernism and the impact of great wars was still found fresh on them. Sanjukta Das, while analysing the history of Indian English Poetry, has pertinently remarked that "In modern Indian English poetry there is evidence of a struggle for identity. Much of this poetry is turned upon the self" (16). This investigation of "self" or rather the 'celebration', too, has been vehemently delineated by the then women poets in English and in order to express that they chose English language over their mother tongues.

Post-Independence Indian English poets are concerned with the idea of 'identity'. After India got freedom, the concept of India as a 'Nation' has already been established. Now this has become the opportune moment to shift the concern from the domain of people to the individual space. Especially in the poems of women this modernist feature, the identity crisis, has been put under the microscopic scanner. So, when Kamala Das confesses,"I don't know politics" ("An Introduction" 119), the statement may appear ironical to the critics as the poetin near future would fight for the M.P. Election, but this candid narration of the fact reminds us the position of women in our patriarchal society where it is generally considered that women are

not allowed to participate in the politics. That marginal position of women has become the sole concern to the poet like Das who in her poems repetitively bring out the personal experiences of women. And women's writing about women is much more genuine as well as poignant, as it digs out their lives and exhibits their understandings in these poems. Thus, all women's writings are confessional in that sense, either it is their own lives or other women's lives they are composing. So, Kamala Das's above-quoted statement for the first time in Indian Women's Poetry in English contribute to a different area far away from the much quoted issues like romantic love or the observation of the beauty of nature.Sanjukta Das has rightly observed, The genre Indian-English poetry can no longer be regarded as the concern of a minor or marginal literary group in India. Along with the English language in India this poetry too has become an important voice in this pluralist and multilingual nation. (19)

Das's "An Introduction" is a seminal work that paraphrases a woman's revolt unprecedented in the Indian Poetry in English. While establishing her identity she at first confirms her 'national' identity as "I am Indian" (119) as after Independence India as a Nation has already been established. Then she continues to disclose her regional status, the colour of her complexion and her chosen medium of literary expression, "I am Indian, very brown, born in/Malabar, I speak three languages, write in/Two, dream in one." (119).Her statement may contribute to the contemporary issues like regionalism and racism. But in the present discussion the most important aspect she has hinted at is the discussion of language issue which remained a matter of contemporary politics in 1960's India. Without taking recourse to any poetic trope, she, in a straightforward manner, exhibits her preferences for languages. Regarding her writing of literary works she chooses two languages and for her dream one. Though it might appear a little bit of exaggeration, she,in an interview when questioned about 'language of her dream', responded, "I dream in English, I am afraid" (Raveendran148). Thus, it appears that she tends to use English as language of argument on self and society at large. That she has shifted from Malayalam to English has very pertinently been pointed out by Sanjukta Das:

> "Looking at her Malayalam work…alongside her English poetry, one can see a marked difference in approach. Her Malayalam short stories are about maternal tenderness, heterosexual passions,and passionate friendships between women. This period of writing in the mother-tongue was the period of her girlhood, a girlhood that was catapulted into an earlymarriage and motherhood. Das's English writing in the sixties marks her break from family and the beginning of what may be termed an adult phase.(67-68)

This 'adult phase', this 'maturity' is indicative of her awareness of other women's plight , their sorrow, their unheard agonies that remain suspended under the heavy presence of male-dominated society. In "The Old Playhouse" the condition of a wife in a mismatched marital life has been depicted:

> You planned to tame a swallow, to hold her
> In the long summer of your love so that she would forget

Not the raw seasons alone, and the homes left behind, but
Also her nature, the urge to fly, and the endless
Pathways of the sky. (Das 38)

Here the husband unquestionably carries the baton of male hegemony, whereas the woman has been relegated almost to the non-existence:

Cowering
Beneath your monstrous ego I ate the magic loaf and
Became a dwarf. I lost my will and reason, to all your
Questions I mumbled incoherent replies. (Das 38).

Can this man with
Nimble finger-tips unleash
Nothing more alive than the
Skin's lazy hungers? (Das 59)

This 'skin's lazy hungers', Das herself has often experienced, has caused domestic violence, marital rape, child abuse and so many other issues that force the women to remain subdued. As a result the sufferer either has to take refuge in the mental asylum or to commit suicide.

Das, as revealed in her autobiography *My Story*, might fall in the same trap of patriarchy if she was not been saved by the act of writing. Not only she tends to give her life a fresh start, but as if she has taken the responsibility on her shoulder to carry forward this practice, the habit of protesting the wrongs done on women. And English language appears handy in this regard. In her poems she unweaves the traditional patriarchal design and starts weaving a pattern so close to women's heart, "Yes/ It was my desire that made him male/And beautiful," (123). This process is about reviving, renewing, and reclaiming the lost self. And in order to achieve it Das advocates English as if she wants to have access to this powerful tool, the medium of emancipation, of empowerment. English language ceases to be a master's language anymore, rather stands out as the secular, modern and a means to reach to the millions at once. Sara Rai(b.1956), the famous writer of both Hindi and English language, has very pertinently remarked on the use of English, " Can it be that English has an expressive economy which leads itself better to the conceptualisation and framing of a piece of writing"?(375). May be the same understanding leads Das to opt for English:

Don't write in English, they said, English is
Not your mother-tongue. Why not leave
Me alone, critics, friends, visiting cousins,
Every one of you? Why not let me speak in
Any language I like? (119).

She, too, emphasizes upon the spontaneity, the comfort in expressing her heart's content. And in order to engage in a different discourse, a different language system was truly needed at that time. Das and her fellow women poets had brilliantly contributed in this regard.

Mamta Kalia (b.1940) can be considered as a genuine successor of Das. She is also a bilingual poet writing primarily in Hindi. But when she shifts from Hindi to English a certain change can be noticed in the presentation of arguments in her poems, “However, if one were to offer an opinion, one could say that the poems in English work better. They are tightly constructed and make their points more economically” (De Souza 19). This ‘economy’ while conveying the thought process is of sole importance to the poet. As this set of poets deals with these feminine issues, this emotional restraint appears noteworthy here. Kalia in her “Tribute to Papa” is much more caustic than her immediate predecessors. This poem is a vivid example of revolt against patriarchy. In a confessional tone she attacks her father who metaphorically symbolizes the ‘father’ of this society, representing the set of rules and regulations that is pressed upon women to keep them under control. Kalia being an ‘enlightened’ participant of European Modernism musters courage to ask:

Who cares for you, Papa?
Who cares for your clean thoughts, clean words, clean teeth?
…
You are an unsuccessful man, Papa.
Couldn’t wangle a cosy place in the world.
You have always lived a life of limited dreams.”(De Souza 20).

Very methodically she reshuffles the roles of man and woman in our society, belittles the self-glorification of man, leaves the masculine world in utter discomfort and ultimately dismantles the hierarchy imagining an egalitarian society, “These days I am seriously thinking of /Disowning you, Papa,/You and your sacredness”(20). So, undeniably these are the voice that bring women’s writing from the margin to the mainstream. Indian Women’s English poetry gets mature in their hands.

Works Cited

Das, Kamala.. “An Introduction”. *Only the Soul Knows How to Sing: Selections from Kamala Das*. 1996. Kottayam: DC Books, 2007.

Das, Sanjukta. *Derozio to Dattani: Essays in Criticism*. New Delhi: Worldview Publications, 2009.

De Souza, Eunice, ed.*Early Indian Poetry in English: An Anthology 1929-1947*.2005. New Delhi: Oxford University press, 2014.

Deshpande, Shashi. “Macaulay’s People”. *Subversions: Essays on Life and Literature*. Eds. Nancy E. Batty and D.Riemenschneider. Chennai: Context.157-166

Iyenger, K. R. S. *Indian Writing in English*. 1962. New Delhi: Sterling, 1985.

Rai,Sara. “On Not Writing”. *The Book of Indian Essays*. Ed. A.K.Mehrotra. Delhi: Black Kite, 2020. 370-384

Raveendran, P.P. “Of Masks and Memoirs: An Interview of Kamala Das.” *Indian Literature* 36.3(May-Jun 1993): 144-161.

Question of Language & New Age Journalism

–Md Rashid Iqubal Siddique[1],
–Dr Anita Kumari[2]

Abstract:

Today's Journalism is the tools of publication and promotion. It's not wrong to say that in today's scenario each and every one person have smart phone and he/she become a journalist only by showing event with their own eyes/smart phones. But the language that they use is not same that a Journalist uses so people needs to understand the media language. We usually see that people uses common language for news presentation and sometimes they use non relevant sentences and unethical questions to public which creates problems. In 1990 to 2000 media uses only the communities name in news bulletin but as in 2022. we see media uses religion name frequently which creates problem. In Television panel discussion shows panellist uses unethical words sometimes they fight among each other on language/words uses like example of DNA: Violence between BJP spokesperson and Samajwadi party spokesperson in Zee News Media show on 10th Dec 2018. Another examples like the use of language like 'Naali Ka Keeda" by Spokesperson of Congress to Spokesperson of BJP in a debate show at 31th May 2021 in AAJ TAK Tv news Channel so the language uses by todays media especially in debate shows should be in control and media has to be so much chose on calling the person for debate shows. As we see in many cases some national media has their own propaganda it may be the role of TRP or may it be gaining more and more revenue from the market, media uses many such languages which is not relevant for the public sometimes they shout on television news channel sometimes they called out the panellist with abuse words, unethical words, non parliamentary words which creates nonsense in the society and people just

finding that the recent new age journalism is deteriorating the society and having a very bad impact among the Budding journalist.

Keywords: Language use in Newspaper articles, Tv debate shows and its presentation style, Tv news channel reporters languages.

Introduction:

Journalism is the strongest medium for the communication, and it has a huge rich but in today's scenario this medium of communication is under a QUESTION MARK. Media its may be national or regional the language that they use for the publication in tv news channel is not as much as good for the public, the debate show that we see in our daily prime time bulletin is in such a manner that provoke the unlawful, un parliament, mis behave, with no ethics show are presented daily in a Tv news channel.

As we know TV news channel is a key point for students to learn and understand the current affair in more advanced manner. But as you see the today's media has only the propaganda for making revenue, popularities, TPR and hence this plays a very bad impact on youth.

Statement of problem:

National Tv news channel and the local tv channel which is only the means for the communication for people of country and the content is very useful for youngsters and the budding journalist. This is always seems to see that media plays very vital role among publics for making many agendas as media show news/information to the society our child, Budding journalist and public should see it in the same manner that they are going to portrait. The main problem behind it is the language that media uses in panel discussion shows, Tv interview shows, Tv debate shows, media campaign at the time of elections and at prime time makes a bad impact among public, media is so called as the 4th pillar of constitution and if in the debate shows any language which is not relevant for the society then it has a very bad impression and creates problem to the constitution.

Objective of the study:

The general objective of the study to find out the impact of language on new age journalism and get to know how we can resolve these problems.

(i) To find out why media uses un relevant languages in tv news channel.

(ii) Is New age journalism or young journalist don't follow the ethics of Journalism?

(iii) Is Journalism is only consider for Degree holder person or any can be the journalist?

(iv) Tofind out why media shows news in Sensational mannered.

(v) Digital media/social media decline the language of news presentation style in tv debate shows or in news portal.

(vi) Is News Age Journalism is only focused on TRP/publication rate/DAVP rate or revenue collection from the market.

Research questions:

(i) Media houses use constitution language in debate shows?

(ii) Is media persons follow the ethics of Journalism?

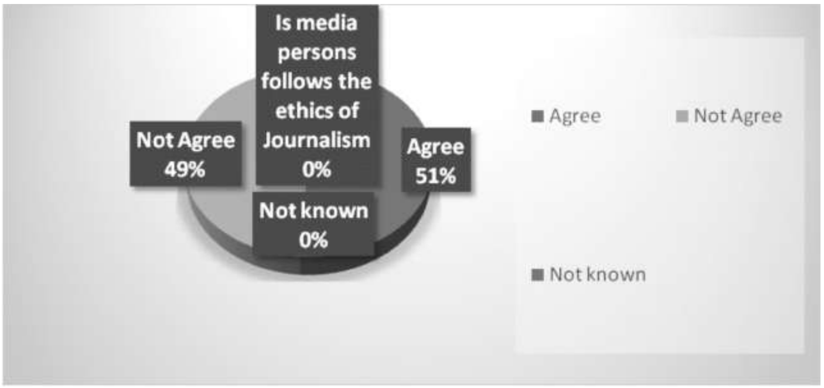

(iii) Degree is important for doing journalism?

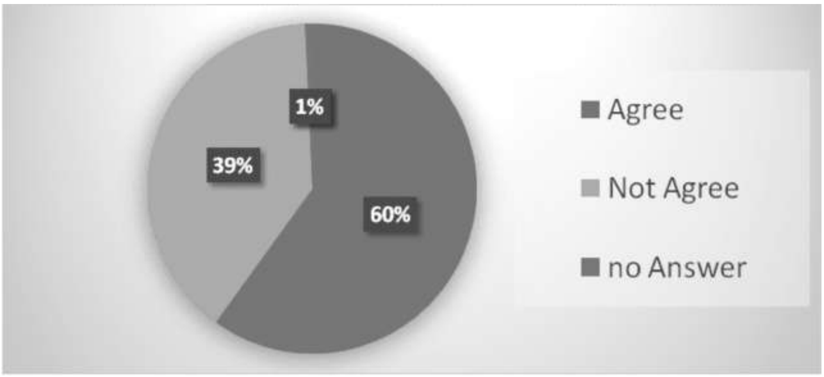

(iv) The language used in Prime time tv news channels shows is it good for the society or not?

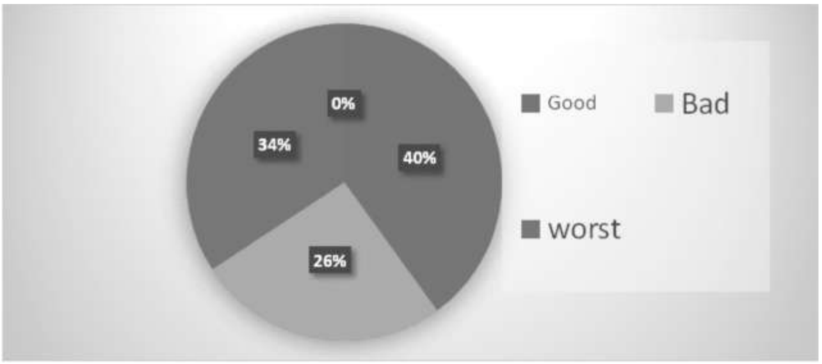

(v) Rate the media percentage according to label of bad content or language used for public.

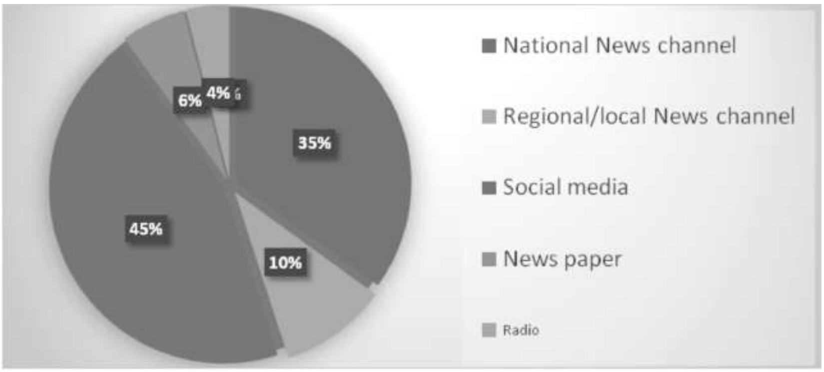

Literature reviews:

As per the research paper of Vineet Kaul, DAIICT University, on January 2013 India on ethe topic of Journalism in the Age of Digital Technology he wrote about the new technology so called as new media is useful and also have some back draw or bad impact on children and young age. He also written that how new media make a great impact on public and mention that all news paper and tv news is now shifting to new media.

According to Allen bell Cambridge university press on 19th November 2008 he shows that how media portrait the news on social media in more interesting manner. He also includes how tabloid newspaper content written in more interesting manner for youth or special audience. he also written the language use for the audience is in such a manner that people can easily understand .he also write that media is important for social institute and they are crucial presenters of culture, politics, and social life, shaping as well as reflecting how these are formed and expressed. The language used is in common ways so that people can easily understand.

According toJorge Vázquez-Herrero[1] and María-Cruz Negreira-Rey[2] research paper title: Intersections between TikTok and TV: Channels and Programmes Thinking Outside the Boxhe well explain about the language used in social media and its impact on young persona as well as youth of india. He explain about the impact of TikTok on social media and how tick tock plays a vital role among the public because of its simple language/common language for the public to understand. But because of too much use of Tick Tok and as people use it with wrong and unlawful language tick tock is now ban for India and hence language plays a vital role .

Methodology:

The survey method was used to solicit data and information from a sample of students of St.xaviers college Ranchi, Gossner college ranchi,Amity University Jharkhand ranchi during lecture hours of the odd semester academic year of 2022 -2023 and with media person of different house of Ranchi such as Kahsish news, Zee news, News 11media pvt ltd, News18 media, ETV bharat, Prabhat Khaber, Dainik Bhaskar, Dainik Jagran, Hindustan Samachar A set of questionnaire were designed to get information the sample size for the research was 1112.

Survey with different media Institution and media organization of Jharkhand Ranchi			
Collge/University name	Number of students	Media organization name	Number of media persons
St.xaviers collge Ranchi	189	Kashish news	45
Gossner collge Ranchi	130	Zee news	25
Amity University Ranchi	110	News 11 media Pvt L.d	87
Ranchi University	135	News 18 media	28
		Etv Bhart	22
		Prabhat Khaber	87
		Dainik Bhaskar	89
		Dainik Jagran	88
		Hindustan	77

The responder for the question of survey is mention above with the table

Table of percentage of question:

Table shows the percentage of responder						
Q.1	Media houses use constitution language in debate shows?	yes 35%	no 65%			
Q.2	Is media persons follow the ethics of Journalism?	Agree 51%	Not agree 49%	not known 1%		

Q.3	Degree is important for doing journalism?	agree 60	Not agree 39%	not known 1%		
Q4	The language used in Prime time tv news channels shows is it good for the society or not?	Good 40%	Bad 34%	worst 26%		
Q5	Rate the media percentage according to label of bad content or language used for public.	national news 35%	Regional/local news channel 10%	social media 45%	News paper 6%	Radio 4%
Q6	language used in new media is not parliamentary	Agree 76%	Not agree 15%	not known 9%		
Q7	Ethics of journalism is not important what do you think?	important 73%	Not important 12%	Not known 15 %		
Q8	now a days Media has only the motto to earn money	yes 64%	no 23%	not known 13		

Limitation of study:

- The main limitation of the study was that media houses do not disclose the ways of collecting revenues, unable to disclose the ways of getting TRP
- The language used for content in media house is not fully supported and hence the outcome in the sense of true journalism is not coming.
- Political parties and spokes persons may speaks for something to give TRP to tv news channel as a propaganda but unable to speak on public domain

Result and Finding:

As per the survey with students, media person we have find media is so called as the 4th pillar of constitution but they have to also control there language some for example in DNA: Violence between BJP spokesperson and Samajwadi party spokesperson in Zee News Media show on 10th Dec 2018.they uses un relevant words, Another examples like the use of language 'Naali Ka Keeda" by Spokesperson of Congress to Spokesperson of BJP in a debate show at 31th May 2021 in AAJ TAK Tv news Channel. These examples shows that media person and Tv news channel should be in control specially for language is concern. One more example Actor Ajaz Khan abuses Mr Tariq Khan in a debate show on News Nation Tv channel on the question of Maulana saad and he leave the shows with some non-sense words to anchor Deepak Chaurasia.

After the ruckus and violence in the Shobha Yatra taken out on 16th April i.e. Hanuman Janmotsav in Jahangirpuri Violence of North West Delhi, the incident

has now turned into a political arena. At the same time, during the debate on this matter, Shoaib Jamai gave a controversial statement regarding Sambit Patra.
The Supreme court of India come down the tv show of Sudharshan News channel on entry of Muslims in civil services examination, Supreme court also bring to stop 16 more episodes of "Bindas Bol" program hosted by the anchor Suresh chavhanke by saying this episode stopes freedom of speech and expression.

Zee News a national news channel come up with a show called "Kya Kehtahai India" where there is no concept of an anchor in this show The People, party workers and spokesperson put his perspectives and thought on a given topic of protection of Indian people, a sudden violence erupted in the show between BJP spokesperson and Samajwadi part Spokesperson.

Conclusion:

Media is so called as watchdog for the society and if they do not control their language, we can say yes a time will came when people will not watch Tv news channel and social media. we all are now going to consigned on social media and watch only relevant languages in social media or in news portal.. we have to put embedment in laws that if any irrelevant/non parliamentary / abuse langue used in any tv debate shows or in print media it should take strict action and media should fallows the laws and ethics of press in more advanced manner. Because These unwanted/irrelevant/non parliament language are threats for the society and hance damage the budding journalist.So we have to make such scenario where ethics of journalism should flows not revenue collection methods should stop.

References:

Slim Hadoussa and HafedhMenif University of Tabuk, Tabuk, Saudi Arabia, in the journal Teaching English with Technology, 19(1), 56-71,https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1204643.pdf

Shahid Beheshti University, Tehran, Iran, Azad University, Qom, Iran title : Language in Media: A Tool for Expressing Political Views, October 31, 2019, https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1249000.pdf

Khodjayorov Malik Berdimurodovich title : Media Linguistics and Its Role in The Language of Modern Mass Media, Ijraset, https://doi.org/10.22214/ijraset.2022.41903

https://www.youtube.com/watch?v=H10HX_nz1Yk

https://www.youtube.com/watch?v=AsMZel4ya48

https://www.youtube.com/watch?v=H10HX_nz1Yk&t=156s

https://www.youtube.com/watch?v=Yk3C6ja2f7Q

https://www.youtube.com/watch?v=5Fy5i0xoDiw

Research Scholar
R.K.D.F University Jharkhand, Ranchi
Mob:8210186825 Email : rashid.iqubal.siddique@gmail.com

Associate professor Cum Dean Academics
R.K.D.F University Jharkhand
Mob:9798148889 Email : anita.kumari81@gmail.com

Research Article

Marginalization of a Language and Ensuing Cultural Shift

–Dr. Reena Kapoor

Abstract:

Discourse requires a language with sufficient richness to enable the in-depth examination of concerns that accompany effective action. It's how we share information about the environment, build mental representations of it, theorise about its dynamics, probe our emotions, explain how things work, and even prescribe social interactions and behavioral norms. It's crucial since it facilitates the development of common mental models amongst individuals. Otherwise, it would be incredibly challenging to produce shared understanding of the objective reality that exists beyond our thoughts, and our relationships to one another would be so stifled that we hardly constitute a society at all.

A new social reality must be built in order forcivilisation to progress, and language is the medium through which this new social reality is created. Basically, what we mean when we talk about "social reality" is the way in which our society's commonly accepted definitions of certain terms are really expressed in everyday life. However, one must keep in mind that language is a product of social reality and so a social construct. Therefore, it can be altered in the same way that other social norms are. When one language gives way to another, an entire culture shifts. Here we see the influence of language in the twenty-first century. The language's versatility makes it useful not just for conveying ideas but also for eliminating old genres and generating brand new ones.

This paper aims to bring attention to the need of maintaining native languages in the context of current woke discussions.

Keywords- Mother-tongue, Language, Discourse, Cultural shift, Wokeism

The marginalization of a language refers to the process in which a language is gradually reduced in usage, prestige, and social value. This can happen when

a dominant language is introduced, such as through colonization, immigration, or globalization. When this happens, the people who once spoke the marginalized language are often forced to shift to the dominant language, leading to a cultural shift.

The loss of a language is a loss of cultural heritage and unique perspectives, as each language encodes a unique view of the world. The cultural shift that occurs as a result of language marginalization often involves the loss of traditional practices, beliefs, and ways of life. This can lead to the erosion of cultural identity and a loss of connection to one's heritage.

It's important to note that language marginalization is not just a linguistic issue, but a social and cultural one as well. Language and culture are closely intertwined, as language is an essential aspect of a culture, and culture is reflected in the language people speak. Language and culture are also closely tied to identity, and therefore, the marginalization of a language can have significant implications for the culture and people who speak it. This essay will explore the issue of marginalization of a language and the cultural shift that can occur as a result.

First, what is meant by "marginalization" of a language? Marginalization of a language refers to the process by which a language is pushed to the periphery of society, and its speakers are relegated to a lower status. This can happen for a variety of reasons, such as the rise of a dominant language, the influence of colonialism, or government policies.

One example of the marginalization of a language is the suppression of Indigenous languages in many colonized countries. The colonizers often imposed their own language and culture on the colonized people, in an effort to assimilate them. This suppression of Indigenous languages has led to a loss of cultural heritage, knowledge and identity for Indigenous communities. For instance, the 18th-century settlement of French colonists on Runion and Mauritius, then uninhabited, was as much a form of colonization as the settlement of several Caribbean islands by Europeans during the 16th-18th centuries, or the establishments of trade forts on the African and Asian coasts during the 16-18th centuries, or the political and economic domination of several African and Asian countries from the 19th to the mid-20th centuries. Bearing in mind that even the spread of Indo-European populations in Europe involved as much of settlement colonization as the domination of the Americas and Australia by the English, history tells us that colonization as understood in population genetics has assumed many styles involving different patterns of interaction. The more common, political notion of colonization rests largely on the more neutral, population genetics notion.

In addition, the increasing influence of English as a global language has led to the marginalization of other languages around the world. English is often viewed as the language of business, technology, and education, and as a result, many countries are promoting the use of English and downplaying the importance of their own languages. This shift can result in a loss of linguistic and cultural diversity, as well as a loss of economic opportunities for those who do not speak English.

The marginalization of a language can also have an impact on education. Children who speak a marginalized language at home may have difficulty in school if the language is not used or valued in the educational system. This can lead to a lack of access to education, and as a result, poor academic performance. This can be a barrier to economic and social mobility, and can perpetuate poverty and marginalization.

When a language is marginalized, it can also lead to a cultural shift. As people are forced to speak a dominant language, they may begin to lose their sense of cultural identity. This can result in a loss of traditional knowledge, customs, and values. For example, many Indigenous communities have lost traditional ecological knowledge and sustainable practices as a result of the marginalization of their languages.

There are many examples of the marginalization of a language leading to a cultural shift around the world. Some examples include:

Native American languages: The colonization of North America by European settlers led to the suppression of Indigenous languages and the imposition of English. This has resulted in the loss of traditional knowledge and cultural practices, as well as a loss of identity for Indigenous communities.[1]

Welsh language in Wales: English has historically been a dominant language in Wales and English education policy has been implemented in Wales resulting in reduction of Welsh language speakers. This has led to a loss of Welsh culture, tradition and identity.[2]

Catalan in Spain: The suppression of the Catalan language during Franco's dictatorship led to a cultural shift, as people were forced to speak Spanish. Today, though the language has been re-established, it still struggles to compete with the influence of Spanish and the loss of cultural expression and identity still continues to be a concern.[3]

Irish language in Ireland: The influence of English and the imposition of English education policies in Ireland has led to a decline in the use of the Irish language, resulting in a loss of traditional culture and identity for many Irish people.[4]

Maori Language in New Zealand: The colonization of New Zealand by Europeans led to the suppression of the Maori language and the imposition of English. This has resulted in a loss of traditional knowledge and cultural practices, as well as a loss of identity for Maori communities.[5]

The Amazigh language in Morocco: The Amazigh language, spoken by the Berber population, has been marginalized by the Moroccan government and society and has led to a cultural shift, as Berbers have been forced to adopt Arabic language and culture. [6]

As per the study of UN, 3000 languages(Major and Minor) are on the every of extinct of 7,000 indigenous languages spoken today, four in 10 are in danger of

disappearing, rights experts said on Wednesday, in a call for a decade of action to reverse the "historic destruction" of age-old dialects."

Furthermore, when languages are marginalised and people are forced to adopt a dominant language, it can also lead to loss of verbal literary tradition, and other forms of symbolic culture, like Folk tales, storytelling. So, capitulating the marginalisation of a language can have serious implications for the culture and people who speak it. It can lead to a loss of cultural heritage, knowledge and identity, a loss of linguistic and cultural diversity, as well as a loss of economic opportunities. It is important that we recognise the value of linguistic and cultural diversity, and work to support the revitalisation and preservation of marginalisedlanguages.

The issue of marginalization of a language and cultural shift has been gaining more attention in recent years due to the emergence of the term "Wokism". 'Wokism' is a term used to describe a form of social and political activism that emphasizes issues of equity and diversity, particularly in relation to race and ethnicity. The movement calls for greater awareness and understanding of the experiences of marginalized communities, and advocates for policies and actions that can help to promote greater equity and inclusion.

An example of this can be seen in the discussions around the use of non-dominant languages in the workplace and education. Wokism encourages that the use of non-dominant languages, particularly those of marginalized communities, should be supported and valued, rather than marginalized. In practice, it encourages companies and institutions to support multilingualism and to provide resources and training to help non-dominant language speakers to access opportunities and succeed. Moreover, another example of language and culture marginalization that intersect with wokism is the case of Black Americans. Many black Americans have experienced marginalization of their culture, language and history. The use of African American Vernacular English (AAVE) is often stigmatized in schools and workplaces. Wokism movement advocates for the recognition of AAVE as a valid and unique language, rather than a substandard dialect, and for the teaching of African American history and culture as an integral part of the American education.

In conclusion, the marginalization of a language and ensuing cultural shift can have serious implications for the culture and people who speak it. The Wokism movement highlights the importance of valuing and supporting linguistic and cultural diversity, particularly for marginalized communities, and the need for policies and actions that can help to promote greater equity and inclusion.

References

1. Bourdieu, Pierre. 1991. *Language and symbolic power*. Cambridge, MA: Harvard University Press.
2. Dixon, R. M. W. 1997. The rise and fall of languages. Cambridge: Cambridge University Press.
3. Maffi, Luisa, ed. 2001. On biocultural diversity: Linking language, knowledge, and the environment. Washington, DC: Smithsonian Institution Press.

4. Mufwene, Salikoko S. 2001. The ecology of language evolution. Cambridge: Cambridge University Press.
5. Migge, Bettina and Léglise, Isabelle. "10. Language and colonialism" In Handbook of Language and Communication: Diversity and Change edited by Marlis Hellinger and Anne Pauwels, 299-332. Berlin, New York: De Gruyter Mouton, 2007. (https://doi.org/10.1515/9783110198539.2.299)

Online site consulted-
1. https://news.un.org/en/tags/endangered-languages
2. https://www.iesalc.unesco.org/en/2022/02/21/a-decade-to-prevent-the-disappearance-of-3000-languages/
3. http://mufwene.uchicago.edu/mufw_colonization.html
4. https://doi.org/10.1080/0031322X.2019.1662074
5. https://www.researchgate.net/publication/270551507_Languages_inequality_and_ marginalization_Implications_of_the_double_divide_in_Indian_multilingualism

Assistant Professor
Dayal Singh (E) college, University of Delhi
Mob.9811501127 Email- dr.reenasablok@gmail.com

Research Article

The Complex Web of Language, Welfare and the Politics: A Critical Analysis

–Pinku Jha

Abstract:

The notion of politics does talk about the process of conflict and consensus among different individuals, groups or societies. In present paper, researcher has made an attempt to focus on changing dynamics of politics with special reference to language. To be precise the major research questionof this paper lies at the core idea of welfare, that is how to ensure the welfare of people through a proper use of language. So it is certainly appropriate to identify the content of this paper as more or less conceptual in nature. There are numerous interpretations of welfare and this paper hasexamined it from the perspective of language. The problems associated to the language as of an identity has been considerably marked a significant place in politics. This particular issue can come up with another challenge to the fullfill the objective of welfare in a society. Therefore it seems appropriate to have a discourse over the concerned issue that has been discussed in present paper.As a social instrument, language connects people all over the world. So while analyzing works of different scholars present paper tried to reach to a more stronger argument for ensuring the need oftransforming the politics by spacing a 'good language' in the domain of welfare at one side, on the other side locating a 'good politics' by recognizing a due place to the struggle of language in contemporary world, particularly in India.

Keywords: Language, Politics, Social instrument, Welfare

Introduction

Constitution makers of India has deliberately framed a Constitution that followed twinprinciplesof

the accommodation and consensus (Austin, 2000). This demonstrates the recognition and respectensured to each and every (non)citizen of India. It light of this, the individuals and communities on their own basis of identity such as region, caste, religion, gender and even language have been struggling for ensuring due respect and recognition to themselves.Particularly, language works as a common variable (despite of its own separate identity) to other basis of identity in India. Therefore current paper has focused on the language as a key factor influencing politics and its objective (ideally welfare of people).

Review of Literature

The present article is based on the idea of a 'good politics' where a set of normative approaches have been clearly used to examine its nature and context. It talks about three different variables (Language, Politics and Welfare) and makes an attempt to analyze the possible relationship between them. However, as different scholars have perceived these terms in some unique ways, therefore it seem appropriate to discuss a few of theirs major interpretations.

Existing notion of Language, Welfare and the Politics

Language: Ethnologue records nearly 7,000 living languages in the world (some 450 of which are "nearly extinct"). According to some other views, it is unknown to us that how many languages humans became able to speak, probably the number could be in thousands (Crystal 1997, p.17). In simplest term, it is a medium of expression while we communicate with fellow beings. It is a tool for understanding views and ideas of different people of a particular place or time.Primarily language helps us to communicate, further, effective communication provides scope of development.Language must be understood as conveying the intended meaning and not as a means to an aim in and of itself. In this situation, the set goals would be socioeconomic development, national unity and/or identity, and education (Mkwinda-Nyasulu, 2013).

Welfare: It is one of the most debatable concept among academia, policy makers and government officials. It is considered as a goal that can further ensure the well being, happiness and comfort of the citizens. Welfare is term that originates from*Welfare*,that is, "*well* in its still common sense and *fare*, mainly understood as a voyage or arrival but subsequently also as a source of food," (Williams 1976, 281). The word 'welfare' has always been used to refer to happiness and prosperity, but its modern meaning only became popular in the 20th century (Williams 1976).There are several other interlinked concepts to welfare, such as social and economic justice, non discriminatory treatment to each individual, development of personal and social identity etc. In the opinion of some scholars it is the function of a state, though some also talks about other emerging actors as a provider of welfare.
Politics: It is a field of action for politicians in a narrow sense. However it is a concept that dealswith the overall good of a community through various modes and conducts. It has been considered as the field of power struggle, governance, conflict

and consensus over decision making process etc.The word “politic” has Greek roots that originally meant “city,” “citizen,” and “civic,” but even Greek intellectuals like Plato referred to politics as “nothing but corruption.” In his 1946 article *Politics and the English Language*, George Orwell asserted that “all issues are political issues,” referring to matters pertaining to individuals and their existence in regulated communities. However, he too had a bad opinion of politics, as he said, “and politics itself is a jumble of lies, evasions, foolishness, hatred, and schizophrenia” (Orwell, 1946).

There are numerous interpretations of welfare and this paper has examined it from the perspective of language. Alsothe problems associated to the language as of an identity has been considerably marked a significant place in politics. It shows that there is scope of intersectional analysis to these concepts to have a wider understanding about their true nature and meaning.

Therefore considering the fact present paper has certain clear the objectives as follow:

Objectives of Research

- To interpret the nature of literature available to the field of chosen research.
- To highlight the possible relationship between literature and politics.
- To analyze, if there is any, way to ensure welfare of people through legitimizing their linguistic identity and communicating with a ‘good language’ to them.

Research Methodology

The study has been primarily designed as library research. Therefore the possible outcome of this research would be identified as critical analysis of language as an instrument of politics. Along with that a exploratory method will be applied, to shape a constructive framework of politics where consensus building among involved actors to the research field has been explored. In a way this research paper has used the method of hermeneutics, that is an art of interpretation.The sources for the current research article is based on writings of philosophers and scholars that have been analyzed , based on the above-mentioned objectives of research.

Analysis of Trio-relationship: Language, Welfareand the Politics

Since a basic understanding has already been put forward to the readers in preceding section, now the examination of the relationship between these three notion will be made. Scholars and philosophers had profoundly gave emphasize to the relationship among language, welfare and politics. It seems crucial to examine their scope and highlight how they are highly interlinked and interdependent to the present day context.

It shall be reasserted thatlanguage is not just a means of communication but a political weapon, it is shaped to convey political intent. Language reflects the power structure in society at large, and so discriminate in favour of dominant groups and against the subordinate one. Obvious example of this are the use of ‘Man’ or ‘Mankind’ to refer human race, reference to ethnic minorities as ‘negroes’ or

'colored' and the description of third world as 'underdeveloped' (Heywood, 2004, p.2 , 3).With this narrative of existing nature of politics, it is required to explore the field 'Good Politics' (If there is any) through the use of 'Good Language'. George Orwell in his "Politics and the English Language"eloquently writes"Language Should be "an instrument for expressing and not for concealing or preventing thought or writing"(Orwell, 1946).In other words, one can see why doesenhanced scope of good politics matters, where decision making has not beenaligned to a limited participation of a few expressions.

When someone is expecting a 'good politics', their ideas is based on the assumption that certain principles would be observed in the field of governance. In a society someone is expecting to get fulfilled his/her basic material needs, on the other hand a few may think their self identity and dignity shall be respected[1] . In the second framework, people who are struggling for theiridentity[2] are appropriate to be discussed. In this background it is justified to argue that language based identity needs to respected and it shall have due recognition.

However there is another way to perceive the relationship between language and two other concepts that are welfare and politics. Here the foundational argument is based on how in a society exclusionary practices are justified with an intended use of vocabulary or language. These exclusion are being made on the grounds of color, gender, origin, religion, caste, more importantly Language and many more other factors. For e.g. here the Linda Smith' s work *Decolonizing Methodology*[3] seems appropriate to mention, where Smith writes how Orientals kept writing in certain ways to demean or to exclude indigenous people tofreely expressthemselves (Smith, 2021). In a way this asserts the argument that welfare is not reaching to the people who are being excluded and targeted by the people who are in power or in position to create obstacles in the field of a 'Good Politics'. Thus it is not just that people who belongs to a particular identity (Here it is linguistic identity) are being treated unequals to others, rather they are being constantly targeted with a form of language that certainly lower their self esteem and dignity.

The arguments made by Gerald are consistent with this framework, in which linguistic identities are emphasized as the victims of dominance by a (colonial) style of language. Gerald explores how colonization historically caused both unequal distribution and misrecognition, leading to the current dilemma of global language endangerment. Gerald argues that decolonization is a prerequisite for linguistic justice and outlines how changing redistribution and recognition relations might lead to decolonization (Gerald, 2021).Political philosopher Michael Blake (2003) argues that not every language shift is unfair in an early attempt to construct linguistic justice in regard to endangered languages. According to Blake, the question of choice—whether it was forced onto a person or was a free choice—distinguishes between just or unjust loss to a language.This issue of choice is linked to another sphere of obstacle to free identity of a group of people (particularly the people who have been linguistic minorities or the sufferers of language based domination), that is injustice posed by coercion based on unjust structural arrangements (Fraser,

2000). For example the natureof India's education system is mostly colored in shades of Macaulay's Minute[4] and the English education system, which further developed an intentional and indirect structure that constantly stopping'Indian way' of education to come forward. In other words colonial mode of education worked for the subjugation of the Indian languages and restrained their way to gain autonomy.

Conclusion

An appropriate use of language in literature makes it presentable and understandable to its readers. On the similar lines, the language is significant to create a society where an individual's dignity and identity shall be respected.With developing a theoretical framework to study welfare through intersection of language and politics, present paperproposes the idea that the virtues of welfare shall includes the principles of inclusiveness, free choice, just treatment and non discrimination, respect and recognition of unique identities. However the application of these virtues cannot be seen fruitful until or unless the government or the governance of any state is making some positive interference in the domain of politics.

Recommendations and Limitations

Instead of viewing the nature of language as a tool of manipulation or domination, attempts shall be made to look the 'Language' as a tool of all development. Researcher proposes to readers that how crucial it is to perceive the language as a mean toensure constructivedialogue. The field of politics is not only limited to conflicts over resources or power, rather the mode of consensus making is something that finds its place at the core of politics. This consensus and cooperation cannot be expected without the use of an inclusive and constructive language. In other words this paper suggests the role of inclusive language that supports the well being and happiness of each individual of a community.

Though there are certain limitations when the attempts are being made to study language and politics together, it is difficult to understand what are the clear areaswhere theoretical framework could successfully work. Therefore, this study presents an insight to the scope of research to the concerned field and altogether it has widened the possibilities of discourse over core elements of language, welfare and politics.

Reference

Austin, G. (2000). *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. Oxford University Press, USA.

Blake, M. (2003). Language Death and Liberal Politics. In Kymlicka, W. & Patten, A. (eds) *Language Rights and Political Theory*. Oxford: Oxford University Press, 210-229.

Fraser, N. (2000, June 1). Rethinking Recognition. Retrieved from https://newleftreview.org/issues/ii3/articles/nancy-fraser-rethinking-recognition

Heywood, Andrew. (2004). Introduction: Concepts and Theories in Politics. *Political Theory: An Introduction* (3rd ed.). New York, United States of America: Palgrave Macmillan.

Mkwinda-Nyasulu, B. (2013). Role of language in socio – economic development: the semiotics are right | Journal of Humanities. Retrieved from https://www.ajol.info/index.php/jh/article/view/151922
Orwell, G. (1946). *George Orwell Politics and The English Language:* Hardcover Book. Amsterdam, Netherlands: Adfo Books.
Roche, G. (2021, May 22). Linguistic Injustice, Decolonization & Language Endangerment. Retrieved from https://www.academia.edu/49017239/Linguistic_Injustice_Decolonization_and_Language_Endangerment?source=swp_share
Smith, L. T. (2021). *Decolonizing Methodologies: Research and Indigenous Peoples* (3rd ed.). Zed Books.
Williams, R. (1976). *Keywords: A Vocabulary of Culture and Society.* Oxford, United Kingdom: Oxford University Press.

(Footnotes)

1 Maslow's discusses about the need of self esteem andself actualization lies above any material or physiological need (See "A Theory of Human Motivation' by Abraham Maslow)

2 Nancy Fraser's talks about the identity crisis where minorities are being discriminated through biased structural arrangements.

3 Linda smith writes *DecolonizingMethodology* to break the status-quo and supremacy of colonial research techniques.

4 'Minute on Indian Education ' (1835) that sought to establish the need to impart English education.

Junior Research Fellow, Ph.D. Scholar
Department of Political Science, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
Mobile number: 7011593451 Email: pinku.j-polsciphd@msubaroda.ac.in
Postal Address: 04, VS Hall MSU Boys'Campus, Pratapganj,Vadodara-390002 Gujarat

Research Article

Status of Infusion of EE concepts in VIII th Standard Language Text Books of Kerala

–Dr. Sojia John

Abstract:

The NCF (2005), KCF (2007) and NEP (2020) reiterately mentioned the need for teaching Environmental education concepts across all learning subjects at all levels of formal education. Literature, in any language is one of the ways of passing on the culture and heritage from one generation to the next. Studies of novels, anthologies, poems and plays could help in developing awareness and knowledge about the environment, judicious use of the environment and above all a love for the environment .All languages have three major components; vocabulary, content for reading and writing and grammar. Concepts of environment could easily be introduced into teaching of these components. However the teaching and learning of environmental concepts seemed to have been addressed very superficially. There may be a number of reasons for the ineffective infusion of Environmental Education elements in the content and process of school education. The most important reason is the reluctance on the part of authors of textbooks to provide the desired treatment to the Environmental Education contents as it requires them to look beyond the traditional structures of the concerned subjects. Also the infused material is creating incoherence in the curriculum, and the attempts to remove this incoherence are further creating confusion among the teachers. Thus the present study attempts to study the status of infusion of environmental concepts in the VIIIth standard language textbooks (English, Malayalam & Hindi) and to determine the gaps in information that should be filled in. Thus the study provides insight into issues related to Environmental Education in the formal curriculum to curriculum developers, textbook writers, teachers, teacher educators and prospective teachers at secondary level.

Key words: Environmental Education (EE), National Curriculum Frame work (NCF), Kerala Framework (KCF)

Context of the Study

Issues concerning the environment have become the major concern in all spheres of life. This may be due to the enormous environmental problems and its far-reaching adverse consequences on the very existence of humanity that have been identified throughout the world. As human beings continue to have significant impacts on the environment and its resources, education seems to be the best tool for providing the mankind with an understanding of the effects of their actions and behavioral patterns. Consequently Environmental Education became an approach to education that promotes environmentally responsible behaviors and seeks to provide solutions to the growing environmental problems. Kerala, the God's own country has not been spared from the effects of environmental degradation. The need to protect the environment has grown to be a huge issue of concern in the state. In this context the state requires an effective Environmental Education from grass root level for protecting the environment for future generation. School curriculum turns out to be the best determining factor in the practice of EE. Environmental Education (EE) is the teaching of those aspects of environmental issues described in the school curriculum, which provides opportunities for pupils to acquire awareness, knowledge, attitudes, skills and experiences that will enable them to make informed and responsible decisions on the natural and built environment. Following the acceptance of the Affidavit (2010) by the Supreme Court of India, the NCERT has published books by infusing environmental concepts. Infusion describes the process of weaving EE content or approaches through the regular curriculum where appropriate, without altering the learning outcomes or the structure of the course. In this context it can be conceived that in Kerala also Environmental Education is not a separate subject on the already overburdened curriculum but environmental concepts are infused in all subjects from Science and Social science to Language, Mathematics, IT, Arts and Crafts. Thus a cross-curricular approach is used for promoting Environmental Education in secondary schools of Kerala rather than as an independent subject. It is hoped that such practice can enable students to understand different environmental issues through the learning in different subjects, and eventually a holistic picture of Environmental Education can take place in the mindsets of students.

Rationale of the Study

Literature, in any language is one of the ways of passing on the culture and heritage from one generation to the next. Studies of novels, anthologies, poems and plays could help in developing awareness and knowledge about the environment, judicious use of the environment and above all a love for the environment .All languages have three major components; vocabulary, content for reading and writing and grammar. Concepts of environment could easily be introduced into teaching of these components. For example, under the new terms or vocabulary, terms such as

biodiversity, pollution, deforestation, ecosystems could be introduced. Similarly, matter pertaining to pollution of environment –air, water, soil could be infused into the chapters dealing with our surroundings, inventions and discoveries. Thus in case of language textbooks infusion of environmental concepts does not necessarily imply, nor require, rewriting or disturbing the existing lessons. Nor does it mean that lessons be replaced. It rather sees it as a process of recognizing the opportunities in the entire textbook and potential points of intervention through which the environmental perspective could be infused. As per NCF (2005) and KCF (2007) Environmental education concepts are infused into all learning subjects at all levels of formal education. However the teaching and learning of environmental concepts seemed to have been addressed very superficially. There may be a number of reasons for the ineffective infusion of Environmental Education elements in the content and process of school education. The most important reason is the reluctance on the part of authors of textbooks to provide the desired treatment to the Environmental Education contents as it requires them to look beyond the traditional structures of the concerned subjects. The infused material is creating incoherence in the curriculum, and the attempts to remove this incoherence are further creating confusion. Textbooks are cultural artifacts which participate in the cognitive and social organization of knowledge .They translate national program guidelines which are the expression of national education policies, and are used by teachers as guidelines and didactical resource. Therefore textbook analysis is a relevant tool for studying socio-cultural determinants of environmental issues

Research Question

- Are the contents of the VIII th standard Language textbooks of Kerala adequately infused with enough environmental concepts?

Methodology in Brief

Content analysis is defined as any methodological measurement applied to text that identifies the presence, intensity or frequency of some characteristic (Shapiro and Markoff, 1997).Analyzing both the manifest and latent content through quantitative and qualitative methods is a pragmatic and well-rounded approach to analysis of the textbooks, therefore a mixed-method content analysis was used in this study to map the infused environmental concepts in the VIII th standard Language school textbooks The specific content of instructional material becomes more evident when one also "reads between the lines" or takes a look "behind the scenes". Because the objective here is to present the status of infusion of environmental concepts in the secondary school textbooks, description is unavoidably dominant. The text books at secondary level were analyzed for locating the infused environmental concepts. The examples, information, data, questions, exercises, case studies, activities and action links related to environment in the text books were coded and identified as specific concepts and they were categorised under specific categories. A separate coding sheet served the purpose. Once the data have been

coded and categorized it can be counted, the frequency of each code and the number of words in each category. The mapping of concepts on environment clearly demonstrates the gaps in information that should be filled in.

Findings from the Analysis of the Language textbooks

An attempt is made in this section to analyze the contents of the present secondary school Language textbooks of Kerala viz. (Malayalam, English and Hindi). The first level of analysis includes an impressionistic analysis which involves an overall presentation and analysis of the textbook related to its design, distribution of units and chapters. While an in-depth analysis was carried out in the second level which examines separately and more analytically the treatment of the infused environmental concepts and exercises provided throughout the textbooks. The highlights of the analysis done are presented below:

Infused environmental concepts in English textbook (STD: VIII)

The part I Kerala Reader English of standard VIII consists of three major units with two prose and two poems each. The prose and poems of the first unit 'Hues and Views' depicts only the usual references of elements of nature which are the part and parcel of prose and poems. The prose 'A ship wrecked sailor' under the second unit 'Wings and Wheels 'tells the story of Luis Alejandro Velasco, a twenty year old sailor who was washed overboard during a storm in the middle of the Caribbean Sea. Clinging to a life raft without food and water, he survived ten days on the open sea. So the prose clearly describes the major events under the sea who quite unbelievably escaped from the shipwreck. The prose was followed by a graphic story for the students to study and write appropriate events from the story in the space provided. Another activity under let's play with language part was a nature oriented poem to list down the adjectives. An activity was given to write a similar poem on any of the fruits. The first poem 'From a Railway carriage' portrays the exciting experience of children travelled by trains. Besides the rhythm and movement of the train the rushing scenes outside the window to look at the reminiscences of the beauties of nature in the 19thcentury. The activity for the children to write five scenes about what they see through the window of the train gives opportunity for free expression about nature. In the poem, poet used word pictures which are called as images with reference to elements of nature. These pictures appeal to eyes (visual), ears (auditory), touch (tactile) small (olfactory) and taste (gustatory) which helps in developing a positive attitude towards environment. The second poem 'Marvelous Travel' expresses travelling as a way of getting to know the world around us. The second prose 'The Little Round Red House 'describes the experience of a little boy who explored his surroundings to find out a little red round house. The elements of nature are beautifully explored along with his search. The first prose 'The light on the hills' under the unit three 'Seeds and Deeds' begins with an expression of the beauty of nature through paintings. While reading the short story the pictures like glimmering sunlight, rustling leaves, rippling

stream with the light shining upon the hills could be visualized. The activity for enriching vocabulary includes words related to nature. Another activity under let's speak was to visit www.youtube.com and watch Severn Suzuki's speech delivered in the UN Earth Summit at Rio de Janeiro. Thus the chapter present various ways in infusing environmental concepts in languages. The second prose 'Rosa parks sat still' is the story of Rosa Parks whose life was a battle for justice. The first poem 'Sower' under unit three brings out that , ploughing the fields, sowing seeds, reaping harvest-the sons of the earth never get tired. Various activities involved in farming are described and the grain is considered precious. The last poem 'The village Blacksmith' depicts the life and work of a common man as an example of persistence and accomplishment. It makes no references on environment. The part two Kerala English reader consists of again two units with two prose and poems each. The first poem 'Song of the flower' under the unit four 'Flowers and Showers' signifies the importance of flowers in nature. The flower speaks about itself and describes how it is being reared by the various seasons and become a part of nature makes the world beautiful. The ways through flowers make the world beautiful is clearly depicted with the use of metaphors. The next poem 'First showers' under the unit four is about the happiness that rain brings to all the other related elements of nature including the poet. The poem ends with rain as the wonderful gift of nature. The prose 'The Nightingale and the rose' is about the realization that in life nature soothes us and shares our pains. It is a story about how nature helps man in times of need. The relationship between man and nature is one of the themes of the story. The nightingale, the green lizard and the rose-tree speak like human beings. An activity was given for designing a poster for promoting awareness on the need for conserving nature. Based on the story there were activities like completing story house, diary entry, let's edit, speech delivery and language games. The prose 'A diary in the country' is a story depicting how nature influences man. The nature has always been a motivator, guide, teacher and a mentor for man. The story portrays the splendor of nature. An activity to prepare a blog and post poems, stories or articles describing the beauty and splendor of nature. The prose under the unit five 'Share and Care 'are 'The school for sympathy' and 'The merchant of Venice'. They are with the minimal references with regard to the nature .The poem 'My grandmother's House' used simile from nature. The last poem 'Solitude' describes the world we live where life is a mixture of joy and sorrow and it is essential to be self-reliant.

Infused environmental concepts in Malayalam textbook (STD: VIII)

The Kerala Padavali Malayalam text book of standard VIII consists of five units. The first unit 'In injanunarnirikam' consists of three chapters with mere environmental references with regard to nature and its components. The chapter 'Pookkalum aandaruthikalum' under the unit 'Vaaykunnu bhumiku varnangal' clearly depicts the bonded relationship between agriculture and festivals in Kerala. The festivals like vishu, onam,thiruvathira are celebrated in the midst of immensely rich

environmental resources provided by the nature. The other two units 'Karmukhilinu gadhyathil oru archana gheetam' and 'Mukthakangal' portray how the different natural phenomenas are established in the arts and literature works. The chapter 'Bhumiyude swapnam' under the unit 'Anya jeevanuthuki swajeevitham' put forward different thoughts with the motherly feeling of nature. All the remaining chapters depict the reminiscences of the beauties of nature aesthetically. The Adisthana Padavali Malayalam text book of standard VIII consists of three major units. The unit 'Pinneyum pookkumichillakal' consists of three chapters. The chapter 'Puthuvarsham' portrays the childhood days of the poet with enriched memories of aesthetic beauty of the nature in the context of onam festival. The second chapter 'Aa Vazhavettu'is the story of a devoted farmer who consider soil and agriculture more than his children. The third chapter 'Enna niracha karandi' reminds the reminiscences of a beautiful village amidst of all the developments taking place. The unit two 'Kannuvenam irupuram eppozhum' consists of three lessons. The lesson 'Randu matsyangal' is the story of two fishes who is striving hard to live in this changing world. It strongly reminds the uncontrolled exploitation of man on environment. Lack of rain, vanishing of forests, destruction of sacred groves, pollution of freshwater, extinction of species are some of the environmental issues mentioned in the chapter. It gives light to environmental themes like exploitation of man over environment, interdependence of man and environment, need for eco-friendly development etc. The chapter 'Thenkani' is a picturisation of a drama where students went to a forest for collecting sweet mangoes .The chapters 'Basheer enna balyaonnu','Nanayatha mazha' under the unit 'Ormakal kenthu sugandham' make references related to environment and its components.

Infused environmental concepts in Hindi textbook (STD: VIII)

The Hindi textbook of standard VIII consists of five units. Environmental references with respect to environment and its components are sparsely seen in the three chapters under the unit one. The first chapter is a folklore story, the second one a drama and the third one a poem exemplify terms like sowing, harvesting, farming, grazing fields, forest, moon, clouds, seasons, rainbow, river, rain, earth etc.. revealing the aesthetic beauty of the nature. The poem titled 'Mem ether hum' portrays the existence and rights of all life forms in Earth. The chapters under the unit two includes a poem ('SukhuDukhu'), biography ('Pita kaPrayashithu'), news ('Mere bachekosikhayem')and a story('Ujjala')which also make some environmental references with respect to earth and its components. The chapter 'Baat us mangalvar' under the unit three is an excerpt from the service diary of Dr.Remani adoori ,community health Physician. The chapter includes words like thick forest, plants and nature and its seasons. The lesson ends with a picture story depicting about about the planting of a sapling by an old man. The boy asked the old man why he plant trees even at this age? The reply conveys the message that we should conserve our earth for our future.The picture story 'Indradhanush dharti par uthara'is about a rainbow named saptham.The saptham visits earth and various elements of

nature are described.The lesson ends with the reminder that all events takes place in our nature in a balanced way. But at present man exploit nature in an unprecedented manner which has resulted in problems like famine, flood,drought.earthquake etc..The poem 'is barish mem' clearly depicts the close relationship of a farmer with his soil. When his field is being lost he couldn't enjoy the natural events of nature such as music of rain or song of birds or even the aesthetic beauty of the greenery. The lesson 'Jal Bank' under the unit four is a very lesson completely related to EE .It is a satire which aims in conveying the message of water conservation and saving our water resources for the future. The lesson suggests a suitable means for conserving the water is the introduction of water bank similar to our money bank. The author dreams that like money deposited in banks, extra water can be deposited and can be taken back with interest. After use the extra water can be stored in the locker. Like money water can be transferred to the needy from our water account. Thus the lesson is a true eye opener towards the conservation of water.

Categories and Concepts	**English**	**Malayalam**	**Hindi**
Cat.1: Systems in Nature			
Types			
Functions			
Uses			
Grasslands			
Types			
Functions			
Uses			
Aquatic			
Types			
Functions			

Uses			
Aquatic			
Types			
Functions			
Uses			
Food chains			
Food Webs			
Food Pyramid			
Ecosystem Degradation			
Animal Husbandry			
Recycling of Waste			
Utilisation of Resources			
Water			
Land			
Depletion of Resources			
Sustainable Develop			
Conservation			

BIODIVERSITY			
Evolution			
Extinction			
Species-Plants			
Classification			
Habitat			
Niche			
Population			

Succession			
Behavioral patterns			
Species-Animals			
Classification			
Habitat			
Niche			
Population			
Succession			
Behavioural patterns			
Afforestation			
Deforestation			
Zoos			
National Parks			
Conservation			

POLLUTION-P			
Classification			
Air			
Noise			
Water			
Soil			
Oil			
Thermal			
Radiation			
Solid Waste			
Issues			
ENERGY-E			
Conventional			
Sources			
Conservation			
Non-Conventional			

Solar			
Wind			
Geothermal			
Hydro-electric			
Tidal			
Wave			
Issues			
PEOPLE&ENVT-PE			
Community			
Population			
Adaptation to Environment			
Agriculture			
Irrigation			
Agricultural Practice			
Urbanisation			
Settlement			
Culture & religion			
Values &ethics			
Diseases &health			
Issues			
Others-O			
Environment			
Law			
Total	**58**	**42**	**21**

- No mention
- Mentioned in one or more of times, but not discussed
- Mentioned several times & discussed briefly
- Moderate discussion

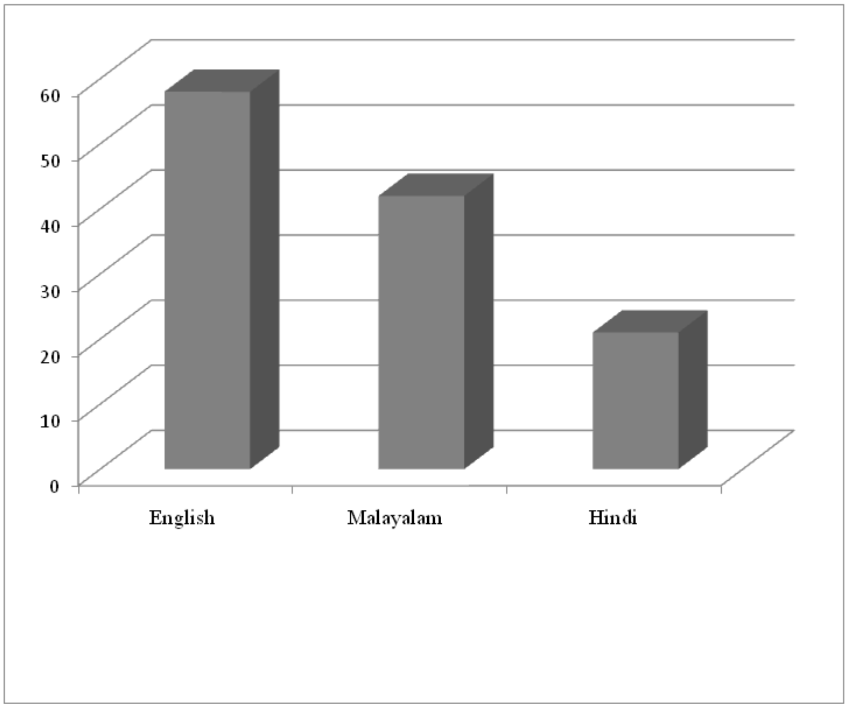

Figure 2 : Number of Environmental concepts in Language Text books– STD VIII

The major findings of the study are listed below:

- The language subjects cover an average count of infused environmental concepts especially with usual references of elements of nature which are the part and parcel of prose and poems.
- Several activities providing enormous scope for infusion of EE are given in English textbooks
- Environment and its components are expressed as descriptions of nature or as passing references
- Lack of progressive information on environment and its components
- It is worth in mentioning that a few lessons in Malayalam and Hindi textbooks are solely dedicated to EE with references to environmental issues and environmental protection aspects
- There is no information of the local biological diversity of the State.
- How ecosystems can be sustainably used or how degraded ecosystems can be restored has not been introduced in the language textbooks.
- Most of the environmental texts analyzed are informative; information *about* the environment neglecting *in* and *for* environment
- Activities of environmental concern are not evenly distributed, many aspects need to be represented in activity form

- Only a very Figures are given related with impact of population on environment are provided in the textbooks of all subjects
- Lack of holistic approach in infusing EE in textbooks

Conclusion

The investigator's analysis of the content of Language textbooks reveals that EE concepts are not adequately infused in the textbooks used for teaching at high school. Thus evidence of adequate treatment of Environmental Education concepts in the text books are very meagre and whatever has been mentioned, has been done very superficially without giving any emphasis to the various dimensions of environment. It does not include the dimensions necessary to provide students with an opportunity to study EE issues holistically

References

Ballantyne, R.R., & Packer, J.M. (1996). Teaching and learning in environmental education: Developing environmental conceptions. *Journal of Environmental Education, 27*(2), 25-32. DOI:10.1080/00958964.1996.9941455

BVIEER. (2003). Bharati Vidyapeeth Institute for Environmental Education and Research. Study of status of infusion of environmental concepts in school curricula and the effectiveness of its delivery; India Environment Management Capacity Building project of the Ministry of Environment and Forests, funded by the World Bank Report

Creswell, J. W. (2002). Educational research: Planning, Conducting, andEvaluating Quantitave and Qualitavie Research.

Gopal and Anand. (2006). Environmental Education in school Curriculum an overall perspective. *Retrieved from http://wgbis.ces.iisc.ernet.in.*

NCERT. (2001). Environmental Orientation to school students: A training module for southern region. New Delhi

World Commission on Environment and Development (WCED)(1987). *Our common future* .Oxford, England: Oxford University Press.

Assistant Professor in Education (Natural Science)
Mount Tabor Training College, Pathanapuram-689695
sojiajohn17@gmail.com

Research Article

National Education Policy 2020 in the upgradation of Indian languages

– Priteesh Kumar

Abstract:

This paper presents the idea that India is a multi-lingual and multi-cultural nation. Along with other ideas,NEP2020 projects the concept of promoting and preserving the local language. Our history witnessed the fact that education is an important tool for the promotion of culture in any civilization and languages are the medium of education. National Education Policy2020 is an important document for the ambitious goals of the twenty-first century. It strongly advocates for increasing multilingualism in teaching and learning. This is qualitative, descriptive research working through a methodology of observation, and analysis which will delve deeper into the subject by indicating that the basic premise of the NEP is to remove the traditional tendency of rote learning and take a new step towards joy and creativity. This policy implies that the prosperity of any country is possible only by living together with its elders. The character of Indian democracy is based on the harmonious co-existence of all Indian languages. Whether it is Awadhi, Bagheli, Bhojpuri or Tamil, Telugu, or Kannada. Along with the role and order of the Hindi language in the contemporary time.

In conclusion,it figured that along with others, NEP focuses on the upliftment of the local language. Indian languages should be included in higher education and comparative research work as envisaged in the National Education Policy. India can emerge as a global leader in the field of education only by strengthening its multilingualism and language power. This is the basic text of the National Education Policy2020.

Keywords: Mother language, multi-cultural, multilingualism, soft skills, co-existence, comparative research, Language contact.

Introduction

Today we have come around 6000 dialects from different language families across the world. We do know about the Bengali, French, Russian, Hindi, Japanese, Korean, etc languages, which are spoken differently in different parts of the world. Today, we all are 'multilingual' (who know and can speak and understand different languages). We have one mother language and two or three languages.

"Multilingualism is characterized as an event in regards to an individual speaker who utilizes at least two dialects, or between speakers of two dialects. It fundamentally emerges because of the need to impart across discourse networks. Multilingualism isn't uncommon, however, a typical need across the world, because of globalization and more extensive social correspondence practically 25% of the world's around 200 nations perceive at least two authority dialects with some of them perceiving more than two."[1]

As D. P. Pattanayak says that "Multilingualism can be sustained only if languages are in complementary relation. The world is not only multilingual; it is multi-ethnic, multicultural, multi-religious, and biodiverse. What is true of language is true of all multiple structures. Because of either consideration, there is so much conflict and such enormous amounts of money are spent on security; a fraction of this expenditure, if redirected, could solve many social problems. If we accepted languages as inherited assets a lot of problems would have been resolved."[2]

Language is the source vehicle of which every word is coined over the centuries. It reaches from the mother's womb to the next generation, in the stories of grandmothers and grandmothers, is settled in proverbs, folklores, stories, Pancha-tantras, etc. we must understand one thing about the language that the roots of the language are not only physical but also in cultural, moral, religious and spiritual life. The worldview and lifeview from which the language is nourished is the carrier of its philosophy, thought system, and concepts, it communicates the same. Language is not just words and grammar. Perhaps a better language word is 'dialect': language is made of what it chooses to speak. Our vision of life speaks in our speech. Our life principles speak. Our worldview speaks.

The English language has nothing to do with the lifestyle and thoughtstyle imbued with eternal life principles and values.The role of the English language in India is not to spread the light of knowledge but to spread the materialistic, indulgent lifestyle of the West i.e. Tamas. In India, English is not the vehicle of enlightenment, for us,

it is the vehicle of learning from light to darkness. So that India forgets itself and remains dependent on the West forever. Seeing this, Gandhiji had to say that a nation is not made by copycat monkeys'.This is the reason why our highly educated and administrative officers are cut off from society. The same is the condition of the judges and the entire judicial system, journalists, and educational institutions, the corporate world runs along this. The English language is meant to make India an integral country of western civilization by interfering with its civilization.

It was projected that the West is trying to make India a 'civilized', 'developed' state from 'backwardness' and 'ignorance' so as of the language, which can be termed as a 'metamorphosis' to make a man out of 'insect'. This process was to neglect and eradicate the native language system and fill the sense of colonized mind in the Indians to follow the west.

('Metamorphosis' 'is a wonderful story written by the great writer Kafka in 1912, which became the basis for social scientists to understand the change in human society).

Aims and objective of the paper

The aim and objective of the paper it to establish a relationship between the mother tongue and primary education.This is qualitative, descriptive research working through a methodology of observation, and analysis of the policy based on the pedagogy of teaching, which will delve deeper into the subject by indicating that the basic premise of the NEP is to remove the traditional tendency of rote learning and take a new step towards joy and creativity. The character of Indian democracy is based on the harmonious co-existence of all Indian languages. Whether it is Awadhi, Bagheli, Bhojpuri or Tamil, Telugu, or Kannada. Along with the role and order of the Hindi language in the contemporary time.

This paper also tries to establish a significant need forthe mother language at the primary or initial level of studying, to understand a concept in a better way. The main purpose of the three-language formula is for promoting inter-state relations. It says how the mother language should be the pedagogy of teaching in the contemporary time, and how the Indian traditional narrative study focuses on the supremacy of the mother language be it Sanskrit, Tamil, Prakrit, Pali, etc.

As given in the note of NEP 2020, here are many languages in our country, which many scholars divide into two categories, language, and dialects. Initially,our constitution has 14 languages as given in the 8th schedule, which has now increased to 22. Apart from this, according to the census of 2011, there are 1369 languages including dialects, in which around 10 thousand people speak 121 languages. According to UNESCO, 197 Indian languages have become endangered in the last

50 years, many are on the verge of extinction. With the death of a language, the civilization, culture, etc. of the speakers of that language ends. In such a situation, the importance of language increases further. It has been well accepted in the National Education Policy 2020. From this point of view, it is written in the principle of policy that for the protection, promotion, and dissemination of culture, we have to protect and promote the languages of that culture.

Re-commitment has been expressed to implementing the three-language formula in the NEP 2020, as some states of the country are not yet implementing it. The philosophy of the three-language policy was that the students of the northern states i.e.Students from non-Hindi-speaking states would learn Hindi, while those from Hindi-speaking states would learn one of the south or other state's languages. States can enter into reciprocal agreements and exchange language teachers to promote the teaching of Indian languages in this policy, as has also been suggested. Regarding the implementation of the three-language formula, a further provision stipulates that students will be required to select two Indian languages from the remaining three. A child's mother tongue is the first language they hear when they are born, and it also helps them to give their thoughts and feelings a clear shape. Critical thinking, the ability to learn a second language, and literacy skills can all be improved through language immersion.[3]

As UNESCO report, education in one's mother tongue has a positive impact not only on academic performance but also on learning outcomes and inclusion. This is necessary, particularly in primary school, to close knowledge gaps and speed up learning and comprehension. Most importantly, multilingual education that is based on the student's native language enables all students to fully participate in society. It helps to preserve the wealth of cultural and traditional heritage that is ingrained in every language worldwide and fosters mutual understanding and respect.[4]

Point 4.18 of the NEP 2020 policy says that literature in other classical languages, such as Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, and Odia, is extremely rich in India.Our ancient language such as Pali, Persian, and Prakrit and their literary works must be preserved for the enjoyment and enrichment of future generations. In addition to Sanskrit, other Indian classical languages and works of literature, such as Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Odia, Pali, Persian, and Prakrit, will be widely taught in schools as options for students—possibly as online modules—using innovative and experiential methods to preserve these languages and works of literature. All Indian languages with a wealth of oral and written literature, cultural traditions, and knowledge will be the subject of similar efforts.[5]

Also, seeing the importance of globalization, NEP 2020 focuses on the foreign

language too, it is said that foreign language such as French, Japanese, Korean, Thai, Burmese etc should be offered at secondary level. This introduction to new language will help the student to learn the new perspective and make there new perspective to learn new concepts other than the boundaries of India. This will also help student to achieve the global knowledge.

Challenges in implementing the language policy in India

1. In a multilingual society, focusing on local language and mother tongue and excluding English from lower grade schools, and denying lower socioeconomic groups access to higher education make it a monumental task.We live in a globalized world, so our education system should help us meet global standards. This can be done by having a strong command of English or any other global language.
2. It is difficult for private and public schoolsin those states having a plurality of languages i.e., Delhi or Mumbai to choose a particular language. It's not easy to provide good and best quality teachers to assure the NEP 2020 policies.
3. Implementing the Hindi language in non-Hindi states such as Punjab, Tamil Nadu, Maharashtra, North East states, etc. Protest as happens in Tamil Nadu against Hindi is not seen in other states of South India like Karnataka, Kerala, Andhra Pradesh, and Telangana. In this way, the condition of Hindi in four-five other states of the South and their psychology towards Hindi is different from Tamil Nadu.NEP 2020 ignores the Constitution's protections for people of tribal ancestry, as well as minorities like the SC, ST, and OBC.
4. NEP 2020 is a vehicle without a driver or actionless driver. The nature and philosophy of these policies show a holistic and multidimensional development in enhancing development and critical thinking. But at the same time, the roadmap is not clear to obtain that level. The number of multilingual teachers, available literature, and required infrastructure.

Every language is the carrier of the religious consciousness of the people of its mother culture. In this sense, it cannot be universal unless its mother culture stands on universal principles of life. In the English language, it cannot be called 'AhamBrahmasmi' ('अहम्ब्रह्मास्मि') because it's not the experience of the west. It is not the subject of the contemplation and worldview of his modern age. Our entire civilization, Sanatan Dharma, the one word on which we stand, is not in English, the same as it exists in Tamil, Bodo, Marathi, Konkan, Malyali, Dogri, etc. That's why the feeling of this word, the practice of that feeling; In the course of walking on that path in life and building that path, all the concepts that explain the vision of life

become meaningful by learning and understanding the mother language. Today, if the picture of our national identity, our special social system, which Gandhiji describes in 'Hind Swaraj' and which was made the means and purpose of awakening national self-consciousness, its picture has been erased, it has remained blurred and shallow. His self-awareness and self-memory are blurred. Exactly what has happened is the basic requirement to be progressive and what modern education for progressivism is doing even today. We are not able to understand the fragmented continuity of India's identity and deviation from the path under the influence of the tremendous propaganda of progressivism. And this progressivism is slowly and slowly in a phased manner, eradicating our tradition and rich source of knowledge system.

The AICTE, NCERT, UGC, Ministry of Education, etc. working significantly for the upgradation and implementation of the Nep 2020 policies.

The Tanjore University in Andhra Pradesh is dedicated to publishing 75 subjectbooks in the Tamil language by the end of this year.

The Ministry of education and the Medical Council of Madhya Pradesh is continuously working in the preparation and translation of medical courses, had released the MBBS first-year course last year.

The Bar Council of India, UGC, and the Ministry of Education is working jointly in the translation of their courses, judgments, terminologies, etc into different languages.

As UNESCO says in its report enhancing the language acquisition of children from various backgrounds: According to Jessica Ball's mother tongue-based bilingual or multilingual education in the early years, minority language speakers need six years of mother tongue instruction to close learning gaps.[6]

Conclusion

Education is an effective medium of nation-building. In such a situation, inequality in education can pose a threat to national unity. Which can be overcome by adopting a similar course. Therefore, the importance of the new education policy increases. The three-language formula aimed to fulfil three purposes: strengthening national unity, accommodating group identity, and increasing administrative efficiency.

If we have to save ourselves, our future generations, India's future, civilization, and especially our morality, religion, and mother language, then the entire intellectual and education system will have to be freed from this evil vision and accept and … mother language. If we don't do this, then the contradictory gap between ourselves and our existence will increase so much that we will become a completely deranged nation, it will not be handled by anyone, and it will become a slave again.

We do need to understand the philosophy of language in teaching methodology and the way our caliber and capacity can come out in understanding the thoughts/

concepts. The grammatical system, its literature, and its speakers should be protecting these ethnic languages. We should be ready and eager to adapt ourselves to modern times but not at the urge of destroying our own.

Bibliography

1. Pattanayak, D.P. "Multilingualism and Mother Tongue Education". Journal of modern literature, vol.33, 1984, pp.136-140.
2. The Constitution of India. Government of India Ministry of Law and Justice Legislative Department, As of 9th December 2020.UNESCO. 2016.
3. Linguistic Diversity and Multilingualism on the Internet. www.unesco.org/new/en/communication-andinformation/access-to-knowledge/linguistic-diversity and-multilingualism
4. Edwards, John. Multilingualism. Routledge, 1994.
5. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
6. https://www.reva.edu.in/blog/5-reasons-why-it-is-important-to-know-your-mother-tongue-well-21-february—international-mother-language-day#:~:text=Mother% 20tongue%20is%20the%20language,second%20language%20and%20literacy%20skills.
7. https://www.unesco.org/en/articles/why-mother-language-based-education-essential
8. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000212270

(Footnotes)

[1] Edwards, John. Multilingualism. Routledge, 1994.

[2] Pattanayak, D.P. "Multilingualism and Development. British Council.

[3] https://www.reva.edu.in/blog/5-reasons-why-it-is-important-to-know-your-mother-tongue-well-21-february—international-mother-language-day#:~:text=Mother%20tongue%20is%20the%20language,second%20language%20and%20literacy%20skills, retrieved on 18.1.2023.

[4] https://www.unesco.org/en/articles/why-mother-language-based-education-essential, retrieved on 18.1.2023.

[5] https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf, retrieved on 12.1.2023.

[6] https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000212270, retrieved on 18.1.2023.

❒❒❒

Research Scholar, CRS
Jawaharlal Nehru University, New Delhi

Research Article

Scientific and Technical Knowledge: In View of Indian Languages

–Anju Khandelwal,
–Avanish Kumar*

Abstract:

In India, a unique education system has been running since its inception, which helps in maintaining the culture of the country. Traditionally, the goal of education in India has been to achieve equality in the Indian education system and the right to education for all students. In the year 2020, the third National Education Policy was announced by GOI and implemented by the various state government. After two years of completion of NEP-2020 still, we are not in a position to extend the education either in our mother tongue or at least in Indian languages. The main objective of this paper is to find the use and availability of glossaries in scientific and technical education with the awareness analysis of students and professionals about CSTT.Also analysis of view of respondents for taking education at different levels in their mother tongue is shown in this paper.

Keywords: National EducationPolicy 2020, Indian Languages,Indian Education System, CSTT, Scientific Glossaries/ Dictionaries, Government Schemes.

1. Introductory Background

The ***gurukul*** or ***gurukulam***based system of education was the strongest and first ever fully developed in ancient India. Gurukul system of education was the residential schooling system dating back to around 5000 BC, where shisya (student) and guru (teacher) used to reside in the guru's ashram (home) or in close proximity. The word *gurukula* is a combination of the Sanskrit words, *guru* (teacher or master) and kula (family or home). Ashramas or

hermitages were also the similar type of learning centers where students used to stay there to learn from saints and sages. Vidyapeeth was the place of spiritual learning founded by great Acharya. Our **Ancient Nalanda** was a centre of learning from the 5th century common era to 12th century common era. Located in present day Rajgir, Bihar (India), Nalanda was one of the oldest universities of the world and UNESCO declared the ruins of Nalanda Mahavihara, a world heritage site.India has the second largest population in the world and its education system is unique and sacred in the world since its inception, which enforce the rich Indian culture, history, values, tradition, and customs to its studentsalong with the education (Knowledge). After independence, the first and second National Education Policy in India came in 1968and 1986. The National Policy on Education, which brought in 1986, was somewhat modified in 1992 as well.

In the year 2020, the third National Education Policy (NEP 2020), was brought and being implemented by the government of India [1]. The National Education Policy of India was approved by the Union Cabinet on 29 July 2020, whose main objective is to universalize education from pre-school to secondary level [5].

India is home to the largest population of 287 million illiterate adults in the world. This is 37% of the global total. India's literacy rate has increased six times since independence. Although the literacy rate has increased from 12% in 2001 to 74% in 2011, India still has the world's largest population of illiterate adults. After independence of India in 1947, two education policies came in 1968 and 1986[[2],[3],[4]]. In the year 2020, the third National Education Policy is being implemented by the Government of India.The National Education Policy (NEP 2020), took over the years old education policy with the aim of strengthening the Indian education system, bringing transformation and holistic as well integrated development in education [5]. Different countries adopt different education systems considering its tradition and culture and to make it effective, schools and colleges adopt it at different stages of education.B. Venkateshwarlu(2021, Feb)[6] pointed out in his paper that, the government has also made it clear that no one will be forced to study any particular language. Sunil Sondhi (2021, May) [7] has discussed the science of language and soul within Indian culture. Here, the need to harness the connective potential of practical language is identified to address many communication problems in interpersonal and intercultural relationships. Sawant and Sankpal(2021, Jan) [8] discussed the background and genesis of NEP in his paper.In another paper, Eric Moses Gurevich(2021), [9]throws extensive light on the systematic knowledge available in the eleventh century.

2. Scientific and Technical Knowledge vs Indian Languages

The languages spoken in India belong to different language families. Majority, the languages spoken by 78.05% of Indians are Indo-European languages and the languages spoken by 19.64% of Indians are Dravidian languages. According to Wikipedia [10], Languages of India (2022) Both the languages are collectively known as the Indian languages. It has been observed that the human mind is accustomed

to thinking in its own languagesincechildhood.He is more receptive to communication in his own regional language. Teaching in regional languages acts as an inclusive and language can be a catalyst for inclusive development. The goal of inclusive governance can be easily achieved by removing the existing linguistic barriers.In this paper, various questions have been depicted in this context through questionnaire. A questionnaire-based survey was conducted by the authors during 2019-2020 and 2020-2021 to study the availability of scientific and technical glossariesand awareness among students/professionals. The total number of participants in this sample is 2586 and in them the total number of questions related to Hindi language and Commission for Scientific and Technical Terminology (CSTT) along with general questions are 72.

The two basic and important questions for this analysis are gender ratio and age group of the respondent. The ***table-1*** and ***table-2*** represents the frequency distribution of these questions.

Table 1: Respondent Gender wise Data

What is your Gender?					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	**Female**	1179	45.6	45.6	45.6
	Male	1405	54.3	54.3	99.9
	Prefer not to say	2	.1	.1	100.0
	Total	2586	100.0	100.0	

Table 2: Respondent Age wise Data

What is your Age Group?					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
Valid	**Above 60 years**	49	1.9	1.9	1.9
	Below 40 years	1713	66.2	66.2	68.1
	Between 40 - 50 years	622	24.1	24.1	92.2
	Between 50 - 60 years	202	7.8	7.8	100.0
	Total	2586	100.0	100.0	

As the response received from respondent, we find that in this questionnaire, 45.6 percent were female and 54.3 percent were male. Also, It was found from the questionnaire that among the participants who filled this questionnaire, 66.2 percent of the participants are from the age group of 18 to 40 and 24.1 percent of the participants are from the age group of 40 to 50. The rest of the participants are above 50 years of age.

3. Data Analysis

The main objective of this paper is to find the use and availability of glossaries in scientific and technical stream. Also, this paper highlights students' awareness about the CSTT, which is the authorized organization to prepare standardized scientific

& technical glossaries. This paper also highlights the view of respondents for taking education at different levels in their mother tongue.A questionnaire-based survey developed by the authors was used in this study. A total of 2586 participants' responses have been received after circulating the questionnaire. The following questions were asked to check the awareness of the students about scientific and technical terminology in Indian languages.

1.	Are you aware that CSTT is the only Authorized Organization to prepare Standardized Scientific and Technical Glossaries in all 22 Indian Languages?
2.	"Are you aware that CSTT publishes Comprehensive Glossaries of Technical Terms in English -Hindi and Vice-Versa?"
3.	"Are you aware that CSTT publishes Subject wise Glossaries in all Indian Languages?"
4.	"Are you aware that CSTT publishes Subject wise Definitional Dictionaries in Hindi?"
5.	"Are you aware that CSTT has published more than 50 Reference Books in Hindi?"

In this context ***table-3*** represents the respondent awareness regarding the CSTT's Standardized Scientific and Technical Terminology.

Table 3: Respondent Awareness about Standardized Scientific/ Technical Glossaries

1. Are you aware that CSTT is the only Authorized Organization to prepare Standardized Scientific and Technical Glossaries in all 22 Indian Languages?				
	Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
No	1256	48.6	48.6	48.6
Yes	1330	51.4	51.4	100.0

Here 51.4 percent of the respondents are aware that CSTT is the only authorized organization to evolve and prepare standardized scientific and technical glossaries in all 22 Indian languages. We also found that 48.6 per cent of the respondents are not aware of this fact.As we said that CSTT is the only authorized organization of the Central Government to prepare standardized scientific and technical terminology in all 22 Indian languages and all subjects. In addition, to that CSTT brings out various other publications such as text books, reference books, monograph, etc in Hindi and all other Indian languages.

Table 4: Respondent Frequency Data for Comprehensive Glossaries of Technical Terms

2. Are you aware that CSTT publishes Comprehensive Glossaries of Technical Terms in English-Hindi and Vice-Versa?					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	No	1156	44.7	44.7	55.0
	Yes	1163	45.0	45.0	100.0

Table 5: Respondent Frequency Data forPublication of Subject wise Glossaries

3. Are you aware that CSTT publishes Subject wise Glossaries in all Indian Languages?					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	No	1209	46.8	46.8	55.0
	Yes	1163	45.0	45.0	100.0

Table 6: Respondent Frequency Data forPublication of Definitional Dictionaries

4. Are you aware that CSTT publishes Subject wise Definitional Dictionaries in Hindi?					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	No	1240	48.0	48.0	55.4
	Yes	1154	44.6	44.6	100.0

Table 7: Respondent Frequency Data forPublication ofReference Books

4. Are you aware that CSTT has published more than 50 Reference Books in Hindi?					
		Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
	No	1412	54.6	54.6	62.0
	Yes	983	38.0	38.0	100.0

These questions asked as series of questions based on CSTT standardized scientific and technical terminology, CSTT publishes a comprehensive glossary of technical terms English-Hindi and Hindi-English, 45 percent of the answers to the question have been received asYES, while 44.7 percent of the answer have been received asNO and given in ***table-4***.In another question that "*CSTT publishes subject wise glossaries in all Indian languages*", 45 per cent answered YES, while 46.8 per cent answered NO. The data for the answer to this question is shown in ***table-***

5.The next question in the series of questions was asked "*Does the CSTT publish a subject wise definitional dictionary in Hindi*". In answer to this question, 44.6 percent answer YES while 48.0 percent answer NO as shown in ***table-6***. Another question based on CSTT Standardized Scientific and Technical Terminology asked "*CSTT has published more than 50 reference books in Hindi*" Did you know? In answer to this question, 38 percent answer is YES while 54.6 percent answer NO as shown in ***table-7***. The comparative analysis of all these glossaries-basedquestionsis shown in ***Figure-1*** below,

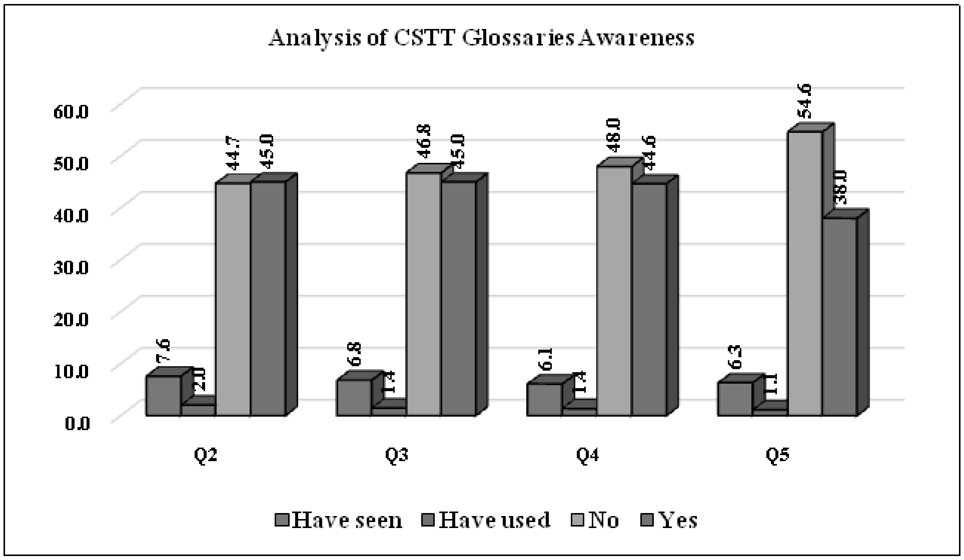

Figure 1: Comparative Analysis of CSTT Glossaries based Questions

4. Medium of Instruction Analysis

The role of mother tongue is very important in our life for attaining knowledge. The understanding of any student in his mother tongue is more as well comprehensive as compared to any other language. In the present scenario the medium of instruction in all most all the higher education institution is in English, that definitely put a barriers for gaining the knowledge to the student's who is not comfortable enough with English. Here, 4 questions related to it have been asked which are given in ***table-8*** and their data analysis are mentioned through following ***table-9*** to ***table-12***.

Table 8: Medium of Instruction Based Questions

4. "In your view, Medium of Instruction in Primary Education should be"
5. "In your view, Medium of Instruction in Secondary Education should be"
6. "In your view, Medium of Instruction in Higher Education should be"
7. "In your view, Medium of Instruction for Professional Education should be"

Table 9: Respondent View for Medium of Instruction in Primary Education

6. In your view, Medium of Instruction in Primary Education should be					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
	English	256	9.9	9.9	9.9
	Hindi	612	23.7	23.7	33.6
	Mother Tongue	1132	43.8	43.8	77.3

Table 10: Respondent View for Medium of Instruction in Secondary Education

7. In your view, Medium of Instruction in Secondary Education should be					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
	English	672	26.0	26.0	26.0
	Hindi	873	33.8	33.8	59.7
	Mother Tongue	316	12.2	12.2	72.0

Table 11: Respondent View for Medium of Instruction in Higher Education

8. In your view, Medium of Instruction in Higher Education should be					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
	English	1123	43.4	43.4	43.4
	Hindi	978	37.8	37.8	81.2
	Mother Tongue	176	6.8	6.8	88.1

Table 12: Respondent View for Medium of Instruction in Professional Education

9. In your view, Medium of Instruction for Professional Education should be					
		Frequency	**Percent**	**Valid Percent**	**Cumulative Percent**
	English	1270	49.1	49.1	49.1
	Hindi	911	35.2	35.2	84.3
	Mother Tongue	167	6.5	6.5	90.8

The information obtained from the data obtained shows that in primary education, 43.8 percent respondents believe that primary education should be in mother tongue and 23.7 percent respondents believe that primary education should be in Hindi. In secondary education, for the medium of instruction, 33.8 percent respondents believe

that secondary education should be in Hindi.For the medium of higher education, 43.4 percent of the respondents believe that higher education should be in English while 37.8 percent of the respondents are in favour of keeping higher education in Hindi.

In the present scenario, the trend of professional education has increased a lot due to technological development. For the medium of professional education, 49.1 percent of the respondents believe that professional education should be in English. Here, the respondents opting for higher percentage of English medium perhaps keeping in view the opportunity of placement in the jobs.The comparative analysis of the medium of instruction at different levels is shown in the***Figure-2*** below.

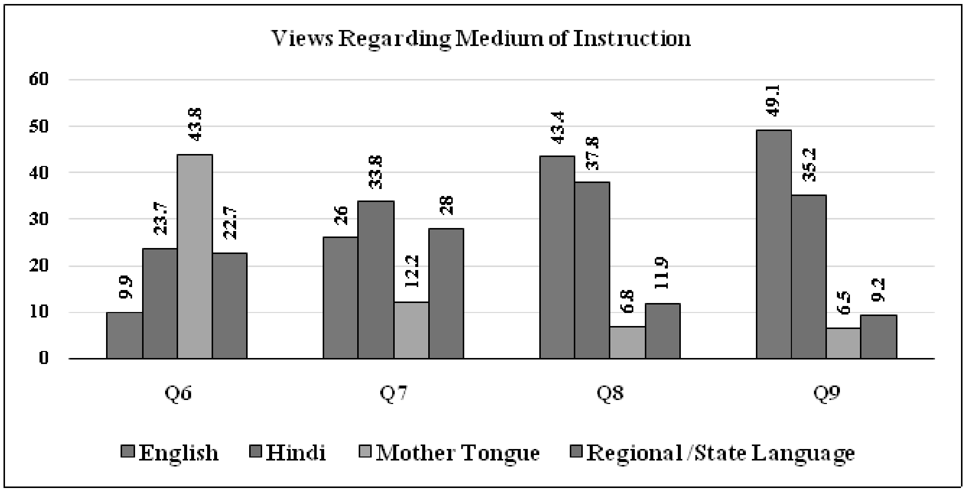

Figure 2: Frequency Data of Questions based on Medium of Instruction

5. Key Findings

It's worthwhile to mention that overall 2586 respondents have submitted the responses from all over India as based upon a questionnaire design and developed for the said purposes. It has been noted that 66.3 percent of the respondents who took part in responding to this questionnaire came from the age group of 18-40 years and 45.6 percent of the respondents were women and 54.3 percent were men. On the other hand, the respondent population belong to as many as 25 different mother tongues groups. The data analysis shows that there are 1296 respondents whose mother tongue is Hindi and the rest population are related to various other mother tongues.Our study reflect that 70.7 percent respondents has suggest to have primary education in mother tongue and 74.3 percent respondents wishes to have study material, text books, reference books etc. in Indian languages along with their English version.

6. Conclusion

Indian education system is found to be very strong system and on the basis of the knowledge the Indians are well placed not only with in country but worldwide. Indian has shown their strength to the worldand they are welcome everywhere in world. On the other hand, English being internationallanguage cannot be ignored at any level but its use in teaching learning and within country can be limited. This will definitely give rise to the Indian languages and multiple increases in knowledge and understanding of the students and efficiently of population shall also be increased. India to become a developed country it shall be very much essential that we all should implement the NEP 2020 is true sense and spirit. Knowledge and understanding shall make us perfect person rather than knowing many or any specific language. Indian languages rises only if we use the Information Communication Technology (ICT) extensively and Public Private Partnership (PPP) be added in to the government efforts or initiatives.On the basis of this study we authors are very much sure that on implementing NEP 2020 and to provide the opportunity to get education through Indian languages then itwill change the scenario in our education system of India.

Reference

1. Wikipedia contributors. (2022, July30). National Policy on Education. In *Wikipedia, The Free Encyclopedia*.Retrieved06:07, August 15, 2022,https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=National_Policy_on_Education&oldid=1101401031
2. National Policy on Education, 1968, Retrieved 06:07, August 15, 2022,https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/NPE-1968.pdf
3. National Policy on Education, 1986-1992, Retrieved 06:07, August 15, 2022,http://education.nic.in/policy/npe86-mod92.pdf
4. Journey of National Policy of Education 1968, 1986 and 1992,Retrieved 06:07, August 15, 2022, https://www.examrace.com/Current-Affairs/NEWS-Journey-of-National-Policy-of-Education-1968-1986-and-1992-Implemented-in-2005.htm
5. National Policy on Education 2020, Ministry of Human Resource Development Government of India, https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

6. B. Venkateshwarlu (2021, Feb). Critical Study of Nep 2020: Issues, Approaches, Challenges, Opportunities and Criticism. *International Journal of Multidisciplinary Educational Research*, **10**(2:5),191-196, ISSN: 2277-7881.
7. Sunil Sondhi (2021, May). Science and Spirit of Language in Indian Culture. *Kalakalpa, IGNCA Journal of Arts*, **V**(2), Indira Gandhi National Center for the Arts,1-23.hal-03225767
8. Rupesh G. Sawant and Umesh B. Sankpal (2021, Jan). National Education Policy 2020 and Higher Education: A Brief Review.*International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, **9**(1),3456-3460, ISSN: 2320-2882.
9. Eric Moses Gurevitch (2021). The uses of useful knowledge and the languages of vernacular science: Perspectives from southwest India. *Sage Journal of History of Science*, **59**(3),256-286, doi.org/10.1177/0073275320931976.
10. Wikipedia contributors. (2022, August 14). Languages of India. In *Wikipedia, The Free Encyclopedia*. Retrieved 07:10, August 15, 2022, from https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Languages_of_India&oldid=1104318811

Department of Mathematics,
SRMS College of Engineering and Technology, Bareilly, India
Email: dranju20khandelwal@gmail.com

*Department of Mathematical Sciences & Computer Application
Bundelkhand University, Jhansi, India
Email: dravanishkumar@yahoo.com

Research Article

Role of Hindi in The Resurrection of National Consciousness

–Dr. Chetna Sharma

Abstract:

The national language of any nation is the salient factor behind the cultural evolution, civilization and national consciousness of that country. It has the capacity to keep people united from different geographical areas and states with the same belongingness. It arouses feelings of patriotism and nationalism in their hearts and provides them with an opportunity to know traditions and customs of the people who live in other states. Hindi is derived from the world's most scientific language Sanskrit according to the scientists of United States of America. Few divine source theories have been associated with it. In the absence of a national language, the problem of identity crisis and inferiority complex may be cropped up among its people. That can be overcome only by decolonising the adverse impact of colonizers from the minds of people. Resurrection of the national language can be attained through the retrospection of the glorious past of India. Endeavours must be done to accelerate the use of Hindi. Translation of literatures written in Indian vernacular languages in Hindi will be an emphatic step towards it. India can enrich the knowledge of the world with its vedas and yoga.

The national language of any nation is the salient factor behind the cultural evolution, civilization and national consciousness of the country. It is intrinsically associated with the identity of a nation and with its people. The idea of a "nation" has been legitimized throughout history partly based on its people who share the same language. A particular community speaking same language shares it's customs, values and traditions with its people. It has its own beliefs. In past, language was the main medium to transfer orally customs and traditions of the community from generations to generations. When people were illiterate, they used to teach values and morals to the younger generation

through the medium of their language.

It takes on a very vital role in uniting people living in different states in India. Indeed, it is the main driving force behind the unity of people in a nation. One single call is enough to make them feel “One”. Just like “Vande...... Matram”, “Bharat Mata ki......Jai .”

Even the way of living life and worshipping of deities are possible only through the language of the society. These are mentioned in our age old Upanishads and in Vedas. In nutshell, literature of a language preserves the cultural heritage and it imparts an opportunity to others to know and trace the history of the civilization from a close quarter.

Hinduism is not a religion but a way of living life. The soul of Hinduism can be known only through the national language of Bharat i.e. Hindi. Indians (we) must feel proud to be Indian as a part of the ancient religion in the world.

The ability of the national language to create unity among strangers from different states is a unique one. People from different ethnic groups cannot be united if they don’t understand one another.

It makes people feel that they have the same background and there is no difference among them. It binds them together in a way that nothing else could.

It has a capacity to arouse a feeling of “Patriotism” in the citizens. Playing or singing the national anthem instills patriotism even in a group of strangers and it lets them surface their nationhood. Therefore, the act of singing the same national anthem at the same time is enough to create “togetherness”. It can be a source of nationalism.

Using the national language for all the purposes including academics too solidifies the nation as it helps to develop a feeling of “sameness” and creates national consciousness in the citizens of a country.

It provides different ethnic groups with an opportunity to know the traditions and customs of other ethnic groups. Consequently, a possibility to bring different ethnic groups closer is emerged that binds all groups with a rope of national consciousness. It also encourages social intercourse in the groups.

Indians must feel proud over their national language that has been derived from the world’s most scientific language Sanskrit according to the scientists of the United States of America. Rick Briggs submitted his research entitled “Vedic Science - Knowledge Representation in Sanskrit and Artificial Intelligence.”

Few divine source theories are associated with the origin of the Hindi language. It is believed that Goddess Saraswati blessed Indians with Hindi language. Whereas according to the other divine source theory alphabets of Hindi grammar emerged from the musical instrument “Damru” of lord Shiva.

National language of a nation is the identity of its people. It builds up confidence and shapes the thoughts. It is also found very easy and simple way of expression and makes complicated concepts intelligible to understand. As a tree cannot grow more if, it is cut down from its roots. In the same way, a country cannot be prosperous and develop if its people suffer from inferiority complex while using national language.

It may lead them to the problem of identity crisis. Subsequently, youth may be gripped by the confusion and may lack confidence.

Identity of a person includes his or her personal characteristics and encompasses who he or she is physically, mentally and in relationships. The social roles he or she plays is also a part of his or her identity. Other aspects such as unique memories and interpretations of them, values and long-term goals to be pursued assist to form the identity of the people. It may happen at any stage of life when people find themselves in a significantly different situation or role.

The Hairy Ape" a play written by Eugene O'Neill probes not only into the the nature of man in the society but also into the nature of being. The protagonist Yank desperately longs to belong and to find his place in the universe.

Shaken naive confidence heightens the identity crisis and such people make futile efforts for their quest to find a suitable place for themselves in this world. The National language assists people to overcome the problem of identity crisis.

A famous verse from Sage Panini's Ashtadhyayi says that the present grammar was actually graced by lord Shiva himself. He created the language and blessed human beings with it.

Adverse from Sage Panini's Ashtadhyayi -
"At the end of his Cosmic Dance,
Shiva, the Lord of Dance".
With a view to bless the sages Sanake and so on,
played on his Damru fourteen times,
from which emerged the following fourteen Sutras,
popularly known as Shiva Sutras or Maheshwar Sutras".

Maheshwara Sutras is also known as the"akshara-samamnaya" that is actually combination or series of fourteen sounds. That are -

1. अ इ उ ण
2. ऋ लृ क
3. ए ओ ङ्
4. ऐ औ च
5. ह य व र ट्
6. ल ण

7. ञ म ङ ण न म्
8. झ भ ञ्
9. घ ढ ध ष
10. ज ब ग ड़ द श
11. ख फ छ ठ थ च ट त व
12. क प य्
13. श ष स र
14. ह ल

These sounds originated from the "Damru" of lord Shiva.

Unfortunately, the impact of colonization is still visible in India especially in the

young generation. People speaking Hindi in public domain are considered orthodox, rural and inferior to the people who are fluent in the coloniser's language.

People flaunt in adopting lifestyle and dressing sense of colonizers.

They hesitate to greet others in Hindi. This conventional way of greeting in Hindi has been replaced by saying "hello" in English with a feeling of pride. This sense develops a sort of sophistication and gratification in them.

Unlike some Hindu religious people, some people even feel ashamed in joining their hands in the honour of deities in the front of Hindu temples.

A feeling of inferiority complex and a feeling of shame has been instilled in some of the people due to adverse effect of colonisation.

Now people must decolonise their minds by learning the importance and history of their national language. They must know that their language is not subject to their insult.

India is a country of diversity where multiple languages are spoken in its different states by its people. Each language has its own literature enriched with its customs, traditions , values and beliefs. Literature of a language opens the whole world of that people for others and imparts an opportunity to acquaint their culture. It generates fraternity and brotherhood between two different cultures. It plays a role of bridge between people of two different ethnic groups who speak different languages and it brings them close to each other.

Literatures written in different vernacular languages of India can be rewritten or translated into Hindi.Endeavours must be done in this direction to enrich Hindi literature

Geetanjali of Rabindranath Tagore was first writer in Bangla language one of his India's vernacular language but later on it was translated into English and other languages of India. Many more works are also rewritten or translated into Hindi. English is a language that was introduced formally by Thomas Macaulay in India.In "Minutes on Education" in 1834, he says -

"... from a class who may be interpreters between us and the millions that we govern: a class of persons Indians in blood and color but English in taste, in opinion, in morals and in intellect.

It resulted into superiority of English over other languages of India encompassing Sanskrit and Hindi especially. Moreover, the English language was used as a political instrument by the colonizers. Gradually, it was forced to use in social and cultural domain with the intention to produce a class of Indians who would identify and align themselves with the British or colonizers and with a western worldview. Thus, this class became the natural inheritors of power after the British left India. The function and the role of the English language in the course of time assumed different dimensions creating a gulf between English speaking and non - English speaking Indians.

Colonizers began with their intentions to instill inferiority in Indians for their colour, culture, education, language etc. Thus, they prepared a background to impose their language upon Indians.

Ngugi Wa Thiong'O in "Decolonising the Mind: The Politics of language in African Literature, published in 1986, emphasised the internalisation and institutionalisation of cultural imperialism through language. Eventually, he decided to stop writing in English and thenceforth embraced only "Kiswahili" and "Gikuyu", his native languages. He evolved the intrinsic link between culture, language and ideology. According to him the colonisers' language is not only a medium but also it involves the internalising of the logic, ideology and culture of colonisation itself. He suggests the answer "the chalk and the blackboard" of the question "the sword and the bullet" .

He says -

" To control a people's culture is to control their tools of self - definition in relationship to others . (p.16)

Through the English language policy, introduced by Thomas Macaulay British undervalued Indian culture and language. They strove to impose their language and culture upon Indians.

Although Indian minds can be decolonised by turning to nationalism, to traditions or to an anti - West sentiments . Namvar Singh in his essay "Decolonising the Indian Minds " , suggests to make a global network of resistance along with the many anti - imperialist individuals groups who have expressed their disagreement with colonialism and imperialism.

Further, he says any tradition that opposes colonisation must be reconstructed as "the rediscovery of the past by the present as desired" according to the needs of the present.

The word Veda means knowledge. These are the most sacred Hindu scriptures written in Vedic language that are also termed as Sruti. It is believed that Vedas are increased, eternal and exists as sound syllables. Incantation, rituals and hymns in Vedas provide mankind not only with the spiritual values but also with the values for everyday life.All the four Vedas Rig, Som (Sarna), Yajur and Atharva vedas contain information on multiple aspects of arts, crafts, science and engineering.

The Vedas contain all fields of knowledge both spiritual and material. They encompass Mathematical, Medicinal, Architectural, science, study of Space and Military related information, Agriculture, Chemical Sciences, Metallurgy, Legal system, Astronomy, Cosmology, Environmental Science, Philology and Women Seers.

Our Vedas bring out the truths, contents, facts and the merits of the Indian literature. They depict the heritage of our nation.

Endeavours must be made to show the world the glorious scientific, rational and logical heritage of our country. We must spread this prolific information across the world and acquaint the world with the real India and real heritage of India.

During pandemic COVID 19 the world had acknowledged the benefits and importance of Yoga that has been mentioned in the Veda , in day today life .How I is useful not only in keeping human body fit and healthy but also in healing some chronic diseases . It also very beneficial in the prevention of some diseases.

Although the knowledge related to all fields was not present but many things

pertaining with technology, science, integrated life management, spiritual knowledge, psychological knowledge and so on available in ancient India.

Every Indian must feel proud of his national language, derived from the world's scientific language. It has capacity to unite all the natives irrespective of their religions, castes, gender, social and economic status and to decolonise the impact of colonisation. It can around a feeling of patriotism and nationalism. It has a record of glorious past of India.

Using Hindi our national language is not a subject of humiliation and hesitation but of proud. It takes on a significant role in the resurrection of national consciousness.

Bibliography

1. https://iish.org/about-iish/
2. https://vedicheritage.gov.in/science/#:~:text=VEDAS%20AS%20BASIS%20FOR%20SCIENCE&text=The% 20Vedas%20have%20science%20as, to%20those%20of%20modem%20scientist
3. https://www.ndtv.com
4. https://www.nasa.gov goddard s.
5. MEG -04, Block -1, IGNOU study material.
6. Ngugi Wa Thiong'O, "Decolonising the Mind: The Politics of Language in African Literature", Zimbabwe Publishing House, James Curry London, Heinemann Kenya, Nairobi.
7. Neeta Raina, "The Sanskrit Alphabet Sequence - Maheshwara Sutra" Rig Veda, Sanskrit.
8. https://vediccafe.blogspot.com
9. Kiana Rezakhanlou, "Language & Nationalism: One Nation,One Language?", Babel The Language Megazine , November 2018.

References

1. Ngugi Wa Thiong'O, "Decolonising the Mind: The Politics of Language in African Literature" , p.no. 16

'

Department of English
Swami Shraddhanand College
University of Delhi
Delhi-110036

Research Article

The power of language in Rudyard Kipling's selected poems

–Shirsak Ghosh

Abstract:

Rudyard Kipling was an English novelist and a short story writer. Apart from being such an experimental writer, he is a renowned and acclaimed poet of his time. His punctilious language of word choice is far more among the best of his time. His diligence lies in handling simple words with an enthusiastic spirit that uplifts the audience. Some of his poems are based on symbolism. His meticulous style of handling language over the lines contains humongous effects to all sorts of lovers of his poems. His essence of poetry gives us a magnificent diligence over the world. Some of his poems are simple enough and provides the images of day to day experiences of life within all the vistas of the world. In this paper, the researcher would like to focus on careful and diligent way of how Rudyard Kipling had written his poems that provides an image of alacrity and eagerness to readers of all taste around the globe. It will certainly be a life processing experiences over the lovers of language.

Keywords: language, audience, poems, life and globe

Rudyard Kipling was a Nobel Prize awardee for his outstanding contribution in the field of literature. A stalwart in his own times, he has written numerous short stories, outstanding novels and fantabulous poems for all the lovers of literature. Rudyard Kipling had written several numbers of poems and in this paper, the researcher has selected few of his poems that provide an image of ardor and fervor towards the readers.

The research question that enhances in this article is: - What strikes the readers mind the languageof Kipling's poems? What are the core areas of language studies in Kipling's poems? What thrust the mind of individuals about modern language in Kipling's poems?

Rudyard Kipling's poem, 'If—' stands as the Bible of positive vibes for all learners of ages. His embellished language in the poem provides a motivating charm and thus enhances the glow of enthusiastic spirit. His benignity to self and advising the self to work hard with diligence and integrity provides a mark of buoyancy. His championship spirit upon the readerin profuse and breath-taking beautiful language in literature provides an image of alacrity. An ideal human being is presented through this poem by the words of poet Kipling to his son on the subject of the threshold of life. Most of the times, the language used in the poem is optimistic and energetic. The audience becomes rhapsodies by the violent use of cheerful and heart-provoking words.

"If you can keep your head when all about you
Are losing theirs and blaming it on you"

echoeswith Bengali KabiGuru Rabindranath Tagore's song, "Jodi tor daaksunekeunaashetobeeklacholo re"

The poem 'If—' was published in Rewards and Fairies. Kipling wrote in his autobiography the following lines that perfectly suits the ambience of the poem:

Among the verses in *Rewards* was one set called 'If–', which escaped from the book, and for a while ran about the world. They were drawn from Jameson's character, and contained counsels of perfection most easy to give. Once started, the mechanization of the age made them snowball themselves in a way that startled me. Schools, and places where they teach, took them for the suffering Young – which did me no good with the Young when I met them later. *('Why did you write that stuff? I've had to write it out twice as animpot.').*They were printed as cards to hang up in offices and bedrooms; illuminated text-wise and anthologized to weariness. Twenty-seven of the Nations of the Earth translated them into their seven-and-twenty tongues, and printed them on every sort of fabric.' (*Something of Myself* page 146)

The poem 'The Glory of the Garden' was first published in A History of England by C.R.L. Fletcher and Rudyard Kipling (London: Henry Frowde and Hodder& Stoughton, 1911).In the poem, 'The Glory of the Garden', the poet refers to the country England as a garden. Kipling uses simple language to describe the beauty of England. Some statues of peacock in the garden signify the riches in the society. The lines "Glory of the Garden" is described straightforwardly without any labyrinthine design. There is a repetition of the words in a large number of times because every time the meaning signifies in different context. Yet, it praises England and describes its enormous glory in each and every lines of the poem.

Oh, Adam was a gardener, and God who made him sees
That half a proper gardener's work is done upon his knees,
So when your work is finished, you can wash your hands and pray

In the eight stanza of the poem, we turn up to the Old Testament of The Holy Bible where we find the character of Adam, the first creature of the universe. In Kipling's poem, "Glory of the Garden" God gave Adam the responsibility of the gardener to look after the garden of England. After his work gets complete, he can

pray solitarily for the betterment of the nations.

In the context of Ferdinand de Sassure's Semiotics, if we take the linguistic example of the word 'Garden' as a sign; then it will definitely compose of a signifier, the form which the sign takes place. This Garden could be an open space where trees are put in large number and the signified which represents the concept of the garden is described.

Philippine American war is the major theme of Kipling's famous poem 'The White Man's Burden.' It was published in The Times London in the year 1899. Imperialism is a major aspect that lies in this poem. Kipling begins with a striking line at the beginningof the poem:

"Take up the White Man's burden-"

The White Man is to be taken as a burden from the opening lines. By the word burden, we can find that the White Man has lots of responsibilities to encounter with.If we take language in perspective, we can get in tunes with the word imperialism in context and in this reference.We can discuss how the white audience has to perform the herculean task that requires hard work and patience.

The curious thing is that whatever judgment we make of him, as an artist, as a technician, as a thinker, as an Imperialist-it has nearly all been said before. The first serious consideration of his work was a long article of about 900 words in The Times of March 25, 1890. It is, of course, unsigned, but the tone of it leaves no doubt of the warm admiration that prompted it. The seven early books, both stories and verse, are treated, and they are di vided into three classes, dealing with Simla society, or with the Eurasians, and with the Tommies. The last tales are especially praised for their discovery of Tommy Atkins as the hero of realistic romances. The article ends with a caution: "... it is to be hoped he will not write himself out. Modern magazines and their eager editors are a dangerous snare in the way of a bright, clever and versatile writer, who knows that he has caught the public taste."
- H.L. Varley

In the poem, 'Mother o' Mine', the poet describes his strong and passionate feelings towards his mother. Whenever the poet remains at wit's end and cannot make two and two together, the poet remains hopeful that his mother is there for him. At the threshold of Life's turbulence when no one can be there for the poet as a supporting guide, the poet's mother would be a friend, philosopher and guide. The supreme help from the mother acts as a fighting spirit for the poet. Here, he can enliven things amidst all the turmoil that Life throws at them.

The line *"Mother o' mine, O mother o' mine!" is repeated six times in the poem. It signifies the importance of mother's aspect of life for the poet. We also note the word choice "mother o' mine" chosen by the poet Kipling. It helps us understand how a mother can protect his or her child from all the*

difficult times of Life. The language chosen by Kipling is lucid and simple and there are no difficult words to grasp together in the poem.

Geoffrey Amis writes:

It is believed by some critics that in addition to Balestier's view, Alice Kipling, the author's mother, pressed him to go for a happy ending, which Kipling himself genuinely regretted. This tends to be the view of this Editor, and is borne out by the emphatic prefatory note at the head of the Standard Edition:

> This is the story of The Light That Failed as it was originally conceived by the writer.
>
> However, the Dedicatory poem 'Mother o' Mine, O Mother o' Mine' suggests that in insisting on the 'sad' ending Kipling felt some guilt at having betrayed his mother's wishes.
>
> -The Kipling Society

The poem *To the City of Bombay* is dedicated to The Seven Seas. Here, the poet is thankful to be born in the city of Bombay and is praising about the history, the ships and its business. The poet is proud of being living in the city of Bombay during his young day and he could reflect all his feelings penned through the poetic lines:

"Comfort it is to say:
Of no mean city am I!"

The language of the poem is overtly to the point of the city of Bombay. There are no juggleries of words written in the poem. The poet had directly reflected the city of Bombay during the stay of Kipling's time.

"And yet, one cannot neglect it even here, for no external influence has touched Kipling more deeply if he had not been in Bombay."

- Michael Lackey

Thus, the power of language in Rudyard Kipling's selected poems thrust an essence of effervescence through the nooks and corners of the world. His unique choices of words weredown to earth and exquisitely simple. Most of the readers can relate to his language of his poems from the core of his heart.

Bibliograpjy

Baldwin, Emma. "The Glory of the Garden by Rudyard Kipling".*Poem Analysis*, https://poemanalysis.com/rudyard-kipling/the-glory-of-the-garden/. Accessed 10 January 2023.

Chandler, Daniel. "Semiotics for Beginners".Semiotics for Beginners Contributors. 8th Jan, 2019. <https://www.cs.princeton.edu/~chazelle/courses/BIB/semio2.htm#:~:text=If%20we% 20take% 20a%20 linguistic,shop% 20is% 20open% 20for%

20business.>

Holberton, Philip. “Mother o’ Mine”.The Kipling Society. 15 March 2012.

Kipling, Rudyard. “If—”.The Kipling Society. (n.d.)<https://www.kiplingsociety.co.uk/poem/poems_if.htm>

Kipling, Rudyard. “Mother o’ Mine”.Poets.Org Contributors. (n.d.) <https://poets.org/poem/mother-o-mine>

Kipling, Rudyard. “Something of Myself”.Internet Archive Contributors. 191. <https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.525263/page/n207/mode/2up?q=Jameson%27s+character> Accessed 20 January 2023.

Kipling, Rudyard. “The Glory of the Garden”.The Kipling Society. (n.d.)<https://www.kiplingsociety.co.uk/poem/poems_glorygarden.htm>

Kipling, Rudyard. “The White Man’s Burden”.The Kipling Society. (n.d.) https://www.kiplingsociety.co.uk/poem/poems_burden.htm

Kipling, Rudyard. “The White Man’s Burden Summary & Analysis”.LitCharts (n.d.) <https://www.litcharts.com/poetry/rudyard-kipling/the-white-man-s-burden>

Kipling, Rudyard. “To the City of Bombay.”The Kipling Society. (n.d.) <https://www.kiplingsociety.co.uk/poem/poems_cityofbombay.htm>

Lackey, Michael. “Kipling’s Poems.”*Journal of Modern Literature*, vol. 30, no. 3, 2007, pp. 12–30. *JSTOR*, http://www.jstor.org/stable/30053131.Accessed 21 Jan. 2023.

Tabor, Alan, and Kipling, Rudyard. The Glory of the Garden. United Kingdom, Alan Tabor, 1929.

Tagore, Rabindranath. “Lyric and background history of song Jodi Tor DakShune”.Geetabitan Contributors. 2008. <https://www.geetabitan.com/lyrics/J/jodi-tor-daak-shune-lyric.html>

Varley, H. L. “Imperialism and Rudyard Kipling.” *Journal of the History of Ideas*, vol. 14, no. 1, 1953, pp. 124–35. *JSTOR*, https://doi.org/10.2307/2707499.Accessed 21 Jan. 2023.

State Aided College Teacher
Department of English
Serampore Girls’ College

Research Article

The status of the English language in the wake of NEP2020

–Vandana Gaur Vashisht

Abstract:

In the reference to language, NEP2020 has brought out a lot of concern about how English as a language of communication will be looked upon by the school education system. In the past decade, it has taken a prominent place in Education. Many measures were taken to develop the communication of our students in English which holds a promising future. After the implementation, the medium of instruction would be in regional languages for a better understanding of the concept, which might face practical difficulties in developing futureproficiency in the English Language. It is more about the incomplete understanding of the policy. We need to develop a holistic approach to teaching the English language.

Introduction

To begin with the quote of Johanne Wolfgang von Goethe in reference to learning English as a Second Language; says "He who knows no Foreign languages knows nothing of his own."

The development of NEP 2020, creates a confusing state about keeping English as a language in primary education as a language of instruction. In fact, in every policy, it is a matter of debate,about what language should be placed prominently in education. One choice is English which is the language of business as well as the language of communication.the other view is to keep Hindi as a medium of language. However, we are proud Indians who give due respect to our rich language heritage.There is no doubt that all the Vedic knowledge, ancient ritualsand heritage are accessible in Hindi though originally written in Sanskrit. To develop critical thinking skills and conceptual understanding we cannot deny the importance of Hindi. The view is supported by NEP2020 also. Itemphasises the role of multilingualism, aiming to achieve human full potential

and provide quality education.NEP 2020focuses on the mother tongueespecially at the primary stage, questioningthe presence of the English language.

Keywords: Multilingualism, NEP2020, Quality Education NEP 2020

The key overall thrust of curriculum and pedagogy reform across all stages will be to move the education system towards real understanding and towards learning how to learn - and away from the culture of rote learning as is largely present today. The aim of education will not only be cognitive development but also building character and creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st-century skills.

NEP 2020 talks to include experiential learning hands-on learning, and story-telling-based pedagogy, among others, as standard pedagogy within each subject, and with explorations of relations among different subjects. To close the gap in the achievement of learning outcomes, classroom transactions will shift, towards competency-based learning and education.

Multilingualism is the key focus of the national education policy 2020, which has a significant portion highlighting its importance as a way of insuring retention and preventing dropouts.

- As a medium of instruction: Wherever possible, the medium of instruction until at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond will be the home language/ mother tongue/local language/regional language.
- The three-language formula will continue to be implemented to promote multilingualism as well as promote national unity.
- NEP states that there will be greater flexibility in the three-language formula. But no language will be imposed on any State.
- To learn three languages will be the choice of the State,regions, and students themselves, as long as at least two of the three languages are native to India.

The new National Education Policy 2020 promotes Indian languages as a medium of instruction in schools, teaching the young in their mother tongue hoping that it can improve their cognitive language. The long-awaited NationEducation Policy (NEP) 2020 was notified by the Government of India, after the Cabinet nod on 29th July 2020. It lays down a roadmap for transforming Indian Education System and proposes revision and revamping of all aspects of the educational structure for making 'India a global knowledge superpower'. NEP 2020 visualizes universal access and adopts a constructivist approach to school education at all levels pre-school to secondary, reducing dropout and achieving 100 % gross enrolment ratio by 2030. Many of the proposals in NEP 2020 sound well-drawn, progressive and innovative.The New approach plans to clear the way for major ground-breaking changes in school and advanced education frameworks in the country. This arrangement replaces the 34 year-old National Policy on Education (NPE), 1986. The Cabinet likewise endorsed a proposition to rename the Ministry of Human Resource Development as the Ministry of Education. It is said that the new approach is advanced, it is for the 21st century. It expects to make India the worldwide information superpower guaranteeing value, access and consideration. The NEP proposes an "early

implementation of the three-language formula to promote multilingualism" from the school level. The three-language policy leaves it to states to decide on what that language would be. The document says the three-language formula will continue to be implemented "while keeping in mind the Constitutional provisions, aspirations of the people, regions, and the Union, and the need to promote multilingualism as well as promote national unity". However, the NEP also says, there will be greater flexibility in the three-language formula, and no language will be imposed on any State.

D.P.Pattanayak quoted in his article: "Multilingualism can be sustained only if languages are in complementary relation. The world is not only multilingual;it is multi-ethnic, multicultural, multi-religious and biodiverse. What is true of language is true of all multiple structures.

According to MHRD, Govt. of India, now Ministry of Education, the 122 dialects are introduced in two sections: Part A: Languages remembered for the Eighth Schedule to the Constitution of India (Scheduled Languages) containing 22 dialects; and Part B: Languages excluded involving 100 dialects in addition to the classification "Complete of different dialects" which incorporates any remaining dialects and first languages falling under Part B and which returned under 10,000 speakers each at the all-India level or were not recognizable based on the etymological data accessible. Language rights as a subset of basic freedoms in a zone of the world showing specific semantic variety.

Place of English as a Language

In today's global world, the importance of English cannot be denied or ignored since English is the greatest common language spoken universally.If we make a judgement of the importance of the English language in our academic field, we can easily say that it provides a wider canvas to work on it. In the present scenario also, English has become one of the most important academic and professional tools. English is on reorganised as undoubtedly the most important language to learn for the increasingly mobile international community. Moreover, English hasbecome the official language of the business and scientific world. and it is no doubt, English is widely considered predominantly used for writing academic scientific research paperwork.

Federico Fellinifavours the learning of a new language in the form of a second language, when he says, "A different language is a different vision of life".

NEP2020 and Status of English

"Multilingualism and power of language", the NEP states that "wherever possible, the medium of instruction until at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond, will be home language/mother tongue / local language / regional language. Thereafter, the home/local language shall continue to be taught as a language wherever possible".

According to the survey done by Macmillan Education India on merely 932

teachers from the age group 18-50 age bracket to gauge the perspective of ESL (English as a second language) teachers. The survey was done in both rural and urban parts of the country. In this survey sample, 75% were women and 25% were men. The study asked teachers questions on their understanding of the term 'multilingualism'. while 57% of the teachers said that 'multilingualism' means encouraging the use of multiple languages, around 30% said it meant including regional languages along with English in the curriculum and 10% said the term referred to using home languages in an English classroom.

The survey also showcased the possible outcomes of allowing students to use their home language while learning in the classroom. Around 73% said they felt more confident about learning another language. The report presented by Macmillan Education India recommended that home/regional languages need to be welcomed by English Language teachers in classrooms.

However, if we observe closely the scenario of schools where English is taught as a second language, and bilingual as a method, teachers have already adopted to clear the concepts or facts.

Obstacles to the Implementation of NEP

There are a few more concerns for the development of a language, which we need to address. The first roadblock in implementing NEP in regard to language will be providing study material, and books in the languages of the Eighth Schedule of the Constitution grade 1stto the postgraduate level in all streams of education such as Science, Humanities and Commerce.

Providing training and creating a resource persons pool will be a task for educational institutions like NCERT and SCERTs which have the mandate to provide training to In-Service. We need to prepare teachers from school-level to higher educational institutions teachers.

Adding to the woes in the implementation of NEP regarding, regional languages isthe widespread use of English in Information and technology, especially the Internet. Through the Internet, information is spread out across the globe. It brings out social transformation through human development. If English is left out of the system, the point of concern is how well and when the internet can be accessed through regional languages.

How to ensure employment opportunities, is yet another concern. Ludwig Wittgenstein correctly pointed out that if we limit language, we limit the world. The reason, India is ahead of other nations, is the skill of Indians in communication in the English Language. The Indians are able to occupy the best positions in other nations, only because they have proficiency in speaking English like natives. We have a functional approach to learning the English language.Only those who have a command over the English language are given a job in reference to foreign countries.

Adding to that, a child's brain adapts to change new information much easier and faster than an adult's brain. Dr Paul Thompson found out that the brain systems which specialize in learning a new language rapidly grow till Six years. Many types

of research proved that early childhood is the best time to learn a language. If the importance is lopsided towards the mother tongue teaching, the possibility is such that learning English at a later stage would be difficult. We can understand this point by taking examples from the countries where English has been taught at a later stage and by and large at the mercy of the choice of state Policy.we correctly fathom outthe condition of the countries like Japan and China, where it is evident, how barring a global language under Government policy affects the proficiency of its subjects in learning and speaking skills. If we observe the previous decade's data, the Japanese tend to score comparatively poorly on international tests of English. If language skills are not developed at the early stages, students feel difficulty in learning loads of vocabulary, hence discouraging the functionality of the learning language.

"Demotivation can negatively influence the learner's attitudes and behaviours, degrade classroom group dynamics and teacher's motivation and result in long-term and widespread negative learning outcomes." In addition to helping students out with their anxieties, the teacher should also have a good idea about the student's learning strategies and their motivation, in order that he or she can focus on "positive motivations [that] will be helpful to the students in acquiring new information and decrease the effects of negative motivations which can interfere with the student's second language acquisition".

Now in these countries also,the school system's English-teaching regimensare undergoing a major revamp soon as the government tries to nurture more worldly talent in an age of globalization.

The increasing disparity between sections of societypractical difficulties like the availability of qualified teachers proficient in these languages

Conclusion

NEP stress sticking to our roots which are deep in the Ancient Indian Knowledge System and Indian Ethos undermines the Educational system and Pedagogy developed through centuries of researchin the past. It, in fact, does not look forward with a certainvision. It is also an attempt to curtail the application ofmultiple pedagogies and impose a single system on all.It undermines the plurality of the culture of this country and imposes central Indian culture, and language. We need to check whether the system which is evolving would create situations like Japan or China where global language is learnt as a designer language of an elite class.

These developments, however, create doubt about teaching English at the primary level. A big question of replacement stands now.It may widen the gap in English proficiency at a later stage. However, we cannot deny the importance of Hindi, we need to understand the importance of language in today's context. The prospectsin future may dwindle if the executing policy views the suggestion with a narrow mindset.Learning any language need to have a language-rich environment. Schools are already struggling to maintain quality English teachers who can converse in English in classrooms which is crucial in providing exposure to language at least

in the classrooms through teachers. It may shift back from a communicative approach to a translatory method of teaching Englishif the policy is not understood from the right perspective.

While, at a glance, it looks as if NEP 2020 has ignored the importance of English Language Teaching, a thorough understanding of the Policy Guidelines will make it explicitly clear that English will still stand out as an important language in school education. NEP 2020 has given schools the flexibility of deciding on the medium of instruction. It does not prevent the students from learning English, whether from the beginning itself or later.

We need to strike a balance between keeping our roots intact in a way thatIndians would keep their position intact ontheglobal front.

Reference

Engin, Ali Osman (2009). "Second Language Learning Success and Motivation". Social Behavior & Personality 37.8. pp. 1035–1041. Academic Search Complete. EBSCO. Web. 29 November 2009]

National Education Policy 2020.Ministry of Human Resource Development. Government of India

https://www.stjosephuniv.edu.in/gjaecsma/

Dougill, John (2008). "Japan and English as an alien language". English Today

KownerRotem(2003)"Japanese Miscommunication with Foreigners: In Search for Valid Accounts and Effective Remedies". Jahrbuch des DeutschenInstituts für Japanstudien..

Falout, Joseph, James Elwood, and Michael Hood (2009). "Demotivation: Affective states and learning outcomes". System

Gayathri Paliath,(2021),'Scope Of English Language Teaching In National Education Policy 2020'

Sibi. K., J.(2020). English Language Skills through ICT Methods. Sparkling International Journal of Multidisciplinary Research Studies, 3(2), 31-36

Sibi. K., J.(2020). English Language Skills through ICT Methods. Sparkling International Journal of Multidisciplinary Research Studies, 3(2), 31-

❒❒❒

Assistant Professor (School Leadership and Management)
SCERT, Delhi

Research Article

World Literature Today magazine and representation of Hindi

–Ekta Verma

Abstract:

The concept of world literature is a significant, controversial and popular concept that originated in the twentieth century, which proposes literature to be written and read from a global perspective. Focusing initially on German literature, the concept enters the unified world of the colonial era by adopting a humanistic approach and then emerges as a democratic concept by becoming an intellectually common property in the era of revolutions. With the advent of the 21st century, globalization and the formation of the world market, this concept started to emerge as a world demand, in which there is a feeling of global welfare through literature and also an indirect objective of establishing literary-cultural supremacy of powerful cultures with an urge to create market capital.

The WLT magazine has two major parts, the first one containing analytical articles related to world literary debates etc. and the second part containing reviews of contemporary published books. The literature of India makes its presence felt in both categories, although in terms of abundance, book reviews have been published more than independent analytical articles.

WLT magazine published its first article on Indian poetry in 1939, featuring writers such as Rabindranath Tagore, Puran Singh, Mohammad Iqbal, and Nanalal. From its first publication in 1927 to 1939, it took twelve years for the magazine to mark India in the literary world. This happened when India had already won the Nobel Prize in Literature. In this issue, Vasudev B. Metta addressed India's literary environment and

said that Indian poets stayed committed to their old traditions and composed poetry with the same vision of life and ideals of art as their ancestors[1] It shows the evidence of the critic being orientalist. The medieval period was a dark period in Europe, but in India it was a golden period. Bhakti period literature is very developed, modern and revolutionary literature. For this reason, Ramvilas Sharma, major critic of Hindi literature, called the Bhakti era of the medieval period as Lokjagaran. But Metta is looking at India from a European point of view, where medievalism represents regressive feudal understanding. It is with this mindset that he comments about Tagore that he is more western than eastern.[2] In the world of literature, different languages and their literature live in a state of dialogue and transition. Despite the fact that Tagore was influenced by Wordsworth and Shelley, it is not fair to categorize him as moreWestern than an Eastern literary character. Tagore stands in opposition to the colonial powers even while talking about a 'global humanity'. He criticizes the literature written under the shadow of colonial domination. He describes the rendering of poems in English by Bengali litterateurs such as Michael Madhusudan Dutt, Bankimchandra Chattopadhyay, and Toru Dutt as 'literature written in imitation of Western literature' and says that 'our literature' has found its natural source stream into its mother tongue.[3]

Metta also mentions Kabir in this article, but that too not for independent analysis of Kabir or his tradition, but to prove Tagore's literature inferior. If he had understood the importance of Kabir, he would not have presented the same image of the literary tradition of India, of which this saint poet was a part, as presented in the beginning of the article. Tagore translated Hundred Poems of Kabir under the title 'Songs of Kabir' in 1915. It seems that Metta came to know Kabir while reading Tagore, that is why he neither has knowledge of Bhakti Period and its tradition, nor does he have the introduction of representative poets like Surdas, Tulsidas, Raidas, Rahim, Jayasi, Mirabai. For him Kabir is such an old poet whose poems are remembered by hundreds of thousands of Indians. How modern they are, how excellent their literature is, how their era is a place of humanistic, logic-based ideas, all these things are not taken care of by the author. His aim is to limit them to the image of the popular poet. In this article, poems of some other poets Puran Singh (Punjabi language), Mohammad Iqbal (Urdu), Nanalal (Gujarati language) have been considered. In the introduction of all these, they have been shown as spiritual and religious creators who are influenced from western civilization. In this article, there is no sign of literature marking the ongoing struggle against imperialism, colonialism. Whereas in that period literature of resistance was being produced in almost every language,

which was being largely repressed and banned by the English government. Hindi literature in which the freedom struggle was being written, in which the national consciousness of the country was developing, which was directly condemning the British Empire, its representation remained absent. At that time, Hindi language was being promoted on a large scale for the spread of national unity, it was one of the major languages leading the movements. Gandhi was constantly calling for the strengthening of the Hindi language, yet the representation of the Hindi language is absent. Therefore, after reading this article, it appears that this magazine is examining the literature of India and Hindi from an imperialist point of view. It presented relatively less effective languages, literatures as representative literature of India and limited their identity to religious and spiritual dimensions.

Following this, Mahendra V. Desai published a 21-page study on Indian literature in 1954. Hindi was featured in the largest area on the first page's map of India, which also included the other 12 major languages. This map was the very first attempt to understand the complex linguistic structure of India. Compared to Vasudev Metta's article (where only Bengali, Gujarati, Punjabi and Urdu were shown as the languages of India) the representation of 12 languages in this article was proof that the magazine was getting serious in its research work.

In this article, Desai has analyzed the literature of major languages, understanding the political scenario of India. A peculiarity of this article was that its title used the plural term for the literatures of India.India's independent multilingual structure, which had previously been connected to the language's religious identity, was finally recognised here for the first time. Under the influence of colonialist approach, human-centered literature writing is often seen to be completely western influences. But Desai seems more conscious here. He believes that 'social realism' is the main feature of the literature of India and says that "Most of the indigenous people of India have achieved this through the struggle against foreign domination, poverty, superstition and exploitation."[4] He considers Gandhi's opposition to the principle of 'art, for art's sake' and belief in the revelation of truth as the inspiration for this trend of social realism representation. It is clear that from 1939 to 1954, the magazine had amended its colonial vision, as a result of which the literature of India was expressed in a relatively balanced form.

After this there is a discussion on the drama tradition of India and the author comments that, "Drama is still a homeless wanderer. There is nothing in India like the Group Theatre or the Old Vic to give it a play-house."[5]

It is noteworthy that India has a very rich history of plays. Bharatmuni's

Natyashastra is proof . Parallel to the era of Sanskrit plays, there was a rich tradition of folk theater, which is still alive today. Ramlila in North India, Jatra in Bengal, Orissa and East Bihar, Tamasha in Maharashtra, Nautanki in Uttar Pradesh, Rajasthan, Punjab and Bhavai in Gujarat, Yakshagana in Karnataka, Therukoothu in Tamil Nadu and Nacha in Chhattisgarh are performed even today. In the Bharatendu era, the plays directly challenged the feudal-colonialist forces. Hindi was gaining importance along with the founding of IPTA and the start of street plays. Therefore, it demonstrates his shoddy study when the critic claims that there is no tradition of play in India. Premchand is introduced as a Hindi author when speaking about Urdu. Upendranath Ashq, Faiz, and Krishna Chander have all been referred to as Urdu writers Although they are equally read in Hindi. No remarks regarding partition were made. There is some communication between Hindi and Urdu, and there is a sharing culture as well, although it is largely unnoticed.

A special issue on Indian literature appeared in 1994. For the first time in this magazine, 22 official languages of India were mentioned. The title of this issue was 'Indian literatures: In the fifth decade of independence'. The most comprehensive analysis of Hindi literature to date is presented in this issue. In this article, some of the specialities of the literature of India are addressed- metaphors of dismemberment and dislocation, a strong smell of death, the treatment of political, social and personal paralysis have been identified, from which Hindi literature writing could be understood in brief. In this, stating another feature of Hindi literature, it was said that "various forms of non realistic or unrealistic writing have now (re)surfaced in the different Indian languages"[6]. It leads to two kinds of searches- Non-European Literary past and common Indian Folk. In this way, the regional writing of Hindi was identified here, which created non-European literature and reached its mythology and folk tradition.

The article 'Trends in modern Indian fiction' is far more thoughtfully written and balanced, demonstrating a greater understanding of Hindi literature.In this article, while presenting analytical thinking on the literature of India, 6 major features have been mentioned – feminist or woman-centric approach, expression of socioeconomic problems of daily life, urbanization, post-independence disenchantment, intricate web of family relations, the East-West encounter. The points from which an attempt was made to identify the literature of India here are research-oriented, although some are also incomplete. Dalit identity-based literature, partition-based literature and regional literature have not been mentioned in these points. In identity writing, the only representation of women has been found, that too only in story mode.

Describing the first feature of modern Indian literature, R. K. Gupta talks about the creation of feminism and women-centric literature and connects its predecessor tradition with Premchand, Sharadchandra and Jainendra. Mentioning Oriya, Assamese, Sindhi, Punjabi, Marathi and English, Hindi story Girl (Mrinal Pandey) is referred to and Shivani's name comes across with Amrita Pritam elsewhere. However, after this there is mention of Premchand in symbolizing socio-economic problems, Mohan Rakesh and Agyey in writing on personality and psychology. Along with this, Hindi literature has been given better representation by considering Sanjeev's novel Dhar, Shrilal Shukla's Raag Darbari, Rajendra Yadav's Ukhde Hue Log, and Sara Akash based on urbanization.

In the same issue the poems of four Hindi poets – Gagan Gill (5), Kunwar Narayan (3), Shrikant Verma (3), Kedarnath Singh (3) have been published with an introductory note. A poem by Gagan Gill has also been published in Hindi script. In 1995, a review of 'The oxford Anthology of modern Indian Poetry' was published, which is a collection of 125 poems, out of which 14 are in Hindi. This review is very important because the hegemonic form of languages has been identified here. Writers who can translate their poems into English themselves have been given less space. The claim that 'India's writing published outside of India is just Indian English literature' has been refuted by this collection of poems. The advent of new Hindi genres during this time reflects this new perspective as well. The satirical collection's review section features 'Matadin on the Moon'. Parsai's satire Matadin on the Moon, Contesting Election in Bihar, and Bholram's Soul has received particular praise here. Parsai has been identified as the pioneer of Hindi satire.

In this way, we see that in the nineties, there were relatively more efforts to understand and advance the understanding of the literature of India and Hindi literature.Despite the supremacist worldview being present there at all times, their efforts were however adequate. In this context, there was a lot of examination on the genres of Hindi poetry, story, novel, theoretical criticism, satire, drama in this setting. But the magazine's attempt to understand vernacular languages falls short in the 21st century. Although in 2010 again a special issue on the literature of India was brought out, the focus seems to have shifted from Indian languages to Indian English. Sudip Sen, whose Indian English-related writings have long appeared in the journal, is the guest editor of this special edition, so the shift is reasonable. Another difference that can be noted in this instance is the magazine's attitude toward publishing popular content. Bollywood-based writing has begun to be published as a result of the growth of Indian cinema and its influence on the global market. A

similar in-depth essay on Indian cinema, titled Bollywood Spectaculars, can be found in the April-June issue of 2003-, and it includes research on parallel cinema in addition to popular literature. The Hindi film Water is one of five Indian movies that were included in the 2006 compilation Banned Films. Similarly, Gulzar, who wrote popular film songs in the India special issue of 2020, is established among the poets of Hindi literature.

In 2010, a special issue of Indian literature titled 'Writings from modern India', published poems by Gulzar, Manglesh Dabral, Ashok Vajpayee, Anamika, Tagore. In 2018, Kedarnath Singh's two poems titled The earth shall remain, Liberation were translated and published in the magazine. Along with this, a brief article has been written on the life and literature of Kunwar Narayan. The publication of poems directly here avoids the interference of the editor or reviewer and introduces the world to the representative writings of the poets. In 2014, there was an article on the development of female Dalit discourse on the literature of India and especially on Hindi literature, in which Dalit writing tradition in Hindi while talking about Kaushalya Baisanti's first work of Hindi feminist Dalit consciousness has been highlighted. The author being a social worker has been given a lot of detail. This article does not confine literature to books and takes it to the politics on the streets, which involuntarily reminds us of Premchand's statement that "literature is not the truth walking behind politics, but the truth showing the torch in front of it.[7]"

(Footnotes)

1 Trends in Contemporary Indian Poetry, Vasudeo B Metta, vol-13, 1939 page-292-295, Books Abroad

2 As same as above

3 Das, comparative literature in India : A historical perspective, page -16-17

4 Literatures of India, Mahendra V. Desai, Books Abroad, page- 262

5 As same as above.

6 Indian Writing Today: A View from 1994,Vinay Dharwadker, page- 237

7 Sahitya ka uddeshya(The aim of literature), Premchand, https://hindisarang.com/sahitya-ka-uddeshya-by-premchand/

❑❑❑

P.hd scholar
Department of Hindi, University of delhi, Delhi -110007, E-mail: everma@hindi.du.ac.in

Research Article

Weblish –The Shortened Language: Rose or Thorn

– Dr. Smitha Eapen

Abstract:

Communication is an important skill for any activity to progress in life. Language has developed as a medium of communication and become a status symbol for most of the countries as it has evolved through generations. The internet has created a revolution in the arena of communication. The amalgamation of language and the internet has given birth to internet language christened as Weblish. The use of this language has become common and popular nowadays. People around the world of all ages, also all walks of life have started using the shortened language. Teachers teach students in aformal language while the young generation tends to use chat language, emoticons , ellipses , stickers etc to express their feelings or expressions. The use of web language has even created ripples of change in the linguistic structure. The student teachers too have started the use of shortened language without speculating the impact .The use of Weblish in chats , messages, emails and even print media has emerged to be a rose or thorn to the community will have to awaited for.

Keywords:Weblish, linguistic features, awareness, student- teachers

Introduction

Communication is a prime element of evolution and development of any society .When different communities grouped together on cultural background sounds transformed to form collective understanding.

Later these sounds and their implied meanings took a common platform which emerged as language. If we think of a world without language,there will be no exchange of information and perceptions and also no communication.The cave dwellers used signs and gestures to attract the attention of people and pictures to describe things and get things done.

Moise, 2004 highlights the fact that even though the written language in print media looks attractive, its linguistic elements have their equivalents on the net too. The innovative ways of using language in stylish and creative manner remoulds the process of communication. The study wishes to highlight the modes and effects of Weblish on the NGen. The student teachers of the day are aware of these terms which indirectly may influence their communication in classroom too.

In general, the young generation uses netspeak, especially in "virtual socializing" as they are addicted to new technologies.The fact to undergo cognition is whether the shortened language acts for the betterment or deterioration of the much cherished, pampered and pride of all cultures till date.

India has its own tradition with respect to language.Today we use three language formula which include mother tongue, Hindi and English. The English Language has exercised a great influence in shaping the political, social, economic, intellectual and cultural life of India "Keep the door and windows of your mind open for fresh winds to blow freely, as long as you are not blown off your feet" is a wise saying that should be remembered forever.

Evolution led to revolution and so radio, television and print mediums thrived to glory .The most recent and surprising phenomenon is the technological revolution through which internet was born .The use of Internet and its development changed the way humanity communicates today.A new world of words, phrases has emerged into our lexicon in the last century.

Need and Significance

"Language is humanity's most spectacular open-source project," writes McCulloch, who studies and analyses the patterns of internet language. "Just as we find things on the internet by following links from one place to another, language spreads and disseminates through our conversations and interactions."

Saleh and Pretorius (2006) indicate that the past decade involved attention to the place of the Internet in language pedagogy. However, the use of the Internet in language teaching is a recent development. Because of the pervasive use of

computers and the Internet in educational settings, language instructors should use to use this technology to facilitate language teaching and learning.According to Cristal(2005), in the 15th century, printing was introduced; in the 19th century the telephone was invented and in the 20th century broadcasting began to enter our society. And now, some new means of communication such as SMS Text Messaging, e-mails, chat rooms and Web appeared. So, it was made possible for people to communicate using many different means of communication and also it created new platforms with far-reaching social impact.

The age of IT has contributed the evolution of new terms like netizen, netspeak , Netlish, Weblish ,Cyberspeak and various computer – related idioms purely linguistic dimensions of written expressions-the use of vocabulary, spelling, grammar and other elements of netspeak.

Every year, hundreds of new words and phrases that come from internet slang are added to the dictionary. Some of them are abbreviations, like FOMO (Fear Of Missing Out) and YOLO (You Only Live Once). Others are words that have been extended into more parts of speech than originally intended — like when "trend" became a verb ("It's a trend worldwide"). Still others have emerged as we adapt our language to new technologies; think "crowdfunding", "selfie", "cyberbullying". The scary situation that arises is that how the Weblish will affect our real and original language whose diction and grammer we teach our new generations.

Objective of the study

To identify ifstudent- teachers are aware about the changes in communication due to the emergence of Weblish-The shortened language.

Hypothesis ofthe study

Student-teachers are moderately aware about changes in communication due to the emergence of Weblish-The shortened language.

Methodology

A questionnaire in google form was prepared and circulated to about 26 student teachers of social science option. The questionnaire includes questions related to awareness and benefit about the different forms of chat language. Review of secondary literature and informal talks with student teachers of my optional class social science also contributed to the collection of data.

Major Findings

The analysis of responses to the questions reveal that:

1. Student teachers felt that he use of homophones (words that sound alike) like to, two, and too often appear as the two letter word toetc reduces the effort to type.
2. Student teachers suggested that the internet and texting helps English to condense itself.
3. Student teachers expressed thrill in using emoticons - sideways smiley faces and sad faces beckoning us to twist our necks just to “right” the image are used for personal satisfaction.
4. The student teachers who are computer literate suggested that word processing programs have picked up the use of parentheses and colons to make smileys and sad faces that helps to see a chiropractor.
5. Most of the student teachers were overexcited at the use of ellipses which are those dot-dot-dot things, creepy, crawley forms and also overused. They lamented that full stop has transgendered to dots.
6. Some of student teachers opined that use of interesting acronyms may ruin the future good writers.
7. Majority of them opined that acronyms can shorten our speech and words in good ways.

Discussion

The student teachers have appreciated the Internet and its benefits. They feel that the use of internet language has made us smart and given instant access to a new world of information. The internet language helps us to relax and use content for entertaining purposes. They also feel that it has made us less productive by producing cat and puppy videos. The internet provide scope for improving language by reading and writing too .The resources provided if used in right direction can professionalise your language. Educational process too by using sepecialized electronic environment , subject and nature of interaction of a teacher and student motivates to move towards blended learning. The learning of foreign languages can be propagated for migrating to foreign countries for professional development. The

information – communicative technologies act as a catalyst to humanize the educational process .

Conclusion

Human life cannot exist without communication. Human race cannot achieve great feats without collaborating like the different wonders of the world, landing on the moon or even being democratic. Change,be it social,economic or political will not happen without communication.

“Language itself changes slowly, but the internet has sped up the process of those changes so you notice them more quickly,” David Crystal, honorary professor of linguistics at the University of Bangor, told BBC News.

Language enables communication and dissemination between members of a society. Now a days more people use internet as a tool for written and communication.It is necessary that we know how to handle the internet language called Weblish. Internet slang is trendy as it transcendseveryday, every minute.

The effort needed for keystrokes are saved by the use of shortened language. The use of abbreviations in texting ,instant messaging and networking sites is on arise which may in future lead to deterioration of the original language which all countries and cultures treasure.

The denial of how culture can invent and use internet linguistics or adapt to new technologies or concepts to vitalize or destroy language is the food for thought.

References

http://dx.doi.org/10.5539/ies.v8n1p133

https://dx.doi.org/10.24093/awej/vol11no4.11

https://sites.google.com/site/inhainternetlanguage/what-is-it/overview-of-internet-language

https://blog.hubspot.com/marketing/how-internet-changes-language

❒❒❒

Asst. Prof., Mount Tabor Training College,Pathanapuram

University of Kerala

Research Article

Gleanings of Feminist Ideas in Sudha Murty's Dollar Bahu

–A.P. Charumathi
–Dr. M. Premavathy

Abstract:

Sudha Murty is an accomplished Indian author, philanthropist, and social activist from India. The portrayal of strong, independent female characters who reflect the struggles and victories of women in Indian society is one standout feature of Sudha Murty's literary works. Her books also often highlight the importance of education and social responsibility, inspiring readers to make a positive impact in their communities. Sudha Murty challenges gender roles and stereotypes that are prevalent in Indian culture through her writing. Her female characters are dynamic and multi-dimensional, not constrained to particular occupations or roles. Sudha Murty examines married women's lives and their roles in families in her novel *Dollar Bahu* (2005). This paper will examine the feminist ideas that are presented in the novel. The analysis will focus on how the novel challenges patriarchal norms and highlights the importance of women's empowerment and agency in decision-making. Additionally, it will explore how the novel addresses issues of class and economic inequality within the context of gender.

Keywords: Feminist ideas,Humiliation, Patriarchal society, and Women.

Indian women authors have contributed significantly to Indian literature over the years. Several Indian women authors have used their writing to explore the place of women in patriarchal societies because they have an acute awareness of human nature. Indian women authors have examined issues that are faced by women in the patriarchal Indian culture. Their works describe feminine subjectivity and handle topics spanning from infancy through womanhood.The writings of authors like Shevantibai Nikambe and KrupabaiSatthianadhan, who wrote about women's rights and gender inequity, can be used to

date the beginnings of feminism in Indian literature to the late nineteenth century. Their writings also place a strong focus on how gender affects social change, notably the function of female education as an emancipatory, liberating process. *Saguna: A Story of Native Christian Life* (1895) by Krupabai Satthianadhan, on the other hand, has a far more radical posture as it vigorously mentions problems relating to conservatism, colonialism, female subjectivities, and colonial modernity. Some works, which have been written in the context of female reformist writing, highlight the inconsistent elements present in the local female social reform movement, whereas Shevantibai Nikambe's Ratanbai: *A Sketch of a Bombay High-Caste Hindu Young Wife* (1895) tells the importance of education in recasting high-caste Hindu brides into compassionate partners.

The writings of authors like Mahasweta Devi, Rama Mehta, and Kamala Markandaya, who questioned patriarchal conventions and have given voice to women's experiences, helped this movement gain traction in the twentieth century. A woman is seen divided between her own knowledge and that which is placed upon her by her surroundings in *Mother of 1084* (1974) by Mahasweta Devi.The primary focus of the story is the suffering endured by a woman who wakes up one morning to find her kid dead and lying in the police mortuary. In her 1977 book *Inside the Haveli*, Rama Mehta portrays the tale of Geeta, a modern, educated woman who marries into a deeply traditional Rajasthani family in Udaipur. The story follows Geeta as she struggles to honour her commitments as a daughter-in-law to traditional values while still maintaining her real sense of individuality. The incomprehensible, economic injustice, oppression of women, convulsive social and political revolutions occurring in India, and all of these are reflected in Kamala Markandaya's writings.Attia Hossain, Padmini Sengupta, Veena Paintal, Namita Gokhale, Sudha Murty, Chitra Banerjee Divakaruni and many other Indian women novelists have contributed to improving the perception of women in fiction.They stand out from the other contestants because of their focus on women. Their writings have not only given women's views a platform but also challenged societal patriarchal conventions, making them role models for aspiring female authors.

Women are not consigned to the background in Sudha Murty's literary works, but rather given the opportunity to take centre stage and demonstrate their talents. Sudha Murty's works are not only a mirror of Indian culture, but also a motivation for women all over the world to break free from traditional limitations and achieve their aspirations. Sudha Murty is a progressive novelist who has made important contributions to Indian literature by depicting strong and independent female characters. Similarly, her book *How I Taught My Grandmother to Read and Other Stories* (2004) debunks the myth that older Indian women are not interested in learning and emphasises the value of education for women. In *Gently Falls TheBakula* (2008), Sudha Murty examines the dilemma of a young woman torn between her dreams of pursuing higher education and societal expectations of her as a wife and daughter-in-law.

Sudha Murty's fourth book, *Dollar Bahu*, was released in 2005. 'Dollar Sose' was the Kannada title given to this novel when it was first published. It has been adapted into Marathi, Gujarati, Hindi, Tamil, and Malayalam. The novel is required reading for undergraduates at Kannada universities. This book actually demonstrates that, for everyone, care and love are more valuable than money. It backs up the premise that all people are entitled to love. Every individual deserves to be included in the structure of a family without being overlooked due to their precarious economic situation. Love and family are basic human needs that should not be denied to anyone, regardless of their financial status. Providing support to those in need can help create a more inclusive and compassionate society. "I hope the book will show some families that love and affection can be more important than money." (Preface)
In a world where material possessions often take center stage, it is crucial to remember the value of emotional connections. Through the stories shared in the novel, Sudha Murty aims to inspire readers to prioritize love and affection in their own lives.
Vinuta is a stunning young lady with striking black eyes, a straight, pointed nose, and long hair that has been plaited. Chandru notices her attractiveness on their first encounter on the train. She lost her parents when she was a little child; thus, she now lives with her uncle Bheemanna Desai. She is the genuine heir andthe rightful owner of the house in Dharward, but she is also a very gentle, responsible, and caring lady. She performs all home duties, including cooking and gardening. She is a B.A. student studying Hindustani music at Karnatak College. She loves to sing, and she frequently sings while doing housework. Her aunt interrupts her and scolds her. Her aunt feels her singing is inappropriate for a lady and considers it as a distraction. She frequently chastises her for singing while doing her tasks.
Do you have to keep singing all the time? Do some worthwhile work at least some time. If you sit in the garden the whole day, who will do the housework? The dirty vessels are piling up. I am sick of reminding you about every task. God knows when your madness for music will go away.(11)
Despite the criticism and monotonous cleaning that have been allocated to her, she has continued to hum to herself with satisfaction. Every night she has the chance to use her lovely voice to sing and talk to her uncle."Giving girls and women educational opportunities equal to those of men presupposes a series of coherent measures going beyond the sole realm of education and amounting to a complete revision of the status of women in society." (Gupta 201) Her uncle always believes in and supports women's education. He even believes that a woman must get a job at least before marriage to become financially independent. He thinks that education is the key to empowering women and enabling them to make thoughtful important decisions in their lives. He encourages Vinuta to pursue her education and career goals without any hindrance or discrimination. "Bheemanna was very fond of Vinuta and wanted her to complete her degree, work for two years in order to become financially independent and then marry." (12)

Chandru's younger brother, Girish, a bank clerk, marries Vinuta. Due to financial constraints, Vinuta must sell her Dharwad home in order to host a lavish wedding. Because the house is her last residual link to her parents, she is not yet ready to sell it. She is advised to be realistic because no one in the era wants to marry a poor woman. Money plays a very important part in Indian wedding celebrations. In fact, it's not uncommon for families to blow through their savings on weddings and associated costs. "In modern India greater importance is attached to dowry system in consideration of status and prestige. So a girl's parents had to give a particular amount of jewellery, clothing, household articles etc., in addition to cash." (Dasog 28)As a result, it's critical for the bride to comprehend the financial implications of marriage and make appropriate plans. Dowry has long been a common practise.Girish's mother, Gouramma is the finest example of selfishness and greed; she even exaggerates her standard of living to attain the social status. She has daydreamed about expensive diamonds, gold, cars, and a large home. She has therefore placed all of her hopes and aspirations in her children. Her ultimate goal is to join the group of women who have travelled abroad and have most of their offspring living there. She is driven to see her children succeed because she thinks it is a reflection of her own success. Vinuta is extremely fortunate that Girish and her father-in-law are so encouraging. They are aware of the capabilities and way of life of middle-class families. When Gouramma asks Vinuta to sell the house to pay for the wedding, they support Vinuta. Girish says,

If it is so painful for you, we will not sell the house. Let's have a simple wedding. Amma may get upset for some time and she might scold you or taunt us, but we will put up with it. We should not start our new life with tears. My mother is actually a very nice person, good at heart but sometimes she can act rather tough. She softens up later. (37)

Gouramma's eldest daughter-in-law is Jamuna. She was born to Krishnappa, the property developer in a wealthy family. Her family is renowned for their three exotic cars and luxurious house. Gouramma respects Jamuna because she is the daughter of a wealthy family and the wife of Chandru, who generates income in dollars in the United States. Poor Vinuta is frequently contrasted with Jamuna, her dollar bahu, by her mother-in-law. Sudha Murty portrays Vinuta as an amenable woman. As the angel in the house and a typical Indian housewife, Vinuta works from dawn until dusk and abides by her mother-in-law's instructions. A stereotype that has been applied to women's roles throughout history is "angel in the house." It was inspired by a poem by Coventry Patmore that extols the virtues of women as being unblemished, selfless, and committed to serving their husbands and families. The idea that a woman's primary function is to serve and care for others has been reinforced by this stereotype, which has had a significant impact on women's lives. Even though Vinuta performs all the duties during her pregnancy, she is not praised or gifted. The constant comparison with Jamuna has made her feel dejected and disoriented in the beginning. Later, which affects her mental and physical health.

So, she moves back to her native village to give birth to the family's first male heir. She is left with her husband; no one is there to pamper her or fulfil her pregnancy cravings and desires.

The Dollar is the most powerful financial instrument of modern times. It is magic money. One dollar is equal to forty-two Indian rupees. If you have Dollars in your pocket, you can travel to any corner of the world without worry. It is universally acceptable currency.(25)

Sudha Murty uses the dollar as a symbol of hope and opportunity in her book "Dollar Bahu", which highlights the struggles and aspirations of middle-class families in India. Through the character of Vinuta, Murty explores the themes of family dynamics, societal pressures, and the pursuit of happiness. As Gouramma discusses the importance of money in one's life, she recalls a proverb that emphasises the importance of money and the varied living styles of those with and without money. According to the proverb, the person with money would shine, while the one without money would complain. Jamuna's sun shines brighter by the day, whereas Vinuta's life has taken on the characteristics of a dog.The dollar is the primary reason Gouramma selects Jamuna over Vinuta. Vinuta's careless attitude towards difficulties and suppressions has entirely altered by the end of the novel. She even expresses her reluctance to sing a song by stating "… the koel has understood her position. She has stopped singing." (71) She truly prays to God to make the value of Indian rupees equal to the worth of the US dollar.Because the humiliations that she has faced in her life have made her think like this. It shows her hatred towards the dollar; many characters in the novel have faced the consequences of the dollar. Shashikala, Vinuta's friend, has been deceived by her fiancé. Shankar has decided to get married to a girl from the United States in order to improve his family's economic situation; hence, Shashikala's marriage has been called off.

Gouramma is a conventional lady with few qualifications who doesn't grasp the modern man's position. She couldn't figure out why a man was permitted in the delivery room when a lady was ready to give birth. Her views on gender roles and knowledge may be anchored in conventional values and cultural conventions, making it difficult for her to accept or grasp society's shifting dynamics. She can't digest the entry of a man into the kitchen. She has a belief that the kitchen belongs to women. When Chandru tries to help his wife and mother by doing household chores, he is stopped by his mother. His mother's behaviour is a reflection of the deeply ingrained patriarchal mindset that has been passed down through generations, and it is important to challenge and break these gender stereotypes in order to achieve true gender equality. Jamuna against her ideology and advises her to change her opinion. To bridge the gap between diverse ideas and beliefs, it is critical to conduct open and courteous talks. The house is the only place where women can teach gender equity to their family men. Gouramma has understood all her mistakes and vowed to change her behaviour at the end of the novel. Her earlier opinions are based on patriarchal conventions, and she has understood that the importance of

family and cordial relationships. Gouramma's change has transformed her into a proponent of gender equality and a role model for other women in the community.The novel investigates the various character of women as well as patriarchal society-based practices that are vulnerable to change.

Works Cited:

Adhisakthi, PK, and Shailaja, M."Inner Conflicts of Leading Female Characters in Sudha Murthy's 'Dollar Bahu'". *Gnited Minds Journal* 15.9(October 2018): 21 – 23

Dasog, Shamala B. *Dowry System in Rural India*. USA:Lulu Publication, 2021.

Gupta, N. L. *Women Education Through the Ages*. New Delhi: Concept Publishing Company, 2000.

Murty, Sudha. *Dollar Bahu*.Haryana: Penguin Random House India, 2007. Print.

Ph.D. Research scholar
Department of English
Government Arts & Science College for Women
(Affiliated to Bharathidasan University)
Orathanadu -614 625
Thanjavur, Tamil Nadu
E-Mail id: charuperiasami93@gmail.com

Research Advisor
Associate Professor (English)
CDOE- Bharathidasan University
Tiruchirappalli -620 024
E-Mail id: drpremapalani@gmail.com

Research Article

Reading Queer in Manju Kapur's Novel, *A Married Woman*

–Dr. Chandrima Sen

Abstract:

Queer studies seem to be an evolving area of study. The theory deals with the aspect of breaking the male-female binary and moving towards an open space that is queer. Queer is a kind of an adventure that goes beyond the established horizon. It appears to be an attempt towards sexual orientation. It is somewhat related to openness. It is not an easy approach rather full of challenges and opportunities as well.

Manju Kapur, who is a celebrated writer of the 21st century seems to talk about the domain of queer and its different approaches in her works. Her *A Married Woman* celebrates the different variations of gender performativity. The novel begins in the most conventional way but with the progression of the plot it takes a turn towards the element of queer and its understanding from the perspective of Indian society. This paper aims to show the progressive change in the character of a woman from conventionalism to post modernity. It foregrounds the aspect of gender hierarchy as formulated by the society. The main character,Astha seems to transform herself in matters of choice, sensibility, feelings and desirability.Kapur insists on the meaning of the term 'Astha' which means faith. She puts it as: "faith in herself. It was all she had" (Kapur 297).

Michel Foucault and Judith Butler are the founders of queer theory. To name some Michael Warner, Sedgwick and Lauren Berlant are some of the prominent writers of queer theory. It was Teresa de Lauretis, an Italian writer and theorist, who uses the word 'queer theory' in 1991 to refer to a new spectacle of gender construction. Foucault in the Introduction to *History of Sexuality* talks about the 'truth of sex' as a product of the west and 'sexuality' as a product of desire and willingness, society and individual, traditionalism and modernity.

Judith Butler uses the term ‘queer’ to refer to destructured identity of man or woman. For her there are different connotations of the term ‘queer’ like social mobility, exclusion, resistance and change. In her *Bodies that Matter* she tries to explore the aspect of ‘queer’ with special emphasis on body, sex, gender, individual expression and homosexuality. Butler writes in the Preface: “To claim that the materiality of sex is constructed through a ritualized repetition of norms is hardly a self-evident claim. Indeed, our customary notions of ‘construction’ seem to get in the way of understanding such a claim” (xi, Preface). In *Gender Trouble:Feminism and the Subversion of Identity* Butler writes about her belief as: “gender is the repeated stylization of the body, a set of repeated acts within a highly rigid regulatory frame that congeal over time to produce the appearance of substance, of a natural sort of being” (Butler 33).

Kapur’s textual reference to queer demonstrates the socio-cultural domain of a particular class, individual and society whereas, the contextual idea elaborates on the epoch of urbanisation and materiality. The individualistic approach marks the ideology of being a queer. Jose Estaben Munoz writes in *Disidentification: Queer of Color and Performance of Politics*: “the act of performing and theatricalizing queerness in public takes on ever multiplying significance” (Munoz 1). The various connotative implications of queer refers to its politicization in the text. Kapur represents the queer world, culture, performance and possibilities. She talks about both the public and private sphere of the queer characters.

The novel begins with a clear picturisation of the character of Astha. Her aspiration tobe self-secured and self-reliant constitute her role in the novel. The beginning of the novel justifies her character as a self-conscious and absorbing one: “Astha was brought up properly, as befits a woman, with large supplements of fear. One slip might find her alone, vulnerable and unprotected. The infinite ways in which she could be harmed were not specified, but Astha absorbed them through her skin, and ever after was drawn to the safe and secure” (Kapur 1). She appears to be the only child of her parents but of course not a pampered one. Rather, she becomes a burden for the family. Kapur refers to her education, love, marriage, relationship and identity. She introduces Astha as a girl who prefers to live in her own world. At first she seems to be shy, polite and an introvert. Later, in the novel, the development of her character, correspond to the fact of being a matured and a transformed woman. Jagose Annamarie writes in *Queer Theory*:”For queer is, in part, a response to perceived limitations in the liberationist and identity- conscious politics of the gay and lesbian feminist movement” (Annamarie 130).

During her childhood she falls in love with a boy named as Bunty, who was a student of Kharakvasala Defence Academy. That love appears to be a true love. His memory remains in her mind for a long time. Astha’s life gets surrounded by complexity and sordidness. Her childhood love for Bunty ends with the provocation of her mother. It becomes a kind of transitory state for her to remember him as a friend or a companion. Her intimacy with him makes her suffer mentally. She actually suffers from identity crisis when she comes to know about her mother’s move

towards Bunty about not to bother her daughter any more. She becomes mentally unstable to realise and understand about the sudden and abrupt ending of a kind relationship. Her relation with Bunty was pure and innocent. From this, she learns about how insecurity and uncertainty fills her life as a daughter. She understands the fact of being the only child and its consequences. Her mother appears to be over protective and dominating. She rules over Astha's mind. The inner working of her mind declines to listen to her mother's wishes and dictatorship.

Her life takes another turn when she comes in close contact with Rohan. The episode with him makes her suffer more from inside. She seems to be in deep love with him. They were always together sharing thoughts, feelings and emotions. Kapur also talks about their intimate moments inside a car. This event reflects the trust that was there between the two. Her feelings for him grew stronger day by day. They start sharing a pragmatic relationship. Astha tries to satisfy her quest about what she wants in life. He acts as a support and motivation in her life. After what happened with Bunty she always craves for assurance from Rohan. Finally, Rohan left for pursuing higher studies and she enrolls herself in MA in English. When they were separated she becomes weak and more sensible. The constant mental and physical support that she gets from him comes to an unexpected end. As a beloved, all of her dreams fall apart. She seems to be unable to resist her feelings for him. She struggles with herself to forget him and his memories. This instance refers to the aspect of resistance and will, love and arrogance and satisfaction and grievance. After she breaks up with Rohan, she: "locks herself in the bathroom, free from voices, free from everything except the terrible things she was feeling, because Rohan didn't love her, Rohan had lied to her" (Kapur 30).When in college she was expected to meet a boy but she denied to meet him. As the novel reads: "… Astha collapsed against the bathroom door, tears falling, crying, crying for Bunty, crying for the lack of love in her barren life, crying because she didn't want to see a dull, stolid man in the drawing room…The bathroom represented her future…" (Kapur 21).

Jen Gleseking says: "queer theory is a framework of idea that suggests identities are not stable or deterministic, particularly in regard to an individual's gender, sex, and/or sexuality. Queer theory is committed to critiquing problematizing previous ways of theorizing identity" (Gleseking 1). The next part of her life corresponds to her marriage with Hemant. Infact, the third man in her life was Hemant. When she meets him a whole lot of questions come to her mind: "Should she tell him about Rohan, but what to tell? That though she kissed a boy, her hymen was intact? That he had broken her heart but she hoped to find happiness in marriage? How could she say this to someone she didn't know?" (Kapur 34). It appears to be a new beginning in her life. Gradually her desire and longings start to recede. As Kapur writes: "She had been waiting for him all day, thinking of their being together, but nothing of this was reciprocated. He was a criminal, destroying her anticipation, ruining her happiness" (Kapur 49). For her "Everything about him was masculine, his decisiveness, his hairy blunt fingers, his tall heavy set figure, his muscled limbs,

his moustache that tickled, the bitter tobacco taste from his tongue" (Kapur 55). She starts afresh after a whole lot of disbelief, mistrust and rejection. Her marriage here refers to the prospect of happiness, satisfaction and fulfilment. This was also but short lived. At one point of time, after the birth of their daughter, Anuradha, Astha feels oppressed by Hemant's attitude. Later, Astha becomes the mother of two, Himanshu was born to her. The novel reads: "… she had partaken of the archetypal experiences marked out for the female race" (Kapur 68). The change in Astha takes place in terms of responsibility and obligations. She "had changed from being a woman who only wanted love, to a woman who valued independence" (Kapur 71).

After she gives birth to two children she develops a soft corner for a man named as Aijaz Akhtar Khan who was the founder of the Street Theatre Group. Her admiration for him grows every moment she sees him. The appreciation for her artistry which she deserves from Hemant, she gets from Aijaz. Thus, she feels attracted towards him. Her attachment with him ends when she discovers his relationship with a girl named as Pipeelika. The very introduction of this character refers to the domain of 'queer' and its ramifications. In an instance, Pipeelika's childhood love for another girl named as Samira comes to light. Further, it was in Ayodhya that Astha meets Aijaz's wife, Pipeelika. Astha and Pipeelika share a marked cord of solidarity.

Further, Astha feels strange and dislocated when in Ayodhya. Her political self comes to the core there. She also appears as a secularist who speaks on Hindus, Muslims, awareness, protection, Lord Ram, faith in God and her Motherland. She was a religious person and visited different temples, mosques etc. Her discovery of a condom while unpacking the suitcase of Hemant results in her search for mental peace and psychological contentment. This catastrophe brings a kind of cynicism in her mind. She becomes upset, disturbed and capsized. In order to forget and ignore this very truth she deliberately proceeds to have a homosexual relationship. Though the discourse of homosexuality confers mainly on the nature of Pipeelika but Astha also contributes to it. It is Pipeelika's role that defines the domain and understanding of the term 'queer'. Their intimacy depicts a clash between satisfaction and annoyance, enjoyment and compensation and grace and inequity. For Pipeelika conjugal life implies a form of confinement. As she says: "The usual female trap, it's all one way or another" (Kapur 215). Kapur's projection of this relationship typifies an element of prudence and adultery.

Oliveira and Santos writes in the Introduction of 'Queer Theory': "'queer' is employed to denote a critical stance as to the identity-based categories of modern sexuality and its marginalizing tendency towards 'deviant' sexual behaviour… the term in point, namely, its resistance to normative sexual behaviour" (Introduction, 696). For Astha it was an uneasy affair and for Pipeelika: "It is more a question of choice…" (Kapur 218) and "a modern version" (Kapur 219) of any established form of relationship. When they were together they were affectionate and excited towards each other. For Pipeelika it was her third love. In Kapur's words their love

appears as: “the talk of discovery and attraction, of the history of a three month relationship, the teasing and pleasure of an intimacy that was complete and absolute, expressed through minds as much as bodies” (Kapur 229).

Astha was a poet, a painter and a script writer. Her poetry seems to signify love, care, acceptance, denial, understanding and restlessness. As the line reads: “She wrote about gardens and flowers, the silent dark faces of gardeners tending plants and never getting credit” (Kapur 78). She often finds it difficult to deal with the heaviness in her mind. She struggles to express herself. Her poem ‘Changes’ talks about her pain, which is an outcome of the separations in different set of relationships. Further, it also justifies how she craves for ‘peace and tranquillity’ (Kapur 79). She seems to be ready to accept and embrace the ultimate truth of her life. The word ‘darkness’ symbolises her struggle, misery, disappointment and displeasure. In a state of self-realisation she achieves contentment within her own self. In this context Kapur writes: “Misery springs from desire, desire springs from attachment, and that if she gave up all these things, she would be happy” (Kapur 95).

The role of Astha revolves around the orbit of a daughter, a wife, a mother, a beloved and an aspirant. The suffering of her life appears to be her own creation. She delves deep in affairs, attachment and profundity of different set of relationships. She never seems to be satisfied with her own life. Her character symbolises resentment, alienation and discontent. Because of her indignation she suffers from chronic headache. She tries to set herself free from all kinds of bindings and obligations.In the Introduction of *Epistemology of the Closet* Eve Sedgwick writes: “silence is rendered as pointed and performative as speech, in relations around the closet, depends on and highlights more broadly the fact that ignorance is as potent and as multiple a things there as in knowledge” (Sedgwick 4). She regards ‘homosexual’ was a relatively gender-neutral term and says:”I use it as such, though it has always seemed to have at least some male bias…” (Sedgwick 17). Here, Sedgwick stands in contrast to Faucault. She sees sex as a ‘natural given, but a social construct’. Astha attempts to acquire her own identity as an independent woman. She says to Hemant that she wants: “Indeed more space” (Kapur 155). Kapur writes: “Finally she steeled herself, she shut the door, and if disturbed too often, locked it” (Kapur 56). As an artist she craves for recognition in the artistic world. In exhibitions, her paintings get displayed. As the line reads: “Instead she hugged the vision of herself as a woman who had sold two paintings in one year, sum total thirty thousand rupees, of which ten thousand was hers. She felt rich and powerful, so what if this feeling only lasted a moment” (Kapur 158). She appears to be wedged between her fondness for painting and her impulse to sustain a homosexual relationship. She fluctuates between the two. Kapur sketches an amount of inadequacy in Astha.

Gradually, Astha starts brooding over her own sexual nature. She fails to draw any kind of conclusion. For her it was not exactly love but an attachment and an extended relationship. After her dismay with her husband she urges for a change

and alteration. Her association with Pipeelika doesn't allow her to satisfy her inner self. She was always conscious of her moral individual self. She now lies all the time. A sort of carelessness engulfs them.

By the portrayal of Astha and Pipeelika, Kapur asserts the struggle that the homosexuals undergo for acceptance and approval. For Astha domestic life and marital bliss comes first. Her room, though small but private, her family and her children satisfy her quest for self-conscious identity. Kapur tries to analyse the aspect of queer as: "an indulgence rather than a necessity" (Kapur 242). Kapur wants to minimise the variation that lies in the understanding of the term 'queer'. Cathy Cohen, an American social activist, in *The Radical Potentialof Queer Politics* asks: "how do queer activists understand and relate politically to those whose same-sex sexual identities position them within the category of queer, but who hold other identities based on class, race and/or gender categories which provide them with membership in and the resources of dominant institutions and groups" (Cohen 442). The relationship between the same female sex seems to be a matter of dispute for both Astha and Pipeelika. Rather, it occupies a set of rules, burden and constraint. Kapur emphasizes upon interest, togetherness and respect as an integral part of every relationship. Astha's vacation to London with her family actually serves as a precursor to her underlying thoughts.

During the three weeks tour for the Ekta Yatra from Kanyakumari to Kashmir, Astha has "no sense of home, duty, wifehood or motherhood" (Kapur 246). She realises that in the company of Pipeelika she feels "marginal and excluded" (Kapur 249). At that time, she prays: "I am not asking for happiness, but I would welcome some stability, so I need not run all over the place looking for love and confirmation" (Kapur 250). She finally understands the substance of Pipeelika's life as well- her future plans, her Ph.D., Ujjala, Neeraj. She also realises her own life substance that rests on her painting, her children and her home. She indulges herself in inquisition and curiosity and desire for peace and completeness. She says in utter dejection: "I can't deal with my life. I want a safe place, a warm place, a loved place" (Kapur 263). The last part of the novel saturates the idea of homosexuality. Astha recognises her self-conscious identity. Her family establishes her life's endeavour. She attempts to relive her life devoid of any kind of pressure and performance.

To be very precise, the novel subscribes to the aspect of conscious, sub-conscious and unconscious self of Astha. Kapur emphasizes on her character mainly to generalise the prospect of understanding queer, particularly in Indian society. Pipeelika's character aids in Astha's ultimate realization of her literal self. Her character acts as a precursor to the working of Astha's mind. However, Astha tries to regularize her way of living. She appears to be conscious of her self-approved married life as well as her self-decisive homosexual life. In some instances, her homosexuality seems to be transitory. Her role as a woman seems to fluctuate between completeness and resentment. When with Hemant she craves for more space both material and physical and when with Pipeelika both in her conscious and sub-conscious state of mind she counsels for allegiance and acquisitiveness.

Whereas, the unconscious self of Astha calls for an entirely new direction, in which she defines herself in her own way.Further, her extended relationship helps her maintain a balance with her husband. This kind of support she didn't get from Pipeelika's side. Thus, it becomes merely difficult on Astha's part to defend her homosexual association with Pipeelika. This is how Astha seems to relocate herself in the domain of divergent and sensible relationships.

The writer, through her narrative, shows the sexual orientation of the individuals which not just exists by itself, it rather finds expression through multiple activities which are signifiers in a large referentiality. So, it is not just the text which is important, rather the context that contributes to the construction of the self. The 'conscious' and 'unconscious' correspondence come to light. That, individuals not just form a part of 'conscious' but also form an integral part of 'unconscious'. What we call 'queer' goes well alongside 'unconscious' which evades linguistic straightjacket. The way Manju Kapur deals with language, stretches and bends it to her advantage, it clearly shows her skill in projecting the 'unconscious', i.e. queer in her narratives.

Works Cited:

Butler, Judith. *Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity*. New York: Routledge, 1990

—. *Bodies That Matter: On the Discursive Limits of Sex. New York: Routledge, 1993*

Cohen, Cathy J. "Punks, Bulldaggers, and Welfare Queers: The Radical Potential of Queer Politics". GLQ: A Journal of Lesbian and Gay Studies. 1997.

De Lauretis, Teresa. "Queer Theory: Lesbian and Gay Sexualities". Differences: A Journal of Feminist Cultural Studies 3, No. 3. 1991

Foucault, Michel. *The History of Sexuality*. Vol.1., An Introduction. Trans. Robert Hurley. London:Penguin, 1990.

Gieseking, Jen Jack. "Queer Theory". In V.N.Parrillo, M.Andersen, J.Best, W.Kornblum, C.M.Renzetti, and M.Romero. Ed. Encyclopedia of Social Problems. Thousand Oaks, CA: Sage Publications, 2008.

Jagose, Annamarie. Queer Theory. New York: New York University Press, 1996

Kapur, Manju. *A Married Woman*. Roli Books: New Delhi, 2002.

Munoz, Jose Estaban. Disidentification: Queer of Color and Performance of Politics. Cultural Studies of the Americann.. Vol.2. London: University of Minnesota Press,1999

Luiz Eduardo Oliveira and Jose Augusto Batista dos Santos. 'Queer Theory'. *Aula 7*. 96-105

Sedgwick, Eve Kosofsky. Epistemology of the Closet. Los Angeles: University of California Press, 1990

Assistant Professor, Department of English
Bodoland University
PIN 783370
Kokrajhar, Assam, BTR
Mobile No. 8638771701 Email: chandrimasn46@gmail.com

Research Article

Investigating the Functions of Metacognitive Strategies in Second Language Acquisition

–Dr. V. Vinod Kumar
–S. Bharath

Abstract:

This paper explores the role of metacognitive strategies in second language acquisition (SLA). Metacognitive strategies are cognitive processes that involve learners actively thinking about their own learning process, monitoring their progress, and regulating their learning activities. This paper examines the relationship between the use of metacognitive strategies and SLA, specifically regarding the cognitive processes involved in language learning – the effectiveness of various metacognitive strategies in enhancing SLA through self-monitoring, self-evaluation, and self-regulation techniques. Finally, practical recommendations for language teachers and learners are provided on effectively integrating metacognitive strategies into the language learning process and how to foster metacognitive awareness and self-regulation skills among language learners.

Key Words: Cognition, Metacognition, Metacognitive Strategies, ESL, Language learning, Learning Strategies, Second language acquisition, and Autonomous learning.

Introduction

Second Language Acquisition (SLA) research began as an interdisciplinary field inthe 1960s. SLA has drawn theoretical inspiration from linguistics, child language acquisition, and psychology. Early research focused on two areas, namely behaviorism and structural behaviorism.Serious research in the field wascarried out only after the 1980s before the development could be split into two necessary periods. Behaviorism, a psychology theory, was the focus during

the first period. During the second period, empirical research highlighted some significant problems with the structuralist-behaviorist account of language learning, and subsequently, multiple theories emerged. There were only a few cases where the theory of development in second language acquisition and its theoretical explanations were offered in other disciplines (O'Malley and Chamot57). There needed to be more clarityconcerningintegrating strategic processing in theories of second language development.

In 1981, J. Michael O'Malley and Anna UhlChamot surveyed the role of cognitive processes in a second language, reporting and reviewing large-scale empirical investigations. It was altogether a different approach ever done in the field of SLA. It showed how cognitive strategies could influence the field of SLA in the comprehension of a second language andits acquisition.The primary focus of their work was on different learning strategies used in second language acquisition.It was based on the theoretical foundations of Cognitive theory proposed by Anderson.The role of cognition in language learning and the influence of learning strategies on memory processeswas elucidated.(19). Chamotand O'Malley state, "In cognitive paradigm, new information is acquired through a four-stage encoding process involving selection, acquisition, construction, and integration" (17). During the process of selection, focusing and transferring information to the working memory regarding what a learner is interested in happens. During acquisition, the information stored in the working memory is actively transferred to the long-term memory for permanent storage. Internal connections are made between ideas or information stored in the working memory during construction. During the final integration process, the prior knowledge in the long-term memory is transferred to the working memory. Competent learners were considered to have an inherent ability to learn a language. According to cognitive psychology, competent individuals use a unique way of processing information. The strategies competent learners use can also be used by those unaware.Research concentrating on the "good language learner"(Naiman et al 20) had identified strategies reported by students or observed in language learning situations that appear to contribute to learning.These efforts demonstrated that students learn to apply strategies while learning a second language and that those strategies can be described and classified. (O'Malley 3).

Research Objectives

1. To examine the relationship between metacognitive strategies and second language acquisition, specifically concerning the cognitive processes involved in language learning.
2. To investigate the effectiveness of various metacognitive strategies in enhancing second language acquisition and language proficiency, including using self-

monitoring, self-evaluation, and self-regulation techniques.

3. To identify the key factors that facilitate or hinder using metacognitive strategies in second language acquisition, like social factors and learner autonomy.
4. To develop practical recommendations for language teachers and learners on effectively integrating metacognitive strategies into the language learning process and how to foster metacognitive awareness and self-regulation skills among language learners.

Research Questions

1. What is the relationship between using metacognitive strategies and second language acquisition, and how do metacognitive strategies facilitate the cognitive processes involved in language learning?
2. How can language proficiency, age, and learning style influence metacognitive strategies in second language acquisition, and how can language instruction be tailored to accommodate these differences?
3. What factors facilitate or hinder the use of metacognitive strategies in second language acquisition, and how can language instruction address these factors to promote the development of metacognitive skills among language learners?
4. What practical recommendations can be made for language teachers and learners on effectively integrating metacognitive strategies into the language learning process, and how to foster metacognitive awareness and self-regulation skills among language learners?

Learner Centric Approaches

The field of SLA has witnessed a shift of focus from teacher and teaching-oriented approaches to learner and learner-centred approaches. As a result of this change, the primary concern of second language researchers was to define and classify learning strategies that would enhance the performance of the language learner. Second language acquisition research suggests that good language learners use strategies to improve their command over new language skills.

Learning strategies can be defined as "any sets of operations, steps, plans, routines used by the learner to facilitate the obtaining, storage, retrieval, and use of information" (23).Richards and Platt state that learning strategies are "intentional behaviour and thoughts used by learners during learning to help betterthey understand, learn, or remember new information.'Faerch Claus and Kasper stress that a learning strategy is "an attempt to develop linguistic and sociolinguistic competence in the target language". During second language learning in the classroom,most learners resort to strategies, consciously or unconsciously,to resolve tasks or learn the information given to them. Such strategiescan result inan incomplete learning

experience or long-term retention.Rabinowitz and Chi say, “Strategies that more actively engage the person’s mental process should be more effective in supporting learning. These strategies may become automatic after repeated use or after a skill has been fully acquired. However, mental processes that are deployed without conscious awareness may no longer be considered strategic” (O’Malley 18).O’Malley (1995) classifies learning strategies into three different kinds:

1. Socio-affective strategies:Theseare strategies that help establish empathy between students and the instructor and stimulate learning.
2. Cognitive strategies: Theyare generally used to assist students with learning problems. These strategies provide a systematic and logical path to face a task and solve a problem.
3. Metacognitive strategies:These include all the actions in a learning process, like planning, monitoring, and checking the outcomes of the learning process.

Classroom instruction need not always facilitate students with the required information to learn a language. Learning strategies would enhance the possibility of students becoming autonomous learners. In order to become autonomous learners, they must know how to learn and continue to learn beyond the information provided in formal instruction. Learning strategies, especially metacognitive strategies, would serve as a platform for students to be autonomous learners.Due this reason,this paper focuses on metacognitive strategies.

Metacognition and SLA

The term metacognition was introduced in cognitive psychology by John Flavell and Ann Brown. Metacognition is defined as cognition about cognition. It refers to an individual’s knowledge about cognitive processes and states such as memory, attention, knowledge, conjecture, and illusion.John Flavell defines metacognition as “one’s knowledge concerning one’s cognitive processes and... active monitoring and consequent regulation and orchestration of these processes about the cognitive objects or data on which they bear, usually in the service of some concrete goal or objective” (O’Malley 67).Humans construct an understanding of themselves and the world around them, control their thoughts and behaviours, and monitor the consequences of these thoughts and behaviours (Kluwe,1982).Wenden was the first to introduce metacognition in language learning. He articulated the role of metacognition in developing learner autonomy and finding the difference in cognitive processes among learners. An individual’s consciousness of his thought process while engaging in cognitive activity is called metacognitive awareness.The learner may retrieve information from the stored knowledge relevant to the flow of thought. Another way to understand metacognitive awareness is by analyzing problem-solving, comprehension, and learning strategies.Five essential components form a

person’s metacognitive ability: existence, distinct processes, integration, variables, and cognitive monitoring.

Existence: An individual must know that internal mental states exist, different from external acts or events. Lies, pretensions, and visualizations are based on the difference between external behavior and mental state. An individual knowing something can act as if he does not know or pretend to be unaware of it. This is an example of a mental state independent of external behavior or physical events.

Distinct processes: There are different cognitive processes that humans engage in. The human mind interprets and distinguishes these mental processes and captures the distinct features of different cognitive activities.

Integration: There are distinctions in different mental activities, but mostlycorrelated. Thinking and imagining are internal, invisible events, yet they are mostly different from other internal, invisible activities such as digesting food or pumping blood. The similarities and interactions between different mental processes must be encompassed in a theory of the mind.

Variables: Several factors influence mental performance. For example,an individual can remember a short list of items more than a long list. A theory of mind should contain a list of variables that influences acts of cognitive behavior.

Cognitive Monitoring: Humans are aware of their mental states and can monitor the various cognitive activities in their minds. Children are aware of what they know and what they do not. They understand when they fantasize and when they do not dream or imagine, and when they do not. Cognitive monitoring refers to the abilitythataccurately assesses the state of information within one’s cognitive system. This knowledge of the contents of an individual’s mind is part of one’s moment-by-moment understanding of his or her cognition.

The difference between cognitive and metacognitive strategies is often confused as it is tough to determinethe dissimilarities. “What is metacognitive to one analyst is sometimes cognitive to another... instances where students directed their attention to the task while it was ongoing, and the boundary between using the strategy as an executive thinking skill and using it as an integral aspect of task performance became obscure” (qtd. in O’Malley144). Metacognitive strategies benefit language learners as they can evaluate their learning experience, make alterations, and enhance their learning process.

Metacognitive strategies involved in metacognitive activities,as stated by Chamot O’Malley,are as follows:

Planning: The learner has to have a good understanding of the anticipated learning task. The strategies which can be utilized to execute the task have to be decided. Direct attention: The learner must be focused on the task and should avoid possible distractions he/she might encounter during the execution of the task.

Selective attention:Decisions must be taken in advance toput extra attention on selective or important situational details that seem to be relevant in the execution of the task.

Self-management: Learners must understand the conditions that can help them accomplish the language tasks by themselves and arrange for the presence of these conditions. The learner should also be in control of their language to maximize what they already know.

Self-monitoring: This is the most important of all other skills while using metacognitive strategy. It includes comprehension monitoring which focuses on checking, verifying, and correcting what is being comprehended. Production monitoring is next, where the learner corrects his/her language production. During acoustic monitoring, a language learner checks and uses the “ear” to determine how something sounds. Using one’s “eye” to figure out how something looks and makes decisions is called visual monitoring. Style monitoring checks the internal stylistic register of the learner, and strategic monitoring checks how well a strategy works. Plan monitoring checks how well a particular strategy works and double-check monitoring tracks across the tasks, previously undertaken acts, or possibilities considered during the task.

Problem identification: This process finds out the problem that hinders the completion of a given task.

Self-evaluation:The learner checks one’s language performance to measure completeness and accuracy. The learner evaluates his/her language repertoire, strategy use, and his ability to perform a task. There are four kinds of evaluation done, namely production evaluation, performance evaluation, ability evaluation, and strategy evaluation.

Conclusion:

Metacognitive strategies are cognitive processes that make learners actively think about their own learning process, monitor their progress, and regulate their learning activities. These strategies are highly effective in improving second language acquisition (SLA) as they enable learners to become more aware of their own learning process, identify areas of weakness, and develop strategies to overcome these weaknesses.

One way in which metacognitive strategies can be used to improve SLA is through the use of self-monitoring techniques. Self-monitoring involves learners paying attention to their own language use, and identifying errors or areas of difficulty. This process enables learners to develop a greater awareness of the language they use and to develop strategies for improving their language use in these areas. For example, learners may use a language diary or reflection tool to record their language

use and identify areas where they need to improve.

Another way in which metacognitive strategies can be used to improve SLA is through the use of self-evaluation techniques. Self-evaluation involves learners reflecting on their learning progress, identifying areas of success and improvement, and developing strategies to overcome any difficulties. For example, learners may use self-assessment rubrics or peer feedback to evaluate their own language use and identify areas where they need to improve.

Finally, metacognitive strategies can improve SLA by fostering learner autonomy. Learner autonomy involves taking responsibility for their learning and developing strategies to achieve their language learning goals. Metacognitive strategies can help learners develop this autonomy by enabling them to identify their own learning needs, set goals, and develop strategies to achieve them.

In conclusion, metacognitive strategies are highly effective in the process of promoting SLA. By enabling learners to become more aware of their own learning process, identify areas of weakness, and develop strategies to overcome these weaknesses, metacognitive strategies can help learners develop the autonomy and self-regulation skills needed to achieve their language learning goals.

Works Cited

Faerch, C., and Kasper, G. *Strategies in Interlanguage Communication*. London, Longman, 1983.

Kluwe, R.H..*Cognitive knowledge and executive control: Metacognition*, New York Springer-Verlag. 1982.

Naiman, et al. *The Good Language Learner*. The Ontario Institute for Studies in Education., 1978.

O'Malley, Michael, and Anna UhlChamot. *Learning Strategies in Second Language Acquisition*. United States of America, Cambridge UP, 1990.

Richards, J., and Platt, J. *Longman dictionary of language teaching and applied linguistic*. Harlow Essex: Longman., 1992.

Wenden, Anita, and Joan Rubin, eds. *Learner strategies in language learning*. Prentice Hall, 1987.

❒❒❒

Professor and Head, Department of English
Bharathidasan University
Tiruchirapalli- 620024

Ph.D Research Scholar
Department of English
Bharathidasan University
Tiruchirapalli- 620024

Research Article

Picture of Rural Life in Thomas Hardy's Far*From The Madding Crowd*

–Dr. M. Premavathy

Abstract:

Thomas Hardy was born on 2 June 1840 an English novelist and poet. Hardy wrote poetry throughout his life and regarded himself initially as a poet. In several works, he displays elements of the previous Romantic and Enlightenment periods of literature, such as his fascination with the supernatural. *Far from the Madding Crowd* is the masterpiece of Hardy's literary career. This novel excels in rural features, life, customs habits, manners, language of Weather bury, Caster Bridge, Norcombe. In *Far from the Madding Crowd* Hardy introduce "Wessex", a land name referring to "the horizons and landscapes of a merely realistic dream-country". It's an imaginary as the plot rounds on the reality and mental. Hardy coined his raw childhood and memories and later memories into his novel. This paper will focus on the Picture of Hardy's Rural life in the novel *Far From The Madding Crowd.*

Keywords: Thomas Hardy, Far from the Madding Crowd, Rural life, Characterization.

The peasantries who make their appearance in *Far From The Madding Crowd* as a kind of rustic Greek chorus are timeless and changeless, thus, it is not only the physical setting in *Far From The Madding Crowd* by which Hardy stresses theme of time. The rustics are changeless and they remain the same. The main functions of these rustics are to provide. Shrewd comments on the principal characters, to anticipate actions yet to occur, and to furnish comic relief. These rustics are also symbolic. Things to them have always been the way they are and ought to stay that way.

The Rustics act as a chorus. The Rustics play the same part that the Chorus plays in a Greek tragedy.

That is to say like a Greek Chorus they comment on events that have taken place or that are going to take place. Warren's Malt house is their meeting place. Here they gather in the evening to exchange gossip concerning Bathsheba, Bold wood and others. Thus, as a Greek Chorus, with its leisurely, appropriate utterance sometime full of an exasperating sobriety stands round about the two or three passionate souls in travail, so these aged patriarchs, half-witted clowns, shrewd workmen move through the Wessel scenes where Bathsheba or Fanny or Bold wood are acting and suffering with grotesque, stolid or pathetic commentaries.

The Rustics are first introduced to us at Warren's Malt house where we meet with the ancient Maltster, his sixty-five year old son and his forty year old grandson who speaks of his own grandchildren. Thus, it is to the lengths of infinity that the generations seem to be stretching. Besides the Maltster and his progeny are certain traditional types familiar in folk comedy. The standard country hums our which is present underlines the difference between the peasantry and the principals. We have Hennery Fray who always insists on the middle "e" in his name, though it is an obvious mistake. We have Jan Coggan who recalls in a drunken manner the "lovely drunks" he and his companion have had.

Then there is Gabriel Oak who fits in well with this group, though he is the study and reliable yeoman of principles. He alone among the main characters shares in the peasantry's durability. He agrees with the Maltster that there is no harm in "clean dirt" and cheerfully eats the bacon which has been dropped on the road, following the old man's advice not to let his teeth quite meet.

The Rustics contribute the element of humor to the novel. They constitute a most delightful group. First, there is old Warren, talkative, self-important, and companionable. Then there is Joseph Poor grass that is so shy that he cannot look a woman in face and who takes the shooting of an owl as a personal question and replies. "Joseph Poor grasses of Weather bury, sir".Next, we have Jan Coggan who thinks that a man is twice the man after drinking. Laban Tall who is known as Susan Tail's husband and who is extremely henpecked, is another amusing rustic. Hennery Fray who insists upon spelling his name as Henery reminds us of Bottom in Shakespeare's *Mids*u*mmer Night's Dream*. The rustic humor of these Characters is truly Shakespearean in kind and degree.

Hardy is a past master in the art of describing the rustic life with which he had a first-hand acquaintance. He himself belonged by birth to a rank in society immediately above the class of peasantry, which, however, was within the easy search of the rustic life itself with its wild beauty, its pastoral simplicity, and its tragic ugliness relieved by many redeeming virtues.

He describes the rustics as ignorant of the sophistries of civilization and free from its vices. They are the children of soil; they are favorites of nature and are

governed by natural instincts as a rule. Their ignorance, their want of culture, the depth of their poverty are stark things, but they are at the same time noted for genuine simplicity of heart, and, as such, they enjoy the bliss of contentment.

The hero of the book, Gabriel Oak, is himself a representative of the rustic order- a hero who displays a rare magnanimity of soul, a rare sense of devotion and an equally rare devotion to duty for the sake of duty. Here Hardy, like Rousseau and Wordsworth, has a genuine appreciation of the beauty and grandeur of rustic life. Now here better than in the chapter, "The Malt House", does the author display his capacity to describe the rustic life in its full simplicity and full beauty. The paragraph describing Gabriel's appearance in the Malt House can be quoted:

Far From the Madding Crowd gives us a number of delightful rustics, like Joseph Poor grass, Hendry Fray and Cain Ball. No book of Hardy's has such a wealth of profound and splendid comedy the band of laborers- Joseph Poor grass, Laban Tall, Mark Clark, Matthew Moon, hennery Fray, Jan Coggan, the old Maltster, and young Cain Ball- is an achievement which can only be matched in the greatest literature.

In several scenes the comedies of these rustics are without doubt Shakespearean in degree as well as in kind; in the scene, for instance, when Joseph Poor grass and Jan Coggan are drinking together while the body of poor Fanny Robin lies on the wagon outside. Indeed, Joseph Poor grass reminds us of such Shakespearean clowns and jesters as Touchstone, Fester, Dogberry and Verges, and Lancelot Gobo.

Hendry Fray is a melancholy man having a melancholy view of life. He is one of the persons who look upon the world with an eye of discontent, whether there is any matter of discontentment or not. We meet him for the first time in the Malt House as a person who is given to drinking. He never refuses an offer to drink. A pen-picture of Hennery is given by Hardy in these words:

He has humorous eccentricity in spelling his name in the wrong way. He spells Henry as H-e-n-e-ry on the ground that he was baptized with that name. His appearance was quite in harmony with his mental character. He bears a very critical and unfavorable attitude to Bathsheba; and he always bears a mark of despair on his face. He very fervently hopes for the post of bailiff, which has fallen vacant owing to the dismissal of Penny ways and he is sorry that this post has not been given to him. He feels like a man in travails-like a man whose genius has not been sufficiently recognized. He is a man of cool temper.

In Joseph Poor grass, the man of many calamities, Hardy has achieved his comic masterpiece. We can picture him, inimitable as he is, blushing and stammering and feeling too unutterably pious and too indescribably modest, all the time the world is swinging its giddy round on the vortex of pleasure. He is so shy that he could not even look his mistress, Bathsheba in the face.

There is a quality of Falstafian magnificence about Josephs Poor grass which indicates essential greatness and assures him of immortality. He is a modest man, but what hero can be more self-conscious about it than he is, -

Moreover, he says: Which of course refers to him and hardy's artistic instinct is right when he summons this immortal soul of his own creation to utter the benediction over Bathsheba and Gabriel.

Jan Coggan is an interesting character being a hospitable man, a good man, in whom confidence could be reposed with safety. He gives Oak a shelter in his house, while other asks him to walk out into the street. Oak has full confidence in him as friend; and communicates to him his plans of a secret marriage with Bathsheba, a confidence which he thoroughly deserves. He is also one of Gabriel's 'bright boys'—a jovial man and veteran drunkard whom he meets in the Malt house where he gives vent to his feelings about Saint- Simonian way of drinking. He is an excellent rider, and shares with Oak the task of finding out Bathsheba while she is missing from her house. He is a man of cosmopolitan character, being a good father in the locality and common witness in the register for twenty years.

He has a sarcastic vein of mind which is revealed in his talk with others. He has a Knowledge of Bathsheba's uncle, whose house he commonly frequented for the Purpose of drinking. His passionate love of drinking is displayed in his doings at the Buck's Head, where, the more he drinks, the, more he desires to drink. Last of all he is a good church man—a thorough going member of the English Church because the creed allows drinking while the independent sect forbids it. His excellent reason for orthodoxy is given in the following words, Jan Coggan is an amiable, interesting, jovial man whose very defects make him very popular to us.

Penny ways is a semi-villain having wickedness at heart but lacking capacity enough for mischief. He is unkind to Oak, unfaithful to Bathsheba; and appropriately enough, he finds in Troy an associate of his soul. He displays his coldness of heart by refusing shelter to Oak in his helplessness. He is detected by Bathsheba in stealing half a bushel of barley and is dismissed for thieving. In spite of his dismissal, he haunts the court of Bathsheba, evidently seeking a chance for re-employment. Being a man of dark ways himself, he detects the tracks of Troy. The last glimpse we have of him is in the company of Troy in the dark.

Laban Tall is a philanthropic man who is always ready to do service others. He runs errands for Bathsheba, and is ready to do so for everybody else. He is cursed or blessed in a wife of imperious temper to whom he is very submissive. In her presence he has no distinct personality at all. The pitifulness of the husband's position is noticed by Bathsheba while distributing wages to her men. The career of Laban Tall has, however, a happy end. We find him appointed as a Parish-clerk doing helpful service to Bathsheba, his ancient mistress, in connection with the marriage

of Oak with her.

The Old Maltster is an exceedingly interesting character. He is garrulous, proud of his old age and voluminous experience. He is very cordial in his reception of Oak and recognizes him as the grandson of his friend. He is very angry if anybody calculates his age at a figure less than what he does, and he snubs his son when the latter venture to point out his over-estimation of his age by twenty-two years. He is a man of primitive views, and he does not like newfangled ways of Bathsheba. He is proud of his extensive knowledge of the world and of his multifarious occupation. Mark Clark is one of the interesting rustic characters. We met him in the Malt house in the drinking party. He was a man of genial, pleasant disposition,

He is a man of infectious sociability. He is not very courteous in habit as is clear from the reception he gives to Oak and the manner in which he talks about him when Oak is playing on the flute. He haunts wine houses and has not a very favorable appearance in the Buck's Head. He has an appreciable thought for drinking and talking about drinking, and is quite at home on drinking feasts. Here is a specimen of his speech on the benefit of drinking. 'True,' said Mark Clark.

This is the utterance of a man with whom life is spent and religion is illusion. Mark Clark was really a jovial man of the world having his notions confined to this material world of ours, and caring nothing for the life to come. Thus, against the rebellious feelings of man, Hardy emphasized his unchangeable prejudices through the simple utterances of the village people. Sometimes when we are face to face with some live tragedy that makes us protest against the injustice of God, their cool acceptance of life restores to us a sense of balance and realities. Their simple prejudices have the air of dogmas, — they lift us out of life, out of the region of controversies and passions into the sphere of elemental truths of life based on a large unquestioning acceptance of truth before which all other philosophies seem commonplace.

Works Cited

Hardy, Thomas, *Far from the Madding Crowd* (1874), ed. Robert C. Schweik, New York & London: Norton, 1986.

Hardy, Florence Emily, *The Life of Thomas Hardy: The Later Years of Thomas Hardy (1892-1928)* (1930), London: Studio Editions, 1994.

Hardy, Thomas, *Desperate Remedies* (1871), Harmondsworth: Penguin Classics, 1998.

❒❒❒

Associate Professor of English
CDOE, Bharathidasan University, Tiruchirappalli -24
E-Mail id: drpremapalani@gmail.com

Research Article

The Metamorphosis from Deflation to Inflation: An Inquiry of the Economic Transmutation in Thrity Umrigar's *The Secrets Between Us*.

–G. Vijayarenganayaki
–Dr.T.S. Ramesh

Abstract:

The Secrets Between Usintricately explores the economic hardships and subsequent transformations experienced by Parvati and Bhima, the central characters of this poignant narrative. Parvati assumes the role of a mentor, emphasizing the paramount importance of prioritizing one's survival. Seamlessly integrating into Bhima's family, Parvati undertakes the responsibility of nurturing Bhima into a resilient and enterprising businesswoman. Bhima's unwavering support for Bibi during moments of adversity uncovers her inherent entrepreneurial talent. Fueled by her steadfast belief in self-employment and autonomy, Bhima fearlessly challenges the oppressive forces personified by Mrs. Motorcyclewala. Despite occasional clashes, Bhima and Parvati forge a deep sisterly bond rooted in their shared love and understanding. The novel vividly depicts the struggles faced by women reduced to commodities in a class-divided society. Through a Marxist lens, this research article provides a comprehensive analysis of the characters' struggles, shedding light on the systemic economic challenges they confront. Furthermore, the characters Chitra and Sunitha exemplify the pursuit of a classless society by advocating for equality, as exemplified in their support for Maya's education and equitable treatment. By emphasizing the significance of socioeconomic transformation, the novel underscores the urgent need for a more egalitarian and just society.

Keywords: economic hardships, entrepreneurial talent, oppression, commodities, class-divided society, socioeconomic transformation, egalitarian society.

The occupational sphere assumes a paramount role

in the capitalist society for delineating an individual's societal standing. Bhima's untimely termination casts a piercing light upon the vulnerability of the working class to sudden unemployment and unleashes a cascade of shame and guilt that accompanies such circumstances. Her steadfast loyalty to the household she serves arises in her subjugation within the social and economic strata, impelling her to appease the desires of her employers in a desperate bid to secure her own meager survival.Her inferiority complex and the dread of laboring under the weight of Viraf's malicious rumor converge to underscore the precarious nature of the working class's tenuous existence. "Capitalism creates class conflict, inequality, and corruption, which then affect the infrastructure and political landscape in India" (Vykhovanets 13).

The encounter between Dinaz and Bhima unfolds as a maelstrom of heightened emotions, portending an imminent collision between the privileged bourgeoisie and the marginalized proletariat. Beneath the veneer of shared experiences, an undeniable dissonance permeates their relationship. Dinaz's resolute refusal to delve into the veracity surrounding Bhima's termination, instead, levying accusations of headstrong behavior, epitomizes the pernicious grasp of false consciousness. Her reluctance to pursue the truth exposes the deep-rooted internalization of ruling-class ideologies, ultimately perpetuating the subjugation and alienation of the working class. "the proletariat – cannot attain its emancipation from the sway of the exploiting and ruling class– the bourgeoisie – without, at the same time, and once and for all, emancipating society at large from all exploitation, oppression, class distinction, and class struggles" (Marx and Engels 8). Her act of proffering a cheque as a form of recompense for Bhima's labor epitomizes the commodification of labor within the capitalist paradigm, reducing Bhima's invaluable contributions to a mere economic exchange.

Parvati's character assumes a profound mantle of significance within Umrigar's narrative, encapsulating a divergent life perspective that stands in contrast to Bhima's. She grapples incessantly with the dire exigencies of subsistence, as evidenced by her arduous endeavors to sell a mere half-dozen cauliflowers in a bid to assuage her most fundamental needs. The gnawing pangs of hunger propel her towards the remnants discarded by the ramshackle eatery, laying bare the harrowing realities of destitution and the omnipresence of scarcity that beset the lives of the impoverished. Her poignant reliance upon the staircase in Praful's apartment serves as a stark testament to her abject lack of secure housing. "She stops at a ramshackle restaurant, whose owner empties leftovers from his customers' plates onto a newspaper and hands it to her.If she is twenty minutes late, he sets the scraps down on the sidewalk for the stray dog that lurks outside the restaurant" (19).

The distressing incident wherein Parvati's bout of vomiting falls under the

remorseful gaze of Meena, a denizen of the apartment, inadvertently instigates a disconcerting questioning of her very right to exist within that space. Meena's response, impelled by an innate desire to safeguard the sanctuary from Parvati's intrusive presence, underscores the pernicious ramifications of class-based discrimination and the dehumanizing indignities that afflict the destitute. "The indoctrination of ideologies from the ruling class by means of manipulation and exploiting the masses is called a false consciousness" (Vykhovanets 5). Her usage of a solitary saree to clean seserves as a potent symbol of the abject destitution endured by the impoverished masses. Her inexorable descent into the abyss of prostitution stands as an unyielding testament to the systemic injustices perpetrated by the capitalist machinery.

Bhima's arduous journey within Mrs. Motorcyclewalla's household serves as a powerful prism through which the pervasive discrimination deeply entrenched within Indian society is exposed. The deprivation of elemental amenities, such as the denial of a fan, not only accentuates the inherent privilege enjoyed by the affluent, who callously withhold even the most rudimentary comforts from their less fortunate counterparts. Bhima's guarded suspicion towards Chitra's ostensibly kind gesture epitomizes the profound fear and inherent mistrust that permeate interactions between individuals from disparate socio-economic backgrounds. Chitra emerges as a harbinger of modernity and revolution, embodying the principles that seek to dismantle the artificial constructs of caste and class imposed by society. "In terms of relations Marx is of the view that society does not consists of individuals rather it is stands on the foundations of relations between the individuals. On the base of this notion there is no discrimination between the individuals of society rather they are equal to one another on humanistic grounds" (Afzal 794).

Bhima's transformative odyssey reaches its zenith through her fervent pursuit of selling the fruits of Ram, an endeavor fueled by her noble aspiration to assist Bibi. Initially met with Parvati's hesitation to join forces in this enterprising venture, the exigencies of her own struggle to fulfill the demanding rental obligations at Tejpal Mahal ultimately compel her to embrace the mantle of a fruit hawker alongside Bhima. Bhima, in turn, assumes her newfound mantle as a businesswoman with unwavering ardor and zealous enthusiasm, transcending the predetermined boundaries imposed upon her by a stratified social order. The harmonious fusion of the unique talents of Bhima, Parvati, and Rajeev serves as an eloquent testament to the intrinsic interdependence among individuals striving for prosperity. Bhima, in awe of Parvati's prodigious sagacity and perspicacity in business management, stands witness to the transformative potency of astute intellect and expertise, catalyzing her profound appreciation for the multifaceted dimensions of entrepreneurial success "However, as days pass, noticing in openmouthed wonder

Parvati's mental strength, ingenuity, presence of mind, sense of judgment, practicality and nonchalant attitude in handling situations and people"(Sen 6).

Mrs. Motorcycle Walla's menacing threat to burn Bhima for her failure to report to work unveils a stark power dynamic that underscores the oppressive control she wields over Bhima's life and well-being. This harrowing display of authority reflects the systemic exploitation and subjugation of domestic workers in India. Bhima's acquiescence to take additional household chores as a form of punishment for her absence further highlights the imperative nature of employment for her very existence. As a member of the working class, Bhima's livelihood and survival are intrinsically tied to her ability to secure employment and fulfill the demands imposed upon her. "The slave is sold once and for all, the proletarian has to sell himself by the day and by the hour. The slave is the property of one master and for that very reason has a guaranteed subsistence, however wretched it may be. The proletarian is, so to speak, the slave of the entire bourgeois class, not of one master" (Marx and Engels 38). Her resistance to Mrs. Motorcycle Walla's insistence on worshipping Zoroaster marks a significant moment of defiance and agency. She asserts her individuality and refuses to compromise her personal convictions for the sake of maintaining employment.

The termination of Bhima's employment serves as a stark reminder of the tenuous position occupied by the working class within the capitalist framework. Bhima's profound trepidation and emotional fragility in response to the abrupt cessation of her job emanate from an acute awareness of the vital link between her subsistence and the commodification of her labor. Her decision to curtail her food intake as a coping mechanism lays bare the agonizing choices thrust upon marginalized individuals when confronted with adversity. Her indomitable spirit and unwavering determination refuse to capitulate to the indignity and exploitation foisted upon her. Through the audacious establishment of her fruit business, she seizes control of her own destiny, defying the oppressive forces that seek to subjugate her. "Marx observes that the class which is struggling for mastery must gain political power in order to represent its interest as the general interest" (Habib 531). The profound contentment Bhima derives from the act of sharing sustenance with Parvati and Rajeev serves as a profound testament to the potency of communal support and solidarity amid times of hardship. Her ascension into the realm of business symbolizes a profound metamorphosis, transcending the mere realms of labor to embrace an active role within the capitalist tapestry. Her unwavering resolve and the harmonious collaboration with Parvati and Rajeev stand as a resounding testament to the agency of the individual and their innate aptitude for the enterprise. Such transformative endeavors embody the dialectical interplay of individual determination and the socioeconomic milieu, propelling Bhima toward an empowered existence

within the capitalist paradigm.

The portrayal of Parvati's economic tribulations, particularly her inability to procure fresh produce, serves as a poignant exemplification of the pervasive destitution and impoverishment. It lays bare the harsh actuality of an existence ensnared in perpetual hand-to-mouth struggles, where the mere attainment of basic necessities assumes the guise of a daily battle. "She had learned many years ago to kill the envy she once felt at the sight of the beautiful produce displayed by her competitors, the gleaming tomatoes, the pearly garlic, the radiant grapefruit and oranges. She has never had the money to increase her inventory so has stopped trying" (18). The indignation cast upon Parvati by Reshma, who callously dismisses her expectation of receiving lunch as an act of alms, lays bare the flagrant insensitivity and dearth of empathy. Jafferbai's envy towards Bhima, Parvati, and Rajeev's business success serves as a reflection of the class antagonisms and competition engendered by capitalism.

Bhima's subsequent emotional shift towards displeasure and reluctance to remunerate Parvati epitomize the internalization of capitalist ethos, where profit-seeking and individualistic gratification take precedence over communal support and solidarity. Her single-minded focus on meeting Maya's needs highlights the inherent pressures and priorities imposed by the capitalist framework, emphasizing the primacy of immediate family welfare within a competitive system that encourages wealth accumulation. Nevertheless, Bhima's deep bond with Parvati compels her to swiftly come to her aid during the riot, demonstrating a profound connection that transcends the confines of the capitalist paradigm.

Parvati's proposal to modernize their business by utilizing Xerox copies of vegetable-based recipes exemplifies a practical and forward-thinking solution grounded in adaptability and ingenuity. By challenging the prevailing notion that only the bourgeoisie possess the resources and expertise to introduce innovative business methodologies, Bhima and Parvati assert their autonomy and agency as industrious laborers turned entrepreneurs. Their willingness to embrace this innovative approach signifies a profound assertion of their individuality and entrepreneurial spirit, enabling them to enhance their business operations and potentially improve their economic circumstances. By transcending the conventional boundaries imposed by the capitalist framework, they augment their business's appeal and accessibility while fostering a renewed sense of empowerment and self-determination. "The means of production are in the hands of few people who have a power to invest, have good relations to exist in the world and have resources to utilize" (Afzal 794).

Parvati's poignant narrative unveils the intricate layers of her life's tribulations, wherein her father's affection becomes a solitary solace amidst the shadows of neglect experienced by her three siblings. The encroaching ecological degradation and the capricious impact of climate change cast an ominous pall over their very

existence. The abrupt onset of her mother's illness intensifies the economic precarity. In the face of insurmountable economic burdens and societal pressures that demand the bestowal of dowries, Parvati's father finds himself ensnared within the confines of a materialistic paradigm that perpetuates his commodification of his daughter into prostitution. In this cruel transaction, her dignity is callously sacrificed, leaving her mired in the depths of a dehumanizing existence."Parvati is sold to prostitution at twelve by her desperately poor father. She has passed more than two decades as a prostitute at the Old Place under the Principal who has absolute authority over her" (Sen 5)

The dehumanizing treatment endured by Parvati within the confines of prostitution serves as a stark manifestation of the capitalist system's propensity to reduce individuals, particularly women, to mere commodities subjected to commercial transactions. The brazen display of her physical attributes orchestrated by the head of the prostitution center, with the explicit aim of enticing prospective clients, lays bare the pervasive objectification and commodification of women that pervades the industry. Such practices reduce women to mere objects of desire, devoid of agency and intrinsic worth, whose sole purpose is to cater to the insatiable demands of the market. "Engels cited three main forms of marriage: "for the period of savagery, group marriage; for barbarism, pairing marriage; for civilization, monogamy supplemented by adultery and prostitution" (Habib 533).

Serabai's introduction of Bhima to Darius as a menial servant, stripped of any inherent value beyond her utilitarian function in performing domestic chores, serves as a poignant illustration of the insidious mechanisms through which social hierarchies are fortified and perpetuated within the framework of a capitalist society. By presenting Bhima as a mere instrument of labor, devoid of any intrinsic worth or agency, Serabai reinforces the entrenched divisions that separate her privileged position from Bhima's subordinate status.This act of reductionism reinforces and solidifies social stratification. "To maintain the status quo, the bourgeoisie implement false consciousness and further create alienation which occurs when the individual worker's identity is separated from the work they do and continues forced labor to maintain their needs" (Vykhovanets 4).Bhima feels proud to express her position as an entrepreneur and rejects the monetary benefit from Serabai to show her self-dignity.

Parvati's harrowing recollection of the brutal oppression she endured at the hands of Rajesh and his superior, Mr. Verma, during a party lays bare the oppressive power dynamics that permeate a capitalist society. Rajesh, instead of protecting her, blames Parvati for the assault and inflicts further violence upon her. "Rajesh asks her to marry him. Unfortunately enough, she trades one dreadful life for another, as she is regularly battered by her husband. She soon realizes that Rajesh has not married her out of love"(Sen 5). His son Rahul's corrosive influence of greed and

the capitalist mindset is prevalent through his refusal to provide her with her rightful share of their marital estate. “One of the main sins of capitalism, according to Marx, was that it reduced all human relations to commercial relations. Even the family cannot escape such commodification” (Habib 534)

Parvati’s yearning for death, born from the burdens of a marginalized existence, reflects the depths of suffering and despair experienced within a society riddled with inequities. The weight of oppressive conditions fuels her longing for release, seeking solace in the embrace of mortality. Her decision to bestow her hard-earned savings upon Bhima stands as a reclamation of economic autonomy and dignity. In her poignant death note, Parvati’s call for Bhima to reconnect with her estranged family resonates as an expression of solidarity, underscoring the intrinsic significance of kinship ties and communal bonds in the face of societal decay. “The standpoint of the old materialism is ‘civil’ society, the standpoint of the new is human society or socialized humanity” (Marx 65). Through this final testament, Parvati strives to shield Bhima from the corroding influences of a morally bankrupt world.Bhima undergoes a profound metamorphosis, catalyzed by Parvati’s unwavering support and unyielding belief in her capacity for personal growth. Parvati emerges as an inspirational force, igniting the flames of Bhima’s self-discovery, empowering her to seize agency, and emboldening her to confront the oppressive structures that perpetuate social injustice and inequality.

Works Cited

Afzal, Muhammad. et al. “Marxist Study of The God of Small Things.” *Pakistan Languages and Humanities Review*, vol 6, no.2, 2022, pp. 791-801.

Habib, M.A.R. *Modern Literary Criticism and Theory: A History*. Blackwell, 2005.

Marx, Karl. *Theses on Feuerbach*. Foreign Languages Press, 1976.

Marx, Karl, and Frederick Engels. *Manifesto of the Communist Party*. Progress Publishers, 1969.

Sen, TuhinShuvra. “Sisterhood: A Feminist Motto of Empowerment in ThrityUmrigar’s*The Secrets Between Us*.” *Lapis Lazuli: An International Literary Journal*, vol 11, no.2, 2021.

Umrigar, Thrity. *The SecretsBetween Us*. Harper Collins, 2018.

Vykhovanets, Liza. “The Self-Made Entrepreneur: Marxist Analysis of *White Tiger*.” *Interdisciplinary Journal of Student Research and Scholarship*, vol 6, no.1, 2022, pp.1-16.

❑❑❑

Ph.D. Research Scholar (Full-Time),
“PG & Research Department of English,“National College (Autonomous),
“Affiliated to Bharathidasan University,” Tiruchirappalli, Tamil Nadu 620001.

Dr. T.S. Ramesh “Associate Professor in English,“National College (Autonomous),
“Affiliated to Bharathidasan University,” Tiruchirappalli, Tamil Nadu 620001.

Research Article

A Study of human psychology in *High Noon, (Utchi Veyil)* by Indira Parthasarathy translated by Mr. M. R. Siva ramakrishnan

–Dr. V. Sri Ramachandran, DCOE, AP-DOE, PRO, NC-T

Abstract:

Laa. Sa. Raa. a well known Tamil Novelist, states about Indira Parthasarathy "I believe a writer should have one consistent avatar, but you seem to have too many conflicting avatars within you happening at one and the same time". (Preface of High Noon and Other Stories, p. 10.)

Indira Parthasarathy a well known contemporary Indian author writing in Tamil has received the prestigious Sangeet Natak Akademi award, Sathiya Akademi award and Saraswathi Samman award. He is the only writer who has received all the three prestigious awards.

Translator of the novella, M. R. Sivaramakrishnan was India's first ambassador in Viet Nam after Viet Nam War. Then he became the ambassador to Poland and High Commissioner in Canada. He started his career as an editorial staff in ***The Hindu***, then ***The Indian Express***, New Delhi. He translated this story and published in ***The Illustrated Weekly of India***.

High Noon is a novella first published first in Tamil as ***Utchi Veyil*** in 1968 by Vachakar Vattam – an innovative publishing concern of the time. It is a totally different piece of fiction portraying the distinctive cultural flavour of Thanjavur District. It has autobiographical references of Indira Parthasarathy. It was made into a film called ***Marupakkam*** by Sethu Madhavan and it won the Swarna Kamal award in 1990.[2]

Indira Parthasarathy uses Stream of Consciousness technique in this novella **High Noon** to help the readers to understand the thinking pattern of the characters and their psychology. The stream of consciousness swings to the past life of Ambi the protagonist of the novella and his father Vembu Ayar's

past life and comes to the present to make the reader to understand past and present of these major characters. Ambi's father Vembu Iyer's past events are printed in italics to differentiate with the present in the novella.

As usual, many of Indira Parthasarathy's heroes are from Tamil Nadu Villages working in New Delhi, Ambi @ Murali is also from Kumbakonam, returning to his home town from Delhi in the beginning of the novella. He found nothing has changed in the past two years except people had become older at his home town. When Ambi entered into his house, his mother Janaki welcomed him and showed him the status of his father Vembu Ayer. Vembu Ayer, understanding the presence of his son Ambi, sitting in the swing, in silence, spoke to himself how Ambi was when he was young and laughed. When Ambi called him "Appa" (16), he as usual, in silence, spoke to himself about a past event of his life and laughed.

At home, he found nothing has changed except that the things gathered a layer of dust in his absence. It reminds him of his past life with his friends at this room of the house when he was at school. Ambi's grandfather had died when his father Vembu Ayer was just four years old. Ambi's grandfather lived a happy and fashionable but short life. But Ambi's father, a self educated man "determined to grow up quite unlike his own father. . . . he was variously described as the lion of Vedanta and the tiger of Vyakarana."(17), but now it was all gone. He becomes fragile and silent. Vembu Ayer's present status reminded him of an old man who 3 stayed at his neighbouring house some time ago in Delhi. He looked like a high priest of brahminism.

When Ambi takes bath at the back yard of the house, people from the neighbouring houses enquired about his broken marriage and fragile status of his father. Ambi could not answer them. Ambi was forced by these enquires to recollected his sweet days with Sweete @ Rita Ayar. Whose mother is a Bengalie and father is from Madras – a retired army Major called Major Sundaresa Ayar from Aduthurai. Ambi's mother was major's first cousin. Since then they develop their love affair.

Ambi after bath, found his father still sitting in the same manner and looking at Ambi. Vembu Ayar's consciousness again went back and thought of his disciplined life which his father never practiced. He repents now for his orthodox life, for having observed all the religious rituals throughout his life. He says :

It now strikes me that I could have lived differently, done differently. When hungry, we eat. When thirsty, we drink. Why clamp down on desires then? My controlled passion has shriveled up my body, which will go up in flames one day. . . if sin is a matter of man's intentions, show me a man without sin. I wanted to lock away carnal desires and grow up the anthithesis of my father. Did I succeed?(23)
He thought of his unsuccessful love affair with his friend Uppili's sister, his first wife Avayam who was beautiful, he divorced her by listening to his mother's bad intentions, and due to her unproven illicit relationship and her inability to give birth to a child.

At this status of Ambi's father, Ambi could easily understand that his father is

experiencing communication with God. Ambi could not believe his father's silence.[4]

He always chants mantras and recite slokas and performs poojas twice a day but now he is completely different. Ambi understood that his father is repenting for his past ruined life. But his mother, never had any views of her own, and lived completely on shadows of her despotic husband, who refused permission for his marriage with Sweete. His father replied in one of his letters for his request to marry Sweete, "don't ever darken my door again in the future". (24).

When Ambi sat down on the floor to eat, he found ants on the wall. He put a line by using his figure to stop ants come to him. Mother said looking at it as "poor things" (24). Ambi replied that "what is poor or rich about it? If they have the brains they will get across. Intelligence and courage are needed." (24) For Ambi's statement, his mother questioned "Do you mean to say that those who transgress do not get scattered?" (24) and moved away without expecting an answer from him. Ambi also does not want to continue the conversation. She means Ambi's cross religious marriage as transgression which was broken and scattered.

After Ambi's lunch, when he and his mother started talking about his broken wedding, Mangalam; one of the neighbour entered the house and enquired the status of Vembu Ayar. She directly went to him and questioned him whether he can recognize her? He stared at her and again his consciousness went back and compared Mangalam with Sarasa a cleaver woman, one of the relatives of him. He again compares Mangalam and Sarasa with Avayam. Avayam was a nice singer. But she always had tussle with her mother -in- law who had lost her husband at the early age, and loved her son Vembu. She hates Avayam for the simple reason that her son shares her love with his wife. So "Mother made up so many stories about Avayam. Not that I believed any of them. But what terrible things, I did just to reassure my mother of my affection. What an idiot and a fool I was ! Avayam, Avayam!" (26).[5]

Mangalam enquired about Avayam because Vembu Ayar was frequently telling the name Avayam and she herself replied that it was Ambi's stepmother. And he remembers his first wife. But Janaki, Ambi's mother does not want to continue the discussion anymore and decided to leave Ambi alone to take rest.

Once, Ambi as a college student visiting a friend in Madras, the lady next door dropped in. Her hair was completely grey, but she looked young. She learnt from Ambi that he is from Kumbakonam, then she enquired about Vembu Ayar, Ambi replied that he is his father. She immediately responded to him that in that case, "I am your step-mother, your father's first wife". (27)

Now he realized that his father had wronged her. It is the same man who had stopped him not to enter into the home after his marriage with Sweete. He understood that since his father committed a blender for his first wife, he repents now by uttering her name and longing for her.

Ambi thought of his newly wedded life, his honeymoon at Kashmir and how sweet it was but after an year, the problem sprouted.

After a nap, Ambi went to Market Street where he met his old friends. At

Marimuthu's shop, his assistant Sonachalam gave him a sweet beeda. In the meanwhile, accountant Poongavanam interrupted their talk and enquired Ambi about his latest and called Sonachalam a "*Sonagir"i* (Fool) (30) who beats his beautiful wife to support his mother and the girl drowned in a water tank due to his torture. After an year, both Ambi and Sweete came to Kumbakonam and stayed in a hotel and Ambi visited the house. His parents refused permission for Sweete to enter the house. This caused trouble in their married life. She said, "Do you really think your father is fair?" (30). She left Delhi immediately leaving him at Kumbakonam. Since then, his married life shattered and heaven becomes hell.[6]

At the shop, he met Nanu Iyer, a lawyer's clerk, Alvar a fifty year old man the owner of a book stall. On his return to home, he found Murti, a close friend of him. He learnt his arrival from his mother and visited to see him. They discussed Vembu Iyer's present condition, Ambi's broken family life. Ambi shared with Murthi, how his marital life broke.

Ambi find a sudden change in the attitude of his wife Sweete who wants to leave his orthodox father and mother and get away with her. She and her mother on her father's first death ceremony, created a scene about his being untruthful to them.

Murti in his very firm voice, said, the marriage brook due to their obstinacy. Murthy replies to Ambi that,

Your father, you know, sent his first wife away. You have not done that. Anyway you can't do it nowadays, but you have separated. What is the difference? Male superiority was the order of the day in your father's days. The chauvinist heroes hadn't the guts to drive out the foreign rules; they vented their hero is on hapless women.

'Now, in your days, it is a question of a person's rights. What are these rights? Do you really think you can define your rights, the other person's rights, and live fenced in by this division? Tell me!'. (36)

On request of Murti, with hesitation, Ambi narrated the crux of the problem between him and his wife. The marriage brook due to uncertainty prevailed in their life and Sweetie and her mother felt that Ambi may leave her in lurch and support his orthodox father. Ambi, could not leave his parents and finds it difficult to live with Sweete. Finally they got separated. There was another story in the family of Sweete. Her father at the last part of his life, performed Ganesh Puja at his friend's house and[7]

said nothing for his wife and daughter Sweete going to the church. They were also separated at the end of his life due to communal clash.

After hearing him Murti replied that,

There is only one way to solve this. You must step out of your self – imposed privacy and so must your wife. Look at your father now! He raised the walls and is struggling to breathe in the confined space. All his dramatics and quarrels have little meaning in his present state. Don't you see? (38)

When Ambi gave a drink to his father, he saw Murti but unable to recognize

him. He compares Murti's physical features with Avayam – and repeatedly saying the name Avayam.

Murti rightly understood that Avayam might be his first wife. In the mean time, Vembu's friend visited him and enquired about his status. And departs saying, "The rest is silence". (40). Ambi rested in silence and understood the reason for his broken married life. He cannot leave his several centuries of unchanging tradition and outdated religious practices and his wife could not forget her immediate past and historical compulsions. Now he extends his understanding with his father's calling of his first wife's name. He felt that his cross marriage, and it becomes broken, his father's past life are the three important factors that affected the mental stability of his father. For the first time, it struck him that he did the same thing which his father did and felt like he might have wronged Sweete and fallen into slumber.

After having few dosas he found his father looking to his palms and fingers and saying his first wife's name. As if he has decided something, he called his mother expressed his opinion of inviting his step mother Avayam here to support his father. But his mother contemptuously refused the idea with savage anger. It has become her 8 prerogative position with her husband and she asked Ambi to live with his wife. His mother literally shiveredwith anger and he could not sleep the whole night.

Next day morning, Ambi understood that his mother is still angry with him. He found some new tenant at his opposite house. He learnt from his mother that the new tenant is a teacher's family. The wife of the teachers is young, and she is flirting with youngsters who come to take tuitions. And people believe that Goddess Karpagamba lives in her and many visit her to have a dharsahan of Goddess Karpagaba. Many atheists won the election by her blessings and become theists.

He decided to write to his wife to invite her here. He wore a clean shirt and set out to Marimuthu's shop to buy a news paper. On his way he met a widow Nagu whose physic resembled the name. Her husband died due to some venereal diseases and she adopted a son, who also died. She enquired of his father's status and appreciated his scholarship in vedhas. Murti also came to the shop and they went away to a secluded place and Ambi told to Murti what he said to his mother last evening. Murti called him an idiot. In the mean while, Sonachalam, rushed and there is somebody from Ambi's home to fetch him up. Murti also went with Ambi to his house. They found Dr. Ramanujam checking Ambi's father and spoke to him without any hope. He said, he can give him a shot of cocaine to have a pain free death and consoled Ambi and his mother.

Ambi's mother is sitting by Vembu Iyer's side silently. Murti asked Ambi to give a Telegram to Delhi – to Sweete and Madras – to Avayam conveying the death news of Vembu Iyer. It was high noon and there were no shadows of ego. Everything is clear. It means that the death of the old man brings the family together. There are no more shadows of ego.[9]

Thus, this entire novella can be divided into two parts. One printed in ordinarily

typeset shows the protagonist's perspective of life. And the other is printed in italics to differentiate with Ambi's story, the inner feeling and inner world of protagonist's father's perspective of life. This differentiation makes the novella interesting to read and achieves the purpose of narrating the story with a moral - the 'I' in them is the cause of their lost life. The author bought out the human psychology through the portrayal of different generations of characters and their belief system. If there is a little bit understanding and a shadow of love, their life would become a high noon – brightest. How the multiculturalism and degeneration of values affects the life of all the couples -1. Ambi – Sweete, 2. Vemu Iyer – His Wife, 3. Sweete's father – her mother, Sonachalam and his wife commit blunder and lived alone at one stage of their life.

Though this is a novella, each and every sentence is packed with actions. Each and every character helps the protagonist to mend himself. Each and every action aims to move towards catharsis. Thus, this novella proves that the reason for the loss of life is the ego and nothing else. If all the four couples, lose their ego they would have won their life.

Works Cited

1. Trsns. Sivaramakrishnan, M.R. **High Noon and other Stories**, Chennai: New Horizon Media Pvt. Ltd., 2008.
2. http://sangeetnatak.gov.in/sna/awardeeslist.htm
3. http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/searchAuthor.jsp
4. http://en.wikipedia.org/wiki/Saraswati_Samman
5. http://en.wikipedia.org/wiki/Marupakkam
6. http://en.wikipedia.org/wiki/National_Film_Award_for_Best_Feature_Film 10
7. http://en.wikipedia.org/wiki/National_Film_Award_for_Best_Screenplay
8. http://en.wikipedia.org/wiki/National_Film_Award_%E2%80%93_Special_Jury_Award_/_Special_Mention_(Feature_Film)

Assistant Professor, Department of English,
National College (Autonomous)
Tiruchirappalli – 620 001
sriramachandraneng@nct.ac.in
+91 99445 68204

Research Article

A Study the Use of Social Networking Sites for Educational Purposes of Undergraduate Students

–Sudhir Sudam Kaware
–UshaTiwari
–Akhilesh Kumar Gupta

Background:

This is the era of science and technology, where information technology plays a vital role. Social networking sites allow students, teachers, and parents to receive information easily and connect them to academic groups of interest to make education more convenient and graceful.

Objectives: *The objectives of this present study are to identify the use of social networking sites for undergraduate students and to study the use of social networking sites for educational purposes of undergraduate students.*

Methods: *Qualitative research is conducted on 113 undergraduate students from two colleges affiliated with Atal Bihari Vajpayee Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh. The self-made questionnaire is used to collect the data.*

Conclusions: *The respondents responded that technical problems are faced when using internet connectivity for surfing social networking sites. The availability of internet for social networking sites is accessible. The majority of students responded that they choose the English language for social networking sites. The maximum number of students believe that they have been using it for 2 years and usually, they are using social networking sites at home more than in other places. Most students are studied through YouTube but not only for study, social networking sites are used by them for entertainment, communication, etc. they use social networking sites for 2-4 hours to study. Their overall beliefs and attitudes are normal about social networking sites.*

Keywords: Social Networking Site, Use, Undergraduate student

Introduction

Social networking sites are a special gift of

information technology. In simple words, it is a computer-based tool that is a means of establishing social relations between people who are related to the same interests and background or who are engaged in the same activities.These are the websites which provide the user an entry into the virtual world. This platform provides an opportunity for people to make new relationships, improve friendly relations with other human beings and create and share different types of information, ideas, etc. with each other which includes social networking sites like WhatsApp, Telegram, Facebook, Twitter, Instagram, LinkedIn, etc. According to the Global Digital Overview Report 2021, there are about 4.66 billion Internet users in worldwide, out of which 4.20 billion are active social media users and its users are increasing every moment and 4.15 billion are users who use social media from mobile phones**(Global Digital Overview Report, 2021**). At present, the exchange of information and communication of knowledge has been accelerated by a group of social networking sites. In today's era, it is capable of providing consumer-generated information. Among these internet consumers (social media users) youth are more in the age group of 15 to 24 years.

In this era of information technology, social networking sites are valuable for the educationists, teachers, and students of the educational world, from which every person in society has benefited that is whythe use of social networking sites in the education process is meaningful because we feel that in this the education process can be improved and it has the ability to simplify.Social networking sites offer students, teachers, and parents to receive information easily and connect them to academic groups of their interest in order to make education more convenient and graceful. Social networking tools provide multiple opportunities for students and institutions to improve learning experiences. Social networking sites (SNSs) spread and communicate audio, photos, documents, notes, and many more related to academics to its members. The information can easily be fetched in one place, equally available and, accessible for all members belonging to diverse financial groups.

The following Research Questions were raised based on the literature survey

1. How do undergraduate studentsuse social networking sites?
2. Do undergraduate students use social networking sites for educational purposes?

The objective of the present study

1. To identify the use of social networking sites for undergraduate students.
2. To study the use of social networking sites foreducational purposes of undergraduate students.

Research Methodology

Qualitative research is conducted for this study which aims to analyses the use of social networking sites by the undergraduate students of Bilaspur, Chhattisgarh for their educational purpose.

Population and Sample

The population of the study is all undergraduate students who are studying in affiliated colleges under the Atal Bihari Vajpayee Vishwavidyalaya (ABVV), Bilaspur(C.G.).

The researcher has purposefully selected two colleges for this study one is a government college (Jamuna Prasad Verma P.G. Arts and Commerce College, Bilaspur) and another is a private college i.e, D.L.S. Postgraduate College, Bilaspur. These two colleges are affiliated with the Atal Bihari Vajpayee Vishwavidyalaya (ABVV), Bilaspur (C.G.). From these two colleges, a total number of 113 students were selected Purposive sampling for the study, among them 59 students (girls, 15; boys, 44) from a private college and 53 students (girls, 22; boys, 31) from a government college were taken for the research work. The consent from the college head (Principal) and selected students were taken before the survey and screening of the students. The study was carried out among full-time students who were willing to participate in the study and committed honestly toanswering all the questions.

Tool and Method of data collection

The researcher usedself-made questionnaires to collect the data from the selected sample. The questionnaire was used to collect the dataset regarding the identification and use of Social Networking Sites (SNS) by undergraduate students for their educationalpurposes.

The questionnaire wasdistributed through online mode using Google form and offline mode using printed copies to selected students. The students were requested to read the questions carefully and answer all the questions accurately and honestly.Researchers ensure to keep students'names&personal information are keptconfidential.

Analysis

Proper strategies are used to analyze the quantitative and qualitative data. Thedataset was tabulated in MS Office Excel (2021) sheet, scored, and represented using pie charts and graphs for proper interpretation.

Results

The present study was carried out among 113undergraduate students. To study the use of social networking sites for educational purposes. Fifty-nine studentsfrom a private college and fifty-three studentsfrom a government college were taken for the present study.

InterpretationandFindings

Data analysis is the process of extracting information from the data received. Data analysis is the process of establishing data sets, relating their related models to their structures, and interpreting them. The collected data by Undergraduate students throughquestionnaires are as follows:

Objective 1: To identify the use of social networking sites for undergraduate students.

Q1. Do you have internet connectivity for social networking sites?

Result: Respondents were asked 'Do they have internet connectivity for social networking sites?', Result indicated that 85% of the respondents have access to social networking sites while 15% of the respondents do not have internet connectivity.

Interpretation: When the respondents were asked whether they have internet connectivity for social networking sites, it was found that most of the students (85%) have internet connectivity for social networking sites.

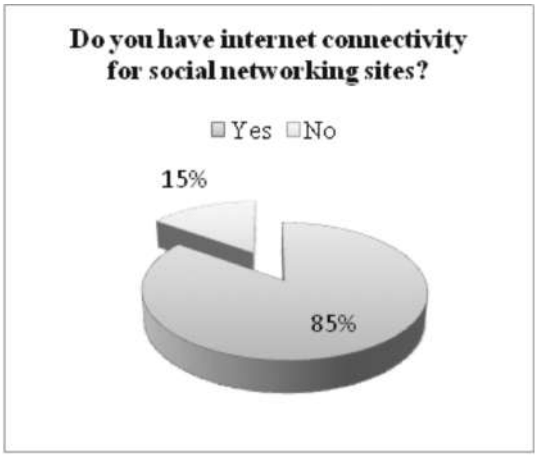

Figure: 1 Percentage of students Internet Connectivity Facility related Chart

Q2. What is the cost of internet connectivity for a social networking site according to you?

Result: Respondents were asked what do you think about the cost of internet connectivity for social networking sites? It is expensive according to 48% of the respondents. It is normal according to 49% of the people and cheap according to 3%.

Interpretation: When the respondents were asked how do you think the cost of internet connectivity for social networking sites, the 49% of the studentswas responded that the cost of internet connectivity is normal.

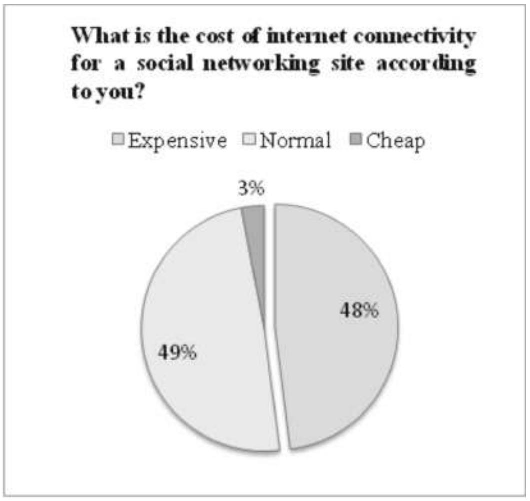

Figure 2: Internet connectivity cost-related chart

Q3. How long do you use social networking sites?

Result:14% of total students have responded that they have been using social networking sites for 1 year whereas 36% of total students uses itfor 2 years, 24% of total students uses it for 3 years and the rest 26% of total students uses it for 4 years.

Interpretation: Respondents were asked how long they had been using social networking sites. The result showed that the majority of the students have been using social networking sites for the last 2 years.

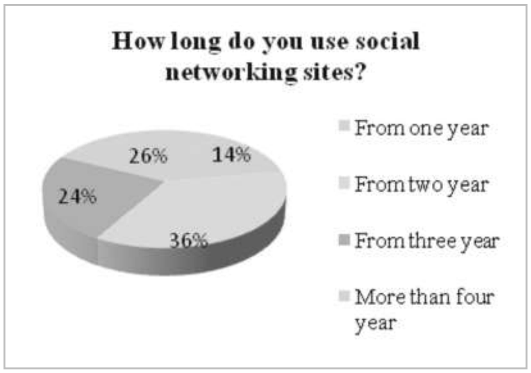

Figure 3: Duration for use of social networking sites related to chart

Q4. How much data do you spend on social networking sites in a day?

Result: The respondents were asked how much data do you spend on social networking sites in a day? According to the dataset, it shows that 32% of total students spend1GB/day, 49% of total students use1.5GB/day, 16% of total students use 2GB/day and only 3%of total students spend 3GB/day data for surfing social networking sites.

Interpretation: It was found thatmost studentsoften spent 1.5 GB per dayof data accessing social networking sites.

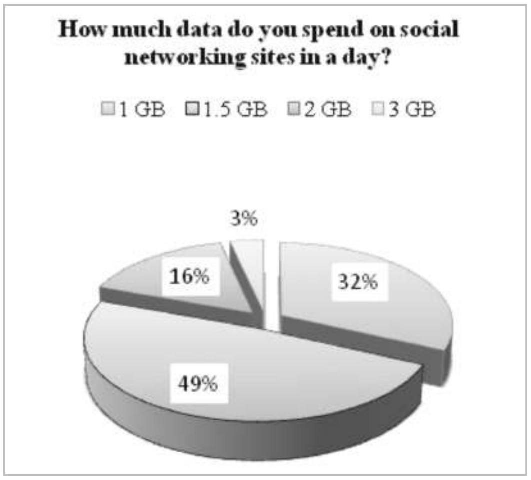

Figure. 4: Data uses for social networking sites

Q5. What devices do you use for social networking sites?

Result: Respondents were asked What tools do you use for social networking sites?

4% of respondents are using laptops whereas 92% of

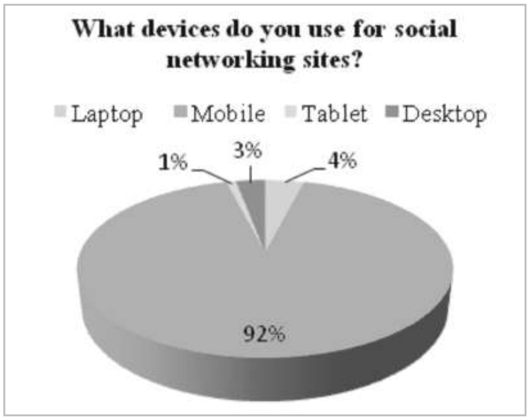

Figure 5:devicesfor social networking sites related to chart

respondents use mobile/smartphone, 3% of respondents use desktops and only 1% of respondents use tablets for accessing social networking sites.

Interpretation: The findings exhibited that 92% of students use mobile/ smartphones for the use of social networking sites.

Q6. Which language do you choose to use the Internet for social networking sites?

Result: Respondents were asked which language do you choose to use the internet for social networking sites.For this question, the given responses are followings- 23% of students use the Hindi Language whereas 58% of students use English Language and 19% use bilingual for accessing the internet for surfing SNS.

Interpretation: The result indicated that 58% of students prefer the English language for surfing social networking sites.

Figure 6:language chart for internet usage

Objective 2 To study the use of social networking sites for educational purposes of undergraduate students.

Q7. Which social networking sites do you mostly use to get study material?

Result: Respondents were asked which social networking sites do you use most to get study material? According to the respondents, 2% of the students use Facebook, 38% of the students use WhatsApp, 57% of the students use YouTube, and 3% of the students use telegrams to obtain study material.

Interpretation: Itwasfound that the most of the students study through YouTube.

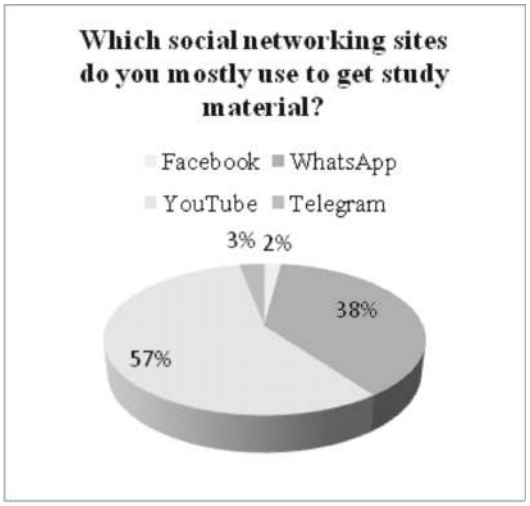

Figure 7: Chart of Most Used study material for using Social Networking Sites

Q8. What is the purpose of using social networking sites?

Result: Respondents were asked what is the purpose of using social networking sites? Which was answered by more than 60% of the respondents. In these questions, he /she was given four options. It is found that 22% of students use social networking sites for study, 1% for entertainment, 2% for dialogue/ conversation, and 75% of the respondents use social networking sites for all of the above.

Interpretation: Most of the students responded that they used social networking sites for study, entertainment, communication, and for fulfilling all the above-mentioned purposes.

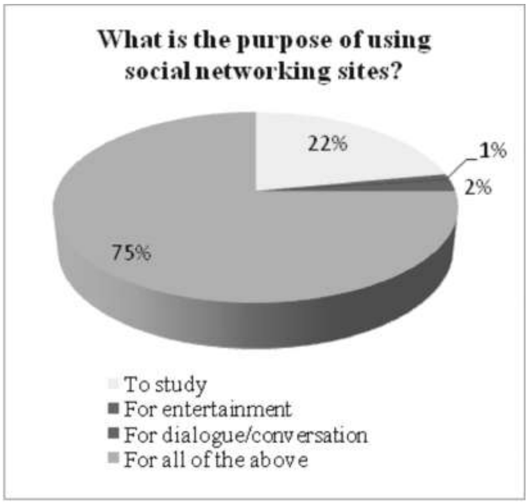

Figure 8 :Chart on the Purpose of Using Social Networking Sites

Q9. Do social networking sites make your study interesting and convenient?

Result: Respondent was asked whether social networking sites make your study interesting and convenient? According to 88% of the respondents that social networking sites make the study interesting and convenient and according to 12% of the respondents, social networking sites do not make the study interesting and enjoyable.

Interpretation: Most of the students (88%) respondedthat social networking sites make their studies interesting and convenient.

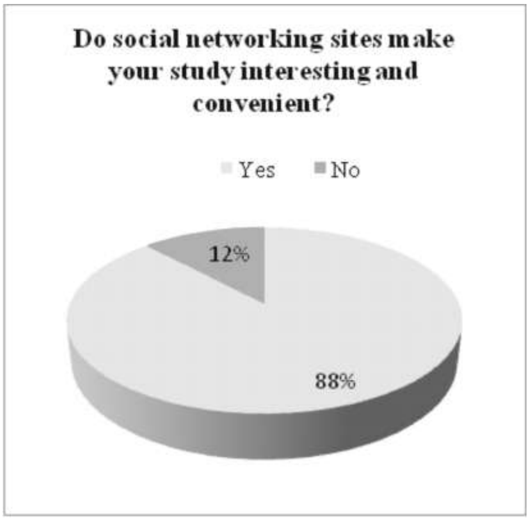

Figure 9 : Percentage chart to make study interesting by social networking sites

Q10. How long do you use social networking sites to study/study every day?

Result: Respondents were asked how long do you use social networking sites to study/study every day? The researcher found that 5% of students use social networking sites for more than 6 hours every day, 17% of students use 4-6 hours, 46% 2-4 hours 1-2 hours 32% of respondents use social networking sites daily to study.

Interpretation: Most of the students responded that they use social networking sites for 2-4 hours for study.

Q11. Which of these social networking sites do you use daily for study?

Result: Respondents were asked which of these social networking sites do you use for daily study? For this question researcher found that 2% of the students use Facebook, 22% of the students use WhatsApp,33% of the students use YouTube, 3% of the students use Telegram, and 40% of the students use all the above-mentioned social networking sites for study.

Interpretation: Most of the students responsed that all social networking sites which are given as an option (Facebook, WhatsApp, YouTube, telegram) are used by them for study.

Q12. The content related to your language is available using social networking sites?

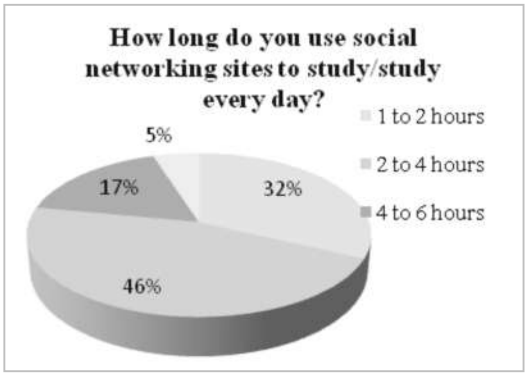

Figure 10 : Chart of daily time taken to use social networking sites for study

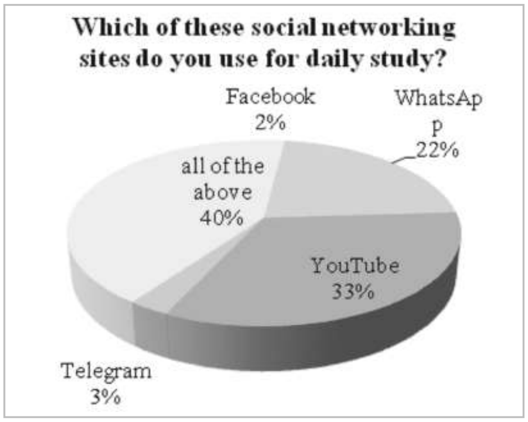

Figure 11 : Percentage Chart for daily study using social networking sites

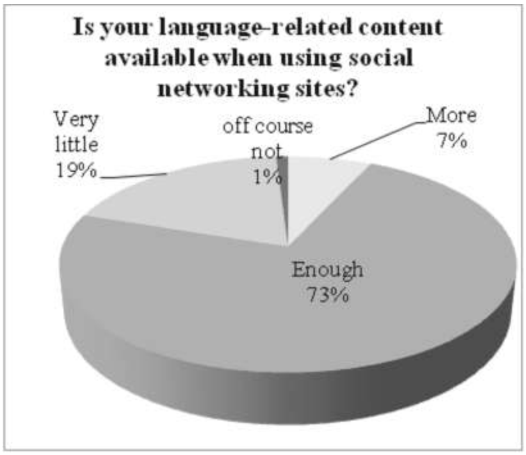

Figure 12 : language-related study material using SNS

Result: Generally, the number of users of social networking sites are available in different language-related subject material but in how much quantity on which the answer of the respondents are as follows- 7% of the students respond that the content available in their language are more in numbers, whereas 19% respond that content is less in numbers and 1% of the students respond that they do not get content in their language. But 73% of studentsrespond that language-related content is sufficiently available on Social Networking Sites.

Interpretation: On using social networking sites, most of the students responded that the subject material is available in sufficient quantity.

Q13. Are you comfortable using social networking sites?

Result: Students were asked whether they feel comfortable using social networking sites themselves. According to the respondents, 90% of the students feel that they are comfortable using social networking sites and 10% of the students feel uncomfortable while using social networking sites.

Interpretation: Most students feel that they are comfortableusing social networking sites.

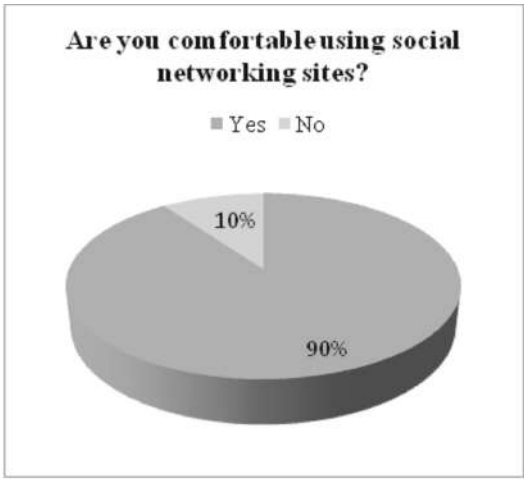

Figure 13 : Ease of using social networking sites related chart

Q14. What is the overall beliefs and attitudes toward the use of social networking sites in the study?

Results: Respondents were asked about their overall beliefs and attitudes toward the use of social networking sites in the study. Very good according to 13% of the respondents, 38% believe it is good, 48% believe it is normal and 1% believe that the overall belief and attitude towards the use of social networking sites in the study is very poor.

Interpretation: In the study, students were asked what is their overall beliefs and attitudes toward

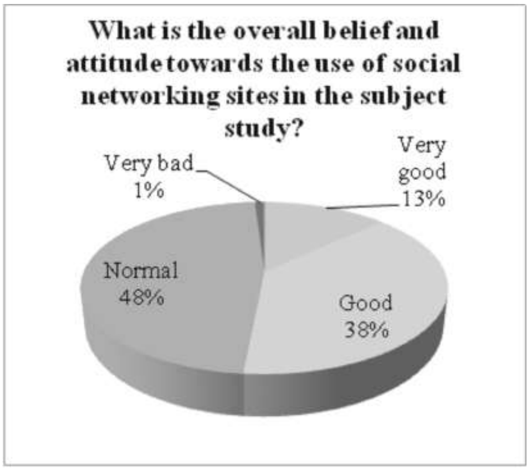

Figure 14 : Overall Confidence and Attitude Related Chart on Study Materials Received using social networking sites

social networking sites Most of the students' beliefs and attitudes are normal (48%) about social networking sites. However, most of the students collectively responded as good (13+38 = 51%)about social networking sites.

Conclusion

The results revealed that most of the students have internet connectivity which makes them comfortable and more interested in SNSs for their day-to-day educational purpose. There are contradictions about the cost of SNS because 49% of students assume internet connectivity is normal but 48% of students assume SNS is expensive for students.The maximum number of students believe that they have been using it for 2 years and usually, they are using social networking sites at home more than in other places. and they spend 1.5 GB of data on social networking sites. The majority of the students responded that SNSs are used for teaching and learning in their institution and the students are smoothly using mobile for the same. The majority of students responded that they choose the English language for social networking sites. The availability of internet for social networking sites is accessible.Most of the students respond that social networking sites make their studies interesting and convenient. Most students are studied through YouTube but not only for study, social networking sites are used by them for entertainment, communication, etc. they use social networking sites for 2-4 hours to study.Most of the students responded that all social networking sites which are given as an option (Facebook, WhatsApp, YouTube, telegram) are used by them for study.most of the students respond that the subject material is available in sufficient quantity.Their overall beliefs and attitudes are normal about social networking sites.

References

Alsaif A. (2016). Investigate the impact of social media on student. https://repository.cardiffmet.ac.uk/bitstream/handle/10369/8338/10303_Abdulwahaab_Saif_S_Alsaif_Investigate_The_Impact_of_Social_ Media_on_Students_108005_1416924025.pdf?sequence=1&isAllowed=y

Amin, Z., Mansoor, A., Hussain, S. R., Hashmat, F. (2016). Impact of Social Media of Student's Academic Performance, International Journal of Business and Management Invention, 5(4), 22-29.

Ansari, J.A.N., Khan, N.A. (2020). Exploring the role of social media in collaborative learning the new domain of learning. Smart Learn. Environ., 7, 9. https://doi.org/10.1186/s40561-020-00118-7.

Ary, E. J., & Brune, C. W. (2011). A comparison of student learning outcomes in traditional and online personal finance courses. MERLOT Journal of Online Learning and Teaching, 7(4), 465-474. https://jolt.merlot.org/vol7no4/brune_1211.htm.

Azizi, S. M., Soroush, A. and Khatony, A. (2019). The relationship between social networking addiction and academic performance in Iranian students of medical sciences: a cross-sectional study, BMC Psychology, 7(28).

Basha, S. A. (2018). A study of the Impact of Social Media on the Academic performance of MBA students, International Journal of Business Research (MIJBR), 5(1).

Bhandarkar A.M. et al. (2021). Impact of social media on the academic performance of students medical journal Armed forces india,77,s37-s41. http://doi.org/10.1016/j.mjafi.2020.10.021.
Boateng, R. O., Amankwaa, A. (2016). The Impact of Social Media on Student Academic Life in Higher Education, Global Journal of Human-Social Science: G Linguistics & Education, 16 (4).
Bose A. (2016). Social media and Education Sector: Enriching Relationship, Commentary-4, Global Media Journal, 7(1).
Dhawan, S. (2020). Online learning: A panacea in the time of COVID-19 crises. Journal of Educational Technology, 49(1), 5–22. https://doi.org/10.1177/0047239520934018..
Elkaseh, A., Wong, K., Fung, C. (2016). Perceived Ease of Use and Perceived Usefulness of Social Media for e-Learning in Libyan Higher Education: A Structural Equation Modeling Analysis. International Journal of Information and Education Technology. 6. 192-199. DOI: 10.7763/IJIET.2016.V6.683.
Goel, D. and Singh M. (2016). Impact of students Attitudes towards social media use in education on their Academic performance, AIMA Journal of Management & Research, 10 (2/4).
Lavuri, R., Navulla D., Yamini, P. (2019). Effect Of Social Media Networks on Academic Performance of Indian Students, Journal of Critical Reviews, 6 (4).
Karthikeyan P. and Lavanya R. (2016). A Study on the Usage of Social Networking Sites among College Students with reference to Erode District, Asian Journal of Research in Social Sciences and Humanities, 6(6), 1230.
Pokhrel, S., & Chhetri, R. (2021). A Literature Review on Impact of COVID-19 Pandemic on Teaching and Learning. Under graduate for the Future, 8(1), 133–141. https://doi.org/10.1177/2347631120983481.
Parua and Sahoo (2018).Attitude of Undergraduate Students towards Social Networking Sites for Their Academic Achievement. CHETANA,3, 64-72.
Raj, M., Bhattacherjee, S., Mukherjee, A. (2018). Usage of Online Social Networking Sites among School Students of Siliguri, West Bengal, India, Indian J Psychol Med. 40(5), 452–457.
Wang J.Y. et al (2017). Using mobile applications for learning: Effects of simulation design, visual-motor integration, and spatial ability on high school students' conceptual understanding,Volume 66, January 2017, Pages 103-113 https://doi.org/10.1016/j.chb.2016.09.032.http://eduhutch.blogspot.com/2021/07/definition-of-education.html
Zachos, G., Efrosyni-Alkisti, P., Ioannis A. (2018). Social Media Use in Higher Education: A Review, Education Sciences, 8 (4), 194. https://doi.org/10.3390/educsci8040194.
Zargar, W. A. (2018). Impact of Social Media on Education with Positive and Negative Aspects, International Journal of Management, IT & Engineering, 8 (3).https://datareportal.com/reports/digital-2021-global-overview-report
Initiatives of MHRD Government of India. https://vnit.ac.in/wp-content/uploads/2020/02/ICT-Initiatives-of-MHRD-Government-of-India.pdf.

Assistant Professor, Department of Education, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, C.G., 495009
M.Ed. Student, Department of Education, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, C.G., 495009
Research Scholar, Department of Education, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, C.G., 495009

Portrayal of Women and Transgenders in Select Plays of Mahesh Dattani

–Dr. R. Suresh Kumar

Abstract:

Drama is literature that "walks and talks."In the literary arena, it has a long presence since the times ofclassical antiquity. In this context, it is a fact that the concepts conceived by the playwrights come in theform of texts and later they find articulation on the stage through the mouth of the characters. The playrequires an actor to perform using his/her eyes, ears, emotions and intellect. It creates an opportunity forthe actors to establish direct communication with the audience. When composing a play, a playwrightneeds to establish coordination among several rudiments so as to cobble an authentic and entertainingwork. This research article delves into understanding the relationship between all genders in the plays ofMahesh Dattani.In his works, he ventures into comparing the life of women's society with the societyof the third gender. In this, both 'new women' and 'suppressed women' constitute one group and theycome under women's society. In contrast, Lesbians, Gays, Bisexuals and Transgenders constitute thethirdsociety. Thelogicbehindthisanalysis isto understand relationshipbetweengroups.

Keywords: Trans genders,oppression, aesthetic needs, gender relations, humiliation.

The term gender indicates sexual difference. Gender relations are both intertwined and interrelated. It talks about the attributes and qualities given to the members of the society as well as thecultural practices that determine the gender roles. Hence, it is considered as social label. Gender is based on attributes which are considered inherent to the male or the femaleof the human species.Theemergence of the third gender which bends the gender rules poses the problem of

categorization, but in the process becomes a category in itself. Mahesh Dattani breaks the traditional stereo typing and portraying of the female characters and presents before us confident individuals who are capable ofreacting to any injustice meted out to them in ways that are insurrectionist. Mahesh Dattani has been athiscreativebest in portrayingwomencharacterswithout anybias against them.

In the opinion of Lakshmi Subramanyam:

> "Theyarehumans. Theywant something.Theyfaceobstacles. Theywill do anything in their power toget it. All I focus is the powerlessness of thesepeople….And I am not going to change my sensibilities for political correctnesseither. My only defense is to change my sensibilities for political correctnesseither.Myonlydefense is to saythatIam not biased against women. (Subramanyam).

The way Dattani projects women characters is endowed with enormous meaning. Oppression ofthe female is an accepted and unchallenged way of life in both rich and poor families. For generationspatriarchy hasorganizeda hierarchical society and treatedwomen as the second sex; on their partwomen have allowed themselves to be manipulated by men. It requires political will and intellectualunderstanding to bring about changes in a society that has seen women as no betterthan slaves within the household, by colonizing their mind and body. To liberate the minds of men from diehard traditional thinking and enabling them to understand the new reality wherein women are treated on a parwith them requires artistic finesse and courage to present the truth, Dattani has them plenty and he hasauthored plays such as *Dance Like A Man, Bravely Fought the Queen, Tara, Thirty Days in September,Where There is aWill* and similar plays, targeting the urban audience.As a medium drama allows female characters on stage to connect immediately with the audience; in his case mostly sophisticated urban audience who behind this thin veneer harbors age old prejudices. The critics need to bear in theirminds that most Indian women possess qualities like grace, elegance and poise. They don the roles suchas mother, daughter and wife in the most willful manner. In every role they play, they take decisive stepsto exert control over the financial position of the family, household management as well as maintain aharmonious relationship in the family. Their qualities and behavior are based on the culture in which they growup. Though several women characters involve themselves in several kinds of activities like shopping, partying, dancing, doing household works, they are disappointed and distraught due to theirinability to find lasting comfort and solace. Women struggle hard to establish their identity at home aswell as in the society. At the start of the play, the viewers could find the women to be puppets in thehands of men. The same women would progress from a state of servitude to establish their personalfreedomafter a great struggle.Theirgrit, indomitable courage, extraordinary will and sometimes insurrectionist spirit show

them emerge as self-dependent characters. Powerful dialogues with incisivewords and the modern day lingo add to the rich texture of the play. Dattani believes in the magic of thespoken words and therefore lays emphasis on the performance of his characters. While acting on thestage, Dattani's characters are aware of the contemporary reality that stares in the audience's face. Hesays, "If you look at my plays, you would find that each and every character has, you know his or herspace in the play, which an actor can develop" (Chaudhuri 104). He says so, for the simple reason muchstressisnot madeon theprintedwords buton the utteranceof wordsthrough themouthof characters.

In the play *Dance like aMan,*Ratna comes asadominating and ruthlessly ambitious woman.She bravely stands up to herautocraticfather-in-law Amritlal Parekhin heryouthand alsogives noroom for her husband to control her throughout the play. Ratna is an emotionally high-strung womanwho is always on the verge of a nervous breakdown and like a typicalIndian woman she is anxiousabout her husband's heavy drinking and at one stage she bursts out into the declaration of her failure inhercareer:

> "yes, your father was right. Dance has brought us nowhere. It's his curse on us.Nothing seems to be worth it anymore. Oh, It's all so worthless. You should have listened to your father. He was right. We were never anything great, but an average humanbeing. (*Collected Plays* 391)

Ratna is a woman of many parts. She is a partly devoted wife, loving mother, and defiant daughter-in-law. She is a very ambitious lady who could go to any extent to fulfill her dreams and desires. It isevident through the conversation between Ratna and Jairaj that Ratna has destroyed Jairaj's dancingcareer only to assure her success in the same. She never accepts that she is responsible for the ruin ofJairaj's dancing career.On the other hand, Jairajnurtures this belief that his wife is solely responsibleforthe death of theirson,Shankar:

> "Jairaj:Nomatterhowcleveran actressyouare,youcan'tconvincemethat you are playing the part of devoted mother very well. You wouldn'tevenknow whereto start.

Ratna: I can start by ending this sick talk with you and feeding the baby. If you have nothing else to say, goodnight." (*Collected Plays*394).

Through his characters, Dattani is able to exhibit the extent to which modern women would dare to go tofulfill their ambitions. These women are societal representatives who are radical in their views and pathbreakers in their roles as wives and mothers.Also, the reader may notice a strong identity assertion onthe part of these women and every action of theirs is oriented towards self-actualization. In the sameplay, there isample space for other characters, time periods and varied locales. He makes effective usage of lighting and it enables him to move from one

frame to another. In this context, it is pertinent topointoutthe remarks of C.K.Meena that,"this distribution of the action among different levels on stage… not onlymakes his plays visually exciting, but makes them move at a snappy space."(Meena143).

His next play *Tara* talks about both physical and emotional separation which has taken place between two conjoined twins namely: Tara and Chandan. Tara happens to be not only an independent character, but also turns out to be an icon among Indian girls who are forced to under go humiliation because of traditions and societal compulsions. Even in her casual talks with others, sheexpresses her pitiable condition in a society that reminds her of male supremacy on every occasion. Indeed there comes an opportunity for Tara to express her feelings to Dr.Thakkar who talks about thedetailsof surgeryto severeboth of them. This impels Tarato comment that:

> "Oh, what a waste! A waste of money. Why spend all the money to keep mealive? It cannot matter whether I live or die. There are thousands of poor sickpeopleon the roadswho could begivencareandattention, andIthinkIknowwhatIwillmakeofmyself.Iwill be a career of those people. I.. I will spend the rest of my life feeding and clothing those… starving naked millions every one is talking about." (*Collected Plays* 362)

Through a character named Roopa, the playwright brings to light the evil practice of femaleinfanticide that is followed among certain Gujarathis. Here the female baby is often killed by feeding itwith excessive milk. Tara is portrayed in the play as a girl who speaks and acts tough in spite of herhandicap. Still, her behavior is very much advanced for a girl of her age and she exhibits a kind of stoicism that is rare. She maintains a very cordial relationship with her family members and more so with her sibilant Chandan. She is more focused about her brother's future than herown.Shestatesthat," we women mature fast. Speaking of maturity, you better not skip any physiotherapy sessions. Daddywants you to be big and sturdy." (*Collected Plays* 374). She conveys her excitement and anguish bysaying that,

> "Maybe we still are. Like we've always been inseparable. Theway we started life. Twolivesonebody,in one comfortable womb. Tillwe wereformed out." … (*Collected Plays* 375).

Bharathi, the mother of Tara, is yet another character who plays a prominent role in the play.Although Bharathi hails from a modern Kannadiga family, her husband is given to patriarchal way oflife. She is like any other woman in her social milieu caught up between her choices under societal andfamilial pressures. Her prejudices are the outcome of her helplessness in an andocentric society. Hersense of guilt drives her to the brink of insanity and hysteria. She resembles many other women who aretorn between pressures emanating from the family and the society. Over a period of time, she becomes asplit personality because of her role as a mother and a

woman. She is left with no free will to assert herown choices to craft her own destiny. She continues to suffer from pangs of guilt for having denied Taraher legs. Bharati plays her psychological game of becoming over protective of Tara. She quenches the fire of her guilt with love and care and tells Chandan of her plan for Tara,"Yes, I plan for her happiness. I mean to give her alllove and affection which I cangive. It's what she…deserves. Love can makeup for a lot" (*Collected Plays* 371).Tara and Bharati, in their own way, perform their typical role of beingan Indian daughter and mother as portrayed by Dattani through intense dialogues and action. Both ofthemsuppress and raise their voicewhen the situation demands.

Transgendered individuals are the unacknowledged beings since the origin of human race. The socialforces since time immemorial demand conformity to notions of sexual and gender identity. Judith Butlerargues in her *Gender Trouble* that human subjectivity is always already variable and various. While discussing gender the focus is mostly on the biological functions and the contours of the human body. Further, the idea of desire itself becomes complicated because of the insistence of biological differenceas the basis. Sexual difference has always been treated as essentially binary and fundamentally natural.And oppression on the basis of sexual identity is all too common and women are victims in everypatriarchal society. The transgendered person, who is degradedly designated as 'eunuch' or 'gender-bender,' belongs to a unique category of individuals who are not "othered" or regarded as the significantother either to the male or the female of the species. In the absence of a dialogic relationship between an imaginary orgeneralized'other' discussion of identity and desire of the transgenders has become problematic to those given to traditional thinking. Psychic difference between sexes is also cited as thereason for not treating the other as equal. On account of these differences, physical and psychic, the transgendered individuals suffer discrimination in many ways.

In the tradition bound Indian society, the transgenders are treated as social outcasts and are marginalized to such an extent that they have to live in colonies on the periphery of towns and cities.Abandoned by family, friends and relatives they have been denied education and livelihood for a longtime. There is also this false belief that they are sub humans or abnormal beings who are given to 'queersex.'Too vercome such irrational mindset and to find social acceptance and living space, the transgenders have to fight a long battle.Dattani has been vociferous in his demand for equal respect andtreatment in the society. Saraswathi in her article titled "Unmasking Societal Hypocrisy: In the Plays ofMahesh Dattani" statesthat "Dattani tackles what he calls the invisible issues" of the Indian society,issues not known to us, but of which we wouldrather not talkabout; issues we wouldconvenientlycoverup with arugand act as though theydo notexist."(Saraswathi274-275).

Whenever someone performs the role of a transgender on the stage, there is

this need tofocus more on words, silence, sound effects, background music, facial expression, gestures and so on.Dattani has beautifully depicted the sociological,sexual, psychological and cultural violence faced bythe transgender community in the play *Seven Steps around the Fire*. He gives his full effort to thelanguage and characterization to touch the heart, mind and soul of the audience.When the livingconditions of the transgenders are compared and contrasted with women and homosexuals, one couldunderstand the pitiable condition of them. In the play *Seven Steps around the Fire,* Dattani states that, "perceived as lowest of the low, they yearn for family and love." The pitiable condition of the Hajira isdisplayedthrough themaiden appearanceof Anarkalion the stage.

It is understood from the play that Anarkali has been kept in a male cell and treatedshabbily. She could not stand false sympathy anymore and restrains herself from talking to Uma. Afterlearning that Uma belongs to the family of Deputy Commissioner of Police, Anarkali pleads Uma torelease her. Munuswamy behaves rudely with her and asks the prisoners to attack her. Uma gets deeplydisturbed by the turn of these events that she begins to think about their identity and present condition,She says, "Nobody seems to know anything about them. Neither do they. Did they come to this countrywith Islam, or are they a part of our glorious Hindu tradition? Why they are so much obsessed withweddingsand ceremoniesof childbirth"(*Collected Plays*27).

In the very beginning of the play itself we see how the *Hijras* feel lonely and develop a sense offrustration and isolation and think that they are not a part of the society and are sinners who are alwayskept aloof from others. Their inner feeling of being the member of a society is seen in the laconic speech of Champa:

> Champa: Oh! So you areasocialworker.Saythat.Uma:Yes….Iamasocial worker.
>
> Champa: Please excuse me, madam. I didn't know that… you seeus also associety, no? (*Collected Plays* 19)

These words of Champa express the innermost longing of transgenders who are considered lower thananimals and not as a part of the society. The male characters in the play address the transgenders aftertheir common name "*Hijra*".The prejudice against the transgenders is reflected even in the languageused to refer to them. 'She' or 'He' is the pronoun used for female and male, but there is no pronoun forthe transgender. Although they have their own name, they are addressed using third person singular thatis'it'-theterm which isusedforaninanimate objectorathing.Such traces arefoundintheplay:

> Munuswamy:You may see the *Hijra* now if you wish, madam.
>
> Uma: Will she talk to me.
>
> Munuswamy: (chuckling). She! Ofcourse, it will talk to you. We will be

atitupifit doesn't. (*Collected Plays*9)

Though facial expressions and dress code of the transgenders enable others to understand thatthey have undergone change in their gender and behave more like women. Yet, the society is not yetready to give them a deserving treatment. There is an element of dilemma in treating them as male orfemale and purely for this reason they have become a laughing stock of the society. The fact is that alltransgenders are very much willing to accept the others and want to be accepted in return. Yet there aresome vicious elements in the society who perpetuate the belief that they are 'sinners' and 'violentcreatures' and it is safeto maintain a distancefrom them.

From the study carried out, it is evident that Mahesh Dattani has been ruthless in exhibiting the foiblesprevailing in the society. It is understood that the Indian women had been under oppression for centuriesand were treated as subservient to men folk. In comparison, the transgenders simply fade into oblivion.They are not even treated as human beings. Social iniquity, lack of access to education, health service,legalredressandevenpublicspacearesomeoftheconcernsthatareaddressedspiritedly inallearnestness. In this fast-paced world, the social changes are however slow to come by. But MaheshDattaniaddresses the issues boldlyand in a wayhis plays havebecomestrongsocial satires.

WorksCited

Agarwal, Beena. *Mahesh Dattani's Plays:A New Horizon in Indian Theatre*. 2015.

Alam, Fakrul. *South Asian Writers in English*. Gale/Cengage Learning, 2006.

Biswal, Pravasini. "Gender Discrimination in Mahesh Dattani's Play "Dance Like a Man" and"Tara"- A Critical Analysis." *International Journal of English Literature and Social Sciences*,vol. 4,no. 6, 2019, pp. 2038-2041.

Chaudhuri, Asha K. *Mahesh Dattani: An Introduction*. Foundation Books, 2005.

Dattani, Mahesh. *Collected Plays*. Penguin Books, New Delhi, 2005.

—. Interview. *The Hindu*, [Madurai], 8 Sept. 2019.

Mathew, Dr B. "Inequality of Gender-Based Victimization in Mahesh Dattani's Tara." *SSRNElectronicJournal*, 2018.

Meena, CK. "Dattani's Dance Like a Man : A psychological Overview." *POINTS OF VIEW*, vol. 14,2007, pp. 143-147.

Rajeswari. *GENDER RELATIONS AND ITS POST-MODERN IMPACT AS REVEALED IN THE SELECT PLAYS OF MAHESH DATTANI*. 2017. Bharathiar University, PhD dissertation.

Saraswathi." Unmasking of Societal Hypocrisy." *SSRNE lectronic Journal*, vol. 17, 2015, pp.274-275.

Subramanyam, Lakshmi. "Total Freedom: Freedom from violence is the true liberation." *Times of India*, [Madurai], 26Jan. 2019.

❑❑❑

Assistant Professor, Department of English, National College, Trichy-01
Email: rsuresh.r.d@gmail.com

Research Article

A Reading of Amiatv Ghosh's *The Hungry Tide* through the Prism of Cosmopolitanism

–Dr. Garima Jain

Abstract:

Cosmopolitanism or the cosmopolitan theory is the recent ongoing critical move in the academics after the much heated and lingering discussions on postcolonial criticism in the halls of humanities. Simply, it orients towards the idea of world citizenship or looks at the world as a global village where all human beings belong to a single community, on the basis of a shared morality. The ever-increasing terror activities, unrest and distrust all over the world in the 21st century make the social activists and thinkers in social sciences find a way to re-establish faith in humanity and values. Though a normative theory, cosmopolitanism aims for a world, where individuals have mutual respect for each other despite their differing religious, political and cultural beliefs.

In the 21st century, we see cosmopolitanism emerging as a way of understanding the implications of social, cultural and political transformations and contacts that transcend territorial boundaries. Cosmopolitanism refers to notions as diverse as global democratic institutions and transnational justice, 'post-national' forms of citizenship and belonging, together with individual values and cultural dispositions. The essence of cosmopolitanism is the idea of moving beyond one's own specific political, communal, territorial, cultural attachments to give allegiance to the wider human community. Amitav Ghosh as a novelist shows cosmopolitan attitude and imagination in his tales which are an outstanding blend of facts and fancy, research and story. Ghosh's cosmopolitanism is about accepting the world in its vastness, and to be able to see there is the existence of the'other'. He understands that there is a presence of difference and his novels celebrate difference. At the same time, there is also present this thread of humanity, love and

understanding which connect us to each other. In his dialogue with Dipesh Chakrabarty, Ghosh explains this phenomenon clearly:

> One of the subtler pleasures of being older is that one comes to understand that the true meaning of the Arabic saying, 'ad-dunia wasa'a'; 'the world is wide'. To be able to understand and appreciate ideas that are different from one's own is a gift in itself: to look for agreement is really futile since – let us face it – much of the time, it's quite a struggle even to agree with oneself.(166)

In this article, I try to read Amitav Ghosh's novel*The Hungry Tide* in the light of cosmopolitan theory bringing forth a deep lying cosmopolitan consciousness under neath it. In the next sections of this article, the threads of worldly brotherhood, eco-cosmopolitanism, mingling of local and global, religious syncretism, and hope for better future are being explored in this novel.

I

The novel *The Hungry Tide* (2004) of Amitav Ghosh tells the tale of three main characters – Piya, Kanai and Fokir in all its seductiveness and gripping manner. Also runs parallel to this, the story of another trio, from a generation earlier - Horen, Nirmal and Kusum. The novelist presents the eco-system of the tide country which is very special, unusual and unpredictable. It is nearly impossible for anyone to survive in the utmost inhospitable of circumstances where nature and animals pose as enemies to humans. Sir Daniel Hamilton, the Scotchman, who has nurtured his life on a lesson taught at school "labour conquers everything" (*THT* 49), comes to India to seek better fortune and due to his workmanship becomes the head of a shipping company, hence, a very rich man. While passing once on his ship through Calcutta towards of the way of Bengal, he is mesmerized by the mangrove covered islands and asks himself, "But if people lived there once, why shouldn't they again?" (*THT* 50) After collecting information and making up his mind, he buys ten thousand acres of the tide country from the British government. What he had in mind was a purely cosmopolitan idea - everyone irrespective of caste, creed, money and the differential aspects in life was welcome on his land. And people, who were truly dispossessed of every kind, came flocking to this place from northern Orissa, eastern Bengal and the Santhal Paraganas. Life and survival was definitely not an easy affair in the tide country where tigers and crocodiles were always ready to hunt them down and tides played the endless game of merging islands and mangroves into water. Still, people came and stayed there for this place suited them; mud, tide and river were in their blood. They were homeless, without any money and no other part of the world charmed them. So they were fascinated and driven by Sir Daniel's dream. His dream was to "build a new society, a new kind of country……….run by co-operatives, where people wouldn't exploit each other and everyone would have a share in the land" (*THT* 52). He made arrangements for electricity, telephone and even currency in this part of the country. What his

banknote read, was also a cosmopolitan idea in nature – "The note is based on the living man, not on the dead coin. It costs practically nothing, and yields a dividend of One Hundred Percent in land reclaimed, tanks excavated, houses built, etc. and in a more healthy and abundant life" (*THT*53).

Daniel Hamilton died in 1939 and his estate passed in the possession of his nephew James Hamilton who did not possess his uncle's dream and vision. Nirmal and Nilima, forced by circumstances come to Lusibari for periodical escape as Nirmal being a staunch leftist idealist has put his life in danger in Kolkata. But it turns out that Lusibari becomes their permanent abode. Nilima engages into some useful social works oriented towards the upliftment of the natives in Lusibari and Nirmal nourishes in his heart poetic desires and revolutionary ideals.

II

The novel is a great reworking of '**eco-cosmopolitanism**'.The main concern in the novel *The Hungry Tide* is about the dichotomy or relationship between nature and man. In deepest possible details, Ghosh presents the fascinating and sensitive ecology of the Sundarbans, which he refers to as "the tide country" time and again in the novel. The publication of the novel made a worldwide sensation among the ecologists as Ghosh's presentation of the tsunami kind of storm in the book was interpreted as" awarning–a premonition to the world" (Walia).

This ecology dominated narrative of the novel showcasing characters desperately trying to balance the forces of nature and man's desire to survive calls for what the renowned critic and academician Ursula Heise terms as "Eco-cosmopolitanism" (11). To put it simply, it can be said to be an amalgam of 'ecocriticism' and 'cosmopolitanism'. Primarily an Anglo- American imagination, this cross-pollination of ecocritical and postcolonial scholarship has extended its horizons worldwide. Ecocriticism is the omnibus term most commonly used to refer to environmentally oriented study of literature. Buell, Heise and Thornber in their article write that ecocriticism or environmental criticism begin with the conviction that the arts of imagination like literature and others by their power of word and immediate expression can contribute significantly "to the understanding of environmental problems : the multiple forms of Eco degradation that afflict the plant Earth today"(418). Ursula Heise called for the need of a more cosmopolitan and less U.S. centered ecocriticism, and thus introduced the term 'eco-cosmopolitanism'. From cosmopolitanism, it borrows the idea of belonging to the planet as a whole, rejecting or cutting down topophilic sentiments to a specific place. The Chinese scholar Yi-Fu Tuan explains *topophilia* as "affective ties to a specific environment" or "coupling sentiments with place" (113). In *The Hungry Tide,* on the contrary, we see that people can also develop ties with a place they are not actually from. It is understood that to develop ties with place is a very normal and worldwide phenomena.

Alexa Weik summarizes it substantially that from cosmopolitanism, eco-

cosmopolitanism borrows its open-mindedness, inclusiveness and concern for human solidarity across boundaries of nation, class, race or religion; and from ecocriticism, it takes its interest in connectedness that goes beyond the purely human- towards environment and animal (123). This eco-cosmopolitanism, as developed by Heise and as embraced by Ghosh in his novel *The Hungry Tide* realizes that the realms of the human and the more than human are utterly inter-dependent. Postcolonial scholars like Rob Nixon and Graham Huggan also criticize the lack of environment consciousness among postcolonial scholars, advocating a new combination of postcolonial and ecocritical approaches. In his recent non-fiction work, *The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable*, Amitav Ghosh points towards writers' indifference towards issues of climate changes and ecological disasters in their stories. He brings into consideration that there is a very minimal amount of literary works dealing with global problems of ecology in the modern times (9). *The Hungry Tide* adorably combines ecological crisis, local and global politics, and man-animal encounter, bringing to fore the need for existence of eco-cosmopolitan ideas.

III

The Hungry Tide astonishingly merges the **local with the global** when quasi-nomadic Piya, the American cetologist of Indian origin and Kanai, Delhi-based business-minded translator reach Lusibari, an island in the Sundarbans in the Bay of Bengal. Nilima, Nirmal, Fokir, Moyna and others are characters who permanently live in Lusibari and the intermingling of the above two – the outsiders and the hosts - is shown as reasonable and interesting.

These two groups are apparently different from each other in their concerns, knowledge and living and yet we find them merging with each other normally and effortlessly - an amazing and rare blend of the local and global. Most significant and enduring among these combinations, we find Piya and Fokir getting their way in the waterways of the tide country. Piya is a scientist, who has come to the Sundarbans for the research on Orcaella brevirostis, a kind of river dolphin. Her parents are from Bengal but she knows no Bengali and could speak only English. Fokir is a fisherman who has no knowledge of English but is adept and well accustomed with the ecological nuances of the tide country and the ways of the rivers. We agree with Kanai when he puts it harshly before Piya that there is nothing in common between her and Fokir: "he is a fisherman and you're a scientist" (*THT* 268). Still, we are convinced that Piya and Fokir as a team, as an interactive combination of Fokir's place-based ecological knowledge and Piya's cosmopolitan and mediated knowledge bring out wonderful results. Fokir is confined to the Sundarbans, and has not seen the world outside Lusibari; while Piya has lived in many countries and among many cultures, thus representing the cosmopolitan impulse in the novel. One is left amazed at Piya and Fokir's capacity to communicate to each other even when they share no common language. Piya manages to tell Fokir that she is

looking for river dolphins and Fokir knows where to find them.

In a broad way it can be said that Fokir and Piya in the novel are representatives of the topophile and the cosmopolitan respectively and the interconnectedness of the two is the main idea of the novel. And this interconnectedness could also be seen as the prime answer to the question of fundamental disconnectedness on the art of the state government with local concerns as local government doesn't take seriously "the place-based needs of its own citizens and vulnerable ecosystems" (Weik 125).

Also interesting to note that none of the main protagonists in *The Hungry Tide* is actually born in the tide country, all of them categorize themselves into what we call 'postcolonial migration'. Nilima and Nirmal have fled to the Sundarbans to save their life from fundamentalists in Kolkata and even Fokir is not a 'native' though he finds himself at home there. Kusum gave birth to Fokir somewhere near Dhanbad in Madhya Pradesh. Pablo Mukherjee attests this as "mobility, migrancy, uprootedness permeate the world of the novel" and this mobility extends to the land itself too - "the very territory the characters gather upon and crisscross is a mobile one" (150). By the mobility of land, Mukherjee is here pointing towards the peculiar ecological system of the tide country where existing islands are submerged in water and new islands get formed every day due to sea level rise and continuous tides.

Ghosh in his work The *Great Derangement: Climate Change and Beyond* has made painstaking efforts to tell the world of the future pordents, humanity can face caused by climate change and global warming. He has also explained how difficult it is to portray convincingly such catastrophic incidents in a fictional work. *The Hungry Tide*, this way, rocks on high heels as it makes us believe how sensitive the regions like Sundarbans are due to notable rise of sea-level during past two decades. Ghosh directly hints in *Great Derangement* that cities like Kolkata, New York and Bangkok are in constant danger of being submerged into water. The catastrophic tsunami of December 25, 2004 in Southeast Asia caused by an earthquake which claimed more than two lakh lives in fourteen countries especially Indonesia, Sri Lanka, India and Thailand gets a kind of real picturization in the tsunami depicted in *The Hungry Tide*.

The plight of the poor settlers of Morichjhapi is also brought before us in one of the most intense paragraphs of the novel evoking pathos and concern. When being stopped by police from leaving the island, a group of settlers on a simple rowing boat cry in unison, "'Amrakara? Bastuara'. Who are we? We are the dispossessed" (*THT* 254). And this slogan unsettles Nirmal deeply as he writes in his notebook:

> It seemed at the moment a question being addressed to the very heavens, not just for themselves but on behalf of a bewildered humankind. Who, indeed, are we? Where do we belong? Who was I? Where did I belong? In Calcutta or in the tide country? In India or across the border? (*THT* 254)

The spirit of (eco)-cosmopolitanism comes alive in this paragraph as it connect

the settlers, Nirmal himself and all of humankind. Through Nirmal, Ghosh seems to mouth his own views that the dispossessed setters are not a separate mark on the planet rather they are linked with all other human beings in the world. Again, it is noteworthy here, as Pablo Mukherjee also points out that Nirmal's understanding of state of refugees undergoes a change with this direct engagement with local people (152). Here we find a similarity between Nirmal's and Piya's experiences – Nirmal is able to correct his political views only offer his engagement with local realities of Morichjhapi and similarly Piya also develops a strong solidarity with the place Lusibari and its poor inhabitants only after her confrontation with the storm at Garjontola.

As we read *Hungry Tide* from eco-cosmopolitan perspectives, we get an understanding that environmental justice lie in balancing both human and non-human needs. This concept even adds to cosmopolitanism, aspect of human and environmental sustainability. It can assist in having "a different idea of the universal" (Mukherjee 151) - a universality which accepts and inhabits differences rather than repudiating them.

IV

The accommodation of differences which can be named as **religious and cultural syncretism** is also seen in *The Hungry Tide*. Nirmal is the one who as he writes in his notebook kept himself distant from 'religious devotion' considering them the products of 'false consciousness' (*THT* 222). Other than this, the horrible experiences of partition and his moral duties as a schoolmaster made him shun all sorts of religious beliefs. For the very first time, he happens to attend a Bon Bibi puja done by Horen and Kusum on the island of Garjontola. Bon Bibi and her brother Shah Jangoli are local deities, considered by the natives to be the protectors of the tide country. As the puja proceeded, Nirmal is amazed to hear Horen reciting not some Hindi or Sanskrit verses, what Horen sings were Arabic invocations. But the rhyhm of these chantings matched that of a usual Hindu puja in a temple. The language of the verses was a mixture of Bangla, Arabic and Persian. The narrative was about how Dukhey was left on the shore of an island to be devoured by the tiger-demon Dokkhin Rai, and of his rescue by Bon Bibi and Shah Jangoli. Even in the book *Bon Bibi Karamoti* (The Miracles of Bon Bibi), to Nirmal's great surprise, the pages opened to the right, as in Arabic, not to the left as in Bangla. The line "too looked like prose and read like verse, a strange hybrid" (*THT* 247). So this religious and cultural syncretism peculiar of the tide country is a reflection of cosmopolitan ideals of giving space to differences. And no wonder, this merging of differences creates something really wonderful, as *Bon Bibir Karamoti*.

To conclude, it can be said that the novel *Hungry Tide* convinces us that in the world we live, "the global positioning and the imbrications derived from it" matter more than ever before both on the level of action, word and meaning (Moraru

180). In *the Hungry Tide*, we see the working agency of an environmentally oriented cosmopolitanism or 'world environmental citizenship'. This allows more trust in the global imagination of the environment. This imagination is inquiring at the same time and tries to find out the limitations of the local i.e. of the nation-state in its dealing with national issues. The efforts of Piya and Kanai provide positive hope in present and coming future only when they could link the national/local with international/global.

References:

- Buell, Lawrence, et al. "Literature and Environment." *The Annual Reviews of Environment and Resources,* no. 36, 2011, pp. 417-40. environ.annualreviews.org
- Ghosh, Amitav. *The Great Derangement: Climate Change and theUnthinkable.* Penguin, 2016. E book.—. *The Hungry Tide.* Harper Collins,2004.
- Ghosh, Amitav and Dipesh Chakrabarty. "A Correspondence on Provincializing Europe." *Radical History Review*, no. 83,2002.
- Heise, UrsulaK. *Sense of Place and Sense of Planet: The Environmental Imagination of the Global.* Oxford University Press,2008.
- Huggan, Graham. "Greening Postcolonialism: Ecocritical Perspectives." *MFS Modern Fiction Studies,* vol. 50, no. 3, 2004, pp.701-33.
- Moraru, Christian. Review of *Sense of Place and Sense of Planet: The Environmental Imagination of the Global,* by Ursula K. Heise. *The Comparatist,* vol. 34, 2010, pp.179-84.
- Mukherjee, Pablo. "Surfing the Second Waves: Amitav Ghosh's TideCountry." *New Formations,* no. 59, 2006, pp. 144-57.
- Nixon, Rob. "Environmentalism and Postcolonialism." *Postcolonial Studies and Beyond.*EditedbyAniaLoomba,etal.,DukeUniversityPress,2005,233-51.
- Tuan, Yi-Fu. *Topophilia: A Study of Environmental Perception, Attitudes and Values.* University of Minnesota Press,1974.
- Walia, Nona. "Let's be Warned…: Sixth Sense in *The HungryTide.*" Book Review, The Times of India. New Delhi, January 6, 2005.Web.
- Weik, Alexa. "The Home, the Tide, and the World: Eco-cosmopolitan Encounters in Amitav Ghosh's *The Hungry Tide." Journal of Commonwealth and Postcolonial Studies,* vol. 13, no. 2, 2006, pp.120-141.

Asst. Prof. in English
Govt. M. S. J. College, Bharatpur (Raj.)

Research Article

Surrogate Colonialism in Ngugi WaThiango's *Matigari*

–A. Jesu Steephan Samy*
–Dr. S. Kirubhakaran**

Abstract:

Surrogate Colonialism and Colonialism are embedded factors that foster one another in the guise of economic development. Colonization almost seems to have ended in many parts of the world and yet its invincible evil power has been deeply rooted and causes everything upside down wherever it sprawls. Kenya is not exempted to this virtual damage. Stronger nations are like bullies who always subjugate the weaker and instil fear in their minds. As well said, "*Too much fear breeds misery" in the land (Ngugi 87*). Hence fear is the grain of colonialism. It has been planted deeply in the minds of the colonized people. So, Ngugi Decolonization is none other than the removal of fear from their minds. This paper focuses on how Surrogate Colonialism or Neocolonialism is an imminent internal factor which forged independent Kenya and also how it had ravaged the 'masses' as revealed in the novel "*Matigari".*

Keywords: Surrogate, Guerilla, Orature, Decolonization, Dystopian, Impoverished, Colonial and Disillusioned.

Introduction

Ngugi's*Matigati* is credited to be the sixth one in the hierarchy of his novels and the first one written in his Gikuyu language, and later it was translated into English by WanguiWa Gora. The title of the novel bears the name of the 'Patriot' who fought for the independence of Kenya. The freedom fighters are usually called as 'Patriots' who have joined *Mau Mau* and fought against the colonial power in Kenya. They used to hide in forest and waged Guerilla war on the European settlers and the colonial rulers who stole the resources of the country in broad day light.

Even after the independence, some of the settlers continued to be living without handing over the lands that they had once grabbed from the natives. Those settlers enjoyed a special privilege and also played a very crucial role in the politics and administration of post-colonial Kenya. Strictly speaking freedom has been given not to the masses' but to the 'sell outs'. The 'sell outs' are the people who betrayed their own fellow citizens and pawned their loyalty to the colonizers. The Minister of Truth and Justice in the novel says "Yes, we loyalists are the ones in power today (Ngugi. 102). Settler Howard Williams and his native loyalist cook John Boy were the two who had not sowed but reaped the benefits of Matigari. It was he who cleared all the hills and lands, cultivated coffee and built a house for his family but the settler Williams and his cook John Boy occupied Matigari's house and lands and also drove him out to forest to be a lifelong insurgent. After some time, Williams and John Boy too went after him to hunt him out in the forest but in the ensuing battle between them, John Boy was killed first and then little later settler William was also shot down. Matigari confirmed the death of Williams standing on his dead body and decided to return to his home. Before arriving at his place, he buried his weapon AK 47 and belt of cartridges under Mugumo' tree in the forest. And then, he tore a long bark of the tree and tied it around his waist and said to himself "*I have now girded myself with a belt of peace* (Ngugi. 5).

Matigari's life in the forest as a patriot swallowed many years of his youthful days. Now it was his home coming; he was walking towards his home town seeking his family. Then he noticed several changes that altered the past view of the town. Matigari's mind strayed back to his family and started questioning himself on where to start searching for his wives and children.

Ngugi's *Matigari* is partly based on an Orature about a man journeying for the cure of an illness. In course of his search, he met many people and got helped by them. Ultimately he reached his destination he was aiming at. From this oral tale, Ngugi took the form of the tale to narrate the story of a patriot. This vibrant character haunted the minds of the agents of colonialists and shook the basic structure of neo colonial administrative system in Kenya. As a result, 'Matigari' was strongly believed to be a real person and so the Kenyan authority issued an order to arrest him immediately stating that he was a potential threat to their security. The name "Matrigari Ma Njiruungi" in Gikuyu language, means "the patriots who survived the bullets". In colonized Kenya, man like Matigari is not a mere character in oral stories alone rather he is a product of Colonialism as well as dystopian society.

Christianity versus Colonialism

Neo colonialism made their own countrymen antagonistic to one another and created a rift in the society labelling as loyalists and terrorists. The martyrs were

degraded to the level of terrorists and they were also accused of rebelling against the peace and prosperity of the country. Furthermore, the religion of Christianity was unscrupulously used as a scapegoat to the excessiveness of colonialism and its surrogate politicians.

The much awaited freedom had brought neither peace nor hope to the people of Kenya rather it revived the dark pages of history with a new mask of surrogate colonialism. The black administrators proved themselves that they were no in way inferior to their white predecessors in exploiting their own countrymen. Their disloyalty towards the native soil lifted them to the top of the political ladder and also made them tenacious rulers who appalled at every strata of the society with new principles. In addition to this, Christian humanism was sabotaged in the hands of Colonial and new colonial black rulers as a defensive weapon to protect themselves. It is the scripture that preaches love, truth and righteousness among the people but those incontrovertible values were put aside as a time bound solution. As a common saying goes, speak softly with a big stick in hand, similarly Christianity remained as soft spoken words to mesmerize the ignorant community and at the same time the big stick is nothing but colonial evils which unconscientiously crushed the people. This kind of attitude the black rulers inherited to stabilize their authority over their own native citizens. Consequently both the freedom fighters and the people who lost their life to the cause of hard earned independence had become totally disillusioned as the dawn of colonial hotness covered the entire Kenya with an apparel of Surrogate colonialism.

Christianity never preached hatred, slavery, exploitations and other sorts of evils which accompanied colonialism and even none of the Christian saints encouraged such brutality over the races of the less privileged. There has been growing an ever conflict between Christianity and Colonialism but it is sad that most of the European colonialists were Christians. Christianity was preached not by the colonial rulers but by evangelists who sermonized the word of God to the native people but the rulers misused and misinterpreted in accordance with their own convenience. Henceforth, those who have concealed under the fleece of lamb executed all kinds of violence on the native soil and such people can rightly be termed as '*Colonialist Christians'*, or *neo colonialistChristians* rather '*reborn Christians'*. Had Christianity been practised truthfully by all sections of people, a patriot like Matigari should not have looked for "truth and justice" in his own land. Matigari's belt of peace is no more helpful to retrieve his property from Junior John Boy. Moreover, his search of truth and justice is also futile. Matigari is not a believer of Christ but he values the words of Christ immensely. That's why he ultimately goes to meet a priest and confessed how he got freed from the prison, and how her comrade Guthera became a victim by staunchly following the words of God. He

wants solution for this kind of mystery of life. In real, some of the priests who advocated the principles of Christ was also under the thumb of the rulers and therefore they could not withstand strongly against the unprincipled imperialists. To the imperialists, Christianity is a comfortable religion as it propagated 'disobedience' is the first sin that brought the fall of man. On using this Christian principle, the imperialists mobilized the people in favour of them and also forced the people to believe that whatever the rulers did was for the welfare of the society. In fact, neither Colonialism nor neo Colonialism did pave the way for truth and justice did not raise Christianity from the world of death. As a matter of fact, it is the imperialists who tried to kill the God in man. The statement of Matigari validates this truth as follows.

> "*The God who is prophesied is in you, in me, and in the other humans. He has always been there inside us since the beginning of time. Imperialism has tried to kill that God within us. But one day that God will return from the dead. Yes, one day that God within us will come alive and liberate us who believe in them".* (P. 156)

So, Christianity in the hands of colonialists or their Surrogate colonialists had become a dead world, as prompted Mathew Arnold to comment upon it, where Christ was tried to be re-crucified and his scripture became a mockery in the mouth 5of some 'Parrotory' evangelists. As a result, Bible had been misquoted by everyone according to his or her convenience especially by the inmates of Matigari in the prison. So Christianity and Colonialism are two different spheres which never integrate with one another and also Christ has been wrongly projected asthe God of Colonialists and so the evils done by colonialists have also been attributed to the religion of Christianity. In fact, Christ is God of the impoverished, deprived, neglected and underprivileged people.

Ethnic Clashes in Surrogate Colonialism:

Ngugi's adaptation of an oral tale about a man whose search for a cure for illness itself is a remembrance of ethnic identity of Matigari. The identity of a nation lies in its literature, whether it is oral or in written document, and if any nation allows the alien culture to mingle with its own culture, the question of identity will come to an end and there will arise ethnic clash. The culture of imperialists has eaten away the ethnicity of Kenyan culture. African Literature abounds in oral and folk tales. Those tales are not mere the entertainer for the masses but they also mirrored their culture and ethnicity. Colonialism has come as a deathblow to those identity entities. Literature is an outcome of happy and peaceful minds' life experience and even it be tragic or elegiac nature, and also it is an everlasting process of human culture. Colonialists introduced many fascinated things to the native people and they brought

changes simultaneously in all possible ways in everyday life especially in religion, rituals, traditional beliefs, law, economy, education, language and literature. At the same time, some clans and group of people opposed them and of their religious practices. If an alien culture is strong enough to overpower the native traditionalism, it brings with it literally the death of native culture. Some evil practices and superstitious beliefs are weaker side of the native culture and consequently even the native people who had a grudge against their own culture and of the practices inclined towards the alien culture in order to protect themselves. In Igbo culture, the birth of twins was considered to be evil to the respective family and so the new born twins were thrown into the evil forest. This sort of practice proves to be irrational and utterly superstitious and therefore the victim of this culture looks for a defensive measure in the alien culture. Gradually, not only this kind of practices but also the other practices which the native people were advised to quit will also go away from their culture. In fact, none of the African religions in any clans has a standard religious text like The Bible, The Quran, and The Bhagavat Gita and so they would depend upon the oral tales or Orature for teaching moral values to them. As these tales were less serious in nature and were also told through birds or animal trickster stories, they became prone to be neglected as primitive literature. Surrogate colonialism fails to understand that their ethnic identity lies in their Orature or in the so called primitive literature. As a result, African identities in literature will slowly be erased in due course. Hence Ngugi rightly said in his work *Petals of Blood* as

> *"A nation that has cast away its literature is a nation that has sold its soul and has been left a mere shell" (p.64)*

Therefore African writers like Chinua Achebe, NgugiWaThiango and many other writers preferred to write their own culture in their works but Ngugi went one step further in writing his works in his mother tongue rather than in English

Conclusion

Matigari began searching for his family at first and then, after encountering the brutalities of new colonial rulers, he stopped searching for his family and he proceeded towards "truth and justice" among the people. Whoever he met either mocked at him or scolded him in the course of his search. Finally Matigari went to a priest believing that Godly man would give proper direction but the priest too had a wrong opinion about truth and justice and also hew as under the influence of the Ole Excellency, the president and the Minister of Truth and Justice. Then Matigari decided to cast off the belt of peace and replace it with gird of bullets.

On knowing that neocolonial rulers did not work to uplift the masses from their pathetic condition but to lift 'the individuals alone' who were so called loyalists. He

decided to go back to the forest as his mission of liberty has not yet been achieved. Every administrator in the independent Kenya was loyal to the Colonialists alone, not to the people. The children of freedom fighters were discarded and made to live in 'cemetery vehicle', the widowed wives of the patriots were exploited for very meagre salary in factories and the educated students and the educating professors were driven to prison., even the milkmen had no right to sell their milk without license. Every woman who spoke against the neocolonial rule was either imprisoned or abused and one such a woman was Guthera. If Matigari was a victim of Colonial rulers, so as Guthera, Muruki, and Nagurowa and many others were the victims of neo colonialists. The superintendent of police blackmailed her to surrender her purity in order to release her father who was accused of carrying bullets. When she rejected his choice of offer either her purity or her father, her father was hanged unsympathetically and her siblings were left unfathered. Ultimately poverty forced her to become a call girl as well as bar-maid for upbringing her siblings. Ngugi's vision of Kenya is not mere freedom of his people from Colonialists or Neo-colonialists but he ardently believes that a sea change only will resolve all the issues of his native land. Ngugi is a radical thinker and reformer whose mouthpiece Mathigari's search of his wife, children, family, property, truth and justice proves that surrogate colonialism has contributed to the alienation of his own people and rendered them wanderers in their own soil.

Reference

WaThiang'o, Ngugi, *Matigari*. Translated from the Gikuyu by WanguiwaGoro . Oxford: Heinemann, 1986. Print. Pp. 5, 87, 156

WaThiong'o, Ngugi, *Petals of Blood*. London: Penguin Classics, 2003. Print

Sethi, Monika. "In Pursuit of Uhuru: Ngugu's*Matigari*" Journal of English Literature and Language 7.1 (June 2013): 1-13.

Wright, Derek. "Depts and Departures: Ngugu's Use of Orature in *Matigari*." The Literary Criterion 35.4(2000):66-77

* Ph.D. Research Scholar, Government College of Engineering, Burgur-635104.

**Research Supervisor, Assistant Prof. of English, P.G and Research Department of English, Arignar Anna Government Arts College, Namakkal -637 002.(Affiliated to Periyar University, Salem)

Research Article

Numbness and Mortification of Igbo Enigmas in Achebe's *Things Fall Apart*

–R. Ramya Priyadharshini

Abstract:

This paper shows the tragic flaw of the hero because he break the peace during the Week of Peace after which he faced all the consequences. The entering of white man, seven years of his exile, his own son had followed christianity and doesn't listen to his father. He followed culture and tradition as both eyes was remain untouched by his own people. Since he was committed suicide which was against his custom. The head man of the village was not even given a proper last rites and rituals, because his death was not natural which was against to their customs.

Keywords: Tradition, Culture, White Missionary, Christianity and Suicide.

W. B. Yeats in his celebrated occult poem, "The Second Coming" deals with the disintegration of the world with the coming of evil foreboding after the First World War. Being an Irish at heart and English at soul, his poems warn of the dangerous premonitions which make the good suffer and evil prosper. The poet has used in his poem, the phrase, things fall apart inferring and prophesying the doomsday around the world. Chinua Achebe has taken the phrase to explicate a society which was once a lover of peace once going down to peaces after the colonial interventions. The debut novel of Achebe traces the trials and tragic death of a man Okonkwo who was well respected and revered across his clan and died fighting lonely, losing battle facing a cataclysmic encounter with the colonizers. Achebe has compared the theme of the poem, the commotion and restlessness in the poem to the situation in Africa, especially during the pre-colonial times to yoke the unrest in the poem and the novel together. The following quote from the poem would explain the quantum of delirium in the poem, quoted

from the Dale Cengage Learning by Archibald Douglas as

> Turning and turning in the widening gyre,
> The falcon cannot hear the falconer
> Things Fall apart, the centre cannot hold,
> Mere anarchy is loosed upon the world. (4)

The title, of the poem, "The Second Coming" although taken from the Bible, especially from the section on Mathew to predict the second coming of Christ in a nut shell, the Bible establishes the fact that the death of a civilization and the coming of Christ to save the universe from doom is transposed in the poem. It is well known and widely accepted that Yeats believed in occult and therefore did not want to trust the idea that salvation was imminent with the coming of Christ into the world for the second time. It was because the world war had over shadowed the bouts of love and hope from the minds of people. There was a popular belief that in case God existed, he would have come down to the earth and stopped the war and the killing of the innocent people. Since he did not come, it only means that the time and reign of God is now over. One therefore will have to expect the coming of evil as a replacement of God.

The poem therefore talks about a very ominous beginning and continues to underscore the idea that something bad was about to befall. The second coming is the result of the religious conviction that a civilization lasts for a period of two and thousand years. The same could be seen with the Egyptian, the Mesopotamian and the Chinese civilization. Not only these civilizations, but also any civilization did not live long after its closure. The death of a civilization began with the birth of a new dawn. One could find that the new dawn was ominous and dark and it was the time when the good people suffer and the bad moved up in life. The wheel of life was not the sale for everyone and the cycle of good has now given rise to the cycle of evil.

One could find the novel *Things Fall Apart* also with the same overtone. The traditional Igbo people were hunters and warriors who were known to have extreme bravado and gusto. The attitude of being proud of their own legacy and culture was one of the basic tenets of the Igbo culture. The same attitude and tenacity which was once a sense of pride has now turned to sense of shame and the cycle of life had not spared even the Nigerians from Armageddon. Achebe recounts the emergence of the English novelists in the novel and comes to establish the idea that the culture which they had been preserving for years is now going to be turned into ashes and dust. Africa had always been a dark continent and had no contact with the rest of the world. These beliefs have now changed with the change of time and said that the time did not give him favourable winds. Raphael Njuko, in his article, "Chinua Achebe and the Development of Igbo/ African societies" remarks on the dangers and consequences of colonization as

> Ogidi society of the late 1890s and the early 1900s had begun to witness the first appearance of the European colonization. As the British pacification forces marched across the thousands of independent Igbo villages, appointing warrant chiefs, the independent Evangelists seized the initiative in an attempt to propagate the salvation of Jesus Christ among the Africans. In some instances, the Christian Evangelists became forceful among the other things in an attempt to Christianize the Igbo. (250)

The novel published in the year 1958 was a turning point in the realm of African literature as a whole. African people were unlettered to begin with and English language was alien to them and therefore all writings in English about Africa were done by the English people who had come down to these countries in the name of colonization and propaganda of their religion. These European writers wrote to the world about an important make shift event. It was called, the white man's burden, more popularized by the eminent author Rudyard Kipling. The term meant that the colonizers were savage by nature and by birth and it was therefore the duty of all the English men to make them more civilized. On the whole, the burden of making the people more refined lied at the European shoulders. Chinua Achebe was the first writer to break the convention and wrote his novels on the disintegration of their country in the name of colonization and civilization. He had made up his mind that Africans did not need any amount of change to be inculcated into them and therefore he was the first writer to come to a conclusion that an African writer should only write about his country and not about anything else. The novel therefore is the debut novel in terms of its form, content, writing, tone, temperament and theme into Nigerian writing in English. Achebe writes to defy the very idea that the Africans are barbarians and therefore considers the novel, *The Heart of Darkness* by Joseph Conrad as a work that propagates racial discrimination and injustice. He makes his arguments and insights more clear when he himself says

> The question is whether a novel which celebrates the dehumanization of Africa and Africans which personalizes the portion of human race can be called a great work of art. My answer is, No, it cannot. . . I am talking about a book which parades in the most vulgar fashion prejudices and insults from which a section of mankind which suffered untold agony and atrocities in the past and continues to do so in many ways and many places today. (23)

One therefore has to take a very objective stand on the way that the Africans were looked upon by the west and he therefore writes to correct the misinterpretations of the English in the context of the Nigerian society on the whole. After having grown up in the colonized Nigeria, the writings of Achebe marks the way by which his country men were dehumanized physically and psychologically by the then rulers. Looking at the historical background to the novel, one has to

understand that the country Nigeria was named after the river Niger.

The name was itself given by the wife of a British Governor who wanted to name the place, the way she wanted to have it historically. One can come to a common consensus that the English set foot on the Nigerian soil in the year 1906 and our author, Achebe was born close to two decades and a half after the colonization of Nigeria and the novel, *Things Fall Apart* has a lot of semblance to the way and the attitude of the English towards the Igbo clan. One could find the difference in culture when the parents of Achebe had converted themselves into Christianity while their grandparents were still firm believers in their own traditional pantheistic roots.

Achebe has written about the clash the cultures in the novel where he is at cross roads to accept or defy the English way of life. To begin with, it was a common practice that a man could marry two or even more wives to establish his masculinity and vigour. There is also a custom that permits man to marry even a younger girl which could also possibly be suggested by his wife. After the coming of the English, polygamous marriages were banned for the English believed in the dictums of the gospel that forbid them to marry twice. Another example was the belief of sacrifice; it was a commonality for the people of Igbo to kill their own children as a sign of sacrifice to the Gods. The twin children were an example to the same. The Igbo people considered the twin children to do a work of the devil and therefore would kill one of the children as a sacrifice to the Gods. When the English had come, they did not allow human sacrifice for there was never a mention of it in the Bible. Dr. AnaikenEtim Nana in his article, "Ritual Sacrifice: An Essential Element of Igbo Tradition and Culture" observes

> The Igbo concept of religion goes synonymously with her concept of sacrifice. As a matter of fact, sacrifice constitutes the essential elements in Igbo traditional religion. The Igbo like every other people easily perceive their imperfection and consequently attain the idea of perfect being, which is solely responsible for the wonders of creation . . . they also believe in the existence of evil or malignant spirit who is continually in hunt for human life in the world. (120)

The novel follows the life of Okonkwo, the central character in the village Umofia and his tragic death. The bulk of the novel deals with the coming of the missionaries to Umofia and the ways by which the tradition of the Igbo gets destroyed by the coercive implementation of the changes by the English. The first change which Okonkwo realizes after the coming of the colonists is their method of segregation of an individual from their society or their clan by the influence of the English religion. He could not digest the fact that his own son was rechristened Ezekiel and the members of the clan had abandoned their native religion and had embraced Christianity.

One of the unique features of the writings of Achebe is that he employs a lot of proverbs and myths to establish the fact that the Igbo people have their life well planned and well crafted according to the tenets of tradition. It is the English who misunderstood them and wanted to give a very bleak perspective to their lives and labeled them as barbarians. The writing of Achebe is aimed to remove all the misconceptions and clear the decks on the perspective of the English on his country. The novel exposes the culture cross roads experienced by the author first hand as a child. He was not allowed to participate in all the traditional practices by the people as his parents were converts. He therefore writes the novel from an insider's perspective and writes to show the ways by which his community have been displaced and disintegrated by foreign culture and their ways of life.

The white missionaries had employed the policy of divide and rule and even succeeded in their attempt to dissociate the people and the clan as a whole. It was a practice since ages that the African people especially the Igbo lived in clans and groups and any decision was taken collectively by all the fractions of the community for the common well being of all. The white men destroyed the very kernel of their unity and began to separate them in terms of their beliefs and also with the promises of a new religion which offered not only hope but also salvation. The following quote explains the ways by which the English had spread their religion in the Nigerian soil. "The white missionary was very proud of him and he was one of the first men in Umofia to receive the sacrament of Holy Communion or the holy feast as it was called in Igbo. OgbufiUgonna had thought of the feast in terms of eating and drinking only, more holy than the village variety". (99)

The conversion had a catch and the people did not realize the reality of the communion. All the Igbo people were divided into small scalar groups and were given titles, accolades and honors in their own village by the English people and they then began to accept the Christian faith as their path of life and more importantly, they did not realize the fact that the English were trying to divide them physically as well as emotionally thereby making them feel superior among the rest of the clan who were not prepared to convert to Christianity. Of all the commotions which struck Umofia, the key problem was the son of Okonkwo himself. His son was called Nwoye. His father was worried about him for all his life he had been looking sad and had nothing constructive to do except behave in a more effeminate manner. Okonkwo thought that he must train his son and make him more manly and able. Things did not seem to show well when he found that his own son did not listen to his father but to the English men. Although Okonkwo had plans to teach him farming, especially the cultivation of Yam, his son had other plans. He was one of those men who had come to believe that the English had come with a firm purpose of doing something favourable for the village. His reflection on the religion is shown in the novel as

> It was the poetry of the new religion, something felt in the marrow. The hymn about brothers who sat in darkness and fear seemed to answer a vague and persistent question that haunted his young soul…. The question of the twins, crying in the bush and the question of Ikmefuna who was killed. He felt relief within as the hymns poured into his parched soul. (88)

The tragedy of Okonkwo in the novel is the tragedy of the traditions and the flaws his own men did find at the end of the novel. One could find that although Okonkwo was ready to fight the English, he had none to give him comfort and solace. Not one of them was ready to stand up for him and fight. More importantly, he could not live the life of a coward and he therefore decided to end his life with the intention that he could neither give up his attitude of impudence nor give up his adherence to tradition. The end of the novel shows his death by hanging and not even one of his men came close to his corpse for they were not allowed to give a rightful funeral to a man who died by suicide. The novel also shows the tragic end of Okonkwo, who lived by traditions but never, had the verve to upkeep it for himself or his family.

Works Cited

Primary Source
Achebe, Chinua. *Things Fall Apart*. London. Penguin Classics. 2011.
Secondary Sources
Dr. Nana, AnaikenEtim. "Ritual Sacrifice: An Essential Element of Igbo Tradition and Culture". Vol VII. Issue III. 2012.
Douglas, Archibald. Michigan. Dale Cengage Learning. 2013.
Cutler, Hugh Mercer. "Achebe on Conrad: Racism and Greatness in the Heart of Darkness". Volume 29, No.1. 1997.
Njuko, Raphael. "Chinua Achebe and the Development of Igbo/ African Societies."Ed. Gloria Chuku.The Igbo Intellectual Tradition.Volume V, Issue III. 2013.

❒❒❒

Guest Lecturer,
Department of English,
Bharat RatnaPuratchiThalaivar Dr. M.G.R. Government Arts and Science College, PALACODE.-636 808.

Research Article

Eco-feminism and Social Perspectives in Barbara Kingsolver's *Flight Behavior*

–*C. Ramesh
–**Dr. N. Ramesh

Abstract:

This article applies an Ecofeminist lens to Barbara Kingsolver's *Flight Behavior*. The women in these works recognize that human and nonhuman lives, including plants and animals, are inextricably linked. This awareness enables the female protagonists to transcend the dualistic or dominant culture in which they live. Born out of a rising concern that the earth cannot support modern (particularly Western) consumerist and environmental exploitative behaviors, the ecocritical movement in the humanities has gained traction in academia over the last three decades.

Keywords Eco-feminism, Climate Change and Ecology.

Ecofeminism and Social Perspectives

Ecofeminism and the Future of Climate Change Many of the women's stories in Shannon Bell's Our Roots Run Deep as Ironweed discuss reluctant activism. They had an appreciation for nature before their experiences with the results of exploitive land practices that caused environmental problems such as coal ash, flooding, landslides, and erosion. After their experience with those problems and the activism they began to save their families. The women in our roots run deep as ironweed share a renewed wonder and appreciation for the nature around them as well as a new identity as activists. The numbers did not trouble them until they were personally affected by the results of environmental exploitation now they have narratives to add to the numbers. The main character in *Flight Behavior* falls into a similar camp as she learns about the realities of climate change that are manifesting in her backyard. In this chapter, I will continue my examination of gendered responses to nonhumans. With the notable exception of the scientist Byron, the men in *Flight Behavior* perpetuate exploitive land use practices while the main character, Dellarobia, learns

of the realities of climate change that are now evident in her backyard and her town.

Flight Behavior departs thematically from Prodigal Summer in its discussion of the realities and consequences of climate change. This novel is characterized by those who deny or resist the fact that climate change is real and that it affects their lives. Gradually, Dellarobia comes to the realization that she cannot deny climate change. *Flight Behavior* is more than just a service announcement about climate change, though. In the novel, the future generations are on the danger zone. The monarchs have had to shift their home place and nesting grounds because of climate change and the ambiguous yet foreboding future of the monarchs is mirrored by other difficult births in the novel: Dellarobia has a traumatic experience with Hester's birthing lambs as she comes to accept the death of her and Cub's own child. The emphasis on animals and their reproductive successes in this novel creates a significant eco feminist avenue to pursue. The animals' reproductive successes and sometimes even their present location mirror the levels of denial or acceptance of climate change, especially in the main character Dellarobia. The parallels between humans and nonhumans are important to notice because they critique the future of our common reproductive success in the face of climate change.

In *Flight Behavior*, Dellarobia has to come to terms with herself as well as come to terms with the environmental devastations that have happened both near (Tennessee) and afar (Mexico). She loves her children, but her husband and his family are exasperating; therefore, she feels repressed in her current family situation. She and the junior Turnbow man, Cub, had a shotgun marriage because of their baby who later died. Dellarobia and Cub now live on a part of the family land that Hester and Bear (Cub's parents) lord over them, keeping them out of key financial decisions that can affect the part of the farm where Dellarobia and Cub live. Furthermore, everything Dellarobia says seems to be the wrong thing in the eyes of the disapproving Hester. In Barbara Kingsolver's Prodigal Summer, the characters in *Flight Behavior* have gendered responses to nonhuman life. Males generally, especially Bear Turnbow, treat the land as if they are entitled to its resources, acting with an anthropocentric mindset, by making decisions without regard to the ecosystem and long-term consequences. Dellarobia, the main character, comes to recognize how interrelated animals, nature, and humans are; how, typically, males perpetuate patriarchal, exploitive land practices that devalue women, animals, and nature; and how nonhumans are affected by human exceptionalism that results in those exploitive practices.

Nature is not helpless. In fact, nature is capable of healing itself of many ills, yet its ability to do so is not inexhaustible. Humans continue to push nature's self-healing abilities by producing and consuming evermore products. Second, fixing the problematic Western treatment of nature, as Plumwood's statement suggests, will require a multifaceted approach including, likely, continued efforts in politics, science, and public information campaigns. Plumwood's comment grants nature its agency to behave and act as it will in spite of humans' apparent will to dominate and control it (37). *Flight Behavior* demonstrates this idea through examining climate change

and the effects climate change can have on people. If humans are so self-involved that they will ignore the plight of animals and nature, then hopefully humans will work to preserve their own existence. This last chapter of my thesis progresses to look not at the status quo as Prodigal Summer did but at the future as *Flight Behavior* does. This article examines the consequences of denying climate change brought on by exploitive environmental practices. To continue my discussion of realities and consequences, I will work through this article through the topics of denial, realities, and remediation of climate change. In denial, I will analyze the ways humans and nonhumans alike deny the realities around them.

There is a hope for remediation. Dellarobia takes Kingsolver's readership through the process to arrive at what might be hopeful winds of change. Denial and Climate Crisis Patrick Murphy's article on *Flight Behavior*, specifically, titled "Pessimism, Optimism, Human Inertia, and Anthropogenic Climate Change," corroborates my assessment of the major themes at play in *Flight Behavior*. He emphasizes Dellarobia's growth and subsequent disunion from the Turnbow family. I will discuss that throughout this chapter in my own way. Additionally, Murphy discusses what I call the realities and consequences of climate change. The scientific specifics of climate change are not themes I cannot hope to fully analyze in this thesis, but I can examine the culture that rejects climate change, the same one in which Dellarobia and her family are embroiled. The first development is Dellarobia's growing self-awareness, whereas the second "focuses on the scientific investigation of the monarchs' alteration of their historic multigenerational migration patterns and the lead scientist's correlations between it and climate change" ("Pessimism, Optimism" 158). The monarch's *Flight Behavior* can be contrasted with the multigenerational non-migration patterns of the Turnbow family and many of their entrenched neighbors.

Therefore, the rhetoric needs to change to cause an effect in Dellarobia and her family's lives. For the characters, they can see the effects of climate change (the butterflies), whether they attribute the monarchs' new flight path to a miracle, choice, or climate change. From her perspective as a farmer and author who lives in southern Appalachia, Kingsolver feels particularly equipped to discuss (and fictionalizes the discussion in a novel) the environmental problems of the region. She says in an interview with Time: Our agriculture here has gone through one disaster year after another, so climate change is not some kind of abstract future threat here. It is literally killing our farm economy. We've had record heat years. We've had record drought years. So the people most affected by climate change already are people among whom I live: rural conservative farmers. And it strikes me that these are the same people who are least prepared to understand and believe in climate change and its causes. Our local politicians are quite deliberately misinforming us and fighting every kind of environmental regulation that could possibly slow down the release of carbon for the very obvious reason that they're beholden to the big player in this region, which are the coal companies. Here we are, caught between the devil and the deep blue sea. Kingsolver lights upon one of the themes discussed before and one that I will continue in this one: traditional environmental practices are bad choices for us all because they might provide a

short-term fix but they will have long-term and larger consequences. In addition to hurting the farm economy by making the weather more volatile, the climate changes happening as a result of poor environmental management have cultural stigma attached to them as well. That is where eco feminism comes in.

The Realities of Climate Change Dellarobia has to fight for her own voice in a family that wishes to log the mountainside and a culture in general that wishes to keep itself alienated from nature. Dellarobia gains a perspective on nature that allows her to see the connection between human and nonhuman, which, of course, was the truth waiting in the background all along. In this case Appalachian people are being encouraged by the narrative to adopt an ecofeminist perspective their well-being as ethnic others is bound up with the fate of nonhuman nature. Both disempowered humans like Dellarobia and nonhumans are especially subject to a ravaging capitalist system. Part of Dellarobia's disempowerment in the family and community culture is her home status. She and Cub are still on the family land with Hester and Bear occupying the other end of the family farm. Dellarobia's family is beholden to Hester and Bear, who entitle themselves to every facet of Dellarobia's life without reciprocating. The main issue for the family throughout the novel is the lien that Bear took out against the farm. Logging the mountaintop will get enough money to keep from losing part of the farm to the collection agency, Bear claims. Despite seeing the butterflies and hearing some townsfolk call the butterflies signs from God, Bear does not back down. Hester tells Dellarobia: Bear's signed the contract. He says he's going ahead with it, rain or shine.

Murphy writes, "This clearcutting is just one example of short-term and short-sighted solutions to systemic economic problems. It also becomes an example of how people can be persuaded by the consumerist culture in which they live to make decisions that run counter to their own personal long-term interests, as well as the long-term health of their human communities, their Eco regional communities, and the biosphere" (159). Murphy's statement is similar to Kingsolver's comments about politicians who are engaged in keeping the traditional, exploitive rhetoric resounding in Appalachian farmers' ears. The clear-cutting might save the farm from this one loan collection, but the farming troubles will persist if the weather remains unpredictable and violent. Dellarobia's Eco feminist Remediation So, far I have discussed the extra and intra-textual examples of climate change problems and their relationship to human and nonhuman ecologies or cultures. The decisions to log the land are handed down by the patriarch of the family. Dellarobia must live with the decision or else find somewhere to move. Of course, moving would only separate Dellarobia from the truth that Bear will do what he wants. It is grounded in an ecofeminist analysis of Dellarobia's interactions with nature and her newfound identity which is at least partially informed by a new, symbiotic view of nature. In her monograph Barbara Kingsolver's World: Nature, Art, and the Twenty-First Century, Wagner-Martin notes the shift in Dellarobia that accompanies her renewed sense of self (7). Her newfound confidence and self-sufficiency comes in part from her interaction with the scientists studying the monarchs and also from a new way of seeing the world. Wagner-Martin says, "And for Dellarobia's part, accepting

the inevitable began to have some allure; her temperament starts to change from romantic to more nearly objective" (7). Nature is not some illusory god-like being that acts upon and reacts to humans. Instead, nonhuman entities are actually in a symbiotic relationship with humans and are reacting to anthropocentric actions.

Dellarobia gives us is not a spokesperson for nonhuman entities; rather, she becomes a symbol for alternative responses to the land. She resists the patriarchal, myopic actions of Bear Turnbow and the limiting marriage to Cub, and she transforms her vision of the land from Turnbow property to true ecology with interconnections affecting both human and nonhuman entities. In addition to her rebellion against limiting personal relationships with the Turnbow men, she gains a greater understanding of animal lives, particularly the butterflies and the sheep that live on the Turnbow farm. She studies up on caring for the sheep and prepares for difficult births. One gives her a shock because, perhaps, she equates its struggle for life with her own firstborn who died: "Black, strangely flat against the snow, unmoving inside its translucent sac: a tiny sheep child. The ewe walked away from it and nosed into the snow, looking for graze" (Kingsolver, *Flight Behavior*, 415). The ewe rejects the kid in a similar way that Hester and Dellarobia had difficult first pregnancies: Hester gave up her baby and Dellarobia's died. "Without ever fully gaining her feet [Dellarobia] made it back to the puddle of lamb, swearing at the mother that stood blandly chewing now. Some distance away from this thing that had definitely not happened to her" (415). This botched birthing can have several interpretations relating to the humans in *Flight Behavior*. The lamb's struggle to live may very well be symbolic of Dellarobia's first baby; she is able to save this lamb, whereas she could not save her child. Additionally, the lamb who struggles to breathe is symbolic of the out of balance world that the unbelieving humans put at her doorstep. The lamb is symbolic of the altered flight paths of the monarchs as well as other possible global environmental crises and the sheep who "stood blandly chewing…away from this thing that had definitely not happened to her" are those humans who refuse to acknowledge that they are creating such devastation to their planet (415).

However, there is an actual lamb in the novel, not just a representation. Remembering the actual lamb is important because it shows Dellarobia's newfound connection with nature. The lamb actually reaches her on an emotional level that even Cub, who must also miss the miscarried child, could not touch in Dellarobia. I chose to end this thesis with Dellarobia and with *Flight Behavior* because she represents the hope that eco feminism holds as a subtext within its analysis. Dellarobia embodies the hope for a better world and better planet (as synonymous with both human and nonhumans collectively) that we treat fairly and injure as little and infrequently as possible; hopefully, we treat the planet with more respect than anything else. Furthermore, the ending to *Flight Behavior* is ambiguous yet hopeful enough to engender the impression that there is still a chance that we can change things for the better. Wagner-Martin remarks: Thinking that the novel has been a traditional account of a woman character's growth through education as well as life experiences, the reader may be momentarily confused: *Flight Behavior* in Kingsolver's deft

hands, however, does not give the reader Dellarobia's outcome.

The novel concludes: "The sky was too bright and the ground so unreliable, she couldn't look up for very long. Instead her eyes held steady on the fire bursts of wings reflected across water, a merging of flame and flood. Above the lake of the world, flanked by White Mountains, they flew out to a new earth" (433). "Merging" is, arguably, the pivotal word. Merging represents the too bright sky and the unreliable ground that seem to want to sandwich Dellarobia between them. Wagner-Martin adds that the merging represents a renewed combination of human and nature. In Barbara Kingsolver's World Wagner-Martin says, "The books' two final paragraphs are Kingsolver's choice to force the natural world to become integral to the human one, a feat that is accomplished without Dellarobia's name ever being mentioned" (3). Wagner-Martin picks up on the themes of ambiguity and hope that end the novel, and I want to emphasize what she says about the integration of the natural and human worlds. If the reader realizes that one fact, then the book seems both successful, hopeful, and eco feminist in the resulting unification of human and nonhuman identities. What readers should take away from both novels examined in this thesis is optimism. Through a better understanding of how we humans are related to every other thing on the planet we can start to enact processes and mindsets that will rejuvenate the earth and, hopefully, stop treating one another, animals, and nature with single-minded pursuit of profit and leisure.

References

1. Kingsolver, Barbara. *Flight Behavior*: A Novel. New York: Harper, 2012. Print.
2. "Barbara Kingsolver: '*Flight Behavior*.'" The Diane Rehm Show.NPR. WAMU, Washington D.C. 8 November 2012. Radio.
3. Alaimo, Stacy. Bodily Natures: Science, Environment, and the Material Self. Bloomington: Indiana UP, 2010. Web.
4. —. "Material Engagements: Science Studies and the Environmental Humanities." Ecozone 1.1 (2010): 69-74. Web. 7 Nov. 2014.
5. Appalachia: A History of Mountains and People. Jamie Ross, et al. Riverdale, MD: Agee Films, 2009.
6. Brief Biography." Barbara Kingsolver: The Authorized Site. N.d. Web. 7 Nov. 2014.
7. Buell, Lawrence. "Toxic Discourse." Critical Inquiry 24.3 (Spring 1998): 639-665. Web.
8. Clark, Timothy. "Some Climate Change Ironies: Deconstruction, Environmental Politics and the Closure of Eco criticism." The Oxford Literary Review 32.1 (2010): 131-149. Web.
9. Walsh, Bryan. "Barbara Kingsolver on *Flight Behavior* and Why Climate Change Is Part of Her Story." Time 8 Nov. 2012.Web.

*Research Scholar, Department of English, Periyar University, Government Arts and Science College, Pappiredipatti, Dharmapuri -905 (Affiliated to Periyar University, Salem)

**Research Guide and Convener, Assistant Professor of English, Department of English, Government Arts and Science College,Pappiredipatti, Dharmapuri -905 (Affiliated to Periyar University, Salem)

Arthur Miller's Theme of Masculine and Feminine Sensibilities

–Dr. K.M. Kamalakkannan

Abstract:

During the last thirty years, there has been tremendous strengthening in the amount of academic inquiry dedicated to understanding men in their experiences as men. This growth is seen as largely due to a growing awareness of the problems that men face in trying to understand what it means to be masculine. The number of courses studying masculinity and gender has risen and is continuing to rise. Recently, there have been numerous articles in popular media detailing at men's issues, including men's issues with violence and difficulties in. achieving success in higher education. The argument of Masculinities is designed to be an introduction to several pursued by researches in this field. it is not a cynical of ideas, nor a abstract of all of the rich and diverse research findings in this area of study, Rather, it is intended to analyze many of the major themes permeate this body of work and provide a framework to assist readers in better understanding and thwarting material in masculinities. Without such a framework, it is often difficult to grasp new information and be critical about it.

Keywords: Masculinity, Feminity, Gender Discrimination and Equality

Introduction: The concepts orient to the reader to basic issues within the field and set the context by which the rest of the text will be critically examined. Chapters begin by addressing the difficulties of defining masculinity. This research article introduces the reader to different types of Masculinities, feminism; different point of views of both and how various perspectives can assist the research in the exploration of masculinities and feminism. Specifically discussion on how social patriarchy affect men and addresses how social privileges men in a variety of ways.

Key Concept: After the introductory chapter the study begins with theories about how researchers

define masculinity. There are many ways to discuss rnasculuinities. Before one can really debate findings about men's experiences and lived lives, one must understand how researchers come to define what it is and how they are studying. This becomes very important when researchers attempt to get overall impressions of what we are learning in a field. In other words, if the researcher think about masculinity different ways, might they come up with different results when examining it?

As an illustration, an interesting research review and the definition of masculinity used by various researchers affected whether or not masculinity had an impact on predicting whether violence might occur. Different researchers think about masculinity differently. Not, surprisingly, participants in studies do as well. The reviewers Hammond and Mattis, found with a sample of African-American men that fifteen different factors accounted for ways in which the men in the sample made sense of what masculinity is (including such things as responsibility, autonomy, spirituality, moral rectitude, and family-centeredness). This illustrates how important it is for us to understand the complex ways in which diverse people will arrive to a better understanding of masculinity for themselves.

Reviews of some of the major definitions of masculinity are providing several ideas about where masculinity "comes from" (or its "location"). Because masculinities are studied by people from a variety of academic disciplines (anthropology, sociology, psychology, women's studies, queer studies, etc.), scholars have very different ideas about this question. This research article intended to include several major theories in this regard.

The first reason for including this information is that it comprises a major body of work and area of investigation in this field. The question of how infants grows up and eventually concern themselves with masculinity has long fascinated scholars. Is it something people are born with? It is a function of particular childhood experiences? is it something people learn or are socialized into? Who is in charge of that socialization and how is it that they dictate (a) what masculinity is (b) who may try to achieve it, and (c) whether or not people are in compliance with it? Does it evolve within individual humans, within our societies, within our stories and ideas, or in some complex interaction? These questions and others are embedded within discussions of the locations of masculinities, An additional reason for including information about the location of masculinities is to better understand the last section of the text, 'this section includes a summary of some of the current problems that men face, which is followed by theories about the source of, and solution to, those problems, referred to as the crisis in men and masculinity.

The inclusion of this final section on men's problems arid the crisis of men and masculinities serves two purposes. The first is to expose readers to some of the research findings about men's struggles. This is a major area of interest among scholars, particularly those who are invested in outcome research that can assist in improving men's lives. An Introduction to Masculinities aims to encourage readers to investigate the rich research that exists beyond this text. The second purpose is to present the fundamental struggles within the field. The crisis of men and masculinity

is a very controversial topic and is often a source of much tension within the field. In many ways, this struggle among experts to understand problems men experience and to examine the sources of those conflicts and suggest solutions mirrors the very phenomenon that we hope to understand. We struggle with defining and understanding masculinity in many of the same ways that the participants in our research inquiries do. Exposure to these views will educate the reader to these very real tensions within the field and lead to further there is much interesting information to learn about in the field of masculinities.

The study of Masculinities is intended as a tool to be used to better understand major ideas concerning the definition, location and crises of masculinities equipped with this knowledge. It is looking forward to that you will be able to understand and critically evaluate that information.

The thematic delineation of masculinities uses feminist models to critically study its content. It might seem odd that a field dedicated to masculinities would employ feminist theory and research to understand the phenomenon of masculinity. The readers might wonder how an area of study that predominantly reflects women's writing can be helpful in studying other themes. In fact, the use of feminist theory and this research makes a lot of sense, once you learn about the tools that feminisms has to offer in this analysis. There are several reasons why employing a. feminist perspective can be illuminating in our study of masculinities. While the reasons (and one could certainly write a whole text just on this topic, highlight a few here.

Feminism: emphasis one of the contributions of feminist scholarship is to give credit where credit is due. Through history, people who have made important contributions to culture are often not visible to the majority. This is particularly true when those people are women and / or people of color. Feminist theorists put gender one the map for us to study (15). They have helped others to see how the way in which we make sense of gender socially, historically, psychologically, and biologically contributes greatly to the ways in which we understand human beings.

Feminist research has often focused on women's experience in this regard. The process by which people are marginalized, however, can be applied to various social groupings (Such as race, age, religion, etc) Feminists have helped us understand not only the process of that marginalization, but the many ways in which it contributes to our lives. Understanding this process can also lead to some interesting insights about people's lives.

This focus on feminism having marginalized experience has also contributed to feminist scholars having a critical view of knowledge. In other words, one of the "Advantages" of being outside of something is that it can give you unique ways of looking at it. This is because as an outsider, you notice certain aspects of the environment in ways that people who are "used to it" often do not. Similarly, feminist analysis provides us with wonderful tools for evaluating beliefs, ideas, and perspective in ways that many often overlook.

Finally, feminists (and ideas influenced by feminism) have contributed much content to the field of masculinities. The concepts that have been gleaned from

feminist analysis are used both directly and indirectly in the field. In other words, at times feminist theory is given appropriate acknowledgement and credit and other times it is used without citing the feminist origin of the type of analysis Ironically, even anti-feminist thinkers sometimes employ feminist analysis without even realizing that there are feminist anthropologists, feminist economists, feminist biologists, and so on. Each type of feminism gives us a unique and useful way to explore the world of masculinities. But what are feminists concerned with, and what is a feminist model? All feminists are interested in understanding and bettering the lives of women and others who are marginalized. As a person is not seen as equal to or as valid as others in the dominant culture in which you live, and that the culture actively supports the marginalization. The marginalization become institutionalized when basic societal systems.

Countries that withhold the right to vote, own property, or marry based on belonging to some social category (Such as being gay, lesbian or transgendered) reflects the marginalization of those who are denied these rights. People who identity as belonging to these marginalized communities currently struggle with modern marginalization's that can affect all areas of the human experience, including political, familial economic, social, and psychological avenues of our lives. Feminists have been active in understanding, resisting, and changing this marginalization.

Conclusion: This research article meticulously introduces the readers to the field of masculinities and many of the basic questions that researchers and scholars are concerned with. Several different types of feminism were introduced and argued to be useful in the studying of masculinities.

This research article exposes the reader to the core issues within the field of masculinities. These issues include an overview of popular models of masculinities, theories about the origins of masculinities, and an exploration of the "crisis in men and masculinity" and three perspectives as to the origins of that crisis. This exposure will assist the reader in the investigation of other readings in this field that may provide the ample background to fully appreciate the rich and detailed explorations into the world of men and women.

Works Cited

Anne, Raymund. History of Masculinity and Feminity. Connecticut. Asian Educational Service. 1983.

Mukherjee, Tuton, Arthur Miiller's Plays: Performance and Critical Perspectives. New York UP of New York, 1985.

Sudhir, Grace. "On the Wadings of His Dreams: Re-viewing the Legend and History of Masculinity and Feminity." Arthur Miiller's Plays: Performance and Critical Perspectives. Ed. Tuton Mukherjee.New York UP of New York, 1987.308-317.

Associate Professor & Head of English
Erode Arts &Science College (Autonomous)
Rangampalayam- Erode-Tamilnadu

Research Article

Comparative Picture of Cultural Conflict in the Novels of Vikram Seth

–[1] K.Mekala
[2] Dr.N. Gunasekaran

Abstract:

Vikram Seth is one of the most important novelists in Indian English literature. His contribution to the field of novel is incomparable. His themes and techniques are very remarkable to the particular genre. He has attended the new dimension and depth to the novel by using sonnet form. His three novels are very asymmetrical and spicy in the matter. He used the first-person narrative in one of his novels. Seth's characters are mostly transparent and reflect life entirely. From his young age he made traveled to many places like Nepal, India, California, and London. All his experiences are reflected through his works. It resembles the mirror of society as we see our face in the mirror. The first novel The Golden Gate reflects the 1980's yuppie lifestyle of Californians and the second novel A Suitable Boy reflects the 1950's post-independence India. The last novel An Equal Music shows the lifestyle of London inhabitants, it got a crossword book award. His hard work and contribution brought him 25th greatest global living legends in India.

Key Words: Religion, Culture, conflict, asymmetrical, habitants, transparent.

Vikram Seth wrote three famous novels, the first one is The Golden Gate and the second one is A Suitable Boy and the last one is An Equal Music. Seth has presented the reality of life through his first two novels. Both main characters are longing for self-realization. He has brought all the characters together. John Brown is an engineer, Protagonist of the play who is already having a love affair with Janet, but their love wrecked by one-sided acceptance. After some time, Janet came back to the life of John, she knew

the loneliness of him and gave an idea to circulate an advertisement. He accepted that and gave an advertisement in a frank manner.

In the second novel "A Suitable Boy", Mrs. RuphaMehra, a traditional maker spent nearly 18 months to select a life partner for her daughter. When contrasting these two things, we come to know the culture of the two countries. According to Indian ethnicity marriage is not a simple matter but it should be the bridge of relationship between two families. It brings the bondage of commitment. The bride should go to the bride groom's house and, chance her behavior as flexible to the new surroundings. But in foreign countries, a woman did not like this kind of commitment.

The characters of Lata and Savita clearly shows the mindset of the Indian woman. At the beginning of the novel, Lata loved a Muslim boy named Kabir, but her mother selected four suitors to Lata. However, she loves Kabir, finally, she agrees to marry HareshKanna for the sake of her mother. Even though she does not love him, she marries him. But in western culture youngsters do not allow their parents in their issues. Phil and John's wedding reflected foreign culture. Phil got married to Clarie though her family did not like him as a suitor. They got married but their marriage life quickly ripped, and she eloped with another man. The foreigners have the system of living together; they have a personal relationship, even before getting married. But in Indian parents did not allow their daughters to go out of their home.

In Indian society homosexuality is a banned one but foreign countries got proper rights for that and named themselves as lesbian. This kind of culture is viewed through the relationship between Phill and Ed. As for the Socio-cultural insight Seth has described the religious and political struggle of Indian Society. Socio-cultural insight like untouchability, women predicament, and Hindu –Muslim relationship, and, he mentioned about the prostitutes without any proper identity and proper plan in society. The feeble condition of the scheduled caste also quoted in the novel, where kacherru, a very old and bonded workers lived in such places. A big issue on prostitutes is also explained through the character of SaideaBai a courtesan, who silently bears the brunt of Nawab sahib's lust in drunken position and the unwedded mother of Tanseem is depicted clearly. The relation between Muslims and Hindus as the Muslim courtesan, SaeedaBaiFirozabadi entertains at a party on the event of Holi, a Hindu festival. The festival which features throwing of bright colored pigments on people is thoroughly enjoyed by the younger Hindus but often shocking to the older generation who happen to get dry with color. There is a great deal of an Indian alcoholic drink passed around during Holi, and MaanKapoor has a decided taste for the drink. Attending the party at the Kapoor house, Maan first becomes

sensitive to SaeedaBai and is immediately taken with her. Aside from her recitals at parties, SaeedaBai is kept by the Raja of Marh, a fact that does not get in the way Maan's love. Lata and Kabir had been to India's most romantic spot, the BarsaatMahal, and now Maan goes there where he finds Firoz who fills him in on the latest conversation about him and SaeedaBai. The Raja of Marh, visiting SaeedaBai, rips a page out of a book of Urdu poems given to the courtesan by Maan. The page is an illustration of Muslims at prayer.

> The Raja of Marh is firm to raise a Temple to Shiva just west of the Alamgiri Mosque, which is bad enough in so far as the Imam is concerned but to make matters worse, the future Temple will have as its focus the recently found Phallus of Shiva which will be placed directly between the mosque and Mecca (Caroline 3).

The religious conflict between Hindu –Muslim relationship also explicated in "A Suitable boy" Maan has an affair on Saideabai. He has presented a poem book to her. The Raja of Marh met her and takes the poem book, there was a message about mosque construction and the method of prayer. This made him greed for Muslims, so he planned to build a Shiva temple. Next to the mosque of Alamgiri at the same time religious fanaticism theme occurs when Maan travels to visit the family of Rasheed. He is begrudgingly accepted. He felt that the customs between them is different from his religion. In conclusion Maan is accused of the attempt of the murder of young Muslim man –Firozkhan.

A Suitable Boy is the greatest attempt of Vikram Seth on Post-independence India between (1951-52), in the time of partition of India. Raja of Marh was very firm in raise a Shiva temple just next to Alamgiri mosque and, he has another idea to bring a future temple that will have its focus between the Mosque and Mecca. It is one of the main reasons which made the fight between Hindu and Muslim. In the same novel Seth has introduced another important character like L.N.Agarwal, the Home minister and Begam Khan, a female Muslim MP, She attacks Agarwal in the parliament this makes a big divergence between those two families is almost lost Begam families. Pulmela is a reference about the religion.

The story of a suitable boy web around the four families three of them, Mehra, Chatterji, Kapooars is related by the bond of marriage. But Khans are friends to Kapoors. Indians are injecting politics in religion and religion in politics. He drew an imaginative village Brahmpur to present his ideas on post-independence India.

The novel "The Golden Gate" opens with the story of John Brown. He is a successful

software engineer. He feels lonely in his mechanical life. “John is a successful young man who has ‘everything but love’, to use an oft-repeated cliché. However, when John does find love, it seems to come low in his priorities.”(Prasad 63). When he meets up Janet who was his girlfriend in the past, they discuss his loneliness, and he seeks her help to find his beloved. Janet puts down a lonely heart advertisement in a newspaper.

Solvent, sexy, thrilling, thrifty,
Seeks a bosomy brunette
Who likes to play the flageolet.
Let me make music with you, baby.
Box 69. (18)

Liz Dorati replied to this advertisement, it was forwarded by Janet to John. John is impressed by Liz handwriting and invites her to meet him. They both share their feelings and get married, but it ends up soon by their personal prejudice, political differences, and a pet cat called Charlemagne. Phil, a friend of John, is lonely when his wife Claire leaves him for her family who did not accept her marriage with “a good atheist Jew” (59). Phil and Ed become friends during the house-warming party of John. They were attracted to a homosexual relationship. Ed considers homosexuality a sin so, it is wrecked by Ed’s denial.

Liz decides that her life cannot continue with John who has the opposite opinion in their conversation. Her mother is on the death bed. Her last wish is to see her daughter get married and have children. In the meanwhile, she meets Phil, a good kind man who is also disappointed with his earlier romantic love. The basis of their relationship is friendship and understanding rather than passion. Phil shares his thoughts with Liz,

That Love’s pretty poor forecaster.
I loved a woman – and was dropped.
I loved a man – and that too flopped.
It’s something else that makes me sure
Our bond can last five decades more. (242)

So, Liz wishes to marry Phil. She says,

… And I’d far rather
Marry a man who’s a good father
Than someone… I too don’t feel sure
I can trust passion any more…. (243)

Phil and Liz got married. Both find that love is simply not enough for an enduring relationship but for family values such as companionship, brotherhood, parental,

love is far more stable and more desirable for a steady life. John is hurt and angered by the marriage of Liz to his friend Phil. By recalling his friendship, he thinks of Janet who was mad at him at one time. Now she organizes a home party for all his friends. He thinks of going back to her. In the meantime, John hears the news that Janet dies in a car accident. "John who is completely shattered by this unexpected disaster becomes a nervous wreck". (Mohanty143)

John sees her image everywhere, he hears her voice,
I'm with you, John. You're not alone.
Trust me, my friend; there is the phone.
Pay what are your own heart's arrears.
Now clear your throat; and dry these tears. (305)

John and Liz were a very good pair at first but as the days passed, they hated each other because of their opposite opinion that ends their life. This makes John's hopelessness in life. Liz was also affected but she searched for a good companion in her life, and she leads a good life. After breaking up John realizes his mistake that Janet is a very good companion, but this minute of happiness is no longer to John because he hears the news that Janet is dead. All the relationships in his life make him depressed. Liz and Phil marriage is very shocking to him by overcoming the other great shock of Janet's death. Those who were with him are not making him happy, the loneness and hopelessness only following him in his entire life. The only happiness is Janet's voice which convinces him. It is balanced friendship and affection which can prove to be longer-lasting. John's later relations with Janet prove this. Their love is based on mutual respect, affection, and concern. However, death ends that relationship. (Jayabharathi 147)

Seth drafts Californian lifestyle and the relationship of young professionals and about their fast-growing technology and obsession with war and fanaticism. He pictures modern life ranging from the quest for a proper mate, relationship with pets, homosexuality, nuclear weapons, the beauty of Bay area, Yuppies lifestyle, social gatherings, religious beliefs, and modern advertisement.

The romantic love as a weapon in the battle against the loneliness and boredom of life. John feels boredom and lonely and his anguish and loneliness are universal and it symbolizes the Californian life where he has to struggle for his happiness and existence, learn about follies. (Sharma 199)

John thinks that love is the only solution for his loneliness, so he shows full affection towards Liz but it breaks up because of misunderstanding between them. Once again John reawakens the love towards Janet but it also ends sad because of the death of Janet. Now John is left entirely alone and only the voice of Janet consoles him.

On the comparison between "The golden gate" and "A suitable boy", there we can know many religious conflicts, by the crystal-clear presentation of the two different countries and their cultures. The American wedding is more difficult than an Indian wedding. Most American weddings are placed in the church. The bridegroom and changed the rings and kiss of the hand of the bride. They cut the cake and start their life with the sweet and have some hot drinks. But according to our Indian wedding culture, sharing or having of hot drinks is a prohibited one. On that occasion, the bridegroom put wedlock on the bride's neck. Turmeric and Kumkum adorn the auspicious occasion. Nathaswaram and such kinds of musical instruments are played at the wedding of the six varieties of tasty foods served to friends and relatives. These all the events are exposed in the beginning of the novel through the marriage of Savita and Prankapoor.

References:

1) Caroline Juliet , K "Critical analysis in a suitable boy Vikram Seth" an international studies pune research times, volume 2 ,Issue 2 , April –June 2017 , ISSN 2456 – 0960
2) Jayabharathi, N.B, "*Quest for Self-Fulfillment in Vikram Seth's Novels The Golden Gate and A Suitable Boy",* Language in India, Volume 13:12, December 2013, PP142-156, ISSN 1930-2940.Print.
3) Mohanty, Seemita. *A Critical Analysis of Vikram Seth's Poetry and Fiction*. New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2007. Print.
4) Prasad, GJV. *Vikram Seth: An Anthology of Recent Criticism.* New Delhi: Pencraft International, 2011. Print.
5) Seth, Vikram A suitable boy, New Delhi penguin books, 2003 print.
6) Seth, Vikram the Golden gate, USA random house, 1986 print
7) Seth, Vikram, *The Golden Gate*. New Delhi: Penguin Books, 2012. Print.
8) Sharma, Karuna "Vikram Seth as a multi-faced novelist" an international referred e-Journal of literary explorations, volume 3 issue 4, November 2015, ISSN 2320 -6101 print.
9) Sharma, Karuna and Thakar, santosh, *"Vikram Seth as a Multi-faced Novelist",* An International Refereed e-Journal of Literary Explorations, Volume 3, Issue 4, November 2015, PP 198-207, ISSN 2320-6101 .Print.

[1]Research Scholar, PG & Research Department of English, Sri VidyaMandir Arts and Science College, Uthangarai& Assistant Professor, Department of English, PDRT Padmavathi Arts and Science College, Harur.

[2]Research Guide, Head, PG & Research Department of English, Sri VidyaMandir Arts and Science College, Uthangarai.

Research Article

Magical Realism in *Combat of Shadows*

–Mr. T. Pasupathi

Abstract:

Magical Realism is a term invented by Franz Roh who developed this post-modern technique in American Literature. Gabriel Garcia Marquez is the pioneer using this term. His debut novel ***One Hundred Years of Solitude (1967)*** lays highly this post-modern technique. It was popularized in Latin-American fiction. Paulo Coelho is an eminent writer in Latin-American literature and he used magical realism in all of his novels. ***The Alchemist*** has attained the name of bestselling novel which dominantly has the gist of magical realism through entire narrative. It's a story of young boy who runs behind his dreams in order to find his dream treasure he travels to Egypt Pyramid. And Coelho's sequel novel ***Brida***is a story of young girl who curiously needs to learn necromancy. Similarly, Indian Writing in English novels also have post-modern, post-colonial and new historicism techniques. Salman Rushdie's ***Midnight Children*** has this post-modern technique. ManoharMalgonkar's***Combat of Shadows (1962)*** is known as colonial novel that has magical realism aspect in one section. Ruby Miranda is the protagonist of the novel and she is an Anglo-Indian girl who once meets local wizard named Bichwa Baba. This present study aims to focus how realistic things turned into magical power by Baba and his power of healing both the protagonist and her mother.

Keywords:American literature, Latin-American Fiction, Post-Colonialism, Post-Modernism, Necromancy

Magical Realism in Combat of Shadows

Magical-realism is a movement that can be used both in post-modern and post-colonial elements. It is

founded by Franz Roh who is an American writer and those writers make an unrealistic event happened as realistic in their novels. Latin-American literature popular for this particular movement and could be widely seen in Gabriel Garcia Marquez novels and living author Paul Coelho's novels have magical realism as gist. It is a combination of Latin and American literary works, history, culture, tradition and ethnicity. ***Brida***is a story of a young Andalusian girl who is very eager of learning magic. She approaches wizard to learn tradition of moon and tradition of sun. This novel ends with an abrupt whether she has learnt magic thoroughly or not. Gabriel Garcia Marquez is the one who popularized this term in Latin-American literature and it passes to other genres of literature. Magical realism can be seen in Indian Writing in English by Salman Rushdie's writings.

Indian Writing in English was almost 218 years and it began with the publication of the book called ***Travels of Sake Dean Mahomet (1798)*** written by Henry Vivian Louis Derozio. It is an encounter between eastern and western culture. Magical realism emerges with Salman Rushdie's ***Midnight Children*** in which the author narrates those children were born at 12 o clock when India attains freedom. Children are considered as they are not slaves, they are embodiment of freedom. India's freedom declared by Jawaharlal Nehru on 14.08.2017 at 12'o clock, Nehru says,

At the stroke of the Midnight hour
When the world sleeps, India will
Awake to life and freedom

Apart from Salman Rushdie, the pioneers have concentrated about social milieu but few novels have this narrative technique. ManoharMalgonkar (1913-2010) is an eclectic writer; his debut novel ***Combat of Shadows*** is a story of North-East Assam people and their livelihood under British Raj. This present study focusses young girl purifies her mind after prolong suffering by obeying her mother's words. Her mother Mrs. Miranda brings her to the local wizard who always enchants mantra of lord Shiva. He says to her god walks with you behind in every deed of human beings if you believe in God.

Malgonkar's novels have colonization and decolonization impacts. His second novel ***Combat of Shadows (1962)*** speaks about slavery of tea estate labors. He has chosen Ruby Miranda who is an Anglo-Indian young girl wants to become Mem-Sahib by marrying British-man, Henry Winton. He is a tea-plantation manager to overview Tinapur tea estate, Mirzapur tea estate. Miranda's desire would not be fulfilled as Mem-Sahib so she appointed as headmistress in tea estate school. Miranda's father supported to go with Henry Winton because he can drink alcohol every day. Once she brought biryani to her home, her mother Mrs. Miranda knows

truth but her father staunchly supported her deeds. By seeing all those things Mrs. Miranda planned her to bring local Bichwa Baba who is a holy man in Tinapur. He always enchants mantra shiva walks with faithful those who believe him. He predicts people lives with his power of healing who is seated in Tonga chair. Mrs. Miranda bought her daughter to silent hill where she instructed her daughter to wear clothes traditionally because young boys would mock at her appearance. Ruby's mother hurriedly planned to visit him due to he is going to leave silent hill within two days. Bichwa Bab graces people more than ten years and he is an eminent wizard who demolishes sins of the people. He always used to tell his devotees,

Shiva walks with faithful
God stands those who have faith
What is thy wish?
Mother and daughter looked each other
But they didnot utter a word (CS, 111)

Mrs.Miranda and her daughter brought Joss sticks and flower to worship Baba. Later her says without seeing Mrianda you other brings her to purify your soul. God's presence lies everywhere and he stands beside of everyone if they have faith inhim. both of them lokked at each other without uttering any words. Baba could see a girl who spends her time with the tea plantation manager. Mrs. Miranda believed that her daughter body's soul and body would purify by worshipping Baba. And he could visualize Ruby's position as headmistress in tea estate school where she spends her time with the white man. In order to purify her virginity, Mrs.Miranda brings her to Tinapur. Ruby and Mrs.Miranda fell down feet of Baba while flowing the flowers on Baba's feet. Her mother murmuring that her daughter's sin would befallen. Mrs.Miranda is a devout catholic that's why she believes in Hindu rituals. According to Christian mythology or the sayings of Christ our sins will be forgiven in one day. People commit mistakes god will forgive their errors and heals the people with his grace. being mother she does not have any desire but for the welfare of her daughter both of them came to Tinapur. Its al because of her father Ruby tempted to work in school as headmistress. According to Psychologist Abraham Maslow human beings needs to be fulfilled at any cause. Maslow has divided human beings needs in hierarchy that we have growth needs and development needs. But Miranda's father sent her to tea estate school to have alcholol regularly with sum of rupees as her daughter monthly earnings. Malgonkar is a keen observer who did not suti name for Mirnada's mother through out the novel she might have the name Mrs.Miranda. As renowned dramatist of Elizabethan age William Shakespeare has not given any name for his eminent tragedy Macbeth. During 16th century male-chavunism played vital role. Colonization and Post-colonization writer Malgonkar

has chosen Ruby as protogonist to inculcate social mileu of women. As an ecelectic writer he concentrated an Anglo-Indian girl's culture, tradition and ethics of her soicety vitally affected by British authoritartian.

Bichwa Baba visualizes Winton's poster and his arrogance attitude towards Mirzapur people. He could see Winton's affection on Miranda and he took his bead chain then he started to murmur himself that,

> He sees a man, a white man
> He uttered in a very soft voice
> Far away and not so far away
> Light-eyed and light haired (CS,112)

He interpreted Winton's image and asked Mrs.Miranda and her daughter come to the dias of lord shiva. And he enchants prayer says that, 'Money is an illusion' and it's a dust. therefore he picked up a coin and hept it in his feet, throws high in the air. Later the coin has vanished in the air. Unrealistic things become realistic by conjuring up something thorugh their powers. Mlagonkar does not denegrade into magical realism, surrealism techniques in his novels but social incitations helped to apply elements of both post-modernism and post-colonialism. Post-colonial elements does not portray circumstances or mileu in the novel matched with elements of theories and criticism.

This present study aims to analyze Mrianda purifies her soul after having illicit relationship with Winton. It's to woman that would be accepetable because Dale Spender's phenomenal work Women and Literary History argued women's role in the society and how they are affected by male chavunistic world and as a feminist she puts forth Jane Austen's renowned prose A Room of One's Own (1928) is the beginning for space for women. Spender brings out the example of Germaine Greer's phrase 'a phenomenon of transceince of literary women'. Her illustrations of American feminist notion is considerable. But to Indian female protagnists depicted by Malgonkar, Bhabani Bhattacharya and other writers keenly observed social mileu. Whereas Spender, Toril Moi and Simone De Beauvoir focussed their rights for female. And all feminist issues became movement in America and that is waht focussed in Diasporic literature. Novels of Bharati Mukerjee, Bapsi Sidwa and Chitra Banerjee Divakaruni embedded migrant female and their livelihood in other nations. Moreover Malgonkar commonly known in Indian Writing in English as colonial writer, ecelectic writer who pacifies all his characters in his novels. His masterpiece has colonial impacts and colnization effects during Indian freedom. In the same his second novel finds out the way for woman among British people and she did not fought for her rights but her desire of becoming memsahib post with the English man leads her life into disastrous manner.

As the novelist illustrated Ruby's mother is a catholic woman she does not go to church to pray for her daughter's sins. On the other hand people committed mistakes worships god in many ways. Do all our sins eradciated as per the mythology says? How can a woman purifies her body while worshipping God's devotees and disciples mantras or enchanting slogans? This present study focusses Indian culture become submissive due to an Anglo-Indian young girl's attitude of getting higher job, marrying British man. When Miranda becomes headmistress of the school, her own community people feared of her seeing in the estate or in the school. She too desires for that authoritative rule. Indian culture allows encounter between western culture and eastern culture during colonization and aftermath colonization. Arjun Appadurai rightly pointed out the hyphen after post in which he brings out maximal transformation of amendments of coloialism.

Thus Malgonkar used post-colialism elements, post-modern techniques in all his novels very effectively. His novels always known as protest novel, colonization novels and having marxist conception of authoritartain attitude and so on. Magical realism can be used both in post-modern and post-colonial elements in which characters deeds become real in some way either by worshipping god's disciples or his devotees. To find out for further way of enuncaiting ideas or charcterization of Malgonkar's novels diasporic studies can be applied. This novel ends with Miranda's revenge on Winton not by marrying him but for liberation of her own people she becomes goddess at the end. Winton's voice reflected on the hills and he became mad while seeing Tinapur people rose voice against him and his finally ends.

Works Cited

Abrams, M.H, Galt Garpham, Geoffrey, A Glossary of Literary Terms, Cengage Publishers, 2019, Print.

Manohar, Malgonkar, Combat of Shadows, New Atlantic Publishers, New Delhi, 2018, Print.

Spender, Dale, Women and Literary History, American Publishers, New Delhi, 2012, Print.

❒❒❒

Research Scholar in English,
KandasamiKandar's College,
Periyar University, Salem.

Research Article

Mahesh Dattani: A Playwright with a Unique Voice and Vision

–[1]A. Nanthakumar,
[2]Dr. C. Govindaraj,

Abstract:

Mahesh Dattani is a renowned Indian playwright, director, and actor who has made significant contributions to Indian theatre. He was born in Bangalore in 1958 and grew up in Gujarat, where he was exposed to the rich cultural traditions of the state. Dattani's plays are known for their bold and thought-provoking themes that challenge societal norms and conventions. His plays have won several awards and recognition both in India and abroad. His works have been translated into various languages and have been performed in numerous countries. Dattani has also directed and acted in many of his plays, showcasing his versatility and expertise in different aspects of theatre. His plays often address complex social and cultural issues such as gender, sexuality, communalism, and identity. He is known for his realistic portrayal of characters and relationships, which resonate with audiences across different cultures and backgrounds.

Dattani's stage techniques are notable for their ability to create a powerful atmosphere and convey complex emotions to the audience. One of his key techniques is the use of set design, which he employs to create a sense of location and atmosphere. He also makes effective use of lighting to highlight certain elements of his plays. He also uses sound to create a sense of realism and to help the audience connect emotionally with the characters.

Literature has the power to transport readers to different worlds and times while also providing insight into the human experience. It can evoke emotions, challenge beliefs, and inspire change. Through

literature, people can explore diverse perspectives and gain a deeper understanding of themselves and others. It also has the ability to spark imagination and creativity, leading to new ideas and innovations. The stage is set as the characters of a dramatic play come to life, each representing a unique perspective on the human experience. Their emotions run high as they challenge each other's beliefs, striving to gain a deeper understanding of themselves and those around them. Through their actions and dialogue, they transport the audience to different worlds and times, evoking powerful feelings and inspiring change. As the story unfolds, the audience becomes immersed in the characters' struggles and triumphs, sparking their imagination and creativity in new and exciting ways.

Mahesh Dattani is a renowned Indian playwright, director, and actor born in Bangalore, India in 1958. He has won several awards for his work, including the SahityaAkademi Award, the Padma Shri, and the SangeetNatakAkademi Award. His plays explore sensitive social issues such as homosexuality, gender, and religious identity and have been performed in various cities across India and the world. He has also directed and produced several plays, both his own and those of other playwrights, and has been actively involved in promoting theatre in India. He has also written several screenplays and directed and produced films, including Mango Souffle and Morning Raga. He is a highly influential and respected figure in Indian theatre and has significantly contributed to the field of playwriting and directing in the country.

Dattani's works have been praised for their bold and thought-provoking themes, challenging societal norms and promoting inclusivity and acceptance. His plays often feature complex characters with conflicting identities grappling with issues such as discrimination and marginalisation. Dattani's approach to theatre has been described as experimental, blending traditional Indian forms with contemporary techniques to create a unique and powerful style. His contributions to Indian theatre have been recognised nationally and internationally and he continues to inspire aspiring playwrights and directors. The researcher Parmer states that

> "Dattani's dramatic techniques and stagecraft are superb. There are rapid shifts in terms of time and space. He has made use of different images, symbols, devices, techniques etc. to communicate his ideas in a very effective and concrete manner" (Parmer 35).

Mahesh Dattani's plays examine the intricate process of identity formation, both individual and collective, and how internal and external societal norms interact to shape it. He portrays characters struggling with issues related to their identities, such as their sense of belonging, cultural background, and personal values. He also explores the idea of collective identity, such as national, religious, or cultural identity, and how it shapes his characters' individual and collective experiences. Through

his writing, he invites readers to reflect on their identity and how it is shaped by their environment and experiences, while highlighting the importance of empathy and understanding towards those with different identities. In his play *TARA*, Mahesh Dattani portrays the struggles of a young woman in India who must navigate between her cultural roots and modern values. The play touches on themes of gender roles, sexuality, and caste, highlighting the complexities and challenges of forming a cohesive identity in a rapidly changing society.

Dattani's exploration of identity formation is more expansive than his plays set in India. In his play *The Big Fat City*, he portrays the experiences of immigrants in a multicultural city, grappling with issues of assimilation and maintaining their cultural identity. The play delves into the tensions between different cultural groups and how they navigate their differences. Dattani's writing is a powerful reminder of the importance of recognising and respecting the diversity of identities in our world and the need for empathy and understanding towards those whose experiences may differ. In *The Big Fat City,*Dattani depicts a group of immigrants from different backgrounds who form a support group to help each other navigate their new lives in the city. The play highlights their challenges in holding onto their cultural identity while assimilating into their new environment. It ultimately emphasises the importance of finding common ground and understanding between different cultural groups.

Symbolism is an effective technique because it allows the playwright to convey complex ideas and themes in a more evocative and emotional way, engaging the audience on a deeper level and allowing them to connect with the play and its themes in a more meaningful way. Dattani's use of symbolism in his plays creates a more engaging and immersive theatrical experience for the audience while allowing him to explore complex themes and ideas more innovatively and nuancedly. By using symbolism, he invites the audience to participate in deciphering the meaning behind the objects and actions on stage, making them active participants in the theatrical experience. It enhances their understanding of the play and creates a deeper emotional connection to its themes.

In Dattani's plays, he often uses symbolic imagery to represent the central themes and ideas of the play. In the play*TARA*, the central character's obsession with the mirror symbolises her preoccupation with her appearance and identity. The mirror represents the societal pressure on women to conform to a certain standard of beauty and its destructive impact on their sense of self-worth. In *Bravely Fought the Queen*, the symbol of a rose is used to represent the idea of love and compassion in the face of violence and oppression. In *Dance Like a Man*, the symbol of a broken harmonium represents the fragmented relationship between the two main characters and their broken dreams. The harmonium, once a central part of their musical aspirations, now lies neglected and unused in their home, reflecting

the decay of their love and shared passion. This use of symbolism effectively conveys the complex layers of emotion and trauma that the characters are dealing with, adding depth and nuance to the play's themes of love.

Furthermore, using the harmonium as a symbol allows the audience to empathise with the characters' struggles and relate to their experiences, creating a more robust and resonant theatrical experience. However, it is essential to note that not all audiences may be familiar with the cultural significance of certain symbols, leading to confusion or misinterpretation of the intended meaning. Western audiences may not understand the importance of the harmonium in Indian culture and therefore miss the full impact of its symbolism in *Dance Like a Man*. This highlights the potential limitations and challenges of using symbolism as a universal technique for conveying complex themes and ideas.

Mahesh Dattani explores the themes of family, inheritance, and power in his play *Where There's a Will*. It uses symbolism to represent these central themes and ideas, such as the will itself, the portrait of the deceased, and the house as the physical embodiment of the family's wealth and status. These symbols create a more complex and nuanced exploration of the central themes and ideas of the play, allowing the audience to engage with the play on a deeper level and connect with the characters and their experiences more meaningfully. Moreover, the family's wealth and status also highlight the societal and cultural norms of the period, shedding light on the class divide and the struggles faced by those who do not belong to the upper echelons of society.

"… He thinks he is king of all he surveys! And we are his subjects. But you know the story about the crow painting himself white to become swan? Well, that's him. He can put on all the airs he wants to, but he doesn't fool me. I know who we are. We are just middle –class people with a lot of money." (*CP*472)

This adds a layer of social commentary to the play, making it relevant even in contemporary times. In the play *Where There's a Will*, the family gathers around the deceased patriarch's portrait, symbolising his power and influence over their lives. The will, closely guarded and revealed later in the play, represents the power distribution and wealth among the family members. The grand house in which they all reside is the physical embodiment of this power and wealth. However, it also serves as a reminder of their responsibilities to maintain societal status. These symbols work together to create a sense of entitlement and superiority deeply ingrained in the family's identity, shaping their behaviour and relationships with others both inside and outside of their social circle.

Mahesh Dattani's plays often use symbolic imagery to convey to the audience more profound meanings and themes. Symbols are an essential tool for him to explore complex themes and ideas and provide a way for the audience to connect

with the characters and their experiences. One of the most prominent symbols in his plays is the use of colours such as white, black, red, and green. In his play *Bravely Fought the Queen*, the colour white represents purity and innocence, while the colour black represents evil and corruption. Similarly, in his play *Dance Like a Man*, the colour red is used to represent passion and desire, while the colour green is used to represent jealousy and envy. Other symbols, such as the sea, moon, and sun, are also used to convey deeper meanings. In *TARA*, the sky represents the unpredictable nature of life, while the moon represents the elusive nature of love."Oh, quite clear sky, No moon, no…" (CP362). Symbols also explore complex themes such as identity, cultural heritage, and societal norms. Using symbols in his plays adds depth and richness to his exploration of complex themes and ideas, creating a visual language that connects the audience to the characters and their experiences.

Multi-character scenes are a defining feature of Dattani's plays, and they significantly impact the plays' overall effect. These scenes involve several characters interacting with each other, often simultaneously, and are used to explore complex themes such as identity, power, and social dynamics. They create a sense of immediacy and urgency in the play and allow him to explore the power dynamics between the characters. They also allow him to explore the complexities of human relationships and add depth and complexity to the characters. Overall, multi-character scenes are an essential tool in his writing, allowing him to explore complex themes and ideas dynamically and engagingly. Hindu and Muslim families who share a tragedy come together in a multi-character scene in *Final Solutions*. The scene explores the tensions and prejudices between the two communities and the complexities of human relationships in times of crisis. The scene is tense and dramatic but also highlights the potential for empathy and understanding between people from different backgrounds. The other play, *Thirty Days in September*, a multi-character scene involving the protagonist, her mother, and her therapist, explores the themes of mental health, trauma, and family dynamics. The tension between the three characters builds as they struggle to communicate their perspectives on the protagonist's past trauma and her present state of mind. The scene captures these issues' complexity while creating an emotional connection with the audience.He admits:

> "I see myself as a craftsman and not as a writer. To me, being a playwright isabout seeing myself as a part of process of a production. I write the play for thesheer pleasure of communicating through the dynamic medium" (Agrawal 54).

A non-linear narrative structure is a storytelling technique where events are not presented in a linear, chronological order. In Dattani's plays, this technique requires the audience to pay close attention to the character's dialogue and actions to piece

together the story. This technique is often used in literature, film, and theatre to create a sense of mystery and complexity. In his plays, this technique allows him to explore complex themes such as identity, memory, and trauma and to present a more nuanced view of his characters and their relationships. Overall, the use of a non-linear narrative structure in his plays creates a more immersive and engaging theatrical experience for the audience while also allowing him to explore complex themes and ideas more innovatively. Dattani's approach to non-linear narrative structure also highlights the fluidity and subjectivity of memory and perception, challenging traditional notions of truth and reality. This adds an additional layer of depth to his plays, making them entertaining and thought-provoking. In the play *Thirty Days in September*, which deals with the subject of child sexual abuse, the non-linear narrative structure adds to the story's overall unsettling and emotional impact. The audience is presented with fragments of memories and experiences from multiple characters, making it easier to fully understand the truth behind the events later in the play. This mirrors the experience of trauma survivors, whose memories can be fragmented and disjointed. These narrative choices help to create a more empathetic and nuanced portrayal of the characters and their experiences and highlight the complexities of trauma and its effects on memory and perception.

Dattani is known for using music in his plays, which adds a new dimension to his stories, conveys the characters' emotions, and deepens the audience's engagement with the performance. His use of music is multifaceted, adding to the atmosphere, conveying the characters' emotions and thoughts, and even carrying symbolic significance. His approach to music is creative and unconventional, often transcending traditional forms of musical expression to create a unique theatrical experience for the audience. In *Bravely Fought the Queen*, the song Naina Devi's thumri is used to express the character's defiance and resistance against societal norms. In *Final Solutions*, he uses the song "Vaishnav Jan ToTeneKahiye" to symbolise the message of unity and peace and its significance in Gandhi's philosophy. His approach to music is creative and unconventional, often transcending traditional forms of musical expression to create a unique theatrical experience for the audience. In his play *TARA*, Dattani uses the music to emphasise the protagonist's internal struggle, which is torn between her Indian cultural roots and her desire for freedom and independence. The use of the song adds a layer of complexity to the character's dilemma and enhances the audience's understanding of her emotional journey. In his play *Seven Steps Around the Fire*, Dattani uses traditional Indian music to transport the audience to the rural village setting and evoke a sense of nostalgia for the characters' traditions. The use of classical instruments such as the sitar and tabla combined with modern electronic music creates a fusion that reflects the cultural changes and conflicts the characters face.

Mahesh Dattani's plays often make use of sound as a means of creating symbolic meaning. In his play *Final Solutions*, the sound is used to create a sense of tension and impending violence. In *Bravely Fought the Queen*, Dattani uses sound to create a sense of cultural clash and the collision of old and new ways of life. In this play, the sound of a traditional Indian flute is heard, juxtaposed with the sound of a Western-style guitar, creating a sense of cultural tension and contrast. This use of sound emphasises the characters' struggle to reconcile their traditional cultural values with the modern world.Similarly, in *Dance Like a Man*, Dattani uses sound to create a sense of emotional depth and tension. The play's climactic scene features a haunting melody played on the violin, underscoring the characters' emotional turmoil and sense of loss. The music is a metaphor for the characters' internal struggles and attempts to find meaning and purpose in their lives.

Mahesh Dattani's stage techniques and writing skills have established him as a leading playwright in contemporary Indian theatre. His use of non-linear narrative structures, symbolism, and multi-character scenes creates tension and adds depth to his plays, while his incorporation of music and dance sequences serves to heighten the emotional impact of his work. His exploration of themes such as identity, culture, and societal norms reflects the complexities of contemporary Indian society and resonates with audiences worldwide. With his unique voice and vision, he continues to push the boundaries of Indian theatre and establish himself as a master of the craft. His use of various stage techniques and writing skills allowed him to explore complex themes and create emotionally resonant works that connect with global audiences. As a leading playwright, Dattani's unique voice and vision continue to shape and push the boundaries of Indian theatre.

Reference

Dattani, Mahesh. "*Collected Plays"*.Penguin Books India, 2000.

Parmar, B. R. (2011). *A critical study of dramatic works of Mahesh Dattani*(Doctoral dissertation, Saurashtra University).

Agrawal, Dipti. *The Plays of Mahesh Dattani A Study in Thematic Diversity and Dramatic Technique*. New Delhi: Discovery Publishing House, 2013.

❑❑❑

1 Ph. D Research Scholar,
Periyar University PG Extension Centre, Dharmapuri,
2 Associate Professor & Head i/c, Department of English,
Periyar University PG Extension Centre, Dharmapuri,

Research Article

Positive Approach: Idealism Vs Materialism in Vikas Swarup's The Accidental Apprentice

–*Dr.N. Gunasekaran
**Mrs. K.S. Shyalaja

Abstract:

Women in India are facing a global challenge towards equality to be achieved. Today, Multi cultural and multifarious development has laid women in the platform on workforce in various fields. The aspects of modernity are predominant in Indian society. In the thought of equality, women crave for materialism in all the fields and not for food, clothing and shelter. The deep thought of idealism transforms the human beings to act accordingly with conscience. A close observation of VikasSwarup's*The Accidental Apprentice* reveals that women tries to bring out innovative ideas to be motivated and possess conscience in discovering own identity. Sapna, the protagonist, undergoes a transformative journey to build her own identity. Her displacement and difficulties in her personal life is the foremost inspiration for adaptability in modern culture. The primary aim is to acknowledge women as a champion to hold leadership position in India. Swarup has exposed the optimistic voice of the subaltern women who has been totally emancipated and empowered in socio-political scenario.

Keywords: Dream, Challenge, Hope, Identity, Individuality,

The purpose of the paper is to study the influence of modernity of the human behavior in the novel*The Accidental Apprentice***.** In this materialistic development, VikasSwarup has a great concern for modernity formed in the Indian society. He brings forth the women's superiority attitude towards materialism and behavior. Thereby, he depicts the contemporary society in modern conventions.

Vikas Swarup *The Accidental Apprentice is* an artistic recreation of the feminine upgradation of the nation. He acknowledges the feminine SapnaSinha as an iconic figure of idealism Vs materialism. He bridges the woman and the nation in positive aspects of the

producers to be protected. *The Accidental Apprentice is a significant story of the bold woman* who takes the adventurous travel of life to win over social evil. Swarup affirms the marginalized woman to be shined. Swarup explored the new world order for the woman to face rebelliousness.

In the current scenario, People are obsessed with position and material. The moral values are degraded. Swarup intended to be the eye-opener to transform the situation from which the world is moving away from ethics and moral values. Due to Globalization, Money plays a vital role to support family .Sapna has a tendency to improve her material prospects and ventured for the seven tests to become CEO. The aspiration towards economy makes people independent and confident. To attain Moral and ethical considerations,one should face the greatest challenge to the humanity and the intellect.

Sapna Sinha, the protagonist of the novel firmly believes to fight against social hierarchy. It is the survival dream of Sapna to have faith in success. In the opening of the novel, the quest that Indian woman represents the woman of hope and dream*: I want to hope, to dream, to have faith again, but the soulless weight of reality keeps crushing me down.(TAA, 2).*Sapna, the Nainital woman takes up the responsibility of her family in trauma. She moves to Delhi and takes up the job of a salesgirl in an electronics showroom.

Sapna aspires to take the challenge of becoming CEO in multi-billion empire. The accidental meet of Vinay Mohan Acharya, one of the richest men gave her an opportunity to pass over seven tests of life. In Ramayana, Sita underwent test to prove her fidelity, likewise, Swarupaims to prove the real strength of women through seven tests. This test agreement forms the core of the novel.

It is an urgent need for money that finally forces her to sign Acharya's contract. The first exchange between Sapna and Acharya reveals some solid facts that form the core of Swarup understands of the Indian woman. One, the Indian woman has an insatiable hunger for success, which is born in the desert of dissatisfaction; second, she has a mind of her own which guides this hunger; third, she can be self-sacrificing breadwinner and fervent devotee on one hand and the ruthless achiever and detached rationalist at the same time. (Valiyamattam, 97)

Sapna's stronger section is longing for the leadership strategy crystallizes the incredible resource of struggle against orthodoxy and corruption. The aim of marginality women is to get emancipation. Swarup reiterates Sapna as the feminine blend of head and heart. Sapna represents the finest portrayal of feminine sensibility by experimentations the corrupt police force with the aid of media. Swarup eschews traditional practices and provides free reins to women in the means of discovering one's identity. Sapna as an alienated self brings out instinctive outcome of her inner motivations and compulsions in maturity beyond her generation.

The second test of integrity of exploring stolen diamond ring brings forth a process of discovering herself. She is an attempt to discover the complexities of existence when she was subjected to deep humiliation and fiery anger. Swarup is concerned in building the character of Sapna with the leadership qualities of truth

and trust. Thus, Sapna equipped second test as woman of morals. Acharya inculcates: 'Integrity means much more than just honesty, Sapna. The real test of integrity is to be honest even when no is looking. You proved you have a solid sense of right and wrong. Remember, a good leader must have an exemplary character. Only then can he or she inspire trust. Nothing damages an organization more than the dishonesty of its employees. And, if the CEO himself is crooked, heaven help that company.' (TAA, 148)

The third test of Sapna is encountered with Lauren, the American social worker friend. Sapna inquires about lock-making factory in the slum. There, she encounters the child labour at the age between eight and fourteen. The ethics of global experience is intervened in bringing India with western thoughts. The ethics and business are more pervasive and also impacted by perceptions, values and beliefs Lauren and Sapna join their hands together to struggle against a common menace to protect the children.Sapna filed under the Right to information Act, to provide information about SDM. She says that,Educational rehabilitation to the tune of twenty thousand rupees each as provided under the Child Labour Act.Sapna reports to Acharya about her accomplishment. Then , her thought provoking in this struggle quoted to herself:

> 'We should never allow fear to limit ourselves. To face a challenge with courage is the true test of leadership. Leader ship without courage is like a racing car without an accelerator. It can sputter about for ages but will never cross the finish lines. 'His voice drps a little low, and a tinge of bitterness creeps into it.' Of course, sometimes even with the best racing car you can fail to across the finish line, if you have a saboteur in your midst.' (TAA,185)

The fourth test is meant for the symbol of sex and object of pleasure, when she takes her sister Neha to Mumbai for a singing Contest. This test reveals Sapna's ingenious proof of Raoji, a famous musician who tends to exploit aspiring female singers. Swarup strikes out the reflection of male dominated society in terms of Raoji. It is analytical Swapna gains mental strength for the suffering woman kind.Swarup strikes out the reflection of male dominated society in terms of Raoji, Where men hold dominant power in family, politics and economic affairs. Hence she realized how to thrive and survive in a male dominated work place and how to overcome lack of support both emotionally and financially.

The fifth test is the movement of anti –corruption, organized by Sapna and her neighbor Nirmala Ben. Swarup created Nirmala Ben to the realistic quality of Anna Hazarre. They both acts as a tool who works to eradicate scams, starvation death and cricket craze. ShaliniGover, the journalist supported them. All the three moved on to the bandwagon and the government is forced to relent. But Sapna's boldness of facing the authorities favoured the situation. Acharya posted Sapna as CEO material on witnessing her resourcefulness for the development of India.

Swarup indulged Sapna in the test of decisiveness through her mother who is diagnosed as renal failure. Sapna's aspiration is interrupted against current backdrop of Scam. The situation forced her to buy a kidney for her mother in black market.

Swarup as a spectacular sees Sapna'sindividuality. She sees the rackets are run by MLAS and MPS. Even in this critical situation, she stands on her own. She enabled to donate her own kidney instead of getting trapped in scam. Swarup deliberately raises his hand to show Sapna, Indian feminine is strong in life and death arena. Her purity of conscience is dazzled to realize the sacrifice for her mother. Like phoenix, Sapna heals and easily handles the difficult situation. There was an unexpected change in exposing organ mafia to TV sting operation.

The ultimate seventh test is tackling of the most critical situation in her life time. Neha's sister is badly injured in an acid attack and Vinay Mohan Acharya is murdered. Sapna is prima facie murderer of Vinay. Swarup provides strength to Swapna in the process of struggle. She undergoes psychological and philosophical conflict to attain win- win situation.Wilfred Guerin observes, *"Freud provided convincing evidence, through his many carefully record case studied that most our actions are motivated by psychological forces which we have very limited control."*She attained the power of solving the problem at every level. The conquering of self, transformed her between idealism and materialism. She adapted herself, emerged as a liberated courage woman. Her mastery detective released her from jail. She proved to be strong in physical, mental, moral and spiritual.

Swarup values women through seven test similarly to that of prism penetrates seven different colours. The colours that Sapna attained are the qualities of truth, honesty, perseverance, will power, sacrifice, Patience and leadership. Her true ideals co-ordinate to build her personality. She utters from the bottom of the heart: *I don't believe in lotteries: I believe in myself. Life does not always give us what we desire, but eventually it does give us what we deserve (TAA,434).* Sapna balances her spiritualistic wealth with the rejection of materialistic aspiration. She is acknowledged with the highest goal of self-discovery and self- fulfillment. Swarup explores the feminine subjectivity from ordinary women to complete womanhood. We are thus inspired with her strong and sure strides matching the pace of the world.

Swarup projected Swapna with new face with geocentric vision. When Sapna indulged with the problems, she had a great concern for emotional feeling and human relation –ship in all the seven test. The subtle qualities that acquired by Sapna are believing herself, Self reliant and rebellious. As a radical woman Sapna 's ideology is expressed with modern vision. Swarup bring out Sapna with, many dimensions,woman search for identity ,quest for self hood and emotional independence. In this novel Swarup changes Swapna's thought from negative to positive and rebuild her own life by realizing herself from material. Swarup sculpted his heroine with bold sprit. On considering Women, he thought that they are more traditional and requires reformation, transformation and enlightment, Through Sapna's sufferings Swarup intended to raise woman status with modern thoughts and philosophy.

To conclude, the study portrays the tasks of subaltern women made her to take final solution to abolish corruption, sexual abuses. Sapna attained maturity in humanity

of serving for another humanity. Acharya's search for the worthy achiever is women, apparently the feminine force to lead a nation. Finally, the longing and aspiration of Sapna, who represent the whole women community has realized the tendency of the spirit to protect the world and lead it in the right path. Chitra Banerjee Divakaruni opines, "Strong women, when respected, make the whole society stronger. One must be careful with such a rapid change though, and make an effort to preserve, at the same time, the positive tradition on Indian culture."

Swarup respects and salutes the purpose of modern women to the modern world. *The Accidental Apprentice* is the self- realization of Sapna that she has the remarkable quality of willpower to adhere the course of selfless action. Swarup spreads the individual fragrances through the flower of Sapna. Thus, the new voice of the women marched with the status quo of understanding the society.

References

1. "Chitra Banerjee Divakaruni Quotes." BrainyQuote.com. BrainymediaInc, 2022. 25 January 2022. https://www.brainyquote.com/quotes/chitra-banerjee-divakarun-716656
2. Guerin L. Wilfred ed. A Hand Book of Critical Approaches to Literature. Oxford, Newyork, 2005. Print.
3. Swarup, Vikas. The Accidental Apprentice. Great Britain: Simon & Schuster U.K. Ltd Publications. London. 2013. Print.
4. Valiyamattam, Rositta Joseph. VikasSwarup's The Accidental Apprentice: from Bolly wood and Breaking News to Humanist-Feminist National Narrative. The Quest 29.2, Dec 2015, PP 93-104. Print.

Research Guide,
Head, PG & Research Dept. of English,
Sri VidyaMandir Arts & Science College,
Katteri, Uthangarai, Krishnagiri Dt.

Ph.D, Research Scholar,
PG & Research Department of English,
Sri VidyaMandir Arts & Science College,
Katteri, Uthangarai, Krishnagiri Dt.

Research Article

Women's Quest for freedom in Nayantara Sahgal's The Day in Shadow

–*Dr.N. Gunasekaran
–**R. Santhi

Abstract:

Nayantara Sahgal has contributed a lot for women's empowerment through her novels. They reflect the thirst of women for freedom. Women are given freedom only in name shake. Modern men look modern in the outward appearance but show their domination almost in all places like from family to public places. Sahgal gives clear picture of a woman who belongs to the well-settled family. Even though Simrit is rich and educated who is not free to do anything and she leads her life as a slave. Sahgal's women are bold enough to face the society. They never mind the criticisms on their ways. The significance of the title is wanting of freedom and equality for women. Males define women, how women should be? But women cannot define males. Men are treated as superior beings. So, they can give definition for women. And they are the masters of women. Sahgal wants to break out these things through her novels. In this novel, Simrit the heroine has felt suffocative with her husband. He never let her to breath freely. He is a growing business man. He never shares or freely talk to his wife. To him, Simrit is his own possession. He does not consult to buy anything for the house and the company. To him, he is a master, he takes decision and imposes it on Simrit. She feels complete failure with him. she wants to breathe air of freedom. She wants that her husband has to talk to her freely, that might have cleared their misunderstanding between them. Later, they decide to separate through divorce. Even in that he plans to impose a great divorce settlement to her. It is dead burden to her.

Key Words: Brutal divorce settlement; Male domination; Real Position of Women; Struggles of Females; Hatred of the Society; Quest for freedom.

Introduction:

Sahgalwants to present the real inner feeling of

woman through the character Simrit of this novel. Women want permanency in their life. In the point of view of man, woman is a possession belong to him. But Simrit is new modern woman of Sahgal. She has come out of the foolish beliefs created by the male dominated society. Som is a business man. Simrit belongs to different community. Their marriage was a love marriage against her parents and relatives. She left them and married Som with full opposition. Because, she loved him dearly. But they fail to understand each other. Their house was old house with lot of rooms. Simrit like their old house. She wants everything in her life should be permanent like house, furniture and go downs. But he finds happiness with the new things. Sometimes, he behaves like woman and she behaves like man.

Opposite Poles:

Lot of controversial opinion between them. He is a great male chauvinist. He informs her that he will buy property for his son. But he never minds of his daughters. He deposited shares on his son's name. He loves and like only his son. "My son, my son, you're going to be very very rich" (Sahgal 23). In the future, his son Brij will get double amount from it. He is a lover of money and material wealth not human beings. He wants to earn more. But he fails to earn confidence from his wife. There is no better understanding between Som and Simrit. He finds pleasure with the physical objects. Both Som and Simrit are two opposite poles in life.

Simrit informs him that she is pregnant. But he says that it will not be a boy child. He feels that "Brothers always quarrel about money" (25). She feels happy about the baby. She never told him that she feels reckless and tired. He hates the old house and old dining table, curtains. He informs her that who is going to do business with Lalli. With the help of Lalli, he wants to shift to a new house. He finds bliss in the new things. Simrit hears the story of Som's friend Lalli. He shot his wife and didn't worry about it. He wanders freely. She cannot tolerate the murder of woman. She said to her husband that, "You're exaggerating. That's murder" (28). He never considers her words and supports Lalli. Simply, he replies that he had only one bullet in his revolver. Otherwise, he had killed that man too. Her expectation is mutual understanding and love. But Som is entirely different from her. His mind set is rightly observed in *The Theme of Tradition and Modernity in The Day in Shadow* as,

> Som lives in a male-centred world and doesn't view women as persons and finds it ready enough to condone Lalli's murder of his wife. Moreover, he shows no affection for his daughters and loves only his son, Brij (Mahajan13).

Simrit wants her children should grow up in a single house. She wants never changing furniture, store room and address. She feels that old is gold. But "Som had had no use for old belongings. He had taken a childish pleasure in newness" (37). However, she cannot change anything as per her wish. "Not even about chair covers and curtains. Even there, Som had had a veto. Not even about the servants" (38). Once she has dismissed the cook for his drunkenness while doing his duty.

But Som kept him on. So, there is no respect for Simrit in that house. She is only a care taker of her children. She feels that a woman is not a thing to be possessed but they have to be loved.

Som used her as a sexual object or possession which belong to him. He often compels her for showing his urgency. But she wants a talk and understanding, love between them other than sex. She feels that,

> A sex life with laws of its own, kept apart from the rest of life, must wake one up on a night such as this with all the doubts and fears of the years knocking against it. Sex was no more just sex than food as just food. Dinner tonight had been so much more, an affair of refinement and ceremony (Sahgal 90).

When she fails to fulfill his urge, he shows anger on her. He feels that she attacks his manliness. She asks which exists long among the people either sex or friendship. But there is no reply from him. Her world is entirely different from him. she expects that her husband might be like a friend, like a brother and sister and hold hands together and walk. They have to share to many things with their whole heartedly. She needs that friendly relationship. Because, he is everything to her.

If she does not allow him to touch, they have to separate from each other. He has given instruction and has gone for business trip. The position of Simrit is rightly explained in *Short Review of Neurotic women characters in the novels of Indian English women writers* that,

> Simrit wants him live like loving friends. This action on the part of Simrit irritates Som. Som behaves as ever domineering manner. His manly pride is hurt. He asks Simrit to rectify herself. Simrit does not improve. As a result, she is divorced. But the divorce settlement was concluded upon some stringent conditions requiring Simrit to pay heavy taxes (Shete 152).

The modern woman of Sahgal, Simrit decides to separate from the dominative husband. He wants to divorce her. She left the house with her children. She has selected a rented house in a crowded Defence Colony. It is a compact flat. There is only limited room for the children. There are no facilities like her old house. But here, she feels free to do anything. It is her own place. He divorced her with brutal divorce settlement and she is helped by her friend Raj.

The Consent Terms:

Raj is a member of parliament who describes brutal divorce settlement of Simrit and she meets him in a party. He is a Christian. He wants to serve for the country and people. He has no parents. They were died in his young age. He supports for the female's freedom. He is a healing man of this novel. He tries to heal the wound of Simrit. He is a young man of thirty-eight but a bachelor. He reads the divorce settlement of Simrit made by Som. He cannot tolerate the brutality of Som. It is crueler than death. Divorce is a thing can be got easily than any other things like fridge, washing machine etc. He feels that,

> Trapped and maimed were the words he had used and they were too mild, he said, to describe the damage. It was an arrangement that obviously saved Som taxation. But there were other ways to do that. The strange part of this document was its butchery the last drop of blood extracted. It was revengeful (Sahgal 39).

Male- chauvinist Attitude:

Som wants his son to build his muscles and concentrates on his body. He used to say that, "Be tough, Be a winner, Be a man" (69). Gender domination filled not only in the mind of Som but also the mind of the people of that period. It is too difficult for a woman to come over. Brij comes to know about the shares of his inheritance. The shares worth six lakhs.Five lakhs for Brij and one lakh for his two sisters. There was no equality in sharing property for male and female kids. The gift tax is nearly two lakhs,Simrit has to pay for the Government. Brij feels that company may pay the taxes or his father may pay it. But his father plans to put burden on Simrit. She remembers her past life with Som and his money mind. His mindset makes him to deal anything with using money.

Even to his son, he dealt with money. That he offered amount of one hundred rupees for his good performance in the examination. But she felt that he might have offered him tennis class. Som and Simrit are the two controversial people in one family. His motive for money makes him to change his partner in overnight. Lalli was a close friend and partner but when Som is introduced to Vetter, he completely avoids the friendship of Lalli. It gives threatening to Simrit. She worries about the new business of Som and Vetter. It is the production company of bomb. It will destroy kids, children and pregnant women. She feels for the vagrant children who don't have food and shelter.

Simrit thinks that the cradle children would fear of these men. He has talked to her about the wealth they own. They can buy anything at any time and they can go abroad or anywhere they like. But she looks sad. Her thinking is that "Som, the world is so full of violence" (89). She feels that, human beings born in the earth to love. Som's terms reflected his personality of war like violence. He is like his friend Lalli who shot his wife. Like Som may shoot Simrit. She wants to lead her life independently. She has her own profession of writing. She does not want to depend on a man for her own identity.

Raj introduces Ram Krishnan, a lawyer to Simrit. He has the file of Simrit's case. He explains him regarding the tax implications of Simrit. If she accepts the terms means, it is like murder. She has to pay the whole tax even though she gets nothing from the shares. The share amount will go to Brij when he got the age of twenty-five. It took nine years from now. The tax burden of Simrit is crueler to a woman with children. It is like last drop of blood extracted act. Traditionally, a Hindu woman has no rights apart from her father or husband allotted to her. It is clear from the document of Mr.Raman's case. She is used by Ram and who is now through away by him with great sufferings. She worries about the future of her

children. Because she has no money or property to give it to the children.

Simrit has the only one thing to give to the children is non-violence. Ram Krishnan says that the consent terms totally against Simrit. She has to pay taxes from which she gets nothing. Even nine years tax burden make her to work for till the day of her death. It is like an act of barbarism. Raj is a Christian and a non-believer of Hinduism. Brij goes to his father's office to meet him and discuss about his future. His house looks crowded to him. Many girls who are new to him. They never come home when his mother at the house. Som is busy with drinking party. He welcomes Brij. It becomes lunch time who become too hungry. Later, Mrs.Farrow is the assistant of his father has prepared food for him. It is the nature of woman to know the hungry of kids.

But Som has given him thirty rupees for his lunch. "It's all decided. All settled. You're going abroad when you leave school, exactly a year from now" (216). Brij is happy with his abroad higher education. The house looks the same as it is when Simrit was there. In Simrit's house a phone is fixed. In the first day, Som calls her and wants to meet her. He wants to speak to her regarding the new flat and new life. He speaks about the new terms. She can get income from those shares which are in her name until she remains unmarried. If she marries means, the income from the share will be stopped by him. It is a kind of threatening. She cannot do anything regarding the shares. The society never supports for the women. It is understood from the article *NayantaraSahgal: A Critical Study of her Women Characters* as,

> The social structure in which oppression, suppression and depression of women is accepted as traditional, where a widower can marry any number of time and a widow is forced to die with her dead husband is sure to collapse (Jha 55).

Conclusion:

Som wants to save himself from the tax burden. But he makes Simrit to fall down from the mountain to death. He welcomes Simrit's death with a smiling face. She never expects such cruelty from him. A man can lead his life as per his wish. But a woman has to be a slave to him. she feels that "Som was a man without pity or concern, or even real responsibility" (221). It is a revengeful act of Som. This is the nature of him. He does not have emotions and feelings like ordinary human beings. Because he is a man with dominative attitude. She comes out of the house and begin to walk towards her home. She feels that the air of freedom now. And now she is released from the prison of Som.

Sahgal's real intention is revealed through the article *Concept of New Woman: A Study of NayantaraSahgal's The Day in Shadow* as,

> Sahgal vividly presents the problems that the contemporary women face in society and in their struggle towards self-realization. She tries to unfold the truth that women suffer not only by men's act of physical violence, but she is often emotionally hurt and crippled through his arrogance,

cynicism and indifference. Men wield power over women through terror (Singh 115).

So, women have to feel free in the home as well in the society. This is the thing mostly wanted by the women of this country to breath the air of freedom.

References:

1. Jha, Sonal. *NayantaraSahgal: A Critical Study of her Women Characters*. Cyber Literature 32.2 (Dec 2013). pp. 53-60. Print.
2. Mahajan, Anita. *The Theme of Tradition and Modernity in The Day in Shadow,* Indian Women Novelists: set. II vol, V.R.K. Dhawan (Ed.) New Delhi: Prestige Books, 1993. pp 9-19. Print.
3. Rani, Asoka. T. NayantaraSahgal's The Day in Shadow: A Feminist Perspective. from Kumar, V.L.V.N. Narendra New Perspectives on Indian Writing. New Delhi: Prestige Books, 1997. pp. 68-75. Print.
4. Sahgal, Nayantara**.** *The Day in Shadow*. New Delhi: Penguin, 1991. Print.
5. Shete, Santosh. *Short Review of Neurotic Women Characters in the Novels of Indian English Women Writers.*Vishwabharati 1.3 (Sep 2010). pp. 151-153. Print.
6. Singh, Mahender. Concept of New Woman: *A Study of NayantaraSahgal's The Day in Shadow* from Soni, Sonia. Indian Women's Writing: From Shadow to Revolt. New Delhi: Omega Publication, 2014. X, pp. 114-123. Print.

Research Guide,
Head, PG & Research Dept. of English,
Sri VidyaMandir Arts & Science College,
Katteri, Uthangarai, Krishnagiri Dt.

Ph.D, Research Scholar,
PG & Research Department of English,
Sri VidyaMandir Arts & Science College,
Katteri, Uthangarai, Krishnagiri Dt.

Research Article

Reading Folktales from Gender Perspective: An analysis of Assamese folktales *Chilanir Jiyekar Sadhu* (The Tale of the Kite's Daughter) and *Champawati*

–Dr Junti Boruah

Abstract:

Folktales have a distinctive position in the history of literature and in the cultures of communities because they act as depictions of life of the people. Very often, folktales are used to teach children moral behaviour as well as to entertain them. Folktales can also tell us about different aspects of society. For instance, it is possible to see the portrayal of women in folktales as a reflection of how society views and treats women. In many folktales, women are portrayed in stereotypical ways that reflect a coercive patriarchal society in which men have power over women. In many Assamese folktales, women are represented as submissive, treacherous and jealous. Cruel and jealous stepmother, submissive wife, helpless girls are some of the typical images of woman in a fewAssamese folktales. Although, in some folktales, women have been represented in stereotypical images of passivity, wickedness and helplessness; there are some woman-centred folktales where patriarchal authority has been challenged. The aim of the paper is to examine different stereotypes of woman as reflected in Assamese folktale *Chilanir Jiyekar Sadhu* (The Tale of the Kite's Daughter)and *Champawati*.

Keywords: folktale, patriarchy, woman, gender

Folktales hold a unique place in the literary and cultural history of a community. It provides us with knowledge of a community's traditional attitudes, beliefs, and practises. Folktales are typically passed down orally from one generation to the next. Old men and old women tell their grandchildren the stories they learned from their grandparents. Folktales can be found in a variety of forms because they were spread in new locations by individuals who had travelled there.

As a result, folktales from different cultures around the world share a number of common themes.In this context, Praphulladatta Goswami comments: “Tales do travel, for one can often notice a close relationship among many tales that may be found in various parts of the world. People throughout the ages have moved from place to place and carried their beliefs and traditions from one country to another. Sometimes tales have spread because the same tale collections have been read and enjoyed by people spread over large areas". (Goswami, XVI).The majority of folktales are products of oral tradition, hence it is unclear who first created them. These stories evolve as different people recount them over time, which results in the presence of numerous slightly different versions of the same story. In the words of Talukdar *et al*:

> Folktales are not a single individual’s creation but created and revised by several individuals, across generations adding more character and dynamism to the tale so that the relevance and validity of the tale can be maintained when met by new and different generations whose desires and needs are different…(Talukdar *et al*, 5667)

Folktales are generally regarded as amusing stories for little children. However, there are many folktales which reflect various aspects of the society. The portrayal of women in folktales is one such aspect. Representations of women in folktales may be interpreted as a mirror of how society views and treats women.In order to better understand how society perceives women, it may be useful to examine how gender and social hierarchy are represented in folktales.

Gender refers to the socially constructed differences between men and women. Through the societal standards of male and female, gender identity and the roles of men and women are established. The socially defined roles may, however, be passively accepted, and there may be opposition to what is considered suitable for each gender. In a patriarchal society, preconceived notions of women are created and reinforced through socialisation. Women are portrayed as weak and inferior by patriarchal socialisation practices and gender stereotypes. The “ideal” women are those who conform to the concepts of femininity that men have fashioned. Those who reject the culturally constructed feminine identity and attempt to show their individuality are subject to negative stereotypes. The strong, independent woman is never supported by patriarchy.

One important subject that has always piqued the interest of literature students is the portrayal of women in literary works. There are many literary works that mirror masculine views of femininity and present women from patriarchal perspectives. In such works, women are typically shown as adhering to male societal norms.Such societal norms and culturally derived ideas are used to subjugate women.

In this uneven gender system the gender roles are not created by chance; rather, they are internalised through certain practices and notions.In the words of Aili Nenola "Disparity and hierarchical relations are states which are socially and culturally produced and maintained. The unequal gender system is a concrete socio-economic relationship in which the means of subordination are coercive ones…The roles of men and women in this system do not come about by accident, rather they are learned and internalized both in practice and through concepts and images" (Nenola, 21).On the other hand, several other literary works contest the conventions, institutions and belief systems that uphold a world dominated by males.

Folk literature, also called folklore, reflects prevailing roles and relations of gender in a given society. It should be noted that the existing conditions that prevail within a community can be upheld or challenged through folklore. To put it another way, folklore can be used to strengthen support of the dominant norms and ideas and can also be employed to challenge the legitimacy of prevailing ideas and authorities.In this context, Aini Nenola comments:

> Folklore, like written expression, can be used to either maintain or challenge the status quo prevailing within a community. In other words, it can be used to express and reinforce acceptance of the dominant norms, concepts and power structures, at which time we can speak of folklore as a tool for consensus. On the other hand, folklore can be used to attempt to dispute the authority of predominant concepts and power holders…. (Nenola, 23).

Folklore studies include the study of folktales.These tales have a significant influence on moulding human thought, behavior and values of a community.They are short stories in prose that have been passed down orally from one generation to the next. Many of these stories eventually find their way into written form. Folktales may seem simple on the surface, but upon closer inspection, we may discern in them the values that the community has embedded in its culture and way of life as well as its ideological viewpoints on a variety of life-related issues.Although folktale is "regarded as a means of social conditioning, it is also a reflection of the society and their ideologies. It has within its narrative structure, an element of protest and open-endedness which makes the audience question the accepted social structures…"(Talukdar *et al*, 5667)

An important subject of study can be the various ways that women have been represented in folktales. When examining the representation of women in folktales, there are two primary gender paradigms that can be observed. One is the obedient and submissive woman, and the other is the bold, assertive woman. The obedient, meek woman is a suitable representation of the socially accepted "ideal" woman. Such women never question the wrongdoer; instead, they merely accept their

circumstances. In several folktales, women are depicted as being dependent on men and performing household responsibilities. They forsake their own needs, expectations and interests simply to satisfy the requirements of males.

Folktales can thus be viewed as a reflection of society and its ideas, even though they are typically thought of as simple moral stories for children. While many folktales convey conventional views about women, there are certain folktales that challenge the presumptions about women's status and function in the family and society. In several Assamese folktales, jealous stepmothers, passive suffering wives, jealous co-wife, neglected wives etc. are common.*Burhi Air Sadhu*(Grandmother's Tales) is the first collection of folktales that have been compiled by great Assamese writer and poet Lakshminath Bezbaroa.Bezbaroa emphasised that these tales had a moral and educational value, making them far more than just amusing stories for young children. "However, all Assamese tales donot aim at moral edification; some are told purely for entertainment." (Nath, 22)

Chilonir Jiyekor Sadhu (The story of the Kite's Daughter)is one of the popular wonder tales included in Bezbaroa's *Burhi Air Sadhu*. It is about a rich potter who had no sons. The potter was enraged with his wife because she gave birth only girl child. Once, when the wife was with child, she was afraid of giving birth to a girl child again. Just as her time was approaching, the wife went to her mother's house since she was worried about her husband's wrath. But this time also she gave birth to a girl child. Out of extreme fear, she wrapped her newborn child in cloths, put the child in a pot, and threw it into the river.The pot was spotted by a fisherman and he discovered the newborn baby inside. When he was attempting to bring the pot ashore, a kite pouched on it and took off with the infant. The kite took the infant to her nest and looked after the child until she grew into a pretty young woman.

The kite taught the girl a song and told her that she would come to help her as soon as she sang the song in times of need.One day a merchant passed that way and, feeling tired, he stopped to rest under the tree. At that time, the girl was combing her hair and one long hair fell on the lap of the merchant. The merchant was surprised to see the beautiful young woman on the tree.When the merchant asked her questions, the girl out of fear and confusion sang the song that the kite taught her. Then, the kite appeared and told the merchant all about the girl. She also expressed her wish to marry the girl to the merchant. The merchant agreed to accept her as wife although he had already seven wives at home. When the merchant arrived home with the kite's daughter the other seven wives became extremely jealous of the beautiful young bride and theystarted looking for opportunity to put her in difficulty. But their attempts failed because the kite was always ready to help her daughter. In times of need the kite always appeared to help her as soon as she sang the song. The kite helped her cooking food, sweeping cow shed and preparing

clothes. During the time of the festival *Bihu*, all the wives prepared clothes for the husband but the husband accepted and wore only the nice clothes prepared by the younger wife which she prepared according to the advice of her kite-mother.

The seven wives eventually learned that the youngest wife relies on a kite for assistance in all situations, and they made plans to murder the kite. One of the wives found out how the kite used to be called by the youngest wife. One day, this wife called the kite imitating the voice of kite's daughter. The kite, unaware of the conspiracy, arrived. The wife killed and buried the kite. The incident was totally unknown to the youngest wife and when she called the kite singing the song the kite did not appear. Then, she became sure that her kite-mother might be killed by the jealous wives. After some days, the merchant happened to leave home on business. At the time of his departure, he ordered his seven wives to look after his youngest wife with care. But, during his absence, the wives plotted a conspiracy against the youngest co-wife and sold her to a tradesman who came to the village to sell articles such as comb, looking glass, scented oil and other things. The tradesman took her home and made her watch over his dried fish on river bank. The kite-daughter used to sit by the dried fish exposed to the heat of the sun. In utter grief, she sang a song on the river bank expressing what had already occurred in her life. On his way back home, the merchant chanced to arrive that spot. He listened her song and recognized her voice. He approached her, got all information about what had happened to her during his absence and then took her home. He instructed her to remain hidden in a wooden box. Reaching home, he enquired about the youngest wife and told the other wives that he suspected some foul play and ordered them that he would put them in a test to prove whether they were innocent or not. He placed a thread over a pit and ordered them to walk across the pit on that thread. Six wives failed in the attempt and fell on the thorny pit and died. One of the wives succeeded in crossing the pit. Actually, she was not involved in the conspiracy of the other six wives to sell the kite-daughter to the tradesman. On the day she was sold, this wife was busy cooking. The merchant then lived happily with his two wives: the kite's daughter and the wife who was found not guilty of conspiring to sell the kite's daughter.

Two different types of women are presented in the story. The first one is the weak, meek and submissive women. The kite daughter is portrayed as a helpless woman who must be safeguarded by her kite mother or her merchant husband. She is unable to protect herself, but despite this, she is portrayed as the "ideal" woman because she exhibits the traits that society views as "desirable" in women. Her character adheres to the socially acceptable standard of femininity. The other wives of the merchant are depicted as envious. It is noteworthy that the story makes no arguments against the merchant's actions."The merchant's having seven wives at

home is casually mentioned in the tale, without questioning the propriety of his action…" (Nath, 69) The kite-mother also consents to the marriage of her daughter with the merchant despite being aware that the merchant already had seven wives at home.One intriguing aspect of the tale is that the child abandoned by her mother is ultimately looked after by a kite. Here, the kite serves as a metaphor for a mother who sacrifices all to support and safeguard her child. The kite-mother is presented as completely committed to the duty of raising the child. The kite "represents a mother who does all she can to help and protect her daughter. The kite-mother is entirely devoted to the task of caring for her foster child, is anxious to get her married to a good husband, and even gives her life for her child in the end." (Nath, 68)

Another wonder tale *Champawati* is about person who had two wives. Each wife had a daughter. Champawati was the daughter of that woman whose husband shows her absolutely no affection. She had to perform much harder works. Her father sent her to chase away birds from the paddy field as the birds used to eat the maturing paddy. One day, when she was chasing birds singing a song, a 'voice'answered to her words. Later, Champawati's father came to investigate the matter and promised that he would marry Champawati to whoever he was if the 'person' reveals himself. Then a big python emerges from the forest and Champawati's father had to arrange her marriage with the snake. The favourite wife also urged her husband to arrange Champawati's marriage with the python thinking that she would be devoured by the python. But, the python turned out to be a good husband and he decked her out with gold ornaments. When the jealous wife came to know about it she also persuaded her husband to search a pythton as the husband for her daughter also. The marriage of her daughter with a python also arranged hoping that her daughter will also be rich with gold. But the opposite happened as the python swallowed her up.Later on, Champawati came to know that her python husband is a god in disguise. Subsequently, he leaves his python form and lives with Champawati.

The wonder tale *Champawati* is filled with magic and miracle. It also represents some stereotypical images of woman. The favourite wife of the husband is portrayed as jealous woman. Women burning in jealousy is one of the recurring characters in several folktales which shows perhaps a biased attitude of society towards women. Socially conformed women are those who are meek, submissive, docile and helpless. The behavior of women is closely examined which is suggestive of prejudiced view of society against women. On the contrary, the behavior of men is rarely questioned. The differentiation of the wife favoured by the husband (*lagee*) and the wife disliked by the husband (*elagee*) is also a reflection of bias against women. "If a woman is disliked by her husband, then she is garbage. In other words, she is marginalized.

The tale doesnot tell us why the man liked one and disliked the other woman. Perhaps it is assumed that to say that he liked one and disliked one is enough" (Nath, 77-78). Many folktales depict women as greedy and envious. The favourite woman in the tale *Champawati* is an instance of such stereotype.

These gender stereotypes uphold and normalise the repressive patriarchal worldview that places men in positions of power over women. Typical depictions of women are frequently used in folktales to support the traditional roles that women play in societies. However, there are also some woman-centered folktales in which patriarchal system has been contested. "Kata Jua Nak, Kharani Di Dhak" is one such tale. In this tale, the main character is a young wife who has extraordinary fortitude and the ability to take decisive action. In the realm of folktales, she is a unique character.

However, it should be noted that folktales cannot always be interpreted as a truthful reflection of social reality. It can be difficult to determine if the representation of women in folktales is an accurate reflection of their status in society. Numerous such tales are typically exaggerated and hardly ever meant to reflect social reality.In the words of Sanjeev Kumar Nath: "Representation of women in folktales or literary representations of women cannot, however be always taken as a simple account of women's conditions in society.Many tales, often employing exaggeration, and sometimes tending to be farcical, are hardly meant to reflect social reality." (Nath, 29–30)

References:

- Nath, Sanjeev Kumar. *The World of Assamese Folktales (A Study of the Tales of Lakshminath Bezbaroa and Troilokyeswari Devi Baruani)*. Guwahati: Bhabani Print and Publications, 2011. Print.
- Nenola, Aili. "Gender, Culture and Folklore." ELO, 5 (1999), pp. 21 – 42. https://core.ac.uk/download/pdf/216316729.pdf
- Talukdar, Ankur Jyoti and Anuradha Gogoi. "Retelling of Assamese Folktales from a Feminist Perspective: A Reading of *Tejimola* and the *Tale of Kite Mother's Daughter*."
- PSYCHOLOGY AND EDUCATION (2021) 58(1): 5667-5671.

❑❑❑

Assistant Professor
Department of English
Chandra Kamal Bezbaruah College, Teok
District: Jorhat PO: Teok PIN: 785112 (Assam)
Phone: 9954939439 E-mail: juntibaruah11@gmail.com

Research Article

A Study of History, Politics and Gender Issues in 20th Century Egypt Through the Film *The Yacoubian Building*

–Lakshmi V
– Dr. S. Rasheeda Sulthana

Abstract:

Writers and artists from the Third World, currently hold the attention of the world's audience. They focus on individual nations' socio-political and cultural issues, by revisiting colonial periods and retelling their current predicaments. They break Oriental stereotypes and narrate individual nations' stories of the past and present. West Asian/Arab nations' stories gain the least attention in this changing scenario and this paper sheds light on late twentieth century Egyptian history, societies and cultures through an analysis of the movie *The Yacoubian Building* directed by Marwan Hamed. It dwells on few particular aspects in the film that resonate with the topic at hand and excludes other aspects of the movie, such as gender relations and problematic portrayals of gay relationshipsthat have already been studiedin previous research works. Literature and films play a huge role in representing and rewriting histories and this paper looks into this movie's robust contribution to this endeavour.

Key Words: Late twentieth century Egypt; Corruption; Social injustice; International Corporate interests; Religious fundamentalism

Full Paper:

Postcolonial studies began with the rejection of the colonial gaze, grappling with problems of identity and giving a voice to the powerless. AniaLoomba in her pivotal work on Postcolonialism concludes that Postcolonial studies must look away from mystifications of the colonial gaze and focus on developing indigenous histories and possibilities (258). Writers from the Orient are trying to do that exactly and the world audience is eager to listen to writers from previously unexplored regions of Japan, China, Korea, Southeast Asian nations, etc. Cinema is taking a similar trend with movies such as *Parasite* and *Crazy Rich Asians* gaining tremendous worldwide

recognition. In this new trend of world literature and cinema, it would be a beneficial exercise to look into much-neglected West Asian art works.

Arab writers have always rooted their works in their respective societies, politics and culture. It is impossible to separate the art from the real world in their works in general.

…the conflict with Western powers is no longer an issue for the post-independence state passes through a stage of corruption. It distorts information, confiscates freedom of expression, and sells the whole country to imperial corporations…narratives get more tuned to the emerging consciousness with its awareness of the complexity of the new situation, with its fierce competitiveness, use of massive power, manipulation of media, distortion of the democratic ideal, misuse of codes of honour, and exploitation of natural resources and human power. (Al-Musawi 161,162)

Muhsin Jassim Al-Musawi in his work *The Postcolonial Arabic Novel: Debating Ambivalence* succinctly sums up the themes and concerns of the Arab writers in the extract above. Corruption, social injustice and international corporate greed continue to wreak havoc in many West Asian Post-colonial societies; religious fundamentalism and continued Western Orientalist attitudes add fuel to the fire. The film *The Yacoubian building*, adapted from Alaa Al-Aswany's novel of the same name, revolves around these themes in varying degrees. The film, released in 2006, is an interesting blend of good content and commercialelements. Though based in the 1990s Egypt, and bound to the nation's particular history, society and politics, it stands out for its universalist themes of tradition vs modernity, power and corruption, social inequalities and role of religion. This paper explores the film's particular social, political and cultural contexts.

Egypt in the 1990's witnessed social unrest because of the corruption in the Sadat government, increased power of the police and wide chasm between the rich and the poor. The gap between the rich and the poor is brought out well in the novel and the movie. The central characters Taha and Busayna live on the rooftop of a building, just like many other poor families, where men and women do manual labour. Taha's father is a watchman and Busayna's mother is part of domestic labour as seen in the original novel; they cannot afford to rent a normal house. Taha is not given an opportunity to be police officer even though he gets high marks, because the bureaucrats are chosen only from rich families. Busayna is pushed by her mother to take up a job because her father is not able to earn anymore. She cannot wait for Taha to get a good job because of her family situations. Busayna also understands that Taha cannot get a good job due to his lower-class origin. A beautiful young girl that she is, she cannot protect herself while working in small businesses from prying men and daily harassment. Thus, she chooses to be with a rich old man because no young man from the lower-class can provide her security. On the policy front, differing from the Nasser era anti-Western stance, Anwar Sadat's open door economic policy invited foreign investors and opened the country to international corporations. This brought money into the pockets of politicians and

ultra-rich. This is brought in the film when the businessman turned politician,Hagg MuhammadAzzam, opens a car manufacturing plant with Japanese collaborators. Hagg is arm twisted to give 50% of his profits to the political schemer in exchange for his political position. The Western atmosphere in the after parties and media attention furthers the case of increasing corporate presence in Egypt. The powers of the executive branch of government are seen in the scenes involving TahaelShazli's capture during the student rebellion. The police officers are picturized as brutal and menacing. The images of cigarette smoking and condescending attitudes of the officer in-charge, while Taha is being questioned and tortured, provoke anger in Taha and are replayed at a crucial point to catapult towards the climax; the images of heavy military vehicles during the final shoot out furthers the cause.

Taha is rejected in the police recruitment and he joins the university for a graduate degree. The posh surroundings of the university and uber-rich students alienate him and other poor students. In his first class, he takes the backseat along with another poor student, who tells him that he feels like an outcast. Taha's formal clothingand the other boy's ragged attire differ completely from the overall stylish classroom. Those students' parents are well placed in society and there is also a special mention of a boy whose mother is an officer in the UN. This is an indirect reference to Saadat's peace with the UN and Western powers; Saadat famously gave a peace-loving speech in the UN and received the international Peace Prize in 1978. His government took foreign funding for various initiatives including women's rights, which wereconsidered detrimental to Egyptians' cause by many grassroot activists (Abu-Lughod 150). Thus, the film exposes the inequality in education and job opportunities in Egypt at the time; it also touches upon the ill-effects of globalization and increasing power of corporate interests.

Karim Tartoussieh in his article "'The Yacoubian Building': A Slice of Pre—January 25 Egyptian Society?" talks about how the movie portrays the sentiments of the common people before the Arab rebellion of 2011. The scenes involving police brutality and mobilization of student mobs capture the brewing unrest exactly(Tartoussieh159).There is a scene in which Busayna screams in anger at ZakiBey. Once she opens upto him, she voices out her frustrations at her nation. When Zaki tells her that when one hates one's nation all meaning is lost, she replies that it is the nation that is being cruel to its children and not the other the other way around. The scene stands out because the calm Busayna breaks her silence for once and it directly conveys the directorial intention; young women's lives are dictated by their class and gender; corruption, red tape and bad economic policy are destroying the lives of the unprivileged.

The stories of each of the primary characters are intertwined, at times colliding or converging with one another. Together, they give a biting condemnation of a nation that has squandered its promise and which has been forced to compromise its own principles, resulting in a corrupt and undemocratic political system dominated by a single party. The unlikely pairing of the elderly roué and the disillusioned young girl that ends the film provides a closing grace note that can be seen as a ray of

hope against the death and unhappiness that has befallen the other characters.

Religious fundamentalist forces slowly crept into Egypt and other Arab nations in the late 20th century. The film takes a humane approach towards this issue. The lack of opportunities and wide gap between the upper and lower classes are primarily responsible for Taha to become a part of a pseudo religious militiagroup, as a search for acceptance in society and meaning in life. The torture he undergoes in police detention ultimately pushes him to take the final step. Taha's path to violence is similar to the characters Majid and Ahmad's fate in Sahar Khalifeh's novel *The End of Spring* and is reflective of many unfortunate young men's lives in Egypt and other war-torn Arab nations.

Overall, the movie does not show Egypt of the time as a conservative society; on the other hand, it is controlled by those with money and power and brought down by poor governance. Those in power use religion and culture as tools to propagate their interests. The movie could be taken as a lament for past greatness. It could be seen as promoting existing Arab stereotypes; however, the holistic picture drawn is not so racist or colonial minded; it asserts the undeniable fact that histories and lives of people are complicated and cannot be looked at through simple one-dimensional lenses. The intersections of capitalist and state interests, along with cultural and social aspects determine the young lives of Taha and Busayna, as is with any every other human on the planet.

Works Cited

- Al-Aswany, Alaa. *The Yacoubian Building*. Translated by Humphrey Davies, Harper Collins e-books.
- Abu-Lughod, Lila. *Do Muslim Women Need Saving?*. Harvard University Press, 2015.
- Al-Musawi, MuhsinJassim. *THE POSTCOLONIAL ARABIC NOVEL: Debating Ambivalence*. Brill, 2003.
- Khalifeh, Sahar. The End of Spring. Translated by Paula Haydar, Interlink Books, 2008.
- Loomba, Ania. Colonialism/Postcolonialism. Routledge, 1998.
- Mostafa, Dalia Said. "CINEMATIC REPRESENTATIONS OF THE CHANGING GENDER RELATIONS IN TODAY'S CAIRO." *Arab Studies Quarterly*, vol. 31, no. 3, Pluto Journals, 2009, pp. 1–19, http://www.jstor.org/stable/41858582.
- Tartoussieh, Karim. "'The Yacoubian Building': A Slice of Pre—January 25 Egyptian Society?" *Cinema Journal*, vol. 52, no. 1, [University of Texas Press, Society for Cinema & Media Studies], 2012, pp. 156–59, http://www.jstor.org/stable/23360289.

Ph.D. Research Scholar, P.G. and Research Department of English, Bharathi Women's College (Autonomous), Affiliated to the University of Madras,Chennai

Assistant Professor, P.G. and Research
Department of English, Bharathi Women's College (Autonomous),Chennai

Research Article

Discord and the Dynamics of Power in Octavia E. Butler's *Wild Seed*

–M. Prakash
–Dr. K. Lavanya

Abstract:

This paper depicts the power of Doro, thirty seven hundred years old superhuman and his domination over three hundred years old super woman Anyanwu in the novel *Wild Seed.* Octavia E. Butler, in this novel, explores the ruthless power of Doro over others and normal human race to build a strong race of his own with his dream and power. In order to meet his dream race, Doro kills many. He survives by taking the body of others to execute his irrational habit of breeding people as if they are animals. In his search, he meets Anyanwu, learns her super power, takes her under his control to create and develop his race. Though Anyanwu is powerful and can change any form as her wish, she comes under the control of the man, Doro, which is never her quality. Though both are powerful and have supernatural abilities, being a woman, Anyanwu is overpowered by a man power Doro. But, even this Doro, who has never obeyed anyone, who has never had any feeling and emotion, for the first time in four thousand years, feels lonely and fears of losing Anyanwu at the end of the novel. Butler shows, even a dominating powerful ruthless man would lower him for the love of a woman.

Keywords: superhuman, irrational, race, supernatural, domination, overpowered...

Wild Seed isn't about Arthurian England or the French Revolution. All things considered, it is about estrangementand seclusion; about requirements, dreams, desire, and power. It is likewise about affection. Africa gives the social background to the underlying cooperation among plot and character. In spite of the fact that the initial setting of *Wild Seed* is seventeenth century west Africa, explicitly the Niger river region of eastern Nigeria, the setting shifts through the course of the novel and we follow the lives of Butler's two undying focal characters, Doro, a 4,000

year old Nubian, and Anyanwu, a 300 year old Onitsha priestess, through the center section journey to life in a colonial New England village, to life on a prior to the war Louisiana ranch, to California soon after the Civil war. Throughout 200 years of development we are aware of an expansive and distinctive historical trap.

Once more, be that as it may, Butler's utilization of history and cultural folklore accomplish more than essentially enlighten the content or fill in as simple tinge. The two controls are natural for our comprehension of character, theme, and activity. Their utilization additionally allows Butler to utilize a more unique way to deal with the old trials of the trials of immortality, the theme of the otherworldly breaking down of the one who can't die.

The explicitly African fragment of *Wild Seed* just possesses four sections of the content yet an African ethos rules the entire book. The tale opens 1690. Doro has gotten back to Africa to search for one of his "seed villages," one of a several communities he has naturally saved, made out of people with beginning or lateral mutant abilities. They know things of hear things or see things others can't thus in their home communities, they are rebels or pariahs or "witches" in view of their capacities. In his self-sufficient villages wherein he gathers and breeds this individual, Doro is their defender; his thought processes, notwithstanding, is a long way from benevolent for he needs his kin in an undeniable manner. He "enjoys their company and sadly, they provide his most satisfying kills" (27).

Doro's mutant power is the capacity to move his psychic essence to any human host; in this way, he murders to live. Also, as he executes, he in a real sense "feeds" off the soul of the host body. However, at whatever point Doro executes or "takes" his own sort, he acquires psychic energy from their increased clairvoyant energy than he drives from the "taking" of ordinary non-mutant human beings.

The village Doro re-visitations of has been crushed by slave trackers and as he considers the savagery and ponders following and refocusing the caught survivors, his endowment of fascination in different freaks, an intrinsic following sense or "telescent" unobtrusively makes him aware of the inaccessible Anyanwu. He winds up pulled toward her. Head servant's portrayal here proficiently passes on both character and spot.

He wandered southwest toward the forest, leaving as he had arrived alone, unarmed, without supplies, accepting the savanna and later the forest as easily as he accepted any terrain. He was killed several times by disease, by animals, by hostile people. This was a harsh land. Yet he continued to move southwest, unthinkingly veering away from the section of the coast where his ship awaited him. After a while, he realized it was no longer his anger at the loss of his seed village that drove him. It was something new an impulse, a feeling, a kind of mental undertow pulling at him. (4)

It is an unobtrusive consciousness of Anyanwu which draws in Doro and pulls him to a nation he has not visited in 300 years. At the point when he at long last meets and talks with her, Doro speculates quickly that they are far off kinfolk, that she is "wild seed," the product of people groups' passing by during one of Africa's

numerous times of motion. Unexpectedly, Anyanwu herself underpins this thought when she reviews a half recollected and murmured gossip that she was not dad's kid however had been conceived by a passing more abnormal. Initially, Doro's kin were the Kush, an antiquated people part of the immense Ethiopian Empire. Anyanwu's kin are the Igbo or Onitsha Ibo individuals of eastern Nigeria. Conventional Onitsha society, clarifies ethnologist Richard Henderson, was a "community strongly concerned with maintaining oral accounts of the past" (8).

Henderson reveals to us that "Onitsha lacked an elaborate mythology as its cultural charter, and instead emphasized a quasi-historical 'ideology' based on stories tracing the founding of its cultural character,and instead emphasized a quasi-historical 'ideology' based on stories tracing the founding fusions." We see an illustration of this semi history when Doro addresses Anyanwu, attempting to put her in his long close to home history. "Your people have crossed the Niger' he hesitated, frowning, then gave the river its proper name' the Orumili. When I saw them last, they lived on the other side in Benin"(42).

Butler's Anyanwa is incompletely founded on an amazing Ibo champion, Atagbusi, a village defender and a supernatural "shape shifter." Henderson, whom Butler recognizes as a source, says that Atagbusi is said to have been a daughter of the minuscule faction called Okposi-eke, a drop bunch eminent for its local specialists and answerable for mysterious insurance of the northwestern shrub edges of the town. She was accepted skilled, as are different people of Okposi-eke, of changing herself into different huge and risky creatures, and it is accepted that she composed the medication that ensures the network on its western front.

Like the incredible Atagbusi, Butler's Anyanwu is likewise a shape-shifter, a lady fit for actual transformation. She can turn into a panther, a python, a hawk, a dolphin, a canine, or a man. For self-security, the majority of Anyanwu's forces are stowed away from the townspeople. Furthermore, to diminish dread of the illogical, Anyanwu modifies her body continuously with the goal that she apparently ages at similar rate as the different spouses she has individuals around her. In any case, whenever she picks Anyanwu can recapture her normal body, that of a tough, excellent, twenty year elderly person. Anyanwu is the town healer, a specialist for her kin. She develops conventional spices to make the standard drugs despite the fact that her capacity to recuperate doesn't generally need the utilization of spices. As a regarded and ground-breaking individual in the town progression, Anyanwu is, She served her people by giving them relief from pain and sickness. Also, she enriched them by allowing them to spread word of her abilities to neighboring people. She was an oracle. A woman through whom a god spoke. Strangers paid heavily for her services. They paid her people, then they paid her. That was as it should have been. Her people could see that they benefited from her presence, and that they had reason to fear her abilities. Thus she was protected from them – and they from her – most of the time. (134)

Doro's villagers are a racial mix of blacks, Indians, blended bloods and whites. Anyanwu finds that the vast majority of the town individuals are inviting. They are

living with tight working way. Family members live inside a compound. Individuals with normal language live respectively as a gathering. The unreliable one are set with individuals who defend them. The locals consider Doro to be their watchman who shields them from their foes and catastrophes. Indeed, even he controls their lives as well. Individuals are prepared to forfeit their blood for Doro. At whatever point he feels to have a fresh blood, he takes from them. They promptly give him. Regardless of his fierceness, Doro gets tribute at whatever point he goes there. He includes numerous kids inside the town.

Doro and Anyanwu have numerous conflicts between one another. Doro never regards custom and society. He breeds individuals yet he murders his own kin who promptly penance themselves. He even orders Anyanwu to bear youngsters for his child and furthermore offers proposal to bear his own kids which she hates. She needs to escape from Doro and structure another general public or network of her own in another ranch. It should be completely secured by her, where she should be the expert. This should be occurring before Doro comes. They like to fabricate another understanding dependent on regard and bargain. He learns regard for her emotions and capacities. Also, he understands that he should quit slaughtering his own kin who serve him the best. So to pick up connection between them, he should follow humankind. Along these lines, Butler gives the universe of various society who are thoroughly outsiders and live in depression.

References:

"An Interview with Octavia Butler," in *Callaloo*, Vol, 14, No. 2, spring, 1991, pp. 495-504.

Butler, Octavia E. *Wild Seed*. USA: A Time Warner Company, 2001. Print.

"Black Women and the Science Fiction Genre," in *Black Scholar*, Vol, No. 2, March/April, 1986, pp. 14-8.

Danial G. Marowski. *Contemporary Literary Criticism*. Vol. 38. Gale Research Company US, Print.

"Difference and Desire, Slavery and Seduction: Octavia Bulter's Xenogenesis," in *Foundation*, No. 48, spring, 1990, pp. 50-62.

Donawerth, Jane L. "Science Fiction by Women in the Early Pulps, 1926-1930." In Donawerth and Kolmerten, eds. 137-52.

"Homage to Tradition: Octavia Butler Renovates the Historical Novel." in *Melus*, Vol. 13, Nos. 1 and 2, Spring-summer, 1986, pp. 79-76.

Hunter, Jeffrey W, and Polly Vedder. *Contemporary Literary Criticism*. Vol. 121. USA: The Gale Group, 2000. Print.

"Octavia Butler and the Science-Fiction Heroine," in *Black American Literature*, vol. 18, No. 2, Summer, 1984, pp. 78-81.

"Utopia, Dystopia, and Ideology in the Science Fiction of Octavia Butler," in *Science-Fiction Studies*, Vol. 17, No. 2, july,1990, pp. 239-51.

Ph.D Scholar English (part-time),
St. Joseph's College of Arts & Science for Women, Hosur.

Head & Asst. Prof. of English,
St. Joseph's College of Arts & Science for Women, Hosur.

Research Article

Psycho-social Aspects of Communication in Destructive Cults and Groups

–Pooja Jaggi
–Veena Gupta

Abstract:

Since ancient times, destructive cults and groups have caused incidents of mass suicides, homicides, abuse and self-harm. These behaviors take place due to various motives and factors. Historical analysis has shown the existence of cults, death pacts, and religious inspiration behind such phenomena. Researchers may identify the relevant variables that either reduce or exacerbate the harm caused by such cults and groups to the vulnerable followers by examining the leaders and followers personalities, communication and behavior patterns, and presence or absence of mental illness. The article presents a few case studies of destructive cults and groups including dysfunctional families from India and around the globe. It also examines how the psycho-social aspects of communication play a role in formation and perpetuation of such destructive cults and groups leading to gruesome incidents of violence and abuse which baffle ordinary human comprehension and understanding. The findings will help in identifying such potential destructive cults and groups before the actual damage is done.

Keywords: Communication, Psycho-social aspects, Destructive cults, Groups, Dysfunctional families

Across civilizations many cases of destructive cults and groups including dysfunctional families have baffled academicians and researchers from various fields. It is perplexing to note how a large number of people can fall prey to harmful communication and indoctrination and indulge in acts of extreme violence and self-harm. Beyer (2021) has reported the following three heart wrenching incidents, namely Jonestown and Heaven's Gate.

Case One- Jonestown

The Peoples Temple Agricultural Project, better known as "Jonestown", was a remote settlement in

Guyana established by the People's Temple, a U.S. based cult under the leadership of Jim Jones. In 1978, Guyana, a religious commune, saw the deaths of almost 900 individuals. Jones urged his followers to resist the capitalist forces that he saw to be their enemies and to die with honor. Some suicides were voluntarily committed, but many were made to swallow poison under duress, and those who tried to get away were shot.

Case Two- Heaven's Gate

Heaven's Gate was an American religious movement by Bonnie Nettles (1927–1985) and Marshall Applewhite (1931–1997). The group's founder and prophet were among the 39 members who took their own lives in 1997. Everyone who took part seemed to be doing it voluntarily. They put plastic bags over their heads after consuming poison. According to Heaven's Gate adherents, the end of the world was just around the corner and only those who have attained the Next Level spiritually have a shot at salvation, which entails collaborating with extraterrestrial creators.

Case Three- Turpin Family

Until one daughter managed to escape and call the police in January 2018, David and Louise Turpin had been abusing their 13 children for years. The children were raised in a home in Perris, California that was described as a "house of horrors" by the media once they learned what these children had to undergo to survive (Margaritoff, 2022).

Apart from these cases around the globe, India since ancient times has also witnessed such phenomena. A very relevant example is the incidents of mass suicides by women under the Sati Jauhar (mass funeral pyre where the wives voluntarily burn themselves alive after their husbands' death). In recent times, two cases in India are the Burari and Ahmedabad family suicides in 2018.

Case Four- Burari

The bodies of Bhavnesh Singh (age 50), his brother Lalit Singh (age 45), their wives Savita (ages 48 and 42, respectively), their children Neetu (age 25), Monu (age 23), Dhruv (15), and Shivam (15), as well as their sister Pratibha (age 48) and her daughter Priyanka (33) were discovered hanging in a circle on the first floor of the Chundawat residence. Narayan Devi (age 77), the mother, was discovered dead on the floor in the neighboring room. The authorities believed it was an instance of a ritual gone wrong that resulted in "mass suicide" based on the journals entries recovered from the residence. According to the police, Lalit wrote the journals

because he thought his deceased father's "ghost," Bhopal Singh, was speaking to him and telling him to practise"badhtapasya," or "banyan tree worship," for the sake of the family (The Hindu, 2018, July 16).

Case Six- Ahemdabad Family

Ghanghar (2018) performed research on the Ahmedabad family of three who were discovered dead in mysterious circumstances. According to a note found in their home, the three may have killed themselves due to black magic. Kunal Trivedi (age 45) hanged himself, while his 16-year-old daughter Shirin and wife, Kavita, took poison to end their lives, according to the police. In a suicide letter, Kunal penned addressing his mother: "I repeatedly warned you about black magic and its abilities, but you never took me seriously. You've always claimed that it's because I consume alcohol ("Aapnekabhinahimaanamainekayibaar kali shaktikebaare me bataya. Aapne sab kakaaransharabkobataya"). Kunal claimed that he and his family had never intended to kill themselves, but had to because of the influence of black magic.

The present article will cull out the role of communication and its psycho-social aspects in such tragic incidents. Palayon, Todd and Vungthong (2020) in their article on "The language of destructive cults" explain key features of such communication. Their research demonstrates that radical non-religious ideas that are absent from the sermons of mainstream religious groups are observed in the language and communication used by destructive cults. Their vocabulary emphasizes othering, amplifying, embellishing, and denying in order to subdue their followers (e.g., Shoko Asaharaformed AumShinrikyo, which was responsible for the deadly Sarin gas assault in the Tokyo subway in 1995 (Metraux, 1995), and the Order of the Solar Temple (Lewis, 2016; Introvigne, 2016)).

Destructive cults frequently behave in an aggressive, manipulative, and overly dictatorial manner towards its members in their communication and interaction. In fact some key followers also become perpetrators of similar communication patterns with all new entrants. Some of them use harsh language and may threaten physical punishments and instill terror in the minds of their followers to establish severe control over them (Richardson, 1993; Dawson, 2018; The Jonestown Institute, 2018 Galanter, 1999). By using an othering or negating approach, the leaders isolate their followers and manage their circumstances and behavior. The leaders push them to engage in harmful behaviours like murder, and mass suicide because they forbid communication between their followers and outsiders (Pignotti, 2000; Singer &Lalich, 1995 & Chidester, 1991). In Burari case, the family patriarch Lalit convinced all the

family members including children that ‘Badh Puja’ (the fatal ritual which led to eleven deaths) was absolutely necessary for the family’s progress and salvation of father’s soul and other relatives. Also it was communicated that no outsiders including any relatives or friends should know what was going on in the house (“Burari Deaths: Notes In Family Registers Say They May Not See Next Diwali,” 2018).

Not only are the communications dictatorial and manipulative but also may be rampant with promises of rewards and positive outcomes. In Jonestown’s case a paradise-like place and new world was promised. Marshall Applewhite, the leader, felt that his group might find sanctuary from the renewal of the planet Earth in a celestial kingdom (in outer space) that was outside the reach of human knowledge (Wessinger, 1998). Similarly in Burari case the family progress and prosperity was linked to following dictates of the father’s soul. These types of ideologies may have the ability to alter the viewpoints of a single person or entire cult congregations via increasing and developing approaches that enable people to see risky behavior as a necessary means of achieving their objectives. The groups strong allegiance to their self-acquired dogmas shaped their choice to commit mass suicide (Bohm & Alison, 2001).

Another important psychological aspect of the communication is whether the stakeholders in the groups including leaders are suffering from any mental illness. Raja (2018) conducted a psychological autopsy of Burari and propounded theories that Lalit the protagonist of the entire incident may be suffering from conversion disorder, shared psychosis, delusions and hallucination due to an injury he suffered in 2007 or the trauma of his father’s death or both. Kluger&Luscombe (2018) state in their study that perpetrators and victims may be depressive, bipolar, or schizophrenic. Some of them may have experienced abuse as children. According to David Finkelhor, a professor of sociology at the University of New Hampshire and the head of the Crimes Against Children Research Center, abusers may also fit into the delusional or paranoid diagnostic profiles, which can lead to a range of unreasonable or abusive conduct. In the case of the Turpin family, according to Finkelhor (as cited in Kluger&Luscombe, 2018), “Parents may convince themselves that they are shielding their kids from the evil society’s corruption or that kids are bad and need to be disciplined or brought into line”. According to a study conducted by Elizabeth Skowron (as cited in Kluger & Luscombe, 2018), a professor of counseling psychology and research scientist at the University of Oregon’s Prevention Science Institute, mothers frequently initiate and perpetrate abuse. According to NCANDS data, 70% of victims experienced abuse at the hands of their mothers. One additional risk factor for one or both parents in cases of familial

violence, such as in the Turpin case, may be what Skowron refers to as “acute threat-sensitivity,” which is frequently present in parents who are severely abusive. They have a threat-oriented worldview, believing that “my child is more powerful than me,” she claims. “I can calm down if I have perfect control.” In fact, when such parents do exhibit caring behaviour, their physiological stress levels increase. Better to enforce rules so that the children are under their control. Other leading risk factors could be alcohol or drug abuse and domestic violence (Kluger and Luscome, 2018). Like in the Ahmedabad case (2018) Kunal who came under the influence of black magic was an alcoholic too.

In some cases socio-economic context may play a key role. In Burari case, Chundawats were a lower middle-class family with high aspirations. They developed this convoluted idea that whatever economic prosperity they were experiencing was due to following notes in the registers without fail (“Burari Deaths: Notes In Family Registers Say They May Not See Next Diwali,” 2018). In the Turpin family case also, the extreme abuse and bizzare control tactics which the parents exhibited may have been a way to control the pressure of feeding 13 children. Their particular sect propagated the belief that children are gifts of God and birth control and abortion are sins, because of which they were caught in this vicious cycle (Kluger & Luscome, 2018).

The article has elucidated upon several important issues which clearly point out to fairly diverse factors which may contribute to psycho-social and cultural aspects of communication in all such destructive groups. Presence of mental illness, domestic violence, extreme religious ideologies and dogmas, history of abuse, financial and social constraints and various forms of pressure and control tactics all contribute to such horrifying and baffling incidents. Findings point out the importance of creating an awareness regarding such detrimental and harmful communication at all levels including school curriculums. Families, social and religious groups which are supposed to be safe havens, may become death traps. Authors also suggest developing dedicated helplines and trauma centers where victims can report without fear. Not only immediate action should be taken by the stakeholders in this system but also long term rehabilitation. It is heartening to note that Turpin children even after being rescued had to face more abuse in foster homes later (Kluger & Luscome, 2018).

References

Beyer, C. (2021, October 12). What Cult Suicides Are and Why They Happen. Retrieved from https://www.learnreligions.com/cult-suicides-95794

Bohm, J., & Alison, L. (2001). An exploratory study in methods of distinguishing destructive cults. Psychology, Crime & Law, 7(2), 133-165. doi: https://doi.org/10.1080/10683160108401792

Burari Deaths: Notes In Family Registers Say They May Not See Next Diwali. (2018, July 11). *Outlook India*. https://www.outlookindia.com/website/story/burari-deaths-notes-in-family-registers-say-they-may-not-see-next-diwali/313332

Ghanghar, G. M. (2018, September 12). *Ahmedabad family found dead, suicide note points to black magic*. India Today. https://www.indiatoday.in/india/story/family-in-ahmedabad-found-dead-black-magic-mentioned-in-suicide-note-1338420-2018-09-12

Introvigne, M. (2016). Ordeal by fire: The tragedy of the Solar Temple. In J. Lewis (Ed.), The Order of the Solar Temple: The Temple of Death (pp. 27-46). Hampshire, England: ASHGATE.

Kluger, J., &Luscombe, B. (2018, January 19). *The Twisted Psychology of Parents Who Torture Their Children*. Time. https://time.com/5109959/turpin-parents-children-torture/

Lewis, J. R. (Ed.). (2016). The Order of the Solar Temple: The Temple of Death. Hampshire, England: ASHGATE.

Margaritoff, M. (2022, August 11). *The Disturbing Story Of The Turpin Family And Their "House of Horrors."* All That's Interesting. https://allthatsinteresting.com/turpin-family-children

Metraux, D. A. (1995). Religious terrorism in Japan: The fatal appeal of AumShinrikyo. Asian Survey, 35(12), 1140- 1154. doi: https://doi.org/10.2307/2645835

Misra, N., Jha, H., & Tiwari, K. (2019). Psychosocial autopsy of mass suicides: Changing patterns in contemporary times. In Neurological and Mental Disorders. IntechOpen.

Raja, V. (2018, July 5). *Burari Mystery: What Does Psychological Autopsy and Shared Psychosis Mean?* The Better India. https://www.thebetterindia.com/148919/burari-psychological-autopsy-shared-psychosis/

The Hindu. (2018, July 16). *Burari deaths: 11 bright people with one dark secret*. https://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/11-bright-people-with-one-dark-secret/article24428709.ece

Wessinger, C. (1998). How the millennium comes violently. The Jonestown Institute. Alternative Considerations of Jonestown & Peoples Temple. Retrieved from https://jonestown.sdsu.edu/?page_id=16602

Professor, Mata Sundri College for Women, University of Delhi, Delhi, India +919899759439, poojajaggi@ms.du.ac.in

Associate Professor, Indraprastha College for Women, University of Delhi, Delhi, India +919810866108, vgupta@ip.du.ac.in

Blacks Encounter Racial discrimination in Chester Himes' *If He Hollers Let Him Go*

–R. Sivasankari
–Dr. K. Lavanya

Abstract:

This paper is on Racism Suffered by Blacks in Chester Himes' *If He Hollers Let Him Go*. It deals with how the white people react when they face blacks. In the midst of white people, the blacks are treated differently. Chester Himes has depicted this story what he has faced as a black during 1940s. His experiences are shown here through the character, Robert Jones. Wherever Jones goes, he has to face racial problems. He has been humiliated and treated badly by the white people. He has been refused to serve in the hotel by the white waiter, arrested for the crime of rape falsely because of a white woman, Madge and also he couldn't bear white policeman's reaction during his late night travel though he has given a valuable reason, the white policeman is not ready to accept his words. All things happen because he is black. Everything what the blacks have faced in the white society during his time and blacks' struggle to overcome those problems, have been shown through the character, Jones.

Key Words: Whites, blacks, humiliated, crime, struggle.

Chester Himes is a novelist, essayist and short story writer. He was born on July 29, 1909, in Jefferson City, Missouri. He attended Ohio State University after high school but dropped out by the end of 1926. He preferred the company of pimps, gamblers and hustlers. He pimped for his girlfriend Jean Johnson and committed crime. His behavior led to his arrest. He was sentenced to twenty five years in prison. He started to write in prison. He began to study human behavior

and draw upon his own experiences to construct narratives and characters. In the 1940s, his writings reflected the anger and frustration building up in the Black community. He became discouraged as he encountered racial hostility while in the workplace. His works reflected mostly his own experiences.

Chester Himes, as a black, had experienced and overcome many issues dressing his life time. Though during 1940s, blacks were freed and given many rights as whites, they were humiliated badly in the white society. The white people were not ready to accept Blacks as on among them. They were not ready to hear their words. Blacks were falsely blamed; they were not given mercy on any basis. Those times were difficult for blacks to overcome in their life due to racial problems.

Chester Himes, in his novel, 'If He Hollers, Let Him Go', has shown the life of the blacks in the white society, their inner conflicts to overcome the obstacles and the whites' reaction towards them. Here, the black character, Robert Jones, as a shipyard worker has faced such problems among the white society. He couldn't bear the reactions of whites when Whites happened to cross them in their daily life.

The beginning of the novel itself shows the inner conflicts of Jones. He has been dreaming that he has been humiliated by a white. "I didn't mind their not giving me the job, but their laughing at me hurt. I felt small and humiliated and desperate, looking at the two big white men laughing at me" (2). He couldn't have strength to hear the word 'nigger' from whites. The word itself makes him to raise his temper. "I'm not going to have nobody call me a nigger either" (36). Jones suffers often because of his inner conflicts due to the social condition which he lives. Often he gets nightmares, where whites humiliate blacks, that is often he gets humiliated by them. This inner sufferings make him anger and this anger makes him to suffer to faced the problems arise around him.

Jones, though he is a supervisor in Atlas Shipyard, the whites who work under him do not give proper response. Madge, a white woman who works under him, creates a problem to Jones, which makes him to lose his job and go to prison for false accusation, whenever, she happened to meet Jones in the working place, she does many unwanted things to Jones. Her eye expressions would be bad, which gives irritation to Jones. As Jones is already facing many mental conflicts due to the society he is living, he thinks everything badly or the situation makes him so.

After these mental pains and strains, Jones has made up his mind not to worry about the social and gender problems around him in this society. But the problems chase him through Madge. After his mind change, Jones happens to enter the room

unfortunately where Madge is taking rest during the work time. He fails to see her presence there. Later only, he comes to know her presence. When he tries to come out, Madge voluntarily comes forward to Jones and calls him for having sex. But Jones refuses her proposal, though once he has plan to seduce her because of her sexy dressing. When someone knocks the door, Madge turns the situation upside down. Being a woman, she cries loudly saying that she has been seduced by Jones.

Jones is falsely arrested for the crime of raping a white woman. Though he refuses many times, no one is ready to hear his words because he is 'black'. To the society, the blacks are always the same-like criminals, seducers and bad one. The whites never hear the words of blacks thinking that they are always criminals. Likewise, Jones is also thought so. He plans to escape, but his girl friend advises him not to do. But he knows very well that no whites hear the true words of blacks. But he is arrested and taken to prison. Though the judge comes to know the truth that Jones is falsely accused by Madge and the mistake is done by Madge and not by Jones, he is not ready to release him because he is black. "My word against hers, and all the evidence on her side. I knew there was no way in the world I could prove I hadn't tried to rape her" (231).

I'd been instinctively scared of being caught with woman screaming, 'Rape'. Scared of the mob; scared of the violence; just scared because I was black and she was white; trapped, corned, physical fear.

But now I was scared in a different way. Not of the violence. Not of the mob. Not of physical hurt. But of America, of American justice. The jury and judge. The people themselves. (231)

Jones is given just a two choice by the judge. Either he has to join the army and sacrifice his life or to accept his crime and go to prison. Jones has no other way, he choosed army and is freed from the crime. From the beginning, one can see his inner conflicts and social problems. After many suffering, he has decided to live a ordinary peaceful life. He aims just to come up in his life like others. But the problem arises from outside in the name of Madge. His dream to come up in his life like others has been put down by whites because he is black.

Once, Jones goes to a high class hotel along with his girl friend to have a good dinner. There, he is made to wait for a long time by saying that all the tables have been booked. At last, after a long time, he and his girl friend are allowed inside and are given last table near the kitchen. This thing makes Jones to lose his temper and he starts to shout at the white waiter. "We came here to something to eat out of the kitchen, not to eat in it" (71). Even in a hotel where one can fulfill his hunger, Jones

is refused to serve by a white waiter, because he is black.

While Jones is travelling late night with his girl friend, they are stopped by a white police and are asked many questions. Even they say the true reason for their late night travel; the police white man humiliates them and accuses Jones in bad words. All these incidents made Jones to suffer a lot. Himes has shown what he has experienced in his life as a black through the character, Robert Jones. And also has shown the reactions of whites towards blacks in the white society.

Jones, mostly because of his inner conflict suffered a lot and created more problems around him. His girl friend, Alice who was born to black father and half white mother, has a full confident in leading her life in their white society. Even her father works among the white society in a good position. She makes all her effort to change Jones' mind, but everything ends in vain. Each time she tries to convince him to face everything patiently, but he couldn't bear and becomes anger whenever he is humiliated by white people.

There are more instances which raise his temper. Once, when he asks one of his white woman workers named Madge to do a work, she says she will not work under a nigger. This makes him to lose his temper and calls her a bitch. Because of this, he loses his position in his working place. One time, he and a white man named Johnny Stoddart have a dispute and gets knocked out by Stoddart. This time too he loses his temper. Immediately, he takes a knife and heads towards him to kill him but drops that idea temporarily in order to kill him later when he would not get any chance. Till the end of the novel, he has the idea to kill him but he never tries it.

Once, when Jones takes Alice to hotel to have dinner where white people are having their food, they are delayed service and also given a note that they would not given service the next time. This too makes him anger and shows it out. Alice gets disgusted with him for not hearing his words and getting into trouble. That night he goes to bed and gets nightmare as usual. This time he is beaten by two white peoples. He wakes up in the effect of his dream and begins his day with anger and sufferings.

Wherever Jones goes, he has to face racial problems. He has been humiliated and treated badly by the white people. He has been refused to serve in the hotel by the white waiter, arrested for the crime of rape falsely because of a white woman, Madge and also he couldn't bear white policeman's reaction during his late night travel though he has given a valuable reason, the white policeman is not ready to accept his words. All things happen because he is black. Everything what the blacks

have faced in the white society during Himes' time and blacks' struggle to overcome those problems, have been shown through the character, Jones.

References:

Awkward, Michael. "*A Black Man's Place(s) in Black Feminist Criticism*." Representing Black Men. Ed. Marcellus Blount and George P. Cunningham. New York: Routledge, 1996. 3-26.

Fabre, Michel, and Edward Margolies. *The Several Lives of Chester Himes*. Jackson: UP of Mississippi, 1997.

Gayle, Addison Jr. The Way of the New World: The Black Novel in America. Garden City: Anchor P, 1975.

Himes, Chester. If He Hollers Let Him *Go*. 1945. New York: Thunder's Mouth P, 1986.

Himes, Chester. *If He Hollers Let Him Go*. London: Serpent's Tail, 1945. Print.

King, Deborah. "*Multiple Jeopardy, Multiple Consciousness: The Context of a Black Feminist Ideology.*" Signs: Journal of Women in Culture and Society 14.1 (1988): 42-72.

Lundquist, James. *Chester Himes*. New York: Frederick Ungar Publishing Co, 1976. Print.

Milliken, Stephen. *Chester Himes: A Critical Appraisal*. Columbia: U of Missouri P, 1976. Print.

Milliken, Stephen. *Chester Himes: A Critical Appraisal*. Columbia: U of Missouri P, 1976.

Morrison, Toni. "*Unspeakable Things Unspoken: The Afro-American Presence in American Literature*." Within the Circle. Ed. Angelyn Mitchell. Durham: Duke UP, 1994. 368-98.

Muller, Gilbert. *Chester Himes*. Boston: Twayne, 1989.

Smith, Valerie. "*Gender and Afro-Americanist Literary Theory and Criticism*." Within the Circle. Ed. Angelyn Mitchell. Durham: Duke UP, 1994. 482-98.

Ph.D Scholar (part-time),
St. Joseph's College of Arts & Science for Women, Hosur.

Head & Asst. Prof. of English,
St. Joseph's College of Arts & Science for Women, Hosur.

Research Article

Social Reality and its Caveat in V.S. Naipaul's *A House for Mr.Biswas*

–R.Deepadharshini
–Dr. M.Premavathy

Abstract:

A very restricted world, geographically and aesthetically, it is extended by a journey, literal and metaphorical, undertaken by the protagonist. His movement away from his immediate environment becomes the condition for a breakthrough into the larger world and also his subsequent self-imprisonment. Mohan Biswas represents the consciousness of quality of a man regardless of his poverty. Life spent on hard labour with the pressure of having to repel the breach of identity in family and society has brought him to the same common departure of mortals. The vision of Naipaul then lies in a sensitive man's rebellion against despotism and his hopeless struggle to achieve independence. The displaced Indian finds himself in a complicated social situation where the act of living is precarious and uncertain and the existent is assailed constantly by the worst fear of being left before. He's fully insulated in a crowd and proves himself as solitary fighter against the conservative system filled with rotten myths, customs and rituals. Biswas's hunger for knowledge, his oddity and prankishness, shocking to the Tulsis, are seductive rates to the child who had been deprived of a father's illustration. Lack of particular choice in space made his geste crack behind the conciseness of life. The notion of death spreading from the roots of the trees suggests that there is some fatal insufficiency in Mr. Biswas's creative apetite and vague romantic craving. Yet is he a common man who could save his quality of dying in his own residence of expedients deserting dependence unto his last breath.

Keywords: Acculturation, Banishment, Existential fear, Individuality, Isolation and Paternal loss.

With the decline of the British imperialism and the rise of the American power bloc in the alternate half of the twentieth century, the world has seen mass migration, deportation and kinds of exile, which have given new shapes to individual and public artistic gests.

Naipaul operates the dialectical pattern of the novel through the differing consciousness of the protagonist and the narrator both responding to the same narrow external reality and so, indirectly, to each other. He thus suggests the complexity of the relationship between man and his inability to escape it.

The novel *A House for Mr. Biswas* succeeds in transcending the individual tone by universalizing the issue of disaffection with a Naipaulean cry for identity in the postcolonial world. An autobiographical study of the novel reveals how the life history of Seepersad and his son, V.S.Naipaul, is analogous to that of Mr. Biswas and his son Anand who fails to absorb the Caribbean climate.Mr. Biswas is the prototype of Naipaul's father who had passed his ambition on to his eldest, brilliant son with a determination to prove himself. Both Seepersad and Naipaul were deprived of father's presence in early nonage, and both were dependent on the arbitrary benevolence of their extended families. In the novel, this similarity initiates an empathy that sluggishly develops between Mr. Biswas and Anand. Therefore, Paternal loss in immature age places overdue burden of tone responsibility in particular and social issues.

Naipaul projects the fundamental "fear of extinction," the annihilation of the self that his father continued to endure and transmitted to his son. The actual dramatic journey of Biswas from society to social reality is based on Naipaul's rational and existential bias. His existential struggle is in his mental landscape for freedom from restraint.

Mr. Biswas feels the subjection of his son in the loneliness of his exile. His children too do not feel any deep or real affection for him. Having to provide for children despite his poverty makes him fritter away the precious years in this disregard of the present. The children grow up and suddenly, he realizes: "I've missed their childhoods." At Green Vale he had grieved "for a happy life never enjoyed and now lost." So ingrained has this attitude became that when in the end, he finds himself in his own house— "He grew dull, and querulous, and ugly. And so the years had passed, and now there was nothing to wait for" (566).

Naipaul has never thought of his future except as a writer. From his very childhood, he had found his father to be a victim of the limited, poverty-ridden, backward Hindu world for his career in journalism and story writing in his diasporic identity. He had also realized the factors that had denied his father to be a potential writer. The great amount of pain, suffering and humiliation that Seepersad went through is understandably part of the second generation post-indentured Indians in Trinidad. Naipaul describes this in his family relations when he describes Mrs. Tulsi, Seth, Tara, Ajodha, Pundit Jairam, Owad and of course, Shama, a replica of his own mother and a rich family's daughter.

The birth and early life of Mr. Biswas is ridiculous because he is born in the wrong way with unfavourable horoscopic signs, including a sixth finger and "an unlucky sneeze." The Pundit urges that Mr. Biswas be kept away from the tree and water—particularly water—and prescribes his father Raghu, not to see his son for twenty-one days.Mr. Biswas's first name Mohun ironically means "the cherished, and was the name given by the milkmaids to Lord Krishna," (17-18) and he has a

variety of absurd, churlish and grotesque gests. Indeed, as child he was seen as mischance by the superstition of his ancestors. This developed in him a disposition to scuffle with the age-old traditions in order to prove his worth.

Mr. Biswas came to leave the only house to which he had roughly right. For the next thirty-five years, he was to be a vagabond with no place he could call his own with no family except that which he was to attempt to create out of the engulfing world of the Tulsis. For with his mother's parents dead, his father dead, his brothers on the estate at Felicity, Dehuti as a slavish at Tara's house and himself swiftly growing away from his mother Bipti, who broken, became progressively useless and impervious, it seemed to him that he was really fairly alone.

At first, he was destined to become a Pundit and he could not become so because he rejected the rituals, customs and false notions when he was learning the chops from Pundit Jairam to be a Pundit in his childhood. Biswas must be shorn of his cultural identity and completely depersonalized before he can evolve into a new reality. Biswas reaches the "zero states of his cultural identity," when in malice of being a Brahmin by estate he is transferred to the Sutra world of The Chase to work as a labourer. The cultural void which he experiences leads to his nervous breakdown. However, this shearing of the cultural identity has been necessary to prepare Biswas to face the changing terrain, where it's no longer possible to remain tethered to traditional estate roles.

Mr. Biswas's struggles to define himself by his trio vocation: to build his house, to succeed as an intelligencer and to prepare his son to leave home for study.Though in his torture, he was not completely swayed by disappointment. On the other hand, he was preparing himself to do his assignments stored for him in *The Sentinel*.On the other hand, Mr. Biswas is tortured by the heartstrings of depersonalization, gets hallucinatory fancies, and struggles with his wife Shama and children to have a house.

A houseless man had no insulation. He was to live in barracks. His doors and windows could not be closed in the night because he had to share the place of his roof with others. As he gets aged and becomes farther self-conscious, he begins to insurgency against the constraints placed on him by his immediate terrain. The new house would symbolize his personality. It would symbolize his private individuality that he must maintain against the rest of the world.If he cannot provide a full house to his children, he at least can gift them a doll's house.

Even, Mr. Biswas married life with Shama proves a failure. On his part, he feels keenly dissatisfied with the conditions of life in Hanuman House, and he vents his anger upon Shama. The result is that she remains distant in her relationship with him. "You getting everybody against you. You don't mind. But what about me? You cannot give me anything and you want to prevent everybody else from doing anything for me?"(107) Man's true self is betrayed when they reveal the first priority of their hearts. To Biswas it was privacy, but to Shama it is her long list of relatives. Being deprived of a wife's faithful submission to the common goals, he was almost dead in his desperate struggles. This assailed him with fear of leaving everything empty

one day.

Though his marriage into the Tulsi household provides greater security than he was known before, but, in return, the family demands strict conformity and anonymity. Hanuman House symbolizes the encroachment of a foreign culture on the old Hindu customs and beliefs. If Mr. Biswas vigorously claims independence and individuality and while he denounces the old Hindu Code which tends to destroy, he does accept the positive ones-it provides security, ensures financial and psychological support at times of need.

He is described as stranger, visitor, wanderer. He is recognized in Hanuman House as a buffoon and the role of fool is one which he at times accepts in humiliation and at others rejects with bitterness. But Biswas the clown is also Biswas the rebel. Mrs. Tulsi greatly resents Mr. Biswas's rebelliousness. While her other sons-in-law cooperate with her and with Seth fully and they all work without complaining or grumbling, Mr. Biswas makes no secret of his dissatisfaction and displeasure with his life in this household. To him life seemed unreal here. He thought of a different life. It did not fulfill his wishes: "Real life was to begin for them soon and elsewhere. The Chase was a pause, a preparation."(147)

The suffocating conservatism of Hanuman House is suggested by a description, which seems to be equally applicable to a prison. The environment, in which he lives, does not offer to him any possibility of escape. After a furious quarrel with Mrs. Tulsi, he takes loan from his uncle, Ajodha and manages to buy a house of his own in Sikkim Street in Port of Spain.

Mr. Biswas, at the end, lives in his own home; but he remains unemployed. His house is a structural disaster, and the mortgage is well beyond any possible means of payment. Every big success has a bigger price tag. Mr. Biswas has exhausted all his mental and physical strength to reach there and, as a consequence, he suffers a heart-attack. When Mr. Biswas seems to have achieved some sense of 'Wholeness', his experience is associated with an ant whose collapsed wings were a burden to its body. Anand helps to remove these wings.

The structure of the novel with the recurring images of darkness, decay, and death, makes failure appeal throughout the story and stands the inevitable outcome to the process of Mr. Biswas's struggle. The very first line of the prologue tells us that Mr. Biswas is already dead. Mr. Biswas's death causes hardly a flutter. Only the *Trinidad Sentinel* reports it, and not with the headline Mr. Biswas had requested: "Roving Reporter Passes on"(589). The headline, which he gets, is "Journalist dies suddenly,"(589) which is a statement cruelly impersonal and blunt. The result of Mr. Biswas's efforts could not have been otherwise than as depicted in the novel. His premature death denies to him this pleasure.

One can see with transparency, how the frustrating energy of a poor young ambitious man has ripped away his strength and brought him to a pathetic misery of cohesive dependence on his children, yet unable to pop out from the fantasy world which he has moulded for himself away from the sorrowful labour of an otherwise

toilsome world.

Biswas has gained his insight through own suffering. It is at Green Vale that this realization comes to him that “He had for long regarded situations as temporary: henceforth he would look on every stretch of time, however short, as precious” (265). The mixed nature of Biswas’ desire for self-reliance echoes existential absurdity. Stifled by communal pressures, yet afraid of the chaos of an unstructured society, Biswas is in constant suspension.Biswas is Naipaul’s compassionate version of the being condemned to wander the world in his own psyche. Naipaul has written *A House for Mr. Biswas* at a different creative stage in his career, a stage when he did not have the later contemptuous and negative view of human experience.

The classic demonstration of his short life states that true freedom is to be achieved from within by commitment to the present and not to make hasty choices by undermining the souls’ capacity to a square foot of own possession. Biswas shadows the fault that parents make beyond their strength to promise a great future to their kids. As evidence of the critical synthesizing consciousness of the narrator they not only summarize the actual dramatic journey of Biswas from society to social reality but also clearly indicate his ironic, rational existential bias. In the narrative Biswas and the narrator journey side by side. But the prologue and the epilogue belong to the narrator alone.

Works Cited:

Hamner, Robert D. *V.S. Naipaul*. New York: Twayne, 1973.
Kamra, Shashi. *The Novels of V.S.Naipaul*. New Delhi. Prestige: 1990.
Naipaul, V.S. *A House for Mr. Biswas*. Harmondsworth:Penguin, 1969.
Naipaul, Seepersad. *The Adventures of Gurudeva and Other Stories*. London: Andre deutsch, 1976.
Rushdie, Salmon. *ImaginaryHomelands: Essays and Criticism: 1981-91.* London: Viking, 1991.
Said, Edward. Orientalism. 1978; Harmondsworth: Penguin, 1995.
Walsh, William. *V.S. Naipaul*. Edinburgh: Oliver and Bond, 1973.
White, Landeg. *V.S. Naipaul: A Critical Introduction*. London: Macmillan Press, 1975.

Ph.D. Research Scholar, Department of English
Government Arts and Science College for Women
(Affiliated to Bharathidasan University)
Orathanadu – 614625, Thanjavur, Tamil Nadu
E-Mail id: deepadd335@gmail.com

Research Advisor, Associate Professor (English)
CDOE-Bharathidasan University
Tiruchirappalli-620024, Tamil Nadu, India
E-Mail id: drpremapalani@gmail.com

Research Article

Re-reading the Mao folktale of *Akajii Ye Ariijii Ko*

–Rose Mary Kazhiia
–Zothanchhingi Khiangte

Abstract:
"*Akajii Ye Ariijii Ko*" (*Akajii* and *Ariijii*) is a popular folktale among the Mao Naga(s) of Manipur and Nagaland. A close reading of the tale reveals the attitude of a patriarchal society towards women and how their voices go unheard and their achievements unacknowledged. As the title of the story suggests, the apparent central characters are *Akajii* and *Ariijii,* two great warriors of the time in which the story originates. But as one reads the story, one clearly understands that it is Kapeini who is the main "actor', the unsung heroine. The character of Kapeini is generally seen as the stereotypical woman who uses her charm and beauty to deceive. In this story, Kapeini uses her charms to seduce the man who killed her brother and avenge his death by slaying him. As a female persona, Kapeini is one such woman who represents the voice of feminist consciousness and who has the will and courage to bring change into the conventional society.

Keywords: Patriarchal, stereotype, conventional, feminist consciousness.

The folktale of *Akajii* and *Ariijii* is found not only among the Mao Nagas but different versions of it are found among the *Angami* and the *Khezha* Naga tribes of Nagaland. J.H Hutton had collected this tale from the Angami and titled it as '*A Naga Judith*' in his book *The Angami Nagas* (1921). The Naga society is patriarchal. It is a social system in which men control power. Patriarchy is a "system of social structures and practices where men dominate, oppress and exploit women" (Walby 214). Though the patriarchal

structures are no longer so rigid, the Nagas in the past assigned distinct roles for both genders which were strictly followed by the members. Gender roles were maintained in the society through oral instructions mediated by folk narratives. The women were confined to domestic work, childbearing and cultivation while the men dealt with polity, hunting, warfare, and cultivation. Everyone born into society accepts these norms and roles unconsciously and does not challenge the system that imposes upon them.

Transcending Boundaries

Akajii and Ariijii - two great warriors- hail from different villages. One day they decide to settle for a duel. The cowardly Akajii betrays Ariijii and brings accomplices to kill Ariijii. Back in the village of Ariijii, no one dares to take revenge on Akajii because Akajii was known to be a formidable warrior. It was Kapeini, the sister of Ariijii, who then decides to avenge the death of her brother. With her wit and intelligence and her womanly charm, she succeeds in killing Akajii and brings the decapitated head at her village gate. One of her brothers receives the head of Akajii and enters the village. The enemy was slain and there was rejoicing and celebration upon this victory. In the traditional society, the women were not allowed to bring the war trophy inside the village. This very tradition reveals the patriarchal nature of the Mao society. Kapeini's achievement was not recognised though she was the central character in the narrative; even the story is titled after the male characters despite their insignificant roles.

It is within such a traditional structure that the story of *Kapeini* is told. She is an outstanding woman of intelligence and fortitude. The story narrates an incident of a female act that transcends the male-centric borders in a conventional society. Men's courage in the Naga society was established in their acts of valour in headhunting and fighting against wild animals (Walnunir 17). Heroism and warrior-hood seemed to be given more importance above any other political capacities. It is therefore to be understood that the political arena was a man's domain since women in general would not engage in war activities or in acts of valour and manhood except on very rare occasions (Daniel 60-61); head hunting was done by women as in the case of Kapeini, the sister of Ariijii in the story. Women were considered weak and were mostly confined to agricultural and domestic work. The story depicts courage, fearlessness and Kapeini's identity as a woman. Her accomplishment is an act of woman's emancipation, an embodiment of one who goes ahead of her time (Ngone 161) and so consequently comes into conflict with society. This social

conflict as a result of transgressing societal norms can be observed from the story under study when members of Kapeini's family refused to accept her invitation to come and take the head of the enemy from the village gate.

The younger brother, who comes and takes the head inside the village symbolizes the open-mindedness of the younger generation in accepting unconventional changes that come about in the society.

The female protagonist

In *Akajii Ye Ariijii Ko* (Saleo 27-32), the story depicts the attitude of society towards women even when they perform heroic deeds. Kapeini is a female protagonist, who in a way defies the law of the land (Ngone 160) and in doing so ventures out to hunt the head of *Akajii*, a feared warrior. Her bravery today would have earned her an award, jubilation, and celebration, but that was not so in those olden days when the people were governed by the strict laws and traditions of society. The story takes us back to those years when people practiced headhunting. Headhunting in older days was operated within a strict system of 'dos' and 'don'ts, which was rarely challenged by any member of the village community. Women did not directly participate in headhunting (Daniel 61) but they were indirect participants in their roles as bearers of tradition. With sheer determination and focus, Kapeini became a shining example of what a woman is capable of achieving in life. Kapeini is an example of a stable and courageous mind (Rosalind 195).

One can arguably say that the story of Akajii and Ariijii is the story of Kapeini, who takes up justice in her own hands. She is shrewd and crafty. She evinces mental fitness as opposed to the brute physicality of the men of her time. Kapeini illustrates that a woman can be as powerful as a man and cleverer when the need arises. She does something which most men feared to do. The story narrates how a woman can go out of her way to become an embodiment of intelligence and power when she desires to. Kapeini displays her courage in a society where bravery was confined within the domain of the menfolk.

Silenced voice

In a patriarchal society, history looks at women about the situation of men. They are considered the weaker section, incapable of doing any good beyond their assigned role which is almost always in relation to their household (Rosalind 188, 189). It had always been the duty of men to perform heroic acts such as war, avenging the enemy, taking part in politics, and partaking in outdoor activities.

After her brother is killed, Kapeini pleads with the villagers to avenge her brother's death but no one listens. Even on her return with the enemy's head at the village gate, her brothers refuse to come and take the head into the village. Her voice is not heard. Her power of articulation is silenced. Her language is not accepted because she lives in a patriarchal society in which a man's voice is the only recognised voice. Ultimately, the younger brother comes and takes the head to the village. The refusal of the two elder brothers in a way signifies that the traditional generation is not ready to acknowledge the unconventional. The refusal of Kapeini's brothers to acknowledge her success in headhunting speaks of their adherence to the gender roles defined by society. The roles assigned to both genders are strictly followed and accepted by them. Therefore, the heroic act of Kapeini is being looked down upon. Her success is overshadowed by the fact that she is a woman and her act of going out into men's domain becomes an act of defiance. The act of hunting the enemy's head by Kapeini goes against the social norms of the time. Her success does not bring her fame or honour as it would have, if she was a man (Ngone 161). The bounty brought by Kapeini in the text had to be carried inside by the brother to receive social sanctification with proper rite and ritual so that he is entitled to put on a warrior dress (Mao 24), a special standard to measure social status and recognition for men. Thus it may also be said that the glory that is due to Kapeini is bestowed upon the brother.

A critical analysis of the text reveals that the story has both positive and negative impacts on society. There is a strong undercurrent of stereotyping in the character of Kapeini. Kapeini's story is told as a reminder to the people of women's capacity for deception rather than as an acknowledgement of a woman's heroic deed. Kapeini is said to use her charm and beauty to seduce the man who kills her brother and to avenge his death by slaying him using her sexual allure. She is forced to use the only weapon she has with her to defeat her enemy but this 'weapon' is not necessarily her beauty and charm. It is the paper's objective to re-read the story by suggesting an alternative claim. Instead of calling her strategy as a deception, it will be more apt to claim that it was her intellect and statecraft that helped her succeed when all other men failed. When all pleas for help to avenge the death of Ariijii are denied, Kapeini's skill in political strategy comes into play. Kapeini gains access to an audience with Akajii and like the biblical story of Judith, she uses her wit and intelligence and kills him. The book of Judith in the Scripture narrates how Judith with her charm and beauty leads the enemy to their downfall. The women's sense of keen observation is revealed in the way these women characters identify their enemy's weakness. Judith through her shrewdness and meticulous planning manages

to get the general of the enemy of her people killed and saves her people from further destruction. She thus brings victory to her people. Unlike the women figures in the Bible, however, Kapeini's heroic deed is not acknowledged. Instead, undeserved fame and honour are accorded to her brother who takes the head from the village gate to the village. Since headhunting was the domain of the men folk in the olden days, her claim to honour went unheard and unacknowledged in the male-dominated Mao society.

Works Cited

Bahlieda, Robert. " Chapter 1: The Legacy of Patriarchal ." *Counterpoints, vol. 488* (2015), pp. 15-67.

Daniel. M. *Socio-Cultural Life Of mao Naga Tribe.* New Delhi: Mittal Publication, 2008.

Hutton, J.H. *The Angami Nagas.* London: Macmillan and Co.Limited, 1921.

Kaisa, Rosalind. "The Saga of Hidden Treasures in the Mao Woman." Athikho Kaisii, Heni Francis Ariina, Eds.. *Tribal Philosophy and Culture: Mao Naga of North East* . New Delhi: Mittal Publication, 2012, pp.187-199.

Mao, Kaihrii Sani. *Mao Folk Story.* Senapati, 2021.

Ngone, Medongunuo. "Gender Naratives : Reinterperting Langauge, Culture abnd Tradition in Nagland." Bendangsengla el at., Eds. *Kaponeo Milikriio and Nichiihmi Ube Uzii Chemo: A Reconnaissance of Patriarchy in Khezha Folk Narratives.* Dimapur: Heritage Publishing House, 2021, pp.156-163.

Saleo, N. *Edemei Ko Bvii Volume I.* Pudunamei: N.Saleo, n.d.

The Bible: *Good News Bible*. Mumbai: St. Paul's reprinted 2019-20.

Walby, Sylvia. "Theorising Patriarchy." *Sociology, 23(2)* (1989), pp. 213-234.

Walnunir. "Cultural Grammar and Gender Relation: A study of Female Utterances Within Power Structure in Nagaland." Bendangsenla el at.Eds. *Gender Narratives: Reinterpreting Language, Culture and Tradition in Nagaland.* Dimapur: Heritage Publishing House, 2021, pp.15-32.

Ph.D Scholar
Dept. of English
Bodoland University, Kokrajhar–783370, BTR Assam
Mobile: 9127320827 Email id: kazhiia@yahoo.co.in

PhD
(Supervisor)
Assistant Professor
Dept. of English
Bodoland University, Kokrajhar- 783370, BTR, Assam.
Mobile: 7086242363 Email id: zoe12.bu@gmail.com

Research Article

An Empirical Study on Social Media Users' Perception, Experience and Behavior in India

–Ms. Mini Srivastava,
–Prof. (Dr.) Arvind P. Bhanu
and
–Ms. Divita Khanna[1]

Abstract:

Social media has become an integral part of people's lives, with increasing numbers of users worldwide. While social media offers various benefits, it has also been associated with negative outcomes such as cyberbullying, hate speech, privacy violation and the spread of misinformation.The study examines the frequency and duration of social media use, the types of social media platforms used, the reasons for sharing on social media, and user experience on social media.The study also aims to understanduser perceptions on political governance on social media, and user perspective on accountability of social media platforms. The results of this study help in understanding the social media landscape in India, the risks, and benefits of social media use, and contribute to the development of interventions aimed at mitigating the negative effects of social media.Overall, this study provides insights into the perception, experience, and behavior of social media users in India, and contribute to the growing body of research on the impact of social media onthe society.

Introduction

Social media has become an integral part of people's lives, with over 4.76 billion users worldwide as of 2023.[2] Similarly, social media has become a ubiquitous part of daily life in India, with the country having the second-largest number of social media users in the world, with an estimated 467 million users in 2023.[3]Social media has had a drastic impact on the society in general. Rise of social media platforms opened up new avenues as well as new threats forthe society. These platforms were embraced with open arms, andit can be said that a facile approach was taken to this uprising. There is no denying the fact that our lives have trulybeen simplified by such platforms

as they offered various benefits such as increased connectivity, information dissemination, and socialization. But it has also been associated with negative outcomes such as cyberbullying, hate speech, addiction, privacy violation and the spread of misinformation. The study aims to examine actual user habits and experiences on social media as well asuser opinion on the political governance on social media to get a clearer and whole picture of the social media scenario in India.The study further aims to bring attention to the accountability of social media platforms for their negative contributions as well as totheir responsibility to operate in an ethical manner.The study also highlights the necessity of digital literacy and education on social media ethics.

Background

As per the Ministry of Electronics and Information Technology, the cyberspace scenario in India has seen a drastic shift over the years. In the current scenario, 850 million Indians are active on the internet, out of which 467 million are active social media users. The ministry pronounced India as the "world's largest digitally connected democracy".[4]The availability of multiple internet intermediaries such as Social media Platforms, OTT Platforms, AI, e-commerce, gaming, etc. have introduced new forms of digital threats to the society.

Due to inadequate laws and lack of digital literacy, the cyberspace scenario has turned into a mess which is all over the place. This situationincluding proliferation of hate speech, dissemination of misinformation, privacy violation and data breach, cyberbullying etc., led to many controversies globally as well as in the Indian scenario. Globally, cases like,'The Pizzagate Conspiracy'[5], 'Cambridge Analytica Scandal'[6], 'Anti-Asian Hate Cases'[7]etc. caused panic and major public outcry. Similarly, India also experienced several controversies like, 'JNU Sedition Case'[8],'JamiaMilliaIslamia Anti CAA Riots'[9], 'Pegasus Spyware Controversy'[10], etc., which acted as a wakeup call for the impact of social media on the society.

User perspective is important in understanding how people use and experience social media platforms because it provides valuable insights into their needs, expectations, and behaviors. By examining users' perspectives, researchers can better understand how social media platforms affect individuals and society and identify potential solutions to address the negative outcomes associated with social media use.

Users' perceptions of social media can vary widely depending on factors such as age, gender, cultural background, personal experiences, and opinions. By examining these factors and understanding how they influence social media use, researchers can gain a more nuanced understanding of the social media landscape and develop interventions that are tailored to societal needs.Moreover, user perspectives are crucial in identifying emerging trends and issues related to social media use. As social media platforms continue to evolve rapidly, users' perceptions and behaviors are likely to change, making it essential to regularly collect and analyze user data to stay up to date with these changes.

Ultimately, user perspective is essential in developing social media platforms that meet users' needs and expectations while minimizing the negative consequences associated with social media use. By incorporating user feedback into the design and development of social media platforms, developers can create products that are both user-friendly and socially responsible.

Methodology

An online survey titled "An Empirical Study on Social Media Users' Perception, Experience and Behavior"was executed through google forms in February, 2023 in India. The social media users were required to answer over 30 questions regarding their social media behavior and knowledge, their opinionaboutgovernment's presence on social media, their social media experience, etc.

Participants' Profile:

1. A total of 207 participants, who were active social media users, having different backgrounds and age groups participated in this study.44% participantswere males,55.6%participants werefemales, and 0.4% participants chose not to disclose.

2. The Age wise distribution of the participantsis as follows:
   - 9.2% are below the age of 20.
   - 47.3% are between the age of 21-30.
   - 11.1% are between the age of 31-40.
   - 16.4% are between the age of 41-50.
   - 21.1% are between the age of 51-60.
   - 3.4% are between the age of 61-70.
   - 0.5% are above the age of 70.

3. The break-up of Professional status of the participants is as follows:

39.1% participantsare Law Students; 14.5% participants are Employed; 14% participants have a Business; 10.6% participantsare Non-Law Students; 9.2% participants are Professionals; 8.2% participants are Housewives; 2.9% participants are Retired;2.4% participants are Lawyers; 2.4% participants are College Professors; 1.9% participants are School Teachers; and 1.9% participants chose not to disclose.

Results

Following are the major resultsderived from the survey:

User Habits and Perception on Social Media

A. Average Daily Usage of Social Media Platforms.

29.5% participants spend less than 2 hours on such platforms; 48.8% participants spend 2-4 hours on such platforms; 17.9% participants spend 5-7 hours on such platforms; 2.9% participants spend 8-10 hours on such platforms; and 1% participants spend more than 10 hours on such platforms.

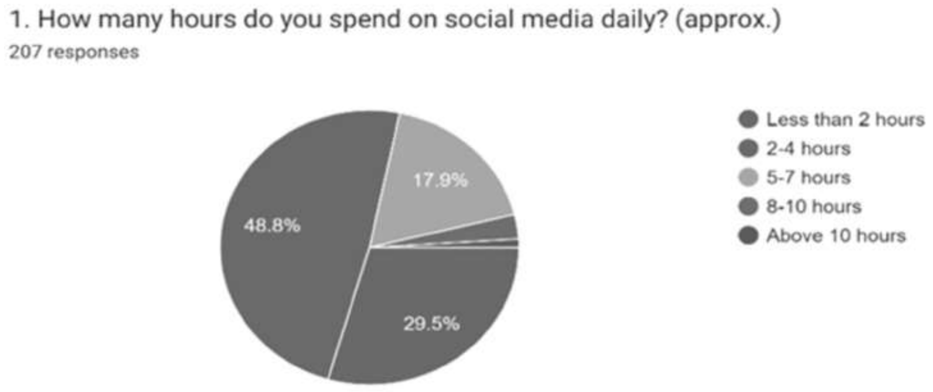

B. Social Media Platforms Used by the Respondent.

Out of the total participants, most (93.7%) participants use WhatsApp;86.5% participants use Instagram; 83.1% participants use YouTube; 50.2% participants use Facebook; 42% participants use Snapchat; 36.7% participants use Twitter; 31.4% participants use Pinterest; 11.1% participants use Reddit; 3.4% participants use Tumblr; 2.9% participants use LinkedIn; 0.5% participants use Signal, Telegram, Sharechat, moj, etc.

C. Reasons for Sharing Content on Social Media.

Out of the total participants, most (49.8%) participants share to Post Relatable and Funny Content; 39.6% participants share To Spread Awareness; 38.2% share To Inform Followers about the Lates Development in their Lives; 35.7% participants share To Enhance Professional Growth; 31.4% participants share To Enhance Personal Growth and Personality; 30.4% participants share To Show Involvement in their Friends' Social Media Updates; 17.45% participants share For Other Reasons.

D. Unethical User Practices Witnessed by the Respondent.

Out of the total participants, most (87.4%) witnessedFake News/False Informationon their feeds; 75.8% participants witnessed Hateful Content targeting individuals or communities; 69.6% participants witnessed Abusive Language; 53.1%participants witnessedSharing of Content Belonging to Others Without their Consent; 46.9% participants witnessed Obscene/ Pornographic Content; 45.4%participants witness Spam Mails containing Virus; and only 7.7%participants witnessed no such content.

E. How does the Participant React upon seeing Objectionable/ Sensitive Content on Social Media?

Most participants (52.7%) ignore such content; 47.8% participants Reported a Grievance to the platform; 47.8% participants Block the User sharing such content; 20.3% participantsCheck the Facts; 11.6% participants Question the Sender; 9.2% participants Fact Check and Share; and 4.8% participants share such content.

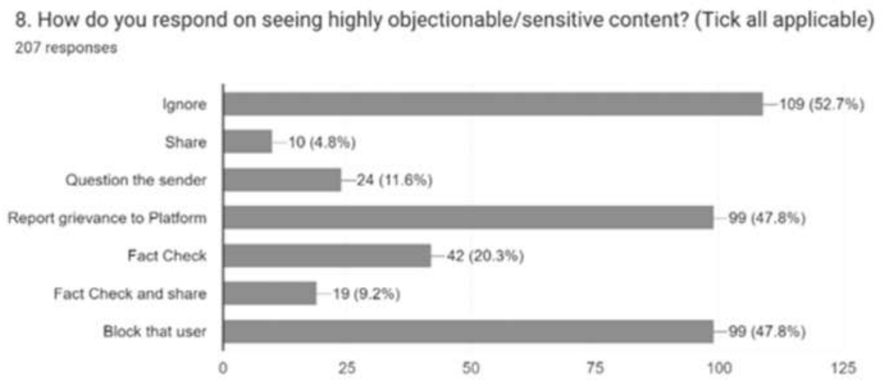

F. At what stage should Education on Social Media Ethics be provided.

Most participants (70%) feel that such education shall be provided in Middle School; 57.5% participants feel that such education shall be provided in High School; 43.5% participants feel that such education shall be provided in Higher Secondary School; 30.4% participants feel that such education shall be provided in Graduation and Above; 30% participants feel that such education shall be provided through Online Courses; 25.1% feel that such education shall be provided in Elementary School; and 4.3% participant feel that such education is not required.

User Perspective on Political Governance on Social Media

A. Has the Government become more Responsive to Public Opinion due to their Social Media Presence?

Most participants (53.1%) responded with 'Yes'while18.8% participants responded with 'No' and 28%participants responded with 'Maybe'.

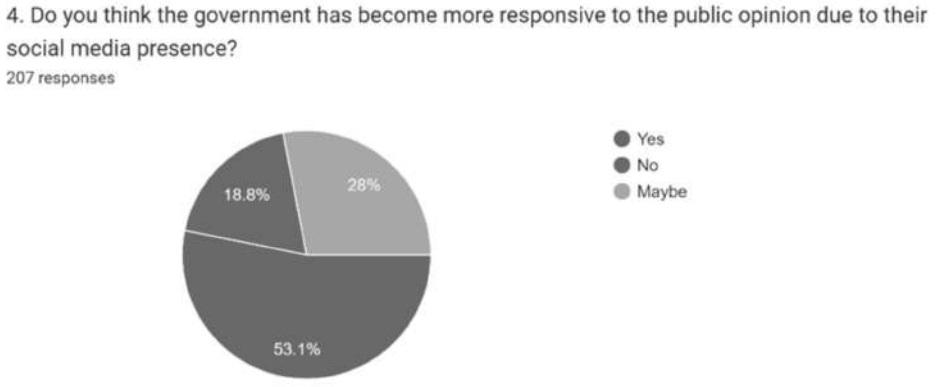

B. Is Social Media capable of Influencing Elections in a Democracy?

Most participants (77.3%) responded with 'Yes' while4.3% participantsresponded with 'No' and 18.4% participants responded with 'Maybe'.

C. Does Social Media hold the Power to topple a well-settled Political Regime?

Most participants (55.1%) responded with 'Yes' while11.1% participants responded with 'No' and 33.8% participants responded with 'Maybe'.

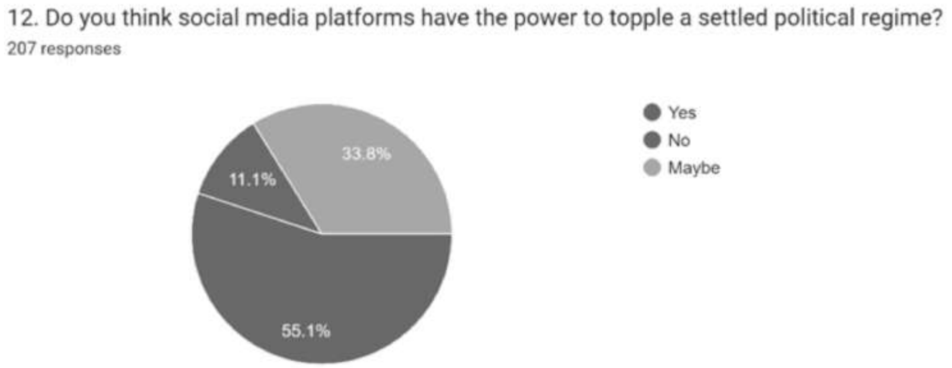

User Perspective on Accountability of Social Media Platforms

A. Is Social Media Responsible for Regulating User Generated Content?

Most participants (79.7%) responded with 'Yes' while 4.3%responded with 'No' and 15.9% responded with 'Maybe'.

B. Do Social Media Platforms use Algorithms which Promote our Biases?

Most participants (64.7%) responded with 'Yes' while 9.2% responded with 'No' and26.1% responded with 'Maybe'.

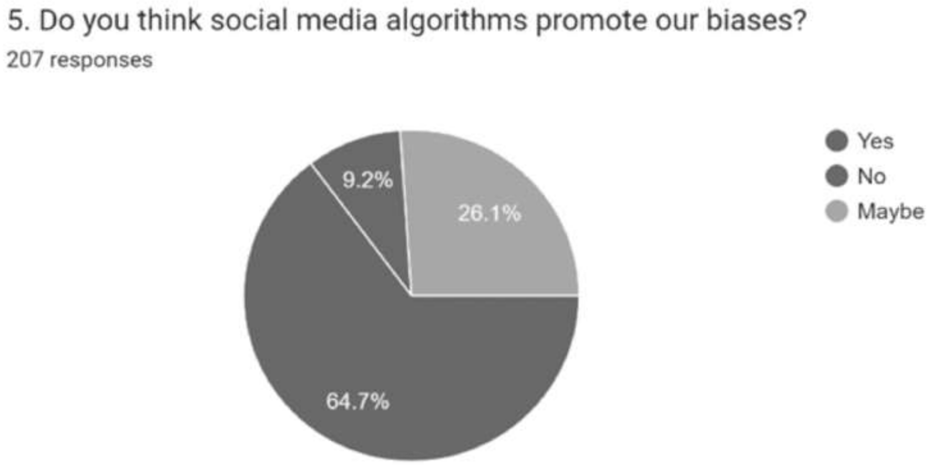

C. Does User Privacy remain Intact on Social Media Platforms?

Most participants (62.8%) responded with 'No' while 11.6% participants responded with 'Yes' and 25.6% participants responded with 'Maybe'.

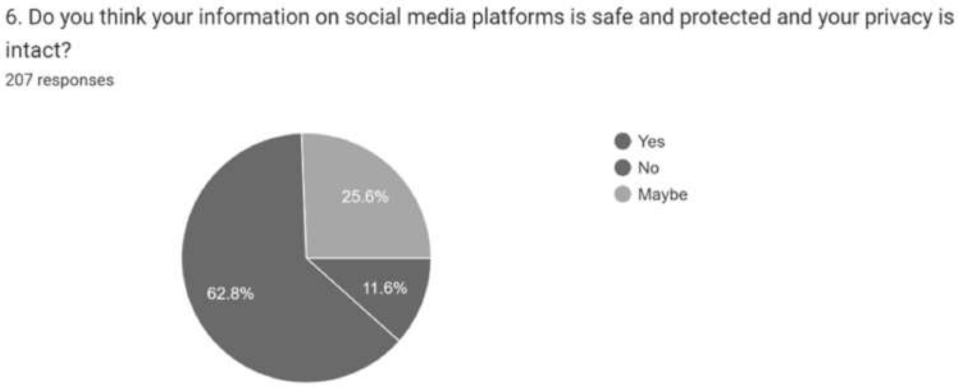

D. Do Users Feel that they are being Recorded through their devices?

Most participants (70.5%) responded with 'Yes' while 29.5% participants responded with 'No'.

E. Do Social Media Platforms provide all information about How User Data is Used?

74.4% participants responded with 'No' while 25.6% participants responded with 'Yes'.

F. Do Social Media Platforms Widely Circulate Hateful/ Violent Content?

Many participants (47.3%) responded with 'Maybe' while 9.7% participants responded with 'No' and43% participants responded with 'Yes'.

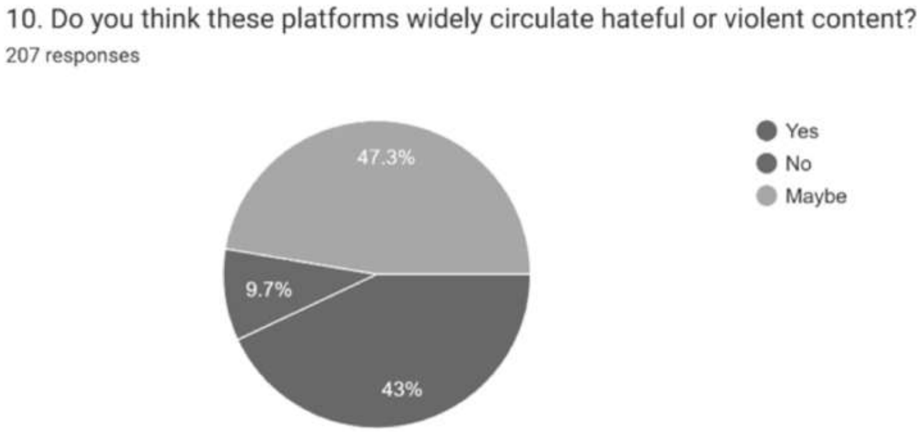

Discussion

A. User Habits and Perception on Social Media

Social Media has become an indispensable part of our daily lives. Every day, users spend hours on platforms such as WhatsApp, Facebook, Instagram, Twitter, Snapchat etc.As per the survey, most users often come across content which is

unethical, objectionable, or sensitive,primarily on platforms such asInstagram and Facebook. The survey also indicated that most users simply ignore such content and not many report the same.User ignorance or indifference aids such objectionable content to float freely in the digital environment. Also, most users share on such platforms to post relatable and funny content or spread awareness while others may be up to some mischief. Usually, users skip reading the Terms and Conditions of a platform or do not pay attention to the privacy policy, making themselves vulnerable in a digital environment. Some users are already following basic ethical practices on social media such as refraining to share objectionable content, sensitive personal details, hostile language, or content etc.The most important learning from this part of the study has been that a vast majority of users feel that it is necessary to gain education about social media ethics at the Middle School level and onward to have a safer digital experience.

B. User Perspective on Political Governance on Social Media

In Today's world,social media has the ability influence elections and establish the governments as well as topple a well-settled political regime. Thus,Governments have started using social media as an effective tool to govern the public. Similarly, the Indian Government also runs several pages and social media campaigns which are vastly followed by the public. As per the survey, many citizens feel that the Indian government, due to their online presence, has become more responsive to the public opinion.Moreover, the government also has a duty to regulate the spread of hate speech, fake news, etc. on social media platforms and many citizens feel that the government is falling short indispensing this duty.

C. User Perspective on Accountability of Social Media Platforms

Social media platforms are at the root of this digital wave. Their business models, based on active social media use, prioritize profits over ethical business practices. As per the survey, majority feel that social media platforms have a greater role in regulating user-generated content thantheir current level of involvement. Many believe that these platforms use algorithms which promote user bias and in turn widely circulate hateful/violent content. Also, users do not feel that their privacy is adequatelyprotected and often feel that they are being recorded through their

electronic devices. Moreover, users feel that these platforms do not provide them with adequate information regarding how and when their data is being used, thususers urge these platforms to be more transparent regarding the same.

Limitations and Challenges

The main limitation of this study was reaching a broader audience to participate in the survey. As India has a huge population of over 1.40 billion with over 467 million social media users, the current empirical study could not incorporate the views and experiences of a sizeable sample.Also, the study focused more on urban cities like Delhi and NCR and less on people from other states and union territories. Hence, a larger and more diversesample is needed to reflect a wider perspective.

Conclusion

The study highlights the bittersweet contributions of social media towards the Indian society. Social media provided a platform to its users for sharing content, for connecting with friends and family, and even brought some positive changesin political governance on social media. On the contrary, it also provided a platform to several digital threats and increased the spread of misinformation, hateful content targeted towards individuals or communities, abusive language, privacy violations, obscene pornographic content, spam mails, etc.Thus, the present Indian social media scenario calls forthe development of interventions aimed at mitigating the negative effects of social media such as campaigns for promotion of digital literacy, incorporation of social media ethics in school curriculums, incorporation of better and more stringent digital laws, better availability of fact checking mechanisms, sensitive content control, etc.In order to move up this digital ladder, collective efforts from the users, the government and the platforms are required. The users must follow ethical social media practicesand reportobjectionable content, keeping an unbiased mind. The Indian government must intervene and hold the intermediaries, including social media platforms accountable for their part in this mess. Furthermore, speedy enforcement of newer information technology laws such as the Digital India Act, 2023 can aid in makingthe cyberspace more secure and increase the accountability of social media platforms. The platformsmust try to incorporate ethical business practices in their operations and assume it as an extension of their Corporate Social Responsibility.

(Footnotes)

1 **Ms. Mini Srivastava** is Research Scholar &amp, Assistant Professor at Amity Law School, Amity University, Uttar Pradesh.

Prof. (Dr.) Arvind P. Bhanu is Additional Director/ Joint Head of Institution at Amity Law School, Amity University, Uttar Pradesh.

Ms. Divita Khanna is a 4th YearBba. Llb. (H) Student at Amity Law School, Amity University Uttar Pradesh.

2 "Internet and Social Media Users in the World 2023." Statista, www.statista.com statistics/617136/digital-population-worldwide/#:~:text=Of%20this%20total%2C% 204.76% 20billion. (Accessed 10 Mar. 2023.)

3 Kemp, Simon. "DIGITAL 2023: INDIA" DATAREPORTAL, https://datareportal.com/ reports/digital-2023 india#:~:text=India%20was%20home% 20to%20467.0, percent% 20of% 20the%20total%20population. (Accessed 10 Mar. 2023.)

4 Ministry of Electronics and Information Technology "Presentation Made during the Digital India Dialogues on the Proposed Digital India Act on 9th March in Bengaluru, Karnataka." MEITY, Government of India 2023, www.meity.gov.in, www.meity.gov.in/ content/digital-india-act-2023. (Accessed 11 Mar. 2023.)

5 Robb, Amanda. "Pizzagate: Anatomy of a Fake News Scandal." Rolling Stone 2017, www.rollingstone.com/feature/anatomy-of-a-fake-news-scandal-125877/. (Accessed 10 Mar. 2023)

6 Confessore, N. "Cambridge Analytica and Facebook: The Scandal and the Fallout So Far. The New York Times."The New York Times 2018, https://www.nytimes.com/2018/ 04/04/us/politics/cambridge-analytica-scandal-fallout.html. (Accessed 10 Mar. 2023)

7 Human Rights Watch. "Covid-19 Fueling Anti-Asian Racism and Xenophobia Worldwide." Human Rights Watch2020, www.hrw.org/news/2020/05/12/covid-19-fueling-anti-asian-racism-and-xenophobia-worldwide. (Accessed 13 Mar. 2023)

8 The Wire Staff. "JNU Sedition Case: Umar Khalid, Kanhaiya Kumar, Other Accused Appear in Court." The Wire 2021, thewire.in/law/jnu-sedition-case-umar-khalid-kanhaiya-kumar-delhi-court (Accesses23 Feb. 2023.)

9 Sarfaraz, Kainat. "Hate Speech to Hate Crime at JamiaMilliaIslamia anti-CAA Protest." Hindustan Times 2020 <www.hindustantimes.com/india-news/hate-speech-to-hate-crime-at-jamia-millia-islamia-anti-caa-protest/story-awP2l5wJORcST8Ff0yA0qM.html (Accesses23 Feb 2023

10 "India: Spyware Use Violates Supreme Court Privacy Ruling." Human Rights Watch 2021, www.hrw.org/news/2021/08/26/india-spyware-use-violates-supreme-court-privacy-ruling (Accessed 24 Feb. 2023.)

❑❑❑

Many Million Unconscious Minds Throb Along when a Gajban Goes Fetching Water: Analysis of a Folk Song

–Pardeep
–Prof Manjeet Rathee

Abstract:

"Gajban Paani ne Chaalli" is avery popular Haryanavi (a dialect of Hindi, spoken in the Indian state of Haryana and adjoining regions) folk song. The song is written by MukeshJaji, a popular Haryanavi artist.The song delineates in lucid details the beauty and the paraphernalia of a young woman when she prepares herself for to go and fetch water from the village well- a common ritual in the villages of Haryana and the adjoining region; the song brings alive this ritual in graphic details.Since its launch over two years ago, the song has been a phenomenon. It has been adapted by various artistes; has been viewed over two hundred million times over various media platforms;has since been an integral part of marriages and other get-together celebrations from Manali to Goa and Melbourne to San Francisco. This paper attempts to explain what carries this song through cities, states and nations. The tools to examine this phenomenon has been borrowed from Carl Gustav Jung and Raymond Williams- the concept of the collective unconscious as postulatedby Jung and the concept of the Residual as propounded by Williams, to be precise.

Keywords: the Unconscious, the Cultural Studies, the folk song, the Residual, elements of culture, the culture-river.

The song "Gajban Paani ne Chaali" has become a global rave, a global success phenomenon. To put this phenomenon in perspective, glance over a few facts can help bring the point home. Since its foray into the common space almost two years back, this song has been sung, enacted, acted upon and adapted by a number of artistes for/over various platforms- by

amateurs, professionals and just somebody. The song, in its various avatars, has garnered over ten hundred million views since then; and, the glue sticks on. It has throbbed, as is evident, millions of hearts- and minds too, for the matter of fact- in cars, marriage parties, get-togethers, the Freshers, the Farewells, the Raves, fairs, festivals, etc. It's a rave across party-kind, across regions, across religions and across age. So much so, once a crowd at the Times Square (New York) could be seen swooning over this song for hours; in London, it's been played randomly in some of the very popular bars; in Montreal, it's quite routine song; at the other edge of the globe- in Melbourne, Australia- shoved a dizzy evening much into night.Closer home, it has traversed India- north to south and east to west, with no exception. These are just a few instances; the song has been a sensation in every sense of the word since it lisped off the lips of its creators. To talk about the song itself, it describes the meticulouspreparation, immaculate expressions andsubsequent evening glory of a young woman when she goes to fetch water from the village well- accompanied by her jealous coterie. Before we delve deep into this well to analyze this phenomenon, let's see what the song sings:-

Chundari Jaipur temangwai/ Re indhi sone ki ghadwai/Gale me kanthigerke ne
/Tokanichandikiyathaai/Roopkatinikhara/Paatryajikra
Bahukaimaangikaallli
Daamanneechepehrijutti/ Bangidekhocheezkasooti
Yagajbanpaani ne chaalli
Naulakhe ne fail kareteremaatheaalatikka/ Aankhyakekaajalkeaagesaarasaudafikka
Chaandkatukda/ Bairankamukhada/ Kasooti gala pelaalli
Daman neechepehrijutti/ Bangidekhocheezkasooti
Yagajbanpaani ne chaalli
Paayalbhipyaarillageaurkhudkabhianmolkati
Jhumkebhidikhe se mahangepatyakonyatolkati
Yadekhohaansi/ Karebadmaashi
Naak me nathaliyadaalli
Yagajbanpaani ne chaalli
Ambaraaalihoorparikuchhkyonaiskeaage
MukeshJajidekhliyeaajbheedkunwepelaage
Gaamkamausam/ Ban gyaawesome
Baajidila me taalli
Yagajbanpaani ne chaalli

To feel the chords closer and clearer, a loose contextualization of the lyrics may help. The song describes, as mentioned above, the preparation- that goes into the

evening “ritual” of fetchingwater from the village well- of a young woman. The song vividly describes the efforts put in by a young woman- a newly-wed, probably- who is getting ready for this evening chore.She adores herself with the choicest paraphernalia bought and brought from the most famous locations- from as far as Jaipur (capital of Rajasthan, an Indian state), at least 100 kms from any village of Haryana; her pot, pot stand, etc, are uniquely embellished. When she goes out- embellished thus- the whole village is awestruck by her beauty; she bedazzles everyone; so much so that even her friends are jealous by the attention she is showered with. The song begins with describing her earth-real beauty and concludes at comparing her with the fairy princesses of the heaven- and, how the whole village swoons over and about her. The drinking water-fetching was- still is, in the village sort of villages- one of afew of those occasions whereinthe whole village participated; the women leading the caravan singing and giggling while the male-folk lounging around, along the way. The spectacle was an essential evening ritual in every village of Haryana- where the song is set- and the adjoining regions.Written by MukeshJaji, a Haryanavi folk artist, it’s a simple song with simple lyrics, but the words and the spectacle seem to dig in deep to make it what it has become. Sapna Choudhary, the woman in one of the adaptations, could have contributed in making the song such a success since she has been a pioneer and charioteer of Haryanavi songs and culture for long, one may argue. It’s true; her adaptation has garnered more than 250 million views on YouTube alone. But other adaptations have also performed almost equally well; one of them- by not so famous artistes, AnnuAhlawat and ShaluKirar- has had over 210 million views! And, the case is no different for other adaptations- some Farewell party improvisations have been viewed over million times!That is a staggering figure. The song has worked like an alchemist- put it into anything and it turns that thing into a startling success! What can explain this unusual consistency? Raymond Williams (a British Cultural Studies’ exponent) and Karl Gustav Jung (a Swiss Psychologist) can help explain this conundrum.

Raymond Williams-who has been a pioneer in the field of cultural studies and has written a lot about culture and its elements- puts forward, in *Marxism and Literature* , three terms to describe the dynamics the developments of cultural elements. The first is dominant- it is the prevalent, or the hegemonic, ‘culture’ at a particular moment in this process. The second is emergent- the new, alternative, and oppositional to dominant; that strives to be dominant. “… new meanings and values, new practices, new relationships…continually being created,” as he puts it (Williams, ch.8). The third is the residual- elements that are not obvious, but are not lost. He envisions a complex inter-relationship wherein dominant, emergent and

residual are not the stages of the cultural processes; but rather, represent the dynamics of the elements of culture at various "stages" of cultural formation. Some elements sit atop the hierarchy and rule the roost while some of them covet a struggle against them when others which have been in the thick and thin of things once lie thin. This last lot is termed residual by Williams and is of our concern in the pursuance of our study. Williams is not very categorical about this nomenclature, but he cares enough to define the term:

> The residual, by definition, has been effectively formed in the past, but it is still active in the cultural process, not only and often not at all as an element of the past, but as an effective element of the present. . . . Thus certain experiences, meanings, and values which can not be expressed or substantially verified in terms of the dominant culture, are nevertheless lived and practiced on the basis of the residue-cultural as well as social. . . . (Williams, ch.8)

The residual is the past and the past of the past that throb still in the present. The residual, as envisaged by Williams, represents those elements in a culture that lie at the base of-at the core of a culture- as the residue lies in a water body. If this analogy can help, consider culture as a river. This culture-river originates in the very ancient human past and bursts forward carrying some elements within; these are the foundational and base elements of this culture. As the river flows further and farther, many new streams with new elements join in; these elements strike with the existing elements- mixing with them, floating along with them and some of them floating over them. As the river progresses over the plains, the older elements start depositing themselves, floating low and beneath- become residual. They don't "die"; they lie there, float along; remain the part, an integral, of the river. They carry the base, foundation and essence of the river along; they are not obvious, but inform and influence other elements of the river- the culture. "Formed in the past . . . still active in the cultural process", to use Raymond Williams' conception ad verbatim, "not at all an element of the past . . . but as an effective element of the present". So the residual is that element of culture that has its origin in the past, but still flows along in the present- not obviously, but conspicuously and unconsciously. Those meanings, experiences and values hum through our folk songs; they talk to us through our folk-tales; they travel along our traditions and customs; they breathe through our daily chores; and, they lurk through our unconscious.

The most far-fetched mythological motifs and symbols . . . appear autochthonously . . . as the result of particular influences, traditions, and excitations working on the individual . . . these belong to the basic stock of the unconscious

psyche. . . . Together they make up that psychic stratum which has been called the collective unconscious. The existence of the collective unconscious means that individual consciousness is anything but a tabula rasa. . . . The collective unconscious comprises in itself the psychic life of our ancestors right back to the earliest beginnings. (Jung, “The Significance”)

Carl Gustav Jung (1875-1961) was a Swiss psychologist and psychiatrist who founded “empirical science” of the psyche- analytical psychology. Like Sigmund Freud, another Swiss psychologist of great eminence, he attempted to explain the working of the mind. Freud majorly investigated the individual psyche, while Jung forayed into the universal psyche- that drives the human collective. He contends that beneath the conscious mind- of whose excitations and moves one is always aware of- there lies the unconscious. The consciousness rests upon this unconsciousness and is the depository of past experiences, values, memories, etc. The personal unconscious stores personal experiences, memories, etc.- suppressed and not so pleasant. The collective unconscious stores experiences, memories, etc. of universal nature- of all humans, collectively. The collective traditions, customs, values, experiences, memories, etc.-that were formed in the past, were effective and thrived in the past- remain here, in the collective unconscious; they are not obvious- much like the residual- but, lives on; are not lost. Thus, every individual mind carries the traces of the collective past hidden beneath the usual contemplation and comprehension. These residual elements have always been there in the collective unconscious of every individual without any explicit overtones. It manifests itself “autochthonously” and “comprises in itself the psychic life of our ancestors”- in the words of Carl Jung.

The past life of our ancestors, their experiences, their adventures and through them their customs and traditions have been the subject matter of folk literature- folk tales, folk songs, folk festivals, folk art, folk architecture, etc. The residual elements of culture have always been rolling from generation to generation through folk. That which was once integral and living, manifests itself in motifs and symbols, autochthonously. So, the residual elements of our culture, the life and experiences of our ancestors- immediate and distant- manifest themselves in the symbols and motifs of the folk, autochthnously.

The folk song “GajbanPaani ne Chaali” has been able to throb millions of hearts along because it stirs up the unconscious, collectively.The song doesn’t talk only about the beauty of a woman, it talks about a traditions that was an integral element of the village culture once. It creates a spectacle- a newly-wed woman with a shining brass pot on her head clad in bright new clothes and ornaments goes out to

the village well surrounded by girls and women from her relations and neighbourhood, singing and giggling along; it's evening, and the whole village folk having finished with the day is lounging street-side- on the cots, in the chowks, in the baithaks (private, but common use lounges); the street becomes abuzz with mirth, laughter and life- even the groom joins in; the cattle folk chips in with their scowls; the dogs lounges about, barking in intermittently; even the birds creeps in. This spectacle has been an integral part of the village folks for ages; it has been the evenings one craves for; it has been the experiences every folk has been a part of ; and, it has been the memory one has longed for. When the people from the chowks, baithaks and street-side cots packed themselves to cities or flew to foreign soils, the evening travelled with them- lying as traces deep within their unconscious. They carried with them the whole spectacle- the experience, the longing, the craving and the memory. And when "the GajbanPaani ne Chaali" was playing in a marriage hall in a posh Delhi hotel, it stirred that spectacle in the unconscious of that flock- they buzzed along; at Times Square, it leaped at them like a heart-storm- they loosened their heart-strings and sang along; in Melbourne, the song jolted them- they hummed along with choked throats; when it blared from the bathroom of a university hostel, the whole hostel cried along; and when a professor gave his ears to it on a breezy evening, he gave in and remained there in his village for long- the song though had stopped.

So, the song is a phenomenal success because it vividly creates a spectacle that has been an integral element of the village culture for ages. The elements of culture in villages have experienced a change over time, much like the case in any other sphere of culture. New elements have become dominant and colour the contours of life pushing the older elements down and off the scenario; they lie low floating down and beneath, as the residual elements of culture- in the collective unconscious. In the case where new elements have emerged, they sit deep down in the unconscious- they are not lost and not dead, they just lie there. In the case where people have detached themselves from the spectacle and have moved away from it, these elements travel and remain with them- in their collective unconscious. Whenever the same spectacle is recreated or the people thus removed from the integral element of their past are confronted with the same again- as the song under discussion does- the element that lies low in the collective unconscious responds and leaps up; it starts living itself again with autochthonous excitations, in the words of Carl Gustav Jung. That explains why the folk song in its various adaptations has been able to stir up so many hearts- minds, actually.

Works Cited

Abrams, M. H., and Geoffrey Galt Harpham.*A Glossary of Literary Terms*.10th edition.Wadsworth, 2012.

"Archetypes and the Collective Unconscious".*Wikipedia,* www.wikipedia.org/archetypesandthecollectiveunconscious/.

Bell, Anthea, translator.*The Psychopathology of Everyday Life* [*ZurPsychopathologie des Alltagslebens*]. 1904. By Sigmund Freud, Penguin Classics, 2003.

Benedict, Ruth. Patterns of Culture.Mariner Books, 1934.

Carnivalesque".*Wikipedia*, www.wikipedia.org/carnivalesque/.

Curly, Edwin, editor. *Leviathon*. 1651. By Thomas Hobbes, Hackett Publishing, 1994.

Dar, Bilal Ahmed."A Study of Kashmiri Folk Singing from 'Vanvun' and 'Laddishah'".*The International Journal of Advanced Educational Research*, vol. 2, issue 6, Nov. 2017, pp. 200-203..

Freud, Sigmund. *The Interpretation of Dreams* [*Die Traumdeutung*].1899 (1900).Translated by A. A. Brill, James Starchy, and Joyce Crick, Macmillan, 1913.Print.

Jan, Afrozan. "A Study of Indian Folk Music with Special Reference to Kashmir".*International Research Journal*, vol. 1, no. 9, June 2010, pp. 16-19.Hume, David.*A Treatise of Human Nature*. 1739. Project Gutenberg, 2016

Jung, Carl. *Archetypes and the Collective Unconscious.The Collected Works of C. G. Jung*, edited by R. F. C. Hull, part 1, vol. 9, Princeton University Press (US) / Routledge&Kegan Paul (UK), 1945-Onwards. 20 vols.

Jung, Carl G. "The Significance of Constitution and Heredity in Psychology". *The Collected Works of C. G. Jung*, edited by R. F. C. Hull, part 1, vol. 9, Princeton University Press (US) / Routledge&Kegan Paul (UK), 1945-Onwards. 20 vols.

Jung, Carl. "The Archetypes and the Collective Unconscious".*Tom Butler-Bowden Psychology Classes*, www.butler-bowden.com/psychologyclasses/theachetypesandthecollectiveunconscious/.

Kalamullathil, Balakrishnan. *Raymond Williams : a study on culture as a category inmarxist aesthetics.* Thesis.Department of English, University of Calicut, 2006.

Kendra, Cherry. "Understanding the Unconscious". *Verywellmind*, www.verywellmind.com/understandingtheunconscious/.

Rousseau, Jean-Jacques.*Discourse on the Origin and Basis of Inequality Among Men*.1755. Translated by Donald A. Cress, Indianapolis, Hackett Publication, 1992.

Saji, Shruti, and Sreelakshmi N. "A Cross Cultural Study of Indian Folk Music". International Journal of Advanced Science and Technology Vol. 29, No.9s, 2020, pp. 4301-4305 4301 ISSN: 2005-4238 IJAST .

Singh, Umed.*Raymond Williams: His Literary Theory*. Thesis. Department of English, MahrishiDayanand University, Rohtak, Oct 2016.

Williams, Raymond. "The Analysis of Culture".*The Long Revolution*, part 1, ch. 2, London, Chatto&Windus, 1961.

Williams, Raymond. "Dominant, Residual and Emergent".*Marxism and Literature*, ch. 8, Oxford, Oxford University Press, 1977.

Reasearch Scholar,Dept. of English and Foreign Languages, MDU, Rohtak

Professor, Dept. of English and Foreign Languages, MDU, Rohtak

Research Article

Insightful of Unified Heterogeneity in Rohinton Mistry's *Such a Long Jounney*

–A. Yogaraj[1],
–Dr. M. Kavitha[2]

Abstract:

To learn on this paper were focused of how to parsi people balanced their life within the Indian social and political system? While, India is one of the multifaceted society. But, till now, racialism is severely affected the whole Indian social and cultural setup. As well as, the Indian Penal Code system says, apart from any religion, community and class, everyone in this country having equal rights to enjoy and whatever they consume. As, it is the independent and democratic nation. ie., "Unity of Diversity" is the philosophy of our social and political agenda. Through the fiction, "such a long journey", Mistry was clearly identified and focused each and every of parsi people's feelings, thoughts, beliefs and issues for their future adoption in this nation due to often changing the political setting. Especially, corruption is one of the key issues in Indian political system and also it is relentlessly affected the normal economical condition for peoples belongs from different classes. Since, it is completely corroded of the total political, social and economical formation. Because, most of the politicians being corrupted and they are always degrade the quality of the nation and almost violate the existed rules and regulations under the Indian Penal Code system. Here this novel, the writer can explore about life of Parsis communal turmoil such as "socialism, patriotism, secularism and racialism" through the protagonist of the fiction Gustad Noble and other fictional characters. Those are the key factors to resolve and survive in the future life of Parsis in India. So, "such a long journey" symbolize about parsi peoples longest exist trip from Iran to India.

Keywords : Multifaceted Society, Bribery, Socialism, Patriotism, Secularism, Racialism, Parsis, Exist.

Introduction

Rohinton Mistry is an eminent parsi novelist of the

Indian immigrant, who stayed permanently in Canada and born on 1952 July 3rd at the Indian Metropolitan city of Bombay. Now it is called Mumbai. The Parsi couple Behram Mistry and Freny Jhaveri Mistry is the parents of him. Rohinton Mistry's schooling days was completed in two leading Christianity primary and high schools in Bombay. In 1974, he got B.Sc., Science degree. Also in 1982 he was complete the next following B.A., Arts degree. After 23 years completed, he was migrated to Canada in 1975. In between he was married Freny Elavia. For the moment, Mistry was more popular due to his dedicated writing works for publishing his outstanding novels like the first wonderful one is called 'Such a Long Journey in 1991', and his second among more admired story is called 'A Fine Balance in 1995' and the third excellent work is 'Family Matters in 2002'. Before that he was published some of the collection of short stories like 'Tales from Firozsha Baag', 'Swimming Lessons and Other Stories from Firozsha Baag', 'Auspicious Occasion', and 'Lend Me Your Light' etc., Through his career, he received many International Awards from Canada, USA and European countries such as Booker Prize, Neustadt International Prize for Literature, Common Wealth Writers Prize and Governor General's Award, etc., His brother Cyrus Mistry also a play writer and author for many books.

Mistry was one of the post colonial writer. He further argue by the Parsi atmosphere in India. He survey about the failure of immaturity of the leading character Gustad Noble, while he try toward himself to closer by his relations along with his nation through the hectic period of 1971 in India, for the period of which India and Pakistan go to war more than the freedom of East Pakistan or Bangladesh. The fiction provides awfully thorough picture of being the chief protagonist Gustad Noble with his family hierarchy for their dwelling place in the metropolitan city of Bombay. Which supply like a disparity near the outer globe, which interrupt family tree array. The author offer the external globe as a decomposed and humiliating power at yet the mainly civilized associates of the internal area.

Multifaceted Society

India was one of the multicultural society. In this land people belongs from different types of religion, community, cast, class and living within variety of economical condition like upper, middle, lower, literate, illiterate, minority and majority. Also, Hinduism is one of the majority group in India. It is the dominant one compared to other religious groups like Muslim, Christian, Sikh, Parsi, Buddhism etc., There are different group of people in India follow diversity of religions. Their religious ethics and philosophy are uniquely identified by their routine lifestyle activities and following culture. In addition to that, there are different languages were broadly used for read, write and speak from north to south and east to west in this nation. Just small amount of classical languages only officially recognized. Otherwise, most of the different tribal and rural languages are used unofficially.

Parsi Enclave

Moreover, Parsis is a small group of community. Its origin from Iran and belongs

from Zarathustra religion and their language is called, ‘Farsi”. Over the impact of Arab infiltration in Iran, Parsis, hatred to surrender by the overseas demands and privilege to fight for their civil rights. So, they decide to left their homeland and finally made the long journey in east and reached at Diu, India in the 8^{th} century AD. The group was called parsis and their speaking regional dialects is called “Farsi”. After that, they navigate on the way to Gujarat and placed at the seaport of Sanjan. The regional chief of Sanjan, Jadav Rana, permitted them to residing at sanjan with the order of, they would not using the Parsi dialect as well as to avoid their dressing style.

Khodadad Building is the Parsi enclave situated north of Bombay. Which is the area is mostly opted for living the majority of the parsi people and their families. Mistry sketches most of the important characters in such a long journey belongs, residing and based on the khodadad building environment. Gustad Noble was considered as the central character of the story. Dilnavaz was the spouse of him and she was good mother to caring for her children’s and more obedient, tolerated and adjusted as per the thought of her husband. And the couples had two childrens like Roshan is his daughter and Sohrab is the only son. Also the other familiar and peculiar characters in this novel means, Ms. Kutpitia was more popular due to her superstitions and black magic in this area and the stupid person Tehmul Lungraa with his toddler’s brain along with matured body and Mr. Rabadi by his attraction for dog and old Cavasji for his endless grievances opposed to Divinity are incredible formation. Also, the Peerbhoy Paanwalla is one more category, who magnetize the clients among his sexual stories and the surgeon Dr. Paymaster is eminent for caring up through his jovial look while diagnosing his patients. Dinshawji is other personality, he is ordinary bank clerk and notable among very well depiction other than in support of role to the story. He always makes great jokes to attract by his associates being disparity for his miserable end. And other main characters of the story is Gustad’s friends Major Jimmy Bilimoria and Ghulam Mohammed were working in Indian Secret Agency RAW and Mr. Nagarwala is the parsi gentleman, who is working as a cashier in State Bank of India. (SLJ-ACS:20-21).

Nagarwala Case - Emergency Period Crisis

The incident was represent about the actual living of the infamous Mr. Nagarwala which shaked to the Indian Prime Minister Mrs. Indira Gandhi’s Government.

> *“In Such a Long Journey the Parsi world gradually moves out of its self – imposed isolation and interacts at the highest levels of finance and politics with the post colonial Indian world. (CI – 25)”*

Nagarwala incident is one of the scandalous crisis in India. It is severely affected the whole parsi community group. Because, parsi people always and almost support the nations development and contribute their support for the top level administration on ruling government. But, this nagarwala incident is the worst example of how majority dominant community group raised their power against the lower minority groups like Parsis?. Thus, Hinduism in India is the dominant religion. So, Mistry clearly look out the corrupted Indian political systems maladministration due to

ministers and government officials lethargic mindset and they won't get any basic level awareness about the nation's future development and progress. Because, most of the politicians and government officials in India were tie-up together including the prime minister also involved in money scandals.

So, in this nagarwala incident be able to prove hundred percent for the dishonoured political situation was happened in India at the time of civil war was started between East Pakistan ie., Bangladesh and West Pakistan. But the Indian premier only to support to get freedom of Bangladesh. So, due to this reason Rs. 60/- lakhs of money transferred from Indian nationalized SBI (State Bank of India) branch to Bangladesh freedom fighters Mukti Bahini Liberation Movement and later this money was misused and invested for the development of the Indian Primer Mrs. Indira Gandhi's son Mr. Sanjay's Car company. Mr. Nagarwala is a parsi gentleman, who is working as a messenger and in that bribary issue nagarwala name also added for transferring the money without the knowledge of the prime minister's office. For the moment SBI chief cashier was received a phone call from the prime minister's personal secretary, asking him to hand over a large sum of cash Rs.60 lakhs towards the messenger. On later, due to arising this issue congress government had an idea of file FIR against fraudulent of cash to nagarwala was illegally involved to theft the lump sum of money. In addition, after this conflict the whole parsi community group are insulted by the Indian higher officials and the prime minister of India Mrs. Indira Gandhi. As a final point nagarwala was subsequently arrested and died rather mysteriously before he could be brought to trial.

Socialism

Socialism means, the political thought in order to follow that on the faith of all the citizens are equally treated as well as in addition to the wealth and assets must be evenly alienated for all. That's the notion of socialism. Through the "such a long journey" novel Mistry reflects Parsis are obtain voluntarily interests directly or indirectly support to grow the Indian economical, social and political status. The Parsi industrialists were form and improve the Bombay city infrastructure and maintenance the complete environment and like Jamshedji Tata to start the biggest Tata group of companies to provide the maximum of employment along with Jeejeebhoy and Readymoney groups were built by many of Bombay's land bridge, highways and buildings. And one more parsi gentleman Major Jimmy Bilimoria was working in a RAW, it's a government secret agency to trace out the enemies activities. And Mr. Nagarwala, is also working in a nationalized Bank cashier. Both of them are more honest persons working below the congress ruling party premier Mrs. Indira Gandhi. But the Indian congress government is never considered their

individual life and should take severe action against Mr. Nagarwala and Major Jimmy Bilimoria for the money scandal. That means, the Indian premier and congress higher officials were hiding the truth with accused persons and also the case was filed against the Parsi community people. So, socialism means it's just like a question mark under the Hindu dominant society. Due to the election campaign victory only Congress Party and Shiv Sena - Hindu Society political party meet and give some announcements infavour of the minority communities like Parsis, Sikh, Muslim and Christians. Otherwise they won't believe and coordinating with those minority communal groups to form the government.

Patriotism

Besides, the past provide, there is no connected to the responsibility of Parsis in India. In numerous segments like Aviation, Banking, Catering, Canning, Dairy Products and Shipping Industry among the Parsis encompass exposed their brilliance. Personalities such as Rustomji Jivanji Gorkhodu, a close related of Mahatma Gandhi, K.F. Nariman, Dadabhai Naoroji, Sir Dinshaw Eduljee Wacha and Pherozeshah Mehta, towards point out a little, engaged well-known characters in Indian sovereignty group. The Parsis are too noticeable for their uniqueness dignity and namely, they enclose in no way insisted whichever condition in career or else entry level assessment, although they include for all time preserved a hard sense of group individuality (SLJ-ACS-102).

India is considered as a multicultural nation. Because, peoples living in this country belongs from different states, religion, community, caste, economical circumstance, literate or illiterate class etc. Nationalism refer about the aspiration of a crowd of community who divide the equal battle, traditions, dialects and so on, towards shape the self - governing nation. Parsi community is the best example to discover the new nation after left their motherland due to Arab invasion and they won't have an idea to change from Parsi to Islam and their culture, language, living habits, education etc., As well as Parsis are having very talented personality and genuinely participate to the political administration of Mrs. Indira Gandhi's regime, like Major Jimmy Bilimoria, working secret agent in RAW and Mr. Nagarwala is a parsi gentleman, as a cashier working in a nationalized bank and the chief protagonist Gustad Noble is a good parsi family gentleman. These are the three wise characters are facing more complicated situations in their life and death to adopting the Indian society and follow the ruling congress government higher officials order and sacrifice their life altogether due to the affection of the nation.

One of the light was flashed in Gustad's life is, he attracted by a roadway artiste to paint the complex fence of the construction through pictures of idols, transforming it to a sacred place in line on the way to maintain spectator, since with

it while a municipal lavatory and bring about the intolerable stink along with parasite reproduction the whole. The artiste, he appoints for the intention meant for no financial concern assertively say to Gustad with the intention of, he might coating upto 300 miles of wall, if essential through images of divinity.

Here, the wall artiste shows to the society meant for tolerance and understanding is the two essential key aspects for everyone's life. That's why life is going very well than unbreakable.

> *"Using assorted religions and their gods, saints and prophets: Hindu, Sikh, Judaic, Christian, Muslim, Zoroastrian, Buddhist, Jainist etc., Actually Hinduism alone can provide enough. But I always like to mix them up, include a variety in my drawings. Makes me feel I am doing something to promote tolerance and understanding in the world (SLJ-182)"*

So, Gustad mentioned the above quotations about the patriotism reflects through on the pavement artist's voice and with his wall painting represents for the necessity of tolerance and understanding of the human society.

Secularism

As well as the nationalized of Banks is to create a complicated situation to survive and remove the parsis as of their best position of politics and economy in Indian society. Mrs. Indira Gandhi admirer's political principle in Maharashtra to confirm to be an aggravation for the parsi people. Moreover, secularism represents there is no prejudice in opposition to any person within the identification of belief. Because, the following quotation is to be identifying the real shiv sena's behaviour and activity against secularism concept.

> *"that bloody Shiv Sena, wanting to make the rest of us into second class citizens. Don't forget, she started it all by supporting the racist buggers.(SLJ:ACS-39)".*

Identify for the Shiv Sena chief "a worshiper of Hitler and Mussolini" in his fascist rules, the protagonist Gustad highlight Sena's pressure with cruelty, bullying and gathering at Shivaji Park, to alter the name of the road to declare Bombay's Marathi individuality. The feeling of grouping is summarized in the panic marginal identity feel in the look of growing Hindutva beliefs to grip the land in power to Hindu primary concern. To sustain up by Mrs. Indira Gandhi for her individual growth, the mutual government is strengthened likes of Shiv Sena that symbolized mass fighting against marginals that goes next to the small piece of India's secular thoughts. Gustad consider the prospect of marginal's with shock to stick away no assure, still in a secular situation. So, the protagonist Gustad's observation is

appropriate at present:

> *"What kind of life was Sohrab going to look forward to? No future for minorities, with all these fascist Shiv Sena Politics and Maharashtra language non-sense. It was going to be like the black people in America twice as good as the white men to get half as much"(SLJ-55).*

It was completely usual to the marginal people, who are tiny in quantity, become horrified on the grow of enthusiasm.

Recollecting the involvement of the Parsis to the banking system in India. Dinshawji thought:

> *"What days those were, yaar. What fun we used to have Parsis were the kings of banking in those days. Such respects we used to get. Now the whole atmosphere only has been spoiled. Ever since that Indira nationalized the banks"(SLJ-38).*

Dinshawji was conscious of shifting the political situation and it is the vital reason of the misrepresented status of Parsis in India. The deformation of secularism is a current rule is everyone else apparently while parsi Tehmul Langraa is enlist to issue bigoted booklets against minorities, effective of Sena's governing of violent behaviour of disorder in opposition to the marginal.

Racialism

Racialism is a mode of injustice to suppose that ethnic inequality in opposition to persons in several situations, it direct en route for cruelty. Like Shiv Sena is the majority Hindu religious political party in India. It is always expressed only by the Hindu communities social, political and economical conditions with survival status of the nation. It don't have any idea to speak anything about the other minority communal groups like Parsis, Muslim, Christian, Buddhism, Sikh etc., Because, racialism spread in Indian society like a disease and it can never cure by anyone else till now. That means Indian social and family setup only based belongs on the distinctive types of religion, community, cast, economical level and educational background etc., So, the other minority religions is never equally considered to the Hindu communal group. For example, Jadav Rana, the regional sovereign of Sanjan was not allowed to Parsis, to wear their cultural costumes and wouldn't accept to speak for their mother tongue of 'Parsi' and they have voluntarily converted to follow the Indian culture along with use their Gujarati language to speak as well as wear the Gujarati type of costume style along with parsi men surrender their weapons and they were to worship their cow and their wedding ritual were to be perform only at darkness.

Conclusion

India is one of the multifaceted religious state. Here, people belongs from different religion, community, caste, class, economical condition, literate and illiterate category. But everyone having equal rights to sustain their future life and asking their distinctive rights and needs. So, in this narrative, the novelist Mistry have clearly identify and describe the issues of discrimination of the congress dominant ruling party against the other minority group of communities based on the religious, social and political aspects played by the following characters like protagonist of the story Gustad Noble and Major Jimmy Bilimoria, Nagarwala, Dilnavaz, Ghulam Mohammed, Roshan, Sohrab, Tehmul Lungraa, Dinshawji, Pavement Artist etc., Anyhow, in India all the majority and minority communal groups joint together and sustain together in future exist.

Works Cited

Bharucha Nilufer. *Ethnic Enclosures and Transcultural Spaces*. Jaipur and New Delhi : Rawat, 2003.

Dodiya, JayDipsingh, ed., *'The Fiction of Rohinton Mistry : Critical Studies*', New Delhi : Prestige, 1998.

Dodiya, JayDipsingh. *The Novels of Rohinton Mistry : Critical Studies*, Sarup, Jan. 2004

Kapadiya, Novy, "*Zoroastrian Community and its Future*," *Parsi Fiction*, Vol. I, 2001.

Mistry, Rohinton. '*Such a Long Journey*'. New York : Vintage, 1991.

Meitei, Mani M. *'Modes of Resistance in Rohinton Mistry's Such a Long Journey'*, *Parsi Fiction*, Eds. Kapadia et al, Prestige Books, Delhi, 2001.

Vibhuti Wadhawan, Novy Kapadia, *'Parsi Community and the Challenges of Modernity'*: A Reading of Rohinton Mistry's Fiction, Prestige Books International, New Delhi, 2014.

Rohinton Mistry's Such a Long Journey and its Critical Realism', *Fiction of the Nineties*, Eds.
Veena Noble Dass & R.K. Dhawan, Prestige Books, New Delhi, 1994.

Rohinton Mistry's, '*Such a Long Journey : A Critical Study,*' Santwana Haldar, ABC Asia Book Club Publisher, New Delhi, 2006.

Sujata Chakravorty, *'Critical Insights into the Novels of Rohinton Mistry'*, Discovery Publishing House Pvt., Ltd., New Delhi, 2014.

Nilufer E. Bharucha & Vilas Sarang, The Parsi Voice in Recent Indian English Fiction : An Assertion of Ethnic Identity', *Indian English Fiction 1980-1990 : An Assessment*, Eds, B.R.Publishers, Delhi, 1994.

Nawaz Mody, *The Parsi Voice in Western Indian Literature and Journalism : 1820 – 1920'*, The Parsi Contribution to Western India : *The First Hundred Years Eds*. Allied Publishers, Delhi, 1999.

❑❑❑

1. Ph.D., Research Scholar in English, Department of English, Park's College , Tiruppur-641605, (Affiliated to Bharathiar University, Coimbatore) Tamilnadu, South India
Email-ID – yogainfotechcs@gmail.com.

2. Research Supervisor and Associate Professor of English, Department of English, Park's College, Tiruppur-641605. (Affilated to Bharathiar University, Coimbatore) Tamilnadu, South India
Department of English, Park's College , Tiruppur-641605. India.

Research Article

Dual Religions and Cultural Confrontation – Kamala Markandaya's Perception

–A. Vasanthi
–Dr. M. Noushath

Abstract:

Kamala Markandaya's forte is her imaginative realism. In her drawing of the cultural clashes between the Eastern and the Western values, she opens up several vistas. Religious hegemony is a dimension. The alien Western religion and philosophy symbolized by Christianity is superimposed on the native Eastern values epitomized by Hinduism even to the extent of supplanting it. The resultant melee stemming from this fight is perceptible in several fronts ranging from the macrocosmic plane to the microcosmic level. Rukmani's stoic stance is, for instance, the revelation of her firm religious ancestries. The Swamis are ubiquitous and omnipotent in offering faith-cure with their philanthropic principles and asceticism. While *A Silence of Desire* impacts the readers with its collision between spiritualism and rationalism, *The No where Man* is a compendium on the expatriates' impasse. Thus Kamala Markandaya's perspectives are eclectic and catholic. This analytical outlay proves that Kamala Markandaya's perceptions are not just genuine but justifying.

Kamala Markandaya belongs to the clan of Indian English novelists who are devoutly sensitive to the changing nexus between society and psyche of individuals. The panoramic canvas in her novels picture the pre and post independent era in Indian history with the turmoil interpreted in multiple dimensions with imaginative realism. It is imaginative because, as a great story-teller, she dovetails fact and fiction so nimbly that it becomes exceptionally universal in value. One of the detrimental tendencies of the times reflected in her novels is the intersection of cultures in the Indian sub-continent. This is inevitable since the British remain as colonizers and Indians are the colonized. The Western culture represented by the British tries to superimpose itself on the native Indian culture denoting

Eastern values. The resultant melee is perceptible in every possible walk of life and literature does not fail to record its deleterious impressions. As a matter of fact, one of the critical postulations of Indian literature in English is the preservation, revival, fortification and espousal of the central elements of tradition and native culture. (Edwin Thumboo, "Kamala Markandaya's*A Silence of Desire*," 152) To put it in a nutshell, Kamala Markandaya deals with cultural dualism at two planes: at the macrocosmic level, she sets out the Eastern and the Western cultural conflicts at the historical, social and political levels; at the microcosmic level, she demystifies the tendencies which permeate the psyche of the human beings and define the societal roles of the individuals in contravention of their ages-old culture and values inherited through generations. This paper endeavours to unravel the principal principles in the cultural conflict in Kamala Markandaya's fictional world from the singular perspective of spiritual quest.

In order to fortify the arguments and also provide a solid base for the metaphysical traits put forth in this paper, it is but inevitable that the iconic canons of the two inflexibly opposing religious philosophies are presented in a nutshell to underline the origins of the dissent. The Western philosophy has its ancestries in Greek thinking with its analytical, plausible, practical and materialistic tendencies. But the Eastern thought anchors its principle not on the individual life but life in its conceptual configuration and the individual is just a miniscule fragment of this system. Perhaps religions are fashioned by creeds but the lack of correspondence among them gets triggered or aggravated when "a moral assertion is used to express an attitude of the man making the assertion…to show forth or evince his attitude. The attitude is concerned with the action which he asserts to be good." (Basil Mitchell, 78) The intangible variance between the two major religions in the world, the Hindu and the Christian religions, in terms of the religions of the colonized and the colonizer, gets clarified through the statement of Swami Vivekananda: "The Christian religion teaches that each human soul had its beginnings at its birth into this world…whereas the Hindu religion asserts that the spirit of man is an emanation of the Eternal Being and had no more a beginning." (188-189) In addition, the strife between the colonizer and the colonized in terms of the religious beliefs is the aversion of the former to the idol worship of the latter. The Eastern religion's practice of the worship of the God in His numerous forms is justified by the great statesman C. Rajagopalachari: "God is sought in a medley of forms for God is a supreme Medley." (D. Ramakrishna, 42) These myriadappearances, with countless shapes and sizes, does not throw up any conflict of interest in their existence because each symbol or idol is an extension of One Supreme Being, God. Such a passion is abhorrence to the ruling British who are deep-seated in the Western tradition. They deprecate India as a rearing terrain of fanatic reverence in which millions of souls "…were rushing to perdition without a chance of Christian salvation." (Percival Spear, 122) The diehards in India cling to this misplaced hatred and set off a trend in downsizing the religious practices in India covertly abetting and even ministering the proliferation of the Western Christian culture in India. In simple terms, idealism, mysticism and fatalism

of the East are isolated as obnoxious to the pragmatism, materialism and individualism of the West.

Kamala Markandaya's craftsmanship is axiomatic in multiple modes. The assortment of themes and array of characters ensure the in-depth and multi-dimensional perspectives through the interwoven dexterity of historical details and imaginative vistas. The dominant paradoxes get manifested in myriad forms: Kindred Souls, Time and Ready Acceptance, Conflicts of Symbols and Superstitions and Conflict of Holy Men. Generally said, Kamala Markandaya's characters exhibit a tendency towards negativism but they do recover and regain their composure and even go to the extent of recognizing the worth of the philosophies of the opposite cult. The multiple planes in which the encounter gets projected speak volumes about Kamala Markandaya's adroitness.

Kamala Markandaya stamps her class while delineating the feelings of empathy towards animals by the protagonist Rukmani in *Nectar in a Sieve*. Rukmani is on her way to Nathan's village soon after her marriage. She expresses her glee when she watches the bullocks being given a refreshing break: "…the bullocks are unyoked, led to a small pool of water near which we had stopped, giving them each a handful of hay. After that rest, the beasts began stepping jauntily again." (*Nectar in a Sieve*, 3) The second instance is the forlorn travel to the nearby city in search of sustenance. Despite her own desolate state, she displays compassion to the animals: "'The animal is not well,' I say to the man. He shrugs: 'What can I do? I have no other. I must make these trips since they are my livelihood." (140) Not just animals but even humans draw the nectar of kindness from her. She has the monumental benevolence to adopt the leper orphan, Puli and gets him treated by Dr. Kennington. Valmiki, in *Possession*,retains his innate native values with, of course, occasional aberrations, even during his sojourn in England: "…a part of God dwelt in every man and would one day reunite with the divine whole." (154) Perhaps his chauvinisms do not erase his beliefs. Vegetarianism is one such stance. For instance, he feels "animals are not created for men" and is unhappy that the death of his pet monkey is due to "the violation of this precept." (179) K.S. Narayana Rao records the core of the novel: "this novel affirms the spiritual powers over the temptations of material forces." (40) Lady Caroline's arrogance stems from her Western materialistic upbringing leading to battle with Eastern spiritual quest of the Swami and this cultural conflict checkmates her.Caroline eventually meets her fate: "striking a discordant note on the solitary peaceful hills." (40)

Valmiki is no better. His rescue is not without its shudders or reservations. This child prodigy falls into the vicious grip of Lady Caroline and deviates into the realm of lust and luxury. His innate wisdom gained through his birth and nurture in the Eastern traditional environment chastens him and disenchants him from Western materialism. The Eastern thought pervasively seen in this text is the triumph of spirit over matter. The Swami is the icon of the spirit and he is the spiritual *Guru* of Valmiki. Kamala Markandaya visualizes him thus: "The true Indian ascetic – and in my mind I had no doubt – the Swami was one – is not a parish priest, a missionary,

a revivalist, concerned with keeping tabs on a human being to plot his spiritual progress. His whole aim is to achieve detachment from the world:" (*Possession*, 61)Valmiki's bond with the Swami is not unfettered despite the long distance separating them. Kamala Markandaya is candid: "Valmiki's attachment to the Swami seemed undiminished, if less emotional than when he had been a child. It was, to some extent, reciprocated; and perhaps it was his human tie, tenuous though it was, that had led the Swami to forsake his isolated life in the realization that he was yet unready to meet its austere demands. Yet the link had been slight or severely controlled. (140) Caroline, on the other hand, is adversative to the Swami. Her hostile stance is toxic. She debases Eastern spiritual perspective to implant Western materialistic influences and one of her strategies isconfrontational attitude against the Swami.

It is undeniable that Christianity represents the Western tenets in India.(K.S. Narayana Rao, 46)Kamala Markandaya has this to say in *A Handful of Rice*, which is representative of the poor men's opinion: "On the other hand, his father had held that Christians were good people and good people were God's neighbours; but then he – Ravi's father – was going by the only one he knew, the missionary doctor who had tried so hard to help their family. Perhaps they were good people, thought Ravi judiciously and he told himself, there were good and bad in all kinds." (99-100) she also projects the converse:

"Damodar said it was a spent religion, not only in India where people thought it peculiar, but all over the world because it shied away from a contemplation of the immensities of the universe to preoccupy itself with the trivialities of the behaviour in this world. It had, besides, according to Damodar, tied itself up in knots what with its leaders contradicting each other about what things really meant and having to tinker with truths which they had once treated as gospel." (99) The traits of the native Eastern religion stay inerasably intact dispelling the doubts of the pessimists. Its brainwave has influenced the Christian rites and rituals. The Indian Christians adopt the Hindu custom of redoing the procession of Gods and Goddesses: "…the waving palms had passed, the bearers of the crosses…At first Ravi was aware only of a radiance, … out of it the vision grew, set on a shining orb, drawing every star-point of light, the magically evoked statue of the Virgin Mary…the fall, the ascension: it was the divine cycle, familiar to Ravi from his own religion…for there was in the religious lexicon of his village a variation of this ceremony." (100-101)

Srinivas and Vasantha in *The Nowhere Man* do not shed their spiritual values. They meticulously adhere to their religious chores and lifestyle which includes with vegetarianism. Even during his 'living together' with Mrs.Pickering, he does not relinquish his principle. His progressive thoughts let Mrs.Pickering decorate a Christmas tree in the house. But he has to swallow the bitter fact of the cremation of his wife in an electric crematorium. When a policeman chides him for polluting the river by immersing the ashes of his wife in Thames, he becomes wretched. His protracted stay, thus, does not dissipate his inborn penchant for Eastern religious practices. England does not live up to its reputation as a rational Western country.

The country is replete with religious prejudices and racial discriminations with peaceful co-existence as a misplaced belief. The ensuing disastrous consequences instil fear in the hearts of expatriates enormously. Srinivas is a vanquished victim to one such inappropriate show of hatred and violence.

Two Virgins is contrastive in many details especially in the delineation of the two sisters, Lalitha and Saroja. The former succumbs to the vile of the Western abominable practices due to her eschewal of the ages-old culture, tradition and religious values of the Eastern philosophy, the environment in which she is born and brought up and espousal of the Western culture, diametrically opposite and antagonistic to the native values. The consequences are obvious: she is led astray from a virtuous life and, ultimately, vanishes into oblivion. She is a perfect specimen of how despicable is the alien philosophy. Kamala Markandaya highlights her fall from grace by matching her with her sister who also experiences the guiles of this abhorrent philosophy but steers clear of all temptations on two counts – Lalitha's pathos and her own intrinsic trust in native Eastern philosophic values. Lalitha is out and out a pupil of the Christian school disseminating foreign Christian cultural values but Saroja is educated in an Indian school and is commandeered by the tradition and outlook of Amma and Aunt Alamelu. (A.R. Gaherwar, 162) This novel is, in reality, an account of the Hindu and Christian religious philosophies. For a common reader, this novel is an unexciting narrative of the traditional Eastern and modern Western ways whereas the critical analysts value it as a stimulating documentary on the attributes of Hindu and Christian folklore. (162) The milkman Manickam's wife expresses her feelings of all religious Hindus when she turns down to sell her cow to the butcher since"she was a good Hindu, she told him, and never would consent to cow slaughter, but the real thing was she was too fond of the old scraggy cow. Saroja knew," (*Two Virgins*, 6) AuntAlamelu deems a cow as a "Holy mother cow." (93) Rekha Jha explains the reality: "Hindu philosophy enjoined that when men used animals, they were not to encroach its integrity and be circumspect. Markandaya makes this novel a spirited defence of her own Hindu beliefs and little else so that structurally the novel suffers – none of these defences or invectives and diatribes against Christianity have any particular purpose." (57) Amma directs her anger on Miss Mendoza calling her 'a three rupee convert,' whose ancestors forsake their religion to embrace Christianity for monetary gains. Aunt Alamelu is sad because Christianity pollutes native Indian religion and culture. She blasts Lalitha for her decision to act in films: "Maypole dancing around them and such Christian practices, is it a fitting pastime for our young Hindu maidens?... Shame totally contrary to the code of our Hindu decorum which has safeguarded the virtue of our youth for a thousand years." (176) Aunt Alame luis stubborn that Miss Mendoza's Christian has spoilt Lalitha. Lalitha's Westernized views get reflected in her choice for city rather than the traditional village life.

Kamala Markandaya descends to the micro level assessment of the cultural clashes from the macro level in *A Silence of Desire*. While commenting on the craft of Kamala Markandaya in this novel, S. John Peter Joseph writes: "She …

depicts in her fiction the dilemmas inherent in the interaction between Western quest for scientific rationalism and Indian traditional spiritualism." (124) Sarojini has fervent faith in Eastern religious dogmas and hence surrenders herself to a Swami for faith-cure which is not unnatural since "…[faith-cure is] the performance of the impossible, the revelation of the divine, mystery and beatitude." (*A Silence of Desire*, 113) Her husband Dandekar becomes her antithesis in insisting upon a cure for her tumour in a hospital. The result is mental agony for both. Sarojini tries to justify the suppressing of the information of her visits to the Swami: "…because you would have stopped me going to be healed- you would have sent me to a hospital instead. Called me superstitious, a fool, because I have beliefs that you cannot share." She adds: "… you would not let me be – No! You would have reasoned with me until I lost my faith because faith and reason do not go together, and without faith I shall not be cured." (89) Dandekar's rationalism also gets its share of condemnation from Sarojini.: "I do not expect you to understand …you with your Western notions. Your superior talk of ignorance and superstition when all it means is that you don't know what lies beyond reason and you prefer not to find out. To you, *tulsi* is a plant that grows in earth like the rest – an ordinary common plant. And mine is a disease to be cured and you have sent me to hospital and I would have died there." (67) Since Dandekar's impression of the Swami is rooted in his misguided notions and hearsay from his friends and colleagues who are, after all, not so qualified as to appraise the Swami's standards, his pretensions vanish into thin air on meeting the Swami. He is won over by the exalted stature of the Swami with his philanthropic and self-sacrificing principles and Dandekar, for a moment, remains a transformed individual discarding his false notions about him. But once he is away from his presence, his old self returns and continues to take cudgels against him. Edwin Thumboo is explicit: "*A Silence of Desire* is built around relation to tradition and change, faith and scepticism attached to a modern, mainly Western-derived attitude. Dandekar's expectations of what life is and ought to be are revised by the experience he undergoes in the novel. He is to a certain degree Westernized. But there are values, beliefs and attitudes, especially in matters of faith, which are immemorial and which refuse to be cast aside in the process of change – Sarojini's faith, for instance." (88) Dandekar's metamorphosis is so far-reaching that Kamala Markandaya remarks that "if it had been in Dandekar's power to bring the Swami back, he would have done it." (216) Dandekar's new awakening establishes spiritual communion with Sarojini which has just remained a physical union so far: "My wife is part of me now – I didn't realize it in all these years it has been happening, but I know now that without her I'm not whole." (198) Dandekar is, no doubt, the winner in the fight but he is, in a way, loser in the ultimate analysis.The dialogue that uncovers this is classic in style. Dandekar pacifies Sarojini: "You will be cured. Even without him, even though I know you haven't much faith in hospitals, I know you will." Pat comes Sarojini's reply: "I know, he said I would be, and not to hold back when the time came. I'm not afraid now of knives or what they may do. All will be well. He said so." Dandekar is in a state of self-effacement

"that he [the Swami] has achieved the impossible. He has done what I couldn't do. So I am to be humbled: beholden once more to this man of all others." (218)

Kamala Markandaya's mettle in the thematic perception of the dogmatic clashes between the two religions – Hinduism and Christianity – is simply outstanding. She points out that the vehement thrust of the Western materialistic, dogmatic, ethical and moral tenets to dislodge the Eastern religion and philosophy does not come to fruition. As a matter of fact, the confrontation opens up new vistas in projecting the exalted statuses of the two religions and also the complementary principles of the two philosophies. It also underlines the reality that the alien religion or philosophy does not supplant the native values although it may have made a few dents sporadically.

Works Cited

Gaherwar, A.R. "Kamala Markandaya's*Two Virgins*," *World English Literature: Bridging Oneness*, New Delhi: Authorspress, 2013, 162.

Joseph, S. John Peter. "Need for the Coexistence of Spiritualism and Scientific Rationalism: A Study of Kamala Markandaya's*A Silence of Desire*," *Three Women Novelists*, 124.

Markandaya, Kamala. *Nectar in a Sieve*, Bombay: Jaico Publications, 1955.

—,*A Handful of Rice*, New Delhi: Orient Paperback, 1966.

—,*Possession*, Bombay: Jaico Publications, 1967.

—,*Two Virgins*, New Delhi:Vikas Publications, 1977.

—, *The Nowhere Man*, Bombay: Orient Longman Ltd., 1972.

—,*A Silence of Desire*, New Delhi: Penguin Books, 2009.

Mitchell, Basil. *The Philosophy of Religion*, Oxford: Oxford University Press, 1971, 78.

Ramakrishna, D. Ed. *Indian English Prose*, 42.

Rao, K.S. Narayana. "Religious Elements in Kamala Markandaya's Novels," *Ariel 8.1* (Jan 1977): 35-50.

Spear, T.G. Percival, *A History of India*, Vol.2, 122.

Thumboo, Edwin. "*A Silence of Desire*: A Closer View," *Perspectives on Kamala Markandaya*, Ed. Madhusudan Prasad, Ghaziabad: Vimal Prakashan, 1984, 88.

Vivekananda, Swami. *The Teachings of Swami Vivekananda*, Calcutta: Writers Workshop, 1971, Vol. IV, 191.

Ph.D. Research Scholar (Part Time),
PG &Reserarch Department of English,
Government Arts College (Autonomous), Karur -5.
Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirapalli.

Assistant Professor of English,
PG & Research Department of English,
Government Arts College (Autonomous),Karur -5.
Affiliated to Bharathidasan University, Tiruchirapalli.

Research Article

Reimagining Memory: Contemporary Literary Trends in Memory Studies and Indian Writing

–Jisha John

Abstract:

Memory Studies is an interdisciplinary field of study which investigates how individuals, communities, and societies remember past events. Literature is closely connected to Memory Studies, serving as both a subject of study and a source of insight into the workings of memory. Indian Writing is particularly intertwined with complex memories and identities, as shown by studies of various authors and epochs. The growing interest in memory studies within Indian literary criticism reflects a broader trend towards interdisciplinary approaches to literary analysis, as well as a recognition of the important role that literature plays in shaping our understanding of the past and the present.This paper aims to examine key trends in memory studies and Indian Writing, with a focus on recent developments and their implications for our understanding of literature, society, and memory. The paper will also explore how emerging ideas contribute to broader conversations on memory, trauma, and representation in contemporary India, reflecting global debates on these topics.

Key words: Memory Studies, Indian Literature, recent trends, memory and identity

Memories are components of wider processes of cultural negotiations that characterise them as narratives as well as fluid and mediatized cultural and personal remnants of the past. Many ways of remembering contribute to the formation of collective representations of the past which later evolve into social and historical identities.Memory Studies is an interdisciplinary field that examines the ways in which individuals, communities, and societies remember the past. It draws upon a wide range of disciplines, including history, psychology, sociology, anthropology, philosophy, and cultural studies, to explore how memory operates

in different contexts. The nexus between memory studies and literature is multifaceted, with literary works serving as both objects of study and as sources of insight into the workings of memory. Indian Writing is intricately entwined with a complex of memories and identities, as several studies of various epochs and authors have demonstrated and one of the main epistemological concerns in Indian literary studies has always been the analysis of literary representations of memory processes. In recent years, there has been an increasing interest in the intersection of literary criticism and memory studies in India.At the same time, Indian writing too has also undergone significant transformations in recent years, with new voices emerging and established authors grappling with questions of identity, representation, and politics in their works. The paper attempts to explore some of the key trends in Memory Studies and Indian Writing focusing on how literary criticism and Indian Writing and have developed and transformed in recent years, and what their implications are for our understanding of literature and society. The paper will also examine the ways in which the emergent thoughts engage with questions of memory and representationcontributing to broader conversations that reflect the larger global debates on memory, trauma, and representation in contemporary India.

Discussing the "ethico-political problem" of whether there is a "duty to remember", Paul Ricoeur asserts that:

> a basic reason for cherishing the duty to remember is to keep
> alive the memory of suffering over against the general ten-
> dency of history to celebrate the victors. […] We need, therefore, a kind
> of parallel history of, let us say, victimization,
> which would counter the history of success and victory. To
> memorise the victims of history–the sufferers, the humiliated,
> the forgotten–should be a task for all.
>
> (Ricoeur 10-11)

Memory has been an integral part of Indian literature and culture for thousands of years. From ancient epics such as the Mahabharata and Ramayana to contemporary works of fiction, memory has been a recurring theme in Indian literature. One of the earliest Indian texts to explore the concept of memory is the *Rigveda*, an ancient collection of Sanskrit hymns. The *Rigveda* contains several hymns dedicated to the power of memory, and many of the hymns describe how memory can be used to invoke the Gods and gain knowledge. In the *Mahabharata*, memory plays a central role in the story of Karna, a warrior who is cursed with forgetfulness at a crucial moment in battle. The *Ramayana* also features several instances where characters rely on their memory to recall important information and make decisions.

Memory Studies, has emerged as an interdisciplinary field of study that seeks to understand the ways in which individuals and societies remember and forget events from the past. In India, Memory Studies has gained prominence in the wake of traumatic events like the Partition.There are several theorists who have made significant contributions to the field of memory studies in the context of Indian

literature. Meenakshi Mukherjee in her book *The Perishable Empire: Essays on Indian Writing in English* explores the ways in which Indian literature in English engages with the memories of the past, and how these memories shape the present. Mukherjee argues that Indian writers in English have often used literature as a means of preserving and transmitting cultural memory, particularly in the face of the erasure of indigenous traditions and languages under colonialism. By exploring how the memory of colonialism shapes the literary production of Indian writers who write in English she reveals how the memory of colonialism is transmitted through language and how writers negotiate the tension between their own cultural heritage and the English language.

Indian linguist and literary criticGanesh Devy argues that Indian literary criticism has suffered from a type of amnesia, in which past traditions and influences have been forgotten or ignored in favour of more contemporary perspectives. He believes that this has led to a lack of depth in literary criticism and an inability to understand the complex cultural and historical contexts in which literature is produced. In his work*After Amnesia: Tradition and Change in Indian Literary Criticism*, he explores the role of memory in Indian literary criticism and argues that the study of literature should be seen as a way of preserving cultural memory and promoting cultural diversity.His work also highlights the importance of preserving and studying regional languages and literature in India, which he believes are often overlooked in favour of more dominant languages such as English. By doing so, he seeks to encourage a more diverse and inclusive approach to literary criticism that takes into account the rich and varied literary traditions of India. His work contributes to a growing body of research in memory studies that seeks to understand how cultural and political factors shape the way we remember and interpret the past, as well as how this affects our understanding of literature and other forms of cultural expression. Suvir Kaul's work *The Partitions of Memory: The Afterlife of the Division of India*focuses on the ways in which literary texts can serve as sites of memory and how they can be used to engage with questions of history and identity. It offers a diverse range of perspectives on partition as a complex and traumatic event in South Asian history, and sheds light on its continuing relevance in the contemporary world. The book extensively covers the literature of the Indian subcontinent, including works by Salman Rushdie and Arundhati Roywhose novels can be seen as sites of memory that engage with questions of history and identity in postcolonial India.*The God of Small Things*,Kaul is explored to reaveal how the novel uses memory to challenge dominant narratives of Indian history and identity. The novel's fragmented narrative structure and use of multiple perspectives allows it to offer a more complex and nuanced understanding of Indian history and identity, one that challenges dominant discourses and opens up new possibilities for alternative forms of memory and identity.Similarly, Rushdie's *Midnight's Children*can be seen as a site of memory that engages with questions of national identity and the legacy of colonialism in India; the employment of magical realism and historical allegory challenges dominant narratives of Indian history and identity, to offer a more nuanced and complex

understanding of the country's past and present. The work highlights the important role that literature plays in shaping cultural memory and identity in postcolonial India, and in challenging dominant discourses and opening up new possibilities for alternative forms of memory and identity.

The evolution of Indian writing and memory studies reflects the complex and dynamic nature of Indian society, as well as the ways in which cultural and political transformations are reflected in literature and the study of memory.Postcolonial critics like Gayatri Chakraborty Spivak and Veena Das have played a key role in developing memory studies in India, emphasizing the need to pay attention to marginalized voices and to the ethical implications of remembering and forgetting. Spivak's work on subaltern studies and postcolonialism has been influential in shaping the field of memory studies in India. Her focus on the politics of representation and the importance of giving voice to marginalized groups is particularly relevant in the context of Indian literature. There has also been a growing interest in oral history and the use of new media technologies to record and preserve memories.Spivak's concept of "strategic essentialism" is relevant to memory studies, as it involves the conscious use of identity categories such as race, gender, and sexuality in order to challenge dominant power structures. In the context of memory studies, strategic essentialism can be used to challenge dominant narratives of history and memory that exclude or marginalize certain groups.It refers to the strategic use of essentialist identity categories such as race, gender, and sexuality to challenge dominant power structures. Spivak's concept of strategic essentialism emphasizes the need to strategically use identity categories to challenge dominant power structures, while also recognizing their problematic nature and working towards their deconstruction.The idea is to use these categories as a way of asserting political and cultural agency, while also recognizing that essentialist identity categories are themselves constructed and contested.According to Spivak, strategic essentialism involves a temporary and strategic embrace of essentialist identity categories in order to empower marginalized groups and challenge dominant power structures. This is because, in some situations, essentialist identity categories can provide a means of collective identity and political action, allowing marginalized groups to come together and organize around shared experiences and struggles.However, Spivak also recognizes that essentialist identity categories are problematic because they can reinforce stereotypes and perpetuate exclusionary practices. Therefore, she argues that strategic essentialism must always be accompanied by a critical awareness of the constructed and contested nature of identity categories, and an ongoing commitment to deconstructing them.

Indian feminist scholars have used Spivak's idea to challenge dominant narratives of history and memory that exclude or marginalize certain groups, especially women and minorities.Urvashi Butalia, uses Spivak's concept of strategic essentialism to explore the politics of memory and the representation of women in the context of the Partition of India. In her book, *The Other Side of Silence: Voices from the Partition of India*, Butalia examines how women's experiences of violence and

displacement during the Partition have been excluded from dominant narratives of history and memory, and how strategic essentialism can be used to challenge these exclusions.

Ananya Jahanara Kabir's *Territory of Desire: Representing the Valley of Kashmir*explores how the Valley of Kashmir has been represented and imagined through literature, film, and other cultural productions. Kabir analyses the ways in which these representations shape our understanding of Kashmir and its people, and how they perpetuate certain stereotypes and power dynamics. One of the key concepts that Kabir employs in her analysis is that of strategic essentialism which refers to the use of essentialist categories, such as "Kashmiri" or "Indian," in order to mobilize political action and resist dominant power structures. This approach is strategic in that it recognizes the limitations of essentialist categories, but also acknowledges their potential to serve as a basis for resistance and solidarity. Kabir also draws on memory studies, which is a multidisciplinary field that explores how memories are constructed, represented, and transmitted in different contexts. She examines how memories of the Kashmir conflict are shaped by various actors, including the Indian and Pakistani states, Kashmiri nationalists, and international human rights organizations.

Veena Das is an Indian social anthropologist who has made significant contributions to the field of memory studies. She is known for her work on the relationship between memory, identity, and violence, particularly in the context of the 1947 Partition of India.In her *Life and Words: Violence and the Descent into the Ordinary*, Das examines the ways in which violence and trauma are remembered and transmitted across generations in the aftermath of the Partition. She argues that memory is not just an individual phenomenon but is shaped by broader social and cultural processes.Das also emphasizes the importance of studying everyday practices and narratives in understanding the politics of memory. In her work, she has highlighted the role of oral histories, rituals, and other forms of cultural expression in shaping collective memories.Das's work on memory studies has contributed to a deeper understanding of the complex ways in which memory, violence, and identity are intertwined, and how these processes shape social and political life.

In terms of Indian novels in the 21st century, there has been a surge in the production of literary works that explore memory, trauma, and identity in contemporary India. Many of these works are written by women authors and explore issues such as gender, sexuality, caste, and social justice. Some notable examples of Indian novels in the 21st century that engage with memory studies include, *The Lowland*(2013)by Jhumpa Lahiri, *The Year of the Runaways*(2015) by Sunjeev Sahotaand Geetanjali Shree's novel *Tomb of Sand* (2018).

Jhumpa Lahiri's novel *The Lowland* deals with the complex interplay of personal

and collective memories in the context of the Naxalite movement in West Bengal. Memories are evoked in the novel as a form of resistance as the characters' memories are employed as a way of resisting dominant narratives of history and identity. For example, the character Udayan's memories of his involvement in the Naxalite movement are a way of challenging the dominant narrative of the Indian state and its policies towards the movement.

Another aspect to consider is the role of memory in shaping individual identity. The novel depicts how the characters' memories of their past, particularly their childhood experiences, shape their present identities and relationships. The character Subhash's memories of his childhood with his brother Udayan inform his decisions throughout the novel, particularly in relation to his relationship with Udayan's wife Gauri. The novel also deals with the trauma of memory, particularly in relation to political violence. The characters in the novel are all affected by the Naxalite movement and the state's response to it, and their memories of the violence and loss they have experienced shape their present lives.

Sunjeev Sahota's novel *The Year of the Runaways* explores the lives of four young Indian immigrants in the UK, highlighting their experiences of displacement, exploitation, and survival. The novel is structured around four distinct narratives, each one tracing the backstory and motivations of a different character. These stories are not presented in a linear fashion but instead shift back and forth in time, weaving together to create a complex and layered portrait of the characters and their experiences. At the heart of these stories is the idea of memory, and how the characters' pasts shape their present realities. Avtar, one of the main characters, is haunted by memories of his childhood in Punjab, where he witnessed brutal violence and poverty. These memories shape his desire to escape to the UK, as well as his willingness to endure exploitative working conditions in order to support his family.Similarly, Randeep, another main character, is driven by memories of his father's abuse and neglect. These memories fuel his anger and desire for revenge, leading him to participate in criminal activity. In the novel, Sahota explores the ways in which memory can be both a source of strength and a burden. For some characters, memories of home and family provide a sense of connection and purpose, while for others, traumatic memories create a sense of dislocation and despair. Through the stories of its characters, the novel highlights the ways in which memory shapes identity, shapes relationships, and shapes our sense of self in the world.

Geetanjali Shree's novel *Tomb of Sand*, the winner of the 2022 International Booker Prize focuses on the ways in which memory is represented and constructed in the narrative, as well as how it shapes the characters' experiences and understanding of themselves. In the novel the protagonist an 80-year-old Indian

woman who turns her back on her life and her family, and travels to Pakistan, to her pre-Partition past.Through her journey, she grapples with memories of her past, including her complex relationships with her family, friends, and the culture she left behind.According Marianne Hirsch's concept of post memory, memories are transmitted from one generation to another, particularly in the aftermath of traumatic events. In *Tomb of Sand*, memories of her past are shaped not only by personal experiences but also by the collective memories of family, ancestors, and the cultural history of a land. The novel explores how these memories continue to shape the protagonist's understanding of herself and her place in the world. The novel represents memory as a collective and cultural phenomenon, and how it shapes the characters' sense of self and identity.

The intersection of memory studies and literature has brought new insights into the ways in which memory shapes our understanding of the world and ourselves.The 21st century has seen a growing interest in the intersection between memory and literature, with researchers exploring new questions and using new tools to better understand how we remember and how literature can shape our memories. Cognitive literary studies is an emerging interdisciplinary field examines how literary texts engage with and shape cognitive processes, including memory. It aims to understand the cognitive mechanisms underlying the reading experience, such as how readers construct mental models of the fictional world and how they use these models to make inferences and predictions.Researchers in this field study how readers process and remember information from texts, how literary devices like metaphor and imagery affect memory, and how reading can influence cognitive development.

Narrative and autobiographical memory studies shows that our memory is not just a record of events, but a product of our interpretations and the narratives we construct about those events. Current research on the area focuses on exploring how literature can affect our autobiographical memory by shaping our narratives about our own lives. When we remember events from our past, we tend to organize them into a coherent narrative that makes sense to us. Researchers have found that this process is not just a passive recollection of events, but an active construction of meaning and coherence. The role of emotion is significant in the study as emotion plays a significant role in how we remember events and how we construct narratives about our lives. Research on the domain also shows how cultural factors like gender, ethnicity, and social class influence our autobiographical memories.

Neuro-aesthetics is an interdisciplinary field combines neuroscience, psychology, and aesthetics to study how the brain processes and responds to aesthetic experiences, including those provided by literature. Current research focuses on how literature can elicit emotional responses and how these responses can affect

memory.The therapeutic potential of memory is explored in narrative and autobiographical memory studies which show that narrating life stories can have therapeutic benefits, helping us to make sense of our experiences and create a more coherent sense of self. Literature has long been used as a tool for processing trauma, and researchers are now studying how traumatic experiences can affect memory and how literature can help individuals cope with trauma by altering their memory processes.

Memory and digital mediais an emerging field in the domain of memory studies. The rise of digital media has created new opportunities for studying memory and literature as studies focus on exploring how digital texts and multimedia storytelling affect memory, as well as how digital tools can be used to enhance memory and learning. The proliferation of digital media technologies such as social media, mobile devices, and cloud computing has led to the accumulation of vast amounts of data and information, and has transformed the way we store and retrieve memories. Digital media and memory studies explore a range of topics, including digital preservation, digital curation, digital storytelling, digital archives, digital heritage, and digital memory practices. Scholars in this field use a variety of research methods, including ethnography, archival research, interviews, and textual analysis, to explore the ways in which digital media technologies are changing our understanding and practice of memory.

According to Birgit Neumann, literary works:

> configure memory representations because they select and edit elements of culturally given discourse: They combine the real and the imaginary, the remembered and the forgotten, and, by means of narrative devices, imaginatively explore the workings of memory, thus offering new perspectives on the past. Such imaginative explorations can influence readers' understanding of the past and thus refigure culturally prevailing versions of memory. Literature is therefore never a simple reflection of pre-existing cultural discourses; rather, it proactively contributes to the negotiation of cultural memory.
>
> (Neumann 334–335)

The exploration of memory in contemporary literature, particularly in the context of Indian writing, reveals the multifaceted nature of memory as a construct that is deeply intertwined with identity, culture, and history. The emerging critical concepts and theories of Memory Studies, provide valuable insights into the complexities of memory in literary and cultural contexts. The study of memory in contemporary

literature illustrates how memory can be a tool for resistance, a site of trauma and healing, and a means of reimagining the past and envisioning the future offering a rich and nuanced perspective on the ways in which literature plays a prominent role in preserving, revising, and reimagining our collective past.

Works Consulted

Butalia, Urvashi. *The Other Side of Silence: Voices from the Partition of India*. Duke University Press, 2000.

Devy, Ganesh. *After Amnesia: Tradition and Change in IndianLiterary Criticism*. Voice of India, 1992.

Hirsch, Marianne. "The Generation of Post Memory."*Family Frames: Photography, Narrative and Post Memory,*Harvard University Press, 2012, pp. 1-22.

Jamison, Stephanie W., and Joel P. Brereton. *The Rigveda: The Earliest Religious Poetry of India.*Oxford University Press, 2014.

Kabir, Ananya Jahanara. *Territory of Desire: Representing the Valley of Kashmir*. Minneapolis: University of Minnesota Press, 2009.

Kaul, Suvir. *The Partitions of Memory: The Afterlife of the Division of India*. Permanent Black, 2001.

Lahiri, Jhumpa. *The Lowland*. Vintage Books, 2013.

Merivirta, Raita. *The Emergency and the Indian English Novel.* London and New York: Routledge, 2019.

Mukherjee, Meenakshi. *The Perishable Empire: Essays on Indian Writing in English.* Oxford University Press, 2000.

Neumann, Birgit. "The Literary Representation of Memory."*A Companion to Cultural Memory Studies,*Ed. Astrid Erll and Ansgar Nünning, in collaboration with Sara B. Young, De Gruyter, 2010, pp. 334-335.

Ricoeur, Paul. "Remembering and Forgetting."*Questioning Ethics: Contemporary Debates in Philosophy,*Ed. Richard Kearney and Mark Dooley, Routledge, 1999, pp. 10-11.

Roy, Arundhati. *The God of Small Things*. Random House, 1997.

Rushdie, Salman. *Midnight's Children*. Random House, 1981.

Sahota, Sunjeev. *The Year of the Runaways*. Knopf, 2015.

Spivak, G.*A Critique of Postcolonial Reason.*Harvard University, 1999.

—. *In Other Worlds: Essays In Cultural Politics.* Routledge, 2012.

Shree, Geetanjali. *Tomb of Sand*. HarperCollins Publishers India, 2018.

Valmiki. *The Ramayana*. Translated by Bibek Debroy, Penguin Classics, 2015.

Assistant Professor in English, St. Teresa's College (Autonomous), Ernakulam-682011, Kerala. A gold medallist from the University of Kerala, her areas of interest include Postcolonial Literature, Gender and Cultural Studies. Her Ph. D. was on Globalisation and Fiction.
Email: jishajohn@teresas.ac.in

Address for Communiction:
Jisha John, "Kallikatt", Galaxy Gardens, UTRA-73,
UnichiraThaikavu Road, Edapally, Kochi-682033 Kerala
Phone: 9847404519

Research Article

The Paradox of Patriarchal Code: A Feminist Readingof Prostitution in Nawal El Saadawi's Woman at Point Zero

–*G.Meshak Devakaram
–**Dr. K.S. Anish Kumar

Abstract:

Patriarchy privileges men to enjoy his power. The masculinity therefore considers female as the Other. In the sexual politics patriarchy satisfies the desires of men in the issue of prostitution. Prostitution subjugates women morally. For Liberal Feminists it is an employable source but Radical Feminists consider it as a pit. Prostitution is a central theme in Women at Point Zero by Nawal el Saadawi. The protagonist Firdaus indulges in prostitution after domestic and social brutalities. Firdaus is considered as an empowerment by free-labour by liberal feminists but it is conceived as a patriarchal trap by radical feminists. This article also focuses on the condition of the exploited woman Firdaus, whose rights to exist is denied in the Egyptian phallocentric society in which death alone liberates her. This article examines the voice of Firdaus that echoes all over the patriarchal spaces in the society in which the female is targeted.

Key Words: Prostitution, Liberal Feminism, Radical Feminism, Phallocentrism, Symbolic Order.

Feminism is a socio-political movement that tries to attain freedom, equality and dignity for women who are sexually exploited, socially dominated and politically colonized by male-dominated society. It continues to voice out for women to eradicate gender bias, pride of virility and masculine ideologies in all sections of institutions.

The feminist critics therefore had to move from the phase of feminist critiques to that of gynocritics in which they advocate to analyze contexts, interpretations, historical references, and modes of language of literary creations produced by male writers. The body of female is exploited in many ways and one such way is prostitution. The novel Woman at Point Zero deals with the protagonist Firdaus who is pushed into prostitution. The novelist advocates the

hypocrisy of morality and duplicity of laws.

Prostitution is a mutual consent of both male and female to engage in sexual act for the compensation of payment but critics like Katie Baren refers to Katri K. Sieberg's book Criminal Dilemmas in which she says that prostitution is a 'victimless crime' (qtd.in Prostitution Debate 28). In this patriarchal capitalism the plight of a prostitute becomes worsen. De Beauvoir points out that "The prostitute is a scapegoat; man unloads his turpitude onto her, and he repudiates her. Whether a legal status puts her under police surveillance or she works clandestinely, she is in any case treated as a pariah" (Second Sex 680). Therefore it is worthy to note that when a female writer writes about the body which is conditioned by the society the suppressed voice of the female surfaces to question the social conditions. Prostitution is a sexual act in which the female body becomes commodity and sold for currency to exchange. The idea of prostitution is formulated by virtues of religious principles without which it is defined either as an act of reproduction or an act of sexual pleasure for compensatory substitute. Religion as a patriarchal system of moral code defends its stance by defining prostitution that invokes "adultery, fornication, birth control and abortion by separating pleasure from child-birth and other sex-related practices" (Cooper 101).

Nawal El Saadawi was a predominant figure, social activist and feminist writer and whose novel Woman at Point Zero is based on her research on the female prisoners' physical and mental health conditions in Egypt. One can argue that the protagonist of the novel Firdaus fervently fights against the hypocritical values of social, cultural, religious spheres of the materialistic society for which her dissidence is not long lasting and decides to fight till her death without apologizing for her release to the Chief Justice.

As a biographyofFirdaus, Woman at Point Zero is a novel of second-hand narration through El Saadawi who met her in Qanadir Prison just a few hours before her execution. Firdaus' narration is so vital in the context of feminist dissidence against gender hegemony, "Let me speak. Do not interrupt me … Tomorrow morning I shall no longer be here. Nor I will be in any place known to man" (Point Zero 8). The author wants to bring the voice of the female who wanted her repressed thoughts to be heard in her own feminist discourse without verbal amputation of the system of masculinity. This critique aims at Firdaus' state of anguish and her voice continues to mock the system of ethics.

The life as a prostitute gives Firdaus freedom of handling men who approach her is retaliate against the very base of tradition of patriarchy and hypocrisy of its morality. Hence the choice of her condition is so bound to be predestined in the phallocentric society too. This is what the paradoxical state which is to be disputed from the feminist perspective to seek whether or not prostitution makes enhancement in the life of women by any means. The cause of the fear of patriarchy over the existence of Firdaus is on three reasons. First it is not because of the reason that she is indulging in prostitution but because of the reason that she murdered her pimp who assisted men of higher orders to her. Second the longer she lives the danger

continues for the dignity of the men of higher orders who slept with her. Third her dissident voice shakes deceitful phallocentric power centres of social order like morality, prostitution, man and woman relationship, ethics, religious devotion, faithfulness which male-centred ideologies hardly withstand.

The legal system that imprisoned Firdaus for the conviction of prostitution and murder completely ignored the incestuous exploit of Firdaus' uncle in her childhood. Firdaus says, "…I paid no attention until the moment when I would glimpse my uncle's hand moving slowly from behind the book he was reading… The next moment I could feel in travelling up my thigh…" (Point Zero 13). The state of Firdaus is politicized by patriarchal code of morality by perceiving her life synchronically but the incidents occurred right from her birth which has caused her to choose the present condition should also be measured.

The politics of power executed by the phallocentric order mutes the anguish of Firdaus who represses social and sexual offenses and injustices inflicted against her. Firdaus endures several cruelties of life such as clitoridectomy, incestuous molestation of her paedophile uncle and premature marriage with Sheikh Mahmoud who was ready to offer 200 pound as bridal wealth. Firdaus' uncle marries her away to Mahmoud being 60-years-old with pus-oozing distorted face. He was a dominant husband by inflicting her to bleed in domestic violence even for trivial mistakes. Firdaus leaves the house and works in a coffee shop where she is molested by the servant named Bayoumi and he is the one who forces her into prostitution. These social, cultural and familial issues are never cared by the legal system of justice but her choice of prostitution and murdering a pimp who tried to stab her to death in an act of self-defense become matters. As a result of which women have to seek for a space to retain their own self and being.

Firdaus says, "I ran out of Bayoumi's house into street. For the street had become the only safe place in which I could seek refuge, and into which I could escape with my whole being" (Point Zero 54). While the masculine power structures negate the space of the other, the woman as the other has to find a space without binary divisions. "Finally she could buy her own food. She could eat from a plate where no one had already eaten before. She could refuse male authority but she had to earn her living by selling herself as a prostitute" (Giunti430).

It is significant to note that for liberal feminists; prostitution is a means of empowerment like other occupations through achieving economic power and social independence with which women can progress in equal opportunity in choice of life. Belinda Cooper says, "Prostitution, in this view, involves sale of a service, no different from the services of a doctor, lawyer, or carpenter, and no less separate from the person providing the service" (Point Zero 109). The liberal feminism perceives and endures prostitution as justifiable if it is one's free-choice.

The act of 'liberal reproduction' empowered women of her choice with freedom of preference but on the contrary the system or practice of prostitution is certainly a male text created for men where the pleasure of men is centred. According to the statement of Katie Cruz in her article Beyond Liberalism, "Prostitution, trafficking,

slavery, and rape are described as equivalent, women are depicted as objects and passive sexual slaves, and the criminal justice system is the prioritised arena for developing an oppositional consciousness". (74)

According to the radical feminists, the system of prostitution is equivalent to slavery, trafficking and rape where the body of the female is made commodified. Women are therefore represented as means of sexual catharsis for men. Firdaus asks, "Had my body changed? Had I been transported into another woman's body? And where had my own, my real body, gone?" (Point Zero 66). Both economic and social disparities caused by gender discrepancies make the law unequal and hence her identity becomes meaningless besides which the stance of a prostitute will be worst either.

Radical feminists perceive sexual intercourse as an exercise of body politics executed between sexes. Kate Millet says, "The term politics shall refer to power-structured relationship, arrangements, whereby one group of persons is controlled by another" (23). Sex as a body-politics in gender relationship the power of which is exercised over the body of the female and therefore her body is controlled by the male counterpart. For radical feminists, who do not view sex as a neutral activity, but as an exercise of power, prostitution and rape are less distinguishable (Cooper 114).Tthe power that takes the shape that goes beyond body-politics other than that of sex is paradigmatic by nature such as society, culture, science, knowledge, law, religion, philosophy, morality, literature, arts and so on.All the institutional codes, According to Junfeng ZHAN, are dominated by phallus (20) to negate the voice, identity and rights of the female.

Prostitutes who receive economic benefits for their free labour and service are penalized in the patriarchally capital society but never receive social status and equal respect because the legal system victimizes the women of free labour to be incarcerated and men to to go free with sexual fulfillment. Firdaus speaks, "'What about me?'Iexclaimed.'You are not respectable', he replied, but before the words 'not respectable' had even reached my ears, my hands rose to cover them quickly, but they penetrated into my head like the sharp tip of a plunging dagger… as sharp as the edge of a knife which had cut its way through my ears, and the bones of my head to the brain inside" (Point Zero 76). Unless the established social norms and system of legality are re-modified, the sexual liberation which is demanded will push women into worse condition. "Rather than liberating women, however, sexual freedom simply provided men with more opportunities to objectify women. The liberal response to conservative moralism failed to address the nature of sexuality itself and the harm to which it subjected women; it merely widened the field for that

harm. Sex itself – with its inequalities of power – did not change" (Cooper 115). The most significant point in the life of Firdaus is the liberated state of hers from her familial oppressors which is so paradoxical because she is still dependent on men for whom she sells her body. In spite of her capability of appointing a lawyer she is still under the patriarchal code that does not tolerate the supremacy of the female.Firdaus' constant answer for the repeated question of the Arab Prince, "'Do you feel pleasure?'" is "'Yes,'" (Point Zero 106) but to her telling the lie is annoying and by which he is so excited "like an idiot" (Point Zero 107). At the level of emotional outburst she angrily says no and becomes so hysteric as the text goes on like this, "When he held out his hand with the money, I was still wildly angry with him. I snatched the notes from his hand and tore them up into pieces with the pent-up fury" (Point Zero 107). The act of tearing the veil and the note of 3000 pounds is more symbolic than literal. She reminds the money given by her father, uncle, husband, Di'aa, the men she knows namely Bayoumi, Fawzy, Ibrahim, Marzouk and including her men she knows; means including the money she earned through prostitution.

The reason for her imprisonment is not because of killing the pimp but because of telling the Arab Prince the hardcore truth that how it is so easy to kill a man by demonstrating the act of stabbing, "So I lifted my hand high above my head up above my head and landed it violently on his face. 'Now you can believe that I have slapped you. Burying a knife in your neck is just as easy and requires exactly the same movement' (Point Zero107).

Firdaus is arrested and interrogated for telling this truth which reveals the pretentious nature of masculine pride to shatter gender superiority. The phallocentric system fears to the voice of feminist protest that could manifest the dependency of the subject over the Other. El Saadawi's opinion on prostitution is a pungent satire against the hypocritical morality of the patriarchal discipline. In the 15th forum hosted by Heliopolis Public Library in 2016, July 19 El Saadawi made a statement, "Prostitution is a pus, ... Secret businesses of prostitution should be brought to light and be put under the government's supervision in order to remove this pus" (Al Bawaba). According to El Saadawi the prevalence of prostitution in Egypt is not admitted but instead is kept hidden. It is a disease to be removed from the land completely.

Conclusion

The ideas on prostitution given in Woman at Point Zero are completely different from mainstream perceptions. The mainstream perceptions on prostitution are such

as manipulative, exploitative, enslavement, immoral and so on. Prostitution for Firdaus on the contrary gives her supremacy over man-woman relationships and sexual politics; means it gives her economical supremacyto decide on her own with which she is ableto use power resistance against phallocentric ideologies. Prostitution at the same time has to be perceived as an institution built for men and built by men and which is an undeniable truth too.

The word 'Zero' in the title of the novel is so important for its two significances. Zero refers to nothingness or the space nowhere, means the woman has no place to exist or the space she exists is not her own and in both the circumstances she becomes nothing. Point Zero, on the other way, is a pointer symbol that helps the sniper to target the aim through the scope of a sniping rifle; ironically speaking the woman is the one who is zeroed in on and her space is aimed to be annihilated. By giving life to Firdaus through writing after her death El Saadawi makes her voice reverberate in the patriarchal Arab world which usually neglects the space of the Other. Spheres of all corners in the Arab cultures therefore are insecure for women like Firdaus. The phallocentric set up not only captivates Firdaus into prostitution but also tries to marginalize her. Her urge to escape from the male-dominant traps compels her to realize that she is a victim. El Saadawi brings to light her tenacious nature through her vivid narration. In other words El Saadawi gives a voice to the mute Firdaus to question the power-oriented system by exposing its traits and shrewdness.

Therefore while studying the case of Firdaus in terms of liberal feminist theory, the condition of being a prostitute is uncertain, submissive and paradoxical by nature in the gender-biased society whereas her refusal of returning prostitution is so rebellious against symbolic order and other patriarchal codes in terms of psychological, ideological and political transcendence and it is very obvious that her stance evinces radical feminist in her.

Work Cited

Baren, Katie. "Revisiting the Prostitution Debate: Uniting Liberal and Radical Feminism in Pursuit of Policy Reform."Law and Inequality: A Journal of Theory and Practice, vol. 1, no. 2, 2012, pp. 19-20. Accessed on 25 April, 2020.scholarship.law.umn.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1140&context=lawineq

Campbell, Kirsten. "Political Encounters: Feminisms and Lacanian Psychoanalysis". Jacques Lacan: Between Psychoanalysis and Politics, edited by SamoTom¡si¡c and AndrejaZevnik, Routledge, 2015, pp. 234-253. Goldsmiths Research Online, URL: research.gold.ac.uk/12792/1/Campbell%20Feminism%20Psychoanalysis.pdf. Accessed on 25 April, 2020.

Cixous, Helene. "The Laugh of the Medusa".Trans. Keith Cohen and Paula Cohen, Chicago Journals, vol.1, no.4, 1976, pp. 875-893.JSTOR, edisciplinas.usp.br/pluginfile.php/ 66416/

mod_resource/content/1/cixous-the-laugh-of-the-medusa.pdf.Accessed 22 April, 2020.
Cooper, Belinda. “Prostitution: A Feminist Analysis”, Women’s Rights Law Reporter, vol.11, no. 2, 1989, pp. 99-119.Rutgers—The State University, pdfs.semanticscholar.org/98e8/04efe18bed767c4e460bf798307893f0ea3f.pdf. Accessed 12 May, 2020.
Cruz, Katie. “Beyond Liberalism: Marxist Feminism, Migrant Sex Work, and LabourUnfreedom”. Feminist Legal Studies 26,2018, pp. 65-92. Springer Link, DOI: doi.org/10.1007/s10691-018-9370-7. Accessed 05 May, 2020.
Daldal, Asli. “Power and Ideology in Michel Foucault and Antonio Gramsci: A ComparativeAnalysis”. Review of History and Political Science, vol. 2, no. 2,2014, pp. 149-167. AmericanResearch Institute for Policy Development, rhpsnet.com/journals/rhps/Vol_2_No_2_June_2014/8.pdf.Accessed 05 May, 2020.
“Egyptian feminist Nawal El Saadawi calls legalization of prostitution in Egypt”. Al Bawaba, 20 July 2016, URL: https://www.albawaba.com/news/egyptian-feminist-nawal-el-saadawi-calls-legalization-prostitution-egypt-863994. Accessed on 06 May, 2020.
El Saadawi, Nawal.Woman at Point Zero, Translated by SherifHetata, Zed Books,1983.
Giunti, Firenze. “On the Condition of the Colonized Woman: the Nervous Conditions of Firdaus in Nawal El Saadawi’s Woman at Point Zero (1983)” Deportate, esuli, profughe. vol. 5, no. 6, 2006, pp. 429-433. www.unive.it/pag/fileadmin/user_upload/dipartimenti/DSLCC/documenti/DEP/numeri/n5-6/37_Sadaawi.pdf. Accessed 05 May, 2020.
Millet, Kate. The Sexual Politics.University of Illinois Press, 1969.
Newson-Horst, Adele, editor. The Essential Nawal El Saadawi: A Reader.Zed Books,2008.
The Noble Qur’an in the English Language.Translated by Taqi-ud-Din al-Hilali, Muhammad Dr., and Muhammad Muhsin Khan, King Fahd Complex, Madinah.
ZHAN,Junfeng. From Phallus” to “Lips”: A Comparative Study oftheLacanian and Irigarayan Theories of Femininity, Comparative Literature: East & West Series 1, vol. 11, no. 1, 2009, pp. 19-30. Routledge Taylor and Francis Group.DOI:doi.org/10.1080/25723618.2009.12015361.Accessed on 08 May, 2020.

❒❒❒

Ph.D., Research Scholar in English (Part-Time),
Government Arts and Science College,
(Formerly Bharathidasan University Constituent College),
Affiliated to Bharathidasan University,
Thuraiyur Main Road – Kurumbalur,
Perambalur District – 621 107, Tamil Nadu – South India.
E-mail: hierosgaomous@gmail.com

Assistant Professor and Research Supervisor in English,
Centre for Distance Education and Online Education,
Bharathidasan University,
PalkalaiPerur, Tiruchirappalli – 620 024 Tamil Nadu – South India.

Research Article

Critiquing America's War on Terror: A Study of Nadeem Aslam's *The Blind Man's Garden*

– Bigrai Basumatary
– Dr. Rustam Brahma

Abstract:

The United State's war on terror, initiated after the September 11 attacks, resulted in the deaths of thousands of innocent people in countries like Afghanistan, Pakistan and Iraq. Brown University's Study group *The Cost of War Project* estimates that direct war violence claimed the lives of around 929,000 individuals in post 9/11 conflicts. However, when accounting for civilian casualties, the total death toll in Afghanistan and Iraq exceeds from one to two million. Additionally, the war led to the displacement of approximately 38 million people, creating a massive refugee crisis. The western response to 9/11, driven by hatred and thirst for revenge failed to distinguish between innocent civilians and the enemy. The relentless bombings targeting fundamentalist groups like al-Qaeda and Taliban in countries like Afghanistan resulted in the deaths of not only terrorists but also numerous innocent civilians. This brutal response contributed to the rise of the fundamentalist factions, leading to an equally destructive backlash in the form of Jihad. Tragically, it's the innocent people who bear the brunt of the conflict between fundamentalists and the western forces. The irony of America's counter terror operations causing more innocent deaths than the 9/11 attacks itself raises profound questions about the moral legitimacy of such a project. Nadeem Aslam's *The Blind Man's Garden* explores this perilous situation in Post-9/11 Afghanistan. The characters in the novel regardless of their direct involvement in the war, experience its horrors. Through the analysis of Aslam's work, this paper aims to critique America's failed war on terror exposing its harsh realities and consequences.

Keywords: September 11, Critiquing, war on terror, Jihad, Taliban, Afghanistan, USA

Introduction: 9/11 is one of the most significant events of the 21st century. In the strangeness of its occurrence, however the event of 9/11 doesn't stand as one with no history. In fact it has its antecedents and what followed it. In the pursuit of world domination during cold war both USA and USSR eyed Afghanistan for its strategic location as a gateway to Central Asia. In its pursuit of expanding socialist footprint during cold war USSR invaded Afghanistan in 1979. To fail USSR's agenda USA provided arms, dollars and training to Afghans which gave birth to the infamous Mujahideen group named Taliban.

The honeymoon period between Taliban and America however didn't last long as Taliban proclaimed Islamic laws in Afghanistan after the withdrawal of Soviet Russia contrary to America's desire. The friendship turned into bitter enmity, resulting in 9/11 carried out by al-Qaeda another Mujahideen group that bred in the laboratory of Afghanistan overseen by America. Therefore as a response to 9/11 America had announced a global war on terror and invaded Afghanistan causing the deaths of hundreds of thousands in their so called hunt for the terrorists. Put in historical perspective, 9/11 is therefore located in the chain of the events. The purpose of this paper is to read Nadeem Aslam's novel *The Blind Man's Garden* in the light of America's complicity in creating Frankenstein's monster in the form of Taliban (and al-Qaeda) and the countless deaths and destruction it caused in its so called war on terror.

War, Ideology and the Innocent Victims: Nadeem Aslam's novel *The Blind Man's Garden* critiques the America's role in the creation of Taliban in Afghanistan and subsequently in its war on terror leading to the loss of countless innocent lives. The novel starts just after a few months of 9/11 in the height of America's war on terror. In the background of the novel is USA fighting the Taliban that results in the death of countless number of people. Drawn by this human crisis, Jeo a newly married medical student decides to go to Afghanistan to tend the wounded. When his foster brother Mikal gets to know about his plan, he warns him that he might be drafted in Taliban to fight Americans. But Jeo replies that "The organization I am dealing with has nothing to do with combat. We are not there to fight" (Aslam, 25). Contrary to Jeo's plan, unfortunately they were tipped-off to Taliban as they embarked on their journey and were taken in by a Taliban group when they arrive in Afghanistan. There Jeo is killed when an American rebel group attacks the Taliban and Mikal kept in the captivity of a warlord where he is tortured and his trigger finger chopped. Then he is sold to the Americans by the warlord in exchange of money. Mikal at last manages to escape from American captivity.

On the other hand, the news of the death of Jeo throws his family out of balance. His father Rohan, who is on verge of losing his eyesight, is heartbroken. Jeo's widow Naheed is pressurized to accept the marriage proposal of an already married man. Naheed's mother Tara becomes extremely concerned about the fate of her widowed daughter. They stand the chance of homelessness as they self-proposed suitor to her daughter is none other than their landlord. Mikal's brother Basie who married Jeo's sister Yasmin is also killed in an attack by Talibans in Pakistan. The destruction of Rohan's family with the death of his son Jeo and son-in-law Basie, leaving both his daughter and daughter-in-law widows portrays the so called collateral damage of the war. How a normal ordinary family was uprooted as a result of war is presented vividly by Nadeem Aslam. The tragedy of this single family is a symbolic representation of the countless innocent civilians of Afghanistan.

The novel also portrays irony and limitations of extreme ideology. Cold-war history reveals the ideological battle between capitalism and socialism represented by USA and USSR. The creation of Taliban is also credited to USA to fight the Russians when they invaded Afghanistan. But the same Taliban which America created later had its own ideology of Islamic theocracy following which they became enemies. And post 9/11 America found its pretext to bomb Afghanistan for refusing to accept their side of ideology. On the other hand the Taliban's extreme ideological adherence is also seen in the way they battled against America by recruiting children to fight as Mujahideens. The hijacking of the education programme at Ardent Spirit school (which was established by Rohan and his wife) and brainwashing its students for jihad against America by Ahmed the Moth (a teacher) and Major Kyra after his death in jihad in Afghanistan reveals the dangers of extremity of ideology. A group of students of the same school goes to capture the headmaster and founder of St. Josephs, Father Mede. In the same attack Mikal's brother Basie loses his life. A young man commissioning Tara to stitch American flag in order to burn it reveals the pathological level of hatred and extreme ideological difference. But at the same time, the novel portrays that in order to fight their former friend Taliban, America recruits local rebels and warlords in exchange of guns and dollars. Nadeem Aslam represents this irony to question the limitations of extreme ideologies on both the sides.

Conclusion: By focusing his narrative lens around the family of Rohan and recording the event of death, destruction, pain and loss against the background of war on terror, Nadeem Aslam documents the tragedy of the innocents in the face of war (more specifically, war on terror). The novel also documents the brutal bombings in Afghanistan in their pursuit of terrorists which more often than not hit

the innocent civilians. The saga of chaos, war, death and destruction portrayed in the novel serves as a symbolic representation of Afghanistan in ruins at the hand of America in their so called war against Taliban whom they themselves created in the first place.

References

Aslam, Nadeem. *The Blind Man's Garden*. Random House India, 2013.

Crawford, Neta C, and Catherine Lutz. "Human Cost of Post-9/11 Wars: Direct War Deaths in Major War Zones." *The Costs of War*, 1 Sept. 2021, watson.brown.edu/costsofwar/papers/human.

Jaggi, Maya. "Nadeem Aslam: A Life in Writing." *The Guardian*, 26 Jan. 2013, https://www.theguardian.com/culture/2013/jan/26/nadeem-aslam-life-in-writing. Accessed 19 May 2023.

Lasdun, James. Review of *The Blind Man's Garden by Nadeem Aslam ,The Guardian* , https://www.theguardian.com/books/2013/jan/31/the-blind-mans-garden-review Accessed 11 Apr. 2023.

Parker, Peter. Review of *The Blind Man's Garden, by Nadeem Aslam ,The Spectator* , 16 Mar. 2013, https://www.spectator.co.uk/article/the-blind-man-s-garden-by-nadeem-aslam-review/ Accessed 9 Apr. 2023.

Rahman, Shazia. "Animals, Others, and Postcolonial Ecomasculinities: Nadeem Aslam's *the Blind Man's Garden*." *The Journal of Commonwealth Literature*, vol. 58, no. 1, 2020, pp. 197–212, https://doi.org/10.1177/0021989420952125.

Scanlan, Margaret. "Transparency into Opacity: Nadeem Aslam's Alternative to the 9/11 Novel." *Narratives of the 'War on Terror,'* 2020, pp. 12–23, https://doi.org/10.4324/9781003048442-2.

Sethna, Razeshta. Review of *The Blind Man's Garden,Dawn*, 17 Mar. 2013, https://www.dawn.com/news/795797/cover-story-the-blind-mans-garden-by-nadeem-aslam Accessed 23 Apr. 2023.

❒❒❒

PhD Scholar, Dept. of English
Bodoland University, Assam
Email: mailtobigrai@gmail.com

Assistant Professor, Dept of English
Bodoland University, Assam

Research Article

Education 5.0: Opportunities and Challenges

– Dr. Shinam Batra
– Dr. Sunil Kumar

Abstract:

Education 5.0, which aims at building a quality and prosperous life, requires technology as a key component. It requires an effective learning transformation and holistic development with regularly emerging technology. The principle of developing continuous education which must be accessible to all is the basis to enhance technology in education. The aim of education 5.0 is to be anticipatory, which means learning, innovation skills, information, media, technology, career skills is to be fulfilled for each individual at appropriate age. This goal is to build a society which has a better quality of life in this increasingly accelerated 21st century development era with number of opportunities for each individual.

Opportunities

Virtual Universities
MOOCs like SWAYAM Prabha, NISHTHA, DIKSHA
Moodle (LMS)
Social Media platforms
Education Applications
Augmented Reality
Virtual Reality
Cloud Computing
Online educational Platforms
Online Training

Challenges

Digital Divide
Distraction
Authenticity
Cyber security
Mass Information
No Specific Need Based Training

Key Words: Education 5.0, MOOCs, Cloud Computing, Virtual Reality, Augmented Reality, Digital Divide, Moodle

Introduction

Education 5.0, which aims at building a quality and prosperous life, requires technology as a key component. It requires an effective learning transformation and holistic development with regularly emerging technology. The principle of developing continuous education which must be accessible to all is the basis to enhance technology in education. The aim of education 5.0 is to be anticipatory, which means learning, innovation skills, information, media, technology, career skillsis to be fulfilled for each individual at appropriate age. This goal is to build a society which has a better quality of life in this increasingly accelerated 21st century development era with number of opportunities for each individual, which is as follows:

Massive Open Online Courses : SWAYAM Prabha & DIKSHA

SWAYAM, short for "Study Webs of Active-learning for Young Aspiring Minds," is the official MOOC platform for India. It is the one platform that would bind Indian higher education, both online and offline.The most ambitious NISHTHA integrated training for 42 lakhs teachers (planned through face-to-face mode) at elementary education level (Classes 1 to 8) has come to a stand still. Under NISHTHA face-to- face training, 23,137 SRGs and 17,74,728 Teachers and head teachers working in state governed schools were covered from 33 States/UTs in a span of eight months. Time bound scaling and reach of such training is still a challenge in a plural country like India, where there is huge diversity due to language, geographical locations, culture, socio economic conditions etc.

Therefore, NCERT has planned to continue NISHTHA - integrated teacher training using DIKSHA platform and reach out to 42 Lakh elementary school teachers and its further extension to all as well.Even everyone can register himself/herself in DIKSHAportal for accessibility of content. It contains content for all classes and subjects.

It further follows Moodle(LMS).

Moodle (LMS)

Moodle LMS is an open source LMS that can be customised for any course or teaching method you choose.From early childhood to the end of high school, these are the most important years for learning. They are also the years that students are discovering who they are – where they fit in, what subjects they like most, and how they learn best.

When it comes to online learning, Moodle LMS empowers you with the tools you need to set the next generation up for success.With features that allow you to tailor content and tasks for every kind of learner at every stage of their learning

journey, Moodle LMS is designed to help you help your students where they need it most.

Augmented &Virtual Reality

Augmented reality is an enhanced, interactive version of a real-world environment achieved through digital visual elements, sounds, and other sensory stimuli via holographic technology.

It is also one of the very effective tool to give real life experience to students in classroom.

Shopify,Houzz,IKEA Place,YouCam Makeup,GIPHY World,Google Lens,ROAR,Amikasa, Snapchat

Virtual Reality (VR), the use of computer modeling and simulation that enables a person to interact with an artificial three-dimensional (3-D) visual or other sensory environment. VR applications immerse the user in a computer-generated environment that simulates reality through the use of interactive devices, which send and receive information and are worn as goggles, headsets, gloves, or body suits, which may be effectively used in education & training.

ChatGPT: Optimizing Language Models for Dialogue(Artificial Intelligence): **Just Emerged**

A model called ChatGPT which interacts in a conversational way. The dialogue format makes it possible for ChatGPT to answer followup questions, admit its mistakes, challenge incorrect premises, and reject inappropriate requests. ChatGPT is a sibling model to InstructGPT, which is trained to follow an instruction in a prompt and provide a detailed response.The education has evolved technology to a great extent. Even NEP 2020 is also in high support of use of technology in Education. Technological changes within the academic area have created innovative ways and methodologies. Today's classroom is apparently with student's having own laptops & smart phone's, they are becoming more techno savvy and digital learners. In digital learning, Social Media Platforms are becoming most entrusted tool for them. Even in our daily observations It is observed that social media users are increasing day by day. According to the **Statista report published in February 2020 ,** the number of social network users in India 2018 is 326.1 millions and were expected to be increased by the 2023 around 447.9 millions.(Statista Digital market Outlook). So, in today's era we cant think learning teaching without education 5.0.

Rationale of the Study

As, We are in 21st century, where our perspective teachers have to participate across the globe in scholastic and co-scholastic activities to sustain themselves live in the field of learning teaching. So, our focus is of course strong and digital Infrastructure but simultaneously rigorous and competency based training keeping in mind 21st century needs(Education 5.0). We have to emphasize on transformational

pedagogies in classroom like neo constructivist Approach, digitally and communicative approach, which will abrupt students' competencies as well as teachers' competencies. This way our future generations in classroom will be ten times more live and participate in all scholastic and co-scholastic activities dynamically. Here, a researcher is quoting study on education 5.0 which is 'Hughes, J. & Morrison, L. (2013)' investigated the development of adolescent identities through an enquiry of their social practices of using mobile devices and Face book for learning within the classroom and in their life. Researcher used a mixed type of research approach qualitative and quantitative. The researchers find out the relationship between multi-literacies pedagogy and the development of adolescent digital literacy's. It was suggested that Facebook and other social networking tools were great assets in the classroom. The privacy issues indicate there have been important considerations that need to be addressed.

It is cleared from the above studies that Social networks have been seen as one of the most used media and useful in education.

Keeping this in mind researcher has taken this study with following objectives:

Objectives

- To study about the awarenessof emerging digital tools of Education 5.0 among D.El.Ed. Trainees.
- To study about the usage ofdigital tools in Education 5.0 by D.El.Ed. Trainees
- To know the challenges inusage of digital tools in Education 5.0 by D.El.Ed. Trainees

Research Questions

- How much D.El.Ed. Trainees are aware about emerging tools of Education 5.0?
- What type of digital tools are being used by D.El.Ed. Trainees?
- What are the challenges faced by D.El.Ed. Trainees while using digital tools in Education 5.0?

Research Design

Population: All D.El.Ed. Trainees

Sample Technique: Random Sampling Method

Sample: 53D.El.Ed. Trainees of DIET, BNN

Tool: Self Prepared Questionnaire

Methodology

Qualitative &Quantitative Method was adopted for the present study

Results & Discussion

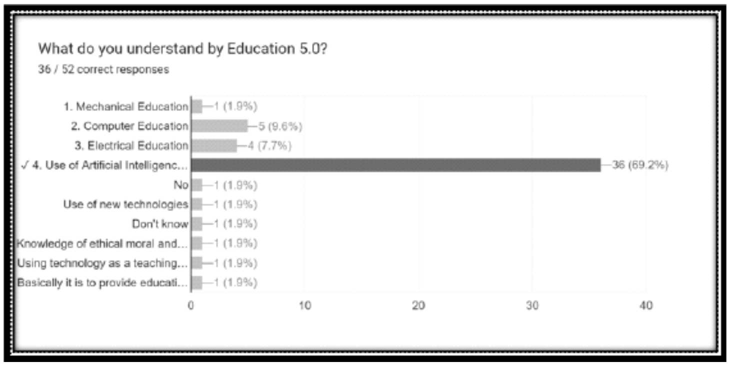

Figure No.1

It is found in Figure No. 1 that 69.2% of trainees responded that Education 5.0 is Use of Artificial Intelligence, followed by 9.6% of trainees responded it as Computer Education and further followed 7.7% of trainees responded as Electrical Education

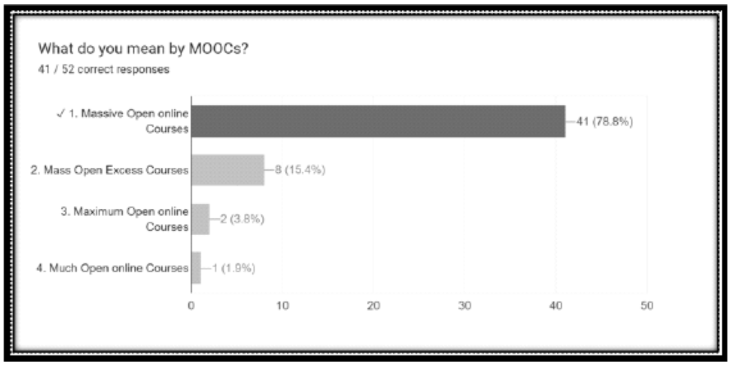

Figure No. 2

It is found that 78.8% of Trainees know about the MOOCs.

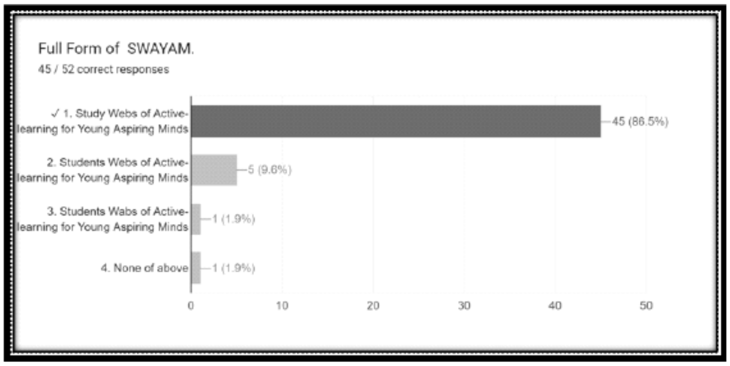

Figure No. 3

It is found from Figure No. 3 that 86.5% of Trainees know about SWAYAM.

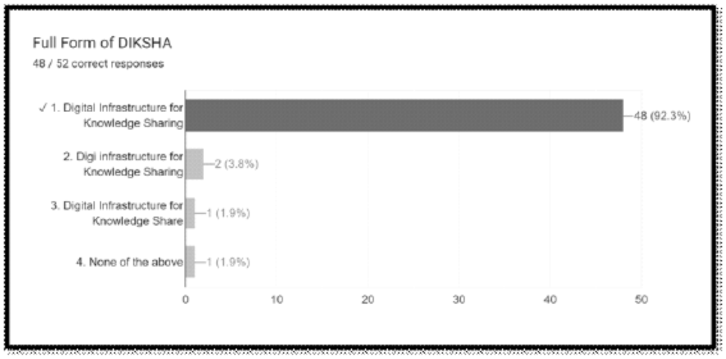

Figure No. 4

It is cleared from Figure No. 4 that 92.3% of Trainees know about the DIKSHA.

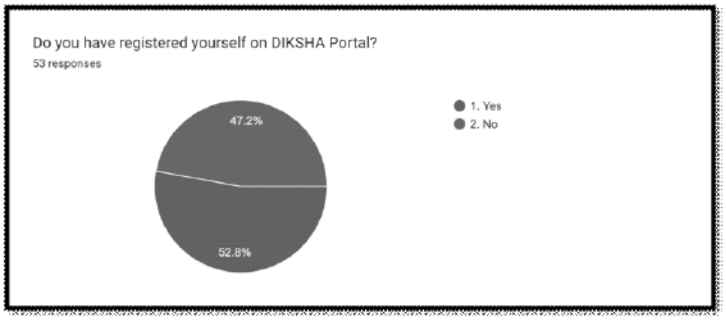

Figure 5

As it is found from Figure 5 that 52.8% of Trainees have registered themselves on DIKSHA and 47.2% of Trainees have no registration on DIKSHA.

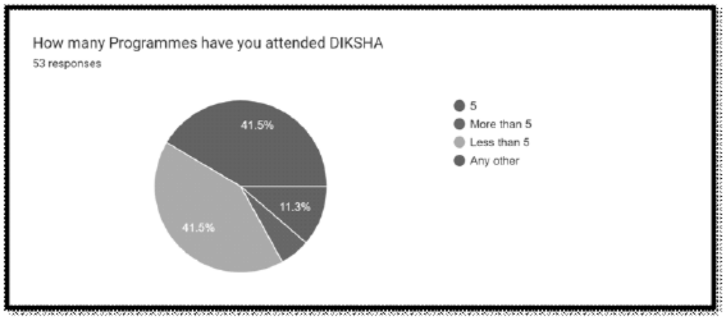

Figure 6

As it is found from figure 6 that 41.5% of Trainees have attended less than 5 programmes, 5.7% of Trainees have attended more than 5 programmes on DIKSHA.

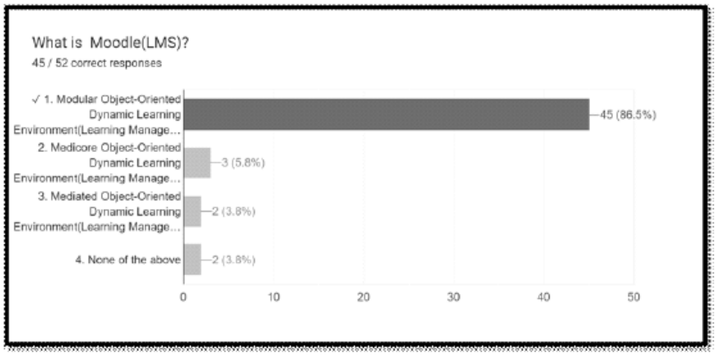

Figure 7

It is cleared from figure 7 that 86.5% of Trainees know about MOODLE.

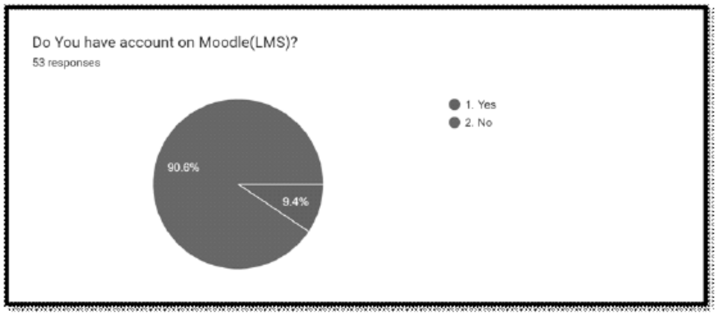

Figure 8

It is cleared from the figure 8 that 90.6% of Trainees are not registered with MOODLE and only 2% of Trainees have account MOODLE.

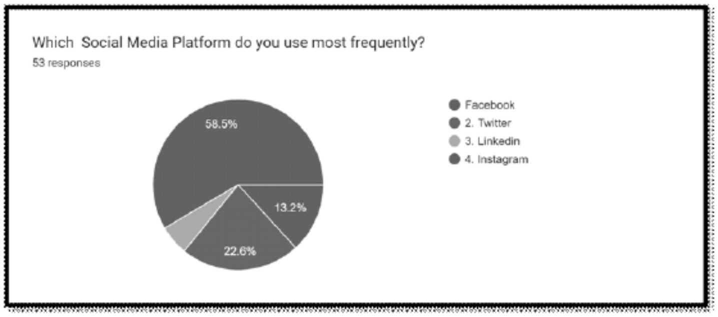

Figure 9

It is found in Figure 9 that 58.5% of Trainees use Instagram, 13.2% of Trainees use facebook, 22.0% of Trainees use Twitter and 5.7% of Trainees use Linkedin frequently.

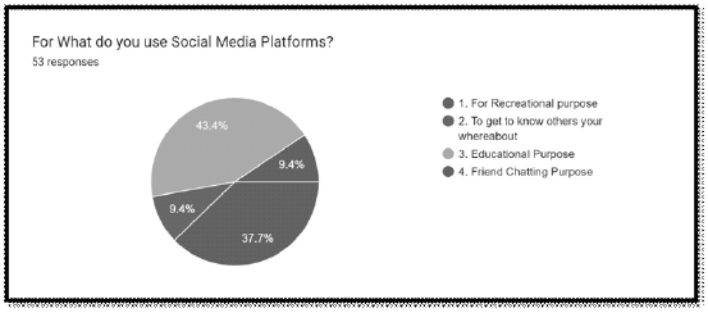

Figure 10

It is found in Figure 10 that 43.4% of Trainees use social media platforms for educational purpose, 37.7% of Trainees use it for recreational purpose, 9.4% of Trainees use it for to get to know to others your whereabout& Chatting Purpose with friends.

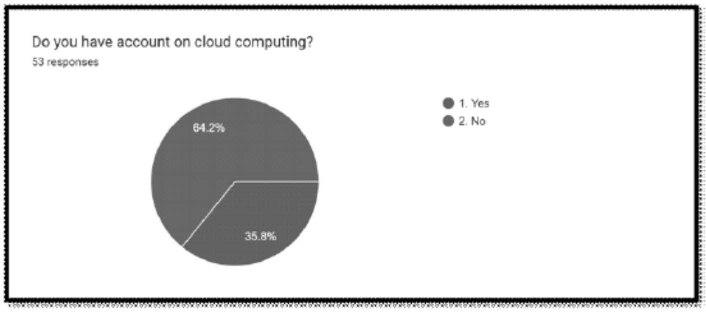

Figure No. 11

It is cleared from the figure No. 11 that 64.2% of trainees access cloud computing and 35.8% of trainees do not access cloud computing .

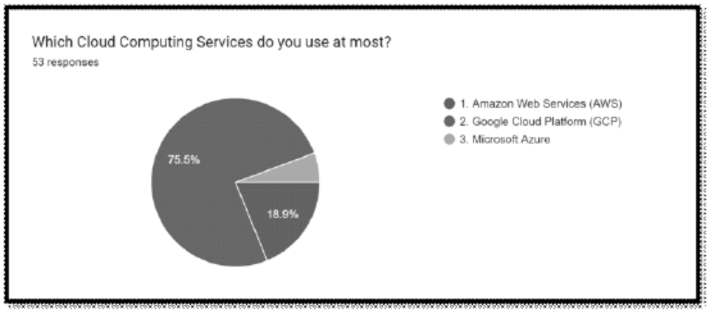

Figure No. 12

It is found that 75.5% of Trainees access Google Cloud Platform(GCP), 18.9 of Trainees access Amazon Web Service(AWS) and 5.6 % of Trainees access Microsoft Azure.

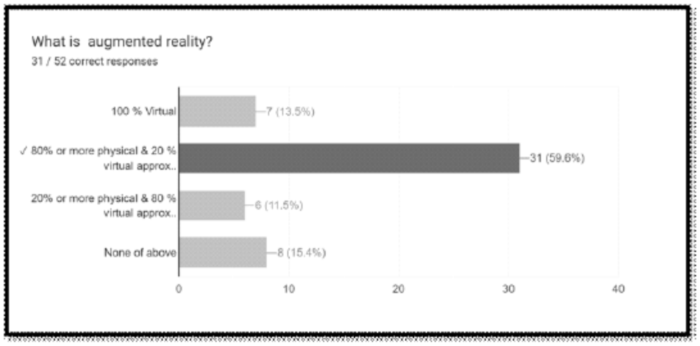

Figure No.13

It is found in Figure No.13 only 59.6% of Trainees know about Augmented Reality.

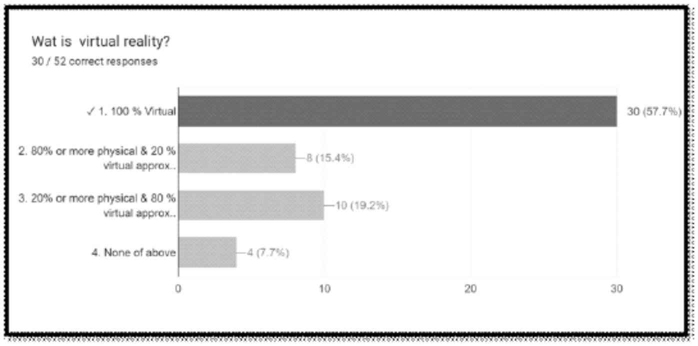

Figure No. 14

It is found from figure No. 14 that only 57.7% of Trainees know about Virtual Reality.

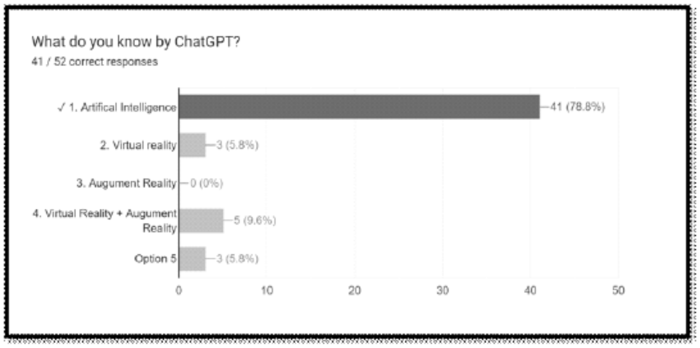

Figure No. 15

It is found in Figure 15 No. that 78.8% of Trainees responded that ChatGPT is an Artificial Intelligence.

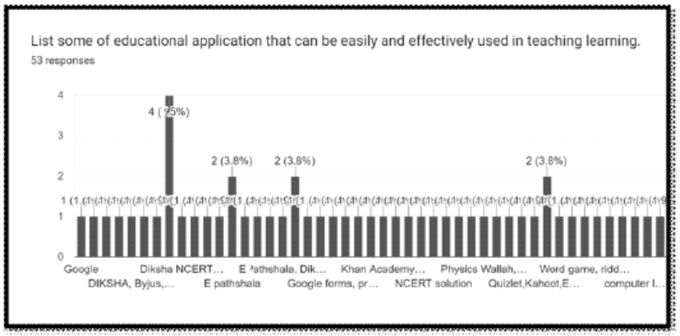

Figure 16

As it is found in figure 16 that can be easily and effectively used in teaching learning are Google, DIKSHA, E pathshala, Khan Academy, Word Game, Byjus, NCERT solution, Kahoot, Quiz etc. are some of the educational applications that can be effectively used in teaching learning

Describe some of the challenges do you face while using digital tools for Online/Offline Education.

These are the challenges faced by D.El.Ed. trainees while using digital tools are Buffering, Digital Divide, Communication problem, Network issue. Fake sites, Network issue, Online problem, Lack of resources, Availability of resources i.e. electricity and digital device etc. Less attention spam,Distraction

Delimitation

- This study was delimited to D.El.Ed. Trainees of DIET, Bhola Nath Nagar.
- This study was delimited to awareness and usage of digital tools.
- Only 53 Trainees were filled the google form.

Limitations

- The data was filled through Google form. So the mood and seriousness of subjects to fill the questionnaire could not be monitored.

Educational Implications

- It will help us to know about trainees learning towards Education 5.0.
- It will help to create more awareness about Education 5.0 among trainees.
- It will help the teacher to use digital pedagogiesin the classroomaccording to the inclination of the students.

Bibliography

Hughes, J. & Morrison, L. (2013). Using Facebook to Explore Adolescent Identities. International Journal of Social Media and Interactive Learning Environments, Special Issue, 1(4), pp. 370-386.https://faculty.ontariotechu.ca/kay/radfiles/FacultyResearch/Hughes_Using_Facebook_IJSMILE_2013.pdf

Gemma Tur and Victoria I. Marín (2015). Enhancing learning with the social media student teachers' perceptions on Twitter in a debate activity. NEW APPROACHES IN EDUCATIONAL RESEARCH Vol. 4. No. 1. January 2015 pp. 46-53 ISSN: 2254-7399 DOI: 10.7821/naer.2015.1.102. accessed May 2015.https://www.researchgate.net/publication/273338179_Enhancing_learning_with_the_social_media_student_teachers'_perceptions_on_Twitter_in_a_debate_activity. January 2015.DOI: 10.7821/naer.2015.1.102.

https://www.education.gov.in/en

https://www.diksha.gov.in/

https://itpd.ncert.gov.in/

https://www.pmindia.gov.in/en/major-initiatives/

https://ncert.nic.in/textbook.php

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/

Assistant Professor
District Institute of Education and Training(NE)
Bhola Nath Nagar, Shahdara
Email: shinambatra@gmail.com

Assistant Professor
District Institute of Education and Training(NE)
Bhola Nath Nagar, Shahdara
Email: sktet2010@gmail.com

Research Article

Critical and theoretical perspectives on digitized material, including participation, and crowdsourcing, for content development in Indian Education-based apps.

–Ankita Singh
–Prof. Dr. Tasha Singh Parihar

Abstract:
'Crowdsourcing' is a modern phenomenon that is developing to delineate the information gathered by the aid, addition, and sharing of the universal public. Companies are getting involved to delve into digitalized data to understand their potential consumers, competitors, and contemporary market demands. The researches concerning the project and pre-existing data ease out the obvious requirements. The aim of my paper is to understand the crowdsourcing done by various digital education companies to utilize digital data and investigate the methods opted by thesame to identify and produce according to the needs of their consumers.To understand the same, a web survey was carried out on 200 people who are utilizing an educational app in India. The Survey helps segregate the percentage of likes and dislikes, comfort, and options to choose from a plethora of available options. The article focuses on the output of the digitalizing comfort phenomenon which is analyzed on the basis of download values and userfrequency.

Keywords: Educational apps, Crowd-sourcing, data analysis, e-content, brand retention, marketing strategy, digitization.

Introduction: Companies keep modifying their products according to the time, trend, and tradition, and henceare required to understand their consumer's contemporary version of the need. That's when we require 'crowd sourcing' which is a developing phenomenon generated with collaborative response in form of data, from a mass source or multiple sole individuals who are in different arenas but can contribute their information to document for references. Companies, manufacturers, brands, designers, and industrialists canchoose from vivid data available for commercial or non-commercialpurposes. The fundamentals of crowd-sourcing are online,

categorized, systematic and analytical, as it is developed with the collective brilliance of multiple communities. Digital consumption and easy availability of the internet are creating the possibility to determine new methods of improvement in educational apps in India.Examples include a cluster of apps that identify and track the requirements such as language learning, apps for time management, toddler education, online tuitions, and explanatory apps dedicated to teaching particular subjects, the subscription and repurchase rate keeps the score of people's needs.Companies are continuously examining and scrutinizing the information gathered from crowd-sourcingconsumer bases. The aim of my study is to determine valid methods to understand the importance of crowdsourcing to interpret market realities. The critical applications of engaging crowdsourcing have been a method that is expansive and diverse, it includes micro-tasks, people participation, and open access software, this is how the ideas are generated to create the consumer-friendly productHossain [2]. for example in an experiment cum survey a very popular education app creators invited its consumers to try digital courses of their subject and take tests, the suggestions and queries generated thereafter were again formulated into the better syllabusas the choice and demand of customers.

The crowd in Crowdsourcing: A group of people organized to follow the same objective, belief, or emotion, Shukla[3], it is stated by them that the information gathered through these people can be compelling to utilize the unreachable sections of the entity. There is another crowd which is seeking the same information; Kumari &Sharma, 2021[23], There are moments when the crowd acts in favour or against the brand, a fast food chain invited their consumers to share their favourite dish from the same, and when people were explaining the experiments at the same time, there were a lot of complaints about the food poisoning, smell, and stale food, therefore the crowd can be anticipated as negative or positive agents, Prpic´[3]. They can indulge in organizing meetings, filing petitions or participating in healthy competition, sharing positive comments on the web comes under positive crowdsourcing, whereas boycotts, riots, and mobs are seen as negative influences. Hence crowdsourcing has taken up a broader perspective nowadays, apart from the thought of managers who are thinking of pushing a problem through a vast crowd, it is also seen as a possible method to identify and solve the problem. The organization can learn from nonprofessionals and consumers to make things more habitable and comfortable for their consumers.

Anatomy of Education dependent upon crowdsourced data-

Digital apps offering education are dependent upon three basic associations; learner content, learner instructor, and learner learner, as stated by Moore, 2009[6]. Research by Mitros and Kim,2015 [7] details that the content availability online is also dependent upon a large group of instructors and students who with their experiences are offering more to the educational content.Integrating to the same, Hossain and Kauranen 2015, [9] suggested that choice of activities also plays an important role to motivate

the participants. In order to get the collective intelligence from the set of participants, they should be briefed about the topic , maybe big topics should be broken down to smaller ones, explained by Afuah, A., & Tucci, C. L. (2012 [10]. The education app owners must also reach to the right crowd to get accurate insight for the contribution, Zdravkova, K. 2020[8] hasalso proposed a model of taxonomy which has been created by considering the amalgamation of the crowd, context, and learning objectives.

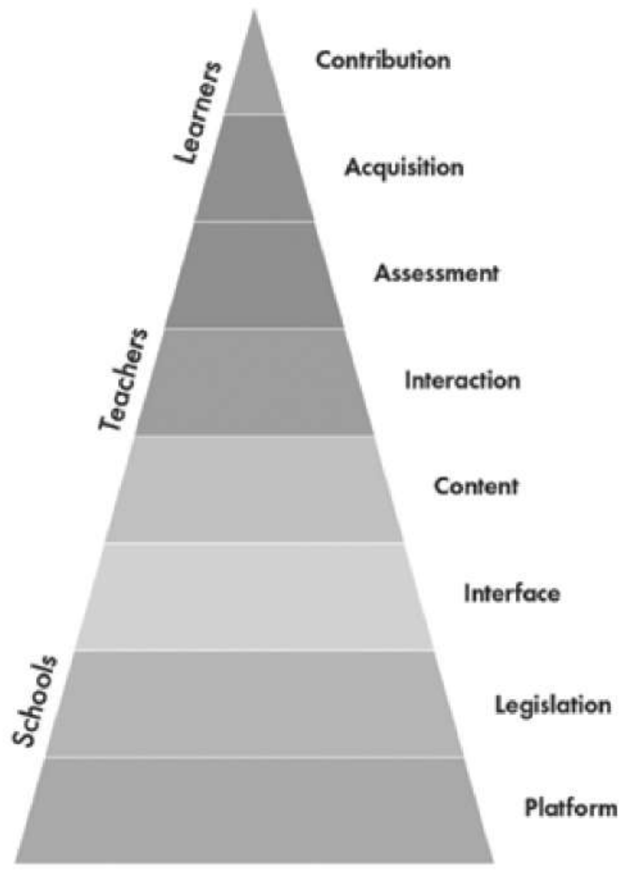

Fig. 1 The taxonomy of crowd-oriented formal education

Inspired by the above model by Zdravkova; My study has observed the pattern of assessment, interaction, acquisition, and Contribution in an Indian education app which is also popular abroad My study has another constructs also which I have incorporated after learning the various components of the education-apps, which are crowdsourcing the content. On the basis of the survey, I have extracted the data, thus, resulting in creating a wholesome learner gain and contribution model utilized to develop the crowdsourced data.

Constructs	Items	FL	CR	AVE	Cronbach's	Mean	SD
Assesment	A1 A2 A3 A4	0.885 0.905 0.92 0.923	0.95	0.825	0.90047	3.11625	1.003498
Contribution	C1 C2 C3 C4	0.913 0.946 0.951 0.939	0.967	0.879	0.934592	3.175	0.954868
Self-Benefit	SB1 SB2 SB3 SB4	0.925 0.921 0.925 0.837	0.946	0.815	0.927821	3.35	0.085161
Fun	FUN1 FUN2 FUN3	0.901 0.953 0.927	0.948	0.86	1.030649	3.296667	0.907524
Social Interaction Ties	SIT1 SIT2 SIT3	0.94 0.958 0.942	0.963	0.896	0.907843	3.44	1.022136
Aquisition	A1 A2 A3	0.911 0.851 0.922	0.924	0.801	1.131801	2.945	0.863988
Continued intention to use	CIU1 CIU2 CIU3	0.945 0.946 0.948	0.963	0.896	0.958409	3.273333	1.064733

The gains and contributions of Crowd-dependent Students-Through the education provided by these educational apps, the students tend to learn better as compared to the traditional method, and their aspirations become the initiatives for instructors and other learners to contribute more to the available content. The learners are self-motivated with the factors like stimulation and fun. The methods and modes carried out to assess the provided routine, and develop the practice of trial, error, and perfection. Hence the students are in a phase where they keep implementing the knowledge and training they have come across thus by constructing their own understanding they contribute to the content which is further beneficial to the other learners; as detailed in a theory by Mcleod 2019[11]. This stimulated and carefully supervised constructed theory,should also be guided to discourage fake data, hate speech, and the propagation of negative ideologies(Jelen, Lewis, &Djupe, 2017)[12]. Also, the students should be completely aware of the assessment patterns and grading systems in these apps. According to Parkes, Stein, & Reading, 2015[13], the students must know their performance levels and how to evaluate the same, the fake data or negative responses should be reported and marked in the spam category, also the data which is sensitive and confidential should have a mechanism to be accessible only to the concerned authority or learners.

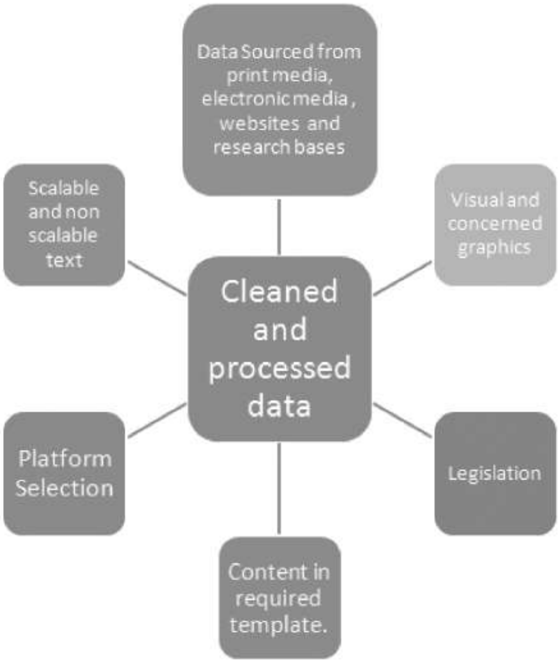

Fig 2. Proposed Model to describe content development stages for Education-Based Apps in India.

Review of Literature:

With emerging trends in innovative and traditional careers, the education pattern demands are increasing, which is challenging educators, a study by Hollins 2015 [14], provides new insights about fresh perspectives on educational understanding and practice through applying the culture and thought process of learners and educators. Skaalvik and Skaalvik 2016, [15] researched about different conflicts related to content development, which is collaborated by people who believe in different beliefs and objectives, hence there is a difference in understanding. Although contemporary times demand the launch of a modified education system supported by versatile educators to inspire crowd-oriented education, and to train them as their environment and understanding Sachs, 2016[16]. According to Schaufeli, & Bakker, 2004[17], the enthusiasm level of learners increases when they are engaged in aneducation-orientedtask which has the capacity to influence their thoughts to give an instant reaction. Nicholls, G. 2014[18] detail about creating a transparent and pleasant environment which are suitable for the reactions and action consequences within the digital education system. Salli 2014[19] also believes in skilled instructors who can also utilize their resources and apply the latest technology while teaching the students. Foreman, & Arthur-Kelly, 2017; Kauffman, Hallahan, & Pullen, 2017[20], emphasize on educators to adopt and present a comprehensive plan in curriculum to inspire and train people with learning difficulties Ramaiah 2022[24].

Methodology:

A report by Statista declares that the e-learning market worldwide will cross 243 billion dollars by 2022, and is going to rise up to 370 billion dollars by 2025, a report by CNBC also estimates the market to bloom by 350 million dollars.The number of e-learning mobile apps approaches 600K to date – 275,210 on App Store and 308,438 on Google Play. Students are achieving interactive and personalized learning through mobile learning apps, This article has taken up the methodology considering the perspective of digital app users, the apps track the information accumulated by the consumers such as lead scoring, automation, event tracking, accessing the data even in offline mode, making minutes of the meeting, the methodology is done by analyzing the content offered by various tracking apps. As more apps help one to stay organized by tracking the google calendar and creating a to-do list, thus getting an idea of the daily activities, visits, and requirements. In this article, I have analyzed the data from a consumer's point of view, which has been crowdsourced and accumulated after renditions and editing from experienced and qualified instructors. I have made a questionnaire on the basis of consistent constructs from the strategized curriculum by an Indian digital education app and on the basis of the same, I want to identify the factors which are responsible for filtering and stimulating the data which is crowdsourced. These factors will further be indulged in a model that will ease the best out of the phenomenon of content creation from the sourced information. I have created a digital questionnaire with an understanding of the practice followed by an educational app, the questionnaire was further circulated to learners who have subscribed to the app and are appearing for regular assessments and activities. Through my research, I have also managed to understand the methods practiced by crowdsourcing ventures which will encourage new proposals for practitioners.

Findings:

My research has landed on the fact that the content which is demanded by the learners is designed by the developers who receive it from instructional designers, these designers have additional information about the concerned topics. The topics are developed with the same information but still require LO repositories, to add to the content and design it according to the mobile/machine. The scalable and non-scalable media is integrated according to the resolutions, bite-size or length limits, audio or visual as essentials needs of the educational standards like IMS Meta-Data specifications, IMS Learning Design Specification, and IMS content-packaging specifications. The content is then wrapped in various designs and is incorporated into smartphones and gadgets.

Conclusions and recommendations:

Digital Education is becoming a main stream in education with competent material and digital presence. There are billions of active learners who are being trained and educated by volunteers, contributors, and instructors. Many educational

institutes have included e-learning apps as a part of formal education and their powerful presence is reliable for students who are dependenton digital data. The crowdsourcing for the apps should be done by preventing the rights of the contributors, and access to only authorized subscribers, the content should be protected with copyrights. Crowdsourcing should be done strategically while creating a user-friendlydesign as stated by Singh 2023,[21]. the app must serve all-purpose diversity in socialism, religion, race, education, language, and even special needs. Further, there must be a systematic inclusion of instructorswith periodic checks of their updated profiles and educational qualifications. While empathizing with the requirement of learners, the teachers must be professionally competent with technical and formal grooming. The content should be customized and adhere strictly to the institute's curriculum. This will serve fair information without fearing privacy barge and security threats.

According to Lata and Sonkar,2023 [22], A lot of semi-automatic tools are available for the quality and analysis of the sourced content, after this, there must be a legal implementation thatis at par with the educational regulations. There must be trials under the supervision of experts who must have an industry person to identify the demands of business and the market. Educational content created by crowdsourcing can thus become an integral part of the formal education system, as the regular partners who will be ethically responsible will create a high influence on the educational structure.

References:

https://www.edsys.in/must-have-educational-apps-students/

1) Rockwell, G. (2016). Crowdsourcing the humanities: Social research and collaboration. *Collaborative research in the digital humanities*, 147-166. https://doi.org/10.4324/9781315572659

2) Hossain, M., &Kauranen, I. (2015). Crowdsourcing: a comprehensive literature review. *Strategic Outsourcing: An International Journal*.

3) Prpiæ, J., Shukla, P. P., Kietzmann, J. H., & McCarthy, I. P. (2015). How to work a crowd: Developing crowd capital through crowdsourcing. *Business Horizons*, *58*(1), 77-85.

4)Hossain, M., &Kauranen, I. (2015). Crowdsourcing: a comprehensive literature review. *Strategic Outsourcing: An International Journal*.

5) Krishnadas, R. (2021). Understanding Customer Engagement and Purchase Behavior in Automobiles: The Role of Digital Technology. In *Handbook of Research on Technology Applications for Effective Customer Engagement* (pp. 1-13). IGI Global.

6) Maton, K., & Moore, R. (Eds.). (2009). *Social realism, knowledge and the sociology of education: Coalitions of the mind*. A&C Black.

7) Williams, J. J., Krause, M., Paritosh, P., Whitehill, J., Reich, J., Kim, J., ... & Keegan, B. C. (2015, February). Connecting collaborative & crowd work with online education. In *Proceedings of the 18th ACM conference companion on computer supported cooperative work & social computing* (pp. 313-318).

8) Zdravkova, K. (2020). Ethical issues of crowdsourcing in education. *Journal of Responsible Technology*, *2*, 100004.

9) Hossain, M., &Kauranen, I. (2015). Crowdsourcing: a comprehensive literature review. *Strategic Outsourcing: An International Journal*, *8*(1), 2-22.
10) Afuah, A., & Tucci, C. L. (2012). Crowdsourcing as a solution to distant search. *Academy of management review*, *37*(3), 355-375.
11) McLeod, S. (2019). Constructivism as a theory for teaching and learning. *Simply psychology*, *17*.
12) Jelen, T. G., Lewis, A. R., &Djupe, P. A. (2018). Freedom of religion and freedom of speech: the effects of alternative rights frames on mass support for public exemptions. *Journal of Church and State*, *60*(1), 43-67.
13) Parkes, M., Stein, S., & Reading, C. (2015). Student preparedness for university e-learning environments. *The Internet and Higher Education*, *25*, 1-10.
14) Hollins, E. R. (2015). *Culture in school learning: Revealing the deep meaning*. Routledge.
15) Skaalvik, E. M., &Skaalvik, S. (2016). Teacher stress and teacher self-efficacy as predictors of engagement, emotional exhaustion, and motivation to leave the teaching profession. *Creative Education*, *7*(13), 1785.
16)Schaufeli, W. B., & Bakker, A. B. (2004). Job demands, job resources, and their relationship with burnout and engagement: A multi sample study. *Journal of Organizational Behavior: The International Journal of Industrial, Occupational and Organizational Psychology and Behavior*, *25*(3), 293-315.
17) Sachs, J. (2016). Teacher professionalism: Why are we still talking about it?. *Teachers and teaching*, *22*(4), 413-425.
18) Nicholls, G. (2014). *Professional development in higher education: New dimensions and directions*. Routledge.
19) Särkämö, T., Ripollés, P., Vepsäläinen, H., Autti, T., Silvennoinen, H. M., Salli, E., ... & Rodríguez-Fornells, A. (2014). Structural changes induced by daily music listening in the recovering brain after middle cerebral artery stroke: a voxel-based morphometry study. *Frontiers in Human Neuroscience*, *8*, 245.
20) Foreman, P. (2017). Legislation and policies supporting inclusive practice. *Inclusion in action*, 50-85.
21) Singh, P. K., & Rana, P. (2023). Potential of Augmented Reality in Optimization of Military Libraries Services. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, *42*(6), 404-413. https://doi.org/10.14429/djlit.42.6.18191
22) Lata, N., &Sonkar, S. K. (2023). Use of Information Communication Technology (ICT) in Library and Information Science Education and Research. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, *42*(6), 397-403. https://doi.org/10.14429/djlit.42.6.18371
23) Kumari, K., & Sharma, S. (2021). Information Seeking Behaviour of the Users of Academic Libraries. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, *41*(6), 469-475. https://doi.org/10.14429/djlit.41.6.16646
24) Ramaiah, C. K., &Daimari, B. M. (2022). Comparison of Reading Habits between Research Scholars and Postgraduate Students of Pondicherry University A Survey. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, *42*(3), 168-177. https://doi.org/10.14429/djlit.42.3.17603
25) Suprapto, N., Setyarsih, W., &Mubarok, H. (2022). Information Spectrum over Twelve Public Teaching Universities in Indonesia. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, *42*(4), 265-274. https://doi.org/10.14429/djlit.42.4.17880

❑❑❑

Department of Mass Communications, Galgotias University.

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

हिंदी साहित्य, संस्कृति एवं भाषा

से संबंधित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए संपर्क करें

अध्यक्ष : डॉ. आशीष कंधवे

ईमेल : vhspindia@gmail.com
www.vhspindia.in

संपर्क : 011-47481521, 9811184393

1. हिंदी एवं भारतीय भाषा का प्रचार-प्रसार एवं समग्र विकास
2. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के विकास और विस्तार के लिए सेमिनार, सम्मेलनों का आयोजन
3. उत्तम साहित्य का प्रकाशन
4. साहित्यकार सहायता योजना
5. हिंदी को तकनीक से जोड़ना
6. पुरस्कार / प्रतियोगिता का आयोजन
7. रोजगारोन्मुख हिंदी के लिए प्रयास एवं योजनायें
8. संग्रहालय / पुस्तकालय / संगोष्ठी कक्ष की स्थापना
9. साहित्य एवं संस्कृति के चहुँमुखी विकास के लिए प्रयासरत

RNI No. DELBIL/2012/42547